Bharatiya Vidya
**Bhavan**
BENGALURU

Srila Prabhupada's
**ISKCON**
BANGALORE

# message of ramayana

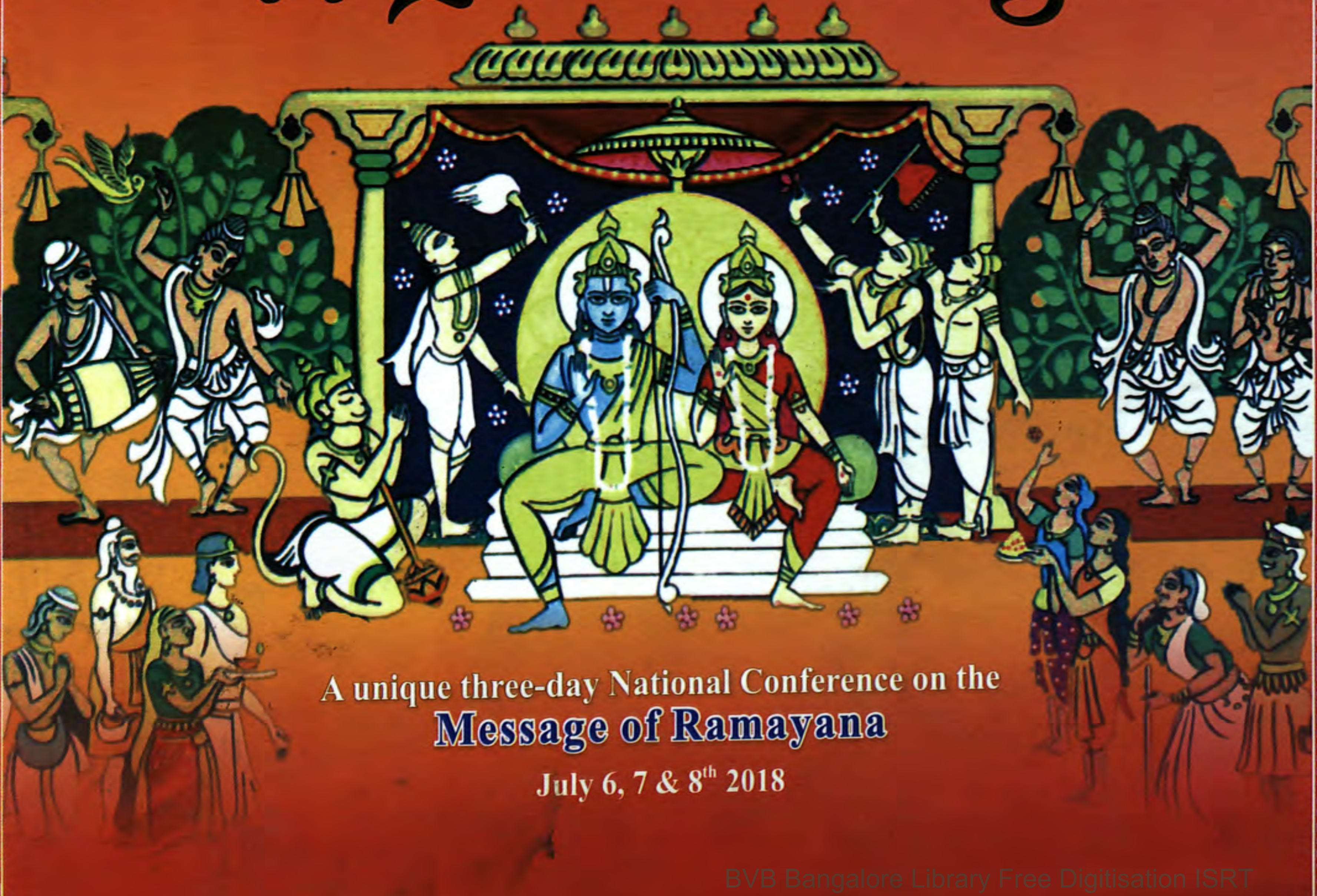

A unique three-day National Conference on the

## Message of Ramayana

July 6, 7 & 8th 2018

# Message of Ramayana

A Unique three-day National Conference

July 6, 7 & 8th, 2018

*Editor* ***Mahamahopadhyaya Dr. S. Ranganath***

**Bharatiya Vidya Bhavan**
Bengaluru

**Message of Ramayana**—*Documentation of the Proceedings of the National Conference on Message of Ramayana—organized by Bharatiya Vidya Bhavan in association with* ISKCON, *Bangalore.*

Edited by **Mahamahopadhyaya Dr. S. Ranganath** and Published by **Bharatiya Vidya Bhavan,**
# 43, Race Course Road, Bengaluru – 560 001.

Tel. : 2226 7303, 2226 5746. Fax : 2228 7373
Website : www.bhavankarnataka.com
facebook : www.facebook/bhavanbengaluru
e-mail : bhavanblrhns50@gmail.com / hbcollege18@yahoo.co.in

pp : vi + 430

First Edition : **2019**

Copies : 500

Price : ₹ 2,500/-

Designed & Printed by:
**THE BANGALORE PRESS**
# 88, Mysore Road, Bangalore - 560 018.
e-mail : bangalorepress@gmail.com

# FOREWORD

I am highly grateful and immensely happy to present the foreword to the present volume entitled "Message of Ramayana" on behalf of Bharatiya Vidya Bhavan as a follow up of the volume entitled "Message of the Mahakavyas" – a National Seminar held from 17th to 21st June 2016 jointly organized by Bharatiya Vidya Bhavan, Bangalore and ISKCON at the Multi Vision Auditorium of ISKCON.

**Ramayana known as Adi Kavya or Chatur Vimshati Sahasri Samhita is composed by Adi Kavi Valmiki. There are 24,000 stanzas in this grand epic and is nothing but an explanation of the 24 letters of the sacred Gayathri Mantra. From times immemorial, Ramayana has inspired and influenced the people of South East Asia and has provided a common bond.**

The present volume contains 31 research papers presented in three languages namely Kannada, English and Hindi and is a comprehensive compendium with contemporary relevance. The volume is a harmonious blend of tradition and modernity, intellect and wisdom, orient and occident and is like a bridge between the wisdom of the sages on the one hand and the intellectuals of the present century on the other hand. It is hoped that the present volume would find favour with scholars and laymen alike.

I would like to appreciate the earnest effort of Bharatiya Vidya Bhavan and ISKCON for bringing out this unique volume as a follow up of "Message of Mahakavyas" which will be of immense importance and relevance for posterity.

Mahamohopadhyaya
**Dr. S. Ranganath**
*Vidwan, M.A, Ph.D, D. Litt., Visharada*

# CONTENTS

- **भगवान् श्रीराम के जन्मकाल का चिन्तर**
  *—Dr. Kameshwar Upadhyaya* ........ 1 - 5
- **A Complete Research on Vanvas Path of Shriram**
  *—Prof. Dr. Ramavtar* ........ 6 - 12
- **Valmiki Ramayana as a Reflection of Vedic Culture**
  *—Prof. Dr. Shashiprabha Kumar* ........ 13 - 30
- **Valmiki's Ramayana and Dharmashastra**
  *—Dr. Urmi Sameer Shah* ........ 31 - 44
- **Rāmāyana and Mimāmsā**
  *—Dr. Suryanarayana Bhat* ........ 45 - 65
- **Ramayana Tradition after Valmiki in India and Abroad**
  *—Prof. Rajendra Mishra* ........ 66 - 74
- **An overview of "Three hundred Ramayanas" A critical essay by A. K. Ramanujan**
  *—Prof. S. Naganath* ........ 75 - 82
- **Teachings of Lord Rāmacandra from Srimad Bhāgavatam**
  *—Shukadeva Dasa* ........ 83 - 95
- **Physiognomy in the Rāmāyāna**
  *— Dr. V. K. Hampiholi* ........ 96 - 100
- **ಕಾಳಿದಾಸನ ರಘುವಂಶದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ**
  —ಡಾ. ಶ್ರೀರಾಮ ಭಟ್ಟ ........ 101 - 120
- **ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ**
  —ಡಾ. ಆರೆಯಾರ್ ಶ್ರೀರಾಮ ಶರ್ಮ ........ 121 - 152
- **A critical analysis of Raghuvilasa: A play by shri Ramachandra Suri**
  *—Dr. R.N. Nagaraj* ........ 153 - 160
- **Minor Episodes in the Ramayana – Their Sociological Significance**
  *—Dr. Aravind Rao* ........ 161 - 169
- **Ramayana and Management**
  *—Prof. Maruthi Ram R.* ........ 170 - 178
- **Depiction and Consciousness of Environment in Valmiki Ramayana**
  *—Dr. S. Dakshinamurthy Sarma* ........ 179 - 183
- **Fine Arts in Ramayanam**
  *—Dr. Arathi V.B* ........ 184 - 193
- **The Principles of Administration in Rāmāyaṇa**
  *—Prof. P. Sashirekha* ........ 194 - 207
- **ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳ ಅಲಂಕಾರ ಸೌಭಾಗ್ಯ**
  —ಶತಾವಧಾನಿ ಡಾ॥ ಆರ್. ಗಣೇಶ್ ........ 208 - 252

- **Rasa in Ramayana**
  *—Dr. Sree Srivatsa*..........................................*253 - 270*
- **ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಶರಣಾಗತಿ**
  —ಡಾ॥ ಎನ್.ಕೆ. ರಾಮಶೇಷನ್ ..........................................*271 - 281*
- **The Rāmāyana Tradition in Folklore**
  *—Prof. C. Naganna* ..........................................*282 - 291*
- **'ಉತ್ತರಕಾಂಡ'ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಅನುಬಂಧದ ಲಕ್ಷಣಗಳು**
  —ಡಾ॥ ಜಯಂತಿ ಮನೋಹರ್..........................................*292 - 298*
- **ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಸಮೀಕ್ಷೆ**
  —ಡಾ. ಎನ್.ಆರ್. ಲಲಿತಾಂಬ..........................................*299 - 335*
- **Descriptions of Lord Ramachandra in Chaitanya Charitamrita**
  *—Shri Stoka Krishna Dasa, ISKCON*................*336 - 344*
- **ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸುಭಾಷಿತಗಳು**
  —ವಿದ್ವಾನ್ ಜಿ.ಎಸ್. ನಟೇಶ್ ..........................................*345 - 351*
- **On Rajaji's Ramayana**
  *—Dr. A. Ramaswamy Iyengar*..........................*352 - 366*
- **Coronations in Srimad Ramayanam**
  *—Sri. K.G. Raghavan* ..........................................*367 - 375*
- **ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಚಲನಚಿತ್ರ ರಂಗ**
  —ಎನ್.ಎಸ್. ಶ್ರೀಧರಮೂರ್ತಿ ..........................................*376 - 383*
- **Vitality of Ramayana: The Ramnami Cult**
  *—Pralhad B. Mahishi*..........................................*384 - 390*
- **ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ಆಧುನಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕಗಳು ಒಂದು ಸಮೀಕ್ಷೆ**
  —ಡಾ. ಎಸ್. ರಂಗನಾಥ್ ..........................................*391 - 398*
- **ಭವಭೂತಿಯ ಮೇಲೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪ್ರಭಾವ**
  —ವಿದ್ವಾನ್ ಡಾ॥ ಟಿ.ವಿ. ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ ಎಂ.ಎ., ಪಿಹೆಚ್.ಡಿ. ..*399 - 419*

**Ramaya Ramabhadraya Ramachandraya Vedhase,**
**Raghunadhaya Nadhaya Sitayah pathaye namaha**

# DVD Videos & Books of previous National Conferences

Bharatiya Vidya Bhavan
ISKCON
ವೇದ ಸಂವಾದ
Veda Samvada
Upanishad Sandesha
Message of Mahapuranas
Message of Mahakavyas
Message of Bhagavata
6th Memorable Event
Message of Ramayana
All are welcome

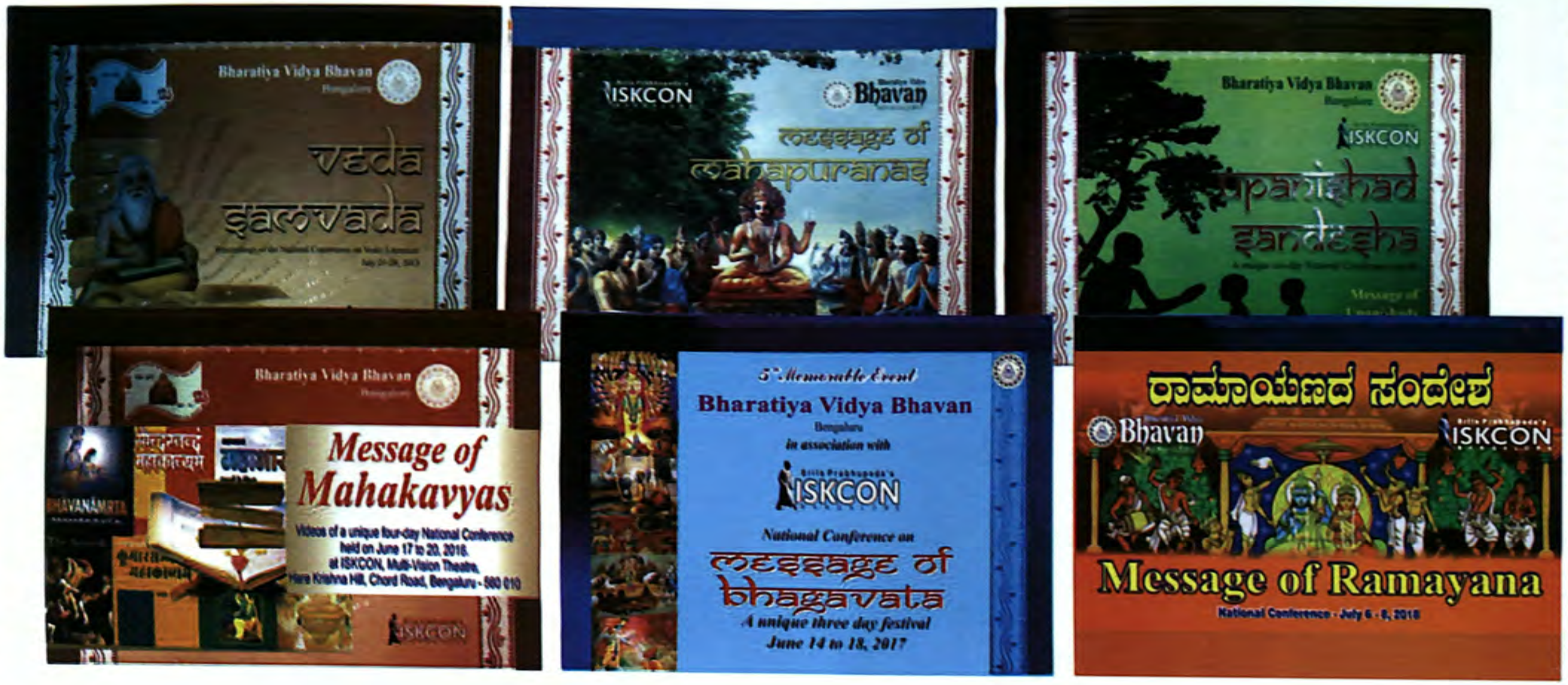
Bharatiya Vidya Bhavan
Veda Samvada
ISKCON
Bhavan
Message of Mahapuranas
Upanishad Sandesha
Message of Mahakavyas
Videos of a unique four-day National Conference held on June 17 to 20, 2016, at ISKCON, Multi-Vision Theatre, Hare Krishna Hill, Chord Road, Bengaluru - 560 010
5th Memorable Event
Bharatiya Vidya Bhavan
Bengaluru
in association with
Srila Prabhupada's ISKCON
National Conference on
Message of Bhagavata
A unique three day festival
June 14 to 18, 2017
ರಾಮಾಯಣದ ಸಂದೇಶ
Message of Ramayana
National Conference - July 6 - 8, 2018

# भगवान् श्रीराम के जन्मकाल का चिन्तर

**Dr. Kameshwar Upadhyaya**

ऋश्यश्रृङ्ग मुनि के द्वारा सम्पादित पुत्रोष्टियज्ञ के साथ अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने के छः ऋतु अर्थात् एक वर्ष पश्चात् बारहवें मास में चैत्र शुक्ल नवमी तिथि में अदिति दैवत्य (पुनर्वसु) नक्षत्र में पाँच ग्रहों के अपनी उच्च राशि में स्थित होने के काल में चन्द्रमा और बृहस्पति से युक्त कर्क लग्न में सर्वलोक वन्दित, सभी शुभलक्षणों से युक्त कौसल्या के गर्भ से भगवान् श्रीराम का जन्म हुआ।

श्रीमद्वाल्मीकिरामायण के १८ वें सर्ग के श्लोक ८-१० में भगवान् श्रीराम के प्रादुर्भाव का वर्णन प्राप्त होता है । यह वर्णन निम्नवत् है –

**ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः ।**
**ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ ॥**

**नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु ।**
**ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह ॥**

**प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम् ।**
**कौसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम् ॥**

ऋश्यश्रृङ्ग मुनि के द्वारा सम्पादित पुत्रोष्टियज्ञ के साथ अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने के छः ऋतु अर्थात् एक वर्ष पश्चात् बारहवें मास में चैत्र शुक्ल नवमी तिथि में अदिति दैवत्य (पुनर्वसु) नक्षत्र में पाँच ग्रहों के अपनी उच्च राशि में स्थित होने के काल में चन्द्रमा और बृहस्पति से युक्त कर्क लग्न में सर्वलोक वन्दित, सभी शुभलक्षणों से युक्त कौसल्या के गर्भ से भगवान् श्रीराम का जन्म हुआ ।

महर्षि वाल्मीकि के द्वारा भगवान् श्रीराम के जन्मकाल के संदर्भ में ग्रहगणित से परिपूर्ण साक्ष्य रखा गया है । यह साक्ष्य अकाव्य और सर्वशुद्ध है । इसमें लग्न, नक्षत्र, पाँच उच्च ग्रहों की स्थिति तथा राशि के बारे में स्पष्ट निर्देश प्राप्त है । इसी श्लोक के माध्यम से भगवान् श्रीराम के जन्मकाल का शोध होता है, जो सर्वथा उचित है। श्लोक में विद्यमान् तथ्यों के संदर्भ में विचार करने से पूर्व भगवान् श्रीराम की उत्पत्ति के संदर्भ में प्राचीन काल से जो दो मान्यतायें चली आ रही है, उन दोनों पर विचार करना अनिवार्य है ।

**प्रथम मान्यता–**

भगवान् श्रीराम का जन्म चतुर्विंशाति महायुग में हुआ था और यह अष्टविंशति महायुग चल रहा है । इस मान्यता के अनुसार भगवान् श्रीराम का काल करोडों वर्ष प्राचीन हो जायेगा ।

**द्वितीय मान्यता –**

भगवान् विष्णु का अवतार प्रत्येक महायुग में होता है । अतः इस अट्ठाइसवें महायुग के त्रेता के अन्त में भगवान् श्रीराम का जन्म पृथ्वी पर हुआ था ।

इन दोनों मान्यताओं के अन्तराल में करोडों वर्षों का महान् अवकाश उपलब्ध होता है । प्रथम मान्यता के अनुरूप विचार करने वालों मे धर्म सम्राट् करपात्र स्वामी के अनुयायी तथा अन्य अनेक प्राचीन मान्यताओं के समर्थक आचार्यों की श्रृंखला है । इन दोनों मान्यताओं के समर्थक आचार्यों द्वारा महर्षि वाल्मीकि के वचन को ही प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है । अतः वाल्मीकिरामायण का प्रमाण वचन भगवान् श्रीराम के जन्म के संदर्भ में सभी पक्षों को स्वीकार्य है । भगवान् श्रीराम ने त्रेतायुग में ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य किया था ।

**दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।**
**रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ।** बा.रा., बा.का., १/९७

भगवान् श्रीराम का वनवास चौदह वर्षों के लिए सोलहवें वर्ष में हुआ था । इस प्रकार राज्याभिषेक से पूर्व के तीस वर्ष अतिरिक्त परिगणित होते हैं । इस पृथ्वी पर भगवान् श्रीराम की उपस्थिति त्रेतायुग के अन्त में ग्यारह हजार तीस वर्षों तक रही ।

प्रथम मान्यता के अनुसार –

| | |
|---|---|
| श्रीराम की पृथ्वी पर उपस्थिति | ११०३० वर्ष |
| द्वापर युग का व्यतीत काल | ८६४००० वर्ष |
| कलि युग का व्यतीत काल | ४३२००० वर्ष |
| २५ वाँ, २६ वाँ, २७ वाँ महायुग का काल | १२९६०००० वर्ष |
| २८ वाँ महायुग का काल (सत्युग, त्रेता, द्वापर) | ३८८८००० वर्ष |
| कलियुग का व्यतीत काल | ५१२० वर्ष |
| | कुल १८१६०१५० वर्ष |

इस मान्यता के अनुसार भगवान् श्रीराम का जन्म **एक करोड इक्यासी लाख साठ हजार एक सौ पचास वर्ष** पूर्व हुआ था । इस मान्यता के विरोध में प्रमाण सहित यह कहा जाता है कि प्रत्येक महायुग में भगवान् विष्णु के समस्त अवतार होते हैं । महायुग ४३२०००० (तैंतालिस लाख बीस हजार वर्ष) का होता है । इस एक महायुग में सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग का मान जुडा होता है । सत्युग का मान सतरह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष, त्रेतायुग का मान बारह लाख छयान्बे हजार वर्ष, द्वापर युग का मान आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष तथा कलियुग का मान चार लाख बत्तीस हजार वर्ष का होता है । इन चार युगों का समवेत मान ४३२०००० वर्ष का होता है जो एक महायुग होता है ।

अधिकांश विद्वानों की मान्यता है कि भगवान् श्रीराम का जन्म वर्तमान महायुग के ही त्रेतायुग में हुआ था । इस प्रकार से यदि भगवान् श्रीराम के जन्मकाल का अन्वेषण किया जाये तो –

द्वितीय मान्यता के अनुसार –

| | |
|---|---|
| त्रेता युग में श्रीराम की पृथ्वी पर उपस्थिति | ११०३० वर्ष |
| द्वापर युग का व्यतीत काल | ८३४००० वर्ष |
| कलि युग का व्यतीत काल | ५१२० वर्ष |
| | कुल ८८०१५० वर्ष |

इस मान्यता के अनुसार भगवान् श्रीराम का जन्म **आठ लाख अस्सी हजार एक सौ पचास वर्ष** पूर्व हुआ था ।

आज यदि कोई व्यक्ति भगवान् श्रीराम का जन्मकाल ईसापूर्व हजारों वर्ष के भीतर सिद्ध करने की चेष्टा करता है तो भारतीय जनमानस उसे उपहासपूर्वक निरस्त कर देता है । फलतः हमें भगवान् श्रीराम के जन्मकाल को सृष्ट्यादि कालगणना के अनुसार आठ लाख अस्सी हजार एक सौ पचास वर्ष पीछे जाकर ढूंढना होगा । यदि इस काल के निकट चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र में पाँच ग्रहों की उच्च स्थिति प्राप्त होती है तो यह काल भगवान् श्रीराम के जन्म का काल माना जायेगा ।

### वाल्मीकिरामायण के गणितीय श्लोक की साहित्यिक व्याख्या –

ततो यज्ञो समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः श्लोक में चैत्र मास, नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र तथा पाँच उच्च ग्रहों की चर्चा की गयी है । साथ में भगवान् श्रीराम का जन्मलग्न कर्क बतलाया गया है । कर्क में वाक्पति (गुरु) और चन्द्रमा बैठे हुए थे कहा गया है । महर्षि वाल्मीकि के कथन को व्याख्याकारों ने अपने हिसाब से व्याख्यायित किया है । प्रायशः हिन्दी टीकाकारों ने उच्च के ग्रहों मे सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र को माना है । यह परीक्षा का विषय है । मूल श्लोक में उन पाँच ग्रहों का उल्लेख हुआ ही नहीं है जो उच्च के थे? इतना तो स्पष्ट है कि चन्द्रमा और बृहस्पति कर्क में स्थित होने के कारण क्रमशः स्वगृही और उच्च के थे। भगवान् श्रीराम का जन्मनक्षत्र अदिति था । पुनर्वसु नक्षत्र का देवता अदिति होने के कारण महर्षि वाल्मीकि ने इसे अदितिदैवत्य कहा है । वस्तुतः संस्कृतव्याख्याकारों ने भी **पञ्चसुग्रहेषुस्वोच्चसंस्थेषु सूर्यगुरुशुक्राङ्गारकशनिषु स्वोच्चस्थानस्थितेषुसत्सु** कहकर हिन्दी एवं

अंग्रेजी व्याख्याकारों के लिए पाँच उच्च ग्रहों का नाम सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र स्थापित कर दिया है ।

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार पाँच उच्च ग्रहों में सूर्य, मंगल, शनि, गुरु, शुक्र, राहु और केतु शेष बचते हैं । आधुनिक मतावलम्बियों के अनुसार राहु, केतु ग्रह नहीं हैं, परन्तु प्राचीन मान्यता के अनुसार ये भी ग्रह हैं तथा इनका उच्च तथा नीच निर्धारित है । फलतः इस पर विचार होना चाहिए । एक संस्कृत टीकाकार ने लिखा – **चैत्रमासेसूर्यस्यमेषप्रवेशात्सूर्योप्युच्चगतएव** अर्थात् चैत्र मास में सूर्य मेष में प्रवेश करता है अतः उसे उच्च का मान लिया जाता है । जब तक मीन राशि से निकलकर मेष राशि में सूर्य प्रवेश नहीं करता तब तक उसे उच्च नहीं माना जा सकता । हिन्दी एवं अंग्रेजी टीकाकारों ने बुध को उच्च राशि में स्थित नहीं माना है, परन्तु गोविन्दराजीय टीका में बुध के संदर्भ में कहा गया – **बुधः सदारविसंनिहितोनतदोच्चस्थानस्थः**। सूर्य के साथ हमेशा रहने के कारण बुध ग्रह अपने उच्च स्थान में नहीं था । मीन का बुध तो नीच का हो जायेगा । इससे लगता है कि बुध ग्रह भगवान् श्रीराम के जन्म के समय मेष में था, अन्यथा महर्षि वाल्मीकि नीचस्थ बुध का उल्लेख अवश्य कर दिये होते ।

### पाँच उच्च ग्रहों का फल –

यदि कुण्डली में एक ग्रह उच्च का हो तो सर्वारिष्ट विनाशकारक होता है । यदि दो ग्रह उच्च के हों तो व्यक्ति सामन्त पदवी प्राप्त करता है । यदि तीन ग्रह उच्च के हों तो महीपति बनता है । यदि चार ग्रह उच्च के हों तो सम्राट् पदवी की प्राप्ति होती है । यदि कुण्डली में पाँच ग्रह उच्च के हों तो व्यक्ति लोकनायक होता है –

**एकग्रहोच्चजातस्यसर्वारिष्टविनाशनम् ।**
**द्विग्रहोच्चेतुसामन्तस्त्रिग्रहोच्चेमहीपतिः ॥**
**चतुर्ग्रहोच्चेसम्राट्स्यात्पञ्चोच्चेलोकनायकः ।**

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में भगवान् श्रीराम का जन्म हुआ था ऐसा अनेक संस्कृतभाष्यकारों ने लिखा है । मूलश्लोक में केवल इतना बतलाया गया है कि कर्क लग्न में बृहस्पति और चन्द्रमा विद्यमान् थे । इससे सिद्ध होता है कि बृहस्पति उच्च का था और चन्द्रमा स्वगृही । अन्य चार ग्रहों के संदर्भ में महर्षि वाल्मीकि ने नामोल्लेख नहीं किया है । चैत्र मास में सूर्य मेष राशि के आस-पास होते हैं । फलतः बुध किसी भी तरह से कन्या राशि का सम्भव नहीं है । अतः बुध उच्च का नहीं हो सकता । यदि नौ ग्रहों में से राहु और केतु को आधुनिक लोग ग्रह न मानें और चन्द्रमा कर्क का हो तो शेष पाँच ग्रहों सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, और शनि ही बचते हैं। फलतः सभी व्याख्याकारों ने इन्हीं पाँच ग्रहों को उच्च में स्थित होने को सिद्ध किया है ।

पाँच उच्च ग्रहों में सर्वाधिक संशयात्मक स्थिति सूर्य की बनती है । यदि सूर्य मीन में हो तो उच्च का नहीं होगा, परन्तु आस्तिक लोगों का यह मानना है कि सूर्यवंश में भगवान् विष्णु का अवतार श्रीराम के रूप में होने के कारण उनका सूर्य अवश्य उच्च का होगा । सूर्य और चन्द्रमा का स्पष्ट अन्तर बारह अंश होने पर एक तिथि बीतती है । नवमी तिथि के लिए सूर्य और चन्द्रमा का स्पष्ट अन्तर अर्थात् गणितीय दृष्टि से स्पष्ट चन्द्र – स्पष्ट सूर्य = ९६ अंश से १०८ अंश के मध्य में होगा । नवमी तिथि में हमेशा यही स्थिति अनिवार्य होती है । अष्टमी तिथि की समाप्ति के समय सूर्य चन्द्रमा से ९६ अंश पीछे होता है । कर्क राशि का चन्द्रमा ९० से १२० अंश के मध्य होता है । इसमें पुनर्वसु नक्षत्र का मान ८० अंश से

९३ अंश २० कला के बीच होता है । पुनर्वसु चतुर्थ चरण ९० अंश से ९३ अंश २० कला के बीच होता है । अब यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ९३ अंश २० कला से अधिक का चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र का हो जायेगा, पुनर्वसु का नहीं । यदि चन्द्रमा को ९३ अंश २० कला का माने तो इससे ९३ अंश पीछे होने के कारण सूर्य मीन में २७ अंश २० कला पर होगा । इस समय अष्टमी का अन्त और नवमी का आरम्भ होगा । गणित की दृष्टि से भगवान् श्रीराम के जन्मकाल में सूर्य मीन राशि में १२ अंश से २७ आंश २० कला के बीच विद्यमान् था । यदि ऐसा नहीं होगा तो तिथि अष्टमी हो जायेगी । यदि सूर्य को मेष राशि में मानते हुए वाल्मीकिरामायण में वर्णित ग्रह स्थिति को रखा जाये तो तिथि अष्टमी हो जायेगी । उस दिन नवमी तिथि तो आयेगी परन्तु तब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में चला जायेगा ।

भगवान् श्रीराम का जन्मकाल जानने के लिए सृष्ट्यादि गणना के अनुसार आठ लाख अस्सी हजार एक सौ पचास वर्ष पीछे जाकर प्रतिवर्ष की चैत्रशुक्ल नवमी तिथि के दिन का स्पष्ट ग्रह निकालना होगा । तब जाकर यह कार्य पूर्ण हो सकेगा । भगवान् श्रीराम के जन्मकाल की तिथि को ढूंढना अत्यन्त दुरूह कार्य है । ❑

*Justice Dr. M. Rama Jois, former Governor of Bihar & Jharkhand inaugurating the Stamp exhibition on Ramayana organised by Ms. Sridevi*

# a complete research on vanvas path of shriram

**Prof. Dr. Ramavtar**

It is a matter of research, that during the search of Vanvas Marg of Shri Ram who were these sages(muninh) of Goswami Tulsidas and Valmiki along with them. Ram found solace and passed 10 years. Shri Ram Vanvas Marg divied into 9 parts on the basis of research.

**Shri ram van gaman asthal (places)**

Some events seem to be very ordinary, but these ordinary events have so great impact on human being that goal of life changes. I heard songs in my childhood from my aunts, sister in law, sisters and mother about Shri Ram's vanvas(exile) which depicts the suffering of Shri Rama, Sita ji and Laxmana during their forest journey in such a way that it directly touch the heart and they started weeping remembering those moments.

All of three travelling in forest, Sita ji got nail in her feet, Ram ji got it out. Some times their clothes traped in bushes, avoids themselves from snakes, sometimes Sita ji afraid with the roaring of lion both the prince moving on harsh, shivering and firing land with bare foots. Their feet was bleeding. In the rainy season Maa(mother) Kaushalya starts crying to see the clouds in the sky and sing. ìjano kis taruvar tale bheeje re mere ram lakhan ki Jodiî she requested the clouds, Not to rain there where my children were. Frequently listened this song forced me to weep, which is express in folk song

**"Ram aur laxman dono bhai,**
**Dono van ko jaye,**
**Hey ji ram mile bhagwan,**
**Ek van chale, do van chale,**
**Teeje mein lag aayi pyas,**
**Hey ji ram mile bhagwan....**
**Sita ke tap te uthi badariya**
**Barsi moosal dhaar**
**Hey ji ram mile bhagwan"....**

With the imagination of suffering in the song I wept many times alone. Family members were not aware about reality and always worried about me. Suddenly on one day. A will arose in my mind to visit all these places while I was in temple of lord Shiva.

This resolution got trapped in forgetfulness due to household life and government service, but it again surfaced, by the same power, which was the cause of this resolution.

I went through Ram Charit Manas, Valmiki Ramayana and other available study material, but Marg(path) could not cleared to me. I tried/visited, library and musiums but all these were futile for this purpose. I also studied many times Valmiki Ramayana, keeping in mind, the search of marg but a vauge line is created, on that basis I approached to erudite, discourser, which consumed my five years.

Now a new problem arose, in govt. service, leaves are limited and financial presuure compelled me to think another alternative, which included household responsibility also.

I had a firm belief that all these problems will be taken over by god, ultimately it happened with the grace of Shri Ram. Ministry of culture, govt. of India accepted my project ìVanvasi Ram and Lok Sanskritiî and financed it while income tax department granted me study leave for this work. It was debatable question about the time period of Ram Vanvas. All the erudite people have different opinion. Some estimate it 6000 to 10,000 years old. According to muslim scholars(vidwan) it happened 23 lakhs years before. It is supposed 9,84,000 years old event in sanatan tradition. Although I am not expert, yet I followed old tradition and some facts indicates it's probability.

On the basis of evidence we accept the remains of building, skeleton, pieces of pots, coins etc. but it is quite impossible to determine the events of 9,84,000 years. Every thing immersed in the earth and during such periods how many traditions developed and destroyed it is incountable. How we can calculate it, According to Dr. Swaraj prakash Gupta, who is an archeologist, The Mahabharat is about 5,000 years old while Ramayana is 3,000 years old. There is no answers of this query that how the characters of The Mahabharat which is 5,000

Bhavan ರಾಮಾಯಣದ ಸಂದೇಶ
Message of Ramay
National Conference - July 6 - 8, 2018

*Presentation of Music based on Ramayana under the direction of Dr. T.S. Sathyvathi* years old remained in Ramayana which is 3,000 years old Ramayana. So the evidence of archeology is in the question itself.

Initially it is very difficult to find the evidence of such old even, secondly during the foreign invasion coloniel rule, temple. Libraries, Sanskrit granth destroyed to such an extent that last hope was also diminished the only base on which we can rely upon our folk songs, dance, story, pilgrims, temples in hills, ashram which were beyond the reach of these cruel invaders. It also happened that some pious places disappeared due to the rebuff of society and situated in far flung areas. Some are on the verge of disappearance.

Tremendous efforts invested to search these 290 places in U.P, M.P, Jharkhand, Orissa, Telangana, Maharashtra, Karnataka, and Tamilnadu, Bihar, Nepal, on the basis of folk song, dance & story.

Thousands of places are visited in searching these pious spot/place. It is quite possible that some places are left out which were not at par to our parameter. It is necessary to say that we have taken, Valmiki Ramayana is the base where no descriptions is found then folk story/janshruti are accepted. It is also an important fact, a lot of places have been left out and some thing is added, in janshruti the seed of original stories remains safe. But if they are not in accordance to the Ramayana not acceptable.

Before description of Shri Ram marg. It has to be cleared that no one can say that shriram went through thispath/pagdandi only. Within this long period of time. A lot of change have occurred in land, many diverson has taken place by river. So we will discuss the places not the marg. Places are more reliable than marg/way on the basis of event, a story is framed and then place is constructed, consequently are places constructed, Now these construction and story mutually endorsed by tradition and endure the importance of that special place till centuries that is why places are considered base.

Goswami Tulsidas did not give much more indication about vanvas marg out of seven part(kand), there is a description of janakpur yatra and shri ram vanvas in sixth(6) kand. Janakpur yatra of shri ram is nearly straight. During forword journey, shriram went to janakpur passing through vishwamitra's abode and in return journey comes from Janakpur to Ayodhya. In this journey 41 places found in the region of Faizabad, Mau, Gazipur, Baliya, Baxar, Patna, Vaishali, Darbhanga, Madhubani, Janakpur, Sitamarhi, Eastern Champaran, Gorakhpur.

In Ram Charit Manas and Valmiki Ramayan out of fourteen years exile, there is a mention of 4 years only, rest of period of 10 years has indication only.

Two Shloks of Valmiki Ramayan are considerable.

Afterwards Shriram knower of great weapons went to the abode of great sages turn by turn, which he knew previously and going again there. (V.R 3/11/23)

In this way living in the Ashram/ Abode of great sages, with the great satisfaction ten years passed in a conducive atmosphere (V.R 11/26)

These two shloks of Valmiki ji are description of 10 years To and Fro journey Sutikshan Ashram in Dandakvan. Valmiki ji neither, mentioned the names of sages nor about their Ashram.

Goswami Tulsidas, expressed this concise description of Valmiki in half part of his Doha.

**Doha**

**"Nishchar heen karon mahi**
**Bhuj uthaye pan keenh**
**Sakal muninh ke ashram,**
**Jaye jaye such deenh" (Shri Ram Charit Manas 3/9)**

It is a matter of research, that during the search of Vanvas Marg of Shri Ram who were these sages(muninh) of Goswami Tulsidas and Valmiki along with them. Ram found solace and passed 10 years. Shri Ram Vanvas Marg divied into 9 parts on the basis of research.

1. From Ayodhya to Chitrakoot, Faizabad, Sultanpur, Pratapgarh, Allahabad, Kaushambi, Chitrakoot.
2. Chitrakoot stay(pravas)
3. Sutikshan Muni Ashram-Satna, Panna, Katni, Jabalpur, Hoshangabad, Nagpur, Amravati and Nashik
4. Visit of Dandakvan-Nagpur, Umaria, Shahdol, kariya, Anuppur, Sarguja, Jaspur, Gumla, Raigarh, Bilaspur, Raipur, Janjgir, Mahasamund, Dhamtari, Kanker, Narayanpur, Bastar, Jagdalpur, Malkangiri, Sukma, Dantevada, Khammam, Karimnagar, Jalna, Beed and Nashik.
5. From Sutikshan Ashram to Panchavati-Nashik.
6. From Panchavati to Kishkindha-Pune, Beed, Usmanabad, Sholapur, Beejapur, Bagalkot, Bent Gao, kopal and Billari.
7. From Kishkindha to Rameshwaram-Chitradurga, Hassan, Mysore, Mandia, Selam, Trichirapalli, Thanjavur, Tiruvarur, Nagapattnam, Podukarai Ramnathpuram.
8. From Rameshwaram to Lanka and Back to-is the oceanway which is not territory of any province.
9. From Rameshwaram to Ayodhya- is the airway, some places are found in the district of Kopal, Allahabad and Chitrakoot.

**Importance of River**

Rivers have the most importance in the establishment of Vanvas Marg of Shri Ram. In those years cities and villages were very few in numbers. The existence of river was in journey of Ram, Namely Tamsa, Vedsruti, Gomti, Syandika, Balukini, Vadrati, Yamuna, Ganga, Mandakini, Godawari, Tungbhadra. According to first 2 & 3 shloks of chapter 7 Aranya Kand, he crossed the river with the bottomless water. The name of those river did not mention. It was Cleared in the research that most of Ashram and way of sagaes existed on the bank of rivers. The facts we obtained in research, point out that Shri Ram travelled 15-20km along with rivers he covered long distance journey along the Mandakini Shabri and Mahanadi. At the time of Lanka expedition he travelled along with Tungbhadra and Kaveri rivers.

### Change in Names

According to linguistic change occurs in the words due to convenience of pronunciation accordingly, old name also changed while some words remained as usual. Following are example of such process of changing in name Mandavya-Mandfa, Markandey-Markundi, Shrungvarepur-singrore, Sitapur-chitapur, Ratheva-Raithva, Gaurav ghat-goraghat, Ramshail-ramshelva, nashika katen-nasik, banahora-banawar, tardeeh-tadeeh, Bhaye darshan-bhadarsha, Bhartpur-Bharatpur, Surkund-Surajkund, Rishiyan-rikhiyan, kumardway-Kumar do, Sfatikshila-fatikshila, Pushkarni-pohakarni, Sharbhang-Sharbhanga, Swargunja-sarguja, Tulsi bagich-bagicha, Shabrnarayana-shibrinarayana, Lakhneshwar-laxmaneswar, shovitpur-shripur, Shivpur-Sirpur, Shrini Nala-sagrinala, shrangi-sihava, Muchkund-Maichka, Gurukul, ghotul, Kanakpur, Kanker, rakshash heddiya-rakas hada, Rakshosh dongri-raksadongri, Lavanpur-lonar, Ramdwar-ramdariya, Shabrivan-Surewan, trishirapalli- trichurapalli, Sut kotai-chedu kotai, vedsruti river-visuni, Syandika-sai, Balukini-bakulani, etc, it is a long list of change in nomencloture

### Disappearing pilgrimage

On the basis of founded place in research it is estimated that Sita Ram and Laxman had travelled 30km per day from Ayodhyaji to Nashik Panchvati and after panchavati the duo Ram and Laxman 50 km per day. Having this in mind hundred of another places, related to Shri Ram, have been disappeared within the course of time and some are tend to disappear, because awareness about these is confined to particular region and old people, new generation has very little information about them. Still now we are getting indication of new places.

### Inscription and remains

Disappearing places can be protected, most of the inscription got rebuffed and deteriorating. Few example king Vikram Aditya established many stone with the inscripted number. Most of them disappeared but the rest can be protected with some efforts.

At the Mandvya Ashram. Murka, Kurka, Kurai, Shrangdhar, Bharadwaj Ashram, Akshayvat, Sita Rasoi, Dhurpur, Shiva temple, in Rishiyan Forest, Sita pahadi, kumar dyo, Viradh Kund, Siddha pahad, Sharbhang Ashram, Amrathkund, Rakshelwa, Ram Diwala, Rajiv

Lochan temple, keshkal ghati, Rakas hada, Panchapsar, Sindhkhed Raja, Rameshwar(Athani), Kabandh Ashram, Hal Rameshwar, Banawar gurdenelikere, muttukuda, chedu karai, found the inscription of idols. Somewhere on burning the bone type stone there is smell of human body & somewhere the sweet water from well of ocean. Panchapsar is an astonishing place archeological and scientific research is needed for these places.

**Apne-Apne Ram(Ram of every one)**

Some people alleged this historical event by turming it novel of Goswami Tulsidas and Valmiki ji. But the tribals who never heard the name of those two great poet tells that Sita Maa removed there fever with the help of Tulsi plant and trained them to make basket of bamboo.

Ram trained the male tribes to plough the land. Banda rtribal female remain naked and bald head due to cursing of Sita ji. Comingof two male in the life of female is considered the punishment of mockery of sita ji in sarguja where Shri Ram offered the water to his fore fathers still now this act is doing.

Thousands of fear paths and festivel run on the basis of shri rama. Tribals tell with the pride that their forefathers fought the battle against the Ravan to liberate Sita ji. The descendents of Brahman from Kashi tell their generation to reveal the curse of Brahman killing which was adheard to Sia Ram ji.

During this research journey, somewhere I encounterd with the robber and be boar the atrocities of devils someone understood me beggar and by someone insane, while some devotee of Shri Rama pored immense love and respect beyond concievement and got the blessings of seers. The work still has to be done.

It is the ultimate desire, that these pious place should reinstate with reverence and plantation with name of Ram Vatika. Every place should be connected to road, like U.P Govt. All other govt. construct Van Gaman Path, construction of temple on these places., Chain of devotee, active voulunteers formed, from Ayodhyaji to Rameshwaram a TV serial on the complete research so that whole world assimilate Ramatva of Shri Ram.

Till now thousands of maps have been distributed depicting the founded place on maps.The CD and VCD of these places are available on our website www.shriramvanyatra.com and it can be obtained from Shri Ram Sanskritik Shodh Sansthan Nyas, B-945 MIG flats, East of Loni Road, Delhi-110093.

All these works are possible with the blessings of Shri Ram and Cooperation of devotees of Shri Ram.

Ram Ram

❑

# valmiki ramayana as a reflection of vedic culture

**Prof. Dr. Shashiprabha Kumar**

Vālmīki's *Rāmāyaṇa* is not just a poetry, it is also the history and heritage of Indian values: philosophical, social, political and spiritual. It presents the essentials of Vedic culture in such a vivid narrative of a living human society that it becomes an indispensable source for the study of India and its culture.

The following paper is a modest attempt to highlight the inherent, impersonal foundations of Vedic culture presented through the prism of Vālmīki *Rāmāyaṇa* in a profound personalized manner.

## Abstract:

*Rāmāyaṇa* of Vālmīki is the first poetry (*ādikāvya*) of classical Sanskrit literature. It has not only influenced the subsequent Indian literature in classical Sanskrit but also carried forward the legacy of Vedic culture in almost all other Indian languages in a manner that it has become the source of strengthening Indian psyche across regions and religions.

Vālmīki's *Rāmāyaṇa* is not just a poetry, it is also the history and heritage of Indian values: philosophical, social, political and spiritual. It presents the essentials of Vedic culture in such a vivid narrative of a living human society that it becomes an indispensable source for the study of India and its culture.

The following paper is a modest attempt to highlight the inherent, impersonal foundations of Vedic culture presented through the prism of Vālmīki *Rāmāyaṇa* in a profound personalized manner.

*Rāmāyaṇa* of Vālmīki is not only the *ādikāvya*[1] of classical Sanskrit literature but also an uninterrupted source of inspiration to the subsequent poets through all ages and languages of India. To quote:

> It has become the property of whole Indian people, and scarcely any other poem in the entire literature of the world has influenced the thought and poetry of a great nation for centuries.[2]

In fact there is no form or feature of Sanskrit literature on which the influence of *Rāmāyaṇa* is not visible. Not only this, there is no Indian language which does not have its own version of *Rāmāyaṇa*.[3] This goes on to demonstrate the universal appeal of *Rāmāyaṇa* to Indian mind and its inexhaustible influence on Indian culture.[4] It is not without reason then that statements like the following one made by Vālmīki himself have been very popular in Indian tradition:

*Yāvat sthāsyanti girayaḥ saritaśca mahītale.*
*Tāvat rāmāyaṇakathā lokeṣu pracariṣyati.*[5]

*i.e.*, As long as the mountains and the seas exist on earth, the history of *Rāmāyaṇa* will remain prevalent among men.

The above words have been more than prophetic because the imprint of *Rāmāyaṇa* has been so vastly pervasive on and deeply embedded in Indian culture that even wide-ranging changes over centuries have not been able to diminish its stature:

> It is a vast ocean, the fathoming of which is an ever-continuing process. It is an inexhaustible source of wisdom and guidance for the daily life, whether it be a feudalistic society or a modern agrarian economy or a highly

---

[1] *Ādikāvyamidaṁ cārṣaṁ purā Vālmīkinā kṛtam.- Rāmāyaṇa of Vālmīki, Uttarakāṇḍa,* 98/18 Sanskrit text with English translation, Vol. I, English translation by M. N. Dutt, Edited and Revised by Ravi Prakash Arya, Parimal Publications, Delhi, 2013

[2] M. Winternitz, *A History of Sanskrit Literature*, Vol. I, University of Calcutta, Calcutta, 1927, p. 476

[3] For details please see *A Critical Inventory of Rāmāyaṇa Studies in the World,* Vol. I, K. Krishnamoorthy (ed.), Sahitya Akademi, New Delhi, 1960, pp.59-127

[4] "Probably no work of world literature, secular in its origin, has ever produced so profound an influence on the life and thought of a people as the Ramayana." - James Hastings (ed.), *Encyclopaedia of Religion and Ethics*, Vol. X, T. &. T. Clark, Edinburgh, 1918, p. 574

[5] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Bālakāṇḍa,* 2/36-37

> industrialised society. It is good for the age of oil-lamp and the bullock-cart as also that the age of supersonic crafts and voyages in the vast outer space.[6]

Culture is such a comprehensive concept that it covers the entire spectrum of human existence-be it philosophy, religion, society, politics, art, science and inter-personal relationships as well as concern for the environment. In other words, culture is not a readymade capsule which can be gifted to anyone by Nature, rather it results from human cultivation of Nature. It has rightly been defined as-

> Transformation of the uncultivated into the cultivated humanity, the concretisation of the possible system of human aspirations.[7]

The Sanskrit equivalent of the term culture, *i.e. saṁskṛti* is even broader in scope and essence because it signifies the sum total of peoples' endeavours that are purified and polished. But it is not merely the refinement of empirical nature, it is infact the chiselling of the physical as well as the intellectual, secular and the spiritual, actual and the ideal.

Accordingly in every culture there are certain elements which are relevant to a particular period and a specific society. At the same time there are certain other elements which are above spatio-temporal confinements and provide continuous strength and sustenance to humankind-irrespective of its place or time. The web of Indian culture is also interspersed with such unique features which are perennial in appeal and universal in applicability.

The present paper aims to highlight such vital principles of Vedic Culture through the prism of *Vālmīki Rāmāyaṇa.*

The following verse is said to be a spontaneous utterance of Vālmīki, the first poetic stanza[8] composed ever since the revelation of the Vedic metres:

*Mā niṣāda pratiṣṭhāṁ tvamagamaḥ śāśvatīḥ samāḥ*
*Yatkrauñcamithunādekamavadhīḥ kāmamohitam.*[9]

*i.e.,* O fowler, since you have slain one of a pair of *Krauñca*, you shall never attain prosperity (respect)!

It is well known that the above verse is the original seed of Vālmīki's *Rāmāyaṇa* since he composed his treatise after being moved by the compassion generated in his heart from watching the killing of one of the *krauñca* birds by a hunter:

*Samākṣaraiḥ caturbhiryaḥ pādair gīto maharṣiṇā*
*So 'nuvyāharaṇād bhūyaḥ* ***śokaḥ ślokatvamāgataḥ*** [10]

*i.e.,* Those verses, composed of equal accents, and furnished

---

[6] S.L.N. Simha, *The Ramayana: The Story and Significance of Valmiki's Epic*, The Dharma-Artha Centre, Bombay, 1984, p. 4

[7] Vide Shashiprabha Kumar, "Vedāntic Foundations of Indian Culture," in *Facets of Indian Philosophical Thought*, Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 1999, p. 70

[8] *Āmnāyādanyatra nūtanaśchandasāmayamavatāraḥ - Uttararāmacaritam* of Bhavabhuti, II Act

[9] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Bālakāṇḍa,* 2/15

[10] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Bālakāṇḍa,* 2/40
*(Cf. Dhvanyālokaḥ of Anandavardhana:*
*Kāvyasyātmā sa evārthastathā cādikaveḥ purā.*
*Krauñcadvandvaviyogottḥa* ***śokaḥ ślokatvamāgataḥ*** -1/5)

> with four parts, have been sung by the great saint, have, in virtue of frequent repetition, been associated with a world of pathos and have attained the eminence of a *śloka*.

A closer study of the above verse itself brings out a few inherent aspects of Vedic culture such as follow:

- Compassion for all the living beings,[11] and not only humans, is to be practised.
- Every sane and sensitive person is peeved over watching cruelty towards a living being and so was sage Vālmīki.
- A cruel and heartless person like the hunter in this case does not deserve respect.
- A human being should naturally be concerned about the welfare of all around him-[12] be it the birds or other aspects of existence.
- Love is the core of creation, so it needs to be venerated,[13] rather than being despised.
- Last but not the least, language is also an essential component of Vedic culture, hence the typical usages of aorist or imperfect past (*luṅg lakāra*) like *'ma agamaḥ'* and *'avadhīḥ'*as also the terms *'śāśvatīḥ samāḥ'* on the basis of Vedic verses[14] are noticeable.

As far as the structure of Vālmīki *Rāmāyaṇa* is concerned, it comprises 24,000 stanzas, divided into five hundred sections covered under the following seven books, called *kāṇḍas,*[15] whether the recession considered is Northern or Southern:

1. *Bālakāṇḍa*
2. *Ayodhyākāṇḍa*
3. *Araṇyakāṇḍa*
4. *Kiṣkindhākāṇḍa*
5. *Sundarakāṇḍa*
6. *Yuddhakāṇḍa*
7. *Uttarakāṇḍa*

Even if the story or other implications like the issue of interpolation etc. are left aside for the moment, the very titles of these seven books would reveal an underlying significance for illustrating the salient features of Vedic culture as follows:

### *1. Bālakāṇḍa*

The first book of Vālmīki *Rāmāyaṇa* is known as *Bālakāṇḍa*, for it depicts the childhood of Rāma.

---

[11] *Śaṁ no bhava dvipade śaṁ catuṣpade. -Ṛgveda,* 10/85/43

[12] *Mitrasyāhaṁ cakṣuṣā sarvāṇi bhūtāni samīkṣe. Yajurveda,* 36/8

[13] *Sahṛdayaṁ sāmmanasyamavidveṣaṁ kṛṇomi vaḥ -Atharvaveda,* 3/30/1

[14] (i) *Kavirmanīṣī paribhūḥ svayambhūryāthātatathyato 'rthan vyadadhācchā**śvatībhyaḥ samābhyaḥ.**-Yajurveda,* 40.8
(ii) Yato na punarāyati ***śaśvatībhyaḥ samābhyaḥ*** *Atharvaveda,* 6/75/2
(iii) ***Śaśvatībhyaḥ samābhyo*** *yāvat sūryo asad divi. -Atharvaveda,* 6/75/3

[15] *Caturviṁśatsahasrāṇi ślokānāmuktavānṛṣiḥ*
*Tathā sarga$atān pañca ṣaṭ kāṇḍāni tathottaram.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa,* 4/2

Vedic view of life takes into account the birth and growth of human life as rooted in one's childhood (*bāla-avasthā*) because of the saṁskāras[16] earned from the very beginning.[17]

## 2. *Ayodhyākāṇḍa-*

The second book of *Rāmāyaṇa* is rightly known as *Ayodhyākāṇḍa*, for it describes the holy city of *Ayodhyā* and the unfolding of Rāma's fateful story in it.

According to Vedic culture, the abode of individual soul is said to be *Ayodhyā* or the body which is not just held to be an ordinary dwelling, rather it is stated to be a divine city, and depicted as *Ayodhyā* :

> *Aṣṭācakrā navadvārā devānaṁ pūrayodhyā*
> *Tasyāṁ hiraṇyayo kośaḥ svargo jyotiṣāvṛtaḥ*[18]

*i.e.,* With eight circles and nine gates or portals impregnable is the castle of the enlightened ones. Therein lies the golden chest, conductor to the world of bliss-encompassed by brilliant light.

Obviously, the above verse from Atharvaveda not only uses the epithet *Ayodhyā* signifying the human body but also describes its form in a befitting manner.

## 3. *Araṇyakāṇḍa-*

The title of the next book in Vālmīki *Rāmāyaṇa* is based upon *araṇya*, *i.e.* the forest, which is an integral part of life in Vedic culture. Ṛgveda, the earliest available book of humankind, contains a whole hymn addressed to the deity of forest, namely the *araṇyānī*[19] hymn which presents a beautiful picture of interaction between human beings and the forests.

Accordingly the third book of *Rāmāyaṇa i.e. Araṇyakāṇḍa* depicts as to how human beings cannot and should not live in isolation located in urban areas only, they have to explore the forests and their inhabitants as well, for a fuller and more meaningful life.

## 4. *Kiṣkindhākāṇḍa-*

The fourth book of *Rāmāyaṇa* derives its name from a hilly region city situated in the *Kiṣkindhā*, (a cave in the mountain, *i.e. giriguhā*) which goes on to imply that according to Vedic culture various levels of existence are not only held to be interconnected but also interdependent. So, the human beings need to go beyond their habitat and relate with the vertical heights of mountains as well as their inhabitants.

## 5. *Sundarakāṇḍa-*

The *Sundarakāṇḍa*, which is the title of the fifth book of *Rāmāyaṇa* represents a splendid narration of beauty in the royal garden of the king of Laṅkā. Its significance is aptly described as follows:

---

[16] For details of significant childhood *saṁskāras* prescribed in Vedic Culture, please see source texts like *Manusmṛti,* 2/139-142

[17] *Yannave bhājane lagnaḥ saṁskāro nānyathā bhavet.- Hitopadeśa* of Viṣṇu Śarmā, Gangaviṣṇu Shri Krishnadas Lakshmi Venkateshwar Steam Press, Bombay, 1989 (saṁvat), *Prāstāvikā*, 8

[18] *Atharvaveda*, 10/2/31

[19] Ṛgveda, 10/146/1-6

*Sundare sundarī sītāmakṣatāṁ mārutermukhāt.*
*Śrutvā hṛṣṭastathaivāstu sa rāmaḥ satataṁ hṛdi.*[20]

In other words life becomes beautiful when it is lived in harmony with the body and mind, forests and gardens and the mountains as well as rivers - this is the inherent message of Vedic culture,[21] eloquently expressed in the *Rāmāyaṇa* of Vālmīki.

### 6. *Yuddhakāṇḍa-*

The next book of *Rāmāyaṇa* is titled as *Yuddhakāṇḍa*. It signifies that all goes well as long as the virtuous forces are prevailing over the vicious ones; but since there is a constant and inevitable fight between these two, hence as soon as the ignoble powers start raising their heads-the battle becomes unavoidable. This battle has to be fought at both the levels-micro and macro, *i.e.* within oneself and also outside oneself as per Vedic thought.[22] The same is remarkably portrayed in the well-known Vedic prayers like the following ones:

*Asato mā sad gamaya.*
*Tamaso mā jyotirgamaya.*
*Mṛtyormāmṛtam gamaya.*[23]

*i.e.,* From evil lead me to good.
From darkness lead me to light.
From death lead me to immortality.

### 7. *Uttarakāṇḍa-*

Significantly, the last book of *Rāmāyaṇa* is titled as *Uttarakāṇḍa*, which signifies victory of good over evil and exhorts human beings to revel from the present and rise up to the higher (*ut+tara*) planes, so as to reach out to the highest (*ut+tama*):

*Udvayaṁ tamasaspari svaḥ paśyanta* ***uttaram****.*
*Devaṁ devatrā sūryamaganma jyotir****uttamam****.*[24]

*i.e.*, Beholding the uprising divine light beyond the mundane darkness, we by and by approach the spiritual one, the divine of divines.

It is worth noting in this respect that the theme '*Rāmāyaṇa* and Vedic Culture' can broadly be comprehended from the following two angles:

- The influence of pre-*Rāmāyaṇa* Vedic culture on the heart and mind of sage Vālmīki which has been narrated by him in the form of a beautiful story woven around a living society.
- The influence of *Rāmāyaṇa* on subsequent cultural horizon of India which has percolated through the characters portrayed by Vālmīki.

However the focus of presentation in this paper will mainly be upon the former, *i.e.* inherent relation of

---

[20] *Tilaka* Commentary of Vālmīki Rāmāyaṇa, *Sundarkāṇḍa*, 68 (at the end of section 68 of *Sundarkāṇḍa*), p.712

[21] Vide Shashiprabha Kumar, "Atharvavedīya Bhūmisūkta mein Nisarga-Varṇana," in *Vaidika Anuśīlana,* Vidyanidhi Prakashan, 1998, pp. 97-117

[22] For details see Shashiprabha Kumar, "Svarājya: The Vedic Vision," in *Self, Society and Value: Reflections on Indian Philosophical Thought,* Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 2005, p. 83

[23] *Bṛhadāraṇyaka Upaniṣad,* 1/3/28

[24] *Ṛgveda*, 1/50/10

*Rāmāyaṇa* to ancient Vedic culture; although the influence of *Rāmāyaṇa* on subsequent cultural scene is equally wide and deep.

Universal significance of *Rāmāyaṇa* lies in the fact that it not only presents an extremely vivid picture of Vedic culture in almost complete details but also represents the essential and eternal values of it in such an impressive and interesting manner that it rises to the level of a treatise expounding lofty ethical ideals (*nītiśāstra*). Hence Vālmīki *Rāmāyaṇa* is an indispensable source for any one aspiring to study the various aspects of Vedic culture.

It is therefore, not without reason then, that *Rāmāyaṇa* is all in one-

- a fine specimen of a *kāvya*,[25]
- an authentic *carita*[26] / *itihāsa*
- an alluring *ākhyāna*.[27]

Although it has dealt with all the three pursuits of human life-*dharma, artha and kāma*, yet it is primarily a treatise of *dharma* (*dharmaśāstra*), a sacred text teaching righteousness, because it expounds the basic principles of eternal law (*sanātana dharma*) and propounds the ideals of good conduct.[28] Besides, it also draws attention to other topics discussed in the *dharmaśāstras*, such as daily rites (*nitya karmas*), special obligations (*naimittika karmas*) and optional acts (*kāmya karmas*) in accordance with the Vedic view of life.

More importantly, *Rāmāyaṇa* is not just a book of dry prescriptions: rather it describes the many-sided picture of a perfect life in an ever engaging style, be it of the householders or ascetics. On a closer study, it becomes clear that Vālmiki uses the word *dharma* in various senses at different places but his main conception of *dharma* pertains to the following two aspects:

- *Sādhāraṇa dharmas* or the general set of ethical virtues for all human beings.
- *Viśeṣa dharmas* or specific rules of conduct framed for different sections of society.

The former comprises an entire list of common virtues to be practiced by all human beings; to name a few like *satya* (truth), *vinaya* (benevolence), *dayā* (compassion), *dāna* (charity) and *ātithya* (hospitality) etc. Obviously all of these have been extolled in Vedic source texts as well, namely the *Saṁhitās*,[29] *Brāhmaṇas*[30] and the *Upaniṣads*.[31]

---

[25] ***Kāvyaṁ** rāmāyaṇaṁ kṛtsnaṁ sītāyāścaritaṁ mahat. -Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa,* 4/7

[26] *Cakāra **caritaṁ** kṛtsnaṁ vicitrapadamarthavat.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa,* 4/1

[27] *Āścaryamidam**ākhyānaṁ** muninā saṃprakīrtitam.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa,* 4/26

[28] *Dharmād arthaḥ prabhavati dharmāt prabhavate sukham.*
*Dharmeṇa labhate sarvaṁ dharmasāramidaṁ jagat.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Araṇyakāṇḍa,* 9/30

[29] • *Satyenottabhitā bhūmiḥ sūryeṇottabhitā dyauḥ.-Ṛgveda,* 10/85/1; *Atharvaveda,* 20/91/11
• *Dakṣiṇāvanto amṛtatvaṁ bhajante dakṣiṇāvantaḥ pra tiranta āyuḥ. -Ṛgveda,* 1/125/6

[30] • *Tatsatyenaiva hūyate.......yadvai satyena hūyate taddevāngacchati.-Śatapatha Brāhmaṇa,* 2/3/1/30
• *Catasro vai dakṣiṇāḥ. Hiraṇyaṃ gaurvāso'śvo na vai tadavakalpate.-Śatapatha Brāhmaṇa,* 4/3/4/7

[31] *Mātṛdevo bhava. Pitṛdevo bhava. Ācāryadevo bhava. Atithidevo bhava.-Taittirīya Upaniṣad, Sikṣāvallī,* 2

Accordingly *satya* is held to be of paramount value among all other virtues counted under *sāmānya dharmas* in Vālmīki *Rāmāyaṇa*. Rāma, the main protagonist himself is the most rigid adherent of *satya*, according to his own statement, *dharma* is rooted in *satya* alone :

*Satyameveśvaro loke satye dharmaḥ sadāśritāḥ.*
*Satyamūlāni sarvāṇi satyānnāsti paraṃ padam.*[32]

*i.e.*, In this world, truth is the Lord; in truth is established righteousness. Everything has truth for its basis. No condition is superior to truth.

*So'haṃ piturnirdeśaṃ tu kimarthaṃ nānupālaye.*
*Satyapratiśravaḥ satyaṃ satyena samayīkṛtaḥ.*[33]

*i.e.*, Why should I not then obey the mandate of my father? My father was of truthful promise and of righteous ways and with the object of observing his promise, he laid on me this (for faithful performance).

It is said in *Rāmāyaṇa* that *satya* is the foundation of all virtues extolled in the Veda. Therefore one should always observe truth:

*Dattamiṣṭaṁ hutaṁ caiva taptāni ca tapāmsi ca.*
*Vedāḥ satyapratiṣṭhānāstasmāt satyaparo bhavet.*[34]

*i.e.*, The Veda, which inculcates gift, sacrifice *homa*, and asceticism, is based on truth.

Coming to the specific obligations (*viśeṣa dharmas*) for householders, it is noteworthy that *ātithya* or hospitality has been a hallmark of Indian culture since Vedic times. In fact it is enumerated as one of the five daily rituals for the householder.

In Kaṭha Upaniṣad, Lord Yama is depicted as a householder and is obliged to take care of his guests who arrive undeclared to his house. It is proclaimed there that the householder, who does not offer water, food and shelter to his guests, loses all of his finest blessings:

*Āśāpratīkṣe saṅgataṁ sūnṛtā ca*
*eṣṭāpūrtte putrapaśūṅśca sarvān.*
*Etad vṛṅkte puruṣasyālpamedhaso*
*yasyānaśnan vasati brāhmaṇo gṛhe.*[35]

*i.e*, (His) hope and expectation, society and pleasantness, (his) reward of good works, sons and cattle, all of them-(all) that doth a Brahman wrench away from the man of little wisdom in whose house he abideth not eating.

Vālmīki depicts the Vedic ideal of hospitality in clear terms even for the ascetics who are delighted to receive Rāma and Lakṣmaṇa with Viśvāmitra at their hermitage:

*Arghyaṁ pādyaṁ tathātithyaṁ nivedyakuśikātmaje.*
*Rāmalakṣmaṇayoḥ paścād akurvannatithikriyām.*
*Satkārṁ samanuprāpya kathābhir abhirañjayan*
*Yathārhamajapan saṅdhyāmṛṣayaste samāhitāḥ.*[36]

*i.e.*, Then giving Kuśika's son water to wash his feet and *Arghya* and extending to him also the rites of hospitality, they next entertained Rāma and Lakṣmaṇa.

---

[32] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Ayodhyākāṇḍa,* 109/13

[33] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Ayodhyākāṇḍa,* 109/16

[34] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Ayodhyākāṇḍa,* 109/14

[35] *Kaṭha Upaniṣad,* 1/1/8

[36] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Bālakāṇḍa,* 23/19-21

> Having experienced their hospitality, they (the guests) delighted them with their talk. And then the saints with collected minds recited their evening prayers.

Besides the above, *Rāmāyaṇa* prescribes daily bath (*snāna*)[37] to be followed by morning prayer (*pūrvā saṅdhyā*),[38] recitation (*japa*) of *gāyatrī* verse[39] and offering of water to the rising Sun in the east as well as to gods, sages and the manes etc. The evening prayer (*paścimā saṅdhyā*) is to be observed[40] facing Sun in the west. Fire ritual (*agnihotra*)[41] is the next item in the daily rites according to Vālmīki and it is also held to be performed twice daily, in the morning and in the evening. Every householder was obliged to maintain the holy fire (*āhitāgni*) in the sacred place (*vedigṛha* or *agnyāgāra*)[42] and offer oblations of clarified butter (*ghṛta*) and cooked food (*pakvānna*) along with his wife.

Vālmīki writes that there was no householder in *Ayodhyā* who did not maintain the holy fire or did not perform the daily fire ritual:

> *Nānāhitāgnirnāyajvā vipro na kṣudro vā na taskaraḥ.*
> *Kaścidāsīdayodhyāyāṁ na cāvṛtto na saṁkaraḥ*[43]
>
> *i.e.*, There were not on *Ayodhyā* persons not lighting the sacrificial fire, or not performing scarifies, or mean minded, or thieving, or engaged in improper occupations, or of impure descent.

In fact the very beginning of *Rāmāyaṇa* depicts Daśaratha performing *aśvamedha* and *pūtrakāmeṣṭi* rituals with his wives[44] and dwells upon the idea of five daily rituals (*pañcamahāyajñas*) in detail as prescribed in the Vedic scriptures like *brāhmaṇas*[45] and *kalpasūtras*[46] as follows:

---

37 *Tamyarṣeḥ paramodāraṁ vacaḥ śrutvā narottamau.*
*Snātvā kṛtodakau vīrau jepatuḥ paramaṁ japam. -Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa, 23/3*

38 *Kausalyā suprajā rāma pūrvā sandhyā pravarttate.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa, 23/2*

39 *Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa, 23/3, 23/18*

40 *Anvāsya paścimāṁ saṅdhyāṁ tatra vāsamakalpayat.- ŚrīmadVālmīkīya Rāmāyaṇa, Araṇyakāṇḍa, 7/23*

41 *Sā kṣaumavasanā hṛṣṭā nityaṁ vrataparāyaṇā*
***Agniṃ juhoti** sma tadā mantravat kṛtamaṅgalā.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Ayodhyākāṇḍa, 20/15*

42 *Taṁ vipram **agnyagāra**sthaṁ vanditvā lakṣmaṇo 'bravīt. - Rāmāyaṇa of Vālamīki, Ayodhyākāṇḍa, 32/2*

43 *Rāmāyaṇa of Vālmikī, Bālakāṇḍa, 6/12*
**Note:-** Obviously this depiction by Vālmīki echoes the well-known proclamation of king Aśvapati from the *Chāndogya Upaniṣad* as follows
*Na me steno janapade na kadaryo na madyapaḥ.*
*Nānāhitāgnirnāvidvān na svairī svairiṇī kutaḥ.-5/11/5*

44 *Cintayānasya tasyaivaṁ buddhirāsīnmahātmanaḥ.*
*Sutārthaṁ **vājimedhena** kimarthaṁ na yajāmyaham.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa, 8/2;*
***Iṣṭiṁ** te'haṁ kariṣyāmi putrīyāṁ putrakāraṇāt*
*Atharvaśirasi proktairmantraiḥ siddhāṁ vidhānataḥ.- Rāmāyaṇa of Vālamīki, Bālakāṇḍa, 15/2*

45 *Pañcaiva mahāyajñāḥ. Tānyeva mahāsatrāṇi bhūtayajño manuṣyayajño pitṛyajño devayajño brahmayajña 'iti. -Śatapatha Brāhmaṇa, 11/5/6/1*

46 *Athātaḥ pañca yajṇāḥ. Devayajño bhūtayajñaḥ pitṛyajḻo brahmayajño manuṣyayajñaḥ iti. - Āśvalāyana Gṛhyasūtra, 3/1/1-2*

- *Devayajña*-which consists of daily offerings into holy fire for different divine forces.[47]
- *Pitṛyajña*-which comprises daily offering of water (*tarpaṇa*) and serving of elders while living (and not after death).[48]
- *Brahmayajña*- which includes daily reading of Vedic texts and recitation of Vedic verses.[49]
- *Nṛyajña* or *Atithiyajña*-which prescribes welcoming and honouring of the undeclared guests by offering them *pādya*, *arghya* and *madhuparka* etc.[50]
- *Bhūtāyajña* or *Balivaiśvadevyajña* - Offering of cooked food to all beings including sages, humans, animals and insects etc. is also enjoined as a daily ritual.[51]

Obviously, the concept of *pañcamahāyajña* is a very ennobling aspect of Vedic culture which is actuated by the feelings of gratitude, reverence, devotion, loving memory and kindliness to all living beings and the environment around oneself.[52]

Notably, recitation of *Gāyatrī mantra* is held to be the most auspicious[53] in Indian tradition since ancient times till date. Vedic scriptures include it under *Brahmayajña* among the five *mahāyajñas*.

Vālmīki not only describes it as a significant daily rite but also includes it in his treatise in such a subtle way that every thousandth verse of *Rāmāyaṇa* is said to begin with the respective letters from the *Gāyatrī mantra* as follows:

- *tat* - *Tapaḥ svādhyāyanirataṁ tapasvī vāgvidāṁ varam.*
  *Nāradaṁ paripapraccha Vālmīkrmunipuṅgavam.*||*1*||
- *sa* - *Sa hatvā rākṣasān sarvān yajñadhnān raghunandanaḥ.*
  *Ṛṣibhiḥ pūjitastatra yathendro vijaye purā.* ||2||
- *vi* - *Viśvāmitraḥ sa dharmātmā, śrutvā janakabhāṣitam.*
  *Vatsa! Rāma! dhanuḥ paśya iti rāghavamabravīt.* ||*3*||

---

[47] *Pakvenānnena vaiśvadevena devebhyo homo devayajñaḥ.-Vaikhānasasmārta,* VI.17

[48] *Yadi bhuktamihānyena deham anyasya gacchati.*
*Dadyāt pravasataḥ śrāddhaṁ na tat pathyaśanaṁ bhavet. - Rāmāyaṇa of Vālamīki, Ayodhyākāṇḍa,* 108/15

[49] *Svādhyāyo vai Brahmayajñaḥ.-Śatapatha Brāhmaṇa,* 11/5/6/2

[50] • *Tasmādāhurna sāyamatithiraparudhya iti. -Aitareya Brāhmaṇa,* 25/2
• *Apramāṇodyo 'tithiḥ sāyaṁ sūryoḍho gṛhamedhinā.-Manusmṛti,* 3/105

[51] • *Atha sāyamprātaḥ siddhasya haviṣyasya juhuyāt. - Āśvalāyana Gṛhyasūtra,* I.2.1
• *Athātaḥ pañca yajñāḥ. Tānetānaharahaḥ kurvīta.- Āśvalāyana Gṛhyasūtra,* III.1.1 and 4

[52] *Rāmāyaṇa of Vālamīki, Ayodhyākāṇḍa,* 109/31-32

[53] *Oṁkārapūrvikāstisro mahāvyāhṛtayo 'vyayāḥ.*
*Tripadā caiva sāvitrī vijñeyaṁ brahmaṇo mukham.*
*Yo 'dhīte'hany ahanyetāṃ trīṇi varṣāṇyatandritaḥ.*
*Sa brahma param abhyeti vāyubhūtaḥ khamūrtimān.-Manusmṛti,* 2/81-82

- *tuḥ - Tuṣṭāṁ vācaṁ* …… …. …. ||4||
- *va - Vanavāsaṁ hi* …… …. …. ||5||
- *re - Rājā satyañca* …… …. …. ||6||
- *ṇi - Nirīkṣya sa* …… …. …. ||7||
- *yaṁ - Yadi buddhiḥ* …… …. …. ||8||
- *bhar - Bharatasyāryasya* … …. …. ||9||
- *go - Gaccha śīghraṁ* …… …. …. ||10||
- *de - Deśakālau* …… …. …. ||11||
- *va -Vandyāste ca* …… …. …. ||12||
- *sya - Sa nirjitya* …… …. …. ||13||
- *dhī - Dhanyā* …… …. …. ||14||
- *ma - Maṅgalābhimukhī* …… …. …. ||15||
- *hi - Hitaṁ maharthaṁ* …… …. …. ||16||
- *dhi - Dharmātmā* …… …. …. ||17||
- *yo - Yasyaṣvikrama* …… …. …. ||18||
- *yo - Yogakṣemaḥ* …… …. …. ||19||
- *naḥ - Na te dadṛśire* …… …. …. ||20||
- *pra - Praṇamya* …… …. …. ||21||
- *co - Cālamārparvatendrasya* … …. …. ||22||
- *da - Dārāḥ putrāḥ* …… …. …. ||23||
- *yāt - Yāmeva rātrim* …… …. …. ||24||[54]

Coming back to the idea of *dharma* in Vālmīki *Rāmāyaṇa* it needs to be noted that Rāma himself is described as an epitome of *dharma*, rather he is said to be *dharma* personified:

*Eṣa vigrahavān dharmaḥ.*[55]

*i.e.*, This one is virtue incarnate.

In other words, Rāma is an ideal human being (*ārya*) in whom all the noble qualities have found shelter:

*Sarvadābhigataḥ sadbhiḥ samudra iva sindhubhiḥ.*
*Āyaḥ sarvasamaś caiva sadaikapriyadarśanaḥ.*
*Sa ca sarvaguṇopetaḥ kausalyānandavardhanaḥ.*
*Samudra iva gāmbhīrye dhairyeṇa himavān iva.*
*Viṣṇunā sadṛśo vīrye somavat priyadarśanaḥ.*
*Kālāgnisadṛśaḥ krodhe kṣamayā pṛthivīsamaḥ.*
*Dhanadena samastyāge satye dharma ivāparaḥ.*
*Tameva guṇasampannaṁ rāmaṁ satyaparākramam.*[56]

*i.e.*, Ever resorted to by the good persons even as the ocean is by the rivers; worthy of being honoured; having an equal regard for all; and capable of filling the heart with ever new sensations. Crowned with all sort of qualities, he enhances the joys of Kausalyā; being like that of the sea in gravity, and that of the *Himvat in patience*. In prowess, he is like Viṣṇu and boasts of the personal attractions of the moon. In anger he resembles the fire raging at the time of dissolution; and in forgiveness, he is like that of the earth. In giving away, he is like the bestower of riches Kubera, and in truth, he is like another *dharma*.

---

[54] Vide Dwijendranath Shastri, *Sanskritasāhityavimarśaḥ*, Bharati Pratishthan, Meerut, 1956, pp. 346-47

[55] *Rāmāyaṇa of Vālmikī, Bālakāṇḍa*, 21/10

[56] *Rāmāyaṇa of Vālmikī, Bālakāṇḍa*, 1/16-19

Ironically, Rāma had to lead a life which was not a bed of roses but was filled with a series of difficult, baffling and tragic situations and is depicted by Vālmīki as to how he and other characters of his *kāvya* respond to such testing situations and ultimately tide over these problems without swerving in the least from the highest principles of spiritual life as enunciated in Vedic scriptures.[57]

Alongwith Rāma who "typifies the spirit of good," several other characters of Vālmīki's *Rāmāyaṇa* are also depicted as the embodiments of distinct moral virtues: Daśaratha represents an ideal of paternal affection, Lakṣmaṇa and Bharata of fraternal love, Sītā of "purity, chastity and wifey fidelity,"[58] Sugrīva of friendship, Hanumān of devotion and service to the master. In fact, sage Aurobindo is so much impressed by the morality that breathes in the *Rāmāyaṇa* that according to him,

> The *Rāmāyaṇa* gives us the picture of entirely moralized civilization containing indeed vast material development and immsense intellectual power, but both moralized and subordinated to the needs of purity of temperament and delicate ideality of education.[59]

Moreover, Vālmīki's *Rāmāyaṇa* appears to be an ideal treasure as far as the following familial values proclaimed in the Vedic culture are concerned:

*Anuvrataḥ pituḥ putro mātrā bhavatu saṁmanāḥ.*
*Jāyā patye madhumatīṁ vācaṁ vadatu śantivām.*[60]

> *i.e.*, May the son act in accordance with the father's wishes; may he be of one mind with the mother as well. May the wife talk to her husband in words sweet as honey and soothing.

Obviously, the above proclamation seems to be personified in the narrative of Vālmīki where Rāma is shown as the most obedient son to his father, equally caring one for his mother and Sītā is depicted as the ideal wife who addresses her husband '*āryaputra*' as per the Vedic tradition while Lakṣmaṇa and Bharata represent the loving brothers in accordance with the following Vedic ideal:

*Mā bhrātā bhrātaraṁ dvikṣat mā svasāramuta svasā.*[61]

> *i.e.*, Let no brother hold malice against a brother, nor a sister against her sister.

What follows from the above is that *dharma* in Vālmīki's *Rāmāyaṇa* or in the entire Vedic tradition for that matter, is not just an exclusive pursuit; rather it is an inclusive idea which incorporates the concept of desire (*kāma*) and also aims at obtaining material pleasures (*artha*) and enjoying them without hindering the path of *dharma* or harming anyone else's interest as laid out in all the Vedic scriptures. The same has been beautifully delineated by Vālmīki in his *Rāmāyaṇa.*[62] It is worth noticing here that *Rāmāyaṇa* speaks of *trivarga* only, idea of *caturvarga* is not found in it; although the word *mokṣa* appears therein, yet its conception is not as clear as it is in Mahābhārata while the idea of *svarga* (heaven) is much more clearly highlighted in *Rāmāyaṇa.*

---

[57] *Ṛtaṁ śaṃsanta ṛju dīdhyānā divasputrāso asurasya vīrāḥ.*
*Vipraṁ padamaṅgiraso dadhānā yajñasya dhāma prathamam mananta.*- *Ṛgveda*, 10/67/2; *Atharvaveda*, 20/91/2

[58] *Rāmāyaṇa*, Translated into English Prose from the Original Sanskrit of Vālmīki, *Bālakāṇḍam*, Edited and Published by Manmatha Nath Dutt, Girish Chandra Chackravarti Deva Press, Calcutta, 1891, Introduction, p.1 and p.4

[59] Aurobindo, *Kālidāsa*, Arya Sahitya Bhawan, Calcutta, 1929, pp. 6-7

[60] *Atharvaveda*, 3/30/2

[61] *Atharvaveda*, 3/30/3

It may not be out of place to mention here that most of the characters in Vālmīki's *Rāmāyaṇa*, as in today's society, are followers of *artha* and *kāma* only. They not only seek sensual pleasures but also at times argue against *dharma* because it is not easily visible. But the author of *Rāmāyaṇa* has refuted their viewpoint and demonstrated that ultimately it is *dharma* which should regulate *artha* and *kāma* if one aspires to succeed.

*Rāmāyaṇa* proclaims at several places that the path of *dharma* entails severe difficulties,[63] while *artha* and *kāma* bring immediate gratification of the senses. But finally it is through *dharma* alone that mental peace and spiritual joy are experienced. Besides the idea of *dharma*, Vālmīki also throws ample light on the concepts of *kāla*, *daiva* and *karma*; the last one of these is described in numerous details and at several places. Other two are in fact the corollaries to the theory of *karma*, because the dichotomy of human endeavor (*karma*) and fate (*daiva*) or time (*kāla*) is debated a lot in the entire Indian philosophical tradition. Notably Vālmīki uses seven epithets to denote the idea of fate, namely: *daiva, kāla, vidhi, bhāgya, kṛtānta, niyati and bhavitavyata.*

Most of the characters portrayed in Vālmīki *Rāmāyaṇa* are shown to believe in the idea of fate more strongly. But actually the author of *Rāmāyaṇa* strikes the middle course; according to him success is invariably attained with a union of hard work and fate:

> *Daivaṁ puruṣakāreṇa yaḥ samarthaḥ pratibādhitum.*
> *Na daivena vipannārthaḥ puruṣaḥ so 'vasīdati.*[64]

> *i.e.*, He, who can avert the consequences of destiny by dint of his manliness, does not lose heart even in the face of his interest being endangered by it.

The message of *Rāmāyaṇa* is therefore quite clear and totally in consonance with the Vedic view. Evidently the blending of both the fate and fatigue is the Vedic dictum as will be clear from the following statements-

- *Na mṛṣā śrāntaṁ yadavanti devāḥ.*[65]

  *i.e.,* No penance is practised in vain, since the Divine powers protect (the diligent ones).

---

[62] *Kāmārthaguṇasaṁyuktaṁ dharmārthaguṇavistaram.*
*Samudramiva ratnāḍhyaṁ sarvaśrutimanoharam.- Rāmāyaṇa of Vālmikī, Bālakāṇḍa,* 3/8

[63] Cf. The following statement of Manu:
*Adharmeṇaidhate tāvattato bhadrāṇi paśyati.*
*Tato sapatnān jayati samūlantu vinaśyati. -Manusmṛti or Manavadharmashastra,* 4/174
Pandit Girija Prasad Dwivedi, Naval Kishore Vidyalaya, Lucknow, 1917,

[64] *Rāmāyaṇa of Vālmīki, Ayodhyākāṇḍa,* 23/17

[65] *Ṛgveda,* 1/179/3

- *Na ṛte śrāntasya sakhyāyaḥ devāḥ.*[66]

  *i.e.,* The Divine forces do not help those who do not toil (themselves).

- *Icchanti devāḥ sunvantaṁ na svapnāya spṛhayanti.*[67]

  *i.e.,* Nature's bounties favour those who are active in (selfless) work; and they do not like those who indulge in sleep.

Vālmīki also re-iterates the above view when he says that one should continue making persistent efforts to achieve one's desired goal because after going through all the adversities in life, bliss is bound to come to human beings, may be after a long wait:

*Eti jīvantamānando naraṁ varṣaśatādapi.*[68]

*i.e.,* A man, if alive, may attain to joy even after a century.

The *Rāmāyaṇa* is primarily a *dharmaśāstra,* but it deals with polity, administration, diplomacy, war and other such topics also which fall within the domain of *Arthaśāstra.* The principles of good governance and democracy are exemplified well in the delineation of *Rāmarājya* in *Rāmāyaṇa* (while the contrary situation is depicted in the kingdom of *Rāvaṇa*).[69] In fact it is this idea of *Rāmarājya* that has been the dream and desire of Indian people across ages and actualisation of this idea will be the real result of reading and following the ideals of Rāma as enunciated by Vālmīki in his *Rāmāyaṇa*.

As already mentioned, *Rāmāyaṇa* is a poetic narration of the story of Rāma; a perfect human being accomplished with all the noble virtues. But it must also be mentioned that this is neither an ordinary poetry nor just a fancy narrative - otherwise it could not have sustained itself for such a long time and would not have influenced the minds and hearts of people all over the world. It is not without reason then, that there have been different *Rāmāyaṇas* authored by various persons in several countries of the subcontinent.[70]

In Sanskrit itself, we have a version of Rāma story titled *Adhyātma-Rāmāyaṇa*, which reminds the reader at every turn that Rāma was conscious of his divinity at all times although he continued to behave like an ordinary man, suffering patiently the sorrows that fell to his lot. As is well-known, this is not the real intention of Vālmīki in his *Rāmāyaṇa* nor the Vedic view which Vālmīki is presenting. Besides, there have been various interpretations of Vālmīki *Rāmāyaṇa* which point out numerous subtle elements hidden behind this seemingly simple story garbed in the disguise of poetry. Accordingly there is one interpretation which equates *Rāmāyaṇa* with the *arthapañcaka* (five entities) doctrine of the Vaiśnavas, stating Rāmā to be God, Lakṣmaṇa, the soul, seeking grace of God (*śaraṇāgati*) as the means (*upāya*) and attainment of God as the goal (*phala*).[71]

---

[66] *Ṛgveda*, 4/33/11

[67] *Ṛgveda*, 8/2/18; *Atharvaveda*, 20/18/3

[68] *Rāmāyaṇa of Vālmīki*, *Yuddhakāṇḍa*, 126/2

[69] Vide Ramashraya Sharma, *A Socio-Political Study of the Vālmīki Rāmāyaṇa*, Motilal Banarasidass, Delhi, 1971, p.447

[70] Vide V. Raghvan (ed.), *The Rāmāyaṇa Tradition in Asia*, Sahitya Akedemi, Delhi, 1980

[71] Vide Swami Nihsreyasananda, "The Culture of Rāmāyaṇa" in *The Cultural Heritage of India*, Vol. II, p.28

Ādi Śaṅkara is said to have made another metaphorical statement regarding the story of Rāma when he says:

> *Tīrtvā mohārṇavaṁ hatvā rāgadveṣādirākṣasān.*
> *Yogī śāntisamāyuktaḥ ātmārāmo virājate.*[72]

*i.e,* After crossing the ocean of delusion and killing the monsters of likes and dislikes, the Yogi who is united with peace dwells in the glory of his own realised Self……as an *Atmārāmah.*

There is another yogic interpretation of Vālmīki *Rāmāyaṇa* by a modern Marathi writer, Yogeshwara Manohara Harkare. According to him king Daśaratha signifies the bonded soul who is riding the chariot (body) with ten horses (sense organs), Kausalya is the intellect (*buddhi*) while Rāma is the self (*ātmā*)- aloof from all of them; Sītā is the affectionate experience (*rājasī anubhūti*) of the self, world is the forest (*ḍaṇḍaka*) and Rāvaṇa is a form of ego (*ahaṁkāravṛtti*) which enters this forest.[73]

It goes without saying that this interpretation is based on the widely-known Vedic allegory from Kaṭha Upaniṣad which runs as follows:

> *Ātmānaṁ rathinaṁ viddhi śarīraṁ rathameva tu.*
> *Buddhintu sārathiṁ viddhi manaḥ prgrahameva ca.*[74]

*i.e.,* Know thou the self as occupier of the chariot, but the body as the chariot itself; but know thou the intellect (*buddhi*) as charioteer and also the mind (*manas*) as rein.

The fact has also been acknowledged by the above interpretor himself. But there are several other scholars who do not subscribe to such subtle philosophical ideas to be imposed on the simple story of *Rāmāyaṇa* as it is against the original view of Vālmīki.

On the basis of above brief outline of *Rāmāyaṇa*, it can be said that Vedic culture is certainly the first and the foremost; in the words of Veda itself:

> *Sā prathamā saṁskṛtirviśvavārā.*[75]

*i.e.,* That is the first culture appreciated by all.

*Rāmāyaṇa* is of course post-Vedic and so it has naturally drawn upon the ideas of Vedic culture and represented them in an interesting garb of a popular narrative.

It needs to be noted that the theme of Vālmīki *Rāmāyaṇa's* Vedic connection was first dealt in detail by Herman Jacobi in his *Das Rāmāyaṇa*. Although it is not possible to agree with him in his assertion that *Rāmāyaṇa* is a blending of historic event with the Vedic myth,[76] yet his idea that the abduction of Sītā and the killing of Rāvana has its source in the Ṛgveda can also not be completely ignored. It is a well-known fact that Sītā, is held to be the goddess of agriculture in Ṛgveda,[77] while Sītā, the heroine of *Rāmāyaṇa*, is said to have born from and finally shown disappearing in the arms of mother earth. Not only this, Rāma is said to represent the divine king Indra and his fight with the demon king Rāvaṇa is like the portrayal of Vedic Indra-Vṛtra battle. In fact, Jacobi also hints at the name of Rāvaṇa's son Indrajit being based on the Ṛgvedic epithet for Vṛtra i.e. Indraśatru; of Hanuman's name Māruti being based on Indra's associates Maruts and of the demoness Saramā[78] (who consoles Sītā in Ashoka-Vatika) to the Ṛgvedic female messenger of Indra bearing the same name.

---

[72] *Ātma-Bodha* of Śrī Ādi Śaṅkarācārya, commentary by Swami Chinmayananda, Central Chinmaya Mission Trust, Mumbai, 2003 (Reprint), Verse-50

[73] Y.M. Harakare, *Rāmāyaṇa-Rahasya* (Hindi), IVth Edition, Nagpur, 1996

[74] *Kaṭha Upaniṣad,* 1/3/3

[75] *Yajurveda,* 7/14

[76] Hermann Jacobi, *Das Rāmāyaṇa,* Verlag Von Friedrich Cohen, Bonn, 1893, p. 86, 127 and 131

[77] *Ṛgveda,* 4/57/6; *Atharvaveda,* 3/17/8

What follows from the above is that *Rāmāyaṇa* has been the most authentic and the most remarkable representation of ancient Vedic culture.[79] As regards the influence of *Rāmāyaṇa* on the subsequent literature and culture of India, it can be asserted again in clear terms that almost all the Indian languages and sages of Indian culture have been profusely indebted to it in one way or the other.

To sum up, this much would suffice to say without exaggeration that as long as there is a fight between good and evil, as long as the ideal of a noble human being is respected in a society and the humanity craves for peace and prosperity, *Rāmāyaṇa* would be relevant not only to Indian culture but any other culture for that matter. *Rāmāyaṇa* is meant for a child as well as an elderly person, a ruler and the ruled, a sage and his disciples, a good individual and an evil minded one, a lustful man and a chaste woman, a mother and the son, an elder brother and his younger siblings, a hermit and the householder, and last but not the least, a human being and his relationship with the Nature around him, which is the crux of Vedic vision.

The inherent relation of *Rāmāyaṇa* and Vedic culture cannot be explained in a better way than the bonding between human beings and their environment which has been abundantly and beautifully depicted by Vālmīki. The ancient Indian culture since Vedic times, has been integral and so intimately connected with each and every entity of the cosmos that the Vedic had realized the ultimate truth in the lap of mother Nature:

*Upahvare girīṇāṁ saṁgathe ca nadīnām.*

*Dhiyā vipro ajāyata.*[80]

> *i.e.,* The all-wise Lord manifests Himself to them who pray in the valleys of mountains and at the confluence of streams.

Likewise the story of *Rāmāyaṇa* unfolds in various images of Nature. Although the protagonist of the epic himself and most of the characters of Vālmīki are from a royal family, yet the narrative is not confined to the regal palace - rather it captures all the shades and colours of

---

[78] *Ṛgveda, Saramā-Paṇi Saṁvāda Sūkta,* 10/108

[79] C.V. Vaidya, *The Riddle of the Rāmāyaṇa,* Meharchand Lachhmandas, Delhi, 1972, Reprint edition, pp. 7-8

[80] *Ṛgveda,* 8/6/28

Nature in different aspects of the universe, be it mountains, rivers, lakes, oceans, clouds, dawn, dusk, flowers and fruits etc. The trend has been transmitted to the subsequent literature as well and almost all the Sanskrit poets have described different forms of Nature in their works. This speaks a lot about the human care and concern for natural surroundings and needs to be emulated in contemporary times as well.

In fine, it can be concluded that *Rāmāyaṇa* is a rich reflection of the universal and eternal message of Vedic culture, which is so vast and deep that it is not possible to present all its aspects in a small paper of this size. Nonetheless, above selective presentation is sufficient to demonstrate that Vālmīki *Rāmāyaṇa* is not just an impressive poetry but also a legitimate legacy of Vedic culture.

*Chanting of Adityahrudayam 'Yuddakanda' from Ramayana by the students of Sandipani Gurukula. Direction: Smt. Rohini Chakravarthy*

## Select Bibliography

### Primary Sources:

1. *Rāmāyaṇa,* Translated into English Prose from the Original Sanskrit of Vālmīki, Bālakāṇḍam, Edited and Published by Manmatha Nath Dutt, Girish Chandra Chackravarti Deva Press, Calcutta, 1891.
2. *Rāmāyaṇa of Vālmīki* Sanskrit text with English translation, Vols. I-IV, English translation by M. N. Dutt, Edited and Revised by Ravi Prakash Arya, Parimal Publications, Delhi, 2013.
3. *The Rāmāyaṇa of Vālmīki* with the commentary (*Tilaka*) of Rāma, Wāsudev Laxmaṇ Śāstrī Paṇśīkar (ed.), Pandurang Jawaji, Proprietor of the "Nirṇaya Sagar" Press, Bombay, 1930, Fourth revised edition.
4. *Ṛgveda* with English translation by Swami Satya Prakash Saraswati and Udaya Vir Viraj, Veda Pratishthana, Arya Samaj Mandir Marg, New Delhi, 1996.
5. *Atharvaveda* with English translation by Swami Satya Prakash Saraswati and Udaya Vir Viraj, Veda Pratishthana, Arya Samaj Mandir Marg, New Delhi, 1996.
6. *Yajurveda* with English translation by Swami Satya Prakash Saraswati and Udaya Vir Viraj, Veda Pratishthana, Arya Samaj Mandir Marg, New Delhi, 1996.

### Secondary Sources

1. C.V. Vaidya, *The Riddle of the Rāmāyaṇa,* Meharchand Lachhmandas, Delhi, 1972, Reprint edition.
2. Hermann Jacobi, *Das Rāmāyaṇa,* Verlag Von Friedrich Cohen, Bonn, 1893.
3. K. Krishnamoorthy (ed.), *A Critical Inventory of Rāmāyaṇa Studies in the World,* Vol.I, Sahitya Akademi, New Delhi, 1960.
4. Ramashraya Sharma, *A Socio-Political Study of the Vālmīki Rāmāyaṇa,* Motilal Banarasidass, Delhi, 1971.
5. S.L.N. Simha, *The Ramayana: The Story and Significance of Valmiki's Epic,* The Dharma-Artha Centre, Bombay, 1984.
6. *The Cultural Heritage of India,* Vol. II, Swami Nityaswarupananda, Secretary, The Ramakrishna Mission Institute of Culture, Calcutta, 1937.
7. V. Raghvan (ed.), *The Rāmāyaṇa Tradition in Asia,* Sahitya Akademi, Delhi, 1980.

❑

# Valmiki's Ramayana and Dharmashastra

**Dr. Urmi Sameer Shah**

Dharmashastra consists of fundamental texts like Dharmasutras and Smṛutis depicting life of the society in all its detailed aspects of their respective contemporary times and simultaneously laying down norms for the people to follow. Tradition incorporates the two Epics Ramayana and Mahabharata as well as Puranas within the realm of Dharmashastra as they project the same subjects through narrative/-s. The present paper discusses Valmiki's Ramayana (VR) from Dharmashastra point of view.

## 1. Introduction

Dharmashastra consists of fundamental texts like Dharmasutras and Smṛutis depicting life of the society in all its detailed aspects of their respective contemporary times and simultaneously laying down norms for the people to follow. Tradition incorporates the two Epics Ramayana and Mahabharata as well as Puranas within the realm of Dharmashastra as they project the same subjects through narrative/-s. The present paper discusses Valmiki's Ramayana (VR) from Dharmashastra point of view.

### 1.1 Dharmākūtam – Author and Date:

VR has not only been a source to a great expanse of literature, but a number of commentators have commented upon it. Among these, a little known commentary is Dharmākūtam (Dharm.) authored by Tryambakraya Makhi, whose father Gangadhara and he himself were ministers of Ekoji (1674-1687 CE), the founder of the Maratha kingdom of Tanjore. Makhi also remained as a minister to Ekoji's successors Shahaji I and then to his brother - successor Sarabhaoji I (1676-1736 CE) at whose instance he wrote this commentary. This was a period during which a vast amount of Sanskrit literary works came to be created, such as Tripuravijaya-champu, Achara-navaneeta, Raghava-abhyudaya, the poem Mukunda-vilasa and Uttarachampu by Makhi's brothers and others.

The sources narrating the history of the Maratha kings of Tanjore unanimously refer to (1) Dharm. as a rare commentary on VR interpreting it as a Dharmashastra text and also (2) noting important historical information of the patron Maratha kings. Tryambakaraya Makhi notes that he completed Dharm. in the Shaka Samvat 1641 on the first day of Shukla-paksha, Saturday, in Swati constellation, in the month of Ashvayuja of the Vikari year (corresponding to 3rd October, 1719 CE). Thus this commentary belongs to the early part of the 18th century CE while Makhi's period was between later half of the 17th CE and earlier half of 18th CE.

The present paper aims at presenting the first point, namely, Dharm. being a Dharmashastra text on VR – the commentator's contention, quoting some illustrations from the commentary.

**1.3 Text** - The editors of the Dharm. have noted that the manuscript of Dharm. is to be found only in Saraswati Mahal Library and that Uttarakanda is not commented upon by the commentator. Of all six parts of the commentary only Sundarakanda (SK) is critically edited due to its unusual nature, namely, being very significant in the development of the story and poetic beauty according to the commentator. Even today this Kanda with Hanuman as the hero of the sequence of the events of the search of Sita and his assessment of Ravana by him in the role of Rama's *dūta* (emissary) holds a great significance in the religious tradition. It may be noted that the entire commentary is taken up for translation by IIT Kanpur with some other commentaries.

## 2. Dharm. Commentary –

**2.1 Title, meaning and aim:** The title of the commentary Dharm. has two words *Dharma+ ākūtam* connoting “that which gives meaning or purpose of *dharma*”. In the two verses that preceed the colophon of Dharm. on Balakanda (BK) the commentator offers obeisance to Rama whose sole inclination was to abide by *dharma*. The colophon of SK also endorses Makhi’s aim, namely, to reveal the core/*tātparya* of the VR in the form of *dharma* and hence the title – Dharmākūtam – *Iti Śrīmat-Tryambaka-rāya-makhi-viracite Śrīmad-Rāmāyaṇa-dharma-tātparye Dharmākūte sundara-kāṇḍaḥḥsampūrnaḥII*

This has been elaborately dealt with by Tryambakaraya Makhi in the general introduction to the text where he notes that he has selected only some verses from VR to prove his proposition that it is a text on Dharmashastra (though it is a voluminous work). He announces this purpose as *.....rāmāyaṇam .....bahubhir-vyākhyātṛbhi...bahu-prakāreṇa-upabṛṁhitam....atra na kair-api-idamparyeṇa śrīmato rāmāyaṇasya dharma-tatparatā sphuṭīkṛtā-iti tat-sphuṭīkaraṇārtham-eva-ayam granthakṛt Tryambaka-makhī Śarabhaji-kṣitipāla-pracodito grantha-ratnam-idam Dharmākūtam nāma nirmame iti niśpracam I* (paragraph 1, *Prāṅmukham* to the commentary) that is, -The previous great commentators and authors who composed works on Valmiki’s text have not focused on it being an exposition of *dharma*; while it is he who has taken up this important view and expounded it thoroughly and elaborately though with the help of select verses.

Makhi further elaborates – *Na kim-āveditam-atra sarveṣām viṣṇu-avatārāṇām duṣṭa-nigraha-śiṣṭa-paripālana-pūrvakam dharma-sampratiṣṭhāpakatvam I Tat-nirāśaṅkam samavadhatta yūyam dharmaj–asya dharmānuṣṭhāpayituḥḥ- dharmātmanaśca śrīmato rāmacandrasya caritopavarṇanam śrīmad-rāmāyaṇe dharma-tattvāvedana-phalam-eva-iti I* (ibid paragraph 2).

## 2.2 Further justification of the commentary-VR and *dharma:*

Makhi further justifies his proposition under the sub-section titled *Rāmāyaṇasya dharmāvedakatā* that Valmiki resorted to the poetic form of literature to propagate both (1) *dharma* through narrating the life of an ideal man - Rama and (2) *adharma* through narrating the life of an evil man - Ravana (ibid - *puruṣa-dhaureyasya ...caritopavarṇanena samagro dharmaḥ sadācāra-lakṣaṇaḥ, tathā yad-vidviṣām caritopavarṇanena-adharmaśca).* He further explains that analysing characters of Sita, Ravana and others, Narada’s sermon and Brahma's boon also, it is evident that this epic is rooted in the Vedas and their aims, namely, (3) to achieve the ultimate goal of human life and (4) to grace the society at large to inspire towards it, are realised. Therefore this epic is known by three titles - Ramayanam, Sitacharitam (by following *dharma*) and Dasha-shirovadham (by following *a-dharma*). This is further elucidated by Makhi explaining that *dharma* is twofold - *pravṛtti-lakṣaṇa* and *nivṛtti-lakṣaṇa;* Rama and Ravana represent *dharma* and *adharma* respectively (*dvi-prakāroSpyayam dharmo bhagavatā Vālmīkinā Śrīmad-rāmāyaṇe eva sunipuṇam-āvedyate.* Hence the title of the commentary – *Ayam ca Dharmākūta-nāmā prabandhaḥ*

*Śrīmad-rāmāyaṇe kutra kutra dvi-prakāroSpi dharmaḥ katham katham-āveditaḥ iti sunipuṇam vicārya sopaṣṭambham nirdhārayati-iti-anvartham-eva nāma dharati – Dharmākūtam- iti I*

**2.3 Primary Hypothesis: VR as a Dharmashastra Text** - *Dharm.* elaborately discusses many topics of Dharmashastra including Polity, sociological aspects, norms that can be generally applied to lead a good life, women, marriage, *dāyabhā*, performance of sacrifice, king and the army and other topics falling under warfare in the realm of Polity and innumerable others. Tryambakaraya Makhi takes up issues related to some other branches of knowledge as well and elucidates them so as to establish his primary hypothesis firmly. These occur in abundance such as omens (SK 1.36cd,37ab. Dharm. page 38), warm reception due to a guest (SK 1.140. Dharm. page 42), need for patience and perseverance for successful completion of a task (SK 1.189. Dharm. page 44.), types of women (SK 9.37-39. Dharm. page 118), sleeping women in Ravana's harem and suggestions of their postures in sleep (SK 9.44-65. Dharm. pages 129-131) and many other subjects.

## 3. Presentation of some illustrations from Dharm.

An erudite scholar of the lores including Mimamsa, epistemology and others including literary authors like Kalidasa and others, Makhi discusses his proposition at length with illustrations from VR with profuse quotations from Dharmashastra and other texts available to him after elaborately defining the term and concept of *dharma* in the introductory part of the commentary.

In my paper I have quoted a few from these to project the commentator's contention as follows -

### 3.A. Social issues

### a) Marriage (*Vivāha*) and related issues –

i) Rama wins Sita's hand in the *svayamvara* by his virtues and skill - valour; therefore she is *vīrya-śulkā* (BK 71.22. Dharm. pages 315-318). Janaka's words here are – *Vīrya-śulkām mama sutām sītām sura-sutopmām. Śulka* generally means *kraya* – sale/purchase of a commodity through wealth or condition. Therefore this is prohibited in marriage. Makhi quotes Manu, Bodhayana and Kashyapa for this point. He observes that in this case though Rama's valour is apparently the medium of sale/purchase, it is improper. He then also shows that this marriage falls under neither category of the eight types of marriages prescribed by the Dharmashastra texts (BK 73.25, 26. Dharm. 309-314). However, discussion takes a turn when Makhi says that all the Dharmashastra texts hold a consensus on accepting *vīrya,* that is, *śaurya* or valour as *śulka* as it is the fundamental virtue or nature of a kshatriya as quoted in the commentary…*śreṣṭho vīrye kṣatriyaḥ smṛtaḥ* (BK 71.22. Dharm. page 316). Therefore *śulka* is just a matter of formality to find and get a *vīrya-vara* for marriage among kshatriyas. Consequently Makhi opines Sita and Rama's marriage as a *prājāpatya-vivāha* drawing support from Manu, Ashvalayana, Gautama, Apastamba and Devala (ibid).

ii) Makhi quotes Manu, Gautama, Ashvalayana and a vedic text to justify Janaka's statement to Rama that his giving away Sita in marriage to him (*kanyā-dāna*) was his *brāhma-dharma* (BK 73.25, 26. Dharm. pages 309-314).

iii) Vishvamitra praises Janaka's decision to give his younger daughter Urmila in marriage to Lakshmana as both the bride and the groom have *sadṛśo dharma-sambandhaḥ sadṛśo rūpa-sampadā* (BK 72.3. Dharm. pages 302-303). Manu, Ashvalayana, Yama, Yajnavalkya, Gautama, Mahabharata and others are quoted to support this view.

iv) Here Makhi also includes the issues of *gotra* subsequent *a-sapiṇḍatva* with similar supportive quotations (ibid page 305).

**b) Issues related to women -**

**i) Ethics in killing a woman** ( *strī-vadha/hatyā*) –

BK 24-26 narrates the episode of the demoness Tataka and her being killed by Rama at the instance of Vishvamitra. The sage narrates the incident of Agastya's curse turning her into a demoness transforming her nature. Subsequently she started killing divinities and brahmanas and destroying lands. Here the commentator uses a typical Dharmashastra term for her, namely, *anātreyī* (a woman who has not bathed after her menstrual period.... Gautama is quoted here in support of this interpretation). Reason for killing her was justified – she was an evil woman – *duṣṭa-strī-vadha* (Dharm. pages 129-130) due to which this ruthless act was very much needed for social welfare according to Vishvamitra. Rama was obliged to carry out the sage's wishes as per Dasharatha's instruction. Considering all these points Rama geared himself up for this prohibited task (*Strī-vadha-niṣedhe sati-api tādakā-vadham-angīkṛtavān I..... guru-vacana-paripālanam-eva garīyān dharma iti rāmeṇāgīkṛtam* I) (BK 26.1-6. Dharm. pages 131-132).

The commentator highlights Rama's - *Dharmātmā* - conscientious pondering and logically examining the reasons on the task he had to execute and ultimately kill Tataka by inciting her. This would create situation whereby he would be compelled to kill her, thus not directly avoiding the heinous act and taking upon himself censure of killing a woman.

Here an important point of Dharmashastra emerges according to Makhi, namely, that of **ethics in the context of dealing with women**. In addition to the above episode we also find in SK the deity of Lanka knowing the lies of Hanuman and punching him powerfully with her fist. However, Hanuman controlled himself despite his terrible reactive anger as not assaulting women was the ethical norm (SK 3.40cd, 41ab. Dharm. page 72).

**ii) Education -** An important reference to the status and education of women is revealed by a well-known verse – *Sandhyā-kāla-* (SK 14.49. Dharm. page 153); (in fact I am inclined to take it as illustrative of Sita's brilliant character). This comes in the context of Hanuman spotting a beautiful place with a fully blooming golden Ashoka tree by the side of a clear water-body. Hanuman intuitively feels that Sita would be shortly coming there to perform her *sandhyā*.

Here we find an elaborate and thorough discussion on the performance of *sandhyā* ritual by a woman which is rarely mentioned in any other Sanskrit literary work. Makhi quotes Dharmashastra works which mention right to sacred thread, Vedic study and hence the right to perform *sandhyā* only to men of the upper three castes; thus these were specifically prohibited for all women and *śūdra*s in later texts. Makhin defends saying that this situation prevailed in later times, thus answering this controversial issue through *yuga-bheda* – difference in times. He opines at the end that Valmiki's depiction of this issue is proper as the incident belonged to the Tretayuga. He supports his argument by quoting from Yama-smruti, Paribhaṣha on the Anukramani of the Shakala Samhita of the Rgveda, Arsheya Brahmana, Bruhadaranyakopanishad, Harita Smruti and Manu.

Another important and related issue is again with reference to female education; Sita was well-conversant with Polity as clearly suggested by her questions to Hanuman (SK 36.7-11, 15-30. Dharm. pages 258-262). (It is interesting to note that such questions almost always begin with the word *kaccit* as in Ramayana 2.94 and in Mahabharata 2.5).

One must also note Sita's reminder to Rama that *dharma* was subtle. Kings had one or the other *vyasana* – vice. Hence when a kshatriya wields bow and arrow fuel may be added to fire. Sita cautions Rama not to enter into vengeance with demons as well as killing without cause. That was her wish and she had an intuition not to enter the Dandaka forest (Aranyakanda – AK 9., 3, 12cd, 15, 25-27, 30, 33 Dharm. pages 30 – 32, 43, 44). This shows her conversance with *kshat-dharma* with an alert and conscientious mind suggesting education and training befitting her as Janaka's daughter.

**iii) *Strī-dhana* and financial position –** Dasharatha informs Kausalya about Rama's coronation as Heir Apparent the next day. Out of joy and happiness she gives away liberal gifts of gold and other valuable things. Here the issue that is discussed is that since woman does not possess any wealth how was Kausalya able to give this *prīti-dāna.* Manu is quoted here saying that wife is one of the three persons who cannot possess wealth as they are to be *a-dhana.* But then Manu is again quoted regarding six types of *strī-dhana* with elaborations. (This discussion occurs at BK 74.3-6. Dharm. pages 320-323 among which one type of *dhana* is *kanyādhana* which is given in plenty to Sita and her sisters at the time of their marriage). Therefore Makhi observes – *Tasmāt striyā api nyāyato dhanā gamstatra svāmitvam ca* (AYK 3.47, 48. Dharm. volume II, part I, pages 45-47).

In Yuddhhakanda (YK) after the coronation when Sita asks for Rama's permission to gift her divine apparels and ornaments, necklace to Hanuman, Makhi observes in the same strain – *svakīyasya-api vastunaḥ bharturanujnayā strīṇām praśastam* (Dharm. Page 424 as mentioned in the Index to subjetcts)

**iv) Other Issues about Women** - The ninth *sarga* of SK is full of varied subjects from the point of view of Dharmashastra with appropriate verses, such as - Ravana's exorbitant wealth and prosperity parallel to those of Indra, Kubera, Yama and other divinities to be the result of his severe austerities (SK 9.8,9,31. Dharm. page 111) upheld by profuse quotations from Mahabharata, Puranas and Smrutis, description of different categories of women (especially of the *padminī* type in Ravana's harem (supported with various quotations and elaborations from texts like Smara-dipika, Anaṇga-ranga, Manusmruti, Manava Dharmasutra, Apastamba Dharmasutra, Yajnavalkya-smruti and Bodhayana Dharmasutra), absence of any sign of gambling – a great vice with royalty – a virtue of Ravana. The later part of this very *sarga* has a long list of verses describing how the women in Ravana's harem who were extremely attached to him passed their time in his absence presents an interesting depiction of the social condition of women and their psyche in wealthy polygamous homes of royalty indirectly leading to even to sexual orgies and lesbianism. Some more verses are then given to assert this point.

## 3.B. Socio - Political –

### *Dāyabhāga* and the Heir Apparent –

By the law of primogeniture in the Raghu dynasty as well as being the eldest son of the eldest queen (*jyaiṣṭhineya - mātṛtaḥ jyaiṣṭhyam api)* Rama has not only preference (*prābalya*) but right to be the Heir Apparent to the throne of Ayodhya. Other qualities of Rama make him further eligible for this are that Kausalya is Dashartha's *sadṛśī bhāryā,* a kshatriya queen and therefore, Rama is *sadṛśaḥ sutaḥ* who is most virtuous – *guṇaiḥ śreṣṭhaḥ* ; therefore he is the dearest and most eligible prince for the best *dāyabhāga* - the kingdom (AY 3.40. Dharm. pages 31-40). Makhin supports this by citing Apastamba, Gautama, Katyayana, Mahabharata and some untitled Smrutis (ibid). Incidentally in the commentary on page 37 he discusses an allied point, namely, the time when *dāya* should be given – when one is alive or it is received on death of the person whose wealth/property is to be distributed.

In the context of VR we need to remember this point under discussion as it came in clash with Dasharatha's personal commitment of *śulka* to Kaikeyi's father and the consequences (See my paper - *SHULKA* IN THE INDIAN TRADITION - presented at the 14th World Sanskrit Conference, Kyoto, Japan, September, 2009, Section 5 – Epics and Puranas: Cultural Contextualization of Women. Published in the Journal of the Oriental Institute, Vadodara, volume 59, no.s 1-2, September 2009 – December 2009 Issue, pages 35-52).

## 3.C. Few Aspects of Polity –

### i) *Rājaguṇas - Ātmaguṇas of king –*

We are aware that VR opens with Valmiki's query to know the life of an ideal man in answer to which Narada narrates Rama's life. Dharm. on AYK opens with the description of all the virtues of Rama as an ideal man. Dasharatha and the people of Ayodhya too love him most dearly for his *rājaguṇas* and *ātmaguṇas* with utmost intensity due to which the assembly unanimously votes for him as the Heir Apparent…. These are necessary to accomplish his mission of life of killing Ravana (AY 1.9-30. Dharm. pages 1--17) and also for his role as the king in future (ibid. pages 5-8). Therefore, Makhi observes here – *Ete rājaguṇaḥ śrīrāma eva tiṣṭhanti na-itaratra I* Rama would then look after his subjects well.

**ii) Military Science or Dhanurveda –** Besides stray episodes of fight with demons, VR has Yuddhakanda (YK) as total focus on war between Rama and Ravana. Hence Dhanurveda in all its aspects and forming an indispensable part of Polity forms an elaborate section of both VR and Dharm. I found the list of subjects given at the outset all of which form part of Polity through Dhanurveda. These are such as march of the *Vānara* army, types of *dūta*s, knowing Lanka as the city of the enemy, necessity of the king to be within the city and in charge of treasury and other constituents of the State, calculation of the constellations for the march and onslaught of the armed forces, Commander-in-chief or the Heir Apparent leading the forces in the battle, battle arrays, considering omens, presence of the *Mūla* constellation for victory, sighting the Agastya in the Great Bear, evil omens in Lanka after bringing Sita there and other astronomical and astrological aspects, Kumbhakarna's protest for not taking wise ministers into confidence for Sita's abduction, deserting evil king as done by Vibhishana, role of the spy and innumerable other topics come in the YK. Mahabharata is profusely quoted in the commentary by Makhi.

**iii) *Dūta-kārya* –** On reaching the northern gate of Lanka Hanuman observes the city with its richness, beauty, security and how the ocean encircled it (SK 2.25, 26. Dharm. page 67). He realized might and power of Ravana. Being a wise and thoughtful diplomat he considered him an invincible enemy of Rama. So, he contemplated upon a strategic approach to his observations evaluating the strengths and weaknesses of his side and those of Ravana. Makhi takes support of Kamandaka in this matter to justify Valmiki on this issue of Polity, - an issue within the realm of Dharmashastra. Hanuman realized futility of direct warfare due to the city's strong fortification. Here Makhi discusses another issue of Polity as well –types of forts, their strengths in geographical conditions with support from Kamandaka and Manu. Subsequently Hanuman decides to enter the city by dusk assuming a tiny form. Here Makhi brings out three points of Polity simultaneously.

Hanuman's confrontation with the presiding deity of Lanka and her inquiry regarding his purpose of entry to the city is another point of Polity – **security and immigration** in today's words. Hanuman's reply is veiled, namely, tourist interest. Thus he does not reveal his aim of crossing the ocean, namely to find Sita. This refers to the **virtue of a *dūta***, namely, diplomatic answers thus guarding the truth (SK 3.33,34. Dharm. page 71).

Further, a *dūta* should be selected in accordance with the task to be accomplished (SK 30.38. Dharm. page 229-230., SK 39.39. page 278,); for, an efficient *dūta* knows the appropriate application of the *upāya* (means to achieve a task) (SK 2.3,4. Dharm. page 281). Makhi also brings out a point with reference to the penalty/

punishment in proportion of the crime being a quality of a good king (SK 52.9,19. Dharm. pages 322-323). We also find reference to the *parākrama* or valour, courage as being the best means of fulfilling a task (SK 39.29, 30. Dharm. page 277).

### 3.D. Ethics and Morality –

**i) Definition and qualities of a *rākṣasa*** - Some other points that emerge from these verses are such as – women were taken away as booty by Ravana during wars, some women came to him enamoured by him. However, Sita was a different kind of woman and for her Ravana was an *anārya* – unethical, immoral. Here Makhi projects Valmiki's equation of an *anārya* with a *rākṣasa* (SK 21.6,8. Dharm. pages 194, 195).

As a stark contrast to this way of life is Sita's rejoinder that she was somebody else's wife and hence was not to be coveted by anybody; if one did so, he was an eternal sinner for sure – in this world and in the world thereafter, attaining endless *anartha* or evil (SK 21.6 -8, Dharm. pages 194-195). In case of his forceful acceptance with which Ravana has threatened her, Sita's choice is self-immolation instead of submission (SK 28.5. Dharm. page 219).

The issue of *svadharma* in the context of the *rākṣasa*s is eye-opening even in the modern context. In the twentieth *sarga,* Makhi illustrates this quoting SK 20.5 (Dharm. page 184). Ravana justifies his acts of abducting married and unmarried women and keeping illicit relations with others' wives was a natural conduct with the *rākṣasa*s. Ravana takes pride of this act – vice in normal society – and is indulgent in it thus gradually leading to his downfall – actually one of the *vyasana* of the kings inducing this end. Ravana was advised frequently to abstain from it in the Ramayana itself, such as in Maricha's advice, Vibhiṣhana's and Kumbhakarna's opinions, Mandodari's piteous lamentations and reprimandation of Ravana, Kubera mentioning all the unrighteous acts of Ravana and some others found in the Epic (SK. Dharm. pages 184-192).

**ii) Some General Truths of Life** - A general outlook at life is referred to in the twelfth *Sarga* in the context of Hanuman's failure and depression on not finding Sita. But his wisdom infuses enthusiasm and optimism in him to undertake yet further search for her, as he knows that it is this attitude that leads one to success in life (SK 12.10. Dharm. pages 140-141).

**iii)** Another such truth brought out by Makhi comes is **abstinence from excess** of everything (SK 24.21. Dharm. page 211). We also come across a harsh fact of life that warmth between people is proportionate to proximity (SK 26.43. Dharm. page 215).

### 3.E. Religious –

**i) Performance of *yajña*** – Dasharatha performs *putreṣṭi* which was conducted by the sage Rushyashrunga according to the vedic norms BK 15. Dharm page 85). Its *pāyasa* was partaken by the three queens who subsequently gave birth to four sons (BK 16. Dharm. 86-90). Makhi thereby justifies that all the vedic karmas unfailingly yield desired fruits.

ii) ***Karma, dharma*** **and their Consequences** - Yet another important issue brought out by the commentator refers to the theory of *Karma*. A few illustrations in this context are such as – wrong deeds performed in the past birth bringing sufferings in the present birth (SK 25.18. Dharm. page 212), effect of most intense *adharma* leading to immediate destruction (SK 26.35 Dharm. page 214) and death not taking away a person at premature time, that is, death coming to a person at its proper time (SK 25.12. Dharm. page 211).

### 3.F. Others –

**i) Erotics -** Further, Makhi also shows his good acquaintance with the science of Erotics. Here Valmiki compares Hanuman's powerful movements with the lover – *nāyaka* and the beautiful Ashokavanika with the beloved – *nāyikā* (SK 14.18,19. Dharm. page 145).

**ii) Samudrika-shastra** -A detailed description of Rama's personality (SK 35.3-2. Dharm. pages 239-258) is discussed by Tryambakaraya Makhi with exactness of an expert in Samudrika-shastra. These verses and their commentary highlight his qualities in a very vivid manner.

**iii) Omens** - Omens are referred to as in the commentary (SK 32.10. Dharm. page 233). Sita believes that sighting a monkey even in a dream was an inauspicious omen, till she realizes that this one was the emissary of Rama who had come to search for her.

**4. Dharm and Poetics** – One cannot forget in this discussion of Ramayana and Dharmashastra that literary tradition has always spoken of Ramayana as an *Ādikāvya.* The descriptions and dialogues form core of the heroic epic. Hence the VR has all poetic elements bestowing upon it the secondary status of an ornate poem. They abound especially more in SK due to its structure, namely, being the second longest Kanda with two outstandingly critical and interesting narrative elements – Hanuman's leap and his successful endeavour of searching Sita bringing in a turn in the story. Several dramatic, adventurous and thrilling incidents take place in succession within a very short span of time which create aesthetic delight and anticipation of future events. Poetically Rama is nowhere to be found in the SK but other characters, especially Hanuman, make his presence felt. Moreover, all the elements having profoundly poetic nature are integral to the structure and the narrative part of the epic lending beauty of language, poetry, theme, situation, location and characterization. Hence, Tryambakaraya Makhi is justified in his interpretation of the VR especially SK as an ornate poetry secondarily. After this discussion, it is necessary to note that the title SK – a self-explanatory term meaning a Beautiful Kanda – is justified as it is full of *śabda* and *artha* - *alaṁkāras* along with the erotic- *śṛṅgāra* and other *rasas*. The other six Kandas do have these poetic elements, but as compared to the SK, they are not in striking profusion as they are here. With this hypothesis for this Kanda, Tryambakaraya Makhi also justifies SK alone as an ornate poem (SK. Dharm. Introduction, paragraph 2, page 1). To illustrate, from the first *sarga* of SK the commentator has picked out nineteen illustrations of different *śabda* and *artha-alaṁkāra*s with their definitions and supportive quotations from texts on Rhetorics and also explaining illustrations.

Thereafter he proceeds to illustrate seven out of the nine *rasa*s - *śṛṅgāra* (erotic), *karuṇa* (pathos), *raudra* (wrath/furiousness), *vīra* (heroic), *bhayānaka* (terrifying), *bībhatsa* (disgust/loathsome) and *adbhuta* (wonder) in it. The commentator defines and elucidates the terms *Rasa* (sentiment/emotion/aesthetic delight), *Vibhāva* (stimulant), *Sthāyi-bhāva* (basic human emotions), *Anubhāva* (external manifestations of emotions/feelings), *Vyabhcāri-bhāva* (transitory feelings acting as feeders to the prevailing *Rasa*), *Uddīpana* (enhancing cause formed by setting, time etc that add to the emotion) and finally *Ālambana* (substantial cause formed by the character). Tryambakaraya Makhi quotes definitions from Dashrupaka and Kavydarpana after which he discusses in details these with all their sub-varieties (*Dharm.* SK, pages 18, 19, 20). Immediately then he concludes saying that each *Rasa* shall be highlighted in the relevant illustration. To illustrate, he gives an elaborate discussion of the theory of the *śṛṅgāra* (erotic) of the *sambhoga* variety (SK 5.17, 18. Dharm. pages 21-24). He treats the other six emotions similarly. Thereafter, he justifies Hanuman's obeisance to divinities and gurus as *maṅgala* or benediction also from both points of view - Alamkarashastra and Dharmashastra.

Thus this may make one inclined towards taking Ramayana chiefly as an ornate epic. The tradition also knows it as *Ādikāvya* – the fundamental form of ornate poetry inspiring the classical Poetry due to its aesthetic elements.
However, Tryambakaraya Makhi's primary hypothesis and claim are that VR is a Dharmaśāstra work. Even a critical glance of the commentary can show that he has proved them very competently.

## 5. Conclusion

### Dharma and Dharmashastra –

The varied interpretations of the term *dharma* are already discussed by Makhin in the general introduction. Mm P. V. Kane elaborately presents them in History of Dharmaśāstra (chapter 1, volume I, Part I). He accepts the tradition that the two epics Ramayana and Mahabharata form major source of *dharma* and Dharmashastra texts here (ibid pages 349-408). Medhatithi, Apararka, Smrutichandrika, Krutya-kalpataru, Dana-sagara, Rajaniti-ratnakara, Haralata, Chandeshvara's three Ratnakaras, Govindananda's Kaumudis and Rajadharma-kaustubha draw illustrations from Ramayana (ibid pages 385, 408).

However, though the Dharmashastra texts draw innumerable illustrations from the Mahabharata, VR also has performed the role of highlighting *dharma.* On account of the noble ideals that it sets up in the chief characters like Rama, Sita and others, it was popular and relied upon as a source in these digests discussing *dharma.* However, primarily VR has always been considered as a *kāvya* and not a digest of Dharmashastra. Hence, it can be stated with certainty that Tryambakaraya Makhi has made a highly valuable and an extremely commendable contribution in successfully proving the multi-faceted aspects of this great epic, especially as a work of Dharmashastra.

Lastly an interesting observation may be made. If we look upon VR as a poem aiming at illustrating *dharma* frequently through ornate style we need to think about the incident of its origin, namely, *Kraunch-vadha-prasanga* or the incident of the killing of the Krauncha bird by a hunter on the banks of the river Tamasa. It gave rise to spontaneous anguished anger – *soka* – despite the inner knowledge he gained through penance leading Valmiki to curse the hunter, in metrical form. This act of the hunter was probably justified as it was his profession, but was it an act of *adharma* but an unconscious one, as he failed to anticipate the subsequent death of the female bird?

The line between *dharma* and *adharma* is thin. It is probably through identification of himself as a human being and more as a rishi with the biological and morphological similarities between all living beings (as we find with Jatayu, Sampati and the Vanaras within the story itself) that Valmiki pours out his sudden fiery anger thus. Here it may be remembered that though the Krauncha has no direct role to play in the story, it forms the root cause for Valmiki to give a holistic vision and values of life which we term as *dharma*, as also to present comprehensive social issues in such a powerful, influential and gripping way that it would remain lifeline of our country down the millennia.

Considering this too, therefore, I believe that Tryambakaraya Makhi has made invaluable contribution in interpreting VR as a Dharmashastra text and justified Valmiki.

## REFERENCES

- Makhi, Tryambakaraya. 1916. Balasubrahmanyam, J. K. (Introduction). *Dharmākūtam* (Bālakāṇḍa). Published by Sri Vani Vilas Press, Srirangam.

- Makhi, Tryambakaraya. 1924. *Dharmākūtam* Ayodhyākāṇḍa, Volume II Part I. Published by Sri Vani Vilas Press, Srirangam.

- Makhi, Tryambakaraya.. Subrahmanya Sastry Sri K. S. (Edited with Introduction and Notes). 1955. *Dharmākūtam* (An Encyclopaedic Commentary on Śrīmad Rāmāyaṇa) (Āraṇyakāṇḍa*).* Saraswati Mahal Series No. 70. Published by Sri Gopalan, S. Hony. Secretary for the Administrative Committee, T. M. S. S. Mahal Library, Tanjore.

- Makhi, Tryambakaraya.. Sarma, P. V. Varadaraja. 1963. *Dharmākūtam* (An Encyclopaedic Commentary on Śrīmad Rāmāyaṇa) (Kiṣkindhākāṇḍa). Published by

Narayanaswami, O. A. Hon. Secretary, T. M. S. S. M. Library,Thanjavur. Pub. under the scheme of editing and publication of rare manuscripts F. No. 18/60/C-2 of the Government of India, Ministry of Education, New Delhi.

- Makhi, Tryambakaraya. Chandrashekharan, T. (Critically edited with is Introduction). 1951. *Dharmākūtam* (An Encyclopaedic Commentary on Śrīmad Rāmāyaṇa) (Sundarakāṇḍa). Saraswati Mahal Series No. 29.Published by Sri Gopalan, S. Hony. Secretary for the Administrative Committee, T. M. S. S. Mahal Library, Tanjore.
- Makhi, Tryambakaraya. Sastri, Vasudeva K. 1964. *Dharmākūtam* (Yuddhakāṇḍa). Published by

*Students of Sandipani Gurukula at the inauguration of National Conference on 'Message of Ramayana'*

Narayanaswami, O. A. Hon. Secretary, T. M. S. S. M. Library, Thanjavur. Pub. under the scheme of editing and publication of rare manuscripts F. No. 18/60/C-2 of the Government of India, Ministry of Education, New Delhi.

- *Śrīmad-Vālmīkīya Rāmāyaṇa* (in Hindi with translation). Gita Press, Gorakhpur, VS 2025, 2nd edition.
- Shrikrishnasena, Khemaraja (Editor), 1990. *Śrīmad-Vālmīkīya Rāmāyaṇam.* Caturtha Khaṇḍaḥ: Sundarakāṇḍam. Reprint of the Shri Venkatesha Steam Press (Mumbai) edited by. Nag Publishers, Delhi.
- Dutt, M. N. (Tr. In English). Arya, Dr. Ravi Prakash (editor and revisor).1998. *Rāmāyaṇa of Vālmīki.*Parimal Publications, Delhi, 1st edition.
- Kane, Mm Pandurang Vaman. *History of Dharmaśāstra. (Ancient and Medieval Religious and Civil Law in India.* Government Oriental Series Class B, No.6. Volume I, Part I. Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Second revised and enlarged edition, 1990.
- Krishnamachariar, M. Srinivasachariar, M. (Assi.). 1970.*History of Classical Sanskrit Literature* (being an elaborate account of all branches of Classical Sanskrit Literature, with full Epigraphical and Archaeological Notes and References, an Introduction dealing with Language, Philology and Chronology and Index of Authors and Works). Motilal Banarasidass, Delhi. First reprint of the 1937 edition.
- Vakaskar, V. S. *Thanjavarche Marathi Raje.* Chapter 3, pages 28-29, Chapter 4, pages 41 and 48.
- Shodhganga. Inflibnet.ac.in. Chapter I, page 29.
- Subramanian K. R. (1928). *The Maratha Rajas of Tanjore.* Published by the Author, Madras.
- Reign of Ekoji I. Wikipedia
- Bhushan, Shri Bharat. Birds of Ramayana. Vishwakarma Publications, Pune. 1st publication, 2016.
- (In all the secondary bibliographical sources given at the end of the paper, no reference to Dharm. either in their main texts or their bibliographical lists. M. Krishnamachariar stands an exception among them when he devotes two full paragraphs on it and the commentator among all commentaries he came across (ibid pages 23, 24). He observes, 'Dharm. is a splendid critique on the Ramayana. Its object, as the name indicates, is to demonstrate to the reader how at every step of the poem, the story of the Ramayana illustrates the code of morals by reference to the original sources of the Vedas and the Dharmaśāstras. It is a unique work of the kind and was almost an original conception in Sanskrit literature'. (ibid, page 23).

# Rāmāyana and Mīmāmsā

**Dr. Suryanarayana Bhat**

O Rāma, there are six means of knowledge, by which everything is seen in the world. Thus it is told in Rāmāyaṇa. Therefore everything is well and good.

Śrīśavaradācāryasvāmī (1923 - 1996), Professor of Mīmāṃsā in Mahārāja Saṃskṛta Mahāpāṭhaśālā Maisūru (Maharaja Sanskrit College, Mysore), wrote Śāstrālōka for the use of the students who want to begin to learn Mīmāṃsā. There(page 41) is a quotation of Rāmāyaṇa (AraṇyaKāṇḍa 72.8) :

***Rāma Ṣaḍ Yuktayō Lōkē Yābhiḥ Sarvō'nudṛśyatē***

O Rāma, there are six tricks, (means of knowledge) by which everything is seen in the world.

Here, there is difference among commentators. Govindaraja comments like this :

> Hē Rāma, Lōkē Ṣaḍ Yuktayaḥ Santi. Yuktayaḥ Upāyāḥ. Tē Ca Sandhi-Vigraha-Yānā(-)Sana-Dvaidhībhāvasamāśrayāḥ. Yābhiryuktibhiḥ Sarvaṃ Rājñāṃ Kṛtyaṃ Vimṛśyatē. Tāḥ Santīti. - page 240)

By this we can find variant in reading also. In the place of Anudṛśyatē, Vimṛśyatē is in the commentary. Here Mahēśatīrtha after explaining the verse in ordinary way, comments according to Mīmāṃsā :

> Yadvā Ṣaḍ Yuktaya Iti. Tatra Yuktayaḥ Pratyakṣānumānōpamānaśabdārthāpattyabhāvapramāṇāni. Pārthasārathimiśraiḥ Śāstradīpikāyāṃ Yuktiśabdasya Pramāṇaparatayā Vyākhyātatvāt. Asyārthaḥ - Hē Rāma, Lōkē Ṣaḍ Yuktayaḥ Ṣaṭ Pramāṇāni Santi. Yābhiḥ Pratyakṣādibhiḥ Sarvaṃ Vastu Vimṛśyatē Jñāpyatē. (Mahēśatīrthīyam)

In other way, six strategies or tactics are perception, inference, anology, syntax, imagination and nonexistence. Pārthasārathimiśra in his Śāstradīpikā comments the wordYukti as Pramāṇa (means of knowledge). Here Kabandha says Śrīrāma by : in the world, there are six means of knowledge. Through perception etc. every thing can be judged or known.

The same half of the verse is found in the Mānamēyōdaya (page 140) of Śrīnārāyaṇabhaṭṭatiri (1560-1656) :

*Rāma Ṣaḍ Yuktayō Lōkē Yābhiḥ Sarvō'nudṛśyatē.*
*Iti Rāmāyaṇē'pyuktaṃ Tasmāt Sarvaṃ Sumaṅgalam . .*
(Ślōka 184)

O Rāma, there are six means of knowledge, by which everything is seen in the world. Thus it is told in Rāmāyaṇa. Therefore everything is well and good.

In the Śāstradīpikā of Śrīpārthasārathi (10th century), as Mahēśatīrtha says, the same half verse is quoted (I. 1. 5 of Tarkapāda):

Tathā Ca Bhagavadrāmāyaṇē - Rāma Ṣaḍ Yuktayō Lōkē Yābhiḥ Sarvō'nudṛśyatē. Iti. .

Pārthasārathi respects Rāma or Rāmāyaṇa equally. He uses the word Bhagavad. He says :

This is in revered Rāmāyaṇa - O Rāma, by six tricks everything in the world is seen.

This work of Pārthasārathi is base for the two works (Śāstrālōka and Mānamēyōdaya) cited above.

In the works of Mīmāṃsā (Arthasaṅgraha, Nyāyaprakāśa ...), we find another quotation of Rāmāyaṇa( IV. xvii. 39) :

Pañca Pañcanakhā Bhakṣyāḥ (five animals from among the animals having five nails may be eaten)

In the commentary, the full verse is mentioned like this : Pañcanakhāstu -

***Pañca Pañcanakhā Bhakṣyā Brahmakṣattrēṇa Rāghava.***

***Śaśakaḥ Śallakī Gōdhā Khaḍgī Kūrmō'tha Pañcamaḥ.***
(Arthasaṅgrahakaumudī pg 98)

In Rāmāyaṇa translation it is like this :

A hedge-hog, a porcupine, an iguana, a hare and a tortoise - these five animals only, having five toes, are worthy of being eaten by the Kshatriyas and Brahmins, O Raghava. (page 237, Manmatha Nath Datta's translation)

But in the commentary of Nyāyaprakāśa of Āpadēva there is slight difference :

Pañca Pañcanakhā Bhakṣyā Brahmakṣattrēṇa Rāghava.

***Śalyakaḥ Śvāvidhō Gōdhā Śaśaḥ Kūrmaśca Pañcamaḥ.***
(Nyāyaprakāśavyākhyā pg 203)

Here in the original text the source of the quotation is not mentioned. In the commentary the full verse is illustrated. There the word Rāghava takes us to Rāmāyaṇa. In other works of sages, like Manu, Yājñavalkya etc. this type of sayings are available:

Yājñavalkyasmṛtirapi (1,177)

Bhakṣyāḥ Pañcanakhāḥ Sēdhāgōdhākacchapaśalyakāḥ. Śaśaśca...

Sēdhā Śvāvit. Atra Śaśaścēti Cakārāt Khaḍagrahaṇam. Pañcanakhāḥ Śaśa-Śalyaka-Śvāvid-Gōdhā-Khaga-Kacchapā Iti Gautamōktau Ṣaṇṇāmuktēḥ.

Śvāvidhaṃ Śalyakaṃ Gōdhāṃ Khaga-Kūrma-Śaśāṃstathā. Bhakṣyān Pañcanakhēṣvāhuḥ (Manu. 5.18)

Iti Manurapi. Śalyakō Hiṃsraḥ Prāṇiviśēṣaḥ. Śvāvidhō'pi Tatsadṛśaḥ. Śalyakaḥ Sthūlarōmā, Śvāvidhaḥ Sūkṣmarōmēti Bhēdaḥ.
(Nyāyaprakāśavyākhyā page 203)

In the Śabarasvāmibhāṣya and in the Kumārilavārtika also this is cited without mentioning the source :

***Pañca Pañcanakhā Bhakṣyā Iti Śaśādīnāṃ Pañcānāṃ Kīrtanāt Anyēṣāṃ Bhakṣaṇaṃ Pratiṣidhyatē Parisaṅkhyayā Ityayamarthō Vākyēna Gamyatē.***
(Bhāṣyam 10.7.9.28)

***Pañca Pañcanakhā Bhakṣyā Iti Smṛtinyāyēna Anugataviparītabhāṣaṇapratiṣēdhaḥ ArthāpattisiDdhaḥ Smaryatē.***
(Vārtika 1. 3. 8. 24)

But in other placecs Vārtika mentions Rāma's name :
Rāmarāvaṇayōryuddhaṃ Rāmarāvaṇayōriva.

Ananyatvēna Sutarāṃ Stutirbhavati.
Ananyasambhavicaritatvāt. Bhavati Hi Lōkē Kālpanikaṃ
Avasthādigatabhēdaṃ Āśritya Evamapi Stutiḥ.
Sambhavati Bhēdē Na Yuktā. (Vārtika 1. 4. 4. 5 page 336)

The war of Rāma and Rāvaṇa is like Rāma and Rāvaṇa. Here the praise is due to indifference indeed. It itself suggests that the incident no where happened. Such praise is also possible after depending the imaginary difference in state etc. If difference is there, such praise is not correct.

***Rāmavat Kratuprayōgaḥ Dharmavyatikramaḥ.***
(Vārtika 1. 3. 3. 7 page 204)

***Rāmavat Ityanēna Tasyāpi Patnītyāgēna Ekākinaḥ Kratuprayōgāt Dharmavyatikramaḥ Sūcitaḥ.***
(Nyāyasudhā page 185)

In the Vārtika, it is told that the performance of sacrifice like Rāma is against the scriptural rule. It is an example for crossing the limit of religious rule.

In the commentary the reason is mentioned. Since He left the wife and performed the sacrifice alone, it is against the rule.

*Atrōttaram - Rāmasya Snēhavaśād*
*Apatyakṛtapitrānṛṇyasya Yāgasiddhiḥ.*
*Hiraṇmayasītākaraṇañca Lōkāpavādabhiyā*
*Tyaktasītāgatānṛśaṃsyābhāvaśaṅkānivṛttyartham.*
(Vārtikam page 208)

Here is the answer : Rāma is eligible to perform the sacrifice. He had sons by which he had no debt of forefathers. He performed the sacrifice following friendship with Sītā.

Rāmēṇa Sītāsnēhād Bhāryāntarāgamanavratagrahaṇāt.
Sākṣād Apatyābhyāṃ Kuśalavābhyāṃ Kṛtapitrānṛṇyō
Rāmaḥ. Nanu Rāmasya Dharmārthadārāntarasadbhāvē

*Yajñē Yajñē Prakurutē Sītāṃ Patnīṃ Hiraṇmayīm*

Iti Hiraṇmayasītākaraṇaṃ Anarthakaṃ Syād Ityāśaṅkyāha
Hiraṇmayīti. Apavādabhītyā Tyaktā Yā Sītā Tadgataṃ
Tadviṣayaṃ Yadānṛśaṃsyaṃ Anaiṣḍhuryaṃ
Tadabhāvāśaṅkānivṛttyarthaṃ Ityarthaḥ.
Rāvaṇāpahāradūṣitāṃ Sītāṃ Rāmō Bhajatē Iti
Lōkāpavādamātrēṇa Asau Tyaktā. Na Sītāyā Duṣḍatvāt.
Nāpi Rāmasya Sītāyāṃ Naiṣḍhuryāt Iti Dyōtayituṃ
Lōkāpavādabhītiṃ Prati Tyāgasya
Nityasāpēkṣatvadarśanāya Tyaktaśabdasya Sītāśabdēna
Saha Sāpēkṣasamāsaḥ Kṛtaḥ. (Nyāyasudhā page 192)

The Vārtika is explained like this : Though Kṣatriya, Rāma took oath not to accept other wife, due to extreme love towards Sītā. Only after getting issue, one can perform sacrifices. He had two sons, Lava and Kuśa, in her. So according the rule, he was considered that he had repaied the debt of ancecsters.

If he had other wife for the religious perpose, then why the text says that He was making golden image of Sītā in each and every sacrifice?

It is because, he left Sītā only due to fear of public. But he had attachment with her. This is suggested by the golden image of her. He was afraid of public, who were saying that Rāma accepted Sītā, who was abducted by Rāvaṇa and spoiled. So he had given up her and sent her to forest of Vālmīki. He had not any difference or enmity with her. This idea is found by the compound Tyaktasītā. The word expects something else to give full proper meaning.

By these examples, it is clear that Rāmāyaṇa is considered valid and accepted with respect in Mīmāṃsā. This may be explained in other way :

In our Indian tradition, Rāmāyaṇa is the first poetry. But Mīmāṃsā is a branch of Philosophy, which discusses the doubtful instances in the Vēda, the first literature of the universe. Rāmāyaṇa is composed by the sage Vālmīki but Vēda is transformed by the sages through time immemorial. So one may feel that these have no relation with each other.

Though Rāmāyaṇa is an epic written by Vālmīki, the tradition considers it as History, which indirectly explains the Vedic truth. Vēda, the oldest literature of the world, describes the religious rites and soul. As already mentioned, Vēdas are the beginningless literature found by the sages, transferred generation to generation, whereas Rāmāyaṇa is written by sage, Vālmīki. This is told like this:

***Vēdavēdyē Parē Puṃsi Jātē Daśarathātmajē.***
***Vēdaḥ Prācētasādāsīt Sākṣād Rāmāyaṇātmanā. .***

The supreme person, known by the Vēdas, when was born as the son of Daśaratha, Vēda also was born directly in the form of Rāmāyaṇa. Here the idea is, the eternal soul is described by the eternal literature and the born Soul, by the written.

In fact, Rāmāyaṇa is Vedic, because it is on the basis of Vēda to support Vēda. This is clear in Rāmāyaṇa (1. 4. 6):

***Sa Tu Mēdhāvinau Dṛṣṭvā Vēdēṣu Pariniṣḍhitau***
***Vēdōpabṛṃhaṇārthāya Tāvagrāhayata Prabhuḥ...***

The Lord Vālmīki saw the intelligent Lava and Kuśa, both expert in Vēda, taught the epic to them to nourish and expand Vēda.

Indians believe that Itihāsa and Purāṇa are to expand the Vēda. Vēda is afraid with the one who has limited knowledge that he cheats or beats it. This is told in a verse:

*Itihāsapurāṇābhyāṃ Vēdaṃ Samupabṛṃhayēt*
*Bibhētyalpaśrutād Vēdō Māmayaṃ Pratariṣyati..*

(Pratariṣyati is somewhere Pratarēditi Prahariṣyati or Praharēditi)

Here cheating or beating is in indirect sense. One who knows Vedic literature thoroughly he can understand the purport of the Vēda. So to understand Vēda, one should study Itihāsa, Purāṇa etc.

Mīmāṃsā is one of the six orthodox systems of Philosophy, which discusses the doubtful portion of the Vēda. So Mīmāṃsā can be applied to Rāmāyaṇa, the Vēda in another form. For example, in Rāmāyaṇa, there is a verse :

***Daśa Varṣasahasrāṇi Daśa Varṣaśatāni Ca***
***Rāmō Rājyamupāsitvā Brahmalōkaṃ Gamiṣyati..***
*(Vālmīkirāmāyaṇam BālaKāṇḍaḥ Sargaḥ 1.97)*

Rāma will go to Brahma's abode, after close ruling the state for 11000 years.

This statement is unbelievable. No man in the world generally lives more than 100 years. There may be exceptions, which are abnormal. Here it is obvious that the poet likes to suggest Rāma is not an ordinary person. Really Rāma is extra ordinary. But it is not for ruling state for thousands and thousand years. According to one of the maxims of Mīmāṃsā, year is not year, but day :

*Sahasravatsaraṃ Satraṃ Gandharvādērnṛṇāmuta...*
***Tasmād Viśvasṛjāṃ Satraṃ Sahasradinamiṣyatē.***
(Nyāyamālā 6.7.16-23)

Here the question is, whether the term 1000 years are meant for Gandharva etc. or for human beings ? The answer is, the term stands for thousand days.

Dr. Gaṅgānātha Jhā translates the Bhāṣya of this Adhikaraṇa like this :

**Adhikaraṇa13 :** The term 'thousand years' stands for 'thousand days'.

**Sūtra 31**

**Pūrvapakṣa (A)**

"The 'Thousand-year Sacrifice' must be taken as being for those whose life-span is of that extent, - it being impossible for human beings."

**Bhāṣya**

There is the 'Thousand- year Sacrifices laid down in the following text - Pañca Pañcāśataḥ Trivṛtaḥ Saṃvatsarāḥ. Pañcapañcāśataḥ Pañcadaśāḥ. Pañcapañcāśataḥ Saptadaśāḥ. Pañcapañcāśataḥ "kaviṃśāḥ. Viśvasṛjāmayanaṃ Sahasrasaṃvatsaram.

(fifty-five with threefold Saṃvatsara, fifty-five with fifteen, fifty-five with seventeen, fifty-five with twenty one; the Viśvasṛjāmayana is a Thousand-year sacrifice.

In regard to this, there arises the following question - Does this passage mean that only those Beings are entitled to the sacrifice mentioned who live for a thousand years? - Or for human beings? If for human beings then, what does it mean, from among several meanings suggested later on (in the following Sūtras)? Or is the term Saṃvatsara, year to be taken here in the sense of day?

On this question, the Pūrvapakṣa view is as follows : The sacrifice can only be for those who live for a thousand years. -Why so? - Because it is impossible for human beings; among human beings, such a long life is impossible. It is only Gandharvas and such other Celestial beings who have such a long life, as has been described in the Smṛtis.

### Sūtra 32
### Pūrvapakṣa (A - concluded)

"There is a commendatory text which already indicates that the performers of the sacrifice are beings other than human."

**Bhāṣya**

"There is the following text - 'When Prajāpati was creating the creatures, evil Death attacked Him; He performed austerity for a thousand years, with a view to get rid of the evil'; the 'austerity' here referred to is clearly the 'Thousand -year Sacrifice' (and it is spoken of here as having been performed by Prajāpati); from which it follows that the sacrifice is not for human beings."

### Sūtra 33
### Pūrvapakṣa B

Or, It must be meant to be performed by human beings, as it is their sphere of activity.

**Bhāṣya**

The term OR implies the rejection of the view (Pūrvapakṣa A) set forth above.

"The sacrifice is not for Gandharvas and other celestial beings; it is human beings that are to be taken as entitled to the performance of the sacrifice. - Why? - Because it is their sphere of activity; that is scriptural Injunctions have been found to appertain to the activity of human beings; as they alone are capable of fulfilling all the details of actions laid down in the Injunctions. -' But human being cannot live so long'. - Anwser : They can attain longevity by means of medicines."

### Sūtra 34
### Refutation of Pūrvapakṣa B

That cannot be; because they do not possess that capacity.

**Bhāṣya**

No medicines have been found to possess the capacity of prolonging life to the extent of a thousand years. All that they are capable of doing is - the improving of digestive powers, the removal of wrinkles and grey hair, the improving of voice and complexion and the resuscitation of memory; - they are never found to bring about longevity. - "From the improvement of voice and other signs, we shall infer a longer life also. " - That is not possible, we say. - "why?" - Because there is the text declaring that 'a man's life extends to a hundred years'

(Śatāyurvai Puruṣaḥ); and this would not be true if a man were to live longer. - We may expound the compound word 'Śatāyuḥ' as 'Śatāni Ṛyuḥ Yasya', one whose span of life extends over hundreds of years. - Numerals are not compounded in this fashion; nor are they expressive (even when formed). The learned people have also declared that 'there can be no compounding of words with the dual or the plural endings'.

### Sūtra 35
### Further refutation of Pūrvapakṣa (B)

Also because no connection has never been perceived.

**Bhāṣya**

Never have medicines ever been found to be connected with such longevity (as extends over a thousand years); and until such a connection has been actually perceived there can be no inference from it. - "There could be an inference from general premises; Medicines are actually found to bring about smaller degrees of stability, and it stands to reason that, if they were repeatedly taken, they would become more and more effective and would bring about a permanent stability in the body. Though there is the declaration 'the man's life-span extends to a hundred years', yet we find people actually living longer than that." - The answer to this question is as follows : The premiss suggested is not true beyond doubt; even though it may be that the medicines used bring aboubt all that is possible in the way of the stability of the body, even to such an extent as has never before been perceived; - for instance, when walking, people may attain all the speed possible, but by mere repetition they could not proceed even foure miles, during the whole of their human life. So that in the case in question, as there would be no connection (between the medicines and longevity), it would always be open to doubt whether or not people (using the medicines) would secure longevity; and if this remains doubtful, there can be no inference from that premiss; and in the matter of imperceptible things, nothing can be accepted without sufficient proof. - From all this it is clear that without doubt there are no persons living so long (as a thousand years),- and this is what has been asserted regarding human beings.

Question - "What then does the text mean?"

(In answer we have the following Sūtra, which sets forth the third Pūrvapakṣa view. )

### Sūtra 36
### (Pūrvapakṣa C)

What is laid down should be regarded as a 'Function for Generations' - says Kārṣṇājini; as it is impossible for a single man.

**Bhāṣya**

"If the sacrifice is meant for human beings, then it must be regarded as a 'Function for generations' - this is the opinion that has been held by the teacher Kārṣṇājini, - For what reason? Because it is impossible for one man. The injunction is for men and no single man can complete the sacrifice; it being then necessary to find out how the sacrifice could be performed, the only possible course appears to be that several capable men should undertake the performance, -and their descendants would carry on what has been begun and would finish it in due course of time.

### Sūtra 37
### Refutation of Pūrvapakṣa (C)

In reality, in as much as the entire performance should be connected with a single performer, the performance of the sacrifice should be done by a single person.

### Bhāṣya

It has been understood (under Sū. 3,7,18 et seg. ) that the fruit of actions laid down in the scriptures accrue to the performer; and also that that man alone is entitled to perform a sacrifice who is capable of doing it. For these reasons, the theory of the sacrifice in question being a 'function for generations' cannot be accepted. - "What then does it mean?" - What it is taken to mean is that the mere knowledge and reciting of the text (laying down the sacrifice) is a duty; and in support of this there is the Vedic declaration that 'Svādhyāyō'dhyētavyaḥ, the Vēda should be studied' (and the text in question is part of the Vēda). " Then in that case, on the strength of the text, it should be believed that if people perform the sacrifice in question, then longevity increases. " - This also cannot be accepted; as there is no ground for such a belief; in support of such a belief, we have neither a scriptural text nor any other source of knowledge. -" Presumption would be the requisite proof; as without such a notion, the text would be useless". - The answer to this is that it would not be useless; the mere reading of the text would be productive of an 'unseen' result; and in a general way, it is much simpler to assume an 'unseen' result in general than to assume the particular unseen result that 'longevity increases'. - Or it may be admitted that the passage does become useless; it is better to admit that than to assume a result for which there is no reason. - "Two hundred and fifty men might be initiated for the performance and these would finish the sacrifice in four years." - But this would militate against the number of performers fixed by ordinance; this has been done by such ordinances as 'not more than twenty-four and not less than seventeen persons should undertake the performance of a Satra. - In order to save a text from becoming useless, we might give up the fixed number. - That would not be right; since there is a result following from the mere reading of the text (which thus cannot be regarded as useless). Hence the solution suggested is not right.

Question - " What then is the meaning?"

Answer - It is as follows.

### Sūtra 38

There being mutual inconsistency, one of the two terms must be taken in the indirect figurative sense - says Lāvukāyana.

### Bhāṣya

In this case, one of the two terms must be taken in an indirect figurative sense; either the term 'Saṃvatsara' (year) is to be taken as standing for what is not Saṃvatsara, or the term 'Pañcapañcāśataḥ' is to be taken in figurative sense. - Why so? - Because there is mutual inconsistency; if both the terms are taken as laying down what is directly expressed by them, then there is an inconsistency. - How? - There would be syntactical split if it were the 'fifty-five', and not the 'years', that were threefold; on the other hand, if the 'years' were 'threefold', then the 'fifty-five' could not be so. - By reason of this inconsistency, one or the other one of the two expressions must be taken in an indirect figurative sense - such is the opinion that has been held by the teacher, Lāvukāyana.

### Sūtra 39

It is the term 'year' that should be taken in an indirect figurative sence; because it is something variable.

### Bhāṣya

It has been said that one of the two terms should be taken in its indirect figurative sense; it has got to be decided which one it is to be. That is what is explained here. It is the term 'Saṃvatsara', 'year', that should be taken as used here in an indirect figurative sense. - Why so? - Because it is something variable; as a matter of fact, the connection of the term 'year' is variable; for instance, (1) there is the 'year' called 'Sāvana' consisting of a definite number of days, (2) then there is the 'year' consisting of the three seasons - Winter, Summer and Rains. And (3) lastly there is the 'lunar year'; and it can therefore be referred to in several ways. As for the term 'Pañcapañcāśataḥ' on the other hand, it connotes a definite number, and ceases to be applicable if that number is less even by one.

### Sūtra 40
### Pūrvapakṣa D

That word (Saṃvatsara, year) should be taken as in the case of the Archetype; because that is what should be applicable here.

### Bhāṣya

"In connection with the Gavāmayana sacrifice (which is the Archetype of the Sahasrasaṃvatsara sacrifice), months have been spoken of, and it has been explained that in that context the term 'Saṃvatsara' ('year') stands for the month, the text being 'it is the month that is the year'. Consequently in the present instance also, it must be 'fifty-five months' that are meant; hence 'Thousand years' should be taken as standing for 'Thousand months'. - 'But in that case the term Sahasra Saṃvatsara, Thousand year sacrifice, would not be applicable'. - The answer to that is that the term 'Sahasra Saṃvatsara' is only a name, and it does not connote an accessory detail (in the shape of the period of time); and certainly a mere name is never enjoined, it can be applied on the basis of any connotation that may be found suitable. "

This view (Pūrvapakṣa D) also is not acceptable; this also is open to the same objection. Because even so ('thousand months' would mean over 83 years, and) no man would live so long as to complete this course (of 83 years), because it would have to start after his marriage, Fire-installation and the Sōma-sacrifice (so that by the time he would complete the 'Sahasrasaṃvatsara' sacrifice, he should have become very much more than 100 years old); and the inevitable result would be that, if one were to undertake the performance of this sacrifice, his life-span would be spent up before the sacrifice is completed. - So that it would appear more reasonable to assume an unseen result to follow from the mere reading of the text (enjoining the sacrifice).

"In that case, in as much as the Dvādaśāha is the Archetype, we may take it as 'fifty-five twelve days'; in support of this we have the text saying 'Twelve-night periods are the replica of the year'; (So that 'Thousand years' would stand for 'Thousand Twelve-days', which would mean only a little over 33 years); and this will not be open to the said objection (of the period being too long for a man's life-span)".

This is not possible; because in the text quoted - 'Dvādaśa Vai Rātryaḥ Saṃvatsarasya Pratimāḥ' ('Twelve nights are the replica of the year') - the term 'Rātri' ('night') is not dependent for its connection upon thew term 'Saṃvatsara' ('year'), because it is connected directly with the term 'Pratimā' ('replica'). Further, the phrase used in the original text is 'Pañcapañcāśatastrivṛtaḥ' and the term 'Trivṛt' ('threefold') has been found to be used in the sense of 'Twelve days', not 'Twlve Nights'. - From all this it is clear that what has been suggested in the Sūtra (40) is not right.

### Sūtra (41)
### Final Siddhanta

In reality, the term should be taken as standing for 'days', as it is the number of days that are referred to (in the term 'Trivṛt')

**Bhāṣya**

The term 'in reality' implies the rejection of the view set forth under the foregoing Sūtra; it is not true that what are meant are 'fifty-five twelve day periods'; because it is days that are referred to in the term 'Trivṛt'. Hence the term 'Saṃvatsara' ('year') must be taken as standing for 'day'.

Or (the Sūtra may be explained in the following manner): The term 'in reality' implies the rejection of the Pūrvapakṣa view. What are meant are not 'fifty-five months', but 'days'. Because at the Dvādaśāha, what forms the subject of the Context is the 'Trivṛt' Day; and the term 'Saṃvatsara' ('year') has been applied to the day, in the following text - 'The Sun is all the seasons; when the Sun rises, it is Spring (Vasanta); when it is forenoon, it is Summer (Grīṣma); when it is midday, it is Rains (Varṣa); when it is afternoon, it is Autumn (Śarat); when the Sun sets, it is Winter (Hēmanta) and Mid-winter (Śiśira)'; in this way all the seasons go to make up the year. It is for this reason that the Day is spoken of by means of the word 'Saṃvatsara' ('year').

Then again, in the phrase 'Pañcapañcāśataḥ Trivṛtaḥ', the number 'fifty-five' pertains to the Trivṛts; - the 'Dvādaśarātri' (Twelve nights) do not constitute the Trivṛt; as the Trivṛt is only one day during the Dvādaśāha sacrifice; - any co-ordination between the number of 'Trivṛt' and the Dvādaśarātra could not be possible on the basis of Direct Denotation; it could be got at only through the indirect indication of the relationship of the Trivṛt day; - on the other hand, the Trivṛt day is a direct reference to the number; hence its co-ordination could be got at by Direct Denotation; - and Direct Denotation is more powerful than Indirect Indication. - From all this it follows that when the text speaks of 'fifty-five' in connection with 'year', it is days that are meant.

Therfore, 11000 years = 11000 days
360 days are there in one Sāvana year.
So 11000/360 years = 30. 5555555556 years = 30 years 6 months 20 days.

This we may compare with the ruling period of Yudhiṣḍhira in Mahābhārata. Like Śrīrāma, Yudhiṣḍhira is also considered as Śakapuruṣa. He ruled India only 35-36 years.

Here, a commentary called Śirōmaṇi explains in a different way and quotes Kapiñjalādhikaraṇa (11.1.8) of Mīmāṃsā :

Daśavarṣasahasrāṇi Daśasaṅkhyāguṇitāni Varṣasahasrāṇi Trisahasrasaṅkhyāsaṅkhyātavarṣāṇi Triṃśatsahasravarṣāṇītyarthaḥ. Daśavarṣaśatāni Ca Daśasaṅkhyāguṇitāni Varṣaśatāni Śatatrayavarṣāṇi Sahasratrayavarṣāṇītyarthaḥ. Evañca Trayastriṃśatsahasravarṣāṇi Rājyaṃ Rāmō Nityaramaṇaśīlaḥ Upāsitvā Kṛtvētyarthaḥ. Lyababhāva Ārṣaḥ. Ābrahmalōkaṃ Aḥ Viṣṇuḥ, Āḥ Prajāpatiḥ Brahmā

Śivaḥ, Tairlōkyatē Hṛdi Nityaṃ Smaryatē Tat. Kiñca BkahmābhiNnaṃ Lōkaṃ Ānandaghanaṃ Aprakaṭāyōdhyāpuraṃ Prayāsyati Prāpsyati. Aprakaṭatayā Tatraiva Sthāsyatītyarthaḥ. Atra Praśabdōpādānēna Tatparikarāṇāmapi Tādṛksthitiriti Vyañjitam. Bahuvacanāntasahasraśabdēna Bahuvacanāntaśataśabdēna Ca Sahasratrayaśatatrayalābhaḥ Kapiñjalādhikaraṇanyāyēnāvagantavyaḥ. Ekasahasraikaśatārthakatvaṃ Tu Nōpapadyatē, Tayōrbahuvacanāntatvāt. Viṃśatyādyāḥ Sadaikatvē Ityanuśāsanēna Ekaśēṣamantarā Bahuvacanāntatvasya Durlabhatvāt. Ata Eva Trayōdaśābdasāhasraṃ Brahmacaryamakhaṇḍitam Iti.

**kapiñjalādhikaraṇa**

The plural number in terms like kapiñlān stands for Three : kapiñjalanyāya

There is the text - vasantāya kapiñjalān ālabhatē (Sacrifices the kapiñjala-birds to vasanta) - In regard to this, we consider the following question - Should three or four or five birds be sacrificed, by option? or should only three be sacrificed? On this question, the pūrvapakṣa is as follows :

### Sūtra 38

As the plural number makes all admissible, there should be option.

The animals should be sacrificed optionally. Because all are admissible. All the numbers are equally expressed by the Plural ending. It is impossible to adopt simultaneously; hence there should be option (among the several numbers signified by the plural ending).

### Sūtra 39 (pūrvapakṣa continued)

But such use is actually found, if this is urged.

It maight be argued that - 'The Plural Number is actually found to be used in the sense of Four onwards; - in such expressions as Four brāhmaṇas; hence the present discussion becomes necessary.'

### Sūtra 40 (pūrvapakṣa continued)

So also in the present case. In the case in question also, the term 'kapiñjala' is found used in the sense of the Pigeon and the Peacock; for instance, when a large pigeon is described, it is said 'This is a kapiñjala, not a pigeon'; similarly when a small peacock is described, it is said 'This is a kapiñjala, not a peacock'.

### Sūtra 41 (pūrvapakṣa continued)

That is figurative use, if this is urged. Says the Opponent - 'In the cases cited, the term 'kapiñjala' is used figuratively; and no questions can be raised regarding the figurative use of words'.

### Sūtra 42 (pūrvapakṣa continued)

So also in the other case. In regard to the other case, - that of the expression 'Four brāhmaṇas' - it has been pointed that it is a figurative use of the Plural Number; and so no question can be raised against the figurative use of words.

### Sūtra 43 (siddhānta) :

In fact, it should be restricted to the very first; This can be passed over only when there is special reason for it.

It should be restricted to the very first, - i. e. to Three (which is the first number to be signified by the Plural Number). - "Why so?" - Because when one takes up Four, he cannot but take up Three, for the simple reason that the Three are included in the Four.

### Sūtra 44 (siddhānta)

We find other texts also indicative of the same conclusion.

If each of the first three always stands for only three, then alone can the aindrāgna be the tenth; otherwise then the assertion of the aindrāgna being the tenth would be only partly true. - From this it follows that the number must be restricted to Three.

**Sūtra 45 (siddhānta)**

Also because it is only thus that three would be approximation to the Archetype; also in the previous case.

The archetype is the animal-sacrifice to Agni-Soma, where the number is one only; which is what would be admissible in the case in question, under the General Law; so that there is approximation to this number one, if the number Three is adopted; the adoption of any higher number would remove it further from the archetypal number 'one'.

There is the following indicative also, found in connection with the gṛhamēdhīya -'ōdanānuddharati', and then later one, the term 'madhyamasya' (the middle one) is used without any other word, which shows that what is meant is the 'middlemost' from among Three; in the case of higher numbers, we always find an additional word, 'pañcānāṃ madhyamaḥ' (middlemost of five), 'aṣṭānāṃ madhyamaḥ' (middlemost of eight).

Here, the commentator opines that Śrīrāma ruled the state for 33000 years. If years are days, then His ruling period is 91 years 8 months and one day. If we add period of childhood and exile, then probably the total period may be another 30 years. So He lived the full life (120 years) of a man, according to Astrology. In this regard also He is perfect man. Because, in Indian Astrology, scholars like Varāhamihira etc. say the complete age of a man is 120 years and 5 days.

Like this, interested students can apply Mīmāṃsā maxims in Rāmāyaṇa, whenever it is needed. In fact, Rāmāyaṇa is a book of Dharma, like Vēda. So the whole Mīmāṃsāśāstra is useful to understand Rāmāyaṇa. In this series Dharmākūtam . . . is a good work, to understand it. But it is not sufficient.

**Vēda is divded in to two parts :**

The first one deals mainly Karma and the second one Brahma. Mīmāṃsā is also divided into two : Karma (Pūrva) Mīmāṃsā and Brahma (Uttara) Mīmāṃsā. The nature of these two, differs. Karma is perishable. But Brahma is imperishable. In Rāmāyaṇa also, there are parts, first and second. First part contains, six Kāṇḍas and second, one Kāṇḍa.

Some people have the opinion that Vālmīkirāmāyaṇa is in the place of Pūrvabhāga(first part) and Vāsiṣḍha Rāmāyaṇa is Uttarabhāga (Last part).

In Sanskrit literature, Pāṇini and his followers mainly deal with Sanskrit words, in their grammatical works. Some scholars tried to explain the grammar through Harismaraṇa or the devotion of Hari. Harināmāmṛtavyākaraṇam is a good example of this. It is A complete treatise on Sanskrit Grammar by Jiva Goswami. In Harināmāmṛtavyākaraṇa, Jiva Goswami perfected the methodology of teaching Sanskrit grammar. His treatise is clearer and more complete than Panini's Astadhyayi, and is filled with examples centered on the

Lord. In addition, Jiva Goswami used the Lord's names as grammar terms, and thus reflected Sri Caitanya Mahaprabhu's opinion that all words and their roots are sourced in Sri Krishna.

This style may be applied to Mīmāṃsā also. Śrīvēdāntadēśika, is pioneer in this way by his Sēśvaramīmāṃsā. This is applicable to Mīmāṃsā also. Jaimini and his students mainly discuss on the sentence of the Vēdas. So Mīmāṃsā is famous as Vākyaśāstra.

In Rāmāyaṇa, syntactical entity or sentence (vaakya) is mentioned in many places. Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ is part of many verses. Starting from Daśaratha, most of the characters of Rāmāyaṇa are the learned people, who know to use appropriate words and sentences. Śrīrāma says about Hanumān like this, to Lakṣmaṇa (4.3.27 - 35) :

***Tamabhyabhāṣa Saumitrē Sugrīvasacivaṃ Kapim.***
***Vākyajñaṃ Madhurairvākyaiḥ Snēhayuktamarindama.27***

***Nānṛgvēdavinītasya Nāyajurvēdadhāriṇaḥ.***
***Nāsāmavēdaviduṣaḥ Śakyamēvaṃ Prabhāṣitum. . 28 . .***

***Nūnaṃ Vyākaraṇaṃ Kṛtsnaṃ Anēna Bahudhā Śrutam.***
***Bahuvyāharatānēna Na Kiñcidapaśabditam. . 29 . .***

***Na Mukhē Nētrayōścāpi Lalāḍē Ca Bhruvōstathā.***
***Anyēṣvapi Ca Sarvēṣu Dōṣaḥ Saṃviditaḥ Kvacit. . 30 . .***

***Avisraṃsamasandigdhaṃ Avilambitamadrutam.***
***Urasthaṃ Kaṇḍhagaṃ Vākyaṃ Vartatē Madhurasvaram 31***

***SaṃskārakramasampaNnāṃ Adrutāmavilambitām.***
***Uccārayati Kalyāṇīṃ Vācaṃ Hṛdayahāriṇīm. . 32 . .***

***Anayā Citrayā Vācā Trasthānavyañjanasthayā.***
***Kasya Nārādhyatē Cittaṃ Udyatāsērarērapi. . 33 . .***

***Evaṃvidhō Yasya Dūtō Na Bhavēt Pārthivasya Tu.***
***Sidhyanti Hi Kathaṃ Tasya Kāryāṇāṃ Gatayō'nagha.34***

***Evaṃ Guṇagaṇairyuktā Yasya Syuḥ Kāryasādhakāḥ.***
***Tasya Sidhyanti Sarvē'rthāḥ Dūtavākyapracōditāḥ. 35***

**4.3.27 :** O (son of Sumitrā,) Lakṣmaṇa, conqueror of enemies, this monkey, Sugrīva's minister, is skilled in friendly communication. Reply to him in words gentle and sweet.

**4.3.28 :** Unless wellversed in Ṛgvēda, Yajurvēda and Sāmavēda, for sure it is not possible for anyone to articulate so well.

**4.3.29 :** Surely, he seems to have studied well the whole of grammar, for there is not a single mispronunciation in his entire speech.

**4. 3. 30 :** No fault can be found in his face, eyes, forehead, between the eyebrows or any other part of his body (during his expression).

**4. 3. 31 :** His sentences are not too elaborate, not ambiguous, not dragging, not fast, raised in the chest or throat, in a medium tone.

**4. 3. 32 :** His words are auspicious. They are refined. Niether fast, nor slow. His utterances captivate the heart.

**4. 3. 34 :** O sinless one (Lakṣmaṇa), how can a king, whoever he be, not accomplish his goal in the past with such an ambassador?

**4. 3. 35 :** Whoever has such great qualities as their envoys, can have all their goals accomplished, driven by their diplomatic skills.

Here, Vyākaraṇa mentioned is not only grammar, but it is beyond the famous grammar. Perhaps, it is the influence of the knowledge of all the Vēdas and all the Śāstras. No doubt he studied grammar also with other parts and subparts of Vēda.

Following Śrīrāma's word, Lakṣmaṇa who is intelligent to talk, talks with Hanumān, who is equally intelligent in talking(4. 3. 36) :

*Evamuktastu Saumitriḥ Sugrīvasacivaṃ Kapim.*
*Abhyabhāṣata Vākyajñō Vākyajñaṃ Pavanātmajam...*

Thus instructed, Saumitri(son of Sumitrā), who was equally skilled in speech replied to Sugrīva's minister, son of windgod.

***Vibhīṣaṇa is described as Vākyaviśārada*** in SundaraKāṇḍa 52. 4 :

*Niścitārthaṃ Tataḥ Sāmnā Pūjyaṃ Śatrujidagrajam.*
*Uvāca Hitamatyarthaṃ Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ...*

Then Vibhīṣaṇa, who was skilled in speech, having decided about his duty, addressed his reverential elder brother, a conqueror of enemies in soothing words in a meaningfull, wholesome manner.

***Jāmbavān is also described as Vākyaviśārada*** in SundaraKāṇḍa 60. 14 :

*Tamēvaṃ Kṛtasaṅkalpaṃ Jāmbavān Harisattamaḥ.*
*Uvāca Paramaprītō Vākyamarthavidarthavit..*

Jāmbavān, the noble Vānara, skilled in the execution of tasks thus commanded in a determined manner.

Like this, we come across several places, where Vākya / Vākyajña is used. Such instances are collected here, with the help of index, for further study :

Vākyajñastattvadarśanaḥ 7. 90. 6-2 (Rāmakathāprasaṅgē Budhaḥ)

Vākyajñō Vākyajñaṃ Pavanātmajam 4. 3. 37-4 (Lakṣmaṇaḥ)

Vākyajñaṃ Madhurairvākyaiḥ 4. 3. 28-3 (Rāmaḥ Hanumantam)

Vākyajñō Vākyakōvidam 6. 111. 96-2 (Rāmaḥ Vibhīṣaṇam)

Vākyajñā Rōṣamūrchitā 2. 14. 20-4 (Kaikēyī)

Vākyajñā Vākyakōvidam 1. 33. 15-4 (Kaikēyī)

Vākyajñairvākyakōvidaiḥ 1. 41. 11-2 (Diśāpālaiḥ)

Vākyajñō Munipuṅgavam 1. 67. 20-4 (Janakaḥ)

Vākyajñō Vākyakuśalam 2. 113. 11-3 (Vasiṣṭhaḥ Rāghavam)

Vākyajñō Vākyakuśalam 6. 17. 30-3 (Sugrīvaḥ Rāmam)

Vākyajñō Vākyakuśalam 6. 18. 20-3 (Sugrīvaḥ Rāmam)

Vākyajñō Vākyakuśalaḥ 4. 3. 24-3

Vākyajñō Vākyakōvidam 1. 51. 10-4

Vākyajñō Vākyakōvidam 1. 58. 17-2

Vākyajñō Vākyakōvidam 2. 31. 18-4

Vākyamagrāmyapadavat 6. 37. 6-3

Vākyamadbhutadarśanam 7. 82. 8-2

Vākyamadbhutadarśanam 7. 91. 8-2

Vākyamadbhutavistaram 1. 19. 1-2

Vākyamanvarthamarthajñaḥ 3. 73. 1-3

Vākyamapratirūpaṃ Tu 3. 45. 29-1

Vākyamapratikūlaṃ Tu 3. 40. 10-1

Vākyamarthavadabravīt 4. 64. 14-4

Vākyamarthavadarthavat 5. 60. 14-4

Vākyamarthavadavyagraḥ 5. 51. 1-3

Vākyamarthavidāṃ Varam 6. 20. 8

Vākyamaṃśumatō Nṛpaḥ 1. 41. 24-2

Vākyamātmahitaṃ Caiva 4. 43. 2-3

Vākyamāha Daśānanaḥ 7. 16. 22-4

Vākyamāha Nararṣabhaḥ 7. 100. 94

Vākyamāha Samāhitam 5. 58. 136-4

Vākyamuktaṃ Daśānana 6. 16. 20-2

Vākyamuktvā Gatastadā 1. 55. 18-4

Vākyamuttaramabravam 5. 68. 16-4

Vākyamuttaramabravīt 5. 36. 32-4

Vākyamuttaramabravīt 5. 39. 13-4

Vākyamuttaramabravīt 5. 39. 32-4

Vākyamuttaramabravīt 5. 52. 10-4

Vākyamuttaramabravīt 5. 56. 14-4

Vākyamuttaramabravīt 6. 1. 1-4

Vākyamūcaturantikam 3. 73. 44-2

Vākyamētattataḥ Śrutvā 3. 20. 5-1

Vākyamētattu Vaidēhyā 3. 10. 1-1

Vākyamētadudāhṛtam 3. 10. 8-2

Vākyamētaduvāca Ha 1. 39. 12-2

Vākyamētaduvāca Ha 1. 59. 7-2

Vākyamētaduvāca Ha 2. 28. 2-4

Vākyamētaduvāca Ha 3. 12. 1-4

Vākyamētaduvāca Ha 4. 38. 5-2

Vākyamētaduvāca Ha 5. 63. 1-4

Vākyamētaduvāca Ha 6. 123. 27-2

Vākyamētaduvāca Ha 7. 2. 1-4

Vākyamētaduvāca Ha 7. 2. 29-4

Vākyamētaduvāca Ha 7. 9. 21-2
Vākyamētaduvāca Ha 7. 13. 34-2
Vākyamētaduvāca Ha 7. 27. 6-4
Vākyamētaduvāca Ha 7. 38. 2-4
Vākyamētaduvāca Ha 7. 40. 20-4
Vākyamētaduvāca Ha 7. 47. 10-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 50. 9-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 53. 1-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 61. 10-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 65. 3-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 73. 3-6
Vākyamētaduvāca Ha 1. 76. 1-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 83. 2-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 83. 9-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 84. 11-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 105. 3-4
Vākyamētaduvāca Ha 1. 106. 7-4
Vākyamētanniśācara 6. 16. 16-2
Vākyamēṣā Kṛtā Matiḥ 7. 13. 38-2
Vākyavajrairanupamaiḥ 2. 35. 4-1
Vākyavid Vākyatattvajñam 4. 29. 7-3
Vākyaṃ Kālasamīritam 7. 104. 16-2
Vākyaṃ Kiṃ Nānumanyasē 5. 23. 9-2
Vākyaṃ Gararujōpamam 2. 14. 21-2
Vākyaṃ Ghōrābhisaṃhatam 7. 13. 17-6
Vākyaṃ Ghōrābhisaṃhitam 1. 58. 8-4
Vākyaṃ Cādbhutasaṅkāśam 7. 102. 1-3
Vākyañcēdamudīrayan 5. 58. 24-4
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 1. 35. 3-4
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 1. 62. 4-2
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 2. 50. 38-2
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 6. 86. 29-4
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 6. 91. 7-4
Vākyaṃ Cēdamuvāca Ha 6. 99. 2-4
Vākyaṃ Caitaduvāca Ha 7. 61. 6-4
Vākyaṃ Caivāntarikṣē Ca 7. 9. 36-5
Vākyaṃ Tat Susamāhitaḥ 7. 50. 16-2
Vākyaṃ Tadapi Mē Dhṛtam 2. 118. 8-4
Vākyaṃ Tasya Mahātmanaḥ 7. 105. 8-2
Vākyaṃ Tvaṃ Kṣantumarhasi 2. 52. 38-4
Vākyaṃ Dadhimukhō'bravīt 5. 63. 4-4
Vākyaṃ Danuranuttamam 3. 71. 26-4
Vākyaṃ Dāśarathistadā 1. 76. 1-2
Vākyaṃ Dēvaḥ Pitāmahaḥ 7. 30. 16-2
Vākyaṃ Dharmārthasaṃhitam 7. 106. 12-2
Vākyaṃ Nānyasya Kasyacit 5. 64. 20-2
Vākyaṃ Niṣphalamatyartham 3. 40. 3-3
Vākyaṃ Paramagarhitam 4. 10. 13-2
Vākyaṃ Paramatējasvī 7. 79. 4-3
Vākyaṃ Paramadharmavit 1. 73. 13-4

Vākyaṃ Paramadhārmikaḥ 1. 58. 14-4
Vākyaṃ Paramamadbhutam 7. 104. 17-2
Vākyaṃ Paramaśōbhanam 2. 12. 51-2
Vākyaṃ Prakṛtayō'bruvan 2. 36. 21-4
Vākyaṃ Prāñjalayō'bruvan 7. 10. 36-2
Vākyaṃ Bhaktyā Prahṛṣḍavat 6. 102. 45-4
Vākyaṃ Madhurabhāṣiṇau 1. 31. 3-4
Vākyaṃ Madhuramabruvan 1. 65. 19-2
Vākyaṃ Mama Pitustathā 6. 3. 78-2
Vākyaṃ Mahārthaṃ Parisāntvarūpam 4. 33. 40-4
Vākyaṃ Māmabhyupasthitam 6. 60. 6-2
Vākyaṃ Mēghaughaniḥsvanaḥ 6. 67. 105-4
Vākyaṃ Mē Yadyavēkṣasē 7. 62. 20-2
Vākyaṃ Yattvaṃ Prabhāṣasē 7. 13. 34-4
Vākyaṃ Rāmaṃ Mahābalam 6. 22. 43-4
Vākyaṃ Lakṣmaṇamabravīt 3. 2. 46-4
Vākyaṃ Lakṣmaṇamabravīt 3. 24. 2-4
Vākyaṃ Laghutayā Dhruvam 2. 27. 2-2
Vākyaṃ Lōkapitāmahaḥ 7. 10. 27-2
Vākyaṃ Vacanakōvidaḥ 2. 92. 20-2
Vākyaṃ Vacanasampannaḥ 6. 17. 47-3
Vākyaṃ Vākyavidāṃ Varaḥ 7. 11. 30-4
Vākyaṃ Vākyavidāṃ Śrēṣḍhaḥ 1. 69. 14-1 1. 70. 16 2. 21. 33 6. 3. 6
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 48. 13
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 53. 8
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 53. 17
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 66. 4
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 3. 37. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 4. 4. 25
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 38. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 52. 4
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 63. 15
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 64. 13
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 85. 4
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 7. 83. 9
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 7. 87. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 7. 18
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 74. 21
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 17. 45
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 7. 108. 31
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 90. 92
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 3. 68. 4
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 18. 7
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 47. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 62. 3
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 17. 32
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 83. 13
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 83. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 103. 13

Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 119. 14
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 20. 39
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 1. 61. 22
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 4. 36. 2
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 24. 13
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 46. 7
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 4. 63. 1
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 14. 57
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 5. 58. 81
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 118. 9
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 2. 44. 30
Vākyaṃ Vākyaviśāradaḥ 6. 116. 3
Vēdajñō Nṛpamabravīt 1. 15. 1
Vēdaprōktēna Vidhinā 6. 108. 14
Vēdamantrānusāriṇī 2. 45. 24
Vēdavit Sarvasaṅgrahaḥ 1. 6. 1
Vēdavidbhirudāhṛtān 6. 10. 8
Vēdavidbhiḥ Supūjitaḥ 5. 35. 14
Vēdavidyāvratasnātaḥ 6. 92. 60
Vēda Vēdavidāṃ Varaḥ 5. 34. 3 6. 28. 19
Vēdavēdāṅgatattvajñaḥ 1. 1. 14
Vēdavēdāṅgaviduṣaḥ 7. 1. 8
Vēdāṅgēṣu Ca Niṣthitaḥ 5. 35. 14
Vēdādhyayanaśālinām 1. 50. 3
Vēdāntagaḥ Karmasu Cābhyaśūraḥ 6. 109. 23
Vēdā Brāhmaṇarūpēṇa 7. 109. 8
Vēdābhyāsaṃ Mahātmanaḥ 7. 17. 9
Vēdā Yē Naḥ Paraṃ Dhanam 2. 54. 25
Vēdā Lōkā Diśaśca Tāḥ 2. 25. 36
Vēdāśca Varayantu Mām 1. 65. 23
Vēdāstraya Ivādhvaram 7. 37. 17
Vēdāṃścōccairadhīyatē 6. 35. 19
Vēdāḥ Satyapratiṣḍhitāḥ 2. 109. 14
Vēdāḥ Sahāṅgā Vidyāśca 2. 14. 49
Vaidēhyā Vākyamatulaṃ 4. 1. 110
Śāstrajñaśca Kṛtajñaśca 2. 1. 25
Śāstrajñairyajñakōvidaiḥ 1. 14. 24
Śāstradṛṣḍēna Karmaṇā 1. 8. 9 1. 18. 44 1. 66. 2 6. 24. 13
Śāstradṛṣḍēna Cakṣuṣā 6. 6. 612
Śāstradṛṣḍēna Vidhinā 3. 68. 36 4. 26. 34 6. 3. 117
Śāstraprayōgād Vividhācca Vēdāt 4. 24. 38
Śāstrabuddhyā Vicakṣaṇaḥ 6. 17. 45
Śāstraṃ Yatnēna Dhīmatā 2. 75. 28
Śāstraṃ Vānyad Viśēṣataḥ 2. 64. 32
Śāstrē Dṛṣḍaḥ Sanātanaiḥ 2. 61. 23

## Bibliography

1. Jaiminiya Nyayamala, Anandashrama, Pune (1892)
2. Mānamēyōdayaḥ Chowkhamba Vidya Bhavan, Varanasi (1996)
3. Ramayana, Chowkhamba Vidya Bhavan, Varanasi (2002)
4. Rāmāyaṇa Developed and maintained by IIT Kanpur
5. Shabara Bhashya English Translation, Ganganath Jha
6. Śāstradīpikā Kṛṣṇadāsa Academy, Vārāṇasi (1988)
7. Śāstrālōkaḥ, Maisūru (1966)

❑

*From left : Dr. S. Nagaraju, Bengaluru, Dr. Kameshwar Upadyaya, Varanasi, Prof. Rajendra Mishra, Shimla and Prof. Shashiprabha Kumar, New Delhi were honoured during inaugural session - Message of Ramayana*

# rāmāyana tradition after valmiki in india and abroad

**Prof. Rajendra Mishra**

Rāmāyana became popular in champā (Viet-nam) Kambuja (combodia) Suvarnabhūmi (Myanmar) Sukhodaya – Dwārāvati and Ayodhyā (Thailand) Śrivijaya (Sumatra) Katāh dweepa (Keddah, Malaysia) and Suvarnadweepa (Java and Bali) between 1st to 5th century A.D. An exhaustive account of the origin and development of the Ramayana - these are in the above - cited territories is available.

*Late* Shri Perala Ratnam (Ambassador of India to U.S.A., China, Laos and Indonesia) had very politely advised Pt. Jawaharlal Nehru, the Premier of India to form the Ramayana Commonwealth on the pattern of British Commonwealth so that the internal disputes of all the countries, coming under the influence of the Ramayan Culture could be negotiated amicably. Actually, Shri Ratnam had deeply perused the Ramayana literature of the far-east countries and was aware of its predominating influence over the social and religious life of those territories. But Pt. Nehru didn't pay respect to this proposal, possibly because he lived religion and culture only as a fashion. Moreover, upto some extent he was absolutely an a – theist.

Never the less, we can claim that the two third part of the global dimension is intrinsically connected with Ramayana culture. Right from the ancient Egypt upto the Indonesian archipelago, we still find the foot-prints of that egregious culture. The ancient history of Egyptian royal dynasties, dating back 5702 B.C. has been inscribed on stones and is still preserved. This historical account delineates the complete sequential progress of those eighteen dynasties which ruled over Egypt from 5702 to 1st century B.C. Now, the more interesting part of this history tells us that in between 1400 to 1100 B.C. thirteen kings, namely known as RAMASASU, remained on the throne. The word 'SASU' is the śaśin of Sanskṛta which means the moon is Chandra. Thus, Ramasasu means Ramachandra and nothing else. The First Ramasasu, bearing the title of Ramāpati ruled in 1400 B.C. and the thirteenth one, who befriended with Harihara ruled in 1100 B.C.

I have quoted this Egyptian Historical account only in order to prove the antiquity of the Rama-episode. It is an eye-opener evidence to those Indian historians who still feel dubious in accepting the antiquity and authenticity of the Ramayana – story and are fully reluctant to cross over the line of the Buddhist era as if pre-Buddhist India had no history. I think, it is a proper time for them to change their narrow and stagnant mentality.

The historical account of the king Śankhakara, who sent his messenger HANU (=HANUMAN?) to the PANAT totally seems to be coherent with that of Rama who sends Hanuman, the monkey – messenger, to the island of Lanka. On the other hand, the Mitani history of the Asia Minor preserves the name of a king 'DĀSĀRATH' whose detailed accounts are available in the remains of the Egyptian old city TEL-UL-AMARNA (the capital city of Emperor AKHAWATAN) and BOGASKOI (Turkistan)[1].

Now, it seems easy to infer that the mighty episode of Rama gained popularity in Asia Minor and Egypt even in 1500 B.C. I don't want to elucidate this context more but very politely pray the Historians to assess these illuminant evidences once again.

---

1. See : History of Ancient Egypt by George Rolinson 1881

According to the puranic evidences Lord Rama was born in the 24th Treta Yuga[2]. Actually it was the joint period of Treta and Dwapara is the last 700 years of Treta and the beginning 300 years of Dwapara. According to the exact astrological calculations he was present on this earth from Manu era 10, 23, 83, 300 to 10, 23, 84, 300. In other words, his presence on this earth was 1, 45, 56, 757 years before today.

But who believes it? Our historical vision is still guided by the westerners. We blindly follow them and feel proud of it.

However, this fact is beyond any doubt that the story of Lord Rāma has been recited by the great Maharṣi Valmiki, for the first time. Gradually it developed in several branches and frames, even controversial to each-other. But the eternal theme of Ramayana was not fragile. Since it grew strengthened more and more. The Ramayana culture, as I have stated earlier, spread over in the far middle-west and Asia Minor regions at least 1500 B.C. Afterward it reached the pacific islands also with the foundation of Indian colonial rule just in the beginning of the Christian era. Rāmāyana became popular in champā (Viet-nam) Kambuja (combodia) Suvarnabhūmi (Myanmar) Sukhodaya – Dwārāvati and Ayodhyā (Thailand) Śrivijaya (Sumatra) Katāh dweepa (Keddah, Malaysia) and Suvarnadweepa (Java and Bali) between 1st to 5th century A.D. An exhaustive account of the origin and development of the Ramayana - these are in the above - cited territories is available. I would like to add some thing more to this account just at the end of this article.

After this short material, regarding the expansion of the Rāma-episode, I will try to make an assessment of its manifold traditions. It has an interesting background.

In the 6th century B.C., two great super human beings were born in India. One of them was Prince Siddhārtha, the son of Śuddhodana who was the ruler of the Śākya dynasty. Another was Prince Vardhamāna, the son of Kundalapur – ruler Siddhartha and Trishala. Both of them relinguished the world in youth and practised rigorous penance to achieve the salvation (Nirvāna and Kaivalya respectively) They became successful in their efforts, achieving the path of salvation and preached their sermons amid common persons. They wanted some radical changes in vedic religion. Prince Siddhartha, known as Lord Buddha or Tathāgata (the enlightened soul) opposed the caste-system. He didn't like the caste supremacy based on birth and declared:

---

[2] त््रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपसः क्षयात् ।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान् ॥ वायुं ७०.५८
चतुर्विंशे युगे वत्स ! त्रेतायां रघुवंशजः ।
रामो नाम भविध्यामि चतुर्व्यूहस्सनातनः ॥ ब्रह्मण्ड २.३.३६.३०

चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरस्सरः ।
लोके राम हति रव्यात स्तेजसा भास्करोपमः ॥ हरिवंश २२.१.५६

सन्धौ तु समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च ।
रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पतिः ॥ महां शान्तिं ३५८.१६

न जच्चा बम्मनो होति न जच्चा होति खत्तियो ।
कम्मुणा बम्मणो होति कम्मुणा होति खत्तियो ॥

Prince Vardhamāna, known as Lord Mahāvira criticised the sacrifice of innocent animals in Yajnas and advocated in favour of non-violence. His principal motto was अहिंसा परमो धर्म !

Both of these preachers were against the entity of God and didn't adhere to the testimony of Vedas. In the beginning the points of opposition and divergence were a few. But gradually it widened to the extent of an un compatible revolt against Vedic religion. Being related with the reputed royal dynasties these religions teachers influenced the contemporary ruling powers and were fully benefitted through these royal patronages. Under the regime of the Mauryan empire the Vedic religion was totally toppled.

Although these sects, recognized as Buddha and Jain, had their own scriptures, having the new concepts of Atman (soul) Jeeva (beings) Janma and Mṛtyu (life and death) they developed their own spiritual thoughts and philosophical speculations. They preached the new codes of conduct, social norms and way of life. In every sphere of worldly behaviors these sects were absolutely opposed to the Vedic Dharma (or Sanātana as well as Brāhmaṇa Dharma).

But at the same time, they adopted Vedic themes in literary field and either renovated them or changed them completely. The effective themes of Rāmāyana, Mahābhārata, Śrimad bhagavata and other Puranas were reconstructed by the Jain poets under their own framework and sectarian point of view.

Thus the Rāmāyana tradition (after Valmiki) was divided in two branches - Vedic and Non Vedic. The non-Vedic tradition was further divided in Buddha and Jain branches.

The Vedic tradition of Rāmāyana portraits Lord Rama as an incarnation of Viśnu, the Almighty God. The later literary works, composed under this tradition are : Adhyātma Rāmāyaṇa, Yogavāsiṣṭha, Bhuśuṇḍi Rāmāyana, Śrimadbhagawata, Mahābharata (Vanaparva) Raghuvanśa of Kalidasa, Rāmacharita of Abhinanda, Ravanavadha of Bhatti, Janakiharaṇa of Kumaradasa, Setubandha of Pravarasena, Abhiṣeka and Pratimānātaka of Bhasa, Mahāviracharita and Uttararamacharita of Bhavabhūti, Anargha Rāghava of Murāri, Bala-Rāmāyaṇa of Rājaśekhara, Kundamālā of Dinnaga, Prasanna Raghava of Jayadeva, Aścharya Chūdāmaṇi of Śaktibhadra, Adbhuta Darpaṇa of Mahadeva, Rāmāyaṇa champū of Maharaja Bhoja and Rāmāyana Mañjari of Kshemendra.

However, this list doesn't exhaust here. I have furnished only a few names. Otherwise hundreds and hundreds more titles can be added. In modern era also the voluminous Mahakāvyas like Jānakicharitāmṛtam (Rāma Sanchi Dāsa) Sitacharitam (Prof. Reva Prasad Dwivedi) Janaki Jeevanam (Abhirāja Dr. Rajendra Mishra) have been composed in the same tradition. This tradition still survives through the recent creative writings in Samskṛta and other Indian languages.

The non-Vedic tradition of Rāmāyana developed through the literary works composed by Bauddha and Jain (Arhat) poets. Some prominent works are : Daśaratha Jataka (Bauddha tradition) Adi Purāṇa of Bhadrababu, Padmacharita of Raviṣeṇa, Paum Chariu (Apabhranśa) of Swayambhū, Ananda Rāmāyana of an unknown author and so on, so forth.

Since the Bauddha and Jain poets were completely atheist, their characterization of Rama, Sita and others was totally different from those poets who followed the foot-prints of Maharṣi Vālmiki. Lord Rāma was an incarnation of Mahaviṣṇu. He was a super human being. He possessed innumerable divine qualities. He was polite, balanced, affectionate, compassionate and an unparalleled archer. He owned the most dignified human personality having high ideals. Actually Lord Viṣṇu himself was born as Rāma in order to kill the most tyrant demon Rāvaṇa, the ruler of Lankā. In short, Rāma was an embodiment of divinity or godliness in humanity. He established high ideals of human life in order to guide the future generations.

On the other hand, the non-Vedic poets had nothing to do with the godliness of Rāma. He was just a common man for them full of human weaknesses and discrepancies. These poets elaborated the character of Rāma on this pattern. The writer of Daśaratha Jataka portrayed Rama and Sita as the brother and sister, the issues of king Daśaratha. Advised by their father (Daśaratha) they dwell in the forest along the Lakkhanapandita. But the grotesqueness of this story lies in its final touch, where Rāma and Sita, after their return from the forest, are presented as wife and husband. This distortion and disgracing twist of original theme authentically proves the obnoxious standpoint of the non-Vedic poets.

Raviṣeṇa in his Padmacharitam described Rāma as the heartless killer of Vidyujjihwa, the husband of Chandranakhā. The same story developed later on is the form of Śambūka-episode. Swayambhū, the composer of Paum Chariu had developed acute hatred, peevishness, aversion and dissent towards Rāma. That is why he described Rāma, running after the physical lust and sensual pleasure. In the end of his story Swayambhū delineates that Prince Lakshmaṇa could achieve salvation is NIRVĀṆA due to his unstained high character but Rāma was destined to enter the four walls of the hell in order to enjoy the punishment of his unpardonable offences.

The same degraded tendency can be seen in the Rāmāyana story of Laos (Fa-Lak Fa-Lam) Thailand (Rāma Kien) Malaysia (Hikayat Maharaja Ram) Śrilanka (Rāma Ketti) these territories, being under the Buddist regime, supported the Non-Vedic tradition of the Rāma-episode. These Rāmāyanas narrate the story in their own way along with several alterations, additions, projections and interpolations. They put forth the utopian views of this poets.

A context of the Laos. Rāmāyana (Fa-Lak-Fa-Lam) runs like this: Rāma and Lakshmana are moving ahead in the quest of Sita. They are hungry. Rāma beholds a tree laden with sweet fruits. He climbs the tree. The tree has two branches. One branch of this tree has got a divine power of converting a man into monkey. Unknown to this mystery, unfortunately Rāma climbs the same branch and turns into a monkey. On the same branch dwells a she – monkey. Actually she is an Apsarā, but being cursed by her mother, has become a she – monkey. Now the monkey (Rāma) and she-monkey meet together on the same branch make love and consequent upon this a monkey baby is born. This baby is 'HANIMON' (Hanuman) Beneath the tree, the younger brother Lakshmaṇa is lamenting for Rāma. An ascetic tells him the device to bring Rāma in his human form. That is to climb on the other branch. Lakshmaṇa allures the monkey (Rāma) to reach the cognate branch and ultimately becomes successful. As soon as Rāma gains human form, the she-monkey turns into an Apsara and ascends swarga directing her son to accompany his father Rāma. The most remarkable point in this theme is the blood-relation between Rāma and Hanuman.

The Rāmāyana of Thailand (Rāma Kien) also presents likewise strange versions. One of them tells us that the monkey. Commander Hanuman had sexual relation with the daughter of Vibhiṣaṇa, namely Benjakayi and a male child ASURAFAD is born. This story seems to be coherent with the episode of Makaradhwaja, described in several other Rāmāyanas.

But the Rāmāyana Kakaween of Yavadweepa (Java) is an exception to the above cited anti-Vedic Ramayana tradition. This epoch-making poetry, consisting 26 sargas and 2778 ślokas composed in the KAWI language, had been manifested by the great ascetic poet YOGIŚWARA under the patronage of the central Jawa-ruler VATUKURU BALITUNGA of Mataram dynasty just in the end of the 9th century A.D. This majestic poetry completely follows the tradition of Valmiki, portraying Rāma as the PARA BRAHMA PARAMEŚWARA. It is evident from the puṣpikā (last verses) of the Kakaween:

जय परमेश्वरातिशय शक्ति नाथ निकनङ् जगत्चय कित
प्रणत हति ङ्कु नित्य रि सुकुन्त तातनलुपा लना मतुतुर ।
इकन फलानि भक्ति नि हतिङ्कु रात्य त तुमूत भक्त्य रि कित
कलवनिकिङ् सुभाषितकथा सभाकिन् ऋङौन् रस न्य सुभग ॥ [9]

– रामां . कक . २६.४६

'The most powerful ruler of the three lokas, O Parameśwara! you are victorious. I enshrine in my heart firm faith to your exalted feet. You always reside in the temple of my mind and are never forgotten. This dedicated reverence of mine be the reverence and devotion of all those beings who are with me in your worship. O

---

9. Aśvalalita or Adritanayā metre

Lord! This sublime theme of yours, composed through the meaningful words be more and more popular and its auspicious as well as benign relish be enjoyed by the readers'.

The political history of Java clearly states the religious temperament of its rulers. They remained the worshippers of Lord Śiva and Viṣṇu. The great conqueror Eralanga (1010-49 A.D.) was considered to be the incarnation of Viṣṇu whilst Kameśvara I of the Kadiri dynasty (1106 - 35 A.D.) and his queen Śrikiraṇa were understood to be the embodiments of Kāma and Rati. The founder of the Majapahita dynasty king Kṛtarājasa Jayavardhana (1294-1304 A.D.) was a staunch follower of HARIHARA. However, Kṛtanagara (1254-92 A.D.) the great ruler of the seṅhasāri dynasty adept in Bauddha Subhutitantra and Shaiva Agamas, stands unparallel in the galaxy of Javanese rulers. He declared himself the joint incarnation of SHIV-BUDDHA. Still today, hundreds and hundred Shiva-Buddha images of copper, bronze, silver and gold are kept safe in the museums of Java and Leiden (Holland).

Since the Javanese rulers followed Vedic traditions in every sphere of life, consequently the same tendency prevailed in their literature also. We can't have even a single example of odiousness in the themes of the Rāmāyana Kakaween.

I think it's enough. I have clearly stated the contrary view-points of the Vedic and Non-Vedic traditions of Rāmāyana. But one question still stands unanswered that why do we use find different versions of the single context, even under the Vedic tradition? The background of Rāma's departure to the Daṇḍakāraṇya, for example, has various versions in the Sanskrit dramas. Why is this?

Let me explain. It is not the distortion of the theme as done by the Bauddha and Jain poets. It is an example of poetic excellence in order to exhilarate the readers. The great rhetorician, Achārya Kuntaka (10th century A.D.) names it Prakaraṇa Vakratā[1]. It is merely a positive alteration keeping in view the easy treatment of Rasa (relish) such alterations have been admitted with praise, even by the Dhvanikāra Achārya Anandavardhana (9th C.A.D.)

दृष्टपूर्वा अपि ह्यर्थाः काव्ये रसपरिग्रहात् ।
सर्वे नवा इवाभान्ति मधुमास इव द्रुमाः ॥
संवादास्तु भवन्त्येव बाहुल्येन सुमेधसाम् ।
नैकरुपतया सर्वे ते मन्तव्या विपश्चिता ॥
तत्त्वस्यान्यस्य सद्भावे पूर्वास्थित्यनुयाय्यपि ।
वस्तु भातितरां तन्व्याः शशिच्छायमिवाननम् ॥

**-Dhvanyāloka, 4.4, 11 & 14**

Such positive, skilful and justifiable changes enhance the delight of the reader whilst the odious expressions always create panic and perplexity in the mind of a devoted reverent reader.

---

1. वक्रभावः प्रकरणे प्रबन्धे वास्ति याहशः ।
तन्मते सहजादार्य सौकमार्यमनोहरः ॥ वक्रोक्ति १.२१

To explain and elucidate it more clearly I would like to quote Acharya Kuntaka himself. According to the theme of the Vālmiki Rāmayaṇa, Prince Lakshmaṇa, being motivated by Sita, rushes for Rāma's rescue in the killing context of Māricha. Now, Acharya Kuntaka comments:

> तदेतदत्यन्तमनौचित्ययुक्तम् । यस्मादनुचरसान्निधाने
> प्रधानस्य तथाविधव्यापार करणमसम्भावनीयम् । तस्य च
> सर्वातिशयचरितयुक्तत्वेन वर्ण्यमानस्य तेन कनीयसा
> प्राणपरित्राणसम्भावनेति एतदत्यन्तमसमीचीनम्... ।

How is it possible that a great archer like Rāma might be saved by his younger brother? Would it not be improper to delineate? And if it is so, this impropriety will spoil the treatment of Rasa: **अनौचित्यदृते नाऽन्यद्रसमङ्गस्य कारणम्**

Every poet has full right to judge the propriety of each and every context, being incorporated in his poem. That is what, Māyuraja did in his play Udattarāghavam. Since he couldn't accept the propriety of the above-cited action (is Lakshman's effort to help Rāma) he slightly changed the theme. According to his version, it was prince Lakshmaṇa who went for hunting the deer *i.e.* Māricha. Listening his cry for help, his elder brother Rāma rushed to the place and thus, the device of Rāvaṇa to make Sita alone and helpless became successful.

Māyurāja finds propriety in this version. A younger brother must be helped by the elder, specially in perilous condition. What is wrong here? To experience the taste of the poetic relish (काव्यानन्द) is the only goal of poetry and it is not possible without its proper treatment. If the propriety will not be considered supreme and conclusive it would be rather difficult to refute the justifiability of Rāvana's love for Sita. That's why Achārya Kshemendra (11th century A.D.) declares **औचित्य**, the soul of poetry.

But, the above-mentioned alteration made by Māyuraja is not only due to propriety. It is due to poetic excellences also as refered to by Acharya Kuntaka himself
**कविना वैदग्ध्यवशेन... इत्पुपनिबद्धम् । अत्र च**
**तद्विदाह्लादकारित्वमेव वक्रत्वम्**

Another example of such alteration is available in the Bālarāmāyaṇa Nātaka of the Epic Genius Rajashekhara (10th century A.D.) In order to prove Kaikeyi and Dasharatha absolutely innocent, Rajashekhara has changed the traditional theme of the Vālmiki Rāmāyaṇa. According to his plan, Rāvana, the ruler of Laṇka, maliciously sends Māyāmaya and Shūrpanakhā to act as Dasharatha and Kaikeyi. Thus, the banishment of Rāma etc occurs through the conspiracy of Rāvaṇa.

Another version tells us that Rāvaṇa used Shūrpanakhā in order to fulfill his wishes. Actually he wanted the banishment of Rāma so that he could avail a chance to abduct Sita, whom he loved viciously. For this purpose he commanded Shūrpanakhā to act as Mantharā. Thus, Shūrpanakhā under the disguise of Mantharā embitters the heart of Kaikeyi, resulting in Rāma's banishment.

Hundreds and hundreds, such other changes, alterations, additions, reproductions, renovations and imaginations, related with the original Rāmāyaṇa theme are available in

Sanskrit dramas, Kavyas and other literary genres. It is hard to assess them collectively. In short, we can say that the Rāmāyaṇa tradition after Valmiki has developed in several ways. But two main factors, considered to be responsible for it, are : sectarian malignity (rather a negative approach, evident in the Buddhist and Jain Rāmāyaṇa Tradition) and -

Poetic Excellence or प्रकरणवक्रता is alterations and deviations in order to produce literary sublimity, grandness and other poetic merits. It is a positive approach, practiced by the poets and dramatists who composed poems in the sequence and accordance of the Valmiki Rāmāyaṇa. That effort is still going on. Today, the creative dimension of Rāmāyaṇa theme has crossed the limits of place and language. It is not confined to Samskṛta only. All the twenty two languages of India, recognised by the Sāhitya Akadami (New Delhi) are producing fresh Rama episodes, having a new outlook, new expression of facts and fresh interpretations. ❑

Bharatiya Vidya
Bhavan
BENGALURU
ರಾಮಾಯಣದ ಸಂದೇಶ
Srila Prabhupada's
ISKCON
BANGALORE

*Prof. Mallepuram G. Venkatesh, Former Vice-Chancellor, Karnataka Sanskrit University launching the book on 'Message of Srimad Bhagavatha' while from left Dr. S. Nagaraju, Bengaluru, Prof. Shashiprabha Kumar, New Delhi, Sri. Madhu Pandit Das, Justice Dr. M. Rama Jois, Sri. N. Ramanuja, Prof. Rajendra Mishra, Shimla, Dr. Kameshwar Upadyaya, Varanasi, and Sri. H.N. Suresh, joins.*

# an overview of "three hundred ramayanas"

## a critical essay by a. k. ramanujan

Prof. S. Naganath

This critical essay is written by the well-known bilingual poet, linguist and scholar A. K. Ramanujan. This essay also carries a subtitle "Five examples and three thoughts on translation".

This critical essay is written by the well-known bilingual poet, linguist and scholar A. K. Ramanujan. This essay also carries a subtitle "Five examples and three thoughts on translation". It is an established fact that the two great epics "Ramayana" and "Mahabharata" have far reaching influence over all of the Indian subcontinent and South – East Asia. During the last two centuries, its appeal has become global. The date of Rama's birth, the date of Rama's battle against Ravana and the date of writing of Ramayana by sage Valmiki and the Uttara Ramayana as an added appendage at a later date, all have become topics of unresolved debate.

A. K. Ramanujan gives one version of Ramayana in the beginning of the essay, which deals with the deaths of Lakshmana and Rama. Lord Rama was sitting on his throne and his ring fell through a crevice in the ground and reached the nether world. His trusted Lieutenant Hanuman was sent to fetch the ring as he could reduce his body to the size of an atom. In the absence of Hanuman, Brahma and not sage Vasistha came to parley with king Rama.Lakshmana was asked to stand guard at the door and allow anyone to disturb the confidential talks. Rama ordered his brother Lakshmana to chop off the head of any intruder, who wanted to enter the court. Lo! Who should come? The short tempered sage Vishwamitra wanted to barge in. Lakshmana was in a dilemma and told Vishwamitra about Rama's inviolable orders. The sage Vishwamitra threatened to burn down the whole kingdom, if he was not allowed in. Lakshmana decided to risk his life rather than risk the lives of millions of citizens of Ayodhya. He announced in Rama's court that sage Vishwamitra had come to see King Rama. Lakshmana was asked to usher in Vishwamitra into the court. The discussion with Brahma and Vasistha had come to a close. They had come there to inform Lord Rama that his end was near and the phase of incarnation was over. The ever abiding and loyal brother Lakshmana offered his head to be chopped off by Rama as he had violated the diktkat of the king. Lakshmana was an avatar of Sesa, the serpent on whom Lord Vishnu sleeps. Lakshmana's end was also near. Lakshmana went to Sarayu river and jumped into the swirling waters and disappeared. As Rama's end had come, Rama also disappeared in the river. In the Nether world, Hanuman the miniature Monkey had become an object of curiosity. Moreover, he was incessantly chanting the name of Rama. The king of spirits wanted to know his identity. Hanuman identified himself and told him about the purpose of his visit. Hanuman was offered a Golden plate full of rings. The king of spirits asked him to choose Rama's ring and take it. All of them looked alike and he could not decide which one to take back. The king of spirits told him that in the past there were as many Rama's as there were rings on the plate. He told Hanuman that when Rama's avatar came to an end, the ring would fall from the finger and end up in the Nether world. The King of spirits told Hanuman that when he returns to Ayodhya, he will not find Rama there. This apocryphal story is told to impress that there are as many Ramas and Ramayanas as one could imagine. According to A. K. Ramanujan, Rama's story is narrated in Assamese, Balinese, Bengali, Cambodian, Chinese, Gujarati, Javanese, Kannada, Kashmiri, Khotanese, Laotian, Malaysian, Marathi, Oriya, Prakrit, Sanskrit, Santali, Sinhalese, Tamil, Telugu, Thai, Tibetan, European languages and at least 25 versions of Ramayana exist in Sanskrit. It is presented in dance-dramas, mask plays, puppet plays and shadow plays etc. A. K. Ramanujan says in this critical essay, he wants to explore "what gets translated, transplanted and transposed" finally as Ramayana.

First A. K. Ramanujan makes a comparative analysis of Valmiki and Kamban's treatment of Ahalya episode. This famous episode is treated differently by the two. The story of Ahalya occurs in Valmiki'sBalakanda. King Rama in his travails comesupon the abandoned ashram of Gautama. The story of Ahalya is narrated by sage Vishwamitra to Rama. Indra, the king of kings called thousand eyes is attracted by the beauty of Ahalya. He enters the ashram of Gautama in the guise of Gautama. The great sage Gautama has gone to the river. A. K. Ramanujan translates the crucial verse in this manner.

"She knew it was Indra of the thousand eyes in the guise of the sage. Yet she wrongheaded woman, made up her mind, excited, curious about the king of the Gods". Ahalya according to this translation commits adultery willingly with God Indra. In the meanwhile sage Gautama returned from the river and caught Indra in the guise of Gautama. The sage Gautama realized the prank played by Indra and with great anger cursed him to lose his testicles. Later he looked at Ahalya and cursed her to remain there eating the air and to remain without food for many thousands of years. She will be liberated from her curse when Rama the unassailable son of Dashratha comes into this desolate Ashram.

The emasculated Indra went to the assembly of Gods led by Agni. He told the Gods that he wanted to disrupt the tapas of Gautama as per their wishes. In the guise of Gautama, he ravished the beautiful Ahalya. Subsequently he was cursed by Gautama to lose his testicles. He wanted Agni and other Gods to help him get back his manhood. Agni told the Gods to castrate a ram and graft its testicles on the Indra, so that he could get back his manhood. Indra got back his manhood and since then the divine ancestors have been offering castrated rams to Agni and eating them. Rama walked into the ashram to confront the beautiful liberated Ahalya.

In the Kamban's version of the story, Ahalya knowingly commits adultery with Indra. In the meanwhile Sage Gautama returns to Ashram and becomes an angry Siva with his third eye blazing. He looks at Ahalya whose sinful act was evident and her shame will not end in this endless world. Indra wanted to sulk away like a cat. Sage Gautama curses him to be covered with 1000 vaginas. He got transformed and became a laughing stock of the world. He cursed Ahalya to become a black rock. She begs him to forgive her sin and to set some limit to his curse. He told her when Rama enters the Ashram on his sojourn, the dust of his feet will liberate her. The Gods led by Brahma come in a delegation to sage Gautama to plead on behalf of Indra. The sage Gautama who had cooled down changed the marks on the body of Indra to 1000 eyes. According to A. K. Ramanujan, in Valmiki's Ramayana, Indra seduces a willing Ahalya and is in Kamban Ramayana she knows she is doing a wrong thing, but cannot let go of the forbidden joy.

In Kamban's poetry sage Gautama is portrayed as all spirit and no desire for flesh. Indra tries to steal away from the scene in the shape of a cat, clearly a folklore motif. Ahalya is turned into a stone and Indra wears one thousand Vaginas after the curse. In Kamban's version after Rama's feet touched the stone Ahalya was liberated. In Valmiki's version, Rama is portrayed as a God-man. In the first and last book of Ramayana he is defined as God. Perhaps these books are later additions. In Kamban's Ramayana he is the great God, who has come to redeem mankind.

A. K. Ramanajuam discusses Meta-Ramayanas like "Adhyatma Ramayana", a 16th century work. In this version Rama does not want to take Sita with him to the forest. She offers the usual arguments that she is his wife, she must share his sufferings and be a partner in his exile. Still Rama is unwilling to take her with him. In her final outburst she says "Countless Ramayanas have been composed before this. Do you know of one where SIta doesn't go with Rama to the forest?" This argument convinces Rama to take Sita with him into exile.

The Tamil Ramayana of Kamban appears to have influenced Telugu and Malayalam versions as well. Finally the Ramayana story reaches South-East Asian countries. The Thai version "Ramakien" owes much to the Tamil epic. In the Thai version, Rsyasrnga is called by the Tamil name Kalaikkotu. Even ThulasiDas'sRamcaritmanas and the Malaysian version "Hikayat Seri" Ram seems to have borrowed many things from Kamban's Ramayana. The Rama story travelled from Punjab and Kashmir into China, Tibet and East Turkestan. The Ramayana story travelled by sea from Gujarat and South India into Java, Sumatra and Malaya. The Ramayana travelled from Bengal into Burma, Thailand and Laos. Vietnam and Cambodia received Ramayana partly from Java and partly from India via the eastern sea route.

## The Jain versions:

The Jain version of "Ramayana" epic carries in it Jain values and philosophy. They do not accept Ravana as a villain. They do not accept Kumbakarna's sleep through 6 months of the year. King Srenika goes to sage Gautama and requests him to give the true version of Ramayana. In the Jain "Ramayana" of Vimalasuri called "Paumacariya" (Prakruth for the Sanskrit word Padmacarita) gives the corrected version and discusses Purana and Pratipurana. The Jain Ramayana does not begin with King Rama, but with King Ravana. According to the Jain tradition Ravana is one of the 63 leaders called Salakapurusas. He is a noble king, a learned scholar and one who has earned magical powers and weapons through Tapas and he worships the Jain thirtankaras. He has taken a vow not to touch or molest another woman. He comes to know from astrologers that he will meet his end through a woman called Sita. But he cannot resist his passion and temptation for the beautiful Sita.

In another Jain version, Lakshmana and Ravana are like Vasudeva and Prati-Vasudeva. In every birth, Ravana is killed by Lakshmana. In Ramayana they have taken their 8th birth and it is Lakshmana who confronts Ravana on the battlefield. Ravana hurls his chakra at Lakshmana, but the chakra gently surrenders itself to Lakshmana as he is a Vasudeva. Finally Lakshmana kills Ravana with his own special weapon. According to the Jain version of "Ramayana", Rama is an evolved soul and he has conquered his passions. So he does not kill Ravana personally. When Ravana was a child his mother adorned him with a necklace of nine gems. Ravana's head got reflected in the nine gems and he came to be known as Dasamukha. In the Jain version, the monkeys are not monkeys, but they are Vidyadharas (Celestial creatures).

## The oral tradition:

A. K. Ramanujan gives the example of Kannada folksingers known as "TamburiDasayyas", who sing their own version of Ramayana. Here the poet is an untouchable. The King Ravana is called Ravula in this folk version. Ravana and Mandodari are a childless couple. So Ravana goes to the forest and does severe tapas to obtain a boon. A Jogi comes to him and infact he is Siva himself who gives him a mango fruit as a boon. He asks Ravana how he will share it with his wife Mandodari. Ravana tells the Jogi he will give the fleshy portion to his wife and he will lick the seed. The Jogi warns him that if he cannot keep up his promise, he is bound to pay a price for his folly. Ravana returns to Lanka and there he changes his mind. He eats the fleshy fruit and gives the seed to Mandodari to lick it. The consequence of which Ravana becomes pregnant. In the folk song his progress of pregnancy is made fun of. He delivers a female child through his nose and the child comes to be known as Sita. According to A. K. Ramanujan, Sita means 'he sneezed'. The popular meaning of Sita is catching a cold. The astrologers tell him that the child Sita will hasten his end. So the baby is put in a box and left in Janaka's field to be discovered. Rama lifts the bow and marries the young bride Sita. But Ravana who cannot lift the bow becomes a laughing stock in the Janaka's court. The rest of the story is similar to Valmiki's rendition. In another Jain epic, "Vasudevahimdi" once again Sita is portrayed as Ravana's daughter.

## South East Asian Versions:

King Rama I of Thailand composed "Ramayana" in 50,000 verses. King Rama II composed new "Ramayana" episodes for dance drama and Rama VI added another set of episodes taken from Valmiki. In Thai "Ramakirti" we come across three types of characters human, the demonic and the simian. "Ramakien" has three parts. The first and the second part faithfully follows Valmiki's version of

Ramayana. The third part describes an insurrection in Lanka after the death of Ravana. Rama deputes his two youngest brothers to quell the rebellion. This appears to be a Thai invention. In Jain "Ramayana"Shurpanakha's daughter comes to Ayodhya and becomes a maid servant of Sita. She induces Sita to draw a picture of Ravana in the bedroom. According to one version it is indelible and according to another version Ravana's picture often comes to life. When Rama sees this picture, he becomes extremely angry and orders Lakshmana to take Sita into the forest and kill her. But Lakshmana out of compassion, spares the life of Sita and brings back the heart of a deer as evidence of execution. Later Rama comes to know Sita is alive in the forest. Rama sends a message to her that he is dead and this makes Sita to come to palace immediately. She is enraged to see him alive and does not appreciate the trick. She prays to Mother Earth to take her. Finally Lord Siva unites Rama and Sita once again. In Thailand, they look upon Rama as an incarnation of Vishnu and he is a subordinate to Siva. In Thai "Ramayana" Hanuman is neither devote nor religious. He is a ladies man who does not mind peeping into the bedrooms of ladies in Lanka. He is very popular with the Thai audience for his dalliances.

### The different patterns:

The different versions of Ramayana resemble the myths existing in other parts of the world. The rise of Sita from the furrow and her return to the earth resembles Proserpine mythology of Greeks. Sita can be compared to a seed and Rama the dark one to the rain clouds. There are many references in Ramayana to fertility and rain. The Ramayana begins with Kraunchavadha, Dasharatha kills a young ascetic accidently mistaking him for an elephant, Rama's killing of the golden deer and Maricha shouting in the voice of Rama for help from Lakshmana are all based on acts of violence. During the absence of Lakshmana, Sita is abducted by Ravana. The killing of birds and animals continue throughout Ramayana. Ravana kills Jatayu and later Rama kills Vali to help Sugriva. In the Tamil story of "Satakantaravana", Sita is made into a greater hero than Rama. After Rama kills ten headed Ravana, another Ravana with 100 heads appears on the battlefield. Rama is helpless and Sita comes to the rescue of Rama and kills Ravana with 100 heads.

### Some aspects of translation:

In Western countries, a translation is expected to be faithful to the original text. A. K. Ramanujan gives an example of Chapman's translation of Homer's "Iliad". The translator reproduces the text in "hexameter and retains the same number of lines as in the original Greek. Only the language is English and the idiom Elizabethan". The Kamban's"Ramayana" is longer than Valmiki's"Ramayana" and 20 different kinds of Tamil meters are used, whereas Valmiki sticks to Sloka meter. The text two, which is a translation, often, subverts the predecessor by producing a counter text. Such a translation can be termed 'symbolic'. Even a faithful translation contains all these elements. The Goldman's translation of the Ramayana (1984), is an iconic work in the trans-literation mode. He has retained Sanskrit names, number and sequence of verses and the order of the episode, but the translation is in English idiom and equipped with introductions and footnotes. We read the scholarly modern English translation largely to gain a sense of the original Valmiki. When someone is indulging in a long winded talk we say "What is this Ramayana now? Enough." A small room is often compared to Kiskindhakanda in Tamilnadu. A village idiot is often made fun of in this fashion "After hearing the Ramayana all night, he asks how Rama is related to Sita".

## The impact on listeners:

This story is narrated to describe the heightened impact of "Ramayana" on listeners. An uneducated villager marries a cultured woman from the City. A Harikathadasa comes to the village. She forces her husband to attend the Harikatha recitation in the village. On the first 3 nights, he sleeps through the narration. When the wife comes to know about it, she is angry. She accompanies him on the fourth night and makes him sit in the first row. The Harikathadasa is narrating the Hanuman's flight to Lanka with Rama's ring. He accidently drops the ring into the sea. He does not know how to retrieve it. The uneducated villager suddenly dives into the sea and from the bottom brings the ring and gives it back to Hanuman. Everyone is astounded by this great devotional feat. He came to be respected as a village elder and wise man from then onwards.

I hereby like to quote two Sanskrit verses which epitomize the poetic license used by its practitioners.

Number 1:

*"Apare Kavya Samsare are*
*Kavireva Prajapathihe*
*Yathasmyrochatheviswam*
*Tathedam Parivartate"*

Translation:

(Everything exists in the poetic world
In this world the poet is the all-powerful creator
He makes the world extremely alluring
Accordingly he transforms the poetic universe)

Number 2:

*"Niyathikruthaniyamarahitham*
*Hiladaikamayeemananyaparatantram* |
*Navarasaruchiramnirmitamaddhati*
*BharatiKaverJayati"* ||

Translation:

(He is not bound by rules and regulations
He is free and independent to give pleasure and bliss through his poetry
He pleases the reader by creating literary masterpieces with Navarasa
The word of the poet is final)

The above two verses explain how a poet takes liberties to impress upon the readers. A translator wants to prove his genius. So he often deviates from the original to make it more alluring to the readers. Often the deviant is hailed more by the readers than the original. While rendering a newer version of the same old epic, there is also the question of propriety and good sense which should prevail. It is finally the reader who accepts or rejects interpolations and extrapolations in the new work. A. K. Ramanujan gives the example of Aristotle's Jack-knife. The philosopher asked an old carpenter, how long he had his knife. The carpenter said 'oh, I have had it for 30 years. I have changed the blade a few times and the handle a few times, but it is the same knife.' Can this rationale be applied to every new fantastic translation or trans-creation made by a new generation poet? Let not the stream of reason get lost in the exotic fairy land of imagination through these fantastic creations of poets. ❑

*Bharatanatya Recital*
*'Ramanama'*
*Saramrutham by the artists of NUPURA*
*Direction:*
*Dr. Lalitha Srinivasan*

# teachings of lord rämacandra from srimad bhägavatam

**Shukadeva Dasa**

When the Lord descends on the material world, He displays Himself with all paraphernalia in His internal potency, which is called *ätma-mäyä* to reclaim the fallen souls who are entrapped by the material energy and reestablishes the codes of religion which are directly enacted by Him. Except for God, no one can establish the principles of religion.

Lord Srikrisna has His eternal *dhäma*, or abode, where He eternally enjoys Himself with His eternal associates and paraphernalia. He eternally enjoys Himself with His associates in the various loving relationships such as:

1. ***Sänta rasa* (neutrality)**: One may be a devotee in a passive state such as the flute, ornaments worn by Krishna, the various trees, birds, flowers, cows, calves etc..serve the Lord in Shanta rasa.
2. ***Däsya rasa* (servitorship)**: One may be a devotee in an active state as a servant such as Raktaka, Patraka, Mandana etc. serve the Lord in Vrindavan. Hanuman serves Lord Ramachandra as His eternal servant.
3. ***Sakhya rasa* (friendship)**: One may be a devotee as a friend such as Baladeva, Sridhama, Subala etc. serve the Lord in friendly relationship.
4. ***Vätsalya rasa* (parental affection):** One may be a devotee as a parent such as Mother Yashoda, Nanda Maharaja, Mother Devaki and Vasudeva etc. who serve the Lord as his parents.
5. ***Mädhurya* rasa (conjugal love)**: One may be a devotee as a conjugal lover such as Smt. Radharani and the other gopies in Vrindavan and there are various Queens of Lord Krishna who serve him as His consorts in Dvaraka.

When the Lord descends on the material world, He displays Himself with all paraphernalia in His internal potency, which is called *ätma-mäyä* to reclaim the fallen souls who are entrapped by the material energy and reestablishes the codes of religion which are directly enacted by Him. Except for God, no one can establish the principles of religion. Either He or a suitable person empowered by Him can dictate the codes of religion. Real religion means to know God, our relation with Him and our duties in relation with Him and to know ultimately our destination after leaving this material body.

## We must hear Rämäyana from a *tattva-darsi*

In Tretä yuga the Lord appeared as Lord Sri Rämacandra and taught many lessons for mankind by His personal example to enable the human beings to achieve the ultimate goal of life – Love of Godhead or *Krsña prema*. To achieve love of Godhead, we must approach a self-realized soul, a pure devotee of the Lord and learn the truth from him. In Bhagavad-gita (4.34) the Supreme Personality of Godhead advises:

***tad viddhi pranipätena pariprasnena sevayä***
***upadekñyanti te jïänam jïäninas tattva-darsinah***

"Just try to learn the truth by approaching a spiritual master. Inquire from him submissively and render service unto him. The self-realized soul can impart knowledge unto you because he has seen the truth." Unless one is *tattva-darsi*, in complete knowledge of the Absolute Truth, one cannot describe the activities of the Personality of Godhead.Välmiki is one such *tattva-darsi.* The activities of Lord Rämacandra is composed by him, in his famous literature known as Rämäyana. Over a period of time many people have tried to describe the activities of Lord Rämacandra in their own way. Therefore although there are many so-called Rämäyanas, or histories of Lord

Rämacandra's activities, some of them are not actually authoritative. Sometimes Lord Rämacandra's activities are described in terms of one's own imaginations, speculations or material sentiments. But the characteristics of Lord Rämacandra should not be handled as something imaginary. While describing the history of Lord Rämacandra, Sukadeva Gosvämi told Mahäräja Parikñit, "You have already heard about the activities of Lord Rämacandra." Apparently, therefore, five thousand years ago there were many Rämäyanas, or histories of Lord Rämacandra's activities, and there are many still. But we must select only those books written by *tattva-darsis* (*jïäninas tattva-darsinah* [Bg. 4.34]), not the books of so-called scholars who claim knowledge only on the basis of a doctorate. This is a warning by Sukadeva Gosvämi. *Jñibhis tattva-darsinah.* Although the Rämäyana composed by Välmiki is a huge literature, the same activities are summarized here by *tattva-darsi* Sukadeva Gosvämi in a few verses in Srimad Bhägavatam. In this article, teachings of Lord Rämacandra from Srimad Bhägavatam is presented.

Srila Sukadeva Gosvämi summarizes the entire Rämäyana in one verse and offers his respects to Lord Rämacandra as follows:

***gurv-arthe tyakta-räjyo vyacarad anuvanaà padma-***
***padbhyää priyäyäù***

***päëi-sparçäkñamäbhyää måjita-patha-***
***rujo yo haréndränujäbhyäm***

***vairüpyäc chürpaëakhyäù priya-viraha-***
***ruñäropita-bhrü-vijåmbha-***

***trastäbdhir baddha-setuù khala-dava-***
***dahanaù kosalendro 'vatän naù***

"To keep the promise of His father intact, Lord Rämacandra immediately gave up the position of king and, accompanied by His wife, mother Sitä, wandered from one forest to another on His lotus feet, which were so delicate that they were unable to bear even the touch of Sitä's palms. The Lord was also accompanied by Hanumän [or by another monkey, Sugriva], king of the monkeys, and by His own younger brother Lord Laksmana, both of whom gave Him relief from the fatigue of wandering in the forest. Having cut off the nose and ears of Sürpanakhä, thus disfiguring her, the Lord was separated from mother Sitä. He therefore became angry, moving His eyebrows and thus frightening the ocean, who then allowed the Lord to construct a bridge to cross the ocean. Subsequently, the Lord entered the kingdom of Rävana to kill him, like a fire devouring a forest. May that Supreme Lord, Rämacandra, give us all protection." SB [9.10.4]

## Teachings of Lord Rämacandra

From the description given by Srila Sukadeva Gosvämi about Lord Rämacandra in Srimad Bhägavatam, the following teachings are noteworthy:

### 1) We should be obedient to the superiors

Lord Rämacandra taught obedience to superiors by carrying out the orders of His father:

***yaù satya-päça-parivéta-pitur nideçaà***
***straiëasya cäpi çirasä jagåhe sabhäryaù***

***räjyaà çriyaà praëayinaù suhådo niväsaà***
***tyaktvä yayau vanam asün iva mukta-saìgaù***

"Carrying out the order of His father, who was bound by a promise to his wife, Lord Rämacandra left behind His kingdom, opulence, friends, well-wishers, residence and everything else, just as a liberated soul gives up his life, and went to the forest with Sitä." SB [9.10.8]

Mahäräja Dasaratha had three wives. One of them, Kaikeyi, served him very pleasingly, and he therefore wanted to give her a benediction. Kaikeyi, however, said that she would ask for the benediction when it was necessary. At the time of the coronation of Prince Rämacandra, Kaikeyi requested her husband to enthrone her son Bharata and send Rämacandra to the forest. Mahäräja Dasaratha, being bound by his promise, ordered Rämacandra to go to the forest, according to the dictation of his beloved. And the Lord, as an obedient son, accepted the order immediately. He left everything without hesitation, just as a liberated soul or great yogi gives up his life without material attraction.

In Raghu-vamsa (14.46) there is a description of this point.

***saçuçruvänmätaribhärgaveëapiturniyogät***
***prahåtaàdviñad-vat***
***pratyagåhédagraja-çäsanaà tad***
***äjïägurüëäàhyavicäraëéyä***

Being ordered by his father, Parasuräma killed his mother, Renukä, just as if she were an enemy. When Laksmana, the younger brother of Lord Rämacandra, heard of this, He immediately engaged Himself in the service of His elder brother and accepted His orders. The order of the spiritual master must be obeyed without consideration.

Raghu-vamsa (14.46)

Lord Rämacandra's statement to Sitä:

***nirvicäraàguroräjïämayäkäryämahätmanaù***
***çreyohyevaàbhavatyäçca mama caivaviçeñataù***

The order of a great personality like a father must be executed without consideration because there is good fortune in such an order for both of us. In particular, there is good fortune for Me.

Rämäyana (Ayodhyä-kända 22.9)

Ordinarily, the spiritual master, husband, father, mother or superior relative accepts worship from an inferior relative, but Lord Åñabhadeva forbids this. He says:

***gururnasasyätsva-***
***janonasasyätpitänasasyäjjananénasäsyät***

***daivaàna tat***
***syännapatiçcasasyännamocayedyaùsamupeta-måtyum***

> *"One who cannot deliver his dependents from the path of repeated birth and death should never become a spiritual master, a father, a husband, a mother or a worshipable demigod."*
>
> SB 5.5.18

We have many instances in history illustrating Åñabhadeva's instructions. Sukräcärya was rejected by

Bali Mahäräja due to his inability to save Bali Mahäräja from the path of repeated birth and death. Sukräcärya was not a pure devotee, he was more or less inclined to fruitive activity, and he objected when Bali Mahäräja promised to give everything to Lord Visnu. Actually one is supposed to give everything to the Lord because everything belongs to the Lord. Consequently, the Supreme Lord advises in Bhagavad-gitä (9.27):

***yatkaroñiyadaçnäsiyajjuhoñidadäsiyat***
***yattapasyasikaunteyatat kurusva mad-arpanam***

"O son of Kunti, all that you do, all that you eat, all that you offer and give away, as well as all austerities that you may perform, should be done as an offering unto Me." This is bhakti. Unless one is devoted, he cannot give everything to the Supreme Lord. Unless one can do so, he cannot become a spiritual master, husband, father or mother. Similarly, the wives of the brähman as who were performing sacrifices gave up their relatives just to satisfy Krsña. This is an example of a wife rejecting a husband who cannot deliver her from the impending dangers of birth and death. Similarly, Prahläda Mahäräja rejected his father, and Bharata Mahäräja rejected his mother (*jananénasäsyät*). The word daivam indicates a demigod or one who accepts worship from a dependent. Ordinarily, the spiritual master, husband, father, mother or superior relative accepts worship from an inferior relative, but here Åñabhadeva forbids this. First the father, spiritual master or husband must be able to release the dependent from repeated birth and death. If he cannot do this, he plunges himself into the ocean of reproachment for his unlawful activities. Everyone should be very responsible and take charge of his dependents just as a spiritual master takes charge of his disciple or a father takes charge of his son. All these responsibilities cannot be discharged honestly unless one can save the dependent from repeated birth and death.

We have to be obedient to such a superior who takes responsibility to liberate us from the cycle of birth and death and enable us to achieve our eternal relation with the Supreme Lord. Such a superior is worshipable and has to be obeyed.

Lord Rämacandra set this example to mankind by obeying His father's order.

**2) Sinful and irreligious people have to be punished**

Lord Rämacandra killed many demons to give protection in the arena of sacrifice performed by Visvämitra:

***visvämiträdhvare yena märécädyä niçä-caräù***
***paçyato lakñmaëasyaiva hatä nairåta-puìgaväù***

*"In the arena of the sacrifice performed by Visvämitra, Lord Rämacandra, the King of Ayodhyä, killed many demons, Räksasas and uncivilized men who wandered at night in the mode of darkness. May Lord Rämacandra, who killed these demons in the presence of Lakñmana, be kind enough to give us protection."*

SB [9.10.5]

In this way Lord Rämacandra killed many demons to establish religious principles.

*Na ca daivät paraà balam*: no one can surpass the strength of the Transcendence. Rävana was so sinful and shameless that he did not know what the result would be of kidnapping mother Sitä, the pleasure potency of Rämacandra. This is the disqualification of the Räksasas. *Asatyam apratiñöhaà te jagad ähur anéçvaram* [Bg. 16.8]. The Räksasas are unaware that the Supreme Lord is the ruler of the creation. They think that everything has come about by chance or accident and that there is no ruler, king or controller. Therefore the Räksasas act independently, as they like, going even so far as to kidnap the goddess of fortune. This policy of Rävana's is extremely dangerous for the materialist; indeed, it brings ruin to the materialistic civilization. Nonetheless, because atheists are Räksasas, they dare to do things that are most abominable, and thus they are punished without fail. Religion consists of the orders of the Supreme Lord, and one who carries out these orders is religious. One who fails to carry out the Lord's orders is irreligious, and he is to be punished.

### 3) Better not to marry

Materialistic people lead a life of ignorance. They think that we are these bodies and they strive hard to gratify their senses to the fullest extent. Lord Rämacandra taught by His personal example that happiness centered around sense gratification is miserable.

Srila Sukadeva Gosvämi describes this point in prayers of Hanumän:

***martyävatäras tv iha martya-çikñaëaàrakño-***
***vadhäyaiva na kevalaà vibhoù***
***kuto 'nyathä syäd ramataù sva ätmanaùsétä-***
***kåtäni vyasanänéçvarasya***

*"It was ordained that Rävana, chief of the Räksasas, could not be killed by anyone but a man, and for this reason Lord Rämacandra, the Supreme Personality of Godhead, appeared in the form of a human being. Lord Rämacandra's mission, however, was not only to kill Rävana but also to teach mortal beings that material happiness centered around sex life or centered around one's wife is the cause of many miseries. He is the self-sufficient Supreme Personality of Godhead, and nothing is lamentable for Him. Therefore why else could He be subjected to tribulations by the kidnapping of mother Sitä?"*

[SB 5.19.5]

In the above prayer, the point to note is: "Material happiness centered around sex life or centered around one's wife is the cause of many miseries"

This point is again mentioned by Srila Sukadeva Gosvämi in Srimad Bhägavatam as follows:

***rakño-'dhamena våkavad vipine 'samakñaàvaideha-***
***räja-duhitary apayäpitäyäm***

***bhräträ vane kåpaëavat priyayä viyuktaùstré-***
***saìginäà gatim iti prathayaàç cacära***

*"When Rämacandra entered the forest and Laksmana was also absent, the worst of the Räksasas, Rävana, kidnapped Sitädevi, the daughter of the King of Videha, just as a tiger seizes*

> *unprotected sheep when the shepherd is absent. Then Lord Rämacandra wandered in the forest with His brother Laksmana as if very much distressed due to separation from His wife. Thus He showed by His personal example the condition of a person attached to women."*
>
> [SB 9.10.11]

Srila Shukadeva Goswami says that Rämacandra wandered in the forest with His brother Laksmana as if very much distressed due to separation from His wife. By His personal example, Lord Rämacandra taught the devotees that it is better not to enter married life, which is certainly followed by many tribulations. As confirmed in Srimad-Bhägavatam (7.9.45):

***yan maithunädi-gåhamedhi-sukhaà hi tucchaà***
***kaëòüyanena karayor iva duùkha-duùkham***
***tåpyanti neha kåpaëä bahu-duùkha-bhäjaù***
***kaëòütivan manasijaà viñaheta-dhéraù***

*Kåpaëas*, those who are not advanced in spiritual knowledge and who are therefore just the opposite of *brähmanas*, generally take to family life, which is a concession for sex. Thus they enjoy sex again and again, although that sex is followed by many tribulations. This is a warning to devotees. To teach this lesson to devotees and to human society in general, Lord Sri Rämacandra, although the Supreme Personality of Godhead Himself, underwent a series of tribulations because He accepted a wife, mother Sitä. Lord Rämacandra underwent these austerities, of course, only to instruct us; actually He never has any reason to lament for anything.

### 4) Accept only one wife and be faithful to her

Srila Sukadeva Gosvämi describes *Eka-patni-vrata* accepted by Lord Rämacandra:

***eka-patné-vrata-dharo räjarñi-caritaù çuciù***
***sva-dharmaà gåha-medhéyaà çikñayan svayam äcarat***

> *"Lord Rämacandra took a vow to accept only one wife and have no connection with any other women. He was a saintly king, and everything in His character was good, untinged by qualities like anger. He taught good behavior for everyone, especially for householders, in terms of varnäsrama-dharma. Thus He taught the general public by His personal activities."*
>
> [SB 9.10.54]

*Eka-patni-vrata*, accepting only one wife, was the glorious example set by Lord Rämacandra. One should not accept more than one wife. In those days, of course, people did marry more than one wife. Even Lord Rämacandra's father accepted more wives than one. But Lord Rämacandra, as an ideal king, accepted only one wife, mother Sitä. When mother Sitä was kidnapped by Rävana and the Räksasas, Lord Rämacandra, as the Supreme Personality of Godhead, could have married hundreds and thousands of Sitäs, but to teach us how faithful He was to His wife, He fought with Rävana and finally killed him. The Lord punished Rävana and rescued His wife to instruct men to have only one wife. Lord Rämacandra accepted only one wife and manifested sublime character, thus setting an example for householders. A householder should live according to the ideal of Lord Rämacandra, who showed how to be a perfect person. Being a householder or living with a wife and children is never condemned, provided one lives according to the regulative principles of *varnäsrama-dharma*. Those who live in accordance with these principles, whether as householders, *brahmacäris* or *vänaprasthas*, are all equally important.

As Lord Rämacandra is the ideal husband (*eka-patni-vrata*), mother Sitä is the ideal wife. Such a combination makes family life very happy. Mother Sitä had the following qualities:

***premëänuvåttyä çélena praçrayävanatä saté***
***bhiyä hriyä ca bhäva-jïä bhartuù sétäharan manaù***

*Mother Sitä was very submissive, faithful, shy and chaste, always understanding the attitude of her husband. Thus by her character and her love and service she completely attracted the mind of the Lord.*

[SB 9.10.55]

*Yadyadäcaratisreñöhas tat tad evetaro janaù*: whatever example a great man sets, common people follow. If the kings, the leaders, and the *brähmanas*, the teachers, would set forth the examples we receive from Vedic literature, the entire world would be heaven; indeed, there would no longer be hellish conditions within this material world.

Lord Rämacandra instructs us that one who accepts a wife must be a faithful husband and give her full protection as a beloved and dutiful husband. Otherwise He had no reason to undergo apparent tribulations. One who strictly follows religious principles must not neglect to provide all facilities for the complete protection of his wife. There may be some suffering because of this, but one must nevertheless endure it. That is the duty of a faithful husband. By His personal example, Lord Rämacandra demonstrated this duty. Lord Rämacandra could have produced hundreds and thousands of Sitäs from His pleasure energy, but just to show the duty of a faithful husband, He not only rescued Sitä from the hands of Rävana but also killed Rävana and all the members of his family.

***rämas tam äha puruñäda-puréña yan naù***
***käntäsamakñam asatäpahåtä çvavat te***
***tyakta-trapasya phalam adya jugupsitasya***
***yacchämi käla iva kartur alaìghya-véryaù***

*"Lord Rämacandra said to Rävana: You are the most abominable of the man-eaters. Indeed, you are like their stool. You resemble a dog, for as a dog steals eatables from the kitchen in the absence of the householder, in My absence you kidnapped My wife, Sitädevi. Therefore as Yamaräja punishes sinful men, I shall also punish you. You are most abominable, sinful and shameless. Today, therefore, I, whose attempt never fails, shall punish you."*

SB [9.10.22]

### 5) The Lord and His devotees are unaffected by material tribulations

Another aspect of the teachings of Lord Rämacandra is that although Lord Visnu, the Supreme Personality of Godhead, and His devotees may apparently suffer from material tribulations, they have nothing to do with such tribulations. They are *mukta-puruñas*, liberated persons, under all circumstances. It is therefore said in the Caitanya-bhägavata:

***yata dekha vaiñëavera vyavahära duùkha***
***niçcaya jäniha tähä paramänanda-sukha***

A Vaisnava is always firmly situated in transcendental bliss because of engagement in devotional service. Although he may appear to suffer material pains, his position is called transcendental bliss in separation (*viraha*). The emotions a lover and beloved feel when separated from one another are actually very blissful, although apparently painful. Therefore the separation of Lord Rämacandra from Sitädevi, as well as the consequent tribulation they suffered, is but another display of transcendental bliss. That is the opinion of Srila Visvanätha Cakravarti Öhäkura.

*Näräyanan paro 'vyaktät*: Näräyana is beyond the material creation. Because He is the creator of the material world, He is not subject to the conditions of the material world. The separation of Lord Rämacandra from Sitä is spiritually understood as *vipralambha*, which is an activity of the *hlädini* potency of the Supreme Personality of Godhead belonging to the *sringära-rasa*, the mellow of conjugal love in the spiritual world. In the spiritual world the Supreme Personality of Godhead has all the dealings of love, displaying the symptoms called *sättvika, sanïcäré, viläpa, mürcchä* and *unmäda*. Thus when Lord Rämacandra was separated from Sitä, all these spiritual symptoms were manifested. The Lord is neither impersonal nor impotent. Rather, He is *sac-cid-änanda-vigraha* [Bs. 5.1], the eternal form of knowledge and bliss. Thus He has all the symptoms of spiritual bliss. Feeling separation from one's beloved is also an item of spiritual bliss.

### 6) A King should be like a father

Srila Sukadeva Gosvämi gives a beautiful description of Räma-Räjya in Srimad Bhägavatam canto nine chapter ten as follows:

***agrahéd äsanaà bhräträpraëipatya prasäditaù***
***prajäù sva-dharma-niratävarëäçrama-guëänvitäù***
***jugopa pitåvad rämomenire pitaraà ca tam***

*"Being pleased by the full surrender and submission of Lord Bharata, Lord Rämacandra then accepted the throne of the state. He cared for the citizens exactly like a father, and the citizens, being fully engaged in their occupational duties of varna and äsrama, accepted Him as their father."*

[SB 9.10.50]

Lord Rämacandra ruled His kingdom exactly as a father takes care of his children, and the citizens, being obliged to the good government of Lord Rämacandra, accepted the Lord as their father. As indicated here by the words *sva-dharma-niratä varnäsrama-guëän-vitäù*, the people were good citizens because they accepted the institution of *varna* and *äsrama*, which arranges society in the *varna* divisions of *brähmana, ksatriya, vaisya* and *südra* and the *äsrama* divisions of *brahmacarya, grhastha, vänaprastha* and *sannyäsa*. This is actual human civilization. People must be trained according to the different *varnäsrama* occupational duties. As confirmed in Bhagavad-gitä (4.13), *cätur-varnäsramaya guna-karma-vibhägas'ah*: the four *varnas* must be established according to varying qualities and work. The first principle for good government is that it must institute this *varnäsrama* system. The purpose of *varnäsrama* is to enable people to become God conscious.

**varnäsramäcära-vatäpuruñeëa paraù pumän**
**visnur ärädhyate panthänänyat tat-toña-käraëam**

> *"The Supreme Personality of Godhead, Lord Visnu, is worshiped by the proper execution of prescribed duties in the system of varna and äsrama. There is no other way to satisfy the Supreme Personality of Godhead. One must be situated in the institution of the four varnas and äsramas."*

[Visnu Puräna (3.8.9)].

The entire *varnäsrama* scheme is intended to enable people to become Vaisnavas. *Visnur asya devatä*. When people worship Lord Visnu as the Supreme Lord, they become Vaisnavas. Thus people should be trained to become Vaisnavas through the system of *varna* and *äsrama*, as they were during the reign of Lord Rämacandra, when everyone was fully trained to follow the *varnäsrama* principles.

Simply enforcing laws and ordinances cannot make the citizens obedient and lawful. That is impossible. As there are schools and colleges to train students to become chemical engineers, lawyers or specialists in many other departments of knowledge, there must be schools and colleges to train students to become *brähmanas, ksatriyas, vaisyas, südras, brahmacäris, gråhasthas, vänaprasthas* and *sannyäsés*. This will provide the preliminary condition for good citizenship (*varnäsrama-gunän-vitäù*). Generally speaking, if the king or president is a *räjarsi*, the relationship between the citizens and the chief executive will be clear, and there will be no possibility of disruption in the state, because the number of thieves and rogues will decrease.

People are very fond of the pattern of Räma-räjya, and even today politicians sometimes form a party called Räma-räjya, but unfortunately they have no obedience to Lord Räma. It is sometimes said that people want the kingdom of God without God. Such an aspiration, however, is never to be fulfilled. Good government can exist when the relationship between the citizens and the government is like that exemplified by Lord Rämacandra and His citizens.

**tretäyää vartamänäyääkälaù kåta-samo 'bhavat**
**räme räjani dharma-jïesarva-bhüta-sukhävahe**

> *"Lord Rämacandra became King during Tretä-yuga, but because of His good government, the age was like Satya-yuga. Everyone was religious and completely happy."*

[SB 9.10.51]

**vanäni nadyo girayovarñäëi dvépa-sindhavaù**
**sarve käma-dughä äsanprajänää bharatarñabha**

*O Mahäräja Parékñit, best of the Bharata dynasty, during the reign of Lord Rämacandra the forests,* *the rivers, the hills and mountains, the states, the seven islands and the seven seas were all favorable in supplying the necessities of life for all living beings.*

[SB 9.10.52]

***nädhi-vyädhi-jarä-gläni-duùkha-soka-bhaya-klamäù***
***måtyuç cänicchatäà näsédräme räjany adhokñaje***

*"When Lord Rämacandra, the Supreme Personality of Godhead, was the King of this world, all bodily and mental suffering, disease, old age, bereavement, lamentation, distress, fear and fatigue were completely absent. There was even no death for those who did not want it."*

[SB 9.10.53]

From the above descriptions we can understand how happy people were under the rule of Lord Rämacandra. Everyone was happy as they followed the principles of *varnäsrama* and accepted Lord Rämacandra as their father. These were free from all mental and bodily pains. This indicates there was no need of hospitals. Opening super special hospitals is considered a sign of advancement these days. But have no disease at is the actual sign of advancement. People had enough food and riches. Now a days things are so degraded that even drinking water is being sold. It is so difficult to get fresh water to drink. Millions of people are starving for want of food. This is because the head of the state, the government authorities are not devotees of the Lord. They are simply occupying big posts in the government for personal sense gratification only. On the other hand during Lord Rämacandra's time mother nature supplied all the essential things for mankind profusely. These are the symptoms of advanced civilization. Advanced civilization accepts the Supremacy of the Lord and surrenders everything for His pleasure. The Lord being pleased by their service takes care of all their needs. Good centered life is the ideal life - A life only meant to glorify the Supreme Lord and nothing else.

It is said in Srimad Bhägavatam (1.10.4):

***kämaàvavarñaparjanyaùsarva-käma-dughämahé***
***siñicuùsmavrajängävaùpayasodhasvatérmudä***

During the reign of Mahäräja Yudhiñöhira, the clouds showered all the water that people needed, and the earth produced all the necessities of man in profusion. Due to its fatty milk bag and cheerful attitude, the cow used to moisten the grazing ground with milk.

This was because Mahäräja Yudhiñöhira and the Pandavas were all pure devotees of the Lord and hence the citizens were supplied by all the necessities of life by mother nature. This is the sign of a good government. The government authorities must be devotees of the Lord and the government has to conduct its activities based on the instructions given in the Vedic scriptures under the expert guidance of learned Brahmanas and Vaihnavas.

A similar situation could be introduced immediately, even in this age called Kali, the worst of all ages. It is said, *kali-käle näma-rüpe Krsña-avatära*: Krsña descends in this Kali-yuga in the form of His holy name—Hare Krsña Hare Krsña Hare Krsña Krsña Krsña Hare Hare / Hare Räma Hare Räma Räma Räma Hare Hare. If we chant off enselessly the Holy names of the Lord, Räma and Krsña are still present in this age. The kingdom of Räma was immensely popular and beneficial, and the spreading of this Hare Krsña movement can immediately introduce a similar situation, even in this Kali-yuga.

### 7) Become a *sädhu*

Srila Sukadeva Gosvämi describes how the inhabitants of Kimpuruña-varña with Hanumän worship Lord Rämacandra in Srimad Bhägavatam Fist canto nineteenth chapter as follows:

***oà namo bhagavate uttamaçlokäya nama ärya-lakñaëa-***
***çéla-vratäya nama upaçikñitätmana upäsita-lokäya***
***namaù sädhu-väda-nikañaëäya namo brahmaëya-***
***deväya mahä-puruñäya mahä-räjäya nama iti.***

*"Let me please Your Lordship by chanting the bija-mantraoàkära. I wish to offer my respectful obeisances unto the Personality of Godhead, who is the best among the most highly elevated personalities. Your Lordship is the reservoir of all the good qualities of Äryans, people who are advanced. Your character and behavior are always consistent, and You always control Your senses and mind. Acting just like an ordinary human being, You exhibit exemplary character to teach others how to behave. There is a touchstone that can be used to examine the quality of gold, but You are like a touchstone that can verify all good qualities. You are worshiped by brähmanas who are the foremost of all devotees. You, the Supreme Person, are the King of kings, and therefore I offer my respectful obeisances unto You."*

[SB 5.19.3]

In the prayer above, Lord Rämacandra is addressed as *sädhu-väda-nikañaëäya*— the Lord, who is like a stone for examining all the good qualities of a *sädhu*. Acting just like an ordinary human being, He exhibits exemplary character to teach others how to behave. He wants us to develop good qualities and become *sädhus*. He teaches us by His personal example, how to develop all good qualities of a *sadhu*.

Qualities of a *sadhu* is described in Srimad Bhagavatam by Lord Kapila as follows:

***titikñavaùkäruëikäùsuhådaùsarva-dehinäm***
***ajäta-çatravaùçäntäùsädhavaùsädhu-bhüñaëäù***

*"The symptoms of a sädhu are that he is tolerant, merciful and friendly to all living entities. He has no enemies, he is peaceful, he abides by the scriptures, and all his characteristics are sublime."*

[SB 3.25.21]

***mayyananyenabhävenabhaktiàkurvanti ye dåòhäm***
***mat-kåtetyakta-karmäëastyakta-svajana-bändhaväù***

*"Such a sädhu engages in staunch devotional service to the Lord without deviation. For the sake of the Lord he renounces all other connections, such as family relationships and friendly acquaintances within the world."*

[SB 3.25.22]

***mad-äçrayäùkathämåñöäùçåëvantikathayantica***
***tapantivividhästäpänaitän mad-gata-cetasaù***

*"Engaged constantly in chanting and hearing about Me, the Supreme Personality of Godhead, the sädhus do not suffer from material miseries because they are always filled with thoughts of My pastimes and activities."*

[SB 3.25.23]

***taetesädhavaùsädhvisarva-saìga-vivarjitäù***
***saìgasteñvathateprärthyaùsaìga-doña-harä hi te***

*"O My mother, O virtuous lady, these are the qualities of great devotees who are free from all attachment. You must seek attachment to such holy men, for this counteracts the pernicious effects of material attachment."*

[SB 3.25.24]

The Lord desires that we develop all these qualities and become His pure devotees. In this way, He wants us to be happily engaged in His devotional service eternally.

## Conclusion

We have to hear Rämäyana from self-realized souls or *tattva-darsis* like Välmiki, Srila Vyäsadeva and Srila Sukadeva Gosvämi. All other unauthorized descriptions have to be rejected. The Supreme Personality of Godhead Lord Rämacandra has taught us many lessons by His personal example so that we can develop all good qualities of a *sädhu*. By doing so, we will become qualified to enter into the spiritual kingdom of the Lord and eternally engage in His service just for His pleasure. When the Lord is pleased everyone is automatically pleased.

❑

*Music based on Ramacharitha Manasa - Ms. Mowna Ramachandra & Party, Bengaluru.*

# physiognomy in the rāmāyāna

Dr. V. K. Hampiholi

Physiognomy is a science of features and it is considered as one of the ancient science.

Physiognomy was developed in India a long back. Bṛhat-Samhitā, Sāmudrika-Ciṅtāmaṇī, Vivekavilasā, Sāmudrika-rahasya, Vīramitrodaya, Bhaviṣya-Purāṇ, Vishṇdharmottara-Purāṇ and so on has dealt this science in detail.

This science was known to the Vālmīki. The knowledge of physiognomy of Vālmīki can be seen in his work i.e. Rāmāyaṇa.

Physiognomy is a science of features and it is considered as one of the ancient science. It was developed systematically and scientifically in India. It was used to understand the nature and the character of a human being as well as of an animal. In ancient period, people were giving much importance to the features. Even while selecting the horses, the elephants, the dogs, the cows, the buffaloes and the oxen, they were examining the features of those animals. They were aware of good and bad marks of the animals. In the same way they knew the good and the bad features of the human body. They were taking the help of this science in day to day life.

Physiognomy was developed in India a long back. Bṛhat-Samhitā, Sāmudrika-Cińtāmaṇī, Vivekavilasā, Sāmudrika-rahasya, Vīramitrodaya, Bhaviṣya-Purāṇ, Vishṇdharmottara-Purāṇ and so on has dealt this science in detail. All these texts have discussed the good and bad, the lucky and the unlucky marks of the male and female body. Ancients were forecasting the future on the basis of the features of the limbs. This science was known to the Vālmīki. The knowledge of physiognomy of Vālmīki can be seen in his work i.e. Rāmāyaṇa.

In the Sudarakānda (35th Adhyāya) Hanuman describes the good characteristics of Lord Śrīrāma before Sītā at Ashokavana. This description depicts the ideal features of a male. Hanuman narrates as follows -"He (Rāma) has big shoulders, long arms, conch-shaped neck and a pleasing face. The collar bones are deeply immersed in flesh and not visible. The corners of his eyes have a reddish hue. His voice is deep sounding like that of drum; he has a heroic countenance; his complexion has a smooth luster. The parts of his body are symmetrical and well demarcated.

विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो शुभाननः ।
गूढजत्रु सुताम्राक्षः रामो देवि जनः श्रुतः ॥ १५
दुंदुभिस्वननिर्घोषः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ।
समस्समविभक्तांगो वर्णं श्याम समाश्रितः ॥ १६

His three (chest, wrists and fists) are firm; three (eyebrows, arms and testicles) are long; three (ends of hair, testicles and knees) are even and level; three (periphery of the navel, the chest and the sides of the belly) are elevated; three (corners of eyes, nails and the palms) are of reddish hue; three (lines on the soles, hair and front portion of membrum virile) are smooth and lustrous; three (navel, gait and voice) are gambhīra.

त्रि स्थिरः त्रि प्रलम्बश्च त्रि समस्त्रिषु चोन्नतः ।
त्रि ताम्रस्त्रिषु च स्निग्धो गम्भीरस्त्रिषु नित्यशः ॥ १७

He has three folds on the belly and on the front portion of the neck; his three (middle portion of the soles, the lines on the soles and the nipples) are depressed. His four (the neck, the penis, width of the lower half of the back and calves of the legs) are short. He has three whirls on his head. He has four lines at the root of the thumb. He is four measures tall. He has four horizontal lines on his forehead. His four (the arms, the knees, the thighs and the cheeks) are symmetrical

त्रिवलीवान् स्त्र्यवनतः चतुर्व्यङ्ग स्त्रिशीर्षवन् ।
चतुष्कलश्चतुर्लेखः चतुष्किष्कुश्चतुः समः ॥ १८

His fourteen pairs (eye-brows, nostrils, eyes, ears, lips, nipples, elbows, wrists, knees, testicles, hands, feet, sides of waist and lips) are uniform, even and symmetrical. He has a set of four grinders (teeth) on each side of the upper and lower jaws. He has gait of four (a lion, a tiger, a bull and an elephant). He has a big nose, chin and lips. His five (tongue [speech], face, nails, skin and hair on skin) are soft and lustrous. His eight (arms, hands, thighs and shins) are straight.

**चतुर्दशसमद्वन्द्वः चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्गतिः ।**
**महोष्ठ् हनुनासश्च पंचस्निग्धोऽष्टवंशवान् ॥ १९**

His ten (face, eyes, mouth, tongue, lips, palate, the breasts, nails, hands and feet) are like lotus. He has an aura of three (luster of Goddess of wealth, valor and fame). His ten (the chest, the head, the forehead, the circumference of the neck, arms, shoulders, navel, feet, upper portion of the back and ears) are large. He is pervading in three (grace, fame and heroic luster). His two (eyes and teeth) are white. His six (armpits, planks of the belly, chest, nose, shoulder and forehead) are elevated. His nine (the phalange of the fingers, hair on hand, hair on the body, nails, the skin, the linga moustaches sight and intelligence are sūkṣma.

**दशपद्मो दशबृहत् त्रिभिर्व्याप्तो द्विशुक्लवान् ।**
**षडुन्नतो नवतनुः त्रिभिर्व्याप्नोति राघवः ॥ २०**

The description of Rāma clearly depicts that Rāma has good and lucky features. They indicate the kingship, longevity of life, high position, and comfortable life, empowership, proficiency on the sacred texts, chivalry, stamina, dignity, virility, good health, wealth, fortune, valor, straight forwardness, wisdom, brevity and good luck.

The description of Rāma given by Hanuman is based on ancient Indian physiognomy. The Sāmudrika śāstra reveals the secret of the limbs. It says – उरश्च मणिबन्धश्च मुष्टिश्च नृपतेः स्थिराः । दीर्घ–भ्रू–बाहु–मुष्कस्तु चिरंजीवि धनी नरः । केशाग्रं वृषणं जानु समा यस्य स भूपतिः । नाभ्यन्तः कुक्षि वक्षोभिः उन्नतैः क्षितिपो भवेत् । नेत्रान्त नख पाण्यंघ्रितलैस्ताम्रैस्त्रिभिः सुखी । स्निग्धा भवन्ति वै येषां पादरेखाः शिरोरुहाः । तथा लिङ्गमणिः तेषां महाभाग्यं विनिर्दिशेत् ॥ स्वरे गतौ च नाभौ च गम्भीरस्त्रिषु शस्यते । (१७) स्थिरा त्रिरेखा सुभगोपपन्ना स्निग्धा सुमांसोपचिता सुवृत्ता । न चातिदीर्घा चतुरंगुला च ग्रीवा सुदीर्घा भवतीह धन्या ॥ (गार्ग्य) पीनोचितैर्निम्नैः क्षितिपतयश्चूचुकैः स्तनैः सुखिनः । स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां तद्व्यत्ययेन निःस्वनाम् । ग्रीवा प्रजननं पृष्ठं हृस्वं जंघा च पूज्यते । आवर्त त्रय रुचिरं यस्य शिरः स क्षितिभृतां नेता । समावृत्त शिराश्चैव छत्राकारशिरास्तथा । एकछत्रां महीं भुंक्ते दीर्घमायुश्च विन्दति । मूले अंगुष्ठस्य वेदानां चतस्रस्तिस्र एव वा । एका द्वे वा यथायोगं रेखा ज्ञेया द्विजातिनाम् ॥ ललाटे यस्य दृश्यन्ते चतुस्त्रिद्व्येकरेखकाः । शतद्वयं शतं षष्ठिस्तस्यायुर्विंशतिस्तथा ॥ यस्य पादतले वज्र ध्वज शंख अंकुशोपमाः । रेखा सम्यक् प्रकाशन्ते मनुजेन्द्रं तमादिशेत् ॥ (१८) भ्रुवौ नासापुटे नेत्रे कर्णावोष्ठौ च चूचुके । कूर्परौ मणिबन्धौ च जानुनी वृषणौ कटी । करौ पादौ स्फिचौ यस्य समौ ज्ञेयः स भूपतिः ॥ स्निग्धा घनाश्च दशनाः सुतीक्ष्ण दंष्ट्राः समाश्च शुभाः । बन्धुजीवकुसुमोपमाधरो मांसलो रुचिरबिम्बरूपध्रत् । पूर्नमाम्सलहनुस्तु भोमिपस्तुंगतुंडरुचिराकृतिस्तथा ॥ वररुचि - चक्षुस्नेहेन सौभाग्यं दन्तस्नेहेन शोभनम् । त्वचः स्नेहेन शयनं पादस्नेहेन वाहनम् ॥ पृष्टवंशः शरीरं च हस्तपादांगुली करौ । नासिका चक्षुषी कर्णौ प्रनो

यस्य चायताः । (१९) मुखनेत्रास्यजिह्वोष्ठतालुस्तननखाः करौ । पादौ च दश पद्मानि पद्माकाराणि यस्य च ॥ उरः शिरो ललाटं च ग्रीवा बाह्वंसनाभयः । पार्श्वापृष्ठस्वराश्चेति विशालास्ते शुभप्रदाः ॥ (सामुद्रिक शास्त्र) शिरोललाटे श्रवणे ग्रीवा वक्षश्च हृत्तथा । उदरं पाणिपादौ च पृष्ठं दशबृहन्ति च ॥ (ब्रह्मपुराण) कक्षः कुक्षिश्च वक्षश्च घ्राणं स्कन्धो ललाटिका ।सर्व भूतेषु निर्दिष्टा उन्नतांगाः शुभप्रदा ॥ केश श्मश्रु नख लोम त्वग् अंगुलिपर्व शेफो बुद्धि दर्शनानि । वररुचि ñ सूक्ष्माणि अंगुलीपर्वाणि केश रोम नख त्वचः । शेफश्च येषां सूक्ष्माणि ते नराः दीर्घजीविनः ॥ (२०)

In the Yuddakānḍa (48th adhyāya), we see the description of Sītā. There Rāvaṇa shows Sītā fake severed heads of Rāma and Lakṣmana. Sītā, having seen those heads, loses her heart. Sītā wails for long and laments with full of grief. At that time she censures the scholars of physiognomy who have predicted a good fortune for her. She states that "The persons who were well versed in physiognomy had predicted that I would be a mother of sons and would never become a widow. Their words have gone wrong because Rāma is dead. The predictions of the wise and truthful physiognomist, that I shall be the wife of a high personage of great merit and crowned a queen, stand condemned because Rāma is dead. They had predicted that I shall have love and adoration of my husband and a long happy married life. All those forecasts have gone wrong because Rāma is dead.

**ऊचुः लक्षणिनो ये मां पुत्रिण्यविधवेति च ।**
**तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ॥ २**
**यज्ज्वनो महिषीं ये मामूचुः पत्नीं च सत्रिणः ।**
**तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ॥ ३**

The marks of lotus of my soles of my feet indicate that such a woman and her husband are installed to a throne and are consecrated as queen and king. This has all gone wrong because Rāma is dead. I do not know or observe any marks on my body which are deemed auspicious in women have become fruitless and futile, because Rāma is dead.

**इमानि खलु पद्मानि पादयोर्यैः कुलस्त्रियः ।**
**अधिराज्येऽभिषिच्यन्ते नरेन्द्रै पतिभिः सह ॥ ६**
**वैधव्यं यान्ति यैर्नार्यो लक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः ।**
**नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हतलक्षणा ॥ ७**

The hair on my head is fine, black and uniform. The eye brows are not joined together. The calves of my leg are round and free from hair or down. My teeth are evenly spaced. My temple bones, eyes, hands, feet, ankles and thighs are symmetrical and of proper form.

**केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासंगते मम ।**
**वृत्ते चारोमेशे जंघे दन्ताश्चाविरला मम ॥ ९**

My breasts are fully developed and closing on each other. My nails are rounded at the tips and are glossy; my fingers are proportionate. The nipples are well immersed in the breasts. My navel is deep with periphery well elevated. My chests and sides are well developed. My complexion has the luster of a ruby. My hair is soft. The physiognomists declared that my body had all the good traits, a woman should have. The palms of my hands and soles of my feet are pink and have the marks of barley. My fingers are close to each other. My smile is modest. On the basis of all these, the great learned priests had declared that my husband and I would be consecrated as king and queen and would rule from the throne.

शंखी नेत्रेकरौ पादौ गुल्फावूरू समौ चितौ ।
अनुवृत्तनखाः स्निग्धाः समाश्चांगुलयो मम ॥१०
स्तनौ चाविरलौ पीनौ ममेमौ मग्नचीचुकौ ।
मग्ना चोत्संगिनी नाभिः पार्श्वोरस्काश्च मे चिताः ॥ ११
ममवर्णो मणिनिभो मृदून्यंगरुहाणि च ।
प्रतिष्ठितां द्वादशभिर्मामूचुः शुभलक्षणाम् ॥ १२
अधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह ।
कृतान्तकुशलैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम् ॥ १४

*A view of the book exhibition organised during the Message of Ramayana Conference*

It is known to everybody that all the predictions on the basis of physiognomy were amply fulfilled. She never became a widow. She was crowned a queen along with her husband king. She gave birth to valiant sons.

The features of a widow are described in Sāmudrika śāstra in these words – परस्परं समारूढाः पादांगुल्यो भवन्ति चेत् । हत्वा बहूनपि पतीन् परप्रेष्या तथा भवेत् ॥ यस्या कनिष्ठ्का भूमिं न गच्छन्त्याः परिस्पृषेत् । पतिद्वयम् निहन्त्याद्या द्वितीया च पतित्रयम् ॥ एकरोमा राजपत्नी द्विरोमाति सुखान्विता । त्रिरोमा रोमकूपेषु भवेद्वैधव्यदुःख भाक् ॥ स्कान्दपुराण – रोमहीने शुभे स्निग्धे यज्जंघ्वे क्रमवर्तुले । सा राजपत्नी भवति विशिरे सुमनोहरे ॥ स्निग्धाः समुन्नताः तत्र वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।

The above descriptions of Rāma and Sītā clearly depict that physiognomy was considered as truthful science. It was developed systematically at the time of Vālmīki itself. Vālmīki, who was considered as a first poet (ādikavi), was aware of this science.

❑

# ಕಾಳಿದಾಸನ ರಘುವಂಶದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ

ಡಾ. ಶ್ರೀರಾಮ ಭಟ್ಟ

ರಘುವಂಶ ಮಹಾಕಾವ್ಯವು ಕಾಲಿದಾಸಪ್ರತಿಭೆಯ ಮಹೋನ್ನತ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ. ಮಹತ್ವಾಕಾಂಕ್ಷೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಈ ಕಾವ್ಯವು ಸಂಸ್ಕೃತ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ರಸ್ಥಾನ ಪಡೆದು ಕವಿಗೆ 'ರಘುಕಾರ' ಎಂಬ ಬಿರುದನ್ನು ತಂದುಕೊಟ್ಟಿದೆ. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ರಾಜರ ಚರಿತೆಯೇ ರಘುವಂಶದ ಕಾವ್ಯವಸ್ತು. ಆದರೂ ಇದು ಇತಿಹಾಸ ಅಲ್ಲ, ಶುದ್ಧ ಕಾವ್ಯ.

**ಯಾವತ್ ಸ್ಥಾಸ್ಯಂತಿ ಗಿರಯಃ ಸಮುದ್ರಶ್ಚ ಮಹೀತಲೇ**
**ತಾವದ್ ರಾಮಾಯಣಕಥಾ ಲೋಕೇಷು ಪ್ರಚರಿಷ್ಯತಿ**

ಬೆಟ್ಟಗಳೂ ಕಡಲೂ ಈ ನೆಲದಲಿ ನೆಲಸುವವರೆಗೂ
ರಾಮಾಯಣ ಕತೆ ಜನಮಾನಸದಲಿ ಚಲಿಸುವುದು.

ಇದು ಆದಿಕವಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸ. ಇಂದಿಗೂ ಜನಮಾನಸದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಕತೆ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಲೇ ಇದೆ. ಮುಂದಿನ ಕವಿಗಳಿಗೂ ತನ್ನ ಕಾವ್ಯ ಆಧಾರ (ಪರಂ ಕವೀನಾಮಾಧಾರಮ್) ಎಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮಾತು ಇಂದಿಗೂ ನಿಜವಾಗಿದೆಯಲ್ಲ! ಇದು ವ್ಯಾಸ ಮುನಿಯ ಮಹಾಭಾರತಕ್ಕೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ ಮಾತು. ಈ ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತ ನಿಜವಾದ ರಾಷ್ಟ್ರಕಾವ್ಯಗಳು; ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮತ್ತು ವ್ಯಾಸ ರಾಷ್ಟ್ರಕವಿಗಳು.

'ಪುನಃಕಥನ ಪರಂಪರೆ' (Re-told tradition) ಭಾರತೀಯ ಕಾವ್ಯಪದ್ಧತಿಯ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು. ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಭಾರತ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದ ವ್ಯಕ್ತಿ, ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಭಾರತಗಳನ್ನು ಮುಟ್ಟದ ಮಹಾಕವಿ ನಮ್ಮ ನಾಡಿನಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಸಂವೇದನಾಶೀಲ ಕವಿಗಳೆಲ್ಲ ಈ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳನ್ನು ಇಡಿಯಾಗಿಯೋ, ಬಿಡಿಯಾಗಿಯೋ ಮತ್ತೆ ಹಾಡಿದವರೇ. ಇದರಿಂದ ಅವರ ಮಾತಿಗೆ ಶಕ್ತಿಸಂಚಯನವಾಗಿದೆ. ಪುನಃಕಥನ ಎಂದರೆ ಬರಿದೆ ಪುನರಾವರ್ತನೆಯಲ್ಲ – ಹಾಡಿದ್ದೆ ಹಾಡುವುದಲ್ಲ. ಮೂಲದ ಕತೆಯನ್ನು ಒಡೆದು ಮತ್ತೆ ಕಟ್ಟುವುದು. ಒಡೆದು ಕಟ್ಟುವುದರಲ್ಲೆ ಕಾವ್ಯಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಕಸುವು ತಂದುಕೊಳ್ಳುವುದು. ಆಗಲೇ ಪರಿಚಿತವಾದ ಕಥೆಯ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ಕಾಲದ ಅನುಭವಕ್ಕೂ, ತನ್ನ ದರ್ಶನಧ್ವನಿಗೂ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಕೊಡುವುದು. ಹೀಗಾಗಿ ಕಥೆಯ ಹಂದರ ಅದೇ ಆದರೂ ಕಾವ್ಯಗ್ರಥನಕ್ರಮ ಆಯಾ ಕವಿವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿ ಬೇರೆಯೇ ಆಯಿತು. ಕಥೆ ಅದೇ; ಕಾವ್ಯ ಭಿನ್ನ. ಕುಮಾರವ್ಯಾಸ 'ಕಥಾಂತರ' ಎನ್ನುವ ಮಾತನ್ನು ಬಳಸಿದ. ಭಾಷಾಂತರವೆಂದ ಹಾಗೆ ಕಥಾಂತರ. ಇಲ್ಲಿ ಆಗಲೇ ಪರಿಚಿತವಾಗಿರುವ ಕಥೆ ಭಾಷೆಯಂತೆ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಮೂಲದ ಕತೆಯನ್ನು ಮುರಿಯುವುದು ಸರಿಯೇ ಎನ್ನುವ ಪ್ರಶ್ನೆ ಎಲ್ಲ ಕಾಲಕ್ಕೂ ಇದೆ. ವರ್ತಮಾನದ ನಿಲುವು ಬೇರೆ. ಪ್ರಾಚೀನದಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ ಆಸ್ಪದವಿದೆ. ಇತಿವೃತ್ತವನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸುವ ಹಕ್ಕು ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿಯಾದ ಕವಿಗೆ ಇದೆ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸಕ ಆನಂದವರ್ಧನ. ಮೂಲದ ಕತೆಯನ್ನು ಇದ್ದ ಹಾಗೇ ಹೇಳುವುದಾದರೆ ಮೂಲದ ಕತೆಯೇ ಇದೆಯಲ್ಲ! ಅದು ರಸಪರ ತಂತ್ರವಾಗಬೇಕು. ಕಥೆಯಲ್ಲೂ ಕಥನದಲ್ಲೂ ಅದಕ್ಕೆ ಅಗತ್ಯ ಮಾರ್ಪಾಡು ಬೇಕು ಎನ್ನುವುದು ಆನಂದವರ್ಧನನ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಇದು 'ಪುನಃಕಥನ'ದ ಮರ್ಮ. ಮೊದಲಿಗೆ ಈ ದಿಕ್ಕನ್ನು ತೋರಿದವನು ಭಾಸ. ತದನಂತರದಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸ. ಮಹಾಭಾರತದ ಶಕುಂತಲೋಪಾಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಅಭಿಜ್ಞಾನ ಶಾಪಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿ ಮಾರ್ಪಾಡು ಮಾಡಿ 'ಅಭಿಜ್ಞಾನ ಶಾಕುಂತಲ'ವೆಂಬ ಅದ್ಭುತವನ್ನೆ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ. ರಘುವಂಶದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಕತೆಯನ್ನು ಯಥಾವತ್ತಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿದ.

ರಘುವಂಶ ಮಹಾಕಾವ್ಯವು ಕಾಲಿದಾಸಪ್ರತಿಭೆಯ ಮಹೋನ್ನತ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ. ಮಹತ್ವಾಕಾಂಕ್ಷೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಈ ಕಾವ್ಯವು ಸಂಸ್ಕೃತ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ರಸ್ಥಾನ ಪಡೆದು ಕವಿಗೆ 'ರಘುಕಾರ' ಎಂಬ ಬಿರುದನ್ನು ತಂದುಕೊಟ್ಟಿದೆ. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ರಾಜರ ಚರಿತೆಯೇ ರಘುವಂಶದ ಕಾವ್ಯವಸ್ತು. ಆದರೂ ಇದು ಇತಿಹಾಸ ಅಲ್ಲ, ಶುದ್ಧ ಕಾವ್ಯ. ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ರಘುವಂಶದ ರಾಜರ ಅನುಕ್ರಮ ಇಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಬದಲಾಗಿ ಭಾಸನ ಪ್ರತಿಮಾ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ಸೂರ್ಯವಂಶೀಯ ರಾಜರ ಅನುಕ್ರಮವನ್ನು ತುಸುಮಟ್ಟಿಗೆ ಅನುಸರಿಸಿದಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಇಡಿಯಾಗಿ ಹೇಳುವುದು ಕಾಳಿದಾಸನ ಉದ್ದೇಶವಲ್ಲ. ಸೂರ್ಯವಂಶದ ರಾಜರ ಚರಿತ್ರೆಯ ನೆವದಲ್ಲಿ ರಾಜತ್ವ ಮೀಮಾಂಸೆಯನ್ನು ನಡೆಸುವುದು ಕವಿಯ ಉದ್ದೇಶ. ಕಾವ್ಯರಚನೆಯ ಮೊದಲಲ್ಲೇ ಕಾಳಿದಾಸ ತನ್ನ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿದ್ದ

ರಾಜಲಕ್ಷಣದ ಪಟ್ಟಿ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಅದನ್ನು ಹೇಳಲೇಬೇಕೆಂಬ ಚಪಲ(ಒತ್ತಡ)ವಂತೆ ಅವನಿಗೆ:

**ರಘೂಣಾಂ ಅನ್ವಯಂ ವಕ್ಷ್ಯೇ ತನುವಾಗ್ವಿಭವೋಽಪಿ ಸನ್**
**ತದ್ಗುಣೈಃ ಕರ್ಣಮಾಗತ್ಯ ಚಾಪಲಾಯ ಪ್ರಚೋದಿತಃ**

ತಾನು ಆಯ್ದುಕೊಂಡ ರಾಜರ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನೂ ಆತ ಸಾದ್ಯಂತವಾಗಿ ಒದಗಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ರಾಜಗುಣಗಳನ್ನು ಧ್ವನಿಸುವ ಘಟನಾವಳಿಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕಲಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ ಪರಿ ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ವೇದಗಳಿಗೆ ಓಂಕಾರ ಮೊದಲಾದಂತೆ ರಾಜರಿಗೆಲ್ಲ ಮೊದಲಿಗನಾದ ಮನುವಿನ ಉಲ್ಲೇಖದೊಂದಿಗೆ ಆರಂಭಗೊಳ್ಳುವ ರಘುವಂಶವು ದಿಲೀಪ, ರಘು, ಅಜ, ದಶರಥ, **ರಾಮ**, ಕುಶ, ಅತಿಥಿ, ಅಗ್ನಿವರ್ಣರನ್ನು ಕುರಿತು ವಿವರವಾಗಿಯೂ, ನಿಷಧಾದಿ ಇಪ್ಪತ್ತೆರಡು ರಾಜರನ್ನು ಕುರಿತು ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾಗಿಯೂ ಮಾತನಾಡುತ್ತದೆ. ಹತ್ತೊಂಬತ್ತು ಸರ್ಗಗಳ ಯೋಜನೆ ಹೀಗಿದೆ: ವಸಿಷ್ಠಾಶ್ರಮಾಭಿಗಮನ, ನಂದಿನೀ ವರಪ್ರಸಾದ, ರಘುರಾಜ್ಯಾಭಿಷೇಕ, ರಘುದಿಗ್ವಿಜಯ, ಅಜಸ್ವಯಂವರಾಭಿಗಮನ, ಸ್ವಯಂವರವರ್ಣನ, ಅಜಪಾಣಿಗ್ರಹಣ, ಅಜವಿಲಾಪ, **ಮೃಗಯಾವರ್ಣನ, ರಾಮಾವತಾರ, ಸೀತಾವಿವಾಹವರ್ಣನ, ರಾವಣವಧ, ದಂಡಕಾಪ್ರತ್ಯಾಗಮನ, ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ, ಶ್ರೀರಾಮಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣ,** ಕುಮುದ್ವತೀಪರಿಣಯ, ಅತಿಥಿವರ್ಣನ, ವಂಶಾನುಕ್ರಮ ಮತ್ತು ಅಗ್ನಿವರ್ಣಶೃಂಗಾರ.

ರಾಮಾಯಣವು ರಘುವಂಶದ ಹೃದಯ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ಇರುವ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯ ಬೇರೆಯವರಿಗೆ ಇಲ್ಲ. ದಿಲೀಪ ಧರ್ಮವನ್ನೂ, ರಘು ಅರ್ಥವನ್ನೂ ಅಜ ಕಾಮವನ್ನೂ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸುವರು. ದಶರಥ ಯಾವುದನ್ನೂ ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸದ ಶಾಪಗ್ರಸ್ತ ವ್ಯಕ್ತಿ. ಆದರೆ ಆ ಮೂರನ್ನೂ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸುವ ಪುರುಷೋತ್ತಮ ರಾಮನಿಗೆ ಜನ್ಮ ಕೊಟ್ಟ ಹಿರಿಮೆ ಆತನದು. ದಶರಥನಿಗೆ ಶಾಪವೂ ವರವಾಯಿತಂತೆ!

**ಶಾಪೋಽಪ್ಯದೃಷ್ಟತನಯಾನನಪದ್ಮಶೋಭೇ**
**ಸಾನುಗ್ರಹೋ ಭಗವತಾ ಮಯಿ ಪಾತಿತೋಽಯಮ್**
**ಕೃಷ್ಯಾಂ ದಹನ್ನಪಿ ಖಲು ಕ್ಷಿತಿಮಿಂಧನೇದ್ಧೋ**
**ಬೀಜಪ್ರರೋಹಜನನೀಂ ಜ್ವಲನಃ ಕರೋತಿ**

(ಮಗನ ಮುದ್ದು ಮುಖವನ್ನೆ ಕಾಣದ ನನಗೆ (ದಶರಥನಿಗೆ) ತಾವು (ಶ್ರವಣಕುಮಾರನ ತಂದೆ) ಎಸೆದ ಶಾಪವೂ ವರವಾಯಿತು! ಹೊಲಕ್ಕೆ ಹಚ್ಚಿದ ಬೆಂಕಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು ಫಲವತ್ತಾಗಿಸುತ್ತದಲ್ಲ!)

ಕುಶನಲ್ಲಿ ಪುನರ್ನಿರ್ಮಾಣದ ಕನಸು. ಉಳಿದವರು ಹಾಗೂ ಹೀಗೂ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಮುಂದುವರೆಸಿಕೊಂಡು ಹೋದವರು. ಅಲ್ಲೇ ಆರಂಭವಾದ ಪತನ ಅಗ್ನಿವರ್ಣನಲ್ಲಿ ಪೂರ್ಣವಾಗುತ್ತದೆ. ಅಗ್ನಿವರ್ಣ ಕಾಮುಕ; ವಿಷಯ ಲಂಪಟ. ಆತನದು ಅಧಾರ್ಮಿಕ ಕಾಮ; ಅರ್ಥನಾಶಕ ವಿಲಾಸ. ಅದರ ಪರಿಣಾಮ ಎಳೆ ವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲೇ ಕ್ಷಯ. ಆತನಿಗೆ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ; ಕುಲಕ್ಕೆ, ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ, ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೆ. ಕೊನೆಯ ಸರ್ಗ ಅಗ್ನಿವರ್ಣ ಶೃಂಗಾರ. ಧ್ವನಿಪೂರ್ಣ ಶೀರ್ಷಿಕೆ. (ರಾಮ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿಯೂ ಏಕಪತ್ನೀವ್ರತಕ್ಕೆ ಅಂಟಿಕೊಂಡವನು). ಅದು ಕಾಳಿದಾಸದರ್ಶನ. ಅದಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ರಘುವಂಶದ ವಸ್ತುರಚನಾವಿನ್ಯಾಸ. ರಾಜ ಚರಿತದಲ್ಲಿ ಇತ್ಯಾತ್ಮಕ ನೇತ್ಯಾತ್ಮಕಗಳೆರಡನ್ನೂ ಪರಾಮರ್ಶಿಸಿದ ಮಹಾಕಾವ್ಯ ರಘುವಂಶ.

**ಸೂತ್ರಗತಿ:**

ರಘುವಂಶದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣಕಥೆಯ ಪಾಲು ದೊಡ್ಡದು. ಏಳು ಸರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ (9 ರಿಂದ 15) 634 ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಏಳು ಕಾಂಡಗಳ ಕಥೆಯೂ ಅಡಕವಾಗಿದೆ. ಅಲ್ಲಿ ಕಾಂಡಗಳೂ ಏಳು, ಇಲ್ಲಿ ಸರ್ಗಗಳೂ ಏಳು. ಆದರೆ ವಿಭಾಗ ಶೀರ್ಷಿಕೆ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಭಿನ್ನ ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಆಗಲೇ ನೋಡಿದ್ದೇವೆ.

ಕಾಳಿದಾಸನು ರಾಮಾಯಣದ ಕತೆಯ ಹಂದರವನ್ನು ಯಥಾವತ್ತಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಅಲ್ಲಿ ಲೋಪವಾಗಲೀ ಮಾರ್ಪಾಡಾಗಲೀ ಇಲ್ಲ. ಅದಕ್ಕೆ ಕಾಳಿದಾಸನಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ಗೌರವವೂ ಕಾರಣವಾಗಿರಬಹುದು. ಆತನಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಅಪಾರ ಗೌರವ. ತುಂಬ ಹಿರಿಯರ, ಪೂಜ್ಯರ ಹೆಸರು ಹಿಡಿದು ಕರೆಯದಿರುವ ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನು ಕಾಳಿದಾಸ ಪಾಲಿಸಿದ್ದಾನೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಹೆಸರು ಹೇಳದೆ ಆತನನ್ನು ಕವಿ, ಮುನಿ, ಗುರು ವಿನೇತಾ, ಕಾರುಣಿಕ ಎನ್ನುವ ವಿಶೇಷಣಗಳಿಂದ ಗೌರವಿಸುತ್ತಾನೆ. ರಾಮಾಯಣವನ್ನು 'ಪ್ರಾಚೇತಸೋಪಜ್ಞ' ಎಂದು ಕರೆದಿದ್ದಾನೆ. (ಉಪಜ್ಞಾ ಜ್ಞಾನಂ ಆದ್ಯಂ ಸ್ಯಾತ್-ಅಮರಕೋಶ). ರಾಮಾಯಣ ಆದಿಕಾವ್ಯ; ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಆದಿಕವಿ ತಾನೆ! ಕಾಳಿದಾಸನ ಗುರುಗೌರವಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿ ಈ ಪದ್ಯ :

**ತಾಮಭ್ಯಗಚ್ಛದ್ ರುದಿತಾನುಸಾರೀ**
**ಕವಿಃ ಕುಶೇಧ್ಮಾಹರಣಾಯ ಯಾತಃ ।**
**ನಿಷಾದವಿದ್ಧಾಂಡಜದರ್ಶನೋತ್ಥಃ**
**ಶ್ಲೋಕತ್ವಮಾಪದ್ಯತ ಯಸ್ಯ ಶೋಕಃ ॥**

(ಅಳುವನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ ಕವಿ ಅವಳಿದ್ದಲ್ಲಿಗೆ (ಸೀತೆಯಿದ್ದಲ್ಲಿಗೆ) ಬಂದನು. ಬೇಡನು ಹೊಡೆದುರುಳಿಸಿದ್ದ ಹಕ್ಕಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಉಕ್ಕಿದ ಅಳು ಆತನಿಂದ ಹಾಡಾಗಿ ಹೊಮ್ಮಿತಲ್ಲ!). ಸೀತೆ ಕಾಡುಪಾಲಾಗಿ ಗೋಳಿಡುತ್ತಿದ್ದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಆಗಮಿಸಿದ ಕವಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಕಾಳಿದಾಸನು ಚಿತ್ರಿಸಿದ ರೀತಿ ಇದು. 'ಅಳುವನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವವನು ಕವಿ' ಎನ್ನುವ ಮಾತು ಕವಿ ಶಬ್ದದ ನಿರ್ವಚನದಂತಿದೆ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದ ಓಘವನ್ನು ಯಥಾವತ್ತಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಿಯೂ, ಕಥನಕ್ರಮ ಮಾತ್ರ ಕಾಳಿದಾಸನಲ್ಲಿ ಇಡಿಯಾಗಿ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಕಥಾ ನಿರೂಪಣ ವಿಸ್ತಾರ ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣದು. ಕಥೆ ಇಲ್ಲಿ ಬಿಂದು ಮಾತ್ರವೇ. ಕಾವ್ಯಾಂಶ ಇಲ್ಲಿ ಮೇಲುಗೈಯಾಗಿದೆ. ಕಲಾತ್ಮಕ ಕವಿತಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಕತೆ ಊರುಗೋಲು ಅಷ್ಟೆ. ಕಾಳಿದಾಸ ಸೋಪಜ್ಞ ಕವಿ, ಅನುಕರಣಶೀಲನಲ್ಲ.

**ಅಥವಾ ಕೃತವಾಗ್‌ದ್ವಾರೇ ವಂಶೇಸ್ಮಿನ್ ಪೂರ್ವಸೂರಿಭಿಃ ।**
**ಮಣೌ ವಜ್ರಸಮುತ್ಕೀರ್ಣೇ ಸೂತ್ರಸ್ಯೇವಾಸ್ತಿ ಮೇ ಗತಿಃ ॥**

(ಪೂರ್ವಸೂರಿಗಳು ಸೂರ್ಯವಂಶದಲ್ಲಿ ಮಾತಿನ ಕದ ತೆರೆದಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ತೂತು ಕೊರೆದ ಮಣಿಗಳಲ್ಲಿ ದಾರ ಪೋಣಿಸುವುದಷ್ಟೆ ನನ್ನ ಕೆಲಸ). ಮಣಿಗಳನ್ನು ಪೋಣಿಸುವುದಾಗಿ ಕಾಳಿದಾಸ ಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದರೂ ಮಣಿಗಳ ಆಯ್ಕೆಯಲ್ಲಿ, ಗ್ರಥನವಿನ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ ಸ್ವಂತಿಕೆಯ ಛಾಪು ಇದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯೇ ಮೊದಲಾದ ಕವಿಗಳು ಬರೆದ ರಘುವಂಶೀಯ ರಾಜರ ಕತೆ ವಜ್ರದಿಂದ ತೂತು ಕೊರೆದ ಮಣಿ. ಅದನ್ನು ಏಕಸೂತ್ರಕ್ಕೆ ಪೋಣಿಸುವುದು ಕಾಳಿದಾಸನ ಕೆಲಸ. ಮಣಿಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸುವಲ್ಲಿ ಪೋಣಿಸುವವನ ಸೌಂದರ್ಯಾಭಿರುಚಿ ಮತ್ತು ಔಚಿತ್ಯಪ್ರಜ್ಞೆ ಕೆಲಸಮಾಡುತ್ತದೆ. ಕಥೆ ಹಳೆಯದೇ ಆದರೂ ಕಾಳಿದಾಸನ ಕಥಾಸಂವಿಧಾನ, ಘಟನೆಗಳ ಸಂಯೋಜನೆ, ಕಾವ್ಯಾತ್ಮಕ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ನೂತನವಾಗಿದೆ.

### ಮೃಗಯಾವರ್ಣನ :

ಅಜಮಹಾರಾಜನ ನಂತರಮಹಾರಥಿ ದಶರಥ ರಾಜ್ಯವನ್ನಾಳಿದ. ಆತ ಧ್ಯಾನಶೀಲನಾದ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯ. ಆತನಲ್ಲಿ ರಾಜರಿಗೆ ಸಹಜವಾದ ಮದ್ಯ ಮಾನಿನಿ ಜೂಜು ಬೇಟೆಗಳ ಹುಚ್ಚು ಇರಲಿಲ್ಲವಂತೆ. ಆತನ ಆಳ್ವಿಕೆ ಆದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿತ್ತು. ಆತನಿಗೆ ಮೂವರು ಹೆಂಡಿರು-ಮಗಧ, ಕೋಸಲ, ಕೇಕಯ ರಾಜ ಕುವರಿಯರು. ಆತ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗ ಮಾಡಿದವ. ದಶ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಆತನ ರಥ ಸಂಚಾರ. ಇಂದ್ರನಿಗೂ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಆತನ ಸಹಾಯಹಸ್ತ. ಹೀಗಿರಲೊಮ್ಮೆ ವಸಂತದಾಗಮನ; ವಸಂತೋತ್ಸವ. ಕುಮಾರಸಂಭವ ಮಹಾಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಕಾಲವಸಂತದ ವರ್ಣನೆಯಿದ್ದರೆ ಇಲ್ಲಿ ಸಕಾಲವಸಂತದ ವರ್ಣನೆ. ದಶರಥನಿಗೆ ಮಕ್ಕಳಿಲ್ಲದ ಕೊರಗು. ಅದನ್ನು ದಾಟಲಿಕ್ಕೋ ಏನೊ, ದಶರಥನಿಗೆ ಬೇಟೆಯ ಗೀಳು ಹತ್ತಿತು. ದಶರಥನದು ತಾಯ ಕರುಳು. ಆತ ಪ್ರಾಣಿಗಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲಾರ. ಅವನ ಬೇಟೆಯೆಂದರೆ ವನವಿಹಾರ :

**ಗ್ರಥಿತಮೌಲಿರಸೌ ವನಮಾಲಯಾ**
**ತರುಪಲಾಶಸವರ್ಣತನುಚ್ಛದಃ ।**
**ತುರಗವಲ್ಗನಚಂಚಲಕುಂಡಲೋ**
**ವಿರರುಚೇ ರುರುಚೇಷ್ಟಿತಭೂಮಿಷು ॥**

(ತಲೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಡುಹೂಗಳ ಮಾಲೆ ಮುಡಿದಿದ್ದಾನೆ. ಪ್ರಾಣಿ ಸಂಕುಲಕ್ಕೆ ವಿಶ್ವಾಸ ಬರಲೆಂದು ಎಲೆಯ ಬಣ್ಣದ ಕವಚ ತೊಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಕುದುರೆಯ ಗಂಭೀರ ನಡಿಗೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಆತನ ಕಿವಿಯ ಓಲೆಗಳು ಹೊಯ್ದಾಡುತ್ತಿವೆ. ಅಂತು ದಶರಥನು ಮೃಗಗಳು ನಡೆದಾಡಿದ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಶೋಭಿಸಿದ). ಕಾಳಿದಾಸನದೂ ಹೆಂಗರುಳು. ಇವನ ಬೇಟೆಯ ವರ್ಣನೆಯೇ ವಿಚಿತ್ರ-ವಿಶಿಷ್ಟ. ಕಾಳಿದಾಸನ ಜೀವಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರೇಮ ಬೇಟೆಗೂ ಮಾರ್ದವತೆಯನ್ನು ನೀಡಿದೆ. ಅನುಕಂಪಾಮೃದುವಾದ ಕಾಳಿದಾಸನ ಮನಸ್ಸು ಬೇಟೆಯ ಕ್ರೌರ್ಯವನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಲಾರದು. ಇಲ್ಲಿ ಒಂದೊಂದು ಮೃಗವನ್ನು ಕಂಡಾಗಲೂ ಬದುಕಿನ ರಮ್ಯಸ್ಮೃತಿ ಮೇಲೆದ್ದು ದಶರಥ ಮೃಗವನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲಾರದೆ ಹೋಗುತ್ತಾನೆ. ಕಾಳಿದಾಸನ ದಶರಥನಿಗೆ ಬೇಟೆಯಲ್ಲೂ ಬೇಟದ ನೆನಪು :

**ಅಪಿ ತುರಗ ಸಮೀಪಾದುತ್ಪತಂತಂ ಮಯೂರಂ**
**ನ ಸ ರುಚಿರಕಲಾಪಂ ಬಾಣಲಕ್ಷ್ಯೀಚಕಾರ ।**
**ಸಪದಿ ಗತಮನಸ್ಕಶ್ಚಿತ್ರಮಾಲ್ಯಾನುಕೀರ್ಣೇ**
**ರತಿವಿಗಲಿತಬಂಧೇ ಕೇಶಪಾಶೇ ಪ್ರಿಯಾಯಾಃ ॥**

(ಕುದುರೆಯ ಪಕ್ಕದಲ್ಲೇ ನವಿಲು ಕುಪ್ಪಳಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ, ಸುಂದರವಾಗಿ ಬಿಚ್ಚಿದ ಸೋಗೆಯನ್ನು ಕಂಡ ದಶರಥನಿಗೆ ರತಿಬಂಧ ಸಡಿಲಿದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಣ್ಣ ಬಣ್ಣದ ಚೆದುರಿದ ಹೂಗಳ ಮಾಲೆ ಮುಡಿದ ಹೆಂಡತಿಯ ಮೊದೆಗೂದಲ ನೆನಪಾಗಿ ಬಾಣ ಹೊಡೆಯಲಾಗಲಿಲ್ಲ). ಕಾಳಿದಾಸನ ಜೀವಪ್ರೀತಿ, ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರೇಮ ಇಂಥದು. ನಮ್ಮ ಕನ್ನಡದ ಪಂಪ ಕಾಳಿದಾಸನ ತಮ್ಮ. ವಿಕ್ರಮಾರ್ಜುನನ ಬೇಟೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಇದೇ ಪದ್ಯವನ್ನು ಸೊಗಸಾಗಿ ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾನೆ :

**ಜವಮುಟಿದೊಂದು ಸೋಗೆನವಿಲೊಯ್ಯನೆ ಕರ್ಕಡೆಗಾಸಿಯಾಗಿ ಪಾ**
**ಱುವುದುಮಿದೆನ್ನ ನಲ್ಲಳ ರತಿಶ್ರಮ ವಿಶ್ಲಥ ಕೇಶಪಾಶದೊಳ್**
**ಸವಸವನಾಗಿ ತೋಱಿದಪುದೆಂಬುದೆ ಕಾರಣದಿಂದದಂ ಗುಣಾ**
**ರ್ಣವನಿಡಲೊಲ್ದನಿಲ್ಲ ಹಯವಲ್ಗನ ಸಂಚಳ ರತ್ನಕುಂಡಳಂ**

ಬೇಟೆ ದಶರಥನನ್ನು ಕ್ರಮೇಣ ಜಾಣೆ ಕಾಮಿನಿಯಂತೆ ಸೆಳೆಯಿತಂತೆ. ರಾತ್ರಿ ಹೊತ್ತೂ ಕಾಡಿನಲ್ಲೇ ಮಲಗುತ್ತಿದ್ದನಂತೆ. ಬೆಳಗಿನ ಜಾವ ಆನೆಗಳ ಕಿವಿ ಬಡಿತದ ಸಪ್ಪಳ ನಗಾರಿಯ ಬಡಿತವಾಗಿ ಅವನನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಿಬಿಡುತ್ತಿತ್ತು. ಇಂಪಾದ ಹಕ್ಕಿಗಳ ಕಲರವ ಅರಮನೆಯ ವಂದಿಮಾಗದರ ಮಂಗಲಗೀತವಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಹೀಗಿರುವಾಗ ಒಮ್ಮೆ ಬೆಳಕು ಹರಿಯುವ ಮುನ್ನ ಹತ್ತಿರದ ಹೊಳೆಯ(ತಮಸಾ) ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬಿಂದಿಗೆ ಮುಳುಗಿಸಿದ ಬುಡುಬುಡು-ಬುಳುಬುಳು ಶಬ್ದ. ಒಡನೆಯೇ ಆತನಲ್ಲಿ ಶಬ್ದವೇಧ ಜಾಗ್ರತವಾಯ್ತು. ಆನೆ ಸೊಂಡಿಲಿನಲ್ಲಿ ನೀರು ತುಂಬುವ ಸಪ್ಪಳವೆಂದು ಭಾವಿಸಿ ಶಬ್ದಪಾತಿ ಬಾಣವನ್ನು ಎಸೆದುಬಿಟ್ಟ. ಅಷ್ಟೇ ಶೀಘ್ರವಾಗಿ 'ಅಯ್ಯೋ ಅಪ್ಪ ಅಮ್ಮ' ಆರ್ತನಾದ ಅಪ್ಪಳಿಸಿ ಬಂತು. ದಶರಥ ಕುಸಿದು ಹೋದ; ತನ್ನ ಎದೆಗೇ ಬಾಣ ಬಡಿದ ಅನುಭವ! ಕಾಳಿದಾಸನೂ ನಿಟ್ಟುಸಿರು ಬಿಟ್ಟ :

**ನೃಪತೇಃ ಪ್ರತಿಷಿದ್ಧಮೇವ ತತ್ ಕೃತವಾನ್ ಪಂಕ್ತಿರಥೋ ವಿಲಂಘ್ಯ ಯತ್ ।**
**ಅಪಥೇ ಪದಮರ್ಪಯಂತಿ ಹಿ ಶ್ರುತವಂತೋಽಪಿ ರಜೋನಿಮೀಲಿತಾಃ ॥**

(ರಾಜರಿಗೆ ನಿಷಿದ್ಧವಾದದ್ದನ್ನು ದಶರಥ ಮೀರಿ ಮಾಡಿಬಿಟ್ಟ. ಛೇ! ಎಲ್ಲವನು ಬಲ್ಲವರೂ ಕೂಡ ರಜೋಗುಣ ಮೇಲೆದ್ದು ಬಂದಾಗ ಹಾದಿ ತಪ್ಪಿ ನಡೆದುಬಿಡುತ್ತಾರೆ!) ಯುದ್ಧದಲ್ಲಲ್ಲದೆ ಬೇರೆಡೆ ಆನೆಯ ಹತ್ಯೆ ನಿಷಿದ್ಧ (ಲಕ್ಷ್ಮೀಕಾಮೋ ಯುದ್ಧಾದನ್ಯತ್ರ ಕರಿವಧಂ ನ ಕುರ್ಯಾತ್) ಎನ್ನುವುದು ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತಿ.

ದಶರಥನಿಗೆ ಇದು ತಿಳಿದಿತ್ತು. ಆ ಕ್ಷಣದ ದೌರ್ಬಲ್ಯ. ಮನಸ್ಸು ರಜೋಗುಣಕ್ಕೆ ಪಕ್ಕಾಯಿತು. ಅದು ಅವನ ವಿಧಿ. ದಶರಥ ಶಾಪವನ್ನು

ಹೊತ್ತು ಮರಳಿದ. ಮೌನಿಯಾದ; ಅದು ಕೊರಗೋ! ಧ್ಯಾನವೋ! ಅಂತೂ ಕಡಲ ಗಾಂಭೀರ್ಯ ಅವನನ್ನಾವರಿಸಿತು.

**ಪ್ರಾಪ್ತನುಗಃ ಸಪದಿ ಶಾಸನಮಸ್ಯ ರಾಜಾ**
**ಸಂಪಾದ್ಯ ಪಾತಕವಿಲುಪ್ತಧೃತಿರ್ನಿವೃತ್ತಃ ।**
**ಅಂತರ್ನಿವಿಷ್ಟಪದಮಾತ್ಮವಿನಾಶಹೇತುಂ**
**ಶಾಪಂ ದಧಜ್ಜ್ವಲನಮೌರ್ವಮಿವಾಂಬುರಾಶಿಃ ॥**

(ರಾಜ ಅನುಚರರೊಡನೆ ಮರಳಿ ಬಂದ. ಆತನ ಮುನಿಯ ಶಾಪವನ್ನು ಗಳಿಸಿದ್ದ. ಪಾಪಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದ ಆತನ ಉತ್ಸಾಹ ಉಡುಗಿಹೋಗಿತ್ತು. ಒಡಲೊಳಗೆ ಬಡಬಾಗ್ನಿಯನ್ನು ಬಚ್ಚಿಟ್ಟುಕೊಂಡ ಕಡಲಿನಂತೆ ನನ್ನ ಸಾವಿನ ಶಾಪವನ್ನು ತನ್ನೊಳಗೇ ಬಚ್ಚಿಟ್ಟುಕೊಂಡ). ಧ್ಯಾನ ಮೌನಿಯಾದ ದಶರಥ ರಾಮೋದಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣನಾದ.

ಈ ಸರ್ಗದ ಕವಿತಾ ನಿರ್ಮಾಣ ಕೌಶಲ್ಯವೂ ಮನಃಸ್ಪರ್ಶಿಯಾದದ್ದು. ವಸಂತ ವರ್ಣನೆಯಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ಮೃಗಯಾವರ್ಣನೆ ಕೂಡ ಮೃದು ಮಧುರ ಪದಶಯ್ಯೆಯಿಂದ ಮನಸೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಯಮಕ ಮನಮೋಹಕವಾಗಿದೆ. ಛಂದಸ್ಸಿನ ಲಾಸ್ಯದ ಸೊಗಸೇ ಸೊಗಸು. ದ್ರುತವಿಲಂಬಿತ, ವಸಂತತಿಲಕ. ಶಾಲಿನೀ, ಔಪಚ್ಛಂದಸಿಕ, ರಥೋದ್ಧತಾ, ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರಾ, ಸ್ವಾಗತಾ, ವೈತಾಲೀಯ, ಮತ್ತಮಯೂರ ವೃತ್ತಗಳ ನಡೆಯಿಂದಾಗಿ ಕಥೆ ದೃಶ್ಯವತ್ತಾಗಿ ಮೂಡಿದೆ. ರೂಪಕಗಳ, ಚಿತ್ರಗಳ ಸಾಲು ಸಾಲು ಮೆರವಣಿಗೆ, ಕವಿತೆಯ ಸುಸಾಧ್ಯತೆಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಇಲ್ಲಿ ಸೂರೆಗೊಂಡು, ರಾಮಾಯಣಕತೆಯ ಆರಂಭದಲ್ಲೇ ಪೂರ್ವಸೂರಿಗೆ ಕವಿತಾಕಾಣಿಕೆಯನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿದಂತಿದೆ ಈ ಸರ್ಗ ನಿರ್ಮಿತಿ.

**ರಾಮಾವತಾರ :**

ಶಾಪದ ಕಾರಣದಿಂದಾದರೂ ಮಕ್ಕಳಾದಾವೆಂದು ದಶರಥ ಕಾಯುತ್ತಲೇ ಇದ್ದ. ಹತ್ತು ಸಾವಿರ ವರ್ಷ ಕಳೆದರೂ ಶೋಕದ ಕತ್ತಲ ಕಳೆಯುವ ಮಕ್ಕಳೆಂಬ ಬೆಳಕು ಹುಟ್ಟಿಬರಲೇ ಇಲ್ಲ. ಋಷ್ಯಶೃಂಗಾದಿಗಳು ರಾಜನಿಗೆ ಸಂತಾನ ಬಯಸಿ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿಯನ್ನು ಮಾಡಿದರು. ರಾವಣನ ಉಪಟಳಕ್ಕೊಳಗಾದ ದೇವತೆಗಳು ಇದೇ ಸಂದರ್ಭವನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಶ್ರೀಹರಿಗೆ ಶರಣಾದರು – ಬಿಸಿಲ ಬೇಗೆಯಿಂದ ಬಳಲಿದ ದಾರಿಹೋಕರು ತಣ್ಣೆಳಲ ಮರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವಂತೆ ಆ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಶ್ರೀಹರಿ ಶರತ್ಕಾಲದ ಬೆಳಗಿನ ಬಿಸಿಲಿನಂತೆ (ಹಿತವಾಗಿ) ಕಂಡನಂತೆ. ಆತನಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ದೇವತೆಗಳು, ಮಾತಿಗೂ ಮನಸ್ಸಿಗೂ ನಿಲುಕದ ಆತನನ್ನು ಮಾತಿನಿಂದಲೇ ಸ್ತುತಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ನಮೋ ವಿಶ್ವಸೃಜೇ ಪೂರ್ವಂ ವಿಶ್ವಂ ತದನು ಬಿಭ್ರತೇ ।**
**ಅಥ ವಿಶ್ವಸ್ಯ ಸಂಹರ್ತ್ರೇ ತುಭ್ಯಂ ತ್ರೇಧಾ ಸ್ಥಿತಾತ್ಮನೇ ॥**

(ಈ ಜಗವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದವನು; ತದನಂತರ ಪರಿಪಾಲಿಸಿದವನು; ಆ ಬಳಿಕ ಸಂಹಾರ ಮಾಡಿದವನು ನೀನು. ಸೃಷ್ಟಿ – ಸ್ಥಿತಿ – ಸಂಹಾರಕರ್ತ (ಬ್ರಹ್ಮ–ವಿಷ್ಣು–ಶಿವ)ನಾದ ಪರಮಾತ್ಮ ನೀನು. ನಿನಗೆ ನಮನಗಳು.)

**ರಸಾಂತರಾಣ್ಯೇಕರಸಂ ಯಥಾ ದಿವ್ಯಂ ಪಯೋಽಶ್ನುತೇ ।**
**ದೇಶೇ ದೇಶೇ ಗುಣೇಷ್ವೇವಮವಸ್ಥಾಸ್ತ್ವಮವಿಕ್ರಿಯಃ ॥**

(ಮುಗಿಲಿಂದ ಬಿದ್ದ ಮಳೆ (ಒಂದೇ ರುಚಿಯುಳ್ಳದ್ದು) ಆಯಾ ಪ್ರದೇಶಗಳ ಮಣ್ಣಿನ ಗುಣದಿಂದಾಗಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ರುಚಿಯುಳ್ಳದ್ದಾಗುವಂತೆ ಬದಲಾಗದ ನೀನು ವಿಭಿನ್ನ ಗುಣ ಸಂಪರ್ಕದಿಂದ ಭಿನ್ನನಾಗಿ ತೋರುವೆ.)

**ಬಹುಧಾಪ್ಯಾಗಮೈರ್ಭಿನ್ನಾಃ ಪಂಥಾನಃ ಸಿದ್ಧಿಹೇತವಃ ।**
**ತ್ವಯ್ಯೇವ ನಿಪತಂತ್ಯೋಘಾ ಜಾಹ್ನವೀಯಾ ಇವಾರ್ಣವೇ ॥**

(ಪರಮಾರ್ಥಸಿದ್ಧಿಯ ಮಾರ್ಗಗಳು ನಾನಾ ಬಗೆಯವು ಆಗಿದ್ದರೂ, ಅವೆಲ್ಲವೂ ನಿನ್ನನ್ನೇ ಸೇರುತ್ತವೆ. ಗಂಗೆಯ (ಉಪನದಿಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡ) ಪ್ರವಾಹ ಸಂತತಿ ಕಡಲನ್ನೇ ಸೇರುತ್ತವಲ್ಲ!)

ದೇವತಾಸ್ತುತಿಗಳಿಂದ ಪ್ರೀತನಾದ ಶ್ರೀಹರಿಯು ರಾವಣನ ತಪಸ್ಸಿನ ಸಂಗತಿಯನ್ನೂ ಬ್ರಹ್ಮದೇವನು ಆತನಿಗೆ ನೀಡಿದ ವರದ ವಿಚಾರವನ್ನೂ ತಿಳಿಸಿದನು. ಮನುಷ್ಯನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿ ರಾವಣನ ತಲೆ ಕಡಿಯುವುದಾಗಿ ಭರವಸೆ ನೀಡಿದನು. ರಾವಣನೆಂಬ ಬರಗಾಲದಿಂದ ಪೀಡಿತರಾದ ದೇವತೆಗಳಿಗೆ ಮಾತಿನ ಅಮೃತಧಾರೆಯ ತಂಪೆರೆದನು. ದೇವತೆಗಳೆಂಬ ಸಸ್ಯಗಳಿಗೆ ನೀರೆರೆದ ಮೇಘಶ್ಯಾಮ ಕೂಡಲೇ ಮರೆಯಾಯಿತು. ಹೂಗಳು ತಮ್ಮ ಅಂಶವಾದ ಸುರಭಿಯೊಂದಿಗೆ ಗಾಳಿಯನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿದಂತೆ, ದೇವತೆಗಳು ವಿಷ್ಣು ಸಹಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಸ್ವಾಂಶದಿಂದ ಆತನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ನಾನು ಜನ್ಮತಳೆಯುವರು.

ದಶರಥನ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿಯ ಅಗ್ನಿಕುಂಡದಿಂದ ದೇವಪುರುಷನೊಬ್ಬ ಎದ್ದು ಬಂದು ರಾಜನಿಗೆ ಪಾಯಸಾನ್ನವನ್ನ ನೀಡಿದನು. ಸಮುದ್ರವು ತನ್ನ ಸಾರವನ್ನು (ಆವಿಯನ್ನು) ನೀಡಿದಾಗ ಅದನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುವ ಇಂದ್ರನಂತೆ ದಶರಥನು ಪಾಯಸಾನ್ನವನ್ನು ಪಡೆದು ತನ್ನ ರಾಣಿಯರಿಗೆ ಹಂಚಿದನು. ಕೌಸಲ್ಯೆ ಕೈಕೇಯಿಯರಿಗೆ ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಸಮನಾಗಿ ನೀಡಿದನು. ಅವರು ಅದರಲ್ಲಿ ಅರ್ಧಭಾಗವನ್ನು ಸುಮಿತ್ರೆಗೆ ನೀಡಿದರು. ಅವರು ಫಲಸಂಪತ್ತನ್ನು ತಮ್ಮೊಳಗೆ ಬಚ್ಚಿಟ್ಟುಕೊಂಡಂತೆ ಬಸಿರಾದರು. ಅವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಒಂದೇ ಬಗೆಯ ಕನಸು ಬಿತ್ತು. ಕನಸಿನಲ್ಲಿ ಖಡ್ಗ, ಗದೆ, ಶಾರ್ಙ್ಗ, ಶಂಖ, ಚಕ್ರಗಳನ್ನುಳ್ಳ ವಾಮನಮೂರ್ತಿ ರಕ್ಷಕನಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡನು. ಚಿನ್ನದ ಗರಿಯ ಗರುಡ ಅವನನ್ನು ಹೊತ್ತಿದ್ದ. ಆತನ ಎದೆಯಲ್ಲಿ ಕೌಸ್ತುಭ; ಬಳಿಯಲ್ಲಿ ಕಮಲದ ಬೀಸಣಿಕೆಯಿಂದ ಗಾಳಿಬಿಸುವ ಲಕ್ಷ್ಮಿ; ದೇವಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಿಂದು ಮಡಿಯಾಗಿ ವೇದರಹಸ್ಯವನ್ನು ಪಠಿಸುವ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು. ಇದನ್ನು ಕೇಳಿ ದಶರಥನಿಗೆ ಜಗದ್ಗುರುವಿಗೆ ನಾನು ಗುರು (ತಂದೆ) ಆದನೆಂದು ಅನಿಸಿತಂತೆ. ಪರಿಪೂರ್ಣನಾದ ಅದ್ವಿತೀಯನಾದ ವಿಭು ಆ ರಾಣಿಯರ ಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕಾಗಿ ವಿಭಕ್ತನಾದನು – ನಿರ್ಮಲವಾದ ನೀರಿನ ತೆರೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಹುವಾಗಿ ತೋರುವ ಚಂದ್ರಬಿಂಬದಂತೆ. ಕೌಸಲ್ಯೆಗೆ ಮಗುವಾಯಿತು. ಮುದ್ದಾಗ ಮಗು. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮ (ಸಂತೋಷದಾಯಕ) ಎಂದು ತಂದೆ ಹೆಸರಿಟ್ಟ. ಆ ಹೆಸರು 'ಜಗತ್ ಪ್ರಥಮಮಂಗಲ'. (ಆನಂದದಾಯಕವಾದ ಆದಿಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಕಾರಣ). ರಾಮ ರಘುವಂಶಪ್ರದೀಪ. ಅವನ ಹೊಳಪಿಗೆ ಸೂತಿಕಾಗೃಹದ ದೀಪಗಳೆಲ್ಲ ಮಂಕಾದವಂತೆ. ಕೈಕೇಯಿಗೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗು ಭರತ. ಸಂಪತ್ತಿನೊಂದಿಗೆ ವಿನಯವೂ ಸೇರಿದಂತೆ ಭರತ ತಾಯ ಮಡಿಲಲ್ಲಿ ಶೋಭಿಸಿದ. ಸುಮಿತ್ರೆಗೆ ಅವಳಿ ಮಕ್ಕಳು – ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಶತ್ರುಘ್ನ.

**ಸುತೌ ಲಕ್ಷ್ಮಣಶತ್ರುಘ್ನೌ ಸುಮಿತ್ರಾ ಸುಷುವೇ ಯಮೌ**
**ಸಮ್ಯಗಾರಾಧಿತಾ ವಿದ್ಯಾ ಪ್ರಬೋಧವಿನಯಾವಿವ**

ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಶತ್ರುಘ್ನರ ಜನ್ಮವನ್ನು ನೆಪಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕವಿ ಶಿಕ್ಷಣದ ಬಗ್ಗೆ ಮಹತ್ವದ ಮಾತನ್ನಾಡಿದ್ದಾನೆ. (ಸರಿಯಾದ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಕಲಿಸಿದ – ಕಲಿತ ವಿದ್ಯೆ ವಿಷಯ ಪರಿಣಿತಿ ಮತ್ತು ಹೃದಯ ಸಂಸ್ಕಾರ ರೂಪ ವಿನಯವನ್ನು ಹಡೆಯುತ್ತದೆ). ಕೇವಲ ವಿಷಯಪರಿಣಿತಿ ವಿದ್ಯೆಯ ಫಲವಾದರೆ ಮನುಷ್ಯ ರಾಕ್ಷಸನಾಗಿಬಿಡುತ್ತಾನೆ. ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಪರಿವರ್ತಿಸುವುದು, ಉನ್ನತೀಕರಿಸುವುದು ವಿದ್ಯೆಯ ಫಲವಾಗಬೇಕು. ಕಾಳದಾಸ ಉದ್ದಕ್ಕೂ, ವಿನಯ ಪದವನ್ನು ಶಿಕ್ಷಣ ಎನ್ನುವ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಬಳಸಿದ್ದಾನೆ. ಸಮಷ್ಟಿಹಿತವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ ರೂಪಿತವಾಗಬೇಕಾದ ಅಗತ್ಯವನ್ನು ಆತ ಮನಗಂಡಿದ್ದ. ಸುಮಿತ್ರೆಯ ಪ್ರಸವದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಮಾತನಾಡಿದ ಕವಿ ವಿದ್ಯೆಯೇ ಮಾನವನಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯ ಮಿತ್ರ ಎನ್ನುವುದನ್ನೂ ಧ್ವನಿಸಿದ್ದಾನೆ.

**ಸ್ವಾಭಾವಿಕಂ ವಿನೀತತ್ವಂ ತೇಷಾಂ ವಿನಯಕರ್ಮಣಾ ।**
**ಮುಮೂರ್ಚ್ಛ ಸಹಜಂ ತೇಜೋ ಹವಿಷೇವ ಹವಿರ್ಭುಜಾಮ್ ॥**

(ಆ ಮಕ್ಕಳು ಸಹಜವಾಗೇ ಸಂಸ್ಕಾರವಂತರು; ಅವರಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀಡಿದಾಗ ಅವರು ಮತ್ತಷ್ಟು ಸುಸಂಸ್ಕೃತರಾದರು – ಅಗ್ನಿಗೆ ಪ್ರಭೆ ಸಹಜ; ತುಪ್ಪ ಹಾಕಿದಾಗ ಅದು ಪ್ರಭಾಪುಂಜವಾಗಿ ಬೆಳಗುವುದು ಹೇಗೋ

ಹಾಗೆ). ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ವಭಾವದ ಆ ನಾಲ್ವರು ರಘುಕುಲವನ್ನು ಬೆಳೆಸಿದರು - ವಿರುದ್ಧ ಸ್ವಭಾವದ ಋತುಗಳು ಕಾಡನ್ನು ಬೆಳೆಸಿ ಉಳಿಸುವಂತೆ. ಸೌಭ್ರಾತತ್ವ ಅವರಲ್ಲಿ ಸಮನಾಗಿದ್ದರೂ ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಭರತ-ಶತ್ರುಘ್ನ ಜೊತೆಯಾಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು. ಗಾಳಿ-ಬೆಂಕಿ, ಚಂದ್ರ-ಕಡಲು ಅವರ ಸಂಬಂಧ. ರಾಜನಿಗೋ ಅವರು ಧರ್ಮ-ಅರ್ಥ-ಕಾಮ-ಮೋಕ್ಷಗಳ ಪ್ರತಿನಿಧಿಗಳಂತೆ ಕಂಡರು. ಕಥನದ ಓಟಕ್ಕೆ ಅನುಕೂಲವಾದ 'ಅನುಷ್ಟುಪ್' ವೃತ್ತದ, ಸರಳ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿ ಈ ಸರ್ಗರಚನೆ ಇದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನಗಳ ಚೆಲುವು ವಿಶೇಷ.

**ಸೀತಾವಿವಾಹವರ್ಣನ :**

ಇಲಿಯ ಕತೆ ಉತ್ಸಾಹ ಭಾವದ್ದು. ಅದಕ್ಕೆ ಹೊಂದುವ ರಥೋದ್ಧತಾ ವೃತ್ತದಲ್ಲಿ ಈ ಸರ್ಗ ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ವೀರ ಭಾವ ಈ ಸರ್ಗದಲ್ಲಿ ಮೇಲ್ಪಟ್ಟು ತೋರುತ್ತದೆ.

ಯಜ್ಞರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಬಾಲಕರಾದ ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಯಾಚಿಸಿದನು. **ತೇಜಸಾಂ ಹಿ ನ ವಯಃ ಸಮೀಕ್ಷ್ಯತೇ!** (ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಲಕ್ಷಿಸುವುದೇ ವಿನಾ ವಯಸ್ಸನ್ನಲ್ಲ). ದಶರಥನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನೊಂದಿಗೆ ಹೊರಟ ಬಾಲಕರು ತಂದೆಯ ಕಾಲಿಗೆ ಬಾಗಿದರು. ಅವರ ಕಣ್ಣೀರು ತಂದೆಯ ಕಾಲಿಗೆ; ತಂದೆಯ ಕಣ್ಣೀರು ಆ ಬಾಲಕರ ತಲೆಗೆ! ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಅವರಿಗೆ ಬಲಾತಿಬಲ ವಿದ್ಯೆಯನ್ನು ನೀಡಿದ. ಆ ವಿದ್ಯೆಯ ಬಲದಿಂದ ದೂರದ ದಾರಿ ಸಾಗಿದರೂ ಬಳಲದೆ, ತಾಯ ಬಳಿ ಇದ್ದ ಮಕ್ಕಳಂತೆ ಅವರು ಗುರು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಜೊತೆ ಸಾಗಿದರು. ತಮ್ಮ ನಾಡಿನ ಕಥೆ ಕೇಳುತ್ತ ಸಾಗಿದ ಆ ರಾಜಕುಮಾರರಿಗೆ ಕಾಲ್ನಡಿಗೆಯ ಕಷ್ಟ ಕಾಣಲೇ ಇಲ್ಲ. ತಮ್ಮ ನಾಡಿನ ಸಿಹಿನೀರ ಕೆರೆ-ತೊರೆ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಚಿಲಿಪಿಲಿ, ಉರಿ, ಆಗಾಗ ಕಾಣಿಸಿ ಮರೆಯಾಗುವ ಮೋಡಗಳ ನೆಳಲು ಅವರಿಗೆ ಅಪ್ಯಾಯಮಾನವೆನಿಸಿತು. ನಾಡಿನ ಚಾರಿತ್ರಿಕ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಮತ್ತು ವರ್ತಮಾನದ ಪ್ರಕೃತಿ ಪ್ರೇಮ ಈ ನೆಲವನ್ನಾಳುವವರಿಗೆ ಬಲ ಮತ್ತು ಅತಿಬಲ ಎಂದು ಕವಿ ಮುಗುಮ್ಮಾಗಿ ಸೂಚಿಸಿದ್ದಾನೆ.

ಸುಕೇತು ಎನ್ನುವ ಯಕ್ಷನ ಮಗಳು ತಾಟಕಾ ಅಗಸ್ತ್ಯರ ಶಾಪದಿಂದ ನರಭಕ್ಷಕ ರಾಕ್ಷಸಿಯಾದ ಕಥೆ ಕೇಳಿ, ರಾಮನು ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಠೇಂಕರಿಸಿದ. ಇದನ್ನು ಕೇಳಿದ ಆ ಕೃಷ್ಣಪಕ್ಷದ ರಾತ್ರಿಯಂತಿದ್ದ ತಾಟಕಿ ಸಿಂಹಗರ್ಜನೆ ಮಾಡುತ್ತ ಬಿರುಗಾಳಿಯಂತೆ ಎರಗಿದಳು. ಅವಳನ್ನು ಕಂಡ ರಾಮ ಸ್ತ್ರೀವಧೆಯ ಕರುಣೆಯನ್ನೂ, ಬಾಣವನ್ನೂ ಒಟ್ಟಿಗೇ ಬಿಟ್ಟನಂತೆ. ತಾಟಕಾವಧೆ ರಾಕ್ಷಸನಾಶಕ್ಕೆ ಬಾಗಿಲು ತೆರೆಯಿತು! ಆಕೆಯ ಪತನಕ್ಕೆ ಕಾಡಿನ ನೆಲ ಮಾತ್ರ ನಡುಗಲಿಲ್ಲ; ರಾವಣನ ಸಿರಿ-ಸಂಪತ್ತೂ ನಡುಗಿತು. ಸೂರ್ಯನಿಂದ ಬೆಂಕಿಗೆ ದಾಹಕ ಶಕ್ತಿ ಒದಗುವಂತೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಿಂದ ರಾಮನಿಗೆ ಮಂತ್ರಾಸ್ತ್ರಗಳೆಲ್ಲ ಲಭಿಸಿದವು. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ವಾಮನನು ನಡೆದಾಡಿದ ನೆಲಕ್ಕೆ ರಾಮನನ್ನು ಕರೆದೊಯ್ದ. ತನ್ನ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ ನೆನಪು ರಾಮನಿಗೆ ಬರದಿದ್ದರೂ ಕತೆ ಕೇಳಿದ ರಾಮನಿಗೆ ಮಾನಸಿಕ ಉತ್ಸಾಹ ಉನ್ಮುಖವಾಯಿತು. ಚಂದ್ರ ಸೂರ್ಯರು ರಾತ್ರಿ ಹಗಲು ಲೋಕದ ಕತ್ತಲು ಕಳೆವಂತೆ ದಶರಥನ ಮಕ್ಕಳು ಯಜ್ಞದೀಕ್ಷಿತನಾದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಅಡ್ಡಿ - ಆತಂಕವನ್ನು ಕಳೆದರು. ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಿ ಮಾಡಿದ ಮಾರೀಚನನ್ನು ವಾಯ್ವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಹಣ್ಣೆಲೆಯಂತೆ ದೂರಕ್ಕೆ ಎಸೆದು ಬೀಳಿಸಿದರು; ಸುಬಾಹುವನ್ನು ಕೊಂದು ರಣಹದ್ದುಗಳಿಗೆ ಬಲಿ ಹಾಕಿದರು.

ವಿಘ್ನಗಳೆಲ್ಲ ದೂರವಾಗಿ ಯಜ್ಞ ಪರಿಸಮಾಪ್ತಿಯಾಯಿತು. ಮಹಾಮುನಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಅವಭೃತ ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಬೆನ್ನು ಸವರಿ ಹರಿಸಿದ. ಜನಕನ ಆಮಂತ್ರಣದ ಮೇರೆಗೆ ತನ್ನೊಂದಿಗೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನೂ ಕರೆದೊಯ್ದ. ಅವರಿಗೂ ಬಿಲ್ಲಿನ ಬಗ್ಗೆ ಕೇಳಿ ಕುತೂಹಲವುಂಟಾಯಿತಂತೆ. ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಅವರು ಗೌತಮರ ಆಶ್ರಮ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಮರದಡಿ ರಾತ್ರಿ ಕಳೆದರು. ರಾಮಪಾದಧೂಲಿಯ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ಅಹಲ್ಯೆ ತನ್ನ ಚೆಲುವಿನ ಮೈ ಪಡೆದಳು. ಮಿಥಿಲೆಯಲ್ಲಿ ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನು ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರಿಂದೊಡಗೂಡಿದ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನನ್ನು, ಅರ್ಥಕಾಮ ಗಳಿಂದೊಡಗೂಡಿದ ಧರ್ಮದಂತೆ ಬರಮಾಡಿಕೊಂಡನು. ರಾಮನು ಬಿಲ್ಲನ್ನು ನೋಡಲು ಉತ್ಸುಕನಾಗಿದ್ದಾನೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನು

ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಜನಕನಿಗೆ ಅರುಹಿದ. ಈ ಬಾಲಕನ ಕೋಮಲ ಶರೀರವನ್ನು ಕಂಡ ಜನಕನಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ ಆಸೆ. ಆದರೆ ವಧೂದಕ್ಷಿಣೆಯಾದ ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಹೆದೆಯೇರಿಸಲು ಇವನಿಂದ ಆದೀತೇ ಎನ್ನುವ ಅಳುಕು! "ಸಲಗಗಳಿಗೇ ಆಗದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮರಿ ಆನೆ ಮಾಡಲಾದೀತೆ! ಭಾರೀ ಬಿಲ್ಲುಗಾರರೇ ಕೈಚೆಲ್ಲಿ ಅವಮಾನಗೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ತಮ್ಮ ತೋಳ್ಬಲಕ್ಕೇ ಧಿಕ್ಕಾರವೆಂದು ಹೊರಟು ಹೋಗಿದ್ದಾರೆ. ನಾನು ಇದಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಕೊಡಲಾರೆ" ಎಂದ ದಶರಥ. ಅದಕ್ಕೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಹೇಳಿದ – "ಈತನ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸಿ ಏನು ಪ್ರಯೋಜನ. ನಿನ್ನ ಬಿಲ್ಲೇ ಅದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಲಿ. ಸಣ್ಣ ಸಿಡಿಲು ಬೆಟ್ಟವನ್ನೇ ಸೀಳದೆ!" ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಆಪ್ತಮಾತಿಗೆ ಜನಕ ಸಮ್ಮತಿಸಿದ. ಮಿಂಚಿನ ಹುಳದ ಗಾತ್ರದ ಬೆಂಕಿ ಕಿಡಿಯ ದಾಹಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಊಹಿಸಲಾದೀತೇ! ಇಂದ್ರನು ಕಾಮನ ಬಿಲ್ಲನ್ನೂ ಮೂಡಿಸಲು ಮೋಡಗಳಿಗೆ ಅಪ್ಪಣೆ ನೀಡಿದಂತೆ, ಜನಕ ತನ್ನಾಳುಗಳಿಗೆ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ತರಲು ಆದೇಶಿಸಿದ. ಸರ್ಪರಾಜ ತೆಪ್ಪಗೆ ಮಲಗಿದಂತಿತ್ತು ಆ ಬಿಲ್ಲು. ದಕ್ಷಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಶಿವ ಎತ್ತಿದ ಬಿಲ್ಲು ಅದು. ಬೆಟ್ಟದ ಭಾರದ ಆ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಆ ರಾಮ ಕೋಮಲವಾದ ಹೂ ಬಿಲ್ಲು ಎನ್ನುವಷ್ಟು ಹಗುರಾಗಿ ಎತ್ತಿದ. ಸಭೆ ಮೂಕ ವಿಸ್ಮಿತವಾಯ್ತು. ರಾಮ ಬಿಲ್ಲಿಗೆ ಹೆದೆಯೇರಿಸಿದ. ಹೆದೆಯನ್ನು ಬಿಗಿಗೊಳಿಸುತ್ತಿದ್ದಂತೆ ಬಿಲ್ಲು ಮುರಿಯಿತು. ಭಾರೀ ಗುಡುಗಿನ ಶಬ್ದ ಭೋರ್ಗರೆಯಿತು. "ಮತ್ತೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ತಲೆ ಎತ್ತಿದ" ಎಂದು ಕ್ಷತ್ರಿಯಾಂತಕ ಪರಶುರಾಮನಿಗೆ ಕೂಗಿ ಹೇಳಿದಂತಿತ್ತು ಅದು. ಸೀತಾಕಲ್ಯಾಣವಾಯಿತು. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಜನಕನ ಮಗಳು ಊರ್ಮಿಳೆಯನ್ನು ವಿವಾಹವಾದ. ಜನಕನ ತಮ್ಮ ಕುಶಧ್ವಜ. ಆತನ ಮಕ್ಕಳು ಮಾಂಡವಿ, ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿ. ಅವರನ್ನು ಭರತ ಶತ್ರುಘ್ನರು ಮದುವೆಯಾದರು. ಸಾಮ, ದಾನ, ಭೇದ, ದಂಡಗಳೆಂಬ ನಾಲ್ಕು ಉಪಾಯಗಳಿಗೆ ಸಿದ್ಧಿ ಲಭಿಸಿದಂತೆ ನಾಲ್ಕು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸೊಸೆಯಂದಿರು ಸಿದ್ಧಿಸಿದರು. ಮೂಲ ಶಬ್ದಕ್ಕೆ (ಪ್ರಕೃತಿಗೆ) ಪ್ರತ್ಯಯವನ್ನು ಸೇರಿಸಿದಾಗಲೇ ಅದು ಅರ್ಥಪೂರ್ಣ. ಆಗ ಮಾತ್ರ ಅದು ಪೂರ್ಣ ಅರ್ಥವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತದೆ ಈ ವರವಧೂ ಸಮಾಗಮವು ಪ್ರತ್ಯಯ ಪ್ರಕೃತಿಯೋಗವಿದ್ದಂತೆ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ಕಾಳಿದಾಸ. ವ್ಯಾಕರಣ ಕೂಡ ಕಾಳಿದಾಸನಲ್ಲಿ ಸಾರ್ಥಕ ಕಾವ್ಯಪರಿಕರವಾಗಿ ಬಿಡುತ್ತದೆ. (ಸೋಽಭವದ್ವರವಧೂಸಮಾಗಮಃ ಪ್ರತ್ಯಯಪ್ರಕೃತಿಯೋಗಸಂನಿಭಃ). ಮದುಮಕ್ಕಳೊಂದಿಗೆ ದಶರಥ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಹೊರಟ. ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಅಪಶಕುನಗಳ ಸರಣಿ, ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ ಬೀಸುವ ಗಾಳಿ, ಗರುಡ ಕಚ್ಚಿ ಹಿಡಿದ ಸರ್ಪದ ತಲೆಯಿಂದ ಕಳಚಿ ಬೀಳುತ್ತಿರುವ ಮಣಿಯಂತೆ ಕಾಣುವ ಕೊಡೆಕಟ್ಟಿದ (ಪರಿವೇಷ) ಸೂರ್ಯಮಂಡಲ, ರಕ್ತಸಿಕ್ತ ರಜಸ್ವಲೆಯಂತೆ ತೋರುವ ಸಂಜೆಯ ಮೋಡ, ನರಿಗಳ ಊಳಿಡುವಿಕೆ ಇತ್ಯಾದಿ. ಈ ಅಪಶಕುನಗಳಿಗೆ ಶಮನೋಪಾಯವೇನೆಂದು ದಶರಥನು ವಸಿಷ್ಠರನ್ನು ಕೇಳಿದ. ಒಳ್ಳೆಯದೇ ಆಗುತ್ತದೆ ಎಂದು ಹೇಳಿ ವಸಿಷ್ಠರು ಅವನ ದುಗುಡವನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿದರು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಎದುರಿಗೆ ಕಣ್ಣುಕುಕ್ಕುವ ಪುರುಷಾಕೃತಿಯ ತೇಜೋರಾಶಿ! ಕ್ರುದ್ಧ ಪರಶುರಾಮ! ತಂದೆಯಿಂದ ಬಂದ ಯಜ್ಞೋಪವೀತ; ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಕುಲ ಮೂಲದ ತಾಯಿಯಿಂದ ಬಂದ ಬಿಲ್ಲು! ಚಂದ್ರನಿಂದೊಡಗೂಡಿದ ಸೂರ್ಯ! ಹಾವು ಸುತ್ತಿದ ಚಂದನ ತರು! ಕೋಪ ಕಠೋರನಾದ ಈತ ತಂದೆಯ ಮಾತಿನಂತೆ ತಾಯಿಯನ್ನೇ ಕೊಂದ, ತದನಂತರ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಕುಲವನ್ನೇ ತರಿದ ನಿಷ್ಕರುಣಿ. ಆತನ ರುದ್ರಾಕ್ಷಿ ಮಾಲೆಯು, ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಕುಲ ನಾಶಕ್ಕಾಗಿ ಆತ ಭೂಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ ಮಾಡಿದ ಲೆಕ್ಕವನ್ನು ನೆನಪಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಲು ಹಾಕಿಕೊಂಡ ಎಣಿಕೆಯ ಜಪಮಾಲೆಯಂತೆ ತೋರಿತು ದಶರಥನಿಗೆ. ತಂದೆಯ ಕೊಲೆಗೈದವನೊಬ್ಬನ ತಪ್ಪಿಗೆ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಕುಲವನ್ನೇ ನಾಶ ಮಾಡಿದ ಈ ದ್ವೇಷಪಿಂಡದೆದುರು ಎಳೆಯ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಂಡು ದಶರಥ ಹೌಹಾರಿದ. 'ರಾಮ' ಎನ್ನುವುದು ಒಂದೇ ಹೆಸರು ತನ್ನ ಮಗನಿಗೂ; ಆತನಿಗೂ, ಆದರೆ ಒಂದು ರತ್ನದ ಹಾರ! ಮತ್ತೊಂದು ಹೆಡೆಯಲ್ಲಿ ರತ್ನದ ಮಣಿಹೊತ್ತ ಸರ್ಪ! ಒಂದು ಹೃದಯಂಗಮ! ಇನ್ನೊಂದು ಭಯಂಕರ! 'ಅರ್ಘ್ಯ, ಅರ್ಘ್ಯ' ಎಂದು ಹಲಬುತ್ತಿದ್ದ ದಶರಥನನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿಯೂ ನೋಡದೆ, ಪರಶುರಾಮ ಕೋಪದ ಸುಡುಗಣ್ಣಿಂದ ರಾಮನನ್ನೇ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದ. ಮುಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದು ಬೆರಳುಗಳ ನಡುವೆ

ಬಾಣವಾಡಿಸುತ್ತ ನೇರವಾಗಿ ನುಡಿದ – "ಕ್ಷತ್ರಿಯ ವೈರ ಬಹುತೇಕ ಶಮನವಾಗಿತ್ತು. ನಿನ್ನ ಪರಾಕ್ರಮದ ಸುದ್ದಿ ಕೇಳಿ ದೊಣ್ಣೆಯಿಂದ ಹುತ್ತ ಬಡಿದು ಮಲಗಿದ ಸರ್ಪವನ್ನು ಕೆರಳಿಸಿದಂತಾಗಿದೆ. ನನ್ನ ಕೀರ್ತಿಯ ಶಿಖರವನ್ನು ಮುಕ್ಕು ಮಾಡಿರುವೆ! ಈವರೆಗೆ ರಾಮ ಎಂದರೆ ನಾನೊಬ್ಬನೇ. ಈಗ ನೀನು ಆ ಹೆಸರಿಗೆ ಸಲ್ಲುತ್ತಿರುವುದು ನನಗೆ ಅವಮಾನ! ಹಸುವಿನ ಕರುವನ್ನು ಕದ್ದೊಯ್ದ ಆ ಹೈಹಯ ಮತ್ತು ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಕಸಿದುಕೊಂಡ ನೀನು ಇಬ್ಬರೇ ನನಗೆ ವೈರಿಗಳು. ನಿನ್ನನ್ನು ಗೆಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ನನಗೆ ನೆಮ್ಮದಿ ಇಲ್ಲ. ಹುಲ್ಲಿನ ಮೆದೆಯನ್ನು ಸುಡುವ ಬೆಂಕಿ ಸಾಗರದ ತಳದಲ್ಲೂ ಉರಿಯುತ್ತದೆ; ನನ್ನ ಈ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿ; ಶರಸಂಧಾನ ಮಾಡು. ಅಷ್ಟು ಸಾಕು! ಯುದ್ಧ ಬೇಕಿಲ್ಲ. ನಿನಗೆ ನನ್ನ ತೋಳ್ಬಲವಿದೆಯೆಂದಾದರೆ ನನ್ನನ್ನು ನೀನು ಗೆದ್ದಂತೆ. ನನ್ನ ಕೊಡಲಿಯ ಅಲಗನ್ನು ಕಂಡು ಹೆದರಿದೆಯಾ? ಹಾಗಿದ್ದರೆ ಹೆದೆಯೆಳೆದು ಕೈ ನೋಯಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಡ; ರಕ್ಷಿಸೆಂದು ಕೈಜೋಡಿಸು." ಈ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ರಾಮ ಮೆಲ್ಲಗೆ ಮುಗುಳ್ನಕ್ಕ. ಬಿಲ್ಲು ಹಿಡಿಯುವುದೆ ತಕ್ಕ ಉತ್ತರವೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ. ಅದು ವೈಷ್ಣವ ಧನುಸ್ಸು. ರಾಮನ ಹಿಂದಿನ ಜನ್ಮದ್ದು. ಮಳೆ ಮೋಡವೇ ಸುಂದರ; ಮತ್ತೆ ಮಳೆಬಿಲ್ಲು ಕಟ್ಟಿತೋ, ಅದೆಷ್ಟು ಕಳೆಕಟ್ಟೀತು! ಇಂತು ಶೋಭಿಸಿದ ಕೋದಂಡ ರಾಮ ಬಿಲ್ಲನ ಒಂದು ತುದಿಯನ್ನು ನೆಲಕ್ಕೆ ತಗುಲಿಸಿ ಹಿಡಿದು ಶರಸಂಧಾನ ಮಾಡಿದ. ಹೊಗೆಯುಳಿದ ಬೆಂಕಿಯಂತೆ ಪರಶುರಾಮ ಕಳೆಗುಂದಿದ. ಒಬ್ಬನ ಕಳೆ ಕುಂದಿತು; ಇನ್ನೊಬ್ಬನದು ಹೆಚ್ಚಿತು– ಹುಣ್ಣಿಮೆ ಸಂಜೆಯ ಸೂರ್ಯ ಚಂದ್ರರಂತೆ. ದೇವ ಸೇನಾನಿಯಂತೆ ಕಂಗೊಳಿಸಿದ ರಾಮ ಒಡನೆಯೇ ಕರುಣಾಮೃದು ಆದ. ಒಮ್ಮೆ ಭಾರ್ಗವರಾಮನನ್ನೂ, ಬಳಿಕ ಅಮೋಘ ಬಾಣವನ್ನೂ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನೋಡಿ ನುಡಿದ – "ನೀನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣ; ನಿನ್ನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲಾರೆ. ಹೇಳು, ನಿನ್ನ ಗಮನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು (ಕಾಲು ಕತ್ತರಿಸಿ) ಅಪಹರಿಸಲೆ? ಅಥವಾ ಯಜ್ಞಾಚರಣೆಯಿಂದ ಸಂಪಾದಿಸಿದ ಲೋಕವನ್ನು (ಸ್ವರ್ಗಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ಪುಣ್ಯವನ್ನು) ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳಲೇ?" ಋಷಿ ಮಾರ್ನುಡಿದ – "ನೀನು ಪುರಾಣ ಪುರುಷ ಎನ್ನುವ ಪರಮಾರ್ಥ ನನಗೆ ತಿಳಿದಿಲ್ಲವೆಂದಲ್ಲ. ಈ ನೆಲಕ್ಕಿಳಿದ ವೈಷ್ಣವ ತೇಜಸ್ಸನ್ನು ನೋಡ ಬಯಸಿ ನಿನ್ನನ್ನು ಕೆರಳಿಸಿದೆ ಅಷ್ಟೆ. ತಂದೆಯ ದ್ವೇಷಿಯನ್ನು ಸುಟ್ಟು ಬೂದಿ ಮಾಡಿದ್ದೇನೆ; ಸಾಗರ ಪರ್ಯಂತ ಪಸರಿಸಿದ ಭೂಮಿಯನ್ನು ದಾನ ಮಾಡಿದ್ದೇನೆ; ಕೃತಕೃತ್ಯನಾದ ನನಗೆ ಪರಮ ಪುರುಷನಾದ ನಿನ್ನಿಂದಾದ ಸೋಲೂ ಕೂಡ ಗೆಲುವೇ. ಪ್ರಾಜ್ಞನೇ! ನಾನು ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಸಂಚಾರ ಮಾಡಬೇಕಿದೆ; ನನ್ನ ಕಾಲು ಕಿತ್ತುಕೊಳ್ಳಬೇಡ. ನನಗೆ ಭೋಗದ ಇಚ್ಛೆ ಇಲ್ಲ. ನಾನು ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಹೋಗದಂತೆ ತಡೆದರೆ ನನಗೇನೂ ಬೇಸರವಿಲ್ಲ." ಹಾಗೇ ಆಗಲೆಂದು ಶ್ರೀರಾಮ ಬಾಣವನ್ನು ಪೂರ್ವದಿಕ್ಕಿಗೆ ಎಸೆದನು. ಅದು ಭಾರ್ಗವನ ಸ್ವರ್ಗ ಮಾರ್ಗಕ್ಕೆ ಅಡ್ಡಿಯಾಯಿತು. ಕ್ಷಮಿಸು ಎಂದು ಬೇಡುತ್ತ ಶ್ರೀರಾಮ ಪರಶುರಾಮನ ಕಾಲಿಗೆರಗಿದ. ಬಲಶಾಲಿಗಳನ್ನು ಬಲದಿಂದ ಗೆದ್ದಮೇಲೆ ಬಾಗುವುದೆ ಕೀರ್ತಿಕರ! "ತಾಯಿಯಿಂದ ಬಳುವಳಿಯಾಗಿ ಬಂದ ರಾಜಸಗುಣವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು, ಪಿತ್ರಾರ್ಜಿತವಾಗಿ ಬಂದ ಶಮ(ಮನಶ್ಯಾಂತಿ)ವನ್ನು ಪಡೆದನು. ನೀನು ಮಾಡಿದ ಪ್ರತೀಕಾರವೂ ನನಗೆ ಉಪಕಾರವೇ ಆಯಿತು. ನಾನಿನ್ನು ಹೊರಡುವೆ. ದೇವಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿನಗೆ ವಿಘ್ನ ಉಂಟಾಗದಿರಲಿ." ಪರಶುರಾಮ ಕಣ್ಮರೆಯಾದ. ದಶರಥ ರಾಮನನ್ನು ಬಿಗಿದಪ್ಪಿಕೊಂಡ. ಆತ ಮತ್ತೊಮ್ಮೆ ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದನೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ. ಕಾಡ್ಗಿಚ್ಚು ಅಡರಿದ ಕಾಡ ಗಿಡಕ್ಕೆ ಮಳೆ ಸುರಿದಂತೆ ದಶರಥ ಚೇತರಿಸಿಕೊಂಡು ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಮರಳಿದ. ರಾಜಮಾರ್ಗದ ಬದಿಯ ಮನೆಗಳ ಕಿಡಕಿಗಳಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಸೀತೆಯನ್ನು ನೋಡುವ ಕುತೂಹಲ ಪೌರಾಂಗನೆಯರಿಗೆ, ಕಿಡಕಿಯ ತುಂಬ ಕನ್ನೈದಿಲೆಯ ರಾಶಿರಾಶಿ!

ಶೌರ್ಯ ಕರುಣೆಗಳ ಸಮ್ಮಿಶ್ರಣ ರಾಮ. ಈ ಸಮತೋಲ ಕಾಳಿದಾಸನಿಗೆ, ಅಂತೆಯೇ ಭವಭೂತಿಗೆ ಇಷ್ಟ. ಪರಶುರಾಮನಲ್ಲಿ ಎಣೆಯಿಲ್ಲದ ಶೌರ್ಯವಿದ್ದರೂ ನಿಷ್ಕರುಣೆಯಿಂದಾಗಿ ಅದು ಮೌಲ್ಯವೆನಿಸದೆ ಹೋಯಿತು. ಕಥಾ ಸಂಕ್ಷೇಪದಲ್ಲೂ ರಾಮಪರಶುರಾಮ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಬ್ಬರೂ ಮಹಾಕವಿಗಳು. ಭವಭೂತಿ

‘ಮಹಾವೀರಚರಿತ’ದಲ್ಲಿ ನಾಟಕವಾಗಿಸಿದರೆ, ನಾಟಕ ಪ್ರತಿಭೆಯ ಕಾಳಿದಾಸ ರಘುವಂಶ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಜ್ವಲವಾಗಿ ನಾಟಕೀಯವಾಗಿಸಿದ್ದಾನೆ.

**ರಾವಣವಧ :**

ದಶರಥನಿಗೆ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಚಿಂತಿಸುವ ಕಾಲ ಸನ್ನಿಹಿತವಾಯ್ತು. ಇಷ್ಟು ಕಾಲ ಇಂದ್ರಿಯ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ, ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತವನ್ನೂ ಆತ ಅನುಭವಿಸಿದ್ದ. ರಾತ್ರಿಯೆಲ್ಲ ಉರಿಯುವ ಎಣ್ಣೆದೀಪಕ್ಕೆ ಇನ್ನೇನು ಆರಿಹೋಗುವ ಬೆಳಗಿನ ಜಾವದ ಜ್ವಾಲೆಯಂತಾದ ಆತ. ಆತನ ಕಿವಿಯ ಬಳಿಯೊ ಕೂದಲು ಹಣ್ಣಾಗುವ ನೆಪದಲ್ಲಿ ಮುಪ್ಪು ಅಡರತೊಡಗಿತು. ಕೈಕೇಯಿಯ ಭಯದಿಂದ ಅದು ಕಿವಿಯಲ್ಲಿ ‘ರಾಮನಿಗೆ ರಾಜ್ಯ ಒಪ್ಪಿಸಿಬಿಡೋ’ ಎಂದು ಪಿಸುಗುಟ್ಟಿದಂತಿತ್ತು. ಕಾಲುವೆಯ ಬಳಿಯ ಒಂದೊಂದು ಮರವೂ ನೀರುಂಡಂತೆ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಪಟ್ಟಣಿಗನೂ ರಾಮನ ಏಳಿಗೆಯ ಸುದ್ದಿ ಕೇಳಿ ಆಹ್ಲಾದಗೊಂಡರು. ಕಠಿಣ ನಿರ್ಧಾರದ ಕೈಕೇಯಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದ ಒಂದೊಂದು ಸಾಮಗ್ರಿಯನ್ನೂ ರಾಜನ, ಕಣ್ಣೀರಿನಿಂದ ಕೆಡಿಸಿಬಿಟ್ಟಳು. ಮಳೆ ಬಿದ್ದಾಗ ನೆಲದ ಬಿಲದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ ಜೋಡಿ ಹಾವು ಹೊರಬಂದಂತೆ, ಹಿಂದೆ ಆಕೆಗೆ ಕೊಟ್ಟ ಎರಡು ವರಗಳನ್ನು ಈಗ ಹೊರತೆಗೆದಳು. ಅವುಗಳಲ್ಲೊಂದು ವರದಿಂದ ರಾಮನನ್ನು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕಾಡಿಗಟ್ಟಿದಳು. ಎರಡನೆಯ ವರದಿಂದ ಮಗನಿಗೆ ಸಂಪದವನ್ನು ಬಯಸಿದಳು. ಆದರೆ ಅದಕ್ಕೆ ವೈಧವ್ಯವೇ ಫಲವಾಯ್ತು! ರಾಮ ಮೊದಲು ಅಳುಕುತ್ತಲೇ ತಂದೆಯಿಂದ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡಿದ್ದ. ವನಕ್ಕೆ ಹೋಗು ಎನ್ನುವ ಆಜ್ಞೆಯನ್ನು ಈಗ ಸಂತಸದಿಂದಲೇ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ. ಪೀತಾಂಬರವನ್ನುಟ್ಟಾಗಲೂ, ನಾರುಡೆಯನ್ನು ತೊಟ್ಟಾಗಲೂ ಆತನ ಮುಖದ ಕಳೆ ಒಂದೇ ತೆರನಾಗಿತ್ತು! ಜನಕ್ಕೆಲ್ಲ ಆಶ್ಚರ್ಯ. ತಂದೆಯ ಸತ್ಯ ಕೆಡದಂತೆ ಆತ ಸೀತೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಂದಿಗೆ ದಂಡಕಾರಣ್ಯವನ್ನು ಹೊಕ್ಕ- ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರ ಮನಸ್ಸನ್ನೂ ಕೂಡ! ದಶರಥನಿಗೋ ಅಗಲಿಕೆಯ ಶೋಕ ತನಗೊದಗಿದ ಶಾಪದ ಕನವರಿಕೆ. ಅದಕ್ಕೆ ಮರಣವೇ ಶರಣೆಂದುಕೊಂಡ. ರಾಜ್ಯ ಅನಾಯಕ! ಅನಾಥ ಪ್ರಜೆಗಳು ಸೋದರ ಮಾನವ ಮನೆಯಲಿ ನೆಲಸಿದ ಭರತನನ್ನು ಗುಟ್ಟು ಬಿಡದೆ ಮನವೊಲಿಸಿ ಮಂತ್ರಿಯ ಮೂಲಕ ಕರೆಸಿಕೊಂಡರು. ತಾಯಿಯಿಂದಾಗಿ ತಂದೆಗೆ ಸಾವು ಒದಗಿಬಂತೆಂದು ತಿಳಿದು, ಭರತನು ಆಕೆಯನ್ನಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ಆಕೆ ಒದಗಿಸಿಕೊಟ್ಟ ಸಂಪತ್ತನ್ನೂ ಕಣ್ಣೆತ್ತಿ ನೋಡಲೇ ಇಲ್ಲ. ಸೈನ್ಯದೊಂದಿಗೆ ರಾಮನನ್ನು ಹುಡುಕಿ ಹೊರಟ. ವನವಾಸಿಗಳು ತೋರಿದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಗಿದ. ಮರದಡಿಯಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಂದಿಗೆ ನಿಂತ ರಾಮನನ್ನು ಕಂಡು ಬಿಕ್ಕಿ ಅತ್ತ. ಚಿತ್ರಕೂಟದಲ್ಲಿದ್ದ ರಾಮನಿಗೆ ತಂದೆಯ ಮರಣವನ್ನರುಹಿದ. ತಾನು ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳದ ರಾಜ್ಯಸಂಪತ್ತನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿಕೋ ಎಂದು ಬೇಡಿದ. ನೀನು ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳದಿದ್ದರೆ, ಅಣ್ಣನಿಗೆ ಮದುವೆಯಾಗದೆ ತಮ್ಮನಿಗೆ ಮದುವೆಯಾದಂತೆ ತನ್ನ ಸ್ಥಿತಿ ಎಂದು ಅಂಗಲಾಚಿದ. ರಾಮನನ್ನು ತಂದೆಯ ಆದೇಶದಿಂದ ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲಾಗದೆಂದು ಅರಿವಾದಾಗ, ರಾಜ್ಯಾಧಿದೇವತೆಯನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಆತನ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ಕೊಡೆಂದು ಬೇಡಿಕೊಂಡ. ರಾಮನು ಹಾಗೇ ಆಗಲೆಂದು ಆತನನ್ನು ಬೀಳ್ಕೊಟ್ಟ. ಭರತ ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ನೆಲಸಿದ; ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಅಡವಿಟ್ಟ ನಿಧಿಯಂತೆ ಕಾಪಾಡಿಕೊಂಡ. ಅಧಿಕಾರಕ್ಕೆ ಆಸೆ ಪಡದೆ, ಅಣ್ಣನಲ್ಲಿ ತೋರಿದ ಭಕ್ತಿ ತಾಯಿ ಮಾಡಿದ ಪಾಪಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತವೋ ಎನ್ನುವಂತಿತ್ತು. ರಾಮನೂ ವನದಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಾದ ಆಹಾರವನ್ನು ಸೇವಿಸುತ್ತ ಸೀತಾಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಂದಿಗೆ ಶಾಂತನಾಗಿ ಅಲ್ಲೇ ನೆಲಸಿದ್ದ. ಇಕ್ಷ್ವಾಕುಕುಲದ ವಯಸ್ಸಾದ ರಾಜರು ಆಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ವಾನಪ್ರಸ್ಥ ರಾಮನಿಗೆ ತಾರುಣ್ಯದಲ್ಲೇ ಒದಗಿಬಂದಿತ್ತು. ಒಂದು ದಿನ ರಾಮನು ಮರದಡಿಯ ನೆಳಲಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ತಲೆಯಿಟ್ಟು ವಿಶ್ರಮಿಸಿದ ಹೊತ್ತು ಇಂದ್ರನ ಮಗ ಕಾಗೆಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಬಂದು ಕಾಲುಗುರಿನಿಂದ ಸೀತೆಯ ಎದೆಯನ್ನು ತರಚಿದ. ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಿದಳು. ರಾಮನು ದರ್ಭೆಯನ್ನೇ ಮಂತ್ರಿಸಿ ಅಸ್ತ್ರ ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡಿದ. ಕಾಗೆ ಅದಕ್ಕೆ ಒಂದು ಕಣ್ಣನ್ನು ಬಲಿಕೊಡಬೇಕಾಯಿತು. ಚಿತ್ರಕೂಟ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹತ್ತಿರವಿದ್ದುದರಿಂದ ಭರತನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಬಂದಾನೆಂದು ರಾಮ ಉತ್ಸಾಹಿ ಜಿಂಕೆಗಳ ಚಿತ್ರಕೂಟವನ್ನು ತೊರೆದು

ಹೋದನು. ಋಷ್ಯಾಶ್ರಮಗಳಲ್ಲಿ ಅತಿಥಿ ಸತ್ಕಾರ ಪಡೆಯುತ್ತ ದಕ್ಷಿಣಕ್ಕೆ ಸಾಗಿದ. ಸೂರ್ಯನೂ ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ದಕ್ಷಿಣ ದಿಕ್ಕಿನತ್ತ ಚಲಿಸುವನಷ್ಟೆ. ಅನಸೂಯೆಯು ಸೀತೆಗೆ ಪರಿಮಳದ ಅಂಗರಾಗವನ್ನು ನೀಡಿದಳು. ಅದರ ಸುರಭಿಗೆ ಕಾಡ ಹೂವಿಗೆ ಮುತ್ತಿದ ದುಂಬಿಗಳೆಲ್ಲ ಮೇಲೆದ್ದವು. ಸಂಜೆಯ ಮೋಡದಂತೆ ಕಡುಕಂದು ಬಣ್ಣದ ವಿರಾಧನೆಂಬ ರಕ್ಕಸನು, ಚಂದ್ರನಿಗೆ ರಾಹು ಅಡ್ಡಬಂದಂತೆ ರಾಮನನ್ನು ಅಡ್ಡಗಟ್ಟಿದನು. ಶ್ರಾವಣ-ಭಾದ್ರಪದ ಮಾಸಗಳ ನಡುವೆ ಮಳೆಯನ್ನು ಅನಾವೃಷ್ಟಿ ಅಪಹರಿಸಿದಂತೆ, ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ನುಡವೆ ಇರುವ ಸೀತೆಯನ್ನು ಆ ರಕ್ಕಸ ಹೊತ್ತೊಯ್ದನು. ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಆತನನ್ನು ಕೊಂದರು. ಆತನಿದ್ದೆಡೆಯೆಲ್ಲ ದುರ್ಗಂಧ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಆತನನ್ನು ನೆಲದಲ್ಲಿ ಹೂಳಿದರು. ಆ ಬಳಿಕ ಅಗಸ್ತ್ಯರ ಆದೇಶದಂತೆ ಅವರು ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ವಿನಯದಿಂದ ವಾಸಿಸಿದರು. ಅಗಸ್ತ್ಯರ ಆದೇಶಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ವಿಂಧ್ಯಪರ್ವತವು ಬಾಗಿ ಮೂಲಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತಂತೆ. ಬಿಸಿಲ ಬೇಗೆಗೆ ಬಳಲಿದ ಹೆಣ್ಣು ಹಾವು ಮಲಯ ಚಂದನವನ್ನು ಬಳಿಸಾರಿದಂತೆ ಕಾಮಜ್ವರ ಪೀಡಿತಳಾದ ರಾವಣಾನುಜೆ ರಾಮನ ಬಳಿ ಬಂದಳು. ತನ್ನ ಕುಲಗೋತ್ರಗಳ ಹಿರಿಮೆಯನ್ನು ಹೊಗಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತ ಸೀತೆಯ ಎದುರಲ್ಲೇ ರಾಮನನ್ನು ವರಿಸಿದಳು. "ಹುಡುಗಿ! ನನಗೆ ಹೆಂಡತಿಯಿದ್ದಾಳೆ. ನನ್ನ ತಮ್ಮನನ್ನು ಸೇರು" ಎಂದು ರಾಮನು ಆ ಕಾಮುಕಿಗೆ ನುಡಿದ. ಮೊದಲು ಅಣ್ಣನಿದ್ದಲ್ಲಿಗೆ ಹೋದುದರಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೂ ಒಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲಾರೆ ಎಂದನು. ಮತ್ತೆ ರಾಮನೆಡೆಗೇ ಬಂದಳು. ಹುಚ್ಚು ಪ್ರವಾಹ ನದಿಯ ಎರಡೂ ದಡಗಳಿಗೆ ಎಡತಾಕುವುದಿಲ್ಲವೇ! ಕ್ಷಣ ಕಾಲ ಸೌಮ್ಯಳಾಗಿದ್ದ ಶೂರ್ಪಣಖಿಯನ್ನು ಸೀತೆಯ ನಗು ಕೆರಳಿಸಿತು- ಗಾಳಿ ಬೀಸದೆ ನಿಂತ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಬೆಳದಿಂಗಳು ಉಕ್ಕೇರಿಸಿದಂತೆ. "ನಿನ್ನ ನಗುವಿನ ಫಲವನ್ನು ಇಷ್ಟರಲ್ಲೇ ಅನುಭವಿಸುವೆ. ಹುಲ್ಲೆ ಹುಲಿಯನ್ನು ಕೆಣಕಿದೆ." ಹೀಗೆ ಹೇಳಿ ತನ್ನ ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತೋರಿದಳು. ಮಂಜುಳವಾದ ಕೋಗಿಲೆಯ ಕೂಜನ ಈಗ ನರಿ ಊಳಿಡುತ್ತಿರುವಂತೆ ಅನಿಸಿತು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ. ಮೊದಲೇ ವಿಕಾರ ವೇಷದ ಆಕೆಯ ಕಿವಿ ಮೂಗುಗಳನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿ ಮತ್ತಷ್ಟು ವಿಕಾರ ಮಾಡಿದ. ಮೊರದಗಲದ ಡೊಂಕು ಉಗುರು ಆಕೆಯದು. ಆಕೆ ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ನೆಗೆದು ಹುಳು ಕೊರೆದ ಬಿದಿರಿನಂತೆ ಕೀರಲು ಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಹೆದರಿಸಿ ಹೊರಟುಹೋದಳು. ಜನಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಖರಾದಿಗಳಿಗೆ, ಇದು ರಾಕ್ಷಸರಿಗಾದ ಅವಮಾನವೆಂದು ದೂರಿತ್ತಳು. ಮುಖದ ಅಂಗಗಳು ತರಿದು ಹೋದ ಆಕೆಯನ್ನೇ ಮುಂದಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಆ ರಾಕ್ಷಸರು ರಾಮನ ಮೇಲೆರಗಿದರು. ಅದೇ ಅವರಿಗೆ ಅಮಂಗಲವಾಯ್ತು. ಸೀತೆಯನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ರಾಮ ರಾಕ್ಷಸರಿಗೆದುರಾದ. ಸಾವಿರ ಸಾವಿರ ರಾಕ್ಷಸರು; ರಾಮ ಒಬ್ಬನೇ. ಅವನ ಬಿಲ್ವಿದ್ಯೆಯ ಕೈಚಳಕ ಎಷ್ಟಿತ್ತೆಂದರೆ, ರಾಕ್ಷಸರಿಗೆ ಸಾವಿರ ಸಾವಿರ ರಾಮರಿದ್ದಂತೆನಿಸಿತು. ತನ್ನಲ್ಲಿ ದೋಷವನ್ನು ಎಂದೂ ಸಹಿಸದ ರಾಮ, ತನ್ನಲ್ಲಿ ಕಂಡ ದೋಷದಂತೆ ದೂಷಣನನ್ನು ದೂರೀಕರಿಸಿದ. ಖರ ತ್ರಿಶಿರಸರನ್ನು ಕೊಂದ. ಹರಿತವಾದ ಬಾಣಗಳಿಂದ ಅವರ ಆಯುಸ್ಸನ್ನು ಹೀರಿದ; ಬಾಣಗಳು ಅವರ ರಕ್ತ ಹೀರಿದವು. ಆ ಪ್ರದೇಶವೆಲ್ಲ ತಲೆಗಳಿಲ್ಲದ ಮುಂಡಗಳಿಂದ ತುಂಬಿಹೋಯಿತು. ಹದ್ದುಗಳು ಮುತ್ತಿದವು. ಕೊನೆಗೆ ರಾವಣನಿಗೆ ಕೆಟ್ಟ ಸುದ್ದಿಯನ್ನು ಕೊಡಲಿಕ್ಕಾಗಿ ಶೂರ್ಪಣಖಿಯೊಬ್ಬಳೇ ಬದುಕಿ ಉಳಿದಳು. ಒಂದೆಡೆ ತಂಗಿಯ ಅಂಗಚ್ಛೇದ; ಮತ್ತೊಂದೆಡೆ ಬಂಧುಗಳ ಮಸಣ. ರಾವಣನಿಗೆ ಈ ರಾಮ ತನ್ನ ಹತ್ತೂ ತಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಕಾಲಿಟ್ಟಂತೆನಿಸಿತು. ಮಾರೀಚನು ಮೃಗರೂಪಿಯಾಗಿ ಬಂದು ಮೋಸಗೊಳಿಸಿದ; ಜಟಾಯು ಕ್ಷಣ ತಡೆಯಿತು. ಆದರೆ ಇದನ್ನು ಲೆಕ್ಕಿಸದೆ ಕತ್ತರಿಸಿ ಬಿದ್ದ ಜಟಾಯಿವಿಗೆ ಇನ್ನೇನು ಪ್ರಾಣ ಹಾರಿಹೋಗುವ ಸ್ಥಿತಿ ಒದಗಿದ್ದನ್ನು ಕಂಡರು. ಮೈಥಿಲಿಯನ್ನು ರಾವಣ ಹೊತ್ತೊಯ್ಯುತ್ತಿರುವಾಗ ತಾನು ಹೋರಾಡಿ ಮೈಯೆಲ್ಲ ಗಾಯಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದನ್ನು ಹೇಳಿ ಜಟಾಯು ಪ್ರಾಣಬಿಟ್ಟ. ಆತ ದಶರಥನ ಮಿತ್ರ. ರಾಮನಿಗೆ ತಂದೆಯ ಸಾವು ಮರುಕಳಿಸಿದಂತೆನಿಸಿತು. ತಂದೆಯಂತೆಯೇ ಆತನಿಗೆ ಊರ್ಧ್ವ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದನು. ಕಬಂಧನ ವಧೆಯಿಂದ ಆತನ ಶಾಪ ವಿಮೋಚನೆಯಾಯ್ತು. 'ಸುಗ್ರೀವ ನೀನು ಸಮಾನದುಃಖಿಗಳು; ಆತನಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗು' ಎಂದು ಆತ ಹೇಳಿದ. ವಾಲಿಯನ್ನು ಕೊಂದು ಸುಗ್ರೀವನನ್ನು ರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ. ಧಾತುವಿಗೆ

ಆದೇಶ ಆದಂತೆ. (ಇದು ವ್ಯಾಕರಣದ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ. ಅಸ್‌ಧಾತುವಿಗೆ 'ಭೂ' ಆದೇಶವಾಗುತ್ತದೆ. ಅಸ್ತೇರ್ಭೂಃ ಎನ್ನುವುದು ನಿಯಮ). ವೈದೇಹಿಯನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಸುಗ್ರೀವ ಕಪಿಗಳನ್ನು ಅಟ್ಟಿದ. ವಿರಹಾತುರನಾದ ರಾಮನ ಮನೋರಥದಂತೆ ಅವರು ನಾನಾ ದಿಕ್ಕುಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿದರು. ಸಂಪಾತಿಯಿಂದ ಆಕೆಯ ಸುಳಿವು ಸಿಕ್ಕಮೇಲೆ, ಮಮಕಾರ ತೊರೆದವನು ಸಂಸಾರವನ್ನು ದಾಟಿದಂತೆ ಮಾರುತಿಯು ಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟಿಹೋದನು. ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಹುಡುಕುತ್ತಿರುವಾಗ ವಿಷದ ಬಳ್ಳಿಗಳು ಸುತ್ತುವರಿದ ಸಂಜೀವಿನಿಯಂತೆ ರಾಕ್ಷಿಸಿಯರು ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಿದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಂಡನು. ಅವಳಿಗೆ ಗಂಡನ ಅಭಿಜ್ಞಾನವಾದ ಉಂಗುರವನ್ನು ಕೊಟ್ಟನು. ತಣ್ಣನೆಯ ಆನಂದಾಶ್ರುವಿನಿಂದ ಆಕೆ ಅದನ್ನು ಸ್ವಾಗತಿಸಿದಂತೆ ತೋರಿತು. ಆ ಕಪಿ ರಾಮನ ಸಂದೇಶವನ್ನರುಹಿ ಸೀತೆಗೆ ನಿರಾಳ ಉಂಟುಮಾಡಿದ. ಅಕ್ಷಯನನ್ನು ಕೊಂದ. ಕ್ಷಣಕಾಲ ವೈರಿಯ ಬಂಧನಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ ಲಂಕೆಗೇ ಬೆಂಕಿಯಿಟ್ಟ. ಸೀತೆಯ ಹೃದಯವೇ ಮೈವೆತ್ತು ಬಂದಂತಿದ್ದ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾನ ರತ್ನವನ್ನು ತಂದು ರಾಮನಿಗೆ ತೋರಿದನು. ಅದನ್ನು ಎದೆಯ ಮೇಲಿಟ್ಟು ರಾಮನು ತುಸು ಹೊತ್ತು ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿದನು. ಅವನಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನೇ ಆಲಂಗಿಸಿಕೊಂಡಷ್ಟು ನಿರಾಳವೆನಿಸಿತು. ನಲ್ಲೆಯ ಸುದ್ದಿ ತಿಳಿದೊಡನೆಯೇ ರಾಮನಿಗೆ ಅವಳನ್ನು ಕಾಣಬೇಕೆಂಬ ಉತ್ಸುಕತೆ ಉಂಟಾಯಿತು. ಆ ಮಹಾಸಾಗರವೂ ಆತನನಿಗೆ ಕೊತ್ತಳದಂತೆ ಅಡ್ಡಿ ಎನಿಸಲಿಲ್ಲ. ನೆಲದಲ್ಲಷ್ಟೆ ಅಲ್ಲದೆ ಆಕಾಶದಲ್ಲೂ ನೆಗೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಕಪಿಸೈನ್ಯದೊಂದಿಗೆ ರಾಮನು ವೈರಿನಾಶಕ್ಕೆಂದು ಹೊರಟನು. ಕಡಲ ದಡದಲ್ಲಿ ವಿಭೀಷಣನು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡನು. ರಾಕ್ಷಸ ರಾಜ್ಯಲಕ್ಷ್ಮಿಯು ಅವನ ಮೇಲಿನ ಸ್ನೇಹದಿಂದ ಅವನನ್ನು ಪ್ರಚೋದಿಸಿರಬೇಕು. ರಾಘವನು ರಾಕ್ಷಸರಾಜ್ಯವನ್ನು ಕೊಡಿಸುವುದಾಗಿ ಆತನಿಗೆ ಮಾತುಕೊಟ್ಟನು. ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಿದ ರಾಜನೀತಿ ಮುಂದೆ ಫಲಿಸುತ್ತದೆ. ಮಹಾವಿಷ್ಣುವಿನ ಶಯನವಾದ ಆದಿಶೇಷನು ಪಾತಳದಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದು ಬಂದಂತಿದ್ದ ಸೇತುವೆಯನ್ನು ರಾಮ ಕಪಿಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಿಸಿದನು. ಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟಿ ಕೆಂಪು ಮೂತಿಯ ಕಪಿಗಳು ಲಂಕೆಯನ್ನು ಇನ್ನೊಂದು ಚಿನ್ನದ ಕೋಟೆಯೋ ಎಂಬಂತೆ ಸುತ್ತುಗಟ್ಟಿದರು. ಕಪಿಗಳಿಗೂ ರಾಕ್ಷಸರಿಗೂ ಭೀಕರ ಯುದ್ಧ ಆರಂಭವಾಯ್ತು. ರಾಮ-ರಾವಣರ ಜಯಘೋಷ ಮುಗಿಲು ಮುಟ್ಟಿತು. ಮರಗಳನ್ನೇ ಎತ್ತಿ ಬಡಿದು ಹೆಬ್ಬಾಗಿಲನ್ನು ಒಡೆದರು. ಮುದ್ಗರಗಳನ್ನು ಕಲ್ಲಿನಿಂದ ಜಜ್ಜಿ ಪುಡಿಮಾಡಿದರು. ಶಸ್ತ್ರಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಚೂಪಾದ ಉಗುರುಗಳಿಂದ ಚಿವುಟಿದರು. ಶಿಖರಗಳನ್ನೆತ್ತಿ ಆನೆಗಳನ್ನು ಬಡಿದರು. ಕತ್ತರಿಸಿದ ರಾಮನ ತಲೆಯನ್ನು ಕಂಡ ಸೀತೆಗೆ ಬವಳಿ ಬಂದಿತು. ಅದು ಕೇವಲ ಮಾಯೆಯಂದು ಹೇಳಿ ತ್ರಿಜಟೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದಳು. ಇಂದ್ರಜಿತು ನಾಗಪಾಶದಿಂದ ಕ್ಷಣಕಾಲ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ನಿದ್ದೆಗೆ ದೂಡಿದನು. ಆ ಬಳಿಕ ರಾವಣನು ಶಕ್ತ್ಯಾಯುಧದಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಎದೆಯೊಡೆದನು. ರಾಮನಿಗೆ ಆಯುಧ ಬಡಿಯದಿದ್ದರೂ ಶೋಕದಿಂದ ಎದೆಯೊಡೆಯಿತು. ಮಾರುತಿ ಸಂಜೀವಿನಿಯನ್ನು ತಂದು ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನು ಬದುಕಿಸಿದನು. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಶರತ್ಕಾಲದಂತೆ ಮೇಘನಾದನನ್ನೂ ಅವನ ಬಿಲ್ಲನ್ನೂ ನಿಶ್ಶೇಷ ಮಾಡಿದ. ಶರತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮೋಡದ ಗುಡುಗೂ ಮಳೆಬಿಲ್ಲೂ ನಿಶ್ಶೇಷವಾಗುತ್ತದಷ್ಟೆ! ಕುಂಭಕರ್ಣನಿಗೂ ಅವನ ತಂಗಿಯದೇ ಗತಿ. (ಕರ್ಣನಾಸಾಭೇದ) ಚಾಣ ಬಡಿದ ಕೆಂಪು ಶಿಲೆಯಂತೆ ಕಾಣುತ್ತಿದ್ದ ಆತ ಬೆಟ್ಟದಂತೆ ರಾಮನನ್ನ ಅಡ್ಡಗಟ್ಟಿದ. ನಿದ್ದೆಯನ್ನು ತುಂಬ ಇಷ್ಟಪಡುವ ನಿನ್ನನ್ನು ನಿನ್ನಣ್ಣ ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಅಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಬ್ಬಿಸಿಬಿಟ್ಟನಲ್ಲವೇ ಎನ್ನುವಂತೆ ರಾಮಬಾಣ ಅವನನ್ನು ಚಿರನಿದ್ರೆಗೆ ದೂಡಿತು. ವಾನರ ಕೋಟಿಯಿಂದ ಎದ್ದ ದೂಳು ರಕ್ತದ ಮಡುವಿನಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದಂತೆ ರಾಕ್ಷಸರೆಲ್ಲ ರಕ್ತದ ಮಡುವಿಗೆ ಬಿದ್ದರು. ಇಂದು ಈ ಜಾಗ ರಾವಣನಿಲ್ಲದ್ದಾಗಬೇಕು, ಇಲ್ಲವೇ ರಾಮನಿಲ್ಲದ್ದಾಗಬೇಕು ಎಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದ ರಾವಣ ಸ್ವಯಂ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಧುಮುಕಿದನು. ರಾಮ ಕಾಲಾಳು, ರಾವಣ ರಥಿಕ. ಇದನ್ನು ಕಂಡು ಇಂದ್ರ ಕಂದುಬಣ್ಣದ ಕುದುರೆಗಳ ರಥವನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ದೇವಗಂಗೆಯ ತೆರೆಗಳಿಂದೆದ್ದ ಗಾಳಿಯಿಂದ ರಥದ ಬಾವುಟ ಹಾರಾಡುತ್ತಿತ್ತು. ಮಾತಲಿಯ ಕೈಹಿಡಿದು ರಾಮ ಜೈತ್ರ ರಥವನ್ನೇರಿದ. ಮಾತಲಿಯು ಇಂದ್ರನ ಕವಚವನ್ನೇ ರಾಮನಿಗೆ ತೊಡಿಸಿದನು. ಅದಕ್ಕೆ ಬಡಿಯುವ ಬಾಣಗಳೆಲ್ಲ ಕಮಲದ

ಎಲೆಯಂತೆ ಮೃದುವಾಗಿ ಬಿಡುತ್ತಿದ್ದವು. ಬಹಳ ಕಾಲದ ನಂತರ ಪರಸ್ಪರ ಕಂಡು ಕಾದಾಡುವ ವಿಕ್ರಮಾವಕಾಶ! ರಾಮರಾವಣ ಯುದ್ಧ ಇಂತು ಸಫಲವಾಯ್ತು. ರಾವಣ ಒಬ್ಬನೇ. ಬಂಧು-ಬಾಂಧವರೆಲ್ಲ ನಾಶವಾಗಿದ್ದರು. ಆದರೆ ಹಲವು ತೋಳು, ತಲೆ, ಕೈಕಾಲ್ಗಳು. ಅದರಿಂದಾಗಿ ಅವನೇ ಅನೇಕರಂತೆ ಕಂಡು ತಾಯಿಯ ಕುಲವನ್ನು ನೆನಪಿಸಿದ. (ರಾವಣನ ತಾಯಿ ರಾಕ್ಷಸ ಕುಲದವಳು, ತಂದೆ ಋಷಿಕುಲದವನು). ದಿಕ್ಪಾಲಕರನ್ನು ಗೆದ್ದವನು. ತನ್ನ ತಲೆಯನ್ನೇ ತರಿದು ಶಿವನನ್ನು ಅರ್ಚಿಸಿದವನು, ಕೈಲಾಸವನ್ನೇ ಎತ್ತಿ ತೂಗಿದವನು ಈ ರಾವಣ. ಈಗ ತನಗೆ ಸರಿಸಾಟಿ ಎಂದುಕೊಂಡನಂತೆ ರಾಮ. ಸೀತಾಸಂಗಮವನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಶಕುನವಾಗಿ ರಾಮನ ಬಲಭುಜ ಅದುರಿತಂತೆ. ಇದರಿಂದ ಮತ್ತುಷ್ಟು ಕೋಪಗೊಂಡ ರಾವಣನು ಅಲ್ಲಿಗೇ ಗುರಿಯಿಟ್ಟು ಬಾಣ ಹೊಡೆದ. ರಾಮನು ಎಸೆದ ಬಾಣ ರಾವಣನ ಎದೆಗೆ ಬಡಿದು, ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಮರಳಿ ಬರುವನೆಂಬ ಪ್ರಿಯವಾರ್ತೆಯನ್ನು ಅರುಹುತ್ತಿದೆಯೋ ಎಂಬಂತೆ ನೆಲವನ್ನು ಹೊಕ್ಕಿತು. ಮಾತಿಗೆ ಮಾತು, ಪೆಟ್ಟಿಗೆ ಪೆಟ್ಟು, ವಾದಪಂಡಿತರಂತೆ ಗೆಲುವಿಗಾಗಿ ಸೆಣಸಾಟ. ಗೆಲವು ಇಬ್ಬರಿಗೂ ಇಲ್ಲ. ಒಮ್ಮೆ ಅವನು ಇನ್ನೊಮ್ಮೆ ಇವನು. ಮೇಲೆ ಆಗಸದಲ್ಲಿ ಸುರಾಸುರರು ಹೂಮಳೆಗರೆಯುತ್ತಿದ್ದರು. ಅದು ಸಹನೀಯವಾಗುತ್ತಿಲ್ಲವೋ ಎನ್ನುವಂತೆ ರಾಮ ರಾವಣರ ಬಾಣಗಳು ಅಂತರಿಕ್ಷದಲ್ಲಿ ತೂರಿದವು. ಯಮನ ಕೂಟಶಾಲ್ಮಲಿ (ಮುಳ್ಳುಕಂಬಿಗಳ ಮರ) ಆಯುಧದಂತಿದ್ದ ಶತಘ್ನಿ ಎನ್ನುವ ಲೋಹದ ಆಯುಧವನ್ನು ರಾವಣನು ಎಸೆದನು. ಅದು ತೇರನ್ನು ತಲುಪುವುದಕ್ಕೆ ಮುನ್ನವೇ ಅರ್ಧಚಂದ್ರಾಕೃತಿಯ ಬಾಣದಿಂದ ಅದನ್ನೂ ರಾಕ್ಷಸರ ಗೆಲುವಿನ ಆಸೆಯನ್ನೂ ಬಾಳೆಗಿಡದಂತೆ ತರಿದುಹಾಕಿದ. ಅದ್ವಿತೀಯ ಧನುರ್ಧಾರಿಯಾದ ರಾಮ ಪ್ರಿಯಾಶೋಕಶಲ್ಯಕ್ಕೆ ನಿವಾರಕ ಔಷಧಿಯೋ ಎಂಬಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಸಂಧಾನಮಾಡಿದನು. ಅದು ಆಗಸದಲ್ಲಿ ನೂರಾರು ಹೆಡೆ ಬಿಚ್ಚಿ ಹೆಡೆಗಳನ್ನು ಎತ್ತಿದ ಮಹೋರಗದಂತೆ ಪ್ರಜ್ವಲಿಸಿತು. ಆ ಮಂತ್ರಾಸ್ತ್ರವು ತಲೆ ಕತ್ತರಿಸಿದ ನೋವು ಅರಿವಿಗೆ ಬರದಷ್ಟು ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ರಾವಣನ ಸಾಲುತಲೆಗಳನ್ನು ತರಿದು ಹಾಕಿತು. ಇನ್ನೇನು ಅವನ ದೇಹ ನೆಲಕ್ಕೊರಗಬೇಕು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಅವನ ತಲೆಯಿಲ್ಲದ ರಕ್ತಸಿಕ್ತ ಕೊರಳುಗಳು ಅಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವಾಗಿ ಕಾಣುವ ಎಳೆಸೂರ್ಯನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬದಂತೆ ಕಂಡವು. ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಹೂಮಳೆಗರೆದರು. ರಾಮನ ಅಪ್ಪಣೆ ಪಡೆದು ಮಾತಲಿ ರಥದೊಂದಿಗೆ ಏರಿಹೋದನು. ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ಒಳಗಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ. ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಪಟ್ಟ ಕಟ್ಟಿದ. ಸೀತೆ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಸುಗ್ರೀವರೊಂದಿಗೆ, ತಾನೇ ತೋಳ್ಬಲದಿಂದ ಗೆದ್ದ ಪುಷ್ಪಕವನ್ನೇರಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯತ್ತ ಹೊರಟ. ಇಲ್ಲಿಯೂ ಕಥನಕ್ಕೆ ಪೋಷಕವಾದ ಅನುಷ್ಟುಪ್ ವೃತ್ತ. ಕಥೆ ಅತ್ಯಂತ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ. ಇಲ್ಲಿ ಭಾವವನ್ನು ಉದ್ದೀಪಿಸುವ ಸಾರ್ಥಕ ಉಪಮೆಗಳನ್ನು ಮೃದು ಕರ್ಕಶ ವರ್ಣ ವಿನ್ಯಾಸಗಳ ಸಮಾಸ ಗುಂಫನವನ್ನು ಪರಿಭಾವಿಸುವುದೇ ಸೊಗಸು.

### ದಂಡಕಾಪ್ರತ್ಯಾಗಮನ :

ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತ ಸಾಗರದ ಹಿರಿಮೆಯನ್ನು ರಾಮ ಸೀತೆಗೆ ಬಣ್ಣಿಸಿದ. "ಇದು ನನ್ನ ಪೂರ್ವಜ ಸಗರನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಸಾಗರ ಎಂದೇ ಖ್ಯಾತಿಪಡೆದಿದೆ. ಸೂರ್ಯಕಿರಣಗಳು ಈ ಕಡಲ ಒಡಲಲ್ಲಿ ಗರ್ಭಧರಿಸುತ್ತವೆ. ಲೋಕಕ್ಕೆ ಮಳೆ ಸುರಿಯುವುದಲ್ಲದೆ ಅಪಾರ ಸಮೃದ್ಧಿ ಇದರೊಳಗಡಗಿರುತ್ತದೆ. ಸಾಗರದ ನೀರು ಬಡಬಾಗ್ನಿಗೂ, ಆಹ್ಲಾದಕರ ಚಂದ್ರನಿಗೂ ಜನ್ಮಕೊಟ್ಟಿದೆ. ನಾನು ಕಟ್ಟಿಸಿದ ಸೇತುವೆ ಕಡಲನ್ನು ಇಬ್ಭಾಗ ಮಾಡಿದೆ – ಛಾಯಾಪಥ ಬೆಳಕನ್ನು ಇಬ್ಭಾಗ ಮಾಡಿದಂತೆ ಸೇತುವೆಗೆ ಅಪ್ಪಳಿಸುವ ತೆರೆಗಳ ನೊರೆಯ ರಾಶಿಯನ್ನು ನೋಡು." ಇಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಸಮುದ್ರದ ಕಾವ್ಯಮಯ ವರ್ಣನೆ ಇದೆ. ಮುಂದೆ ಕಾಡಿನ ವರ್ಣನೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ರಾಮ ಅನುಭವಿಸಿದ ವಿಯೋಗಯಾತನೆ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಮರ್ಮಸ್ಪರ್ಶಿಯಾಗಿದೆ. "ಮಳೆ ಬೀಳುವಾಗ ಜಲಾಶಯಗಳ ಪರಿಮಳ, ಮೊಗ್ಗು ಬಿಟ್ಟ ಕಾದಂಬ ವೃಕ್ಷಗಳು ಮನೋಜ್ಞವಾದ ಸೋಗೆಯ ನವಿಲುಗಳ ಕೇಕಾರವ ಮತ್ತು ನರ್ತನ

ಯಾವುದೂ ನೀನಿಲ್ಲದ ವೇಳೆ ನನಗೆ ಆಸ್ವಾದ್ಯವೂ ಆಗಲಿಲ್ಲ; ಸಹನೀಯವೂ ಆಗಲಿಲ್ಲ" ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ರಾಮ. ಮುಂದೆ ಆಶ್ರಮಗಳಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದು ಬರುವ ಹೋಮ-ಧೂಮ ನಮ್ಮ ಮನದ ರಜೋಗುಣವನ್ನು ಕಳೆಯುತ್ತದೆ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ರಾಮ. ಶಾತಕರ್ಣ, ಸುತೀಕ್ಷ್ಣ, ಶರಭಂಗ ಮುನಿಗಳ ಪರಿಚಯವಿದೆ. ತಾವು ಒಟ್ಟಿಗೆ ನಡೆದಾಡಿದ ಚಿತ್ರಕೂಟವನ್ನು, ಮಂದಾಕಿನಿಯನ್ನು ತೋರಿಸಿ ರಾಮ ಭಾವುಕನಾಗುತ್ತಾನೆ. ತಮ್ಮ ದಾಂಪತ್ಯ ಫಲಿಸಲೆಂದು ಬೇಡಿದ ವಟವೃಕ್ಷವನ್ನು ತೋರಿ ರಾಮ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ "ಸಣ್ಣ ಸಣ್ಣ ಕೆಂಪು ಹಣ್ಣುಗಳುಳ್ಳ ಈ ವಟವೃಕ್ಷ ಗರುಡ ಮಣಿಗಳ ರಾಶಿಯಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ." ಆಶ್ರಮದ ಯಜ್ಞವೇದಿಯ ಮೇಲಿದ್ದ ಮರಗಳೂ ಗಾಳಿ ಇಲ್ಲದಾದಾಗ ಧ್ಯಾನಸ್ಥ ಮುನಿಗಳಂತೆ ತೋರುತ್ತವಂತೆ. ಮುಂದೆ ಗಂಗಾ ಯಮುನಾ ಸಂಗಮದ ಪ್ರಯಾಗದ ವರ್ಣನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಭಾವ, ತುಂಬಿ ತುಳುಕಿದೆ. ಒಟ್ಟಲ್ಲಿ ಕಪ್ಪು ಹಾವುಗಳೊಂದಿಗೆ ಭಸ್ಮಲೇಪಿಸಿಕೊಂಡ ಈಶ್ವರ ತನುವಿನಂತೆ ಈ ಸಂಗಮ ಕವಿಗೆ ತೋರಿದೆ. ಮುಂದೆ ಆಪ್ತನಾದ ಗುಹನ ನೆನಪು; ಸರಯೂ ದರ್ಶನ. ತಂದೆ ದಶರಥ ತೊರೆದು ಹೋದ ಈ ಸರಯೂ ನದಿ ತನ್ನ ತಂಪಾದ ಕಣಗಳೊಂದಿಗೆ ಗಾಳಿ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಬೀಸಿಬಂದು ನನ್ನ ತಾಯಿಯಂತೆ ಆಲಂಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ ಎನ್ನುವ ರಾಮನ ಮಾತು ಕಾಳಿದಾಸನ ಪ್ರಕೃತಿಪ್ರೇಮಕ್ಕೆ ಇಟ್ಟ ಕಿರೀಟ.

**ಸೇಯಂ ಮದೀಯಾ ಜನನೀವ ತೇನ ಮಾನ್ಯೇನ ರಾಜ್ಞಾ**
**ಸರಯೂರ್ವಿಯುಕ್ತಾ ।**
**ದೂರೇ ವಸಂತಂ ಶಿಶಿರಾನಿಲೈರ್ಮಾಂ ತರಂಗಹಸ್ತೈರುಪಗೂಹತೀವ ॥**

ಹನುಮಂತ ನೀಡಿದ ಸುದ್ದಿ ಕೇಳಿ ಭರತ ಧಾವಿಸಿ ಬಂದ. ವಿಮಾನ ನೆಲಕ್ಕಿಳಿಯಿತು. ರಾಮ-ಭರತ ಸಮಾಗಮ ಭ್ರಾತೃಪ್ರೇಮದ ಚಿರಸ್ಮಾರಕ. ಈ ಸರ್ಗದ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಕಾಳಿದಾಸನ ಕಾವ್ಯಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ವಿಜೃಂಭಿಸಿದೆ. ಕಾಳಿದಾಸನ ಕಾವ್ಯ ನಿರ್ಮಾಣ ಕೌಶಲಕ್ಕೆ ಇದು ಸಾಕ್ಷಿ. ಮಾತು ಮಾತು ಕಾವ್ಯಮಯ.

### ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ

ಕಾಳಿದಾಸನನ್ನು ತುಂಬ ಕಾಡಿದ ಭಾಗ ಇದು. ಇಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯದ ರಸೋತ್ಕರ್ಷವೆಷ್ಟೋ ಅಷ್ಟೇ ವಿಚಾರ ವಿಮರ್ಶೆಯೂ ಬೆಸೆದುಕೊಂಡಿದೆ. ಒಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಬುದ್ಧಿ ಭಾವಗಳ ವಿದ್ಯುದಾಲಿಂಗನವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದಾಗಿದೆ. ರಾಜತ್ವ ಮತ್ತು ಮನುಷ್ಯತ್ವಗಳ ಅಂತರೀಕ್ಷಣೆ ಇಲ್ಲಿಯ ವಿಶೇಷತೆ. ಅದು ಪರ್ಯಾಯವಾಗಿ ಪರಿಪೂರ್ಣ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಕುರಿತಾಗಿಯೂ ಚಿಂತಿಸುತ್ತದೆ. ಒಂದು ವ್ಯಷ್ಟಿ ಅಥವಾ ವೈಯಕ್ತಿಕ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ, ಇನ್ನೊಂದು ಸಮಷ್ಟಿ ಅಥವಾ ಸಾಮಾಜಿಕ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ. ವ್ಯಷ್ಟಿ – ಸಮಷ್ಟಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಘರ್ಷ ಬರಬಾರದು. ಒಂದು ವೇಳೆ ಸಂಘರ್ಷ ಉಂಟಾದಾಗ ಯಾವುದು ಗೆಲ್ಲಬೇಕು? ಯಾವುದಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ಸಿಗಬೇಕು?

ಈ ಎಲ್ಲ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ಕಂಡುಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಕಾಳಿದಾಸನ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ. ವ್ಯಷ್ಟಿ-ಸಮಷ್ಟಿಗಳ ಸಮನ್ವಯ ಸಾಧಿಸುವುದೇ ಜೀವಿತದ ಪರಿ. ಅದು ಸಾಧ್ಯವಾಗದಿದ್ದಾಗ ವ್ಯಷ್ಟಿ ಹಿತಕ್ಕಿಂತ ಸಮಷ್ಟಿ ಹಿತವೇ ಮುಖ್ಯ. ವ್ಯಷ್ಟಿ ಹಿತವನ್ನು ಬಲಿ ಕೊಟ್ಟಾದರೂ ಸಮಷ್ಟಿ ಹಿತವನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಅದೇ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ಪರಿಪೂರ್ಣತೆ ಎಂಬುದೇ ಕಾಳಿದಾಸನ ದರ್ಶನವಿದ್ದಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ರಾಜನಾದವನು, ಆಡಳಿತಗಾರನಾದವನು, ಸಮಾಜ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತವನು ವ್ಯಷ್ಟಿ – ಸಮಷ್ಟಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಘರ್ಷ ಎದುರಾದಾಗ ಸಮಷ್ಟಿ ಹಿತವನ್ನೇ ಬೆಂಬಲಿಸಬೇಕೆಂಬುದು ಕಾಳಿದಾಸನ ಅಭಿಮತ. "ರಾಜಾ ಪ್ರಕೃತಿರಂಜನಾತ್" ಎಂದು ಕಾಳಿದಾಸನು 'ರಾಜ' ಶಬ್ದದ 'ಶಕ್ತಿ'ಯನ್ನು ಮೀರಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದ್ದಾನೆ. ದಿಲೀಪ ಒಂದು ಹಸುವನ್ನು ಕಾಪಾಡಲಿಕ್ಕಾಗಿ ತನ್ನನ್ನೇ ಬಲಿಕೊಡಲು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದ ಕಥೆ ರಘುವಂಶದ ಆರಂಭದಲ್ಲಿದೆ. ಸಿಂಹವು ಅಧಿಕಾರ, ಐಶ್ವರ್ಯ, ದೈಹಿಕ ವಿಲಾಸಗಳ ಪ್ರಲೋಭನೆಯನ್ನು ಒಡ್ಡಿದಾಗ ರಾಜನಾದ ದಿಲೀಪ ಕೊಡುವ ಉತ್ತರವನ್ನು ಗಮನಿಸಬೇಕು.

**ಕ್ಷತಾತ್ ಕಿಲ ತ್ರಾಯತ ಇತ್ಯುದಗ್ರಃ**
**ಕ್ಷತ್ರಸ್ಯ ಶಬ್ದಃ ಭುವನೇಷು ರೂಢಃ**
**ರಾಜ್ಯೇನ ಕಿಂ ತದ್ವಿಪರೀತವೃತ್ತೇಃ ........ (2–53)**

ಕ್ಷತ ಎಂದರೆ ನಾಶ, ಆಪತ್ತು. ಅದರಿಂದ ರಕ್ಷಿಸುವವನು ಕ್ಷತ್ರಿಯ. ಕ್ಷತ ತ್ರಾಣದಿಂದ ವಿಮುಖನಾದವನಿಗೆ ರಾಜ್ಯದಿಂದ ಏನು ಪ್ರಯೋಜನ? ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಅವನಿಂದ ಏನು ಪ್ರಯೋಜನ?

ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ (14 ನೆಯ ಸರ್ಗ)ವನ್ನು ನೋಡಬೇಕು. ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾಗಿ ರಚಿಸಿದ ಕಾಳಿದಾಸ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಮಾತು ಬೆಳೆಸುತ್ತಾನೆ. 87 ಶ್ಲೋಕಗಳುಳ್ಳ ಈ ಸರ್ಗದಲ್ಲಿ ಮೊದಲ 30 ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಪುನರಾಗಮನ ಮತ್ತು ರಾಮರಾಜ್ಯದ ವಿವರಗಳಿವೆ. ಮುಂದಿನ ಭಾಗ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ಕತೆಗೆ ಮೀಸಲು. ರಾಮನ ರಾಜ್ಯಭಾರ ವರ್ಣನೆ, ರಾಮನಿಗೆ ಪ್ರಜೆಗಳಲ್ಲಿದ್ದ ಪ್ರೀತಿ, ಕಾಳಜಿ, ಪ್ರಜಾರಕ್ಷಣ ತತ್ಪರತೆಗಳ ವಿವರಗಳು ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗಕ್ಕೆ ಹಿನ್ನೆಲೆಯನ್ನು ಒದಗಿಸಿಕೊಡುತ್ತವೆ; ಸೀತೆಗೆ ಒದಗಿದ ಅಪವಾದವನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ರಾಮ ಅನುಭವಿಸಿದ ಸಂಕಟ, ಒಳಗುದಿಗಳಿಗೆ ಪರಿವೇಶವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡುತ್ತವೆ.

**ತೇನಾರ್ಥವಾಂಲ್ಲೋಭಪರಾಙ್ಮುಖೇನ**
**ತೇನ ಘ್ನತಾ ವಿಘ್ನಭಯಂ ಕ್ರಿಯಾವಾನ್ ।**
**ತೇನಾಸ ಲೋಕಃ ಪಿತೃಮಾನ್ ವಿನೇತ್ರಾ**
**ತೇನೈವ ಶೋಕಾಪನುದೇವ ಪುತ್ರೀ (14–23) ॥**

ರಾಜನಾದ ರಾಮ ಲೋಭಿಯಲ್ಲದ್ದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳು ಶ್ರೀಮಂತರಾಗಿದ್ದರು. ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳನ್ನು ದೂರ ಮಾಡಿದ್ದರಿಂದ ಪ್ರಜೆಗಳು ಕಾರ್ಯತತ್ಪರರಾಗಿದ್ದರು. ಶಿಕ್ಷಣ–ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಆತ ಪ್ರಜೆಗಳ ತಂದೆಯ ಸ್ಥಾನ ಪಡೆದಿದ್ದ. ಪ್ರಜೆಗಳ ಶೋಕವನ್ನು ದೂರ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದುದರಿಂದ ಆತನ ಪ್ರಜೆಗಳ ಮಕ್ಕಳ ಸ್ಥಾನವನ್ನೂ ಆಕ್ರಮಿಸಿದ್ದ." ಮೇಲು ನೋಟಕ್ಕೆ ಈ ಪದ್ಯ ಆದರ್ಶಪರವೆನಿಸಿದರೂ ರಾಜ್ಯವ್ಯವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮ ಇಷ್ಟೊಂದು ಸಮಷ್ಟಿ ತತ್ಪರನಾದ್ದರಿಂದಲೇ ಸೀತೆಗೆ ಒದಗಿದ ಅಪವಾದವನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ವ್ಯಾಕುಲನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಪ್ರಜೆಗಳ ಮಾತನ್ನು ನಿರ್ಲಕ್ಷಿಸಬೇಕೆ? ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಬೇಕೆ? ಇಲ್ಲೇ ವ್ಯಷ್ಟಿ–ಸಮಷ್ಟಿಗಳಿಗೆ ಸಂಘರ್ಷ ಒದಗಿದ್ದು. ಪ್ರಜೆಗಳ ಮಾತನ್ನು ಅಲಕ್ಷಿಸಿದರೆ ಇಂದಿನ ಗುಸುಗುಸು ಕಿವಿಯಿಂದ ಕಿವಿಗೆ ಹಬ್ಬಿ ಬೆಳೆದು ಮುಂದೆ ಅರಾಜಕತೆಗೆ ಕಾರಣವಾದೀತು. ಜನರು ಯಾವಾಗಲೂ ಆಳುವವರ ಚಾರಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಗಮನಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲದೆ ತಾನು ಶುದ್ಧ ಚಾರಿತ್ರ್ಯದವನು, ನಿಸ್ವಾರ್ಥಿ ಎಂಬುದನ್ನು ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ರಾಜ ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಡಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಜ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ಜವಾಬ್ದಾರ. ಹಾಗಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಸಣ್ಣ ಸಂಗತಿ ಕೂಡ ಭಾರೀ ಅನರ್ಥದ ಅರಾಜಕತೆಗೆ ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ. "ನೀರ ಕೊಳದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಎಣ್ಣೆಯ ಹನಿಯಂತೆ ಆ ಅಪವಾದ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ದಿನದಿಂದ ದಿನಕ್ಕೆ ಕಿವಿಯಿಂದ ಕಿವಿಗೆ ಹಬ್ಬುತ್ತಲೇ ಹೋಗುತ್ತದೆ. ಕಂಬಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟಿದ ಆನೆಯಂತೆ ಈ ಕಳಂಕವನ್ನು ಸಹಿಸಲಾರೆ." ಎರಡೂ ಸಾರ್ಥಕ ಉಪಮೆಗಳು. ಸೀತೆ ಪಾಪರಹಿತಳೆಂಬುದು ರಾಮನಿಗೆ ಗೊತ್ತು. **'ಅವೈಮಿ ಚೈನಾಮನಘೇತಿ ಕಿಂತು, ಲೋಕಾಪವಾದೋ ಬಲವಾನ್ಮತೋ ಮೇ'** ಆದರೂ ಲೋಕಾಪವಾದ ಬಲವತ್ತರವಾದುದೆಂದು ರಾಮನ ಅಭಿಮತ. ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುವ ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಬಂದ. ರಾಜನಾಗಿ ಪ್ರಜಾರಂಜನೆಯನ್ನು ಸಾಧಿಸಿದ.

ಇದರಿಂದ ಸೀತೆಗೆ ಅನ್ಯಾಯವಾಗಲಿಲ್ಲವೇ? ಯಾರದೋ ಅಜ್ಞಾನದಿಂದಾಗಿ ಯಾರಿಗೋ ಶಿಕ್ಷೆ! ಬದುಕು, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಎಷ್ಟು ಕ್ರೂರ! ಜೀವನದ ವೈಚಿತ್ರ್ಯ ಇದು. ಸೀತೆಯ ಒಳತೋಟಿ, ಅಸಹನೀಯ ದುಃಖ, ಹತಾಶ ಸ್ಥಿತಿಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಕಾಳಿದಾಸ ತುಂಬ ಮರ್ಮಸ್ಪರ್ಶಿಯಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಪ್ರಕೃತಿಯ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ಕೊಡುವ ನೆವದಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸ ಮನುಷ್ಯನ ಸಣ್ಣತನಕ್ಕೆ ಕನ್ನಡಿ ಹಿಡಿದಿದ್ದಾನೆ. ಎಷ್ಟು ಧ್ವನಿಪೂರ್ಣ ಪದ್ಯ!

**ನೃತ್ಯಂ ಮಯೂರಾಃ ಕುಸುಮಾನಿ ವೃಕ್ಷಾಃ**
**ದರ್ಭಾನುಪಾತ್ತಾನ್ ವಿಜಹುರ್ಜರಿಣ್ಯಃ ।**
**ತಾಸ್ಯಾಃ ಪ್ರಪನ್ನೇ ಸಮದುಃಖಭಾಜಮ್**
**ಅತ್ಯಂತಮಾಸೀದ್ ರುದಿತಂ ವನೇಽಪಿ (14–69) ॥**

"ನವಿಲುಗಳು ನರ್ತನವನ್ನು, ಮರಗಳು ಹೂಗಳನ್ನು, ಜಿಂಕೆಗಳು ಬಾಯಲ್ಲಿ ಮೆಂದ ಹುಲ್ಲನ್ನು ತೊರೆದವು. ಮೂಕ ಜೀವಿಗಳು ಸೀತೆಯ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಸಮನಾದ ದುಃಖವನ್ನು ತಳೆದವು. ಇಡೀ ಕಾಡು ಅಳುತ್ತಿತ್ತು" ಆದರೆ ನಾಡು? ಒಡನೆಯೇ ಪ್ರಶ್ನೆ ಎದುರಾಗುತ್ತದೆ. ಸೀತೆಯ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಸ್ಪಂದಿಸುವುದು ಹಾಗಿರಲಿ. ಸೀತೆಯ ದುಃಖಕ್ಕೆ ಮೂಲವೇ ಈ ನಾಡು. ಎಂಥ ವೈಚಿತ್ರ್ಯ! ನಂಬಿಕೆ, ಅಪನಂಬಿಕೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ವಿಕೃತಿಗಳೆಲ್ಲದರ ಚರ್ಚೆ ಇಲ್ಲಿ ಮೌನವಾಗಿ ನಡೆದಿದೆ.

ರಾಮನೇನೋ ಸಮಷ್ಟಿಯನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹಿಡಿದು ವ್ಯಷ್ಟಿಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿರಬಹುದು. ಆದರೆ ವ್ಯಷ್ಟಿ – ಸಮಷ್ಟಿಗಳ ಸಮನ್ವಯ ಸಾಧ್ಯವಿರಲಿಲ್ಲವೇ? ಕಾಳಿದಾಸ ಈ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನೆತ್ತಿದ್ದಾನೆ.

**ಉತ್ಖಾತಲೋಕತ್ರಯಕಂಟಕೇಽಪಿ**
**ಸತ್ಯಪ್ರತಿಜ್ಞೇಪಿ ಅವಿಕತ್ಥನೇಽಪಿ ।**
**ತ್ವಾಂ ಪ್ರತ್ಯಕಸ್ಮಾತ್ ಕಲುಷಪ್ರವೃತ್ತಾ**
**ಅಸ್ತ್ಯೇವ ಮನ್ಯುಃ ಭರತಾಗ್ರಜೇ ಮೇ (14–73)**

"ರಾಮ ಮೂರು ಲೋಕದ ಮುಳ್ಳನ್ನು ಕಿತ್ತೆಸೆದಿದ್ದಿರಬಹುದು; ಆಡಿದ ಮಾತನ್ನು ಈಡೇರಿಸಿರಬಹುದು: ಆತ್ಮಶ್ಲಾಘನೆ ಮಾಡದವನಾಗಿರಬಹುದು; ಆದರೆ ನಿನ್ನಲ್ಲಿ ಇದ್ದಕ್ಕಿದ್ದಂತೆ ಕೆಟ್ಟದಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಂಡನಲ್ಲ! ಆ ಭರತನ ಅಣ್ಣನ ಮೇಲೆ ನನಗೆ ಕೋಪ ಇದೆ." ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ಕಾಳಿದಾಸ ಆಡಿಸುವ ಮಾತು ಇದು. ಭರತ ವ್ಯಷ್ಟಿ–ಸಮಷ್ಟಿ ಸಂಘರ್ಷದಲ್ಲಿ ದೇಶ ಆಳಿಯೂ ರಾಜನಾಗದೆ ಸಮನ್ವಯ ಸಾಧಿಸಿದ. ಅದು ರಾಮನಿಗೇಕೆ ಆಗಲಿಲ್ಲ? ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಇಲ್ಲಿ ಭರತನ ಉಲ್ಲೇಖ.

ಎಲ್ಲ ಲೋಕಮೋಹಗಳನ್ನು ತೊರೆದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮನುಷ್ಯ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು – ಜೀವ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ತೊರೆಯಲಿಲ್ಲ. ಕಾಳಿದಾಸನ ಕಣ್ವನೂ ಅಂಥವನೇ. "ಪ್ರಾಪ್ತಾಸಿ ವೈದೇಹಿ ಪಿತುರ್ನಿಕೇತಮ್." "ವೈದೇಹಿ, ನೀನು ತಂದೆಯ ಮನೆಗೆ ಬಂದಿದ್ದೀಯಮ್ಮ" ಎಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಸಂತೈಸಿದನು. ನಿಜ 'ವಿದೇಹಿ' (ದೇಹವಿಲ್ಲದ) ಸೀತೆಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯೇ ನಿಜವಾದ ತಂದೆ. ಕಾವ್ಯ ಕವಿಯ ಮಾನಸಪುತ್ರಿ ಎಂದು ಒಮ್ಮೆ ಪುತಿನ ಹೇಳಿದ್ದರು.

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ ಸೀತೆಗೆ ತಾಯ್ತನವನ್ನು ಕಲಿಸಿಕೊಡುವ ಪದ್ಯ ತುಂಬ ಸುಂದರ. ಕಾಳಿದಾಸನ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ಮಧುರ ಮನಸ್ಸಿನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬ ಇದು.

**ಪಯೋಘಟೈರಾಶ್ರಮಬಾಲವೃಕ್ಷಾನ್**
**ಸಂವರ್ಧಯಂತೀ ಸ್ವಬಲಾನುರೂಪೈಃ ।**
**ಅಸಂಶಯಂ ಪ್ರಾಕ್ತನಯೋಪಪತ್ತೇಃ**
**ಸ್ತನಂಧಯಪ್ರೀತಿಮವಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ತ್ವಮ್ (14–78) ॥**

"ಸ್ವಶಕ್ತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ನೀರ ಕೊಡಗಳಿಂದ ಆಶ್ರಮದ ಎಳೆಗಿಡಗಳನ್ನು ನೀರುಣಿಸಿ ಬೆಳೆಸು. ಅದರಿಂದ ನೀನು ಮಕ್ಕಳು ಹುಟ್ಟುವುದಕ್ಕೆ ಮೊದಲೇ ನಿಸ್ಸಂಶಯವಾಗಿ ಶಿಶುಪ್ರೀತಿಯನ್ನೂ–ತಾಯ್ತನವನ್ನೂ ಪಡೆಯುವೆ". ಪಯಃ (ನೀರು – ಹಾಲು), ಬಾಲ, ತನಯ, ಸ್ತನಂಧಯ, ಪ್ರೀತಿ, ಸಂವರ್ಧನ ಪದಗಳು ಪದ್ಯದ ನೇರ ಅರ್ಥದ ನೈಜ ನೆಲೆಯಿಂದ ಅಯಾಚಿತವಾಗಿ ಮೇಲಕ್ಕೆದ್ದು, ಸೀತೆಗೆ ಸದ್ಯದಲ್ಲಿ ದೊರಕಲಿರುವ ತಾಯ್ತನದ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಟ್ಟುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತವೆ. 'ಸ್ವಬಲಾನುರೂಪ' ಪದ ಪ್ರಯೋಗವೂ ಅತ್ಯಂತ ಔಚಿತ್ಯ ಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ.

ಕಾಳಿದಾಸನ ಕವಿತ್ವಕ್ಕೆ ಸಮಸಮನಾಗಿ ವಸ್ತುನಿರ್ವಹಣಾ ಕೌಶಲ್ಯ ಇಲ್ಲಿ ತೋರುತ್ತದೆ. ಸೀತೆ ಸದ್ಯದ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಒಗ್ಗಿಕೊಂಡು ಆಶ್ರಮದ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ

ಕಾಲಕಳೆಯುತ್ತಿದ್ದಳೆಂಬಲ್ಲಿಗೆ ಹದಿನಾಲ್ಕನೆಯ ಸರ್ಗ ಮುಕ್ತಾಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಕೊನೆಯ ಪದ್ಯ.

**ಸೀತಾಂ ಹಿತ್ವಾ ದಶಮುಖರಿಪುಃ ನೋಪಯೇಮೇ ಯದನ್ಯಾಮ್**
**ತಸ್ಯಾ ಏವ ಪ್ರತಿಕೃತಿಸಖೋ ಯತ್ಕ್ರತೂನಾಜಹಾರ ।**
**ವೃತ್ತಾಂತೇನ ಶ್ರವಣವಿಷಯಪ್ರಾಪಿಣಾ ತೇನ ಭರ್ತುಃ**
**ಸಾ ದುರ್ವಾರಂ ಕಥಾಮಪಿ ಪರಿತ್ಯಾಗದುಃಖಂ ವಿಷೇಹೇ ॥**

"ರಾವಣನ ವೈರಿಯಾದ ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಬೇರೆ ಯಾರನ್ನೂ ಮತ್ತೆ ಮದುವೆಯಾಗಲಿಲ್ಲ. ಅವಳ ಪ್ರತಿಮೆಯ ಸಖನಾಗಿ ಯಾಗ ಮಾಡಿದ – ಈ ಸುದ್ದಿ ಸೀತೆಯ ಕಿವಿಗೆ ತಲುಪಿತು. ಅದರಿಂದ ಆಕೆ ಅಸಹನೀಯ ದುಃಖವನ್ನು ಹೇಗೋ ಸಹಿಸಿಕೊಂಡಳು." ರಾಮನಿಗೆ "ದಶಮುಖರಿಪು" ಮತ್ತು 'ಪ್ರತಿಕೃತಿ ಸಖ' ಎನ್ನುವುದು ಎಷ್ಟು ಔಚಿತ್ಯಪೂರ್ಣ, ಧ್ವನಿಗರ್ಭಿತ ವಿಶೇಷಣಗಳು ಎಂಬುದನ್ನು ಬೇರೆ ಹೇಳಬೇಕಿಲ್ಲ. ಈ ಪದ್ಯದ ಅರ್ಥ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ತುಂಬ ವಿಶಾಲವಾದದ್ದು.

ರಾಮ ರಾವಣಸಂಸ್ಕೃತಿಗೆ ವಿರೋಧಿಯಾದವನು. ಸಮಷ್ಟಿಸಮಾಧಾನಕ್ಕಾಗಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ತೊರೆದೂ ಮಾನಸಿಕ ಸಖ್ಯವನ್ನು ತೊರೆಯಲಾರದವನು. ಅದಕ್ಕಾಗಿ 'ರಜೋರಿಕ್ತ ಮನಸ್ಕನಾಗಿ ರಾಜ್ಯವನ್ನಾಳಿದವನು. ಸಪ್ತಪದಿಯಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡ ಸಖ್ಯವನ್ನು ತೊರೆಯಲಾರದೆ ತೊಳಲಿದವನು. ವ್ಯಷ್ಟಿಹಿತವನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿ ಸಮಷ್ಟಿ ಹಿತವನ್ನು ಆಯ್ದುಕೊಂಡವನು. ರಘುವಂಶ ಆಳಕ್ಕೆ ಅಗೆದಷ್ಟೂ ಗೆರೆಮಿರಿವ ಚಿನ್ನದದಿರು ದೊರೆಯುವ ಅಕ್ಷಯ ಖನಿ.

### ಶ್ರೀರಾಮ ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣ :

ಲವಣನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಉಪಟಳಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ ಮುನಿಗಳು ರಾಮನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಬೇಡಿದರು. "ಶಾಪ ನೀಡಿದರೆ ನಮ್ಮ ತಪಸ್ಸು ಕ್ಷೀಣಿಸುವುದು, ಆತ ಶಿವನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಶೂಲವನ್ನು ಸದಾ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ. ಅದು ಅವನ ಬಳಿ ಇಲ್ಲದಾಗ ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಬೇಕು" ಎಂದು ಹೇಳಿದರು. ಸಾಮಾನ್ಯ ನಿಯಮಕ್ಕೆ ವಿಶೇಷ ನಿಯಮವು ಬದಲಿಯಾಗಿ ಬರುವಂತೆ ರಾಮನು ಈ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ತಮ್ಮನಾದ ಶತ್ರುಘ್ನನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಆತ ಸೇನೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳ ಆಶ್ರಮ ಪ್ರಾಂತದಲ್ಲಿ ಬೀಡುಬಿಟ್ಟನು. ಋಷಿಯು ಆತನಿಗೆ ತಪಃ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಸೌಕರ್ಯಗಳನ್ನೊದಗಿಸಿಕೊಟ್ಟನು. ಅದೇ ರಾತ್ರಿ ಸೀತೆ ಅವಳಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆದಳು. ಅವರು ಭೂಮಿಗೆ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಕೋಶ ಮತ್ತು ಸೇನೆಯಂತಿದ್ದರು. ಶತ್ರುಘ್ನನಿಗೆ ಸಂತಸವಾಯ್ತು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ನಮಿಸಿ ಅಲ್ಲಿಂದ ಹೊರಟನು. ಅವನು ಅಲ್ಲಿಂದ ಲವಣಾಪುರಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ರಾವಣನ ತಂಗಿ ಕುಂಭೀನಸಿಯ ಮಗ ಲವಣ ಕಾಡಿನಿಂದ ಕರವನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿದಂತೆ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ರಾಶಿಯನ್ನು ಕೊಂದು ತಂದ. ಹೊಗೆಯಂತೆ ಕಂದು ಬಣ್ಣ, ನೆಣದ ವಾಸನೆ, ಜ್ವಾಲೆಯಂಥ ಕೆಂಗೂದಲು, ಮಾಂಸಾಹಾರಿ ಅನುಚರರು– ನಡೆದಾಡುವ ಥೇಟ್ ಚಿತೆಯ ಬೆಂಕಿ! ಆಗ ಶೂಲ ಅವನ ಬಳಿ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಶತ್ರುಘ್ನ ಅವನನ್ನು ಅಡ್ಡಗಟ್ಟಿದ. ಮರವನ್ನು ಕಿತ್ತೆಸೆದ, ಕಲ್ಲು ತೂರಿದ. ಆದರೆ ಶತ್ರುಘ್ನನು ಐಂದ್ರಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದನು. ಪರಮಾಣುವಿನಂತೆ ಪುಡಿಪುಡಿಯಾಗಿ ಹೋದ. ಶತ್ರುಘ್ನನು ಯಮುನೆಯ ದಡದಲ್ಲಿ ಮಥುರಾ ನಗರವನ್ನು ಕಟ್ಟಿದನು.

ಇತ್ತ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸೀತೆಯ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕುಶ–ಲವ ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟ. ಎಲ್ಲ ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ನೀಡಿದ. ತನ್ನ ಆದಿ ಕಾವ್ಯವಾದ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕಂಠಪಾಠ ಮಾಡಿಸಿದ. ಇಂಪಾಗಿ ಹಾಡುವ ಮಕ್ಕಳಿಂದ ಸೀತೆಯ ಮನ ಹಗುರಾಯಿತು. ರಾಮನ ತಮ್ಮಂದಿರಿಗೂ ಇಬ್ಬಿಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳಾದರು. ಶತ್ರುಘ್ನನು ಮರಳಿ ಬಂದು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಆದರೆ ಸೀತೆ ಹಡೆದ ಸುದ್ದಿಯನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆದೇಶದಂತೆ ಹೇಳಲೇ ಇಲ್ಲ. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನೊಬ್ಬ ಮಗುವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಗೋಳಿಡುತ್ತಿದ್ದ.

ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವನ್ನೂ ಹುಡುಕಿ ಹೊರಟ ರಾಮನಿಗೆ ಮರದ ಕೊಂಬೆಗೆ ಕೆಳಮುಖವಾಗಿ ನೇತಾಡುತ್ತ ತಪಸ್ವಿಯೊಬ್ಬ ಕಾಣಿಸಿದ. ಆತನೇ ಶಂಬುಕ. ರಾಮ ಅವನನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿದ. ರಾಮನೇ ಸ್ವಯಂ ದಂಡಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಆತನಿಗೆ ತಪಸ್ಸಿನಿಂದಲೂ ಈವರೆಗೆ ಸಿಗದ ಸದ್ಗತಿ ದೊರಕಿಬಿಟ್ಟಿತು. ರಾಮ ಅಶ್ವಮೇಧಕ್ಕೆ ಅಣಿಯಾದ. ಯಜ್ಞಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಚಿನ್ನದ ಪ್ರತಿಮೆ. ಆ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಕುಶ ಲವರು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಹಾಡುತ್ತ ಬಂದರು. ರಾಮನ ಕತೆ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಕೃತಿ; ಕಿನ್ನರಕಂಠದ ಗಾಯಕರು, ಸರ್ವಜನಾಕರ್ಷಣೆಗೆ ಇನ್ನೇನು ಬೇಕು! ರಾಮನೂ ಅವರನ್ನು ಕರೆಸಿ ಹಾಡಿಸಿದ. ಆ ಹಾಡು ಎಲ್ಲರ ಮನವನ್ನಾಕರ್ಷಿಸಿತು. ಎಲ್ಲರ ಕಣ್ಣಲ್ಲು ಆನಂದಾಶ್ರು – ಬೆಳಗಿನ ಇಬ್ಬನಿ ಸುರಿದ ಕಾಡಿನ ನೆಲದಂತೆ! "ನೀವು ಯಾರು? ಯಾರ ಕೃತಿ ಇದು?" ಎಂದು ರಾಮ ಕೇಳಿದ. ಅವರು "ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿ" ಎಂದು ಉತ್ತರವಿತ್ತರು. ರಾಮ ತಮ್ಮಂದಿರೊಂದಿಗೆ ನೇರವಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿದ್ದಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದನು. ಅವರು ಸೀತೆಯ ಮಕ್ಕಳೆಂದು ತಿಳಿಯಿತು. 'ಈಗಲಾದರೂ ಸೀತೆಯನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿಕೋ' ಎಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಆಗ್ರಹಿಸಿದ. ರಾಮನದು ಮತ್ತೆ ಅದೇ ಹಾಡು! "ಸೀತೆ ಪರಿಶುದ್ಧಳು; ನನಗೆ ಗೊತ್ತಿದೆ. ಆದರೆ ರಾಕ್ಷಸರ ದುಷ್ಟತನದಿಂದಾಗಿ ನನ್ನ ಪ್ರಜೆಗಳು ನಂಬುತ್ತಿಲ್ಲ. ಅವಳು ತನ್ನ ಚಾರಿತ್ರ್ಯದ ಬಗ್ಗೆ ಜನಕ್ಕೆ ತಿಳಿಹೇಳಿ ಒಪ್ಪಿಸಿದರೆ ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತೇನೆ." ಮಾರನೆಯ ದಿನ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಪ್ರಜೆಗಳೂ ಬಂದರು. ಕಾವಿ ಬಣ್ಣದ ನಾರುಡೆಯನ್ನು ಉಟ್ಟು, ಕೆಳಮುಖಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದ ಸೀತೆಯ ಆ ಶಾಂತ ಮೂರ್ತಿಯನ್ನು ಕಂಡಾಗ ಯಾರಿಗೂ ಆಕೆ ಪರಿಶುದ್ಧೆ ಅನ್ನಿಸಲೇಬೇಕು. ಜನರೂ ಬಲಿತ ಬತ್ತದ ತೆನೆಯಂತೆ ಮುಖ ಕೆಳಗು ಮಾಡಿದರು. ಸೀತೆ ಉಲಿದಳು– "ವಿಶ್ವವನ್ನೇ ಒಡಲಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡ ಅಮ್ಮಾ ಭೂದೇವಿ! ಮನೋವಾಕ್‍ಕಾಯಗಳಿಂದ ನನ್ನ ಗಂಡನನ್ನು ವಂಚಿಸದಿರುವುದು ನಿಜವೇ ಆಗಿದ್ದರೆ, ನನ್ನನ್ನು ನಿನ್ನ ಒಡಲೊಳಗೆ ಕರೆದುಕೋ." ಇಷ್ಟು ಹೇಳಿದ್ದೇ ನೆಲ ಬಿರುಕುಬಿಟ್ಟಿತು. ಅಲ್ಲಿಂದ ಮಿಂಚಿನ ಪ್ರಭಾವಲಯ ಮೇಲೆದ್ದು ಬರುವುದು ಗೋಚರಿಸಿತು. ಸರ್ಪದ ಹೆಡೆಯುಳ್ಳ ಸಿಂಹಾಸನದಲ್ಲಿ ಭೂದೇವಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಳು. ಸೀತೆಯನ್ನು ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿಕೊಂಡು ಪಾತಾಳದತ್ತ ನಡೆದಳು. 'ಬೇಡ! ಬೇಡ! ಎಂದು ರಾಮ ಕೂಗುತ್ತಲೆ ಇದ್ದ ಯಜ್ಞ ಸಮಾಪ್ತಿಯಾಯಿತು. ಸೀತೆಯ ಮೇಲಿನ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ರಾಮ ಮಕ್ಕಳ ಮೇಲಿಟ್ಟನು.

ಯುಧಾಜಿತನ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಸಿಂಧುದೇಶವನ್ನು ಭರತನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಭರತನು ಅಲ್ಲಿರುವ ವೈರಿಗಳನ್ನು ಗೆದ್ದು ಆಯುಧ ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿ ವೀಣೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದನು. ತಕ್ಷಪುಷ್ಕಲರೆಂಬ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನೊಪ್ಪಿಸಿ ಮರಳಿ ರಾಮನಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದನು. ಶತ್ರುಘ್ನನೂ ಮಥುರಾ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಮಗ ಸಂಬಾಹುವಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ರಾಮನ ಆಜ್ಞೆಯ ಮೇರೆಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಅಂಗದ ಚಂದ್ರಕೇತು ಎನ್ನುವ ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಾರಾಪಥದ ಆಡಳಿತವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿದನು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ತೀರಿಕೊಂಡ ತಾಯಂದಿರಿಗೆ ಶ್ರಾದ್ಧಾದಿ ಕರ್ಮಗಳನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿದರು. ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನಕಾಲ ಸನ್ನಿಹಿತವಾಯಿತು. ಕಾಲನು ಮುನಿಯ ವೇಷ ತಳೆದು ರಾಮನಿಗೆ ಹೇಳಿದ– "ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಮಾತನಾಡಬೇಕು. ಈ ನಡುವೆ ಯಾರಾದರೂ ಇಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದರೆ ಅವನನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಬೇಕು." ಲಕ್ಷ್ಮಣನೇ ಕಾವಲುಗಾರನಾಗಿ ನಿಂತ. ಕಾಲ ನಿಜರೂಪವನ್ನು ತೋರಿ, ಬ್ರಹ್ಮಾದೇಶದಂತೆ ನೀನು ದ್ಯುಲೋಕಕ್ಕೆ ತೆರಳು ಸಿದ್ಧನಾಗು ಎಂದನು. ತಿಳಿದೂ ತಿಳಿದೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ನಿಯಮವನ್ನು ಮೀರಬೇಕಾಯಿತು. ಆತ ರಾಮಸಂದರ್ಶನಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಬಂದ ದುರ್ವಾಸನ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಅಂಜಿದ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ದೇಹತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದ. ಅಣ್ಣನ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ತಾನಾಗೇ ಪಾಲಿಸಿದ. ರಾಮನ ಒಂದಂಗ ನಶಿಸಿಹೋಯಿತು – ಆತ ಈಗ ಮೂರೇ ಕಾಲಿನ ಧರ್ಮಪಶು. ರಾಮನು ಕುಶಾವತಿಯಲ್ಲಿ ಕುಶನನ್ನು ನೆಲೆಗೊಳಿಸಿದನು. ಶರಾವತೀ ಪುರದಲ್ಲಿ ಲವನನ್ನು ಇಟ್ಟನು. ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಇನ್ನಿಬ್ಬರು ತಮ್ಮಂದಿರೊಂದಿಗೆ ಉತ್ತರಾಭಿಮುಖವಾಗಿ ಚಲಿಸಿದನು. ಅವನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಮನೆಗಳೆಲ್ಲ ಬರಿದಾದವು. ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದಿಳಿದ ವಿಮಾನವೇರಿ ಹೊರಟ. ಭಕ್ತಾನುಕಂಪಿಯಾದ ಶ್ರೀರಾಮನು ತನ್ನ ಅನುಯಾಯಿಗಳಿಗೆ ಸರಯೂ ನದಿಯೇ ಸ್ವರ್ಗದ ಮೆಟ್ಟಿಲಾಗಲಿ

ಎಂದು ಹರಸಿದನು. ನದಿಯಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಹಸುಗಳನ್ನು ದಾಟಿಸುವರು. ಹಾಗೆ ಸರಯೂಗೆ ಇಳಿದವರು ಭವವನ್ನೆ ದಾಟುವರು. ಅದಕ್ಕೆ ಆ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನದ ಜಾಗ **'ಗೋಪ್ರತರ'** ಎಂದೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಯಿತು. ದೇವತಾಂಶದಿಂದ ಕಪಿಗಳಾಗಿ ಬಂದವರಿಗೆಲ್ಲ ಮೂಲಸ್ಥಾನವನ್ನು ಕರುಣಿಸಿದನು. ದಕ್ಷಿಣದಲ್ಲಿ ವಿಭೀಷಣ, ಉತ್ತರದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತ ಇಬ್ಬರೇ ಅವನ ಕೀರ್ತಿಸ್ತಂಭಗಳಾಗಿ ಉಳಿದರು.

ಈ ಸರ್ಗದ ರಚನೆ ಪುರಾಣದ ಓಟಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರವಾಗಿದೆ. ಸರ್ಗದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾಂತರ್ಧಾನ ಮತ್ತು ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನದ ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸನ ಪ್ರಸನ್ನಗಂಭೀರ ಭಾಷೆಯನ್ನೂ, ಪ್ರಸಂಗರಚನಾಕೌಶಲವನ್ನೂ ಅನುಭವಿಸಬಹುದಾಗಿದೆ.

Bhavan
BANGALORE
&
Srila Prabhupada's
ISKCON
BANGALORE
ರಾಮಾಯಣದ ಸಂದೇಶ

*Shri P.B.Mahishi presenting his paper during the conference.*

# ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ

ಡಾ. ಆರೆಯಾರ್ ಶ್ರೀರಾಮ ಶರ್ಮ

**ಮೂ**ಲ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಸರಿಯಾಗಿ ಇನ್ನೂರು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸಾರವಾಗಿ ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಿ ಎತ್ತಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಇವುಗಳಿಗೆ ತಕ್ಕ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿರುವುದು ಇವನ ವಿಶೇಷ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮಾಯಣದ 24000 (ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಾವಿರ) ಶ್ಲೋಕ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಆರು ಸಾವಿರಕ್ಕಿಳಿಸಿದರೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವು ಹಿಗ್ಗಿನಿಂದ ಹಿಗ್ಗಿರುವಂತಿದೆ. “ಪಾದಶೇಷ” ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದರಷ್ಟಕ್ಕೆ ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸಿದ ರಸಪಾಕ ಶ್ರೀಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಈ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಮೌಷದ.

**ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರಾಯ ನಮಸ್ತ್ಯಸ್ಮೈ ವ್ಯಾಸದಾಸಾಭಿಘಾಜುಷೇ ।**
**ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣಾನಾಂಪುಷ್ಟೇ ಕಾಶ್ಮೀರ ಚಕ್ಷುಷೇ ॥**

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಮಹಾಕವಿಯು ಕಾಶ್ಮೀರಕ ಪರಮ ವೈಷ್ಣವ. ಇವನ ತಂದೆ ಪ್ರಕಾಶೇಂದ್ರ ದಾನಧರ್ಮಗಳಿಂದ ಬಹುಜನರಿಗೆ ಬೇಕಾದವ. ಇವನ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ವಿದ್ವಾಂಸರು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಸೇರುತ್ತಿದ್ದರು. ಹೀಗೆ ತಂದೆ-ತಾಯಿಯರ ವಿದ್ವತ್ ಸೇವೆಗಳಿಂದ ಇವನ ಮನೆ ಯಾವಾಗಲೂ ಧರ್ಮ ಸ್ಥಾನವಾಗಿ ಬೆಳಗಿತ್ತು. ಬಾಲ್ಯದಿಂದಲೇ ವಿದ್ವಾಂಸರ ಅನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ತನ್ನನ್ನು "ವಿದುಷಾಂ ನಿತ್ಯ ಶಿಷ್ಯ" ವಿದ್ವಾಂಸರಿಗೆ ಎಂದೆಂದೂ ನಾನು ಶಿಷ್ಯನೇ ಅಹುದು ಎಂದು ವಿನಯದಿಂದಲೇ ಕರೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಹೀಗೆ ಇವನ ವಿದ್ವತ್ತು ವ್ಯಾಸ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಮೇಲೇರಿರುತ್ತದೆ. ಇವನಿಗೆ ಹೀಗಾಗಿ ವ್ಯಾಸದಾಸ ಎಂಬ ಉಪನಾಮವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ.

ವ್ಯಾಸರಂತೆ ಕಥನಕಲೆ ಇವನಿಗೆ ಕರಗತವಾಗಿದೆ. ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಭಾರತ, ಬೃಹತ್ ಕಥೆ, ಬೌದ್ಧಜಾತಕ ಕಥೆಗಳು ಸಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಇತಿಹಾಸಗಳು ನೀತಿ ರೀತಿಗಳು ಯಾವುದೊಂದನ್ನೂ ಬಿಡದೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ತನ್ನ ಅಪಾರವಾದ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕೃಷಿಯಲ್ಲಿ ಸಪುಲಗೊಳಿಸಿದಾನೆ.

ಸಂಸ್ಕೃತದ ಯಾವುದೇ ಪ್ರಕಾರದ ಶಾಸ್ತ್ರ ಕಾವ್ಯವಾಙ್ಮಯವಾಗಲಿ. ಇವನ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮೂಷೆಯಲ್ಲಿ ಕರಗಿ ಅಪರಂಜಿ ಚಿನ್ನದಂತೆ ಹೊಚ್ಚ ಹೊಸದಾಗಿ ಬೆಳಗುತ್ತದೆ. ನೂರಾರು ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವ ಈತನ ಐತಿಹಾಸಿಕ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಪ್ರಬಲವಾದುದು. ತಾನು ಯಾರಿಗಾಗಿ ಏತಕ್ಕಾಗಿ ಯಾವಾಗ ಈ ಗ್ರಂಥ ಬರೆದೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನೂ ತನ್ನ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲೇ ದಾಖಲಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇವನ ಶಿಷ್ಯರೂ, ಮಿತ್ರರೂ, ರಾಜ-ರಾಣಿಯರು, ಮಂತ್ರಿಗಳು, ಸೇನಾಪತಿಗಳು, ವರ್ತಕರು, ಅಸಂಖ್ಯಾತರು. ಕಾಶ್ಮೀರದ ಮಹಾಮಹಿಮ ಪಂಡಿತ ಸಹೃದಯ ಶ್ರೀಮತ್ ಆನಂದವರ್ಧನಾಚಾರ್ಯ ಪರಮ ವಿಷ್ಣುಭಕ್ತ. ಅವನ ಧ್ವನಿ ಸಿದ್ಧಾಂತ ಇಂದಿಗೂ ಸಾಹಿತ್ಯದ ವಿಶ್ವಮೇರು. ಅವನ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಮತ್ ಅಭಿನವಗುಪ್ತಪಾದಾಚಾರ್ಯ ಅದೇ ಪರಂಪರೆ ಮುಂದುವರೆದು ಧ್ವನಿ ಪ್ರಸ್ಥಾನ ಪರಮಾಚಾರ್ಯರ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆಗೆ ಪಾತ್ರನಾದವನು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ. ಇವನ "ಔಚಿತ್ಯಸಿದ್ಧಾಂತ" ಧ್ವನಿ ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಮುಂದುವರಿಕೆ ಇದು ಇಂದಿಗೂ ಸರ್ವಮಾನ್ಯ.

ಕಾಶ್ಮೀರವನ್ನು ಸುತ್ತಮುತ್ತಲಿನ ಉತ್ತರ ರಾಜ್ಯಗಳೊಡನೆ ಏಕಾಧಿಪತ್ಯವಾಗಿ ಅರವತ್ತು ವರ್ಷಕಾಲ ಆಳಿದ ಅನಂತ ರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನ ಕವಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ. ರಾಣಿ ಸೂರ್ಯಮತಿ ರಾಜನ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿ. ಸಾಹಿತ್ಯವಾಙ್ಮಯ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯ ಅವಳ ಆಭಿರುಚಿ ಅಪಾರವಾದುದು. ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತಗಳಿಗೆ ಸರಿ ಸಮಾನವಾದ ಬೃಹತ್ಕಥೆಯನ್ನೂ ಅವಳು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮೂಲಕ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿ ಅವನಿಂದಲೇ ಅವುಗಳ ಸಂಗ್ರಹ ಬರೆಸಿದ್ದಾಳೆ. ಪಿಶಾಚ ಭಾಷೆ ಮಾತನಾಡುವ ಪಿಶಾಚ ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಬೃಹತ್ ಕಥೆಯು ಕಾಶ್ಮೀರ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಭಾಷಾಂತರವಾಗಿ ಬಂದುದು ಈ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಂದ. ಅನಂತರ ಸೋಮದೇವನಿಂದ ಕಥಾಸರಿತ್ಸಾಗರವಾಯಿತು. ಇದುಕ್ಕೂ ಹಿಂದೆ ಏಳುನೂರು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ ಕನ್ನಡನಾಡಿನ ಗಂಗ ರಾಜ್ಯದ ಮಂತ್ರಿ ಬುಧಸ್ವಾಮಿ ಇದನ್ನು ಸಂಸ್ಕೃತಕ್ಕೆ ತಂದಿರುವುದು ಬೃಹತ್ಕಥಾ ಶ್ಲೋಕ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿದೆ. ತಮಿಳಿಗೆ ಇದು 'ಪೆರುಂಗತ್ಯೆ' ಆಗಿದೆ. ಸಂಸ್ಕೃತದವರಿಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತಗಳು ದೀರ್ಘವಾದರೂ ಓದಲು ಮೂಲರೂಪದಲ್ಲೇ ಸಿಗುತ್ತಿದ್ದವು. ಈಗ ಅವುಗಳನ್ನೂ ಮೂಲಕ್ಕೆ ಚ್ಯುತಿ ಬಾರದಂತೆ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿರುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಕೇಳುಗರ ಸೌಲಭ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಂದಲೇ ಮೊದಲಾಗಿರುವುದು ವಿಶೇಷ. ಈ ಹಿಂದೆ ಕಾಳಿದಾಸಾದಿಗಗಳು ಅಂಶತಃ ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತ ಬೃಹತ್ಕಥೆಗಳಿಂದ ಆಧರಿಸಿದ ಕಾವ್ಯ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದರೂ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾ ನಿರೂಪಣೆ ಅವುಗಳಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಹೀಗಾಗಿ ವಿಶ್ವ ಸಾಹಿತ್ಯ ವಾಙ್ಮಯ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಗೆ ಪ್ರಥಮ ಸ್ಥಾನವಿದೆ.

ಹೀಗೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಸಕಲ ಭಾರತೀಯ ವಿಶ್ವ ಸಾಹಿತ್ಯವಾಙ್ಮಯಗಳಿಗೆ ಮೂಲಾಧಾರವಾದ ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತ ಬೃಹತ್ಕಥೆಗಳನ್ನೂ ತನ್ನದೇ ಮಧುರವಾಣಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಬರೆದುಕೊಟ್ಟು ಮಹೋಪಕಾರ ಮಾಡಿರುವನು.

ತುರ್ಕಿ (ಟರ್ಕಿ) ಸ್ಥಾನದಿಂದ ಕಾಶ್ಮೀರಕ್ಕೆ ಲಗ್ಗೆ ಹಾಕಿ ರಾಜರ ಆಸ್ಥಾನಗಳಿಗೆ ಒಳಹೊಕ್ಕು ಕಾಶ್ಮೀರವನ್ನು ತುರುಷ್ಕಮಯವಾಗಿ ಮಾಡಲು ಆರಂಭಿಸಿದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಂತಹ ಸಾವಿರಾರು ವಿದ್ವಾಂಸರೂ, ರಾಜ-ರಾಣಿಯರೂ, ಭೃಗುಪತನ ಎಂಬ ಕ್ರಮದಿಂದ ಬೆಟ್ಟದ ಶಿಖರದಿಂದ ಪ್ರಪಾತಕ್ಕೆ ಜಿಗಿದು ಪ್ರಾಣಬಿಟ್ಟು ಸದ್ಗತಿ ಹೊಂದಿದರು ಎಂಬ ನಿಜವಾದ ಇತಿಹಾಸವು ಕಲ್ಹಣನ ಕಾಶ್ಮೀರ ರಾಜ ತರಂಗಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿದೆ. ಇಂತಹ ದುರಾಡಳಿತಕ್ಕೆ ಬೇಸರಿಸಿ ಬಿಲ್ಹಣ ಮಹಾಕವಿ ಕನ್ನಡ ನಾಡಿಗೆ ಬಂದು ಚಾಲುಕ್ಯ ಆಹವಮಲ್ಲನ ಆಸ್ಥಾನ ಕವಿಯಾಗಿ ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನ ಸದಾಚಾರವನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿ ಇಲ್ಲೇ ನೆಲೆಸಿದ ಇತಿಹಾಸ ಆತನದೇ ವಿಕ್ರಮಾಂಕದೇವ ಚರಿತೆಯಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಆಗಿ ಹೋದುದು ಆದರೆ ಯಶಸ್ಸಿನಿಂದ ಗ್ರಂಥಗಳಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಉಳಿದುಕೊಂಡಿರುವ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸಾರಸ್ವತ ದಿವ್ಯಶಕ್ತಿಗೆ ಒಂದು ಉದಾಹರಣೆ ಈ ರಾಮಾಯಣಮಂಜರಿ.

ವಿಶ್ವದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಚಾರಣರಿಂದ ಇಂದಿನ ವೃತ್ತ ಪತ್ರಿಕೆಗಳಂತೆ ಪ್ರಚಾರ ಸಾಧನಗಳಾಗಿದ್ದ ಹಾಡುಗಬ್ಬಗಳು, ಕಿರು ನಾಟಕ ದೃಶ್ಯಗಳು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ವಿಶ್ವ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಾಗಿಸಿದ್ದವು. ಈ ತುಣುಕುಗಳೆಲ್ಲವೂ ವಿಶ್ವಸಂಚಾರಿ ನಾರದ ಮಹರ್ಷಿಯಿಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಉಪದೇಶವಾಗಿ ಬಂದಿದ್ದವೆಂಬ ವಿಷಯ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಇದೆ. ಬ್ರಹ್ಮದೇವನ ವರದ ಬಲ ಋತಂಭರಾ ಯೋಗಶಕ್ತಿ ಮತ್ತು ಸಾರಸ್ವತ ಅನುಗ್ರಹ ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಕಾವ್ಯ ರಚನೆಗೆ ಮೂಲ. ರಾಮನಿಂದ ಪರಿತ್ಯಕ್ತಳಾದ ಮಹಾಮಾತೆ ಸೀತೆಯ ನೋವು ತನ್ನ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ವೃದ್ದೆಯರಿಂದ ಕಾಪಾಡಿದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಹೃದಯ ವಿದ್ರಾವಕವಾಗಿ ಕಂಡಿದ್ದು ಒಂದು ನಿಮಿತ್ತ. ಅನಂತರ ಅದೇ ಒಳಗುದಿಯಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಕ್ರೌಂಚಮಿಥುನದ  ಅವಗಡ ಒಂದು ಬಾಹ್ಯ ನಿಮಿತ್ತ. ಅನಂತರ ದಿವ್ಯ ನಿಮಿತ್ತ ಸಹಕಾರಗಳು ದೊರೆತು ರಾಮಾಯಣ ಐದು ಕಾಂಡಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಪೂರ್ವೋತ್ತಮರಾಮ ಬಂಧಗಳಾಗಿ ಬಾಲ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ರಚಿಸಿದುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಹಿರಿಮೆ. ಎಲ್ಲರೂ ಆದರದಿಂದ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ರಾಮಾಯಣ ಆದಿ ಕಾವ್ಯವೆನಿಸಿತು. ಗದ್ಯದ ಸರಳ ವಾಕ್ಯದ ಕವಿತೆಗಳು ಮೊದಮೊದಲು ಇದ್ದವು. ಅನಂತರ ದಿವ್ಯ ಮತ್ತು ಮರ್ತ್ಯ ಪಾತಾಳಗಳಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತಕ ಬಿಡಿ ಬಿಡಿ ಪದ್ಯಗಳು ವೇದಗಳಂತೆ ಎಲ್ಲರ ಬಾಯಲ್ಲೂ ಪ್ರಮಾಣಗಳಾಗಿ ಹೊರ ಬೀಳುತ್ತಿದ್ದವಷ್ಟೆ. ಸರ್ಗ ಕಾಂಡಗಳೆಂಬ ಮಹಾವಿಭಾಗದಿಂದ ಏಕನಾಯಕ ಕಾವ್ಯ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಬಂದುದು ಇದೇ ಮೊದಲು. ಇದೇ ರಾಮಾಯಣ ವರ್ಣನೆಗಳಿಂದ ಕಾವ್ಯವೆನಿಸಿದ ಇತಿಹಾಸ ಇದು ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ "ಪರಿಪ್ರಿಯಾ" ಎಂದು ಹೆಸರು. ಮಹಾಭಾರತವು "ಪುರಾಕಲ್ಪ" ಇದು ಬಹುನಾಯಕ ಸಮಾಜೇತಿಹಾಸ.

**ಪರಿಕ್ರಿಯಾ ಪುರಾಕಲ್ಪಂ ಇತಿಹಾಸಗತಿರ್ದ್ವಿಧಾ ।**
**ಸ್ಯಾದೇಕನಾಯಕಾ ಪೂರ್ವಾ ದ್ವಿತೀಯಾ ಬಹುನಾಯಕಾ ॥**

"ಸರ್ಗಬಂಧೋ ಮಹಾಕಾವ್ಯಂ" ಎಂಬ ಲಕ್ಷಣದಂತೆ ರಾಮಾಯಣವು ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ಮಹಾಕಾವ್ಯದ ಸಕಲಾಂಶಗಳೂ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಕರಗಿ ಎರಕವಾಗಿ ಹೊಸರೂಪ ಪಡೆದಿವೆ. ವಸ್ತು ಹಳೆಯದು ಪ್ರಾಯಶಃ ಬದಲಾಗಿಲ್ಲ. ರಾಮಾಯಣದ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಾವಿರ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ವರ್ಣನೆಗಳನ್ನು ಐತಿಹಾಸಿಕ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಸಾಮಾಜಿಕ ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಸಾರಗಳನ್ನು ನಯ-ನೀತಿಗಳನ್ನೂ ದಾರ್ಶನಿಕ ಅರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಬಿಡದೆ ಬರಿಯ ಆರು ಸಾವಿರ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ರಮಣೀಯವಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿರುವುದು ವ್ಯಾಸದಾಸನೆನಿಸಿದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಸಹೃದಯತೆಗಳ ಒಕ್ಕೂಟದ ಹಿರಿಮೆ. ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸಿದ ರಾಮಾಯಣದ ಮಧರ ಕಷಾಯೌಷದ ಈ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ.

ಈಗ ಉಪಲಬ್ಧವಿರುವ ರಾಮಾಯಣದ ಪಾಠಗಳಲ್ಲಿ ದಾಕ್ಷಿಣಾತ್ಯ ಪಾಠ, ಪ್ರಾಚ್ಯಗೌಡಪಾಠ, ಪಶ್ಚಿಮೋತ್ತರದ ಪಾಠ, ಈಗಿನ ಆಫ್ಘಾನಿಸ್ತಾನದ ಪಾಠ ಇಂಡೊನೇಷಿಯಾ, ಮಲೇಷಿಯಾ ಪಾಠಗಳು, ಉತ್ತರ ದೇಶದ ಪಾಠ, ವಿಶ್ವದ ನಾನಾ ದ್ವೀಪಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಕಥೆಯ ಅನೇಕ ಚಾರಣ ಸಿದ್ಧ ಗಂಧರ್ವ ಜಾನಪದ ಪಾಠ ವಿಶೇಷಗಳು ಉಳಿದಿವೆ. ಹೀಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಕಾಶ್ಮೀರ ಪಾಠವೊಂದರ ಸುಳಿವು ಸಾಕಷ್ಟು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.

ಕಾಶ್ಮೀರ ಪಂಡಿತರು ಕರ್ನಾಟಕದಿಂದ ಶ್ರೀ ಜಯಾದಿತ್ಯರಾಜನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಾಶ್ಮೀರಕ್ಕೆ ಬಂದು ನೆಲೆಸಿ ಸರ್ವವಿದ್ಯಾ ಪ್ರವರ್ತನೆ ಮಾಡಿದ ಇತಿಹಾಸ

ಕಲ್ಹಣನ ಕಾಶ್ಮೀರ ರಾಜ ತರಂಗಿಣಿಯಲ್ಲಿದೆ. ವಿದ್ವಾಂಸರು ಸ್ಥಳೀಯ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಕಡೆಗಣಿಸದೆ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಗಮನಿಸಿ ರಮಣೀಯ ಅಂಶಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿರುವುದು ರಾಮಾಯಣದ ವ್ಯಾಪಕತೆಯ ಐತಿಹಾಸಿಕ ಸತ್ಯ. ಈ ಸತ್ಯ ವಿಚಾರಗಳು ಈಗಿರುವ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿದ್ದು, ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿಲ್ಲದಿರಬಹುದು. ಆದರೆ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಂತಹ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಅವುಗಳ ಎಳೆಗಳು ಸಿಗುತ್ತವೆ. ಹೀಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಇಂದು ಉಪಲಬ್ಧವಿರುವ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ನೇರವಾಗಿ ಸಿಗದಂತಹ ಕೆಲವು ಮರ್ಮಗಳು ಕಾಶ್ಮೀರ ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಗೆ ಸಹಜವಾಗಿ ಸಿಕ್ಕಿರಬಹುದು.

(ಮರ ಗಿಡಗಳಲ್ಲಿ ಹೂ–ಹಣ್ಣು ಚಿಗುರುಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ವಾಸನೆ, ರುಚಿ, ಬಣ್ಣ, ಅಂಟುಗಳು, ಬೇರು, ಕಾಂಡ, ಕೊಂಬೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಹೂಗೊಂಚಲುಗಳಿಗೆ ಮಂಜರಿ ವಲ್ಲರಿ ಎಂಬ ಹೆಸರಿದೆ. ಬಳ್ಳಿಗಳ ಹೊಸ ಕಳೆಗಳಿಗೂ ಈ ಹೆಸರಿದೆ. ಹೀಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ರಸರಮಣೀಯ ಕಥಾಸಾರ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಸುಂದರವಾಗಿ ಕಾಣಿಸುತ್ತದೆ)

ವ್ಯಾಸರು ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಥಮ ಬೀಜ ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ತಮ್ಮ ತಂದೆ ಪರಾಶರರಿಂದ ಮೊಟ್ಟಮೊದಲು ಉಪದೇಶವಾಗಿ ಅಕ್ಷರಾಭ್ಯಾಸದಲ್ಲೇ ಕಲಿತಿದ್ದರಿಂದ ಒಂದು ಲಕ್ಷ ಅಥವಾ ಒಂದೂ ಕಾಲು ಲಕ್ಷ ಶ್ಲೋಕಗಳ ಮಹಾಭಾರತ ರಚನೆ ಮಾಡಲು ಶಕ್ತರಾದರೆಂಬ ವಿಷಯ ಕಾವ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗೆ ವ್ಯಾಸದಾಸನೆನಿಸಿದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ಪಾಠ ಪಾರಾಯಣಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧಿಯಾಗಿರಬೇಕು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ವ್ಯಾಸರು ಬೆಳೆದಂತೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ವ್ಯಾಸರಿಬ್ಬರಿಂದಲೂ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಬೆಳೆದಿದ್ದಾನೆ ಮತ್ತು ಅವರನ್ನು ಬೆಳೆಸಿದ್ದಾನೆ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಪ್ರಚೇತಸ್ ಎಂಬ ಬ್ರಹ್ಮಪುತ್ರ ಪ್ರಜಾಪತಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವನು. ಸಹವಾಸ ದೋಷದಿಂದ ಬೇಡರ ವೃತ್ತಿ ಹಿಡಿಯಬೇಕಾಗಿ ಬಂದುದೂ ಕ್ಷಾಮ ಡಾಮರಗಳ ಆಪತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಋಷಿ ವಾಕ್ಯದಿಂದ ತನ್ನ ಪೂರ್ವಸ್ಥಿತಿ ಅರಿವಾಗಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ತೊಡಗಿದನು. ಅಚಲ ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಇವನ ಸುತ್ತ ಗಿಡ ಗಂಟಿಗಳು, ಗೆದ್ದಲು ಹತ್ತಿ ಹುತ್ತ ಬೆಳೆದು, ಋಷಿಗಳ ಸಹಾಯದಿಂದ ಹುತ್ತದಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದು ಬಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಾದ. ಪತಂಜಲಿ ಮಹರ್ಷಿ ಹೀಗೆಯೇ ನೆಲದೊಳಗೆ ಸೇರಿದ್ದು ಯಜ್ಞಕ್ಕಾಗಿ ಪುಷ್ಯಮಿತ್ರರಾಜ ನೆಲ ಅಗೆದಾಗ ಮೇಲೆದ್ದು ಬಂದು ವ್ಯಾಕರಣ ಯೋಗ ಆಯುರ್ವೇದಗಳನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿದ. ಸೀತೆಯೂ ಹೀಗೆ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಕೊಚ್ಚಿ ಹೋದ ದೇಹದಿಂದ ನೆಲದೊಳಗೆ ಸೇರಿ ಎದ್ದು ಬಂದವಳು. ರಾವಣ ಕೈಮುಟ್ಟಿದ ಎಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮೀಯ ಅಂಶವಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದ್ದ ವೇದವತಿಯೇ ತನ್ನ ಹೋಮಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಪ್ರಾಣ ಬಿಟ್ಟು ವಿಷ್ಣುವನ್ನೇ ಮದುವೆಯಾಗಲು ಪಣತೊಟ್ಟಿದ್ದ ವಿಷಯವು ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗೆ ಸೀತೆಗೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೂ ಅಚಿಂತಿತವಾದ ಒಂದು ಹೋಲಿಕೆ ಇದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮಗಳು ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಕಡೆ ಸ್ಥಾಪಿತವಾಗಿದ್ದರೂ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಸಮೀಪದ ತಮಸಾ ನದಿಯ ತಟದಲ್ಲಿ ಆತನ ಮುಖ್ಯವಾದ ಆಶ್ರಮ. ಭರದ್ವಾಜಾದಿಗಳು ಆತನ ಶಿಷ್ಯರು ಅವನು ಹಿರಿಯ ಗುರುಕುಲದ ಕುಲಪತಿ ಯಜ್ಞ, ಯಾಗ, ತಪಸ್ಸು, ಅಧ್ಯಯನ ಅಧ್ಯಾಪನಗಳಲ್ಲಿ ನಿರತ. ಈ ಪ್ರಾಚೇತಸ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅಕಲ್ಮಷ, ಸಹೃದಯ, ಕರುಣಾಳು.

ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮ ತಮಸಾ ನದಿ ತೀರ ಭಾರತದ ಪೂರ್ವ ಭಾಗದ ಪ್ರಾಚ್ಯದೇಶ. ವ್ಯಾಸರು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅವತಾರವೆನಿಸಿ ಪರಾಶರ ಮಹರ್ಷಿಯ ಜಾರ ಸಪುತ್ರರು. ಅಯೋನಿಜೆಯಾದ ಸತ್ಯವತಿಯ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದವರು ಇವಳ ಸಾಕು ತಂದೆ ದಾಶರಾಜ. ಇವರು ಹುಟ್ಟಿದುದು ಗಂಗಾನದಿಯ ಒಂದು ನಡುಗಡ್ಡೆ. ಎಲಚಿ ಮುಳ್ಳು ಮರಗಳ ಪೊದೆಗಳ ದ್ವೀಪ ಅದು. ಇದು ನಮ್ಮ ಭಾರತ ದೇಶದ ನಡುರೇಖೆಯಂತಿರುವ ಸಬರ್‌ಮತಿ ಅಥವಾ ಶರಾವತಿ ನದಿಯ ಪಶ್ಚಿಮಕ್ಕೆ ಇದೆ. ಭಾರತದ ದಕ್ಷಿಣ ಪೂರ್ವಭಾಗದ ಮೂಲ ಸಾಹಿತ್ಯ ಶೈಲಿ ವೈದರ್ಭಿ ಇದು ಮಾದುಮಧುರ. ಬಂಗಾಳದ ಕಡೆಗೆ ಸಾಗಿದರೆ ಈ ಶೈಲಿ ಶಬ್ದಾಡಂಬರದ್ದು. ಪಶ್ಚಿಮದ ವ್ಯಾಸರ ಶೈಲಿ, ಪಾಂಚಾಲೀ ಶೈಲಿ ಇದು ಮಿಶ್ರ ಶೈಲಿ, ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದು ಉತ್ತರದ ಕಾಶ್ಮೀರದ ಶೈಲಿಯಾದರೂ ದಕ್ಷಿಣದ ವೈದರ್ಭ ಕಾಳಿದಾಸನ ಉಪಮಾಲಂಕಾರ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಮೃದು ಮಧುರ ಶೈಲಿ ಇದು ಇವನಿಗೆ ಒಲಿದಿದೆ. ಕರ್ನಾಟಕದಿಂದ ಕಾಶ್ಮೀರಕ್ಕೆ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಹೋಗಿ ನೆಲೆಸಿದ ಪ್ರಭಾವ ಇದಿರಬೇಕು.

[ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಜನರಿಗೆ ಮನ ಮುಟ್ಟುವಂತೆ ಹೇಳುವ ಆಲಂಕಾರಿಕ ಕಥನಕಲೆ ವ್ಯಾಸರಿಂದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಗೆ ಸಿದ್ಧಿಸಿದೆ. ಚಿಕ್ಕ ಚೊಕ್ಕ ಮಾತುಗಳು ನೀತಿಗಳು ಕಥೆಯ ಬೆಲೆಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಿವೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಈಗಿನ ಪ್ರತಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಿಗದಂತಹ ಹಲವಾರು ವಿಷಯಗಳು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿವೆ. ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥಾ ಶಬ್ಧ ವಿಸ್ತಾರ ಬಿಟ್ಟು ರಸವಿಸ್ತಾರ ಮಾಡಿರುವ ಚಮತ್ಕಾರ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದು. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕಿಂತ ರಾಮಾಯಣಮಂಜರಿ ಓದುವುದು ಲೇಸು.

ಈಗ ಈ ವಿಶೇಷಗಳನ್ನು ಪಟ್ಟಿಮಾಡಿ ಕೆಲವು ಸ್ವಾರಸ್ಯಕರ ಮತ್ತು ವಿಶೇಷಗಳನ್ನು ಈ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗುವುದು.]

ಮೂಲ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಸರಿಯಾಗಿ ಇನ್ನೂರು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸಾರವಾಗಿ ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಿ ಎತ್ತಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಇವುಗಳಿಗೆ ತಕ್ಕ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿರುವುದು ಇವನ ವಿಶೇಷ.

ಇದರಲ್ಲಿ ಋಷ್ಯಶೃಂಗೋಪಾಖ್ಯಾನ ಮೊದಲನೆಯದು. ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ 'ಋಶ್ಯ' ಎಂದಿರುವುದು ಇಲ್ಲಿ ಲಿಪಿಯಲ್ಲಿ ಋಶ್ಯ ಆಗಿದೆ. ಈ ಋಶ್ಯ ಎಂಬುದು ಒಂದು ಸುಂದರ ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡದಲ್ಲೂ ಋಷ್ಯ ಮೂಕ ಎಂದೇ ಹಂಪೆಯನಾಡಿನ ಬೆಟ್ಟದ ಹೆಸರು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಅಮರ ಕೋಶದ ಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿ ಟೀಕೆಯೂ ಇದನ್ನೇ ದೃಢಪಡಿಸಿದೆ. ಆಖ್ಯಾನ ಆಖ್ಯಾಯಿಕೆಗಳು ಇತಿಹಾಸವಾಗಿ ಉಪಲಬ್ಧವಾದ ನೇರವಾದ ವಿಷಯಗಳ ನಿರೂಪಣೆ, ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಂಗಕ್ಕೆ ಆವಶ್ಯಕವಾದ ಇತಿಹಾಸಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಉಪಾಖ್ಯಾನವೆನಿಸುತ್ತದೆ. ರಾಮಾವತಾರಕ್ಕೆ ಋಶ್ಯ ಶೃಂಗ ಮಾಡಿಸುವ ದಶರಥನ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿ ಉಪವಿಷಯವಾಗಿದೆ. ಈಚಿನ ವಿದ್ವಾಂಸರಲ್ಲಿ ಕೆಲವರು ಇಂತಹವುಗಳನ್ನು ತಮಗೆ ಬೇಡವೆನಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತವೆಂದು ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ. ನಿಕ್ಷಿಪ್ತ ಎಂದರೆ ಒಳಗೆ ಸೇರಿಸಿದುದು ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತ ಎಂದರೆ ಹೊರಗೆಸೆದುದು ಎಂಬ ಶಬ್ದಾರ್ಥ ರಹಸ್ಯ ಇಂದಿನವರಿಗೆ ತಿಳಿದಿರತಕ್ಕದ್ದು. ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಇದು ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತವೂ ಅಲ್ಲ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತವೂ ಅಲ್ಲ, ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಇರುವಂತಹುದು. ಆಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾದುದು ಉಪಖ್ಯಾನ.

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ರಾವಣವಧಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮಚರಿತೆ. ನಿಜವಾಗಿ ತಿಳಿಯಬೇಕಾದುದು ಸೀತೆಯ ಚರಿತೆ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ.

**"ಕಾವ್ಯಂ ರಾಮಾಯಣಂ ಕೃತ್ಸ್ನಂ ಸೀತಾಯಾಶ್ಚರಿತಂ ಮಹತ್"**
(ರಾಮಾ–ಬಾಲ–4–7)

ಕರುಣಾಮೂರ್ತಿ ಸೀತೆಗೆ ಆಶ್ರಯ ಕೊಟ್ಟು ಕಾಪಾಡಿದ ಕರುಣಾಳು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಸೀತೆಯ ಆದರ್ಶ ಮುಖ್ಯವಲ್ಲವೆ. ಹೆಸರಿಗೆ ರಾಮಾಯಣ. ಇದಕ್ಕೂ ಮೊದಲು ಕೊಟ್ಟ ಹೆಸರು ಲೋಕದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ರಾವಣವಧ ಕಾವ್ಯ ಆಸುರೀ ಸಂಪತ್ತಿನ ಮೇಲೆ ದೈವೀ ಸಂಪತ್ತಿನ ವಿಜಯ ಇಲ್ಲಿದೆ. ಸೀತಾದೇವಿಯ ನಿಶ್ಚಲ ಮನೋವೃತ್ತಿಯೇ ಸೀತಾ ಚರಿತೆಯ ಸಾರ. ಸೀತೆಗಾಗಿ ರಾಮ, ರಾಮನಿಗಾಗಿ ಸೀತೆಯಲ್ಲ ಎಂಬುದು ಕವಿಯ ಭಾವ. ರಾವಣ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸದಿದ್ದರೆ, ರಾವಣವಧಕ್ಕೆ ಒಂದು ನೆಪ ಸಿಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ರಾಮನು ಮಾಯಾಮಾರೀಚೆ ಮೃಗವನ್ನು ಹೊಡೆದುದೂ ಸೀತೆಗಾಗಿ, ಸೇತು ಕಟ್ಟಿಸಿದುದೂ ಸೀತೆಗಾಗಿ ಕಾಡಿಗೆ ಅವಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದೂ ಅವಳ ಬಸುರಿನ ಬಯಕೆಗಾಗಿ. ಪ್ರಜಾವತ್ಸಲ ರಾಮನು ಸೀತಾವತ್ಸಲನೂ ಅಹುದು. ಈ ಮಾತು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಇಂಡೋನೇಶಿಯಾದ ಬಾಲಿದ್ವೀಪ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ "ಸೀತಾವತ್ಸಲ ರಾಘವಃ" ಈ ವಿಷಯ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕಿಂತ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ತನಗಿಂತ ಸೀತೆಯೇ ತನ್ನ ಸ್ಥಿರಗುಣಗಳಿಂದಾಗಿ ಮೇಲು ಎಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುವುದೇ ರಾಮನ ಮುಖ್ಯೋದ್ದೇಶ್ಯ ಎನ್ನುವುದೇ ರಾಮಾಯಣವು ಸೀತಾಚರಿತೆ ಎನ್ನಲು ಮುಖ್ಯ ಕಾರಣ. ರಾಮ ತನ್ನ ಅಂತರಂಗ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ತಾನಾಗಿ ಹೊರಗಡೆ ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ, ಇತರರಿಂದ ಅದೇ ಅಭಿಪ್ರಾಯಬಂದಾಗ ಅದರಂತೆ ನಡೆಯುವುದು ಅವನ ಗುಣ. ಮನುಷ್ಯರಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದುದು ದೇವತೆಗಳ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯಂತೆ, ತಾಟಕಾವಧ ವಿಶ್ವಮಿತ್ರರ ಆಣತಿಯಂತೆ, ಸೀತಾ ವಿವಾಹ ಜನಕರಾಜನ ಮಾತಿನಂತೆ, ಪರಶುರಾಮನನ್ನು ಎದುರಿಸಿದುದು ವಸಿಷ್ಠರ ಮಾತಿನಂತೆ, ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಹೊರಟುದು ಕೈಕೇಯಿ ಹೇಳಿದ ಮಾತಿನಂತೆ, ಭರತನಿಗೆ ಪಾದುಕಾ ಪ್ರಧಾನ ಮಾಡಿದುದು ಭರತನ ಇಚ್ಛೆಯಂತೆ, ಚಿತ್ರ ಕೂಟದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸಿದುದು ಭರದ್ವಾಜರ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ, ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ

ದಕ್ಷಿಣಭಾರತ ಪೂರ್ತಿ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಅಲ್ಲಲ್ಲೇ ಹೋಗಿ ಸಂಹರಿಸಿದುದು ಋಷಿಗಳ ಮಾತಿಗೆ ಒಪ್ಪಿದುದರಿಂದ, ಮಾಯಾಮೃಗವನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿದುದು ಸೀತೆಯ ಮಾತಿನಿಂದ, ಶಬರಿಯನ್ನೂ ಕಂಡುದು ಕಬಂಧನ ಮಾತಿನಿಂದ, ಸುಗ್ರೀವ ಸುಖ್ಯ ಮಾಡಿದುದು ಆಂಜನೇಯನ ಮಾತಿನಿಂದ, ವಾಲಿವಧೆ ಸುಗ್ರೀವನ ಮಾತಿನಂತೆ, ಶತ್ರು ಪಕ್ಷದ ವಿಭೀಷಣನ್ನು ತನ್ನ ಪಕ್ಷಕ್ಕೆ ಕೊಂಡದ್ದು ಹನುಮಂತನ ಮಾತಿನಿಂದ, ಸೇತು ಬಂಧನ ಮಾಡಿಸಿದ್ದು ಸಮುದ್ರ ರಾಜನ ಮಾತಿನಿಂದ, ರಾವಣನನ್ನು ಕೊಂದುದು ಅಗಸ್ತ್ಯರು ಕೊಟ್ಟ ಆದಿತ್ಯ ಹೃದಯ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರದ ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡು ಎಂದು ಮಾತಲಿ ಹೇಳಿದುದರಿಂದ, ಸೀತೆಯನ್ನು ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿದುದು ಅಗ್ನಿದೇವನ ಮಾತಿನಿಂದ, ಮುಂದೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾದುದು ಪ್ರಜೆಗಳ ಭರತನ ತಾಯಂದಿರ ಸರ್ವ ಸಮ್ಮತಿಯಿಂದ, ಸೀತೆಯನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಆಶ್ರಮದ ಬಳಿ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಡಿಸಿದುದು ಒಬ್ಬ ಪ್ರಜೆ ಅಗಸನ ಮಾತಿಗೆ ಬೆಲೆ ಕೊಟ್ಟುದು ಮತ್ತು ಸೀತೆಯ ಬಯಕೆಗಾಗಿ, ಈ ಮುಂದೆ ಅಶ್ವಮೇಧ ಮಾಡಿದುದು ಋಷಿಗಳ ಧರ್ಮದ ಮಾತಿನಂತೆ, ಸೀತೆಯು ಧರಣಿಗೆ ಇಳಿದು ಹೋದಾಗ ಲವಕುಶರನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದುದು ಆಗಿನ ಬ್ರಹ್ಮನ ವಾಣಿಯಿಂದ, ಭರತನನ್ನೇ ಯುವರಾಜನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದುದು ಕೈಕೇಯಿಗೆ ದಶರಥ ಹಿಂದೆ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದವರದ ಮಾತಿನಿಂದ, ಅನಂತರ ವೈಕುಂಠಕ್ಕೆ ಹಾರಿದುದು ಕಾಲ ಪುರುಷನ ಮಾತಿನಿಂದ, ಹೀಗೆ ರಾಮ ತನ್ನ ಇಷ್ಟವನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದ, ಆದರೆ ಸೀತೆ ಕಪಟವಿಲ್ಲದ ನಡತೆಯವಳು, ಯಾರಿಗೂ ಅವಳು ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡ ಪ್ರಸಂಗ ಯಾವ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ. ರಾಮನ ಬಗ್ಗೆಯೂ ಅವಳಿಗೆ ಕೋಪವಿಲ್ಲ ತನ್ನಧೀರನಡತೆಯಿಂದ ಬಂದ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡವಳು ರಾಮನಿಗೆ ಹೃತ್ಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ನೀತಿ ಅರುಹಿದವಳು, ರಾಮನು ಹತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ದಂಡಕಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಹೆಕ್ಕಿ ಹೆಕ್ಕಿ ಕೊಂದು ಬಂದಾಗ, ಅದನು ಮಾಡಿದುದನ್ನು ಇವಳು ನೇರವಾಗಿ ತಪ್ಪು ಎನ್ನುತ್ತಾಳೆ. ಅರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಿಂದಿನಿಂದಲೂ ಇದ್ದವರು ಇವರು ನಾವು ಹೊಸಬರು ಆಶ್ರಮ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ೧೪ ವರ್ಷಗಳ ವನವಾಸ ಮುಗಿಸಿ ನೆಮ್ಮದಿಯಾಗಿ ಹಿಂತಿರುಗೋಣ, ರಾಕ್ಷಸರು ನಮಗೇನೂ ತೊಂದರೆ ಮಾಡಿಲ್ಲ ಅವರ ಉಸಾಬರಿ ಏಕೆ, ಇದರಿಂದ ನಮಗೆ ಮುಂದೆ ಅನರ್ಥಗಳು ಬರುವುವು ಎಂದು ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಾಳೆ, ರಾಮ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದೇನೆ ಋಷಿಗಳಿಗಾಗಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯರು ಸತ್ಯವ್ರತರು ಎಷ್ಟೇ ಕಷ್ಟ ಬಂದರೂ ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ಶೋಧನೆ ನಾನು ಬಿಡಲಾರೆ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ, ಸೀತೆಗೆ ಏಳುನೂರು ರಾಕ್ಷಸಿಯರು ಪ್ರತಿದಿನ ಹಿಂಸೆ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದರೂ ಅವರಿಗೆ ಹನುಮಂತ ಶಿಕ್ಷಿಸಬೇಕೆಂದಾಗ ಸೀತೆ ಅವರದೇನೂ ತಪ್ಪಿಲ್ಲ ಎನ್ನುತ್ತಾಳೆ, ರಾವಣ ಹೇಳಿದ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದಷ್ಟೇ ಅವರ ಕರ್ತವ್ಯವಾಗಿತ್ತು. ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ತಪ್ಪು ಮಾಡದವರಾರು? ಆರ್ಯ ಮರ್ಯಾದೆಯಿರುವವರು ಕ್ಷಮಿಸಬೇಕು ತಪ್ಪಿತಸ್ತರಿಗೆ ಕರುಣೆ ತೋರಬೇಕು ಎನ್ನುತ್ತಾಳೆ. ಇಷ್ಟು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ರಾಮನ ಯಜ್ಞ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಹಿಂದೆ ಮಗಳಂತೆ ಬಂದ ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿಯೂ ನೋಡುವುದಿಲ್ಲ, ನೆಲವನ್ನೇ ನೋಡುತ್ತಿರುತ್ತಾಳೆ ರಾಮನು ಸೀತೆ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಲಿ ಎಂದಾಂಗ ಕಪಟವಿಲ್ಲದೆ ಮೂರು ಬಾರಿ ನ್ಯಾಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವಂತೆ ರಾಮನನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟು ನನಗೆ ಬೇರೆ ಯಾರಲ್ಲೂ ಮನಸ್ಸು ಎಂದಿಗೂ ಹೋಗಿಲ್ಲ ಎನ್ನುತ್ತಾಳೆ. ಅಗ್ನಿ ದೇವನು ಸೀತೆ ಪರಿಶುದ್ಧಳೆಂದು ಅಂದು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿದ್ದವರಿಗೆ ಗೊತ್ತು ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರಿಗೇನು ಗೊತ್ತು ಪಾಪ! ಒಬ್ಬ ಅಗಸ ತನ್ನ ಹೆಂಡತಿಗಾಗಿ ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ತಪ್ಪು ಮಾತಾಡಿ ಬಿಟ್ಟ ಆದುದು ಅಷ್ಟೇ, ಪ್ರಜಾಪಾಲಕ ರಾಮ ತನ್ನ ಸ್ವಂತಿಕೆಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿದ್ದ, ಇದೆಲ್ಲ ಇರಲಿ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ನಡತೆ ಮೆಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದುದು ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿಯೂ ನೋಡಲಿಲ್ಲ ಎಂಬ ಅಂಶ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿದೆ, ಏಕೆ ಎನ್ನುವ ಕಾರಣ ಅಲ್ಲಿಲ್ಲ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.

1. ಸೀತಾ ರಾಮರದು ಅಚಲ ದಾಂಪತ್ಯ, ಪರನಾರಿಯನ್ನು ಪರಪುರುಷರನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿ ನೋಡದ ಐಕಮತ್ಯ, ಈ ಐಕಮತ್ಯ ರಾಮನಿಂದ ಭಂಗವಾಗಿದೆ; ಸೀತೆಯಿಂದಲ್ಲ, ರಾಮ ಸೀತೆಗೆ ಸ್ವರ್ಣಸೀತೆ (ರೋಬೋ)ಯನ್ನು ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ವಿಷಯ ತಿಳಿದಿತ್ತು, ರಾಮನನ್ನು ನೋಡಿದರೆ ಸವತಿಯನ್ನೂ ನೋಡಬೇಕಾಗುವುದು ಏಕ ಪತ್ನೀವ್ರತಸ್ಥ ಹೀಗಾದಲ್ಲಾ ಅವನನ್ನು ನೋಡುವುದು ತರವಲ್ಲ, ಇಷ್ಟು ಮಾತ್ರವಲ್ಲ ಸವತಿ ಸ್ವರ್ಣಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಸೀತೆಗೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಅಸೂಯೆಯೂ ಉಂಟಾಗಿತ್ತು, ಹೀಗಾಗಿ ಅವಳು

ದೃಢ ನಿರ್ಧಾರದಿಂದ ನೆಲವನ್ನೇ ನೋಡುತ್ತ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಹಿಂದೆ ಮರೆಯಾಗಿಯೇ ಇದ್ದಳು ಎಂಬ ಹೊಸ ವಿಷಯವನ್ನು ಮಂಜರೀಕಾರ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಹೊರಗೆಡಹಿದ್ದಾನೆ, ಪತಿ ತಪ್ಪು ಮಾಡಿದರೂ ತಾನು ತಪ್ಪು ಮಾಡಲಾರೆನೆಂಬ ದೃಢತೆ ಸೀತೆಯದು ಈ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ಕೊನೆಯ ಪುಟ ಎಂದು ಎಲ್ಲ ರಾಮಾಯಣಗಳೂ ಹೇಳುತ್ತವೆ. ಆದರೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಇದನ್ನೂ "ವಸುಧಾ ಪ್ರವೇಶ" ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಭೂಮಿತಾಯಿಯ ಮಡಿಲಿಂದ ಎದ್ದು ಬಂದವಳು ತಾಯಿಯ ಮಡಿಲಿಗೇ ಸೇರಿದಳು. ಭೂಪತಿ ಎನಿಸಿದ ರಾಮ ಬಿದ್ದ; ಭೂತಾಯಿಯ ಮಡಿಲ ಸೇರಿದ ಸೀತೆಗೆದ್ದಳು; ಇದು ಕವಿಯ ಆಶಯ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸೀತೆಗೆ ಆಸರೆಯಾದಂತೆ ಸೀತೆಯ ಚರಿತೆಗೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಆಸರೆ.

ಸೀತೆಯ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯ ಅಂತರಾರ್ಥ ಜನರಿಗೆ ಅಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯಿತೋ ಇಲ್ಲವೋ! ಆದರೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅವಳ ತಾಯಿ ಭೂದೇವಿ ಅಷ್ಟನಾಗಗಳ ಸಿಂಹಾಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ಮೇಲೆದ್ದು ಬಂದು ಸೀತೆಯನ್ನು ತಬ್ಬಿ ತನ್ನ ಮಡಿಲಲ್ಲಿ ಇರಿಸಿಕೊಂಡು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುವ ಅದ್ಭುತವೇ ಇಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರೂ ನೋಡಿದ್ದು ಸೀತೆ ತನ್ನ ಮಹಾಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯನ್ನು ನೆರವೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಭೂತಾಯಿಯನ್ನೇ ಬೇಡಿಕೊಂಡಳು ಮಗಳಿಗೆ ತಾಯಿ ಒತ್ತಾಸೆಯಾದಳು. ರಾಮನು ಚಡಪಡಿಸಿದ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಮತ್ತೆ ಪಡೆಯಲು ಭೂಮಿಯನ್ನೇ ಸೀಳುವೆನೆಂದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರಲಾರದ ಅನನ್ಯ ಸಂಬಂಧ ಇದು ಇದು ಈಗ ಅವನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸಿತ್ತು. ದೇವತೆಗಳು ಬ್ರಹ್ಮನು ಭೂಮಿಯ ಅಶರೀರವಾಣಿ ಇವೆಲ್ಲವೂ ರಾಮನನ್ನು ತಡೆದುಬಿಟ್ಟವು. ರಾಮ ಸೋತ, ಸೀತೆ ಗೆದ್ದಳು, ರಾಮ ಸೀತೆಯೊಡನಿರಲು ಬಯಸಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಮತ್ತೆ ತನಗೆ ತೋರು ಎಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡರೂ, ಭೂಮಿ ಸೀತೆಗೆ ಬಿಲವನ್ನು ತೋರು ಎಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡರೂ, ಭೂಮಿ ಸೀತೆಗೆ ಬಿಲ ತೋರಿದಂತೆ ರಾಮನಿಗೆ ತೋರಲಿಲ್ಲ ಸೀತೆಯಿಲ್ಲದಿದ್ದರೇನು; ಸೀತೆಯ ಮತ್ತು ನಿನ್ನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬದಂತಿರುವ ಲವಕುಶರನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾ ಸಂತೋಷದಿಂದಿರು ಎಂಬ ಅಶರೀರವಾಣಿ ರಾಮನಿಗೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಸಮಾಧಾನ ಕೊಡುತ್ತದೆ. ಈ ಮುಖ್ಯ ವಿಷಯವನ್ನು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಕವಿ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಬಿಡದೆ ಮೂಲರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕನ್ನಡಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿದಂತೆ ಸ್ಪಷ್ಟ ಚಿತ್ರಣ ಕೊಡುತ್ತಾನೆ.

2. ರಾಮಾಯಣದ ಬೀಜ ಶ್ಲೋಕ ಭರತಖಂಡದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ.

**ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂತ್ವಂ ಅಗಮಃ ಶಾಶ್ವತೀಸ್ಸಮಾಃ ।**
**ಯತ್ ಕ್ರೌಂಚಮಿಥುನಾದೇಕಂ ಅವಧೀಃ ಕಾಮಮೋಹಿತಂ ॥**
ರಾ.ಬಾ. 2–15

ಇಲ್ಲಿಯ 'ಅಗಮಃ' ಎಂಬ ಪದಕ್ಕೆ ಬದಲು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ 'ಅಲಬ್ಧಾಃ' ಎಂಬ ಪದವಿದೆ. ಇದು ಮೂಲದ ಅಕ್ಷರಾನುವಾದವಾಗಿದ್ದರೆ, ಬದಲಾವಣೆಗೆ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲ ಸ್ವಂತ ಕವಿತೆಯಾದರೆ ಮೂರು ಪದಗಳಿಗಿಂತ ಹೆಚ್ಚು ಇತರರ ಕವಿತೆಯನ್ನು ಬಳಸುವಂತಿಲ್ಲ ಎಂಬುದು ಕಾವ್ಯ ಮೀಮಾಂಸೆಯ ನಿಯಮ. ಇರಲಿ ಇದು ಕವಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿದ ಮೂಲ ಪಾಠವೇ ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಿ ಹೀಗಿದ್ದಿರ ಬಹುದು. ಇಂತಹ ಪಾಠ ಸಂಹಿತಾಭೇದಗಳಿಗೆ ಗುರುತು ಗಾಂಧಾರ ದೇಶದ ಈಗಿನ ಆಫಘಾನಿಸ್ತಾನದ ಪಾಠವೂ ಒಂದು ಉದಾಹರಣೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಮೊದಲ ಶ್ಲೋಕ **ತಪಸ್ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ನಿರತಂ** ಎಂಬುದು ಅದರಲ್ಲಿ ಈಗಿರುವಂತೆ ಇಲ್ಲ. ಕೂರ್ಮ ಪುರಾಣವು ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣಗಳಿಗೆ **"ಚತಸ್ರಃ ಮೂಲ ಸಂಹಿತಾಃ"** ಎಂದು ವಿಭಾಗ ಕಾಣಿಸಿದೆ. ಪಾಠ ಭೇದಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪಿರುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಮೂಲತಃ ನಾಲ್ಕು ಪಾಠಗಳಿವೆ ಎಂದು ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕವಾಗಿ ಒಪ್ಪಬಹುದು. ರಾಮ ಸೀತೆಯರಿಬ್ಬರೂ ಪರಸ್ಪರ ಸ್ವಂತ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಸಿಲಿಕಿದ್ದು, ರಾಮಾಯಣದ ಕರುಣ ರಸಕ್ಕೆ ಒಂದು ಮೂಲಭಾವವಾಗಿದೆ ಎಂಬುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮನೋವೇದನೆ. ಇದು ಕ್ರೌಂಚ ಪಕ್ಷಿ ಮಿಥುನದ ಉಪಮೆಯಿಂದ ಹೊರಹೊಮ್ಮಿದೆ. ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಿಗೆ ಶೃಂಗಾರ ಮತ್ತು ವೀರರಸಗಳು ಮುಖ್ಯವಾಗಿರಬೇಕೆಂದು ಸಾಹಿತ್ಯ ಲಕ್ಷಣ ಶಾಸ್ತ್ರ ಅಗ್ನಿ ಪುರಾಣದಲ್ಲೂ ಇದೆ ಆದರೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಶೃಂಗಾರದಲ್ಲಿ ವಿಪ್ರಲಂಭ ಶೃಂಗಾರವನ್ನೂ

ವೀರವನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಒಟ್ಟು ವೃತ್ತಾಂತದಲ್ಲಿ ಕರುಣ ರಸವನ್ನು ರಮಣೀಯಗೊಳಿಸಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿಸಿದ್ದಾನೆ ಹೀಗೆ ವ್ಯಾಸರು ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಶಾಂತರಸದಲ್ಲಿ ಆಖ್ಯಾನ ಕೊನೆಗೊಳಿಸಿದ್ದಾರೆ ಲಾಕ್ಷಣಿಕರ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಇವು ಹೊಸ ಪ್ರಯೋಗಗಳು. ನಾವು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಓದಿ ತಿಳಿದು ಅನುಭವಿಸಿದಾಗ ರಾಮನ ಬಗ್ಗೆ ನಮಗೆ ಅಯ್ಯೋ! ಎನಿಸುವುದು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಕಳಿಸಿದಾಗ ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಅಯ್ಯೋ ಎನಿಸಿದಂತೆ. ಸೀತೆಯ ವಸುಧಾ ಪ್ರವೇಶವಾದ ಮೇಲೆ ರಾಮನ ದುಃಖ ಮತ್ತು ಕೋಪಕ್ಕೆ ಸವಾಲಾದ ಆಕಾಶವಾಣಿಗಳು ಒಂದಷ್ಟು ಸಮಾಧಾನ ಕೊಡಬಹುದು.

3. ಆಕಾಶವು ಎಂದಿಗೂ ಬಿಡಲಾಗದ ಹಗಲು ರಾತ್ರಿಗಳಂತೆ, ರಾಮನು ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಬಿಡಲಾರೆ ಎಂದ ಮಾತು ವ್ಯರ್ಥವಾಯಿತು. "ತ್ವಾಂ ವಾ ಸೀತೇ! ಸಲಕ್ಷ್ಮಣಾಂ" ನಿನ್ನನ್ನೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನೂ ಬಿಟ್ಟರೂ ಸಜ್ಜನ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ಕೊಟ್ಟ ಮಾತು ತಪ್ಪಲಾರೆ ಎಂಬ ಹಠ ಮತ್ತು ರಾಮರಾಜ್ಯವೆಂಬ ಕೀರ್ತಿ ಕಾಮನೆ ರಾಮನಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿತ್ತು ಎಂಬ ಮಾತು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಮಾತಿನಿಂದಲ್ಲೇ ತಿಳಿದುಬರುವದು.

**ನಿರ್ದೋಷಾಂ ಭಗ್ವನ್ ಜಾನೇ ಜಾನಕೀಂ, ಜನ ಸಂಭವಾತ್ ।**
**ಅಪವಾದ ಭಯಾತ್ ತ್ಯಕ್ತಾ ಕೀರ್ತಿಲುಬ್ಧೇನ ಕೇವಲಂ ॥**
(ರಾ. ಮಂ. ಉತ್ತರಕಾಂಡ 1185 ಶ್ಲೋಕ)

4. ಸೀತೆಯ ಪ್ರಸಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟು ಹೇಳಿದರೂ ಪುನರುಕ್ತಿಯಿಲ್ಲ ಒಂದೊಂದು ಹೊಸ ಅಂಶವಿರುತ್ತದೆ. ಸೀತೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮಗಳಂತೆ ಅವನ ಜತೆ ಯಜ್ಞ ಸಭೆಗೆ ಬಂದಾಗ ಅವಳ ಕಣ್ಣು ಕೆಂಪಾಗಿ ಕಣ್ಣೀರು ಬಂದಿತ್ತು. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವೊಂದು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲವಾದರೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.

ಶಿಲ್ಪಿಗಳು ನಮ್ಮ ಈ ಕಾಲದ ರೋಬೋ ಯಂತ್ರ ಮಾನವನಂತೆ ಚಿನ್ನದ ಯಂತ್ರ ಸೀತೆಯನ್ನು ಮಾಡಿ ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದ್ದರು. ವನದಿಂದ ನಿಜವಾದ ಸೀತೆಯೇ ಬಂದಿರುವಂತಿತ್ತು, ಸೀತೆಯ ಗೊಂಬೆ ಯಜ್ಞದಲ್ಲಿ ಪತ್ನಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ ಮಂತ್ರ, ಹವಿಸ್ಸಿಗೆ ಪ್ರೋಕ್ಷಿಸಿ ಅನುಮತಿಸುವುದು, ರಾಮನ ಜತೆ ಅಗ್ನಿ ಪ್ರದಕ್ಷಿಣೆ, ಕೂರುವುದು ಏಳುವುದು, ಈ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಈ ಸುವರ್ಣ ಸೀತೆಯೇ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಳು. (ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಭೀಮನ ಯಂತ್ರ ಮೂರ್ತಿ ಬೃಹತ್ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವ ದ್ವೀಪಾಂತರ ಶಿಲ್ಪಿ, ಇತ್ತೀಚಿನ ಮೈಸೂರರಸರ ಕಾಲದ ಕುಸ್ತಿ ಮಾಡುವ ಹುಲಿಯಂತ್ರ ಗೊಂಬೆ)

ಏಕಪತ್ನೀವ್ರತಸ್ಥನಾದ ರಾಮನಿಗೆ ಈ ಸುವರ್ಣ ಸೀತೆ ಹೇಗೆ ಗಂಟುಬಿದ್ದಳು! ಎಂಬ ಸವತಿ ಮಾತ್ಸರ್ಯದಿಂದ ನಿಜ ಸೀತೆಗೆ ಕಣ್ಣು ಕೆಂಪಾಗಿತ್ತಂತೆ, ರಾಮನು ಹೀಗಾದನಲ್ಲಾ ಎಂದು ಕಣ್ಣೀರು ಬಂತಂತೆ. ಇಂತಹ ಅಪೂರ್ವ ಚಿತ್ರಣಗಳು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯ ರಮಣೀಯ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿವೆ. ರಾಮನಿಗಾಗಿ ಸೀತೆ ಅಳುವಳು ಸೀತೆಗಾಗಿ ರಾಮ ಅಳುವನು. ಇವರಿಬ್ಬರ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರೇಮವೇ ಕರುಣ ಶೃಂಗಾರ. ಇದನ್ನು ಸಾಹಿತ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರವು ವಿಪ್ರಲಂಭ ಶೃಂಗಾರ ಎನ್ನುತ್ತದೆ. ಈ ರಾಮನ ಅಳಲು ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದ ಪಂಪಾನದೀಸರಸ್ಸಿನ ಬಳಿ ರಾಮನಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ವರ್ಣಿತವಾಗಿದೆ. ವಿಪ್ರಲಂಭ ಶೃಂಗಾರ ಕರುಣಕ್ಕೆ ಪೋಷಕವಾಗುವುದು. ಇದು ಸೀತಾರಾಮರ ವಿರಹ ಕಾಲದ ನಡವಳಿಕೆ ತಿಳಿದ ಸಹೃದಯ ಸಾಮಾಜಿಕರಿಗೆ. "ಏಕೋರಸಃ ಕರುಣ ಏವ" ಎಂಬುದು ಮಹಾಕವಿ ಭವಭೂತಿಯ ಶ್ರೀಕಂಠದ ನುಡಿ, ಇಂತಹ ಸಹೃದಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪ್ರವರ ಪ್ರಾಚೇತಸ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಎದೆ ಕರಗಿಸುವ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳೇ ನವರಸಗಳಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಒಳರಸ ಕರುಣವೇ ಅಹುದು. ಇದರ ರೂಪಾಂತರಗಳೇ ಇತರ ರಸಗಳು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಹೃದಯ ಕರಗಿದುದು ಸೀತೆಯ ರೋದನದಿಂದ; ಅನಂತರ ಅವಳ ಬಾಯಿಂದಲೇ ಅವಳ ವೃತ್ತಾಂತ ಕೇಳಿದ್ದರಿಂದ ಹೀಗಾಗಿ ರಾಮಚರಿತ ಮಹಾಕಾವ್ಯ ಬರೆದ ಅಭಿನಂದ ಕವಿ ಕಥೆಯನ್ನು ಮಾಲ್ಯವಂತ ಪರ್ವತದ ನಿವಾಸದ ರಾಮನ ವಿರಹ ದುಃಖದಿಂದಲೇ ಆರಂಭಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇವನು ಮಹಾ ಸರಸ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞನಾಗಿದ್ದ ಜಯಂತ ಭಟ್ಟನ ಮಗ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯು ಸೀತಾರಾಮರನ್ನು ಒಗ್ಗೂಡಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದರೂ, ಸೀತೆ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು ಬಿಡುತ್ತಾಳೆ. ಇದು

ದೈವದ ಮುಂದೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಾಗಲಿ ರಾಮನಾಗಲಿ ಯಾರೇ ಆಗಲಿ ಸೋತರೆಂಬುದೇ ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದು ಮರ್ಮ. ಸೀತೆ ತಾಯಿ ಭೂದೇವಿಯ ಸಹಾಯದಿಂದ ಗೆದ್ದಳು.

5. ರಾಮನ ಜೀವನ ಕಷ್ಟಮಯ ದುಃಖಮಯ, ಸೀತೆಯದೂ ಅಷ್ಟೇ, ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯ ಕೊನೆಮಾತು ಇದು–

**‘ಸರ್ವಂ ದುಃಖಮಯಂ ತದಸ್ತು ಭವತಾಂ ಶ್ಲಾಘೋವಿವೇಕೋದಯಃ’**

ಓ ! ಜನರೇ ! ರಾಮಾಯಣ ಓದಿ ನಿಮಗೆ ಒಳ್ಳೆಯ ವಿವೇಕ ಬರಲಿ ಇದು ಕವಿಯ ಘೋಷವಾಕ್ಯ.

ರಾಮಾಯಶಸನೆಂಬ ವಿಪ್ರನು ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯ ಹಿನ್ನಲೆ ಸಾರವನ್ನು ಸರಸವಾಗಿ ಕೋಮಲವಾಗಿ ಹೇಳಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಾಗ; ಅವನಿಗಾಗಿ ಮೈತ್ರಿಯಿಂದಾಗಿ ಬೇರೆ ಪ್ರತಿಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ ಇಲ್ಲದೆ ಈ ಗ್ರಂಥ ರಚನೆಯಾಗಿದೆ.

ಗುಣಗಳು ಗುಣಗಳಾಗಿಯೇ ತೋರುವಾಗ ಆಶ್ಚರ್ಯವೇನಿದೆ ? ಗುಣವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಗುಣಗಳನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ನಷ್ಟವೇನು ? ಹೇಳಿದ ಗುಣವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸಿ ಅನುಸರಿಸಿ ತಮ್ಮದಾಗಿಸಿಕೊಂಡರೆ ಅವರೇ ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತ ಮಿಗಿಲಾದವರು.

ಹೀಗೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ತನ್ನ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾ ಸಾರದ ಬಗ್ಗೆ ಈ ಮಾತನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾನೋ ಅಥವಾ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗುಣವಂತರಾಗಲು ಈ ರೀತಿ ನೀತಿ ನಿರ್ದೇಶನ ಮಾಡಿರುವನೋ; ಇದು ಅವನ ಕಡೆಯ ಹೇಳಿಕೆ. ವಸ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ರಸವಿದೆಯೋ ಇಲ್ಲವೋ, “ಕವಿವಾಚಿ ರಸಃ ಸ್ವತಃ” ಕವಿ ಮಾತಿನಿಂದ ಅಲ್ಲಿ ರಸ ಭಾವನೆಯು ಉಂಟಾಗುವುದು. ರಸವುಂಟಾದಲ್ಲಿ ಗುಣಗಳು ಅಲ್ಲಿ ತಾವಾಗಿಯೇ ಹೊಮ್ಮುವುವು. **ಇದು ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಿದ್ಧಾಂತ.**

ಒಬ್ಬರಿಗೆ ವೀರ ಎಂದು ಬಿರುದು ಕೊಟ್ಟರೆ, ಅದಕ್ಕಾಗಿಯಾದರೂ ಅವನು ಸ್ವಲ್ಪ ವೀರತ್ವವನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. ಇದು ಸಮಾಜದ ಒಂದು ಎಲ್ಲೆ ಕಟ್ಟು ಮರ್ಯಾದೆ. ಹೀಗೆಯೇ ಒಬ್ಬನನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸನೆಂದು ಜನ ನಿಜ ತಿಳಿಯದೆ ಹೊಗಳಿದರೂ ಅವನು ಅದಕ್ಕಾಗಿಯಾದರೂ ವಿದ್ವತ್ತನ್ನು ಸಂಪಾದಿಸಬೇಕಾಗುವುದು. ಹೀಗೆ ಗುಣವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಗುಣವಂತರೆಂದು ನಾವು ಹೊಗಳಿದರೆ ಈ ಮಾತು ಮುಂದೆ ಆ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ಗುಣವಂತಿಕೆ ಪಡೆಯಲು ಪ್ರೇರಣೆ ಕೊಡುವುದಲ್ಲವೆ.

**ಜಿತಂ ಭಗವತಾ ತೇನ ನಿರ್ಗುಣೇನ ಗುಣಾತ್ಮನಾ ।**
**ಅಜೇನ ವಿಶ್ವರೂಪೇಣ ಹರಿಣಾ ಲೋಕ ಧಾರಿಣಾ ॥**

ಈ ಮಂಗಳ ಪದ್ಯವು ಮಂಜರಿಯ ಆದಿ ಮಧ್ಯ ಅಂತ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಅಡಿಗಡಿಗೆ ಬಂದಿದೆ. ಇದು ನಿರ್ಗುಣ ಬ್ರಹ್ಮದ ಸಗುಣತ್ವಕ್ಕೆ ರಾಮಾಯಣವೇ ನಿದರ್ಶನ ಎಂಬುದು ಕವಿಯ ದಾರ್ಶನಿಕವಾದ ಜಾಣ್ಮೆಯ ಮಾತು.

25–12–2017

ಇಲ್ಲಿ ಪರಾಶರರ ವಿಷ್ಣು ಪುರಾಣದಲ್ಲಿರುವ ಒಂದು ಪದ್ಯದ ಸಾರಾಂಶವೇ ಇದು–ಆ ಪದ್ಯ ಹೀಗಿದೆ;

**ಪರಃಪರಾಣಾಂ ಸಕಲಾ ನಯತ್ರ ಕ್ಲೇಶಾದಯಸ್ಸಂತಿ ಪರಾವರೇಶೇ ।**
**ಸಮಸ್ತ ಕಲ್ಯಾಣ ಗುಣಾತ್ಮಕೋಸೌ ಸ್ವಶಕ್ತಿ ಲೇಶೋದ್ಧೃತ ಭೂತ ಸರ್ಗಃ ॥**

ಹೀಗೆ

**ಅವಿಕಾರಾಯ ಶುದ್ಧಾಯ ನಿತ್ಯಾಯ ಪರಮಾತ್ಮನೇ ।**
**ಸದೈಕರೂಪರೂಪಾಯ ವಿಷ್ಣುವೇ ಸರ್ವಜಿಷ್ಣವೇ ॥**

ಹೀಗೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಕವಿ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ ದಾರ್ಶನಿಕನೂ ಅಹುದು ಅವನ ನಾನಾ ಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥಗಳ ರಚನೆಯಲ್ಲಿ ವೇದಾನ್ತಕ್ಕೆ ಪುರಾಣಗಳ ಉಪಬೃಂಹಣ ಮುಖ್ಯವಾದುದು. ಅದರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಈ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಂ.

ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಪ್ರಕೃತಿಯಲ್ಲಿರುವ ತ್ರಿಗುಣವಿಲ್ಲದುದರಿಂದ ನಿರ್ಗುಣ ಜ್ಞಾನ ಶಕ್ತ್ಯಾದಿ ದಿವ್ಯ ಗುಣಗಳಿರುವುದರಿಂದ ಅವನು ಗುಣಾತ್ಮ.

6. ರಾಮಾಯಣ ಪಾರಾಯಣವು ನಿತ್ಯವೂ ಭಾರತ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಮನೆ ಮನೆಗಳಲ್ಲೂ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದವು. ಪಾರಾಯಣ ಮಾಡಿದ ಫಲವನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ರಾಷ್ಟ್ರಕ್ಕೆ ಅರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದರು ಈ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಕನ್ನಡನಾಡಿನಲ್ಲಿ ಹೊಯ್ಸಳ, ಗಂಗ, ರಾಷ್ಟ್ರಕೂಟ, ಚೋಳ, ಪಾಂಡ್ಯ, ವಿಜಯನಗರ ಮೈಸೂರು ಅರಸರ ಕಾಲಗಳಲ್ಲೂ ನಿಯಮದಿಂದ ನಡೆಯುತ್ತ ಇತ್ತು ರಾಜ್ಯಕ್ಕೆ ಕ್ಷೇಮ ಸುಭಿಕ್ಷಗಳು ಆಗುತ್ತಿದ್ದವು. ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲೂ ಈ ಪದ್ಧತಿ ಇದ್ದಂತಿದೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ರಾಮಾಯಣ ಪಾರಾಯಣ ಪ್ರವಚನಗಳಿಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಕೂಲಂಕಷವಾಗಿ ತಿಳಿದು ತನ್ನದನ್ನಾಗಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದ ಎಂಬುದು ಇವನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಿಂದ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿದು ಬರುವುದು ಇತ್ತೀಚಿನವರು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಯಾರು ಯಾರೋ ಏನೇನನ್ನೋ ಸೇರಿಸಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ ಎಂದು ಮೂಲ ಪಾಠಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಅರಿಯದೆ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವ ಪ್ರಸಂಗಗಳು ಆಂಗ್ಲ ಆಡಳಿತದಿಂದೀಚೆಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಆಗಿವೆ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಬ್ರಹ್ಮಸ್ತುತಿ, ದೇವಸ್ತುತಿ, ಆದಿತ್ಯ ಹೃದಯ, ಮಂಡೋದರಿ ಸ್ತುತಿ, ಅರಣ್ಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಕಾಕಾಸುರ ವೃತ್ತಾಂತ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು, ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಮಹಾಪುರುಷದರ್ಶನ ಮುಂತಾದವು, ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತಗಳೆಂದು ತಮಗಿಷ್ಟವಿಲ್ಲದ ಇವುಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕಿಸುವ ಚಟ ಇತ್ತೀಚಿನವರ ಧಾರಣೆ, ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿವೆಯಾಗಿ, ನೂತನರ ಆಕ್ಷೇಪಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಸರಿಯಲ್ಲವೆಂದು ತೋರುವುದು.

ಕಾಕಾಸುರ ವೃತ್ತಾಂತ, ಸೀತೆಯೊಡನೆ ರಾಮನಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿದ ತಿಲಕ ಹಚ್ಚುವ ವಿಷಯ, ರಾಮನ ಅಂಗಸಾಮುದ್ರಿಕ ವಿವರಣೆ, ಈ ಮೂರು ಆಂಜನೇಯ ಸೀತೆಗೆ ನಂಬಿಕೆ ಬರಲು ತಿಳಿಸಿದವುಗಳು. ರಾಮ ಅವನಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತಿಳಿಸಿದ್ದು ಇದು ಸುಂದರಕಾಂಡ ದಲ್ಲಿರುವುದು ಸರಿ ಅರಣ್ಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಹೇಳಿದುದು ಹೇಗೆ? ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ರಾಮನ ನಡವಳಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲೇ ತಿಳಿದಂತೆ ಎರಡು ಬಾರಿ ಕಾಕಾಸುರ ವೃತ್ತಾಂತ ಬರುವುದರ ಔಚಿತ್ಯವೇನು? ಇತ್ಯಾದಿ ಆಕ್ಷೇಪಗಳು ಸಾಧಾರಣ. ಆದರೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಇವುಗಳನ್ನೂ ಅಲ್ಲಲ್ಲೇ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿದ್ದಾನೆ ಈ ಆಕ್ಷೇಪಗಳು ಅವನಿಗೆ ಮಾಡಲು ತಿಳಿಯದೆ! ತಿಳಿದು ಅದರ ಪರಿಹಾರವೂ ತಿಳಿದಿದ್ದರಿಂದ ಮಾಡಿಲ್ಲ. ಮುಂದೆ ನೋಡಿ :-

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಯೋಗ ಸಿದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ಋತಂಭರಾ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿದ್ದು; ಧರ್ಮವೀರ್ಯ ಜ್ಞಾನ ಬಲದಿಂದ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಅರಿತು ರಾಮಾಯಣ ರಚಿಸಿದ್ದು. ಯೋಗಿಗಳಿಗೆ ಸಂಪ್ರಜ್ಞಾತ ಸಮಾಧಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾಗುವ ಭಗವಂತನ ರೂಪಕ್ಕೆ "ಧರ್ಮಮೇಘ" ಎಂದು ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಹೆಸರು. ಮೋಡ ಮಳೆಗೆರೆಯುವಂತೆ ಈ ರೂಪವು ಸಕಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯದ್ ವರ್ತಮಾನಗಳನ್ನೂ ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಭೀಮಸೇನನನ್ನು ಭೀಮ ಎನ್ನುವಂತೆ ಬಲಭದ್ರನನ್ನು ಬಲ ಎನ್ನುವಂತೆ 'ಧರ್ಮ' ಎಂಬುದು ಇಂತಹ ಭಗವಂತನ ಹೆಸರು ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮನ ವರ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಆಗಿದೆ. ಅವರದೇ ಮಾತು-

**ಹಸಿತಂ ಭಾಷಿತಂ ಚೈವ ಗತಿರ್ಯಾಯಚ್ಚ ಚೇಷ್ಟಿತಮ್ ।**
**ತತ್ಸರ್ವಂ ಧರ್ಮವೀರ್ಯೇಣ ಯಥಾವತ್ ಸಂಪ್ರಪಶ್ಯಸಿ ॥**

ರಾ.ಬಾ. 3-4

ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವ ಕಾಕಾಸುರ ಪ್ರಸಂಗಾದಿಗಳು ಹೀಗೆ ತಿಳಿದಿತ್ತು ಹಾಗೂ ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಇದನ್ನು ಹನುಮಂತ ಸೀತೆಗೆ ಹೇಳಿದ್ದೂ ಹೀಗೆ ತಿಳಿದಿತ್ತು. ತಿಳಿದುದನ್ನು ಅಲ್ಲಲ್ಲೇ ಪ್ರಬಂಧೀಕರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಪುನರುಕ್ತಿಯಾಗಲಿ, ಪಲ್ಲಟವಾಗಲಿ, ಆಗಿಲ್ಲ ಎಂಬುದು ಪೂರ್ವಾಚಾರ್ಯರ ಪರಂಪರೆಯ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ತಿಳುವಳಿಕೆ.

7. ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪಾಠಗಳನ್ನೇ ಅನುಸರಿಸಿದರೂ ತನ್ನ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಒಂಬತ್ತು ಭಾಗವಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ.

ಕಾಂಡವಿಭಾಗಗಳು ಏಳು' ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಬಾಲ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಸಂಪುಟಸಹಿತ ಇವೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಬಾಲಕಾಂಡ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಬರೆಯಲಿಲ್ಲ ಎಂಬ ಮಾತು ಇತ್ತೀಚಿನವರ ಕುಹಕ.

ರಾಮಾಯಣ ಆರಂಭವಾಗುವುದೇ ಅಯೋಧ್ಯಾನಗರಿಯ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ. ಇದು ಬಾಲಕಾಂಡದ ಈಗಿನ ಐದನೆಯ ಸರ್ಗ.

**ಪರ್ವಾಪೂರ್ವಮಿಯಂಯೇಷಾಂ ಆಸೀತ್ ಕೃತ್ಸ್ನಾವಸುಂಧರಾ ।**
**ಪ್ರಜಾಪತಿಮುಪಾದಾಯ ನೃಪಾಣಾಂ ಜಯಶಾಲಿನಾಂ ॥**

ಈಗಿರುವ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಆರಂಭ ಭರತ ಕೇಕೆಯ ನಗರಕ್ಕೆ ಹೋದ ಎಂಬ ಮಧ್ಯಂತರದಿಂದ ಆಗಿರುವುದು ಹೊಂದುವುದಿಲ್ಲ. ಹೀಗಾಗಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಬಾಲಕಾಂಡ ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ ಎಂದೇ ಹೆಸರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಈಗಿನ ಬಾಲಕಾಂಡದ ನಾಲ್ಕು ಸರ್ಗಗಳು ಮಾತ್ರ ರಾಮಾಯಣ ರಚನೆಯ ಹಿನ್ನಲೆ ಗ್ರಂಥಕ್ಕೆ ಮುನ್ನುಡಿಯಂತಿದೆ ಅಷ್ಟೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯೇ ಅನಂತರ ಮುನ್ನುಡಿ ಬರೆದು ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ ಅನುಬಂಧ ಸೇರಿಸಿ ಭರದ್ವಾಜ ಮುಂತಾದ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಲವಕುಶರು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪಟ್ಟ ಶಿಷ್ಯರು ಇವರು ದೇಶವಿದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ರಾಜಾಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹಾಡಿ ತೋರಿಸಿದ್ದರೆಂದೂ ರಾಮಾಶ್ವಮೇಧದಲ್ಲಿ ತಾವು ರಾಮಪುತ್ರರೆಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಳ್ಳದೆ ಹಾಡಿದರೆಂದೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.

ಭಾರತಮಂಜರಿ ಬರೆದ ವ್ಯಾಸ ದಾಸ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ತನ್ನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ 'ಪರ್ವ' ವಿಭಾಗ ಮಾಡಿಕೊಂಡನೋ, ಅಥವಾ ಕಾಶ್ಮೀರ ಪಾಠದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಹಾಗಿತ್ತೋ ನಿಶ್ಚಯವಿಲ್ಲ. ರಾಮಾಯಣ ಮೂಲಗ್ರಂಥದ ಒಳವಿಭಾಗಗಳು ಸಾರಸಂಗ್ರಹಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಬದಲಾಗಿರುವುದುಂಟು.

| | | |
|---|---|---|
| 1. ಅಯೋಧ್ಯಾ ಕಾಂಡ | 987 | ಶ್ಲೋಕ |
| 2. ಅರಣ್ಯ ಪರ್ವ | 1158 | ಶ್ಲೋಕ |
| 3. ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಪರ್ವ | 214 | ಶ್ಲೋಕ |
| 4. ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಕಾಂಡ | 573 | ಶ್ಲೋಕ |
| 5. ಸುಂದರ ಕಾಂಡ | 705 | ಶ್ಲೋಕ |
| 6. ಯುದ್ಧ ಕಾಂಡ | 1298 | ಶ್ಲೋಕ |
| 7. ರಾಮಾಭಿಷೇಕ | 193 | ಶ್ಲೋಕ |
| 8. ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ | 1263 | ಶ್ಲೋಕ |
| 9. ಕವಿಯಸ್ವಾಪದೇಶ | 9 | ಶ್ಲೋಕ |
| **ಒಟ್ಟು** | **6400** | **ಶ್ಲೋಕ** |

ಹೀಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮಾಯಣದ 24000 (ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಾವಿರ) ಶ್ಲೋಕ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಆರು ಸಾವಿರಕ್ಕಿಳಿಸಿದರೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವು ಹಿಗ್ಗಿನಿಂದ ಹಿಗ್ಗಿರುವಂತಿದೆ. "ಪಾದಶೇಷ" ನಾಲ್ಕನೆಯ ಒಂದರಷ್ಟಕ್ಕೆ ಭಟ್ಟಿ ಇಳಿಸಿದ ರಸಪಾಕ ಶ್ರೀಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಈ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಮೌಷದ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿಯು ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ್ದೆಲ್ಲ ಅಯೋಧ್ಯಾ ಕಾಂಡದ ಮೊದಲ ಭಾಗಕ್ಕೆ ಸೇರಿ ದಶರಥ ವಿಪತ್ತಿನವರೆಗೆ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಪುರವಣಿಯಾಗಿದೆ. ರಾಮನ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲಿ ಅರಣ್ಯ ಪರ್ವಕ್ಕೆ ಸೇರಿದೆ. ಕಾಂಡವೆಂದರೆ ದೊಡ್ಡ ಕೊಂಬೆ ಅದರ ಗಿಣ್ಣುಗಳು ಪರ್ವಗಳು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ಪ್ರವೇಶದಿಂದ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ ಆರಂಭ. ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸಮಕಾಲಿಕ ಭೋಜರಾಜನ ಚಂಪೂ ರಾಮಾಯಣವೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ವಿಭಾಗಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿದೆ ಕರ್ಣಾಟಕ ಕವಿಚೂತವನ ಚೈತ್ರ ಎಂಬ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆಯ ದೇವನೂರಿನ ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ ಮಹಾಕವಿಯೂ ಕೂಡ "ದುರ್ಧರದರಣ್ಯ ಪ್ರವೇಶಯಂ ಮಾಡಿದಂರಾವಣಾಂ" ಎಂದೇ ಹೇಳಿ ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ಪ್ರವೇಶದಿಂದ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ 'ಪರ್ವ' ಎಂದು ಬಿಡಿಸಿದ್ದು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಔಚಿತ್ಯಪೂರ್ಣ ವಿಭಾಗ. ಸಾಹಿತ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದು "ಔಚಿತ್ಯ ಸಿದ್ಧಾಂತ" ಸರ್ವಸಮಾನ್ಯ.

ಭರತನನ್ನು ಕೇಕೆಯ ದೇಶದಿಂದ ಕರೆತರುವ ಪ್ರಸಂಗದಿಂದಲೇ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಅರಣ್ಯ ಪರ್ವದ ಆರಂಭ.

8. [ಹೀಗೆ ಸೀತಾ ವಿಯೋಗದಿಂದ ವಸನ್ತ ಋತುವಿನ ಮಲಯ ಮಾರುತಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿ ಅಳುತ್ತಿದ್ದರೂ, ಧೀರನಾಗಿ ಧನುರ್ಧಾರಿಯಾದ

ರಾಮನ ಜತೆಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೂ ಇರುವುದನ್ನು ಕಂಡು, ಸುಗ್ರೀವನು ಗಾಬರಿಗೊಳ್ಳುವವರೆಗೆ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದ ಔಚಿತ್ಯ. ಇದು ಆರಣ್ಯಪರ್ವ.

ಇಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಪರ್ವ ಸುಗ್ರೀವ ಪಟ್ಟಾಭೀಷೇಕದವರೆಗೆ, ಅಲ್ಲಿಂದ ಸಾಗರಲಂಘನ, ಹನುಮಂತ ಲಂಕೆಯ ಹೊರಗೆ ಪ್ರಲಂಬಾಸ್ಯ ಗಿರಿಯ ಶಿಖರದ ಅಡಿಯಲ್ಲಿ ಇಳಿದು, ತನ್ನ ಬೃಹದಾಕಾರವನ್ನು ಸಣ್ಣದಾಗಿಸಿಕೊಂಡವರೆಗೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ.

ಇಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಹನುಮಂತನ ಪರಾಕ್ರಮ, ಅಲ್ಲಿಂದ ಹಿಂದಿರುಗಿ ಬಂದುದು, ಸುಗ್ರೀವ ಸೈನ್ಯದೊಡನೆ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ದಕ್ಷಿಣ ಸಮುದ್ರರ ತೀರ ಸೇರಿದುದು, ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮನ ಆಶೋತ್ತರ, ಹೀಗೆ ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಸುಂದರಕಾಂಡ, ವಿರಹಿಗಳಿಗೆ ಮಾನಸಿಕವಾಗಿ ಸುಂದರ ಸಮಾಗಮ. ಭೌತಿಕ ದೇಹ ಸಮಾಗಮಕ್ಕಿಂತ ಮಾನಸಿಕ ದಂಪತಿ ಸಮಾಗಮಕ್ಕೆ "ಸುಂದರ" ಎಂಬ ಹೆಸರು ಪುರಾಣಾಗಮಗಳಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗೆ ಇದು ಔಚಿತ್ಯ ಪೂರ್ಣವಾದ ಸುಂದರಕಾಂಡ.

ಇಲ್ಲಿಂದೆ ಮುಂದೆ ರಾವಣನ ತಾಯಿ ತನ್ನ ಚಿಕ್ಕಮಗ ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ತಿಳಿಸಿ ರಾವಣನಿಗೆ ಬುದ್ಧಿಹೇಳು ಎಂದ ವಿಷಯದಿಂದ ಆರಂಭವಾಗಿ ರಾವಣವಧೆಯವರೆಗೆ ಲಂಕಾಕಾಂಡ ಎನ್ನಬಹುದಾದ ಯುದ್ಧ ಕಾಂಡ. ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮೊದಲು "ರಾವಣವಧ" ಎಂದು ಹೆಸರಿಟ್ಟಿದ್ದು ಇಲ್ಲಿ ಗಮ್ಯ. ರಾಮಾಭಿಷೇಕವು ವಿಭೀಷಾಣಾಭಿಷೇಕದಿಂದ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾಗಿ ಆರಂಭವಾಗಿ ಮುಗಿಯುವುದು. ಇದು ಯುದ್ಧ ಕಾಂಡವಲ್ಲ. ಇದು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯ ಏಳನೆಯ ಭಾಗ ಎಂಬುದು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಔಚಿತ್ಯ ವಿಚಾರ.

ಇಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ರಾಮನು ಸಪರಿವಾರನಾಗಿ ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನ ಯಜ್ಞ ಸಫಲವಾಗಲು ಸಂಕಲ್ಪ ಪೂರ್ವಕ ಧರ್ಮ ರೀತಿಯಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣ ಮಾಡಿದುದು. ಇದರ ಮಧ್ಯೆ ರಾಮರಾಜ್ಯದ ಹಿರಿಮೆಯ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಜ್ಞದ ವಿರಾಮ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅಗಸ್ತ್ಯ ಮುಂತಾದ ಋಷಿಗಳು ಹೇಳಿದ ಪ್ರಾಚೀನ ಇತಿಹಾಸಗಳು. ರಾವಣನ ಚರಿತ್ರೆಯೇ ಇದರಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ. ಹೀಗೆ ಹನುಮಂತನ ವಿಷಯ ಇತ್ಯಾದಿ ಪೂರಕ ಅಂಶಗಳೆಲ್ಲವೂ ಇಲ್ಲಿ ಸಂಗೃಹೀತವಾಗಿವೆ ಚಂದ್ರವಂಶದರಾಜರ ಚರಿತ್ರೆಯೂ ಇದೆ. ಸೀತೆಯ ವಸುಧಾ ಪ್ರವೇಶ, ರಾಮನ ಆಂತರ್ಯ. ಇಲ್ಲಿಗೆ ಅಶ್ವಮೇಧ ಪ್ರಕರಣ ಮುಗಿಯುತ್ತದೆ.

ಮುಂದೆ ರಾಮರಾಜ್ಯದ ವಿಸ್ತರಣೆ, ಯುವರಾಜ ಭರತ ಮುಂತಾದವರಿಂದಾದ ಚರಿತ್ರೆಗಳಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಪ್ರಾಚ್ಯದೇಶವೆನಿಸಿದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ರಾಜ್ಯ ಪಶ್ಚಿಮಭಾರತ ಭಾಗ ಮತ್ತು ಇಂದಿನ ಇರಾಕ್ ಇರಾನ್‌ವರೆಗೂ ಬಿಡಾಯಿಸಿದ್ದ ವಿಷಯ. ರಘು ಮಹಾರಾಜವಂಶದ ದಶರಥನ ಪೌತ್ರರ ಆಡಳಿತ ಸುರಾಜ್ಯ ಸ್ಥಾಪನೆ ಇಲ್ಲಿದೆ. ಈಅನಂತರ ರಾಮನು ಹಿಂದೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಾಗಮಾಡಬೇಕಾಗಿ ಬಂದಂತೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನೂ ತ್ಯಾಗಮಾಡಬೇಕಾದ ದೂರ್ವಾಸಮುನಿ ಪ್ರಸಂಗ, ಅನಂತರ ರಾಮನು ತನ್ನ ದಿವ್ಯ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿದುದು, ಇದಿಷ್ಟು ರಾಮಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಾನಂತರ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಇರುವ ವಿಷಯ. ಇಲ್ಲಿಗೆ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಸಮಾಪ್ತಿ.

ಇಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸ್ವಂತ ವಿಷಯಗಳು ಒಂಬತ್ತು ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದು ರಾಮಾಯಣ ಸಾರವಾದ ನೀತಿಯಿಂದ "ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ" ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾಸಾರ ಮುಗಿಯುತ್ತದೆ.]

27.12.2017

ರಾಮಾಯಣ ಮೂಲಗ್ರಂಥದ ಈಗ ಪ್ರಚಲಿತವಿರುವ ಪಾಠಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಕಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಎಷ್ಟೋ ವಿಷಯಗಳು ಜಾನಪದ ಜೀವಿಗಳ ಅರಣ್ಯಕಜೀವಿಗಳ ಸ್ವಭಾವದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಉತ್ತಮ ವೇದಾಂತ ತತ್ವ ನಿರ್ಣಯಗಳವರೆಗೆ ಇರುವಂತೆಲ್ಲ ನಿರೂಪಿತವಾಗಿವೆ. ಇಂದಿನ ನಮ್ಮ ಪರಿಸರ ಸಂಸ್ಕಾರ ಸಂಪನ್ನ ಬುದ್ಧಿಗೆ ಹೊಂದದ ವಿಷಯಗಳೂ ಇವೆ. ಐತಿಹಾಸಿಕವಾಗಿ ದಾರ್ಶನಿಕವಾಗಿ ಕಾವ್ಯರಸಾನುಭೂತಿಯೊಳಗೆ ಇವುಗಳನ್ನು ಮನನ ಮಾಡಲು ರಾಮಾಯಣವು ಹೇಗೆ ಒಂದು ಪ್ರಾಚೀನ ಸಾಧನವಾಗಿದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಮನೋಹರವಾದ ತನ್ನದೇ ಶಬ್ಧ

ಅರ್ಥ ಅಲಂಕಾರಯುಕ್ತವಾದ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿ ವಸ್ತುವಿನ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಭಂಗ ಬರದಂತೆ ಮೂಲಭಾಷೆಯಾದ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲೇ ನಿರೂಪಿಸಿರುವುದು ಸರಸ್ವತೀ ಪೀಠದಿಂದ ಮಹಿಮೆಗೊಂಡ ಕಾಶ್ಮೀರ ಪಂಡಿತರ ಒಂದು ಶುದ್ಧ ಮಾದರಿಯ ರಸಿಕ ವಿದ್ವಾಂಸ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಹಿರಿಮೆ.

ರಾಮಾಯಣವು ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ನಡೆದುಹೋದ ಒಂದು ಲೀಲೆ. ಇದೊಂದು 'ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚಾಲೆ' ಮಕ್ಕಳಾಟ ಎಂಬಂತೆ ಕರ್ನಾಟ ಜನಪದ ಕನ್ನಡದ ವಚನವು ಒಗಟೆಯಾಗಿ ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ:-

**ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚೆ, ಕಾಡೇಗೂಡೆ,**
**ಉದ್ದಿನ ಮೂಟೆ, ಉರುಳೇ ಹೋಯ್ತು**
**ನಮ್ಮಕ್ಕಿ ನಿಮ್ಮಕ್ಕಿ, ಹಿಡಿದುಕೊಳ್ಳಿರೋ,**

ಇದೊಂದು ಹಳೆಯ ಮಕ್ಕಳಾಟದ ಹಾಡು

ರಾಮನಿಗೆ ಯುವರಾಜ್ಯಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಪ್ರಜೆಗಳ ಇಷ್ಟದಂತೆ ದಶರಥ ಏರ್ಪಡಿಸಿದ. ನಾಳೆಯೇ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಎಂದಾಗ ಮೊದಲ ರಾತ್ರಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನ ನೆಮ್ಮದಿಯಿಂದ ಕಣ್ಮುಚ್ಚಿ ನಿದ್ದೆ ಮಾಡಿದರು. ಮಾರನೆಯ ದಿನ ದಶರಥನ ಇಷ್ಟ ನೆರವೇರಲಿಲ್ಲ ದಶರಥನೂ ಕಣ್ ಮುಚ್ಚಿದ. ಇದೇ ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚೆ ಕಾಡೇಗೂಡೆ ಎಂಬುದು ಮಕ್ಕಳು ಬದಲಿಸಿ ಹೇಳುವ ಶಬ್ಧಗಳು ಕಾಡೇ ಕೂಡೆ ಎಂಬುದು ಮೂಲಶಬ್ಧ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ಕಾಡೇ ಕೂಡಿಕೊಳ್ಳುವಂತಾಯಿತು ಎಂದು ಅರ್ಥ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ ಭರತ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದಾಗ ದಶರಥ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣ ಸೀತೆಯರು ಇಲ್ಲದ ಕಾರಣ ಅಯೋಧ್ಯೆ ಸುಡುಗಾಡಿನಂತಾಗಿತ್ತು ಎಂಬುದೂ ರಾಮಾಯಣ ವರ್ಣಿತ ಅರ್ಥ... ಉದ್ದಿನ ಮೂಟೆ ಎಂದರೆ ಉದ್ದಿನಕಾಳಿನ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಪೆಟ್ಟೆ ಹುಲ್ಲಿನಿಂದ ಮಾಡಿದ ಮೂಟೆ. ಉರುಳಿಯೇ ಹೋಯಿತು. ಬಿದ್ದು ಹಾಳಾಯ್ತು ಎಂಬ ಮಾತು ರಾವಣನು ರಣರಂಗದಲ್ಲಿ ಸತ್ತು ಬಿದ್ದ ವಿಷಯ. ರಾವಣ ಹೇಗಿದ್ದ? ಉದ್ದಿನ ಕಾಳಿನ ರಾಶಿಯಂತಿದ್ದ ಎಂಬ ಚಿತ್ರಣ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಇದೆ. "ಮಾಷರಾಶಿ ಪ್ರತೀಕಾಶಂ" ಕಾಗೆಗಿಂತ ಕಪ್ಪಗೆ ಇದ್ದ ರಾವಣ ಹೊಳೆಯುವ ಆಭರಣ ಆಯುಧಗಳ ಧಾರಣೆಯಿಂದ ಬಿಳೀ ಪಟ್ಟೆಗಳನ್ನು ಉದ್ದಿನಕಾಳಿನ ಬಾಯಿಯ ಬಿಳೀ ರೇಖೆಗಳಂತೆ ಹೊಂದಿದ್ದ ಎನ್ನೂವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಜಾನಪದ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಉಪಮಾನ. ಇಂದಿನ ನಮಗೆ ನಗರೀಕರಣದಿಂದಾಗಿ ಉದ್ದಿನಕಾಳಾಗಲಿ ಮೂಟೆಯಾಗಲಿ ಸುಲಭವಾಗಿಲ್ಲ. ಈಗ ನಮ್ಮಕ್ಕಿ ನಿಮ್ಮಕ್ಕಿ ಎಂದರೆ ನಮ್ಮ ಹಕ್ಕಿ ನಿಮ್ಮ ಹಕ್ಕಿ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ನಿಜವಾದ ತಾತ್ವಿಕ ದಾರ್ಶನಿಕ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದಾದರೆ ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮಗಳು. ಸೀತಾರಾಮರೇ ಇಲ್ಲಿ ಹಕ್ಕಿಗಳು. ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚಾಲೆ ಆಟದಲ್ಲಿ ಕಣ್ಣು ಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡೇ ಆಟದ ಇತರರನ್ನು ಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಹಿಡಿಯಬೇಕು. ಮನೋಬಲ ಗುರುತಿಸುವ ಶಕ್ತಿ ಮತ್ತು ದಿಕ್‌ಜ್ಞಾನ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಸದ್ದು ನೆರಳುಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸುವುದು ಇದೆಲ್ಲ ಬೇಕು. ಎರಡು ಪಂಗಡವಾಗಿರುವ ಆಟದ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಯಾರನ್ನೂ ಬೇಕಾದರೂ ಹಿಡಿಯಬಹುದು. ನಾವು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಪಕ್ಷವೋ ಸೀತೆಯ ಪಕ್ಷವೋ ತೀರ್ಮಾನವಾಗಬೇಕು. ನಿಜವಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸೀತೆಯ ಪಕ್ಷ, ಮಿಥಿಲಾನಗರದ ಜನ ಸೀತೆಯ ಪಕ್ಷ. ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನ ರಾಮನ ಪಕ್ಷ. ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಧೈರ್ಯ, ಸತ್ಯ ಸರಳತೆ, ನೀತಿಗಳು ನಮಗೆ ಮಾದರಿಯಾಗಿರಬೇಕು. ಎಂಬುದೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಉದ್ದೇಶ್ಯ. ರಾಮನ ಆದರ್ಶ ಅನುಸರಿಸುವುದು ಕಷ್ಟ. ಅದು ಮಿಶ್ರ. ಸೀತೆಯ ಆದರ್ಶ ಪರಿಶುದ್ಧ. ಇಂತಹ ವಿವೇಕ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾಸಾರವಾದ ಮಂಜರಿಯ ಅಧ್ಯಯನದಿಂದ ನಮಗೆ ಬರಲಿ ಎಂಬುದು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಕೊನೆಯ ಮಾತು.

**ಇತಿ ದುರಿತ ವಿರಾಮಃ, ಕೀರ್ತಿಕಾನ್ತಾಭಿರಾಮಃ, ।**
**ಸುಜನ ಹೃದಯರಾಮಃ, ಕೋಽಪ್ಯಭೂಧ್‌ಯಸ್ಸ ರಾಮಃ ॥**

**ಪ್ರಕೃತ ಮನುಸರಾಮಃ, ಪಾಪಪಾಶಂ ತರಾಮಃ, ।**
**ಸುಕೃತ ಭುವಿ ಚರಾಮಃ, ತಸ್ಯನಾಮ ಸ್ಮರಾಮಃ ॥**

ರಾಮ ಇದ್ದ ಹೋದ, ಅವನ ಕೀರ್ತಿ ಇಲ್ಲಿ ಉಳಿದಿದೆ ಸಜ್ಜನರ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಅವನು ನೆಲೆಸಿದ್ದಾನೆ. ಈಗ ನಾವು ಸೀತೆಯ ತಾಯಿಯೆನಿಸಿದ ಈ ಪುಣ್ಯ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತ ಬಾಳೋಣ, ನಮ್ಮ ಪಾಪದ ಬಂಧಗಳನ್ನು ಕಳೆಯೋಣ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮ ನಾಮ ಸ್ಮರಣೆ ಮಾಡೋಣ ಹೀಗೆ ಯಾವಾಗಲೂ ರಾಮಸ್ಮರಣೆಯಲ್ಲೇ ಇದ್ದ

ಸೀತೆಯ ಚರಿತ್ರೆ ಇದು. ನಮ್ಮ ಹಕ್ಕಿ ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆ, ನಿಮ್ಮ ಹಕ್ಕಿ ಅಲ್ಲಿ ರಾಮ. ವಿಶ್ವದ ಈ ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚಾಲೆ ಆಟ ನಡೆಯುತ್ತಲೇ ಇದೆ ಇದರಲ್ಲಿ ನಿಮಗೆ ವಿವೇಕ ಬರಬೇಕು. ಬರಲಿ.

**"ತದಸ್ತು ಭವತಾಂ ಶ್ಲಾಘ್ಯೋ ವಿವೇಕೋದಯಃ"**

ಮಂಜರಿಯ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡದ ಸ್ವರ್ಗಾರೋಹಣ ಪರ್ವದ ೧೨೬೩ನೇ ಪದ್ಯ ಮತ್ತು ಅನುಬಂಧ ೧ ನೇ ಪದ್ಯ

**ಸವಃಪುನಾತು ವಾಲ್ಮೀಕೇಃ (ಕಿಃ)**
**ಸೂಕ್ತಾಮೃತ ಮಹೋದಧಿಃ ।**
**ಓಂಕಾರ ಇವ ವರ್ಣಾನಾಂ**
**ಕವೀನಾಂ ಪ್ರಥಮೋಮುನಿಃ** (ಅನುಬಂಧ ೨)

ಆದೌ ರಾಮ ತಪೋವನಾಭಿನಮನಂ, ಹತ್ವಾಮೃಗಂ ಕಾಂಚನಂ
ವೈದೇಹೀಹರಣಂ, ಜಟಾಯುಮರಣಂ, ಸುಗ್ರೀವ ಸಂಭಾಷಣಂ
ವಾಲೀನಿಗ್ರಹಣಂ, ಸಮುದ್ರತರಣಂ, ಲಂಕಾಪುರೀದಾಹನಂ, ಪಶ್ಚಾದ್
ರಾವಣಕುಂಭಕರ್ಣಹನನಂ, ಚೈತದ್ಧಿ ರಾಮಾಯಣಂ.

(ಪ್ರಾಚೀನ ಪದ್ಯ)

ಈ ಪದ್ಯವೂ ರಾಮಾಯಣ ಸಂಗ್ರಹ. ವಜ್ರರತ್ನದ ಪಟ್ಟೆಗಳಂತೆ ವಿವಿಧವಾದ ಅರ್ಥಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಹೊಳೆಯುತ್ತದೆ.

೧. ತಪೋವನಾಭಿಗಮನ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರೊಡನೆ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋದುದು ಕೈಕೇಯಿಯ ಮಾತಿನಿಂದ ತಪಸ್ವಿಯಾಗಿ ೧೪ ವರ್ಷ ಇರಲು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋದುದು. ಋಷಿಗಳ ಮಾತಿನಂತೆ ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ಪ್ರವೇಶ ಮಾಡಿದುದು, ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಹೊರಗೆ ಅಭಿಮತವಾದ ಗಿರಿಕಾನನದಲ್ಲಿ ವಾಸವಿದ್ದುದು ಇದಿಷ್ಟೂ ಇಲ್ಲಿ ಸಂಗೃಹೀತ.

೨.&೩.ಈ ವನವಾಸದ ಮಧ್ಯೆ ಚಿನ್ನದ ಜಿಂಕೆಯನ್ನು ವಧಿಸಿದುದು, ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಿದೇಹರಾಜನ ಮಗಳಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾವಣ ಅಪಹರಿಸಿದ್ದು

೪. ಜಟಾಯು ಮರಣಂ ನ್ಯಾಯಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿರುವರಿಗೆ ಪ್ರಾಣಿ ಪಕ್ಷಿಗಳೂ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತವೆ ಎಂಬ ರಾಮಾಯಣ ಸಾರಾಂಶ ಇದು.

೫. ಸುಗ್ರೀವ ಸಂಭಾಷಣೆ ಹನುಮಂತನ ಮಾತಿನ ವೈಖರಿಯಿಂದ ಬೆರಗಾದ ರಾಮ ಸುಗ್ರೀವ ಸಖ್ಯ ಮಾಡಿದುದು

೬. ವಾಲೀ ನಿಗ್ರಹಣ ನಿಗ್ರಹವೆಂದರೆ ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಟ್ಟು ತಪ್ಪಿತಸ್ತರ ತಪ್ಪನ್ನು ಪರಿಹರಿಸುವುದು. ಇಲ್ಲಿ ವಾಲಿಯವಧೆ ಮುಖ್ಯವಲ್ಲ, ವಾಲಿಯ ಕೆಟ್ಟ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ಮೆಟ್ಟ ಹಾಕಿದುದು ಮುಖ್ಯ. ವಾಲಿನ್ ಎಂಬ ಶಬ್ಧ ಸಮಾಸದಲ್ಲಿ ವಾಲಿ ನಿಗ್ರಹಣ ಎಂದಾಗಬೇಕು ಇಲ್ಲಿ ವಾಲಿ ವಾಲಿಯ ಇ ಎಂದರೆ ಕಾಮನೆ ಕೆಟ್ಟಭಾವನೆ ಎಂದರ್ಥ.ಅಃ=ವಿಷ್ಣುಃ, ಇಃ=ಕಾಮಃ, ಉಃ=ಶಿವಃ, ಈಃ=ಲಕ್ಷ್ಮೀಃ, ಕಃ=ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಎಂಬಂತಹ ಬೀಜಾಕ್ಷರ ನಿಘಂಟು ಕೋಶ ನೆರವಾಗುತ್ತದೆ.

ಈ ಅರ್ಥ ರಾಮಾಯಣಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯು ಇದನ್ನು ಒಂದೇ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಒಗಟಿನಂತೆ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ
ರಾಮಾಯಣದ ಶ್ಲೋಕ

**ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪರಮದುರ್ಜ್ಞೇಯಃ ಸತಾಂ ಧರ್ಮ ಪ್ಲವಂಗಮ! ।**
**ಹೃದಿಸ್ಥಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ಆತ್ಮಾವೇದ ಶುಭಾಶುಭಂ ॥**
ಕಿಷ್ಕಂ 18–15

ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ:–

**ಔಚಿತ್ಯ ಚಾರುಚರಿತೇ ಶಚ್ಚಾಮೇ ನಾಭವತ್ ಕ್ವಯಿ** ॥ 168.
**ವಾಲೀವಿಗಲಿತ ಕ್ರೋಧಃ ಕ್ಷಮ್ಯತಾಮಿತ್ಯುವಾಚತಂ** ॥
ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಪರ್ವ 179]

ಹೀಗೆ ವಾಲಿ ಸಾಯುವ ಮುಂಚೆ ರಾಮನಲ್ಲಿ ತನ್ನ ತಪ್ಪಿಗಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡಿದ ಎಂಬ ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಮಾತು ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ. ಈ ಅಂಶ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ರಾಮ ವಾಲಿ ಇಬ್ಬರ ಸಂವಾದ ರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದು "ಆತ್ಮಾ ಅಶುಭಂ ವೇದ" ಎಂಬ ಅಂಶದಿಂದ ವಾಲಿಯ ತಪ್ಪೊಪ್ಪಿಗೆ ಇರುವುದನ್ನು ಸಂಪ್ರಾದಾಯ ವಿದ್ವಾಂಸರು ತಿಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಂತಹ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಒಗಟುಮಾತು ಬಿಡಿಸಿ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸೂಕ್ತಿ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯವಾದುದು.

೭. ಸಮುದ್ರತರಣ ಹನುಮಂತ ಮಾಡಿದ್ದು ಸೇತುವಿನ ಮೂಲಕ ರಾಮಾದಿಗಳು ಮಾಡಿದ್ದು ಮತ್ತೆ ಪುಷ್ಪಕ ವಿಮಾನದ ಮೂಲಕ ಸಮುದ್ರ ದಾಟುತ್ತಾ ಸೀತೆಗೆ ರಾಮ ಎಲ್ಲ ತೋರಿಸಿದುದು ತ್ರಿಕಾಲ ಚರಿತೆಯಾ ಸಂಗೃಹೀತ.

೮. ಲಂಕಾಪುರೀ ದಾಹನಂ ಹನುಮಂತ ಮಾಡಿದ್ದು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವಾನರ ಸೈನ್ಯ ರಾಮಾಸ್ತ್ರಗಳು ಮಾಡಿದ್ದು.

೯. ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣಹನನಂ ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣರಿಗೆ ರಾಮಾನುಗತಿ ಕಾಣಿಸಿದುದು.

೧೦. ಚ = ಇವುಗಳೊಡನೆ ರಾಮಾಭಿಷೇಕಾದಿಗಳು ಉತ್ತರಕಾಂಡ ವೃತ್ತಾಂತಗಳು ಎಲ್ಲವೂ, ಹಿ = ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ರಾಮಾಯಣಂ= ರಾಮಾಯಣ ಗ್ರಂಥದ ವೃತ್ತಾಂತಗಳ ಪಟ್ಟಿಕೆ.

[ನಮ್ಮ ಕನ್ನಡನಾಡಿನ ಪ್ರಖ್ಯಾತ ಸರಸಕವಿ ಕುಮಾರವ್ಯಾಸ ತಿಣುಕಿದನು ಪುಣಿರಾಯ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಭಾರದಲಿ ಎಂದು ಹೇಳಿದ ಮಾತು ನಿಜ. ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನು ತಮ್ಮಿಷ್ಟಕ್ಕೆ ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಲಕ್ಷಕ್ಕಿಂತ ಹೆಚ್ಚು ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯನಾಟಕ, ಯಕ್ಷಗಾನ, ಹರಿಕಥೆ, ಗದ್ಯ ಪದ್ಯ ಭಾಷಾಂತರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ವಿಶ್ವದಲ್ಲಿ ಈ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಆಗಿವೆ. ನಾರದರೇ ಹೇಳುವಂತೆ ರಾಮಾಯಣವು ಮೂರು ಲೋಕಗಳಲ್ಲೂ "ಶತಕೋಟಿ ಪ್ರವಿಸ್ತರ" ಒಂದಕ್ಷರ ಹೇಳಿದರೂ ಮಹಾಪಾತಕನಾಶನ. ಹೀಗಿದ್ದರೂ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ ಒಂದು ಮಾತ್ರ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತ ಫಣಿರಾಯನಿಗೆ ಭಾರವಾಗಿಲ್ಲ. ಅವನ ಶಿರೋ ರತ್ನದಂತೆ ಅವನಿಗೆ ಒಪ್ಪವಾಗಿ ಪ್ರಕಾಶಿಸುತ್ತದೆ ಎಂದು ಓದಿದ ಯಾರಿಗಾದರೂ ಅನ್ನಿಸದೆ ಇರದು. ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಾತು ಒಂದೊಂದೂ ರತ್ನದಂತಹ ಅಮೂಲ್ಯವಾದುದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಇವನು ಹೊಗಳುವಾಗ "ಸೂಕ್ತಾಮೃತ ಮಹೋದಧಿ" ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾತುಗಳಿಗೆ ಹಾಲ್ಗಡಲಿನಂತೆ ಎನ್ನುತ್ತಾ. ಆ ಹಾಲ್ಗಡಲನ್ನು ಕಡೆದಾಗ ಬಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ನಾನಾ ವಸ್ತುಗಳಂತೆ ಅವರವರಿಗೆ ಬೇಕಾದಂತೆ ಸ್ವೀಕರಿಸಬಹುದಾದ ಸೂಕ್ತಿಗಳು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನವು. ಇವುಗಳನ್ನು ಮುಂದೆ ಕೆಲವಾರು ಪ್ರಸಂಗಗಳೊಡನೆ ತಿಳಿಸಿಕೊಡಲಾಗುವುದು.]

ರಾಮಾಯಣ ಇತಿಹಾಸವು ಕಥಾ ರೂಪವನ್ನು ಪಡೆಯುವಾಗ ಶಾಪ ಮತ್ತು ವರಗಳೆರಡರ ಹೆಣಿಕೆಯಲ್ಲಿರುವ ಅಂಶವನ್ನೂ, ಈ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರೀಕಾರ ಮರೆಯದೇ ತಿಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದರಿಂದ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಾಗುವ ಅವಗಡಗಳಿಗೆ ಒಂದೊಂದು ಸಣ್ಣ ಕಾರಣಗಳು ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಸಿಗುತ್ತವೆ. ಮನಸ್ಸು ಭೌತಿಕವಸ್ತು ಉಳಿದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಪ್ರಬಲ. ತಿಳಿದ ವಿಷಯಗಳನ್ನೂ ಹೇಗೆ ಬೇಕಾದರೂ ಹಿಗ್ಗಿಸಲು, ಕುಗ್ಗಿಸಲು ಅದಕ್ಕೆ ಜೀವಿಗಳ ಜ್ಞಾನದ ಬೆಂಬಲವಿದೆ. ಶಾಪ ವರಗಳು ಇಂತಹ ಪ್ರಬಲ ಮನಸ್ಸಿನ ಶಕ್ತಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿ, ನಮಗೆ ನೇರ ತಿಳಿಯಲಾಗದ ಕೆಲವು ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನೂ ಮಾಡಿಸಿ ಬಿಡುತ್ತವೆ. ಇದು ಲೋಕಾನುಭವ ಮತ್ತು ಶಾಸ್ತ್ರಾನುಭವಗಳಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ. ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ತಮ್ಮಿಷ್ಟದಂತೆ ಅಲ್ಲಗಳೆಯುವ ಜನರಿಗೆ ಈಸತ್ಯ ತಿಳಿಯುವುದು ಕಷ್ಟ. ಈ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಕಾರಣಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಗಮನಿಸದೆ ಬಿಟ್ಟುಹೋದವು, ಕೆಲವು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿರುವುವು. ಈ ವರ ಮತ್ತು ಶಾಪಗಳಿಗೆ ಅಧೀನವಾಗಿ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ಇಲ್ಲಿ ತಮ್ಮನ್ನು ಇತಿಹಾಸಕ್ಕೆ ಅರ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನು ವರಕ್ಕೆ ಅಧೀನ ಮತ್ತು ವರಪ್ರದ. ದಶರಥ ಮುಂತಾದವರು ಶಾಪಗಳಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಂಡವರು. ಹೀಗೆ ಯಾವುದಕ್ಕೂ ಸಿಲುಕದೆ ಇದ್ದವಳು ಸೀತೆ. ರಾಮನನ್ನು ಕರುಣಾಕಾಕುತ್ಸ್ಥನನ್ನಾಗಿಸಿದಾಳೆ ಸೀತೆ ಎಂಬುದು ನಿಚ್ಚಳ. ಕರುಣೆಯ ಸಾಕಾರ ಮೂರ್ತಿ ಸೀತೆ. ಹೀಗಾಗಿ ರಾಮಾಯಣವು ಸೀತೆಯ ಹಿರಿಯ ಇತಿಹಾಸ ಎಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಹೇಳುವ ಮಾತು ಸತ್ಯ.

೧೧. ವಾಲಿಯ ಪತ್ನಿ ರಾಮನ ದಿವ್ಯ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಪಡೆದ ಮಹಾಮಾತೆಯರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬಳು. ಮಂಡೋದರಿಯಂತೆಯೇ ಇವಳು ಉತ್ತಮಳು. ತಾರೆ ರಾಮನಿಗೆ ನೀನು ಸೀತೆಯನ್ನು ನಿಜವಾಗಿ ಪಡೆದರೂ ಬಹುಕಾಲ ಅವಳೊಡನೆ ಬಾಳಲಾರೆ ಎಂದು

ಶಪಿಸಿದಳೆಂಬ ಮಾತು ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ ಇದು ತಾರೆಯ ರಾಮ ಭಕ್ತಿಗೆ ಹೊಂದುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ಭಾಗ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತವಲ್ಲ ನಿಕ್ಷಿಪ್ತ ಎನ್ನಬಹುದು. ಕೆಲವು ಶಾಪ ವೃಂತ್ತಾತಗಳು ನಿಜವಾದರೂ ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವು ಕಟ್ಟುಕತೆಗಳು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಮತ್ತು ಪರಾಶರರಿಗೆ ವರವಿದೆ ಬ್ರಹ್ಮವಸಿಷ್ಠ ಪುಲಸ್ತ್ಯರು ವರಪ್ರದರು.

**“ನ ತೇ ವಾಗನೃತಾ ಕಾವ್ಯೇಕಾಚಿದತ್ರ ಭವಿಷ್ಯತಿ”** (ರಾ.ಭಾ. 2–35)

ಇದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಬ್ರಹ್ಮನವರ ಉಳಿದವುಗಳಿಗೆ ಇಂತಹ ವರಬಲ ಹೆಚ್ಚಾಗಿದ್ದಂತೆ ಕಾಣುವುದಿಲ್ಲ.

ರಾಮನು ಸೀತೆ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡರೆ ತಾನು ಬದುಕಲಾರೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದ ಮಾತು ಸತ್ಯವಾಗಿದೆ. ನಿಜ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಮೇಲೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಪಕ್ಕಬಲವಿದ್ದುದರಿಂದ ಬದುಕಿದ್ದ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನೂ ಕಾಲಪುರುಷ ಪ್ರಸಂಗದಿಂದ ತನ್ನ ಮೂಲಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಸೇರಿದಾಗ ; ರಾಮ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನ ಮಾಡಲು ಅಣಿಯಾಗುತ್ತಾನೆ. ರಾಮಾಯಣ ಅಧ್ಯಯನ ಪಾರಾಯಣ ಮಾಡುವವರು ಈಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಮನ ನೋಯುತ್ತದೆಂಬುದಾಗಿ ತೇಲಿಸಿ ಬಿಡುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲೇ ಇರುವುದು ಧರ್ಮಮರ್ಮ. “ರಾಮೋ ವಿಗ್ರಹವಾನ್ ಧರ್ಮಃ” ಎಂದು ಧರ್ಮದ ಸಾಕಾರಮೂರ್ತಿಯಾದ ರಾಮನು ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಶಾಸ್ತ್ರೋಕ್ತವಿಧಿ ವಿಧಾನಗಳ ಮೂಲಕ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನ ಸಂಕಲ್ಪ ಮಾಡಿದಾಗ ಸದಾ ರಾಮ ರಾಮ ರಾಮ ಎಂದು ರಾಮನನ್ನೇ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಾ ಜಪಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜೀವಿಗಳೂ ಅವನನ್ನೂ ಅನುಸರಿಸುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನು ಇವರಿಗಾಗಿ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡಾಧಿಪತಿ ಚತುರ್ಮುಖನಿಗೆ ಇವರಿಗೆಲ್ಲ ನೀನು ಶಾಶ್ವತ ನೆಲೆಗಾಗಿ ಲೋಕಗಳನ್ನೂ ಸೃಷ್ಟಿಸಿಕೊಡು ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಇವುಗಳಿಗೆ ‘ಸಾನ್ತಾನಿಕ’, ‘ಸಂತಾನ’ ಎಂಬ ಹೆಸರು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ‘ಸಂತಾನಕ’ ಎಂದಿದೆ. ಈಹೆಸರಿನ ಸೂಕ್ಷ್ಮಾರ್ಥ ಉಪನಿಷತ್ ಪುರಾಣ ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರಗಳಲ್ಲಿವೆ.

ಇಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ತ್ರಿಲೋಕಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪಿಕೊಡಬೇಕು. ಏಕೆಂದರೆ ರಾಮನ ಅನುಯಾಯಿಗಳೆಲ್ಲ ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿರುವವರು. ನಮ್ಮ ಕೇಂದ್ರ ಸರಕಾರ ಹೀಗೆ ಮಾಡಬೇಕೆಂದರೂ, ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರದ ಒಪ್ಪಿಗೆ ಆವಶ್ಯಕ, ಎಂಬಂತೆ ಇದು. ಕೇಂದ್ರ್ರದ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ರಾಜ್ಯವು ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ನಿರ್ದೇಶಿಸದೆ ಇದ್ದರೆ ಕೇಂದ್ರವು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಏನೂ ಮಾಡಲಾಗದು ಎಂಬ ನೀತಿ ಇಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮನು ಈ ಲೋಕಗಳನ್ನು ಹೊಸದಾಗಿಯೇ ನಿರ್ಮಿಸಿದನು ಎಂಬ ಅರ್ಥವನ್ನು ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತೇವೆ.

ಕಾಳಿದಾಸನು ರಘುವಂಶ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ದಾರ್ಶನಿಕ ಸೂಕ್ಷ್ಮಗಳನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವಾಗ ರಾಮನು ತನ್ನವರನ್ನೆಲ್ಲ ಸೈನ್ಯದಂತೆ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ತಾನು ಸೇನಾಪತಿಯಂತೆ ಮುಂದಾಗಿದ್ದು, ಸರ್ವಲೋಕಗಳಿಗೂ ಮೂಲ ಬಿಂದುವಾದ ತನ್ನ ದಿವ್ಯ ದೇಹದಂತಹ ವೈಕುಂಠ ಲೋಕವನ್ನು ಸೇರಿದನು ಎಂದು ತಿಳಿಸಿದ್ದಾನೆ:-

**“ವಿಷ್ವಕ್ಸೇನಃ ಸ್ವತನುಮವಿಶತ್ ಸರ್ವಲೋಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಂ”** (ರಘು 15)

ಹೇಗಿದ್ದರೂ ಈ ಲೋಕಗಳು ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮಲೋಕಕ್ಕಿಂತ ಅನನ್ತರ ಮೇಲೆ ಇರುವವು ಎಂಬ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ.
(ಉತ್ತರ 110–20)

ಎಲ್ಲರೂ ‘ತ್ರಿದಿವ’ಕ್ಕೆ ಹೋದರೆಂಬ ಮಾತು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. “ವೈಷ್ಣವ ತೇಜಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ವೈಷ್ಣವ ತನುವಿನಲ್ಲಿ ಸನಾತನವಾದ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ನಿನಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ ಆ(ನಿನ್ನ ಮೂಲ) ಶರೀರದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಕೋ” ಎಂಬ ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮನ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಗೆ ಇಂಬುಗೊಟ್ಟು, ರಾಮನು ತನ್ನವರಿಗೂ ಲೋಕವನ್ನು ಕೊಡು ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸಂತಾನಲೋಕ, ಸಾಂತಾನಿಕಲೋಕ, ತ್ರಿದಿವ, ದೇವಲೋಕ, ಸ್ವರ್ಗ, ಸ್ವರ್ಗದ ಮಹಾಸ್ವರ್ಗ ಎಂಬ ಪದಗಳು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿವೆ. ವೈಷ್ಣವ ತೇಜೋಮಯ ಸನಾತನ ಆಕಾಶ ಎಂದೂ ಇದೆ. ಇದೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಕ್ರೋಡೀಕರಿಸಿ ಕಾಳಿದಾಸನು ಒಂದೇ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದಾನೆ. ವೇದ ವ್ಯಾಸರು ಬ್ರಹ್ಮಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಠೋಪನಿಷತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಬರುವ “ತದ್ ವಿಷ್ಣೋಃ

ಪರಮಂ ಪದಂ" ಎಂಬುದನ್ನು ನಿರ್ಣಯಿಸಿ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕ ಶಬ್ಧಕ್ಕೆ ಅಮೃತತ್ವವೆಂಬ ಪುನರ್ಜನ್ಮ ರಹಿತವಾದ ಮೋಕ್ಷಸ್ಥಾನ ಎಂದು ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಮೋಕ್ಷಾನಂತರ ಸಿಗುವ ಸ್ಥಾನವೇ ಸರ್ವಲೋಕ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ಸ್ಥಾನ. ಇದೇ ನಿತ್ಯ ವೈಕುಂಠ ಸ್ಥಾನ. ಪ್ರಕೃತಿ ಮಂಡಲದಿಂದ ಹೊರಗೆ ಇರುವುದು. ಪ್ರಕೃತಿ ಮಂಡಲದೊಳಗೆ ಕಾರ್ಯ ವೈಕುಂಠ ತ್ರಿಲೋಕಗಳು ಅನೇಕ ಇವೆ. ಇವುಗಳ ವಿವರಣೆ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿವೆ. ಚತುರ್ಮುಖ ಬ್ರಹ್ಮಸೃಷ್ಟಿಗೆ ಇವು ಒಳಪಟ್ಟಿವೆ. ನಿತ್ಯ ವೈಕುಂಠವು ಹೀಗೆಲ್ಲ ಎಂದು ಸುಬಾಲ ಕೌಷೀತಕೀ ತ್ರಿಪಾದ್ ವಿಭೂತಿ ಮುಂತಾದ ಉಪನಿಷತ್ತುಗಳು ತಿಳಿಸಿವೆ. ಚತುರ್ಮುಖನಿಗೆ ಸೇರಿದ ಲೋಕಗಳಿಗೆ ಹೋದವರು ಕೂಡ ಚತುರ್ಮುಖನ ಆಯುಸ್ಸು ಮುಗಿದು ನಿತ್ಯ ವೈಕುಂಠಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಾಗ ಅವನೊಡನೆ ಹೋಗುವರೆಂದು ಕೂರ್ಮಪುರಾಣ ವಚನವು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ವಾನರಾದಿಗಳು ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ತಾವೂ ಮುಳುಗಿ ದೇಹ ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಮೂಲಾಂಶವಿರುವ ದೇಹ ಸೇರಿ ಆಯಾ ಲೋಕಗಳಿಗೆ ಹೋದರು. ತ್ರಿದಿವ ಸ್ವರ್ಗಕ್ಕೆ ಹೋದರು ಎಂಬ ಮಾತೂ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ. ಇವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಕ್ರಮಮುಕ್ತಿಯಿಂದ ವೈಕುಂಠ ಪ್ರಾಪ್ತಿ. ಸನ್ತಾನ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋದವರಿಗೂ ಹೀಗೆಯೇ. ಕೊನೆಯ ಸ್ಥಾನವನ್ನೂ ಗಮನಿಸಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ರಾಮ ಮೋಕ್ಷಸ್ಥಾನವಾದ ತನ್ನಲೋಕಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ದ ಎಂಬ ಮಾತು ಬಂದಿದೆ. ಉತ್ತರಕಾಂಡವನ್ನು ಹೆಚ್ಚು ಜನ ಓದದೆ ಬಿಟ್ಟಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಸಂಗತಿಯನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಯ ಬರೆಯಬೇಕಾಯ್ತು.

ಶಬರಿಯು ತಾನು ಕಚ್ಚಿ ತಿಂದು ಸ್ವಲ್ಪ ರುಚಿ ನೋಡಿ ಚೆನ್ನಾಗಿದೆ ಎಂದು ರಾಮನಿಗೆ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟಿದ್ದಳು ರಾಮ ಆ ಎಂಜಲು ಹಣ್ಣನ್ನು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಅವಳ ಭಕ್ತಿಭಾವ ನೋಡಿ ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ಎಂಬ ಕಥೆ ಪ್ರಚಲಿತವಿದೆ ಹಿಂದಿಯಲ್ಲಿ "ಜೂಠೇ ಬೇರ್" ಎಂದೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ. ಆ ಹಣ್ಣು ಎಲಚಿ=ಬದರೀ ಹಣ್ಣು ಎಂದು. ಈ ರೀತಿ ರಾಮ ಎಂಜಲು ತಿಂದ ವೃತ್ತಾಂತ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ. ಕಾಲು ತೊಳೆದು ಕೈ ತೊಳೆಯಲು ನೀರು ಕೊಟ್ಟಳು. ಎಂದಷ್ಟೇ ಇದೆ ಗಿಣಿ ಕಚ್ಚಿದ ಹಣ್ಣು ರುಚಿ ಎಂಬಂತಹ ಹೋಲಿಕೆಯೂ ಇಲ್ಲ. ಮಂಜರಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದೆ. ಬದಲಾಯಿಸಲಿಲ್ಲ." ಕಬಂಧ ಒಬ್ಬ ದನುಪುತ್ರ. ಅವನು ರಾಕ್ಷಸನಲ್ಲ. ವಿರಾಧ ರಾಕ್ಷಸ. ರಾಕ್ಷಸ ಜಾತಿ ಹತ್ತು ದೇವಯೋನಿ ಜಾತಿಗೆ ಸೇರಿದ ಒಂದು ಜಾತಿ. ಇವರಿಗೆ ಅಗ್ನಿ ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲ. ರಾವಣ ರಾಕ್ಷಸ ಜಾತಿಯಲ್ಲ ರಾಕ್ಷಸನಂತಾದವನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ. ಜಟಾಯು ಜ್ಞಾನಿ. ವಾನರರಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತ ಜ್ಞಾನಿ. ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವರು ರಾಕ್ಷಸ ಜಾತಿಯಲ್ಲ, ರಾಮನು ಇವರಲ್ಲಿ ವಿರಾಧನಿಗೆ ಅವನ ಜಾತಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಅವನ ಮಾತಿನಂತೆ ಖನನ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಹೂಳುವ ಶವ ಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದಾನೆ. ಕಂಬಂಧನಿಗೆ ಅವನ ಜಾತಿ ಮಾತಿನಂತೆ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ, ಜಟಾಯುವಿಗೆ ಬ್ರಹ್ಮಜ್ಞಾನಿಗೆ ಮಾಡುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮವೇಧ ಎಂಬ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ, ವಾಲಿಗೆ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿಸಿದ್ದಾನೆ, ರಾವಣನಿಗೆ ಪಿತೃಮೇಧ ಅಗ್ನಿಸಂಸ್ಕಾರ ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ, ಇದೆಲ್ಲಾ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ.

ಕಬಂಧ ದನುವಿನ ಪುತ್ರ ಎಂದರೆ ದಾನವ ಎಂಬ ಅರ್ಥವಿದೆ. ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಲಿಪಿಕಾರ ಕೈತಪ್ಪಿನಿಂದ "ದನು" ಎಂಬುದು "ಮನು" ಎಂದಾಗಿದೆ. ಇಂತಹ ತಪ್ಪುಗಳ ಮುದ್ರಿತ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಇವೆ ಕೆಲವನ್ನು ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣ ನೋಡಿ ತಿದ್ದಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು.

ಇಂದ್ರ ಅಹಲ್ಯಾ ವೃತ್ತಾಂತ ಭೂತ ಭವಿಷ್ಯದ್ ವರ್ತಮಾನ ತ್ರಿಕಾಲ ವೃತ್ತಾಂತಗಳ ನಾಡೀಶಾಸ್ತ್ರದ ವಚನ ರೂಪದಲ್ಲಿ ವೇದಗಳಲ್ಲೂ ಇದೆ. ಈಗ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಆಕಾಲದ ವರ್ತಮಾನ ಸಂಗತಿ ಇದೆ. ಅವಳು ಗೌತಮ ಶಾಪದಿಂದ ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿದ್ದಳು, ರಾಮದರ್ಶನ ಮಾಡಿದೊಡನೆ ತನ್ನ ರೂಪ ಪಡೆದಳು, ಎಂದಷ್ಟೇ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ ಗೌತಮನ ಶಾಪ ಮತ್ತು ಶಾಪ ನಿವಾರಣ ವಚನಗಳಿಂದ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಹಾಗೆಯೇ ಇದೆ.

**ಅದೃಶ್ಯಾ ಪ್ರಾಪ್ಸ್ಯಸಿ ಶುಚಂ ರಾಮಸಂದರ್ಶನಾವಧಿ** ॥ 307

(ಅಯೋಧ್ಯಾ ಕಾಂಡ)

ಹೀಗೆಯೇ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಸ್ವರೂಪ ಪಡೆದ ಅಹಲ್ಯೆಗೆಪಾದ ಮುಟ್ಟಿ ನಮಸ್ಕರಿಸಿದರೆಂಬ ಮಾತು ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಂಜರಿಗಳಲ್ಲಿ

ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಕಲ್ಲಾಗಿದ್ದು ಭೂಮಿಯೊಳಗೆ ಸೇರಿದ್ದಳು ಇತ್ಯಾದಿ ವೃತ್ತಾಂತಗಳು ಇಲ್ಲ.

ಅಹಲ್ಯಾವೃತ್ತಾಂತದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರ ಮಾಡಿದ ತಪ್ಪಿಗೆ ಅವನು "ಅಫಲ"ನಾಗುವಂತೆ ಗೌತಮ ಶಾಪ ಸ್ಪಷ್ಟ. ಅನಂತರ ಬಾಲಕಾಂಡಕ್ಕಿಂತ ಸ್ವಲ್ಪ ಭಿನ್ನವಾದ ಆದರೆ ಹೊಂದಿಸಬಹುದಾದ ವೃತ್ತಾಂತ ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿದೆ. ರಾವಣ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತುಗಳು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಜಯಿಸಿದ ಮೇಲೆ ಪ್ರಜಾಪತಿಯು ಇಂದ್ರ ಸೋತುದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ಪತಿವ್ರತೆಯ ಮಾನಭಂಗವೇ ಎಂದು ತಿಳಿಸಿ, ನೀನು ದುಂಬಿಯ ಹಾಗೆ ಅವಳ ಭಗಮಂಡಲದೊಳಗೆ ಸೇರಿ ನಿನ್ನ ರೂಪ ಮರೆಸಿಕೊಂಡೆ. ಇದನ್ನು ತಿಳಿದ ಗೌತಮ ನಿನ್ನ ಮೈಯ್ಯೆಲ್ಲ ಭಗಮಂಡಲದಂತೆ ಆಗಲೆಂದು ಶಪಿಸಿದ (ಇಂದ್ರ ಸಹಸ್ರಾಕ್ಷ ಎಂಬ ಉಪನಾಮ ಪಡೆದ ವಿಷಯ ಇದು). ದೇವತೆಗಳು ಅವನಿಗೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಮಾಡಿಸಿ ಟಗರಿನ ವೃಷ್ಣ ಇರಿಸಿದರೆಂದು ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿದೆ: ಸಹಸ್ರಾತತ್ವವು ಮತ್ತೊಂದು ಗುರುತಾಗಿ ಉಳಿಯಿತಷ್ಟೆ. ಈ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೇ "ದುಲಿ" ಎಂಬ ಪದ ಭಗಮಂಡಲಕ್ಕೆ ಸಮಾನಾರ್ಥಕವಾಗಿದೆ. ಕಾಶ್ಮೀರ ಶಾರದಾ ಲಿಪಿ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ದುಲಿಗೆ ಬದಲು ಯೋನಿ ಎಂದಿದೆ. 'ದುಲಿ' ಶಬ್ಧ ದೇಶೀ ಜನ ಬಳಸುವ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದ. ನಾಗರಿಕ ಜನ ಹೆಚ್ಚು ಬಳಸುತ್ತಿಲ್ಲ. ಇದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ 'ದೇಶೀನಾಮಮಾಲಾ' ಎಂಬ ಕೋಶವನ್ನೇ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಕೇಶವನ ಕಲ್ಪದ್ರು ಕೋಶದಲ್ಲಿ 'ಬುಲಿ' ಎಂಬ ಪದವೂ ಹೀಗೆಯೇ ಇದೆ. ದುಲ=ಉತ್‌ಕ್ಷೇಪೇ, ಬುಲ=ಮಜ್ಜನೇ ಎಂಬ ಧಾತು ಪಾಠ ಪಾಣಿನಿಯ ಸಂಗ್ರಹದಲ್ಲಿದೆ. ದ್ರಾವಿಡ ದೇಸಿಗಳಲ್ಲಿ ತ-ದಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲ. ಮಲಮಲ್ಲಧಾರರಣೇ ಎಂಬ ಎರಡು ಧಾತು ಪಾಠ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿದೆ. ದೇಶೀಯಲ್ಲಿ ಶಿಥಿಲದ್ವಿತ್ವ ಸಮಾನ ವ್ಯಂಜನ ದ್ವಿತ್ವಿಗಳು ಆಯಾ ಭಾಷಾವ್ಯಾಕರಣ ಸಿದ್ಧವಾಗಿವೆ. ಗಂಡನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ್ದು ಬುಲಿ. ಹೆಂಗಸರಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ್ದು ದುಲಿ. ಹೀಗೆ ಭಾರತೀಯ ಭಾಷಾಶಾಸ್ತ್ರ ಅಭ್ಯಸಿಸಲು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಪದಪ್ರಯೋಗಗಳು ದೇಶೀನಾಮಮಾಲಾ ಮುಂತಾದವು ಸಹಾಯಕಗಳಾಗುತ್ತವೆ. ಬುಲಿ ಒಳಗೇ ಸೇರಿ ಮುಳುಗುತ್ತದೆ. ದುಲಿ ಎತ್ತಿ ಹಾಕುತ್ತದೆ. ಪದ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ನಾವು ಹೀಗೆ ಗಂಭೀರವಾಗಿ ಬರೆಯಬಹುದು ಅಷ್ಟೆ.

**ಪ್ರವಿಷ್ಟೋ ದುಲಿಮೇತಸ್ಯಾ ಭ್ರಾಮರಂ ರೂಪಮಾಶ್ರಯನ್ ॥ 657**
(ಉತ್ತರಕಾಂಡ)

ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಈ ರೀತಿ ಸಾವಿರಕಣ್ಣಿನ ಗುರುತು ಮೈಯಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಆಯಿಂತೆಂದಿಲ್ಲಾ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ನಿನಗೆ ಸೋಲಾಗುತ್ತದೆ ಎಂದಷ್ಟೆ ಇದೆ. ಭ್ರಮರರೂಪದಲ್ಲಿ ಒಳಸೇರಿ ಮರೆಸಿಕೊಂಡ ವಿಷಯ ಇಲ್ಲ. ಹೀಗೆ ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಿ ಪ್ರಚಲಿತವಾಗಿದ್ದ ಒಂದು ದೇಸಿ ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಬಳಸಿಕೊಂಡಿರುವಂತಿದೆ. ನಲ ಶಬ್ಧ ನಲೀ ಎಂದೂ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿದೆ ಇದು ಸಣ್ಣ ಕೊಳವೆ ಎಂಬ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿದೆ. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿದೆ ಇದು 'ನಲ್ಲಿ' ಎಂದಾಗಿಲ್ಲವೆ.

[ಇಂದ್ರಿಜಿತ್ತು ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ನಾಗಪಾಶಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಬಂಧಿಸಿದಾಗ ಗರುಡ ಬಂದು ನಾಗಪಾಶ ಬಿಡಿಸಿ ಹೋದ ವೃತ್ತಾಂತ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇದೆ. ಈಮಧ್ಯೆ ನಾರದ ಬಂದು ರಾಮನ ಬಗ್ಗೆ ಸ್ತೋತ್ರಮಾಡಿದ ಅಂಶ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.] ಹೀಗೆ ಕೆಲವು ಅಂಶಗಳು ಕಾಶ್ಮೀರದ ರಾಮಾಯಣ ಮೂಲ ಪಾಠದಲ್ಲಿತ್ತೋ ಏನೋ ! ಅಂತಹ ಪಾಠವೊಂದು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸಿಕ್ಕಿದಾಗ ನಿರ್ಣಯಿಸಬಹುದು. ಭಾಗವತ ಪುರಾಣದ ಪ್ರತಿ ಈಗಿರುವ ಪಾರಮಹಂಸ್ಯ ಸಂಹಿತೆಗಿಂತ ಬೇರೆಯಾದ ಒಂದು ಸಂಹಿತೆ ತಾಷ್ಕೆಂಡ್‌ಲ್ಲಿ ಭೂಶೋಧನೆಯಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕಿರುವುದೆಂದು ನಾನು ಪತ್ರಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಓದಿದ್ದೇನೆ. ರಷ್ಯಾದೇಶದಲ್ಲಿ ಉಳಲು ನೆಲ ಅಗೆದಾಗ ವಿಷ್ಣು ಮೂರ್ತಿ ಸಿಕ್ಕಿದೆ ಎಂದು ಆ ರೈತನ ತಮ್ಮ ಭಾರತಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸಂಸ್ಕೃತ ಓದಿ ವಿದ್ವಾಂಸನಾಗಿ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲೇ ಮಾತನಾಡಿಸಿ ನನಗೆ ವಿಷಯ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಹೀಗೆ ಭಾರತದ ಹೊರಗೂ ರಾಮಾಯಣ ಶತಕೋಡಿ ಪ್ರವಿಸ್ತರವಿರಬಹುದಲ್ಲವೆ!

ರಾಮನು ಅಗಸ್ತ್ಯರು ಕೊಟ್ಟ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರದಿಂದ ಎದೆಗೆ ಹೊಡೆದು ರಾವಣನನ್ನು ಸಾಯಿಸಿದ ಎಂಬ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ, ಆದಿತ್ಯ ಹೃದಯಸ್ತೋತ್ರವು ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ ಸರ್ವದೇವ ಮಯಮಂತ್ರ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ಮಂಜರೀಕಾರ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿಸಿದ್ದಾನೆ ಮೂಲರಾಮಾಯಣದ ಅನೇಕ ಸರ್ಗಗಳನ್ನೂ ಕೆಲವೇ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆ, ವರ್ಣನೆಗಳನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆ, ಇತಿಹಾಸಗಳ ಕಾಲ ದೇಶ ವ್ಯಕ್ತಿ

ಹೆಸರುಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮಗಳನ್ನು ಬಿಡದೆ ತಿಳಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮಾತಿಗೆ ಅಪಚಾರವಾಗದಂತೆ ಕಥೆಯ ಹಂದರ ಪದರಗಳನ್ನೂ ವಿಂಗಡಿಸಿ ತಿಳಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆ 'ಹತ್ತು ಕಟ್ಟೋಕ್ ಮುತ್ತು ಕಟ್ಟು' ಎಂಬ ಗಾದೆಯಂತೆ ಮುತ್ತಿನಂತಹ ಒಂದೇ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ತಿಳಿಸುವ ಸುಂದರಗೊಳಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆ, ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಮಂತ್ರಾಗಮ ಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಬಲಾತಿಬಲಾ ಮಂತ್ರಗಳು ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮದಂಡಾಸ್ತ್ರ ಬ್ರಹ್ಮ ಶಿರೋಸ್ತ್ರಾದಿಗಳು ಸೂರ್ಯಾಧಾರಿತ ಸಹಸ್ರ ಕಿರಣ ಗಾಯತ್ರೀ ಮಂತ್ರದ ಪ್ರಯೋಗ ಎಂಬುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿದವರಿಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ಅಗಸ್ತ್ಯರು ಕೊಟ್ಟ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಆದಿತ್ಯ ಹೃದಯವಿರುವುದರಿಂದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಇದನ್ನು ಯಾರೋ ಸೇರಿಸಿ ಬಿಟ್ಟಿದಾರೆ ಎಂಬ ನೂತನರ ಮಾತು ಸೂಕ್ಷ್ಮಕ್ಕೆ ಹೊಂದುವುದಿಲ್ಲ. ಹತ್ತು ತಲೆಗಳನ್ನು ಕಡಿದು ಅರ್ಧಚಂದ್ರಬಾಣದಿಂದ ರಾವಣನನ್ನು ಸಾಯಿಸಿದ ರಾಮ ಎಂಬ ಮಾತು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ. ನಾನಾ ಶಿಲ್ಪಗಳಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ರಂಜನೀಯವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಲೋಕದ ಮಾತಿನಲ್ಲಿದೆಯಷ್ಟೆ.

8.2.2018

ಈಗಿನ ಪಾಕಿಸ್ತಾನಕ್ಕೆ ಸೇರಿ ಹೋಗಿರುವ "ಪೆಷಾವರ್" ರಾಮಾಯಣ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಭರತ ಜಯಿಸಿ ತನ್ನ ಮಗ ಪುಷ್ಕರನ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸಿದ ನಗರ ಪುಷ್ಕಲಾವತ. ತಕ್ಷಶಿಲೆ ಭರತನ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಮಗ ತಕ್ಷನಿಗಾಗಿ ಆದ ನಗರ ಇವೆರಡೂ ಸಿಂಧೂ ನದಿಯ ಈ ಕಡೆ ಆ ಕಡೆ ನಿರ್ಮಿತವಾದವು ಎಂಬ ಅಂಶ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಉತ್ತರಕಾಂಡವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಪಾರಾಯಣ ಮಾಡದೆ ಬಿಟ್ಟ ಕಾರಣ ಈ ವಿಷಯ ಜನಜನಿತವಾಗಿಲ್ಲ ಎನ್ನಬಹುದು. ಹರಪ್ಪಾ ಮೊಹೆಂಜೋದಾರೋದಖನನದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಕಾಲದ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಕಂಡು ಬಂದರೆ ಆಶ್ಚರ್ಯವಿಲ್ಲ.

ಪರಶುರಾಮನು ಭೂಮಂಡಲವನ್ನೆಲ್ಲ ಜಯಿಸಿ ಕಾಶ್ಯಪನೆಂಬ ಒಬ್ಬ ಬಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ದಾನವಿತ್ತ. ಅವನು ಅದನ್ನೂ ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಗೆ ಬಿಟ್ಟು ಕೊಟ್ಟ ಪರಶುರಾಮ ಪೂರ್ವಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಮೇಲೆದ್ದ ಮಹೇಂದ್ರ ದ್ವೀಪಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಇದ್ದು ಬಿಟ್ಟ. ಕೊಟ್ಟ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸಲಿಲ್ಲ. ಈದ್ವೀಪವು ಜಂಬೂ ದ್ವೀಪದಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವ ದಿಕ್ಕಿಗೆ ಭಾರತದ ಉಪದ್ವೀಪವಾಗಿದೆ. ಇದು ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದ ಇಂದಿನ ಪೂರ್ವ ಚೀನಾದ ಮೇಲಿರುವ ಕಾಂಬೋಡಿಯ ದೇಶ. ಕಾಂಬೋಡಿಯ ಇದರ ವರ್ಣನೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿದೆ ಸುಗ್ರೀವನು ತಿಳಿಸುವ ಲಕ್ಷಣಗಳಿಂದಲೂ ತಿಳಿದು ಬರುತ್ತದೆ. ಮಂಜರೀಕಾರ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಇದರ ಸೂಕ್ಷ್ಮವರ್ಣನೆ ಬಿಟ್ಟಿಲ್ಲ. ಕನೂಜಿನ ಯಶೋವರ್ಮ ಕಾಂಬೋಡಿಯ ಜಯಿಸಿ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೊಳಿಸಿದ್ದ. ಇವನು ಕವಿ ಭವಭೂತಿಗೆ ಆಶ್ರಯದಾತ. ಈ ವಿಷಯ ಮತ್ತು ಕಾಂಬೋಡಿಯದ ವರ್ಣನೆ ವಾಕ್‌ಪತಿರಾಜನ 'ಗೌಡವಹೋ' ಪ್ರಾಕೃತ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿದೆ. ಕಾಂಬೋಡಿಯವು ಭಾರತದ ಉಪ ದ್ವೀಪ ಇದಕ್ಕೆ ಇಂದ್ರ ದ್ವೀಪ ಎಂದೂ ಹೆಸರು ವಿಷ್ಣುವಾಯುಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ವಿವರಣೆ ಇದೆ.

12. ಮನ್ಮಥನಿಗೆ ಎಷ್ಟು ಜನ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿಯರು? ಎಂಬ 'ಕ್ವಿಜ್' ಶೀಘ್ರ ಪ್ರಶ್ನೆ ಕೇಳಿದರೆ ಥಟ್ಟನೆ ಉತ್ತರ ಹೇಳಿ ಎಂದರೆ ಸಾಧಾರಣವಾಗಿ ಎಲ್ಲರೂ ರತಿ ಒಬ್ಬಳೇ ಎನ್ನಬಹುದು. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಕಾನ್ತಿ ಶಕ್ತಿ ರತಿ ಶ್ರೀ ಎಂಬ ನಾಲ್ವರು ಎಂದೂ ಬೃಹತ್ಕಥಾಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ "ರತಿಪ್ರೀತ್ಯೋರಿವ ಸ್ಮರಃ" ಎಂಬ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದೇ ಮಾತಿನಿಂದ ಮನ್ಮಥನಿಗೆ ಐದು ಪುಷ್ಪ ಬಾಣಗಳಿರುವಂತೆ ಐದು ಜನ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿಯರು ಎಂಬ ವಿಷಯ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ ಮನ್ಮಥನಿಗೆ ಪ್ರಿಯ ಪತ್ನಿಯರೂ ಬಹಳ ಜನ ಉಂಟೆಂದು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ತಿಳಿದು ಬರುತ್ತದೆ. ಮನ್ಮಥ ಪ್ರದ್ಯುಮ್ನನಾಗಿ ರುಕ್ಮಿಣಿಗೆ ಕೃಷ್ಣನಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ಶಂಬರಾಸುರನ ಪತ್ನಿ ಇವನನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ತನ್ನ ಅನ್ತಃಪುರದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದುಂಟು.

ರಾವಣನ ವೃತ್ತಾಂತಗಳು ಉತ್ತರ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿವೆ. ಅವನ ಹುಟ್ಟು ಬೆಳವಣಿಗೆ ಕ್ರೂರತೆ ರೂಪ ಬದಲಾವಣೆಗಳು ಪರಾಕ್ರಮ ವಿಜಯ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲುಪತೆ ಮುಂತಾದುವೆಲ್ಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇವೆ. ರಾವಣನು ಹುಟ್ಟಿದಾಗಲೇ ಭಯಂಕರವಾಗಿ

ಕಿರಿಚಿಕೊಂಡುದರಿಂದ ರಾವಣ ಎನಿಸಿದ ಎಂಬ ಮಾತು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ, ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ. ಕೈಲಾಸವನ್ನು ಎತ್ತಿದಾಗ ಅದರ ಕೆಳಗೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಂಡು ಕಿರಿಚಿದ ಆಗ ಪರಮೇಶ್ವರ ಕೊಟ್ಟ ಹೆಸರು ಇದು.

13. ವೇದವತಿ ವೃತ್ತಾಂತದಲ್ಲಿ ದೇವವತೀ ಎಂದು ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಾಗಿದೆ. ಬೃಹಸ್ಪತಿಯ ಮಗ ಕುಶ ಧ್ವಜ ಮುನಿಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮೀಯ ಅಂಶದಿಂದ ಮಗಳಾಗಿ ವಿಷ್ಣುವನ್ನೇ ವರಿಸಬೇಕೆಂದು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಈಕೆಯ ತಲೆಕೂದಲನ್ನೂ ರಾವಣ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಮುಟ್ಟಿದಕ್ಕೇ ಅವಳು ತನ್ನ ಹೋಮಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ದೇಹ ತ್ಯಾಗಮಾಡಿ ಸೀತೆಯಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅವತಾರವಾದ ರಾಮನನ್ನೇ ವರಿಸಿದಳಂತೆ. ಇದು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಇದೆ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇದೆ.

ಈಚಿನವರು ರಾವಣ ವೃತ್ತಾಂತಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಂಧಾತೃ ವಿಜಯ ಮಹಾಪುರುಷ ದರ್ಶನ ಮುಂತಾದವೆಲ್ಲ ಪ್ರಕ್ಷಿಪ್ತಪಾಠ ಎಂದು ತಮ್ಮ ಮೂಗಿನ ನೇರಕ್ಕೆ ಹೇಳುವುದೆಲ್ಲ, ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲೂ ಇದೆ.

ವೇದವತಿ ವಾಙ್ಮಯೀ ಕನ್ಯೆ ಎಂಬ ಮಾತಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ವೇದವತಿ ಹೆಸರು ಹೊಂದುವುದು. "ಸಂಸ್ಕೃತಂ ನಾನು ದೈವೀವಾಕ್" ಎನ್ನುವಂತೆ ಈ ವಾಕ್ಕಿಗೆ ಮೂಲವಾದ ನಾರಾಯಣನನ್ನೇವರಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಇವಳು ದೇವವತಿ ಆಗಿರಬಹುದು.

ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಲಿಪಿ ದೋಷಗಳು ಪಾಠಾನ್ತರಗಳು ಬಹಳಷ್ಟು ಇವೆ. ಚರ್ಚಿಸಿ ಶೋಧಿಸಿ ಇರುವ ಟಿಪ್ಪಣಿಗಳನ್ನೂ ಈಗ ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಪ್ರಕಟಿಸಬೇಕಾದ ಆವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ತಾಳಪತ್ರ ಭೂರ್ಜ ಪತ್ರಗಳ ಪುಟಗಳು ಹಿಂದು ಮುಂದಾಗಿರುವುದು, ಲೇಖಕರ ಪ್ರಮಾದೊಂದ ಸಮಾನ ರೂಪ ವಾಕ್ಯಗಳ ಪದಗಳ ಪ್ರತಿಲೇಖನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟುಹೋಗುವಿಕೆಯೆಂಬುದನ್ನು ನೋಡಿ ಪರಿಶೀಲಿಸಿ, ಪತ್ರಗಳ ಅಂಚಿನಲ್ಲಿ ಅನಂತರ ಬರೆದಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿ ನಿರ್ಧರಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ. ತನಕಶದಧ ಮುಂತಾದ ವ್ಯಂಜನಗಳ ಪಲ್ಲಟ ಹ್ರಸ್ವ ದೀರ್ಘಗಳ ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಒತ್ತಕ್ಷರ ಸಂಧ್ಯಕ್ಷರಗಳ ಅಸ್ಪಷ್ಟತೆ ಮುಂತಾದ ಕಾರಣಗಳಿಂದ ಒಂದು ಪ್ರತಿಯಿಂದ ಮತ್ತೊಂದು ಪ್ರತಿ ಮಾಡುವಾಗಿನ ದೋಷಗಳು, ಲಿಪ್ಯಂತರ ಮಾಡುವಾಗಿನ ತಪ್ಪು ಇವೆಲ್ಲ ಮುದ್ರಿತವಾದ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಹೇರಳವಾಗಿವೆ. ಐರಾವತ ಐರಾವಣ ವಸಿಷ್ಠ ವಶಿಷ್ಠ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಾದೇಶಿಕ ರೂಪಗಳು ವ್ಯಾಕರಣ ಸಿದ್ಧವಾದುದರಿಂದ ಕಾಶ್ಮೀರ ರಾಮಾಯಣ ಪಾಠಕ್ಕೆ ಇದ್ದ ರೂಪವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಕೊಡುವ ಆವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ರಾಮಾಯಣವು ನಡೆದುದು ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಲ್ಲ ಆದರೂ ಆಯಾ ಪ್ರಾದೇಶಿಕ ಬಳಕೆಯ ಪದಗಳಿರುವುದನ್ನು ನಾವು ಮರೆಯಲಾಗದು.

"ಆಖ್ಯಾನಾನಿ ಶಂಸಂತಿ"ಎಂಬ ವೇದ ವಾಕ್ಯ ವಿಚಾರಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವಾಗಲೋ ಆಗಿ ಹೋದ ವೃತ್ತಾಂತಗಳನ್ನು ಹೇಳುವ ಆಖ್ಯಾನ ಉಪಾಖ್ಯಾನಗಳಲ್ಲಿ ಅತಿಯಾಗಿ ಚರ್ಚೆ ಮಾಡಬಾರದು. ಅಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದಷ್ಟೇ ಸಾಕು. ಯಾವುದೋ ಒಂದು ವಿಷಯದ ಫಲಿತಾಂಶವನ್ನು ತಿಳಿಸಿ ಹೊಗಳುವುದಷ್ಟೇ ಇವುಗಳ ಉದ್ದೇಶ್ಯ. **ವೃತ್ರೋಪಾಖ್ಯಾನ ಇಡಾಪುರುಷೀಯ** ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಮಾತ್ರ ಗ್ರಾಹ್ಯ. ನಮ್ಮ ಬುದ್ಧಿಗೆ ಎಟುಕದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ದಿವ್ಯಭೌಮಗಳನ್ನು ದಿವ್ಯ ಪಾತಾಳೀಯಗಳನ್ನು ಈಗಿನ ನಮ್ಮ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಾವು ಕುತರ್ಕಗಳಿಂದ ದೂಷಿಸುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ. ಕೆಲವು ಭೌತಿಕ ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಸೂಕ್ಷ್ಮಗಳನ್ನು ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ರೂಪಕ ವಿನ್ಯಾಸಗಳಿಂದಲೂ ಕಥನ ತಂತ್ರಗಳಿಂದಲೂ ತಿಳಿಸಿರುವುದುಂಟು. ಅವುಗಳೆಲ್ಲ ಸುಳ್ಳು ಎಂಬ ಆರೋಪ ಮಾಡುವುದು ಈಗಿನ ಕಾಲದ ನಮಗೆ ತರವಲ್ಲ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ ಸಮುದ್ರಲಂಘನ ಹನುಮಂತನ ಗಗನಗಮನ ಇತ್ಯಾದಿ. ನಾಸ್ತಿಕರಿಗೆ ರಾಮನೇ ನಾಸ್ತಿ ರಾಮಾಯಣವೇ ನಾಸ್ತಿ ಎಂದು ನಿಶ್ಚಿತವಾಗಿದ್ದರೆ ಲಂಕೆಗೆ ಕಟ್ಟಿಸಿದ ಸೇತು ಪುಷ್ಪಕವಿಮಾನ ಹತ್ತು ತಲೆ ರಾವಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಇಲ್ಲದ ಸಂಶಯಪಟ್ಟು ಇಷ್ಟ ಬಂದಂತೆ ಮಾತಾಡದಿರುವುದೇ ಒಳಿತು. ಆಸ್ತಿಕರು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಐತಿಹಾಸಿಕ ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯ ಮಿಶ್ರಿತವಾದ ಮಾತಿಗೆ ವಿರೋಧವಾಗಿ ಹೇಳಲಾರರು. ರಾಮಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಹೊಸ ಕಲ್ಪಿತ ಇತಿಹಾಸಗಳಂತೆ ತೋರುವ ವಿಷಯಗಳು ನಾಟಕಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಭ್ರಾಂತಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗಿವೆ. ರಾಮ ಮಾಯಾಮೃಗವನ್ನು ಕೊಂದಾಗ ನಿಜ ಸೀತೆ

ಅದರಿಂದಲೇ ಹೊರಬಿದ್ದು ರಾಮನ ಜತೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ನಡೆದಳು. ರಾವಣವಧವಿಲ್ಲದೆಯೇ ರಾಮಾಯಣ ಮುಗಿದು ಹೋಗುತ್ತದೆ. ಉನ್ಮತ್ತ ರಾಘವ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ಜ್ವರ ಸನ್ನಿ ಬಂದು ಅವನು ಬದುಕುವುದೇ ಕಷ್ಟವಾದಾಗ ಶಬರಿ ಆ ಜ್ವರವನ್ನು ತನ್ನ ಮೈಗೆ ಬರಿಸಿಕೊಂಡು ಪ್ರಾಣಬಿಟ್ಟಳು. ಹನುಮಂತ ನೂರು ತಲೆ ಸಾವಿರ ತಲೆಯ ರಾವಣರನ್ನು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಕೊಂದ ಹೀಗೆ ಏನೋ ಇರುವುದುಂಟು. ಕಥಾ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ಸೃಷ್ಟಿಗೂ ಇತಿಹಾಸ ಪುರುಷರ ಸೃಷ್ಟಿಗೂ ಅಂತರವಿದೆ. ಅಜಗಜಾಂತರ. ಇಂತಹ ವ್ಯತಿರಿಕ್ತ ವೃತ್ತಾಂಗಳಿಲ್ಲದೆ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿದೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ.

12. [ಸೀತೆ ರಾವಣ ಭಿಕ್ಷುವೇಷದಿಂದ ಬಂದಾಗ ಆಶ್ರಮದೊಳಗೆ ಕುಳಿತಿದ್ದಳು. ರಾಮನದೇ ಯೋಚನೆ. ರಾವಣನು ದಂಡ ಕಮಂಡಲು ಕಾಷಾಯ ಶಿಖೆ ಧರಿಸಿದ ಸನ್ಯಾಸಿ ವೇಷದಿಂದ ಬಂದ ಎಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಹೇಳುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ರಾವಣ ಮುಂಡಿತ ಬೋಳುತಲೆ ಮತ್ತು ಮೈನರಗಳು ಎದ್ದು ಕಾಣುವ ಬಡ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಸನ್ಯಾಸಿ.] ಈಗ ನಾವು ಸಿನಿಮಾ ಟಿ.ವಿ ಗಳಲ್ಲಿ ನೋಡಿವ ನಾರದಾದಿಗಳ ರೂಪ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿರುವಂತಿಲ್ಲದೆ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಹೇಗೋ ಒಂದು ವೇಷ ಹಾಕಿದಂತಿರುವುದಲ್ಲವೆ. ಆಯಾ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ವೈದಿಕ ಶಿಖೆ ಬಿಟ್ಟ ಸನ್ಯಾಸಿಗಳಂತೆ ಮುಂಡಿತರೂ ಇದ್ದರು. ಶಾಸ್ತ್ರವು ಶಿಖೀಜಡೀಮುಂಡೀ ಎಂದು ಮೂರು ವಿಧವನ್ನೂ ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ರಾವಣ ಛತ್ರಿಯನ್ನೂ ಹಿಡಿದಿದ್ದ ಎನ್ನುತ್ತದೆ ಮಂಜರಿ. ರಾವಣ ಸೀತೆಯನ್ನೂ ಹೇಗೆ ಎತ್ತಿಕೊಂಡ ಪರ್ಣ ಶಾಲೆಯೊಳಗೆ ಅವಳು ಕೊಟ್ಟ ಅರ್ಘ್ಯ ಪಾದ್ಯ ವನ್ಯಮೂಲ ಫಲಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಅವಳನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿ ನಾನು ರಾವಣ ನನ್ನ ಜತೆ ಬಾ ಸುಖವಾಗಿರುವಿಯಂತೆ ಎಂದಾಗ ಸೀತೆ ಗದರಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಅನಂತರ ರಾವಣ ಭಿಕ್ಷು ರೂಪ ತೆಗೆದು ಹಾಕಿ ತನ್ನ ಭಯಂಕರ ರೂಪ ತೋರಿಸಿ ಸೀತೆಯ ತಲೆಗೂದಲನ್ನು ಎಡಗೈಯಿಂದ ಹಿಡಿದೆಳೆದು ಅವಳ ತೊಡೆಗಳಿಗೆ ಬಲಗೈಹಾಕಿ ಬಾಳೆಯ ಕಂಬವನ್ನೂ ಎತ್ತಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಆಕಾಶಕ್ಕೆ ಹಾರಿದ ಇಲ್ಲಿ ಪುಷ್ಪಕ ವಿಮಾನ ಅಥವಾ ತನ್ನ ರಥವನ್ನು ಬಳಸಿದ್ದ ಎಂದೂ ಇದೆ ಚಿತ್ರ ಬರೆಯುವವರು ಈ ಸೂಕ್ಷ್ಮಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಗಮನಿಸಬೇಕು.

13. [ಸೀತಾಪಹಾರವಾದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಗಗನದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಗ್ರಹಗಳ ತಾಕಲಾಟಗಳಾಗಿದ್ದವು. ಶನಿ ಚಿತ್ರಾ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಬುಧ ರೋಹಿಣಿ ನಕ್ಷತ್ರದೊಡನಿದ್ದ. ಹೀಗೆ ಆ ಮುಹೂರ್ತವು 'ವೃಂದ' ಎನ್ನುತ್ತದೆ ಮಂಜರಿ 'ವಿಂದ' ಎನ್ನುತ್ತದೆ ರಾಮಾಯಣ. ಈ ಮುಹೂರ್ತದಲ್ಲಿ ಕಳವಾದ ವಸ್ತು ಸಿಕ್ಕುವುದು ಎಂದು ಜಟಾಯು ರಾಮನಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ವಿದ ಧಾತು ವಿಂದಕ್ಕೆ ಮೂಲ. ಲಾಭ ಎಂಬ ಆರ್ಥ. ಜಟಾಯು ಅರುಣನ ಮಗ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ (ವರುಣನ ಮಗ)

ಮತಂಗ ಮಹರ್ಷಿಯ ಆಶ್ರಮ ಮಾಲ್ಯವತ್ ಪರ್ವತ ಋಶ್ಯ ಮೂಕ ಪರ್ವತ  ಇದೆಲ್ಲ ಪಂಪಾ ಎಂಬ ಪ್ರಾಚೀನ ಹೆಸರಿನ ತುಂಗಭದ್ರೆಯ ಹಂಪೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವವು. ಮತಂಗರು ಗಜಶಾಸ್ತ್ರ ಗಜವೈದ್ಯ ಬರೆದವರು. ಆನೆಗಳಿಗೆ ಇವರಿಂದ ಮಾತಂಗ ಎಂಬ ಹೆಸರಾಗಿದೆ. ಋಶ್ಯ ಎಂಬುದು ಸಣ್ಣ ಜಾತಿಯ ಜಿಂಕೆ. ಋಶ್ಯ ಶೃಂಗ ಮಹರ್ಷಿಯ ವಿಷಯ ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬಂದಿದೆ. ಋಶ್ಯ ಮೂಕ ಪರ್ವತ ಎಂದು ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಋಶ್ಯ ಎಂದು ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ ಋಶ್ಯಕೇತು ಎಂದು ಮನ್ಮಥನಿಗೆ ಹೆಸರು ಅಮರಕೋಶ ಕ್ಷೀರಸ್ವಾಮಿಯ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಋಶ್ಯ ಪದವು ಸರಿ ಋಷ್ಯ ಅಲ್ಲ ಎಂದು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಆನೆಗಳಿಗೆ ನಾಗ ಎಂದೂ ಹೆಸರು. ಈ ಆನೆಯ ಮರಿಗಳ ಹಿಂಡು ಪಂಪಾನದಿ ಮತ್ತು ಸರೋವರವನ್ನು ಋಶ್ಯ ಮೂಕ ಪರ್ವತವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತವೆ. ಯಾರೊಬ್ಬರಿಗೂ ಬೆಟ್ಟವೇರಲು ಬಿಡುವುದಿಲ್ಲ ಎಂದು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ "ಕ್ರೀಡತಾಂ ಶಿಶುನಾಗಾನಾಂ ಆಕ್ರಂದಃ ಶ್ರೂಯತೇ ಮಹಾನ್ ರಾಮ ಪಂಪಾಯಾಂ" ಶಿಶುನಾಗಾಭಿರಕ್ಷಿತಂ" ಇತ್ಯಾದಿ.

ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನೇ ತಿಂದು ಬದುಕುವ ಶಿಶುಮಾರ ಎಂಬ ದೈತ್ಯ ದೈವಾಸುರ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಶಂಬರಾಸುರನು ಇಂದ್ರನ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ನಾಶಮಾಡಿದ. ವೈಜಯಂತ ನಗರದಲ್ಲಿ ಯುದ್ಧ ನಡೆದಿತ್ತು. ದಶರಥ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಸಹಾಯಕನಾಗಿದ್ದ. ಮೈಯೆಲ್ಲಾ ಗಾಯವಾಗಿ ಬಿದ್ದದ್ದ

ಅವನಿಗೆ ನೀನು ನಿನ್ನ ವಿದ್ಯಾಬಲದಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಮಾಡಿದೆ. ಆಗ ಅವನು ನಿನಗೆ ಎರಡು ವರ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದ ನೀನು ವರಗಳನ್ನು ಅವನಲ್ಲೇ ಅಡಮಾನ ಇಟ್ಟಿದ್ದೆ. ಈಗ ಅದನ್ನು ಬಿಡಿಸಿಕೋ ರಾಮ ೧೪ವರ್ಷ ವನವಾಸ ಮಾಡಲಿ ಭತರನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾಗಲಿ ಎಂದು ಮಂಥರೆ ಕೈಕೇಯಿಗೆ ಹೇಳಿಕೊಡುತ್ತಾಳೆ. ಕೈಕೇಯಿ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಮೂರ್ಖ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನನ್ನು ಗೇಲಿ ಮಾಡಿದ್ದಳು. ಅವನು ಅವಳಿಗೆ ನಿನ್ನ ಬುದ್ಧಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯ ಹೆಸರು ಬರುವಂತಹ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದೆ ಹೋಗಲಿ ಎಂದು ಶಪಿಸಿದ್ದನಂತೆ.

14. [ಮಂಥರೆ ಕೇಕೆಯ ರಾಜನ ಮಗಳ ಜತೆ ದಾಸಿಯಾಗಿ ಬಂದವಳು. ರಾಮ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ತಿಳಿದೋ ತಿಳಿಯದೆಯೋ ಕಾಲಿನಿಂದ ಒದ್ದಿದ್ದನಂತೆ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಅವಳಿಗೆ ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಕಡು ಕೋಪ. ಹಾಗಾಗಿ ಅವಳು ರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆ ತಡೆ ಒಡ್ಡಿದಳಂತೆ ಇದೆಲ್ಲ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ.] ಕೇಕೆಯ ದೇಶ ಭರತಖಂಡದ ಐವತ್ತಾರು ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಇದು ಪಶ್ಚಿಮೋತ್ತರದ ಕಡೆಗಿದೆ. ಆ ದೇಶದ ರಾಜನಿಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡಲು ದಶರಥ ಹೋಗಿದ್ದಾಗ ಆತನ ರಥದ ಸಾರಥಿ ಶಂಬರಾಸುರ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಮಡಿದ. ಆಗ ಸಮರ್ಥಳಾದ ತನ್ನ ಮಗಳನ್ನು ಸಾರಥ್ಯಕ್ಕೆ ರಾಜ ದಶರಥನಿಗೆ ಕೊಡುತ್ತಾನೆ. ಅವಳ ವಿಶೇಷ ಸಹಾಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿದ ದಶರಥ ಅವಳಿಗೆ ಎರಡು ವರ ಕೊಡುತ್ತಾನೆ. ಏನು ವರ ಕೇಳಬೇಕೆಂದು ಆಗ ಅವಳಿಗೆ ತೋರಲಿಲ್ಲ. ಹಾಗಾಗಿ ನನಗೆ ಬೇಕಾದಾಗ ಕೇಳಿ ಪಡೆಯುವೆ ಎಂದಿದ್ದಳು. ಈ ವಿಷಯ ಅವಳು ಮರೆತಿದ್ದರೂ ಮಂಥರೆ ಅವಳಿಂದ ತಿಳಿದು ನೆನಪಿಟ್ಟು ಕೊಂಡಿದ್ದಳು. ಇರಾನ್ ಇರಾಕ್ ದೇಶಗಳು ಅಂದು ಗಂಧರ್ವರ ನಾಡಾಗಿತ್ತು. ಅಸುರರು ಅಲ್ಲೆಲ್ಲ ಆಕ್ರಮಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಅಲ್ಲಿಯ ಮೂಲನಿವಾಸಿಗಳು ಭಾರತದ ಎಲ್ಲೆಗೆ ಸೇರಿದಂತೆ ಪಾರಸೀಕರು ಪಾರ್ಸಿಗಳು. ಅವರ ವೇದ ಝುಂಡ್ ಅವೆಸ್ತಾ ಖುರ್ದ್ ಅವೆಸ್ತಾ ಖುರ್ದಿಸ್ತಾನ ಅವರದು ಆವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಅವರ ಮುಖ್ಯದೇವರು ಅಗ್ನಿ ಮತ್ತು ವಿಷ್ಣು. ವಿಷ್ಣು ಅಸುರಾಂರ್ದನ ಅವರ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ 'ಅಹುರ್‌ಮಸ್ಜ್' ಹೀಗೆ ಕೇಕೆಯ ದೇಶದ ಪಶ್ಚಿಮೋತ್ತರಗಳಲ್ಲಿ ಅಸುರಮರ್ಧನ ಮಾಡುವ ಪ್ರಸಂಗಗಳಿದ್ದವೆಂದು ತಿಳಿಯಬಹುದು. ಹೀಗೆ ಕೇಕೆಯ ದೇಶದ ಬಳಿ ವೈಜಯಂತ ನಗರದಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಪತಿ ಎಂಬ ಕೇಕೆಯ ರಾಜನು ದೇವತೆಗಳ ಪಕ್ಷ ಹಿಡಿದಿದ್ದಿರಬೇಕು ಹೀಗಾಗಿ ಇದನ್ನು ದೇವಾಸುರಯುದ್ಧ ಎಂದು ಕರೆಯಲಾಗಿದೆ. ಭಗವದ್ಗೀತೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳುವ ದೈವೀಸಂಪತ್ತುಳ್ಳವರು ದೇವತೆಗಳು ಆಸುರೀಸಂಪತ್ ಉಳ್ಳವರು ಅಸುರರು. ಮೈಮುರಿದು ದುಡಿದು ಉತ್ಪಾದನೆ ಮಾಡುವ ಜನ ಅಯೋಧ್ಯಾ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ದೈವಿಕರು. ಕಡಲ್ಗಳ್ಳರಂತಿದ್ದು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಸ್ವರ್ಣಸಮೃದ್ಧಿಯಿಂದ ಮಾಂಸಾಹಾರಿಗಳಾಗಿ ಜಗದ್ವಿರೋಧಿಗಳಾಗಿ ಇತರ ಪ್ರಜಾಕಂಟಕರಾಗಿದ್ದವರು ಶಂಬರ ರಾವಣ ಮುಂತಾದ ಅಸುರರು ಈಮರ್ಮ ತಿಳಿದಿದ್ದರೆ ಕೇಕೆಯ ರಾಜನಿಗೆ ಬಂದ ಅಸುರಯುದ್ಧ ದೇವಾಸುರ ಯುದ್ಧ ಎಂದು ಹೇಳಿದರಲ್ಲಿ ತಪ್ಪಿಲ್ಲ.

[ಕೈಕೇಯಿ ಮಂಥರೆಯರ ಬಗ್ಗೆ :-

**ಕೈಕೇಯ್ಯಾ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಃ ಪೂರ್ವಂ ಮೂರ್ಖೋ ಬಾಲ್ಯೇ ವಿಡಂಬಿತಃ ।**
**ತಚ್ಛಾಪಾದಭವತ್ ತಸ್ಯಾಃ ಮತಿಃ ಕೀರ್ತಿಪರಾಙ್ಮುಖೀ** ॥703॥

**ಸಮೇ ಬಹುಮತಃ ಪುತ್ರೋಮಂಥರೇ ॥ ಭರತಾಧಿಕಂ ।**
**ಚಕ್ರೇ ರಾಮಸ್ಯ ಕೈಕೇಯಿ ಗುಣಶ್ಲಾಘಾಂ ಪುನಃ ಪುನಃ ॥**

**ಕೌಮಾರ ದಾಸೀ ಕೈಕೇಯ್ಯಾ ಮಂಥರಾ ವಿಸ್ಮಿತಾಭವತ್ ।**
**ಶೈಶವೇಕಿಲ ರಾಮೇಣ ಪುರಾ ಪ್ರಣಯ ಕೋಪತಃ ।**
**ಚರಣೇನಾಹತಾ ತತ್ರ ಚಿರಂಕೋಪ ಮುವಾಹಸಾ ॥ 667 ॥**
॥ ಅಯೋಧ್ಯಾ ॥

ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯ ವಾಙ್ಮಯದ ಶಬ್ಧಜೋಡಣೆಯ ಸೌಂದರ್ಯ, ಅರ್ಥವತ್ತಾದ ಮಾತಿನ ರೀತಿ ನೀತಿಗಳು, ರಸವಂತಿಕೆಯ ಉತ್ತುಂಗತೆ, ಇವೆಲ್ಲ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡು ಬರುವಂತೆ, ಅವನ ಸಮಕಾಲದ ಸಮಸ್ತ ಭಾರತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮರ್ಥರ ಶೈಲಿಯಾಗಿತ್ತು. ಈಗ ನಮ್ಮ ಭಾರತೀಯ ಶಾಸ್ತ್ರ ಕಾವ್ಯ ಸಾಹಿತ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಆಂಗ್ಲಾದಿ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಸೊಗಡು ಎಲ್ಲ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲೂ ಇಣುಕಿರುವಂತೆ, ಆಗ ಕೆಲವು ಸಮಾನ

ಭಾವಗಳು ಬಳಕೆಯಾಗುತ್ತಿದ್ದವು. ಆಂಗ್ಲಾಡಳಿತ ಹೋಗಿ ಭಾರತಕ್ಕೆ ಪ್ರಜಾ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಬಂದ ಮೇಲೆ ಈ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ದಲಿತರ ಬಗ್ಗೆ ಅನುಕಂಪ ಭಾವವು ಪ್ರಸರಿಸಿದಂತೆ, ಹಿಂದಿನವರೆಲ್ಲರೂ ಇದ್ದರೆನ್ನಲು ಶಂಕರ-ರಾಮಾನುಜ ಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರುಗಳ ಒಂದೊಂದು ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹೇಳುವ ಜನ ಈಗಿರುವಂತೆ, ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣಗಳ ಪ್ರಭಾವ, ವರ್ಣನೆಯ ನೈಪುಣ್ಯ ರಸವತ್ತಾದ ಮಾತುಗಾರಿಕೆ ಮುಂತಾದವು ದಕ್ಷಿಣೋತ್ತರ ಭಾರತಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾನವಾಗಿದ್ದವು. ಸುಮಾರು ಅರವತ್ತು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಕಾಶ್ಮೀರದ ಇಷ್ಟದೇವ ಅನಂತರಾಜರು ಉತ್ತರ ಭಾರತದಲ್ಲೂ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಧಾರಾನಗರದ ಭೋಜರಾಜನು ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲೂ ಭಾರತ ರಾಷ್ಟ್ರದೊಳಗೆ ವಿದೇಶೀಯರು ಬಂದು ಆಕ್ರಮಿಸದಂತೆ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸೀಮೆಯನ್ನೂ ವಿಸ್ತರಿಸಿ ಸುಖೀ ರಾಜ್ಯ ಭಾರತವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದ್ದರು. ಈ ವಿಷಯ ಕಲ್ಹಣನ ಕಾಶ್ಮೀರ ರಾಜತರಂಗಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದೆ.

**ಸಚ ಭೋಜನರೇಂದ್ರಶ್ಚ ದಾನೋತ್ಕರ್ಷೇಣ ವಿಶ್ರುತೌ ।**
**ಸೂರೀ ತಸ್ಮಿನ್ ಕ್ಷಣೇ ತತ್ರ ದ್ವಾವಾಸ್ತಾಂ ಕವಿಬಾಂಧವೌ ॥**

ಇವರು ಕವಿಗಳಿಗೆ ಕಾಮಧೇನುವಿನಂತೆ ಆಸರೆಯಾಗಿ, ಸ್ವತಃ ತಾವೂ ಕವಿಗಳಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞರಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರಾಕಾರರಾಗಿ ವಿಜ್ಞಾನಿಗಳಾಗಿದ್ದರು ಎನ್ನಲು ಭೋಜ ರಾಜಾದಿಗಳ ಗ್ರಂಥಗಳೇ ಇಂದು ಸಾಕ್ಷಿ. ಅನಂತರಾಜನ ಆಸ್ಥಾನ ಕವಿ ನೀತಿ ಮಂತ್ರಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ. ಇವನ ನೀತಿಮತಿಯನ್ನು ಮುಂದೆ ಸ್ವಲ್ಪ ವಿವರಿಸಲಾಗುವುದು.

ಭೋಜ ರಾಜ ಮತ್ತು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರರ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸಂಗ್ರಹ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಸಮಾನತೆಗಳಿವೆ. ಶಬ್ಧ, ಅರ್ಥ, ಅಲಂಕಾರ, ಉಕ್ತಿ, ರಸಗಳ ಓಟ ಒಂದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಭಾರತದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಏಕತೆಯ ಗುರುತೂ ಆಗಬಹುದು.

ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮಾತು :- 'ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ರಾಮನ ವನವಾಸದ ಬಗ್ಗೆ ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡು ಆಡುವುದು' - ಭರತನೇ ಕೈಕೇಯಿ ಮಂಥರೆಯ ಮೂಲಕ ಈ ಡೊಂಕು ವ್ಯವಹಾರವನ್ನು ನಡೆಸಿರಬಹುದಾದರೆ : ಈಗಾಲೇ ಈ ನನ್ನ ಬಿಲ್ಲು ಡೊಂಕಾಗಿ ಅವನ ಡೊಂಕನ್ನು ಸದೆ ಬಡಿಯಲು ಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ". ಹೀಗೆ ಭೋಜನ ಚಂಪೂ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ "ರಾಮನು ಕೈಕೇಯಿಯ ಮಾತಿಗೆ ತಲೆಬಾಗುವುದು ಬೇಡ ; ನನ್ನ ಹೆದೆಯೇರಿಸಿದ ಬಿಲ್ಲು ಬಾಗಿ ಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ; ಇದು ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಾತು.

ಸೀತೆ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ತಾನೂ ಬರುವೆನೆಂದಾಗ ರಾಮನು ಕಾಡಿನ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತಾ ಸೀತೆಯ ಸುಕುಮಾರತೆಯನ್ನು ನೋಡಿನೊಂದರೂ ಹೇಳಬೇಕಾದ ರೀತಿ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಭೋಜರಾಜನ ರಾಮಾಯಣ ಚಂಪುವಿನಲ್ಲಿ ಬಾಗೇ ಹೂವಿನಂತೆ ಅತಿ ಮೃದುವಾದ ನಿನ್ನ ಶರೀರ ಕಾಡಿನ ಕರ್ಕಶ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಿಗೆ ತಕ್ಕುದಲ್ಲ. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣು ಜಿಂಕೆಗಳನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹಿಂಭಾಗ ಹಿಡಿದು ಕಚ್ಚಿ ಎಳೆದು ರಕ್ತಹೀರಿ ಚಲ್ಲಾಡುವ ಕೆಮ್ಮೂತಿಯ ತೋಳಗಳಿವೆ. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ನಾನು ನಿನ್ನನ್ನು ಬಾಡಿಸಲಾರೆ ಇಂತಹ ವನವಾಸ ನಿನಗೆ ಸಲ್ಲದು.

ಇಲ್ಲಿಯ ಶಬ್ಧಗಳ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ನಾವು ಗಮನಿಸಬಹುದು:-

ಹನುಮಂತ ಆಗಸದಿಂದಲೇ ಲಂಕೆಯ ಸಮುದ್ರತೀರದ ವಿವಿಧ ವೃಕ್ಷಗಳ ಕಾಡಿನ ಸಾಲನ್ನು ನೋಡಿದ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಪದ್ಯ:-

**ಅಥ ತರಲ ತಮಾಲೋತ್ತಾಲ ತಾಲೀಪ್ರಿಯಾಲಾಂ**
**ಪ್ರಬಲ ಸರಲ ಸಾಲೋದ್ದಾಲ ತಾಲ ಪ್ರವಾಲಾಂ**
**ಅಗುರುತಗರ ಗೌರಸ್ಫಾರಕರ್ಪೂರ ಸಾರಾಂ**
**ಅವಿರಲ ವನಮಾಲಾಂ ಸೋಽಬ್ಧಿಕೂಲೇ ದದರ್ಶ**

(571 ಕಿಷ್ಕಿ)

ಲಂಕೆಯ ವನದ ಸೊಬಗು ಭೋಜರಾಜನ ಗದ್ಯ :-

"ತತಸ್ತಸ್ಯಾಂ ನಾಗಪುನ್ನಾಗ ತಾಲ ಹಿಂತಾಲ ತಮಾಲ ಕೃತಮಾಲ ಸರಲವಕುಲವಂಜುಲ ತಿಲಕಾಮಲಕ ಕಕ್ಕೋಲಾಂ ಕೋಲ ಲಪಂಗ ವಿಕಂಕತ ಕೇತಕೀ ಕದಂಬೋದುಂಬುರ ಕಪಿತ್ಥಾಶ್ವತ್ಥ ಕುರವಕ ಮರುವಕ ಮಾಕನ್ದ ಕುಂದ ತಿಂದುಕ ಚಂದನ ಸ್ಯಂದನ ಚಂಪಕ ಚಾಂಪೇ ಯಾಪನಸ ಪಾಟಲಾ ಪ್ರಿಯಾಲು ಪ್ರಾಯೈಃ" ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಭೋಜರಾಜರ ಸಮಯವು ಇನ್ನೂ ತುರ್ಕಿಸ್ತಾನದ ತುರುಕರು ಕಾಶ್ಮೀರಕ್ಕೂ ಘಜನಿ ಘೋರಿಗಳು ಸೋಮನಾಥ ಧಾರಾನಗರ ದ್ವಾರಕಾದಿಗಳಿಗೂ ನುಸುಳದೆ ಇದ್ದ ಸಮಯ. ರಾಮಾಯಣದ ರಮಣೀಯ ಚಿಂತನೆ ರಾಮರಾಜ್ಯದ ಸುವ್ಯವಸ್ಥೆ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿದ್ದ ಸಮಯ. ಈಗಿನ ಪದ್ಧತಿಯಂತೆ ಕ್ರಿ.ಶ. ೧೦೫೦ ರ ಸಮಯ ವಿಕ್ರಮ ಶಕೆ ೧೧೦೬ ರ ಸಮಯ ಶಾಲಿವಾಹನಶಕೆ ೯೭೨ ರ ಸಮಯ. ರಾಷ್ಟ್ರದೊಳಗಿನ ಹೊಟ್ಟೆ ಕಿಚ್ಚಿನ ಜನ ಆಗ ವಿದೇಶೀ ತುರುಕರಿಗೆ ಆಸರೆಕೊಟ್ಟು ದೃಢ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ವಿರುದ್ಧ ಅವರನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ರಾಷ್ಟ್ರನಾಶಕ್ಕೆ ನಾಂದಿ ಹಾಕಿದ್ದು ಇಲ್ಲಿಂದ ಐದಾರು ವರುಷಗಳೊಳಗೆ. ಅನಂತರಾಜ ಅವನ ಪರಿವಾರ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಮುಂತಾದವರು ಬೆಟ್ಟವೇರಿ ಭೃಗುಪತನದಿಂದ ಮೋಕ್ಷ ಪಡೆದರು ಎಂಬುದು ರಾಜತರಂಗಿಣಿಯ ಕಲ್ಹಣನ ವಾಣಿ. ಧಾರಾನಗರವನ್ನು ತೈಲಪ ವಂಶದ ತಾನು ಎಣ್ಣೆ ಸುರಿದು ಬೆಂಕಿಹಚ್ಚಿ ಸುಟ್ಟುದಾಗಿ ಚಾಲುಕ್ಯ ಜಯಸಿಂಹ ಶಾಸನ ಬರೆಸಿಕೊಂಡು ತುರುಕರಿಗೆ ಸೋಮನಾಥ ಧ್ವಂಸಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಮಾಡಿದುದು. ಇವನ ಜತೆ ಕರ್ಣಾವತಿಯ ಭೀಮರಾಜ ಮುಂತಾದವರೂ ಸಹ ಗತೈತಿಹಾಸಿಕರು. ಕನ್ನಡನಾಡಿನ ಗಂಗವಾಡಿಯ ಕರಿಯಬಂಟರು ಭೋಜರಾಜನಿಗೆ ಸಹಾಯವಾಗಿದ್ದರಷ್ಟೆ ಇದು ಜನಪದ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸಿಗುವ ವಿಷಯ. ಕಾಶ್ಮೀರದಿಂದ ತುರುಕರ ಉಪಟಳ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ನಾಶಗಳಿಂದ ಬೇಸತ್ತ ಬಿಲ್ಹಣ ಮಹಾಕವಿ ಚಾಲುಕ್ಯ ವಿಕ್ರಮ ದೇವನ ಆಸ್ಥಾನ ಗುರುವಾಗಿ ಬಂದು ಸೇರಿದ ವಿಷಯ ಅವನ ವಿಕ್ರಮಾಂಕದೇವ ಚರಿತ ಮಹಾಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿದೆ. ಕಾಶ್ಮೀರದಿಂದ ಕನ್ನಡನಾಡಿಗೆ ಬರುವಾಗ ಭೋಜರಾಜನ ಧಾರಾನಗರ ದಗ್ಧವಾಗಿ ನಗರ ಗೋಪುರಗಳು ಹಾಳು ಬಿದ್ದಿದ ವಿಷಯ ಅವನು ಬಣ್ಣಿಸಿರುವುದನ್ನು ಓದಿದರೆ ಎಂತಹ ಕಠಿಣ ಎದೆಯವರಿಗೂ ಎದೆ ಕರಗಿ ಕಣ್ಣೀರು ಹರಿಯುವುದು ನಿಜ. ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಭಾರತದ ನಾಶದ ಓಂಕಾರದ ಮೊದಲು ಈ ಸಮಯ. ಇತಿಹಾಸವು ಸುಸ್ಥಿತಿ ದುಸ್‍ಸ್ಥಿತಿ ಎರಡನ್ನೂ ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ ಹಾಗೆಯೇ ಈಬರಹ.

ಮಹಾಕವಿ ಬಾಣಭಟ್ಟನು ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು ಉಪಮೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ ರೂಪಕ ಮುಂತಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಂದಲೇ ಚಿತ್ರಿಸಿ ಮನ ಮುಟ್ಟುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಸಾರಸ್ವತ ಕೌಶಲ್ಯವುಳ್ಳವನು. ಬಾಣನು ಗದ್ಯದಲ್ಲಿ ತೋರಿಸುವಂತೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಪದ್ಯದಲ್ಲೇ ತೋರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಉದಾ:-

ಭರತನು ಸೈನ್ಯದೊಡನೆ ಪರಿವಾರ ಸಹಿತ ರಾಮದರ್ಶನಕ್ಕೆ ಹೊರಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ ಇದೊಂದು ಮೆರವಣಿಗೆ ಆನೆಗಳ ಸಾಲು, ಅವುಗಳ ಕೆನ್ನೆಗಳಲ್ಲಿ ಮದಜಲದ ಅಂಟು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ ಜೇನ್ನೊಣಗಳ ಗುಂಪು ಕಪ್ಪಗೆ ಹಾರಾಡುತ್ತಿವೆ. ಈ ಕಪ್ಪು ಕೈಕೇಯಿಯ ತಪ್ಪಿಗಾದ ಕಪ್ಪು ಪಟ್ಟಿಯನ್ನು ದಿಕ್ಕುಗಳು ಹಿಡಿದು ತೋರುವಂತಿತ್ತು ಸಾಮಂತ ರಾಜರೆಲ್ಲರೂ ಮೇಲೆತ್ತಿದ್ದ ಶ್ವೇತಛತ್ರಗಳಿಂದ ಶಾಂತಿದೂತರಂತಿದ್ದಾರೆ. ಆ ಛತ್ರಿಗಳು ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಭರತನ ಗುಣಗಳ ಶುಭ್ರತೆಯನ್ನು ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸುವಂತಿದ್ದವು. ಕುದುರೆಗಳ ಖುರಪುಟಗಳಿಂದೆದ್ದ ಧೂಳು ಭೂಮಿ ಗೊಡೆಯನಾಗಿದ್ದ ದಶರಥನನ್ನು ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ನೋಡಿ ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಲು ಭೂಮಿಯೇ ಆಗಸಕ್ಕೆ ಏರಿದಂತಿತ್ತು. ಬಂಡಿಗಳ ಚಕ್ರಗಳ ಧ್ವನಿಗಳನ್ನು ಗುಡುಗಿನ ಧ್ವನಿಯೆಂದು ಬಗೆದು ದಾರಿಯ ಇಕ್ಕೆಲದಲ್ಲೂ ಓಡಿ ಬಂದಿರುವ ನವಿಲುಗಳ ಗರಿಗಣ್ಣುಗಳ ಮೂಲಕ ದಿಕ್ಕುಗಳು ಭರತನನ್ನೇ ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡುವಂತಿತ್ತು. ಶಿಲ್ಪಿಗಳು ಕೆಲಸಗಾರರು ಭರತನು ಹೋಗುವ ದಾರಿಯನ್ನು ಸ್ವಚ್ಛಗೊಳಿಸುತ್ತಾ ಇದ್ದರೆ; ಭರತನು ಪುಣ್ಯಭಾವದಿಂದ ಭೂಶುದ್ಧಿ ಮಾಡಿಸುವಂತಿತ್ತು. ಚಿತ್ರಕೂಟದಲ್ಲಿ ಸೀತಾರಾಮರ ವಿಲಾಸಗಳು, ಕಾಗೆ ಬಂದು ಕದಡಿದುದು, ಇವೆಲ್ಲ ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಲಾಗಿರುವ ಪ್ರಕರಣ, ವಾಲ್ಮೀಕಿ ವರ್ಣಿಸದೇ ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಅಪೂರ್ವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿವೆ (116 ರಿಂದ 149) ಅರಣ್ಯ ಅರ್ವ)

14. ["ಜೀವದ್‍ವರ್ಣನಾವಿಪುಣಃ ಕವಿಃ" ಎಂಬ ಮಾತು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಗೆ ನಿಜವಾಗಿ ಸಲ್ಲುತ್ತದೆ. ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಈಗಲೂ ಬದುಕಿರುವಂತೆ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಟ್ಟಿದಂತೆ ನೇರವಾಗಿ ನಮ್ಮೆದುರಿಗೇ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವಂತೆ ತೋರಿಸುವ ಮಾತಿನ ಬಣ್ಣನೆಯ ಜಾಣ್ಮೆ ವ್ಯಾಸ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕಾಳಿದಾಸಾದಿಗಳಿಗೆ ಇರುವಂತೆಯೇ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಲ್ಲಿ ಅಚ್ಚೊತ್ತಿದಂತೆ ಇದೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ:-

ಹನುಮಂತ ಸಾಗರಲಂಘನಕ್ಕಾಗಿ ಆಗಸದಲ್ಲಿ ನೆಗೆದಿದ್ದಾನೆ. ಅವನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಮೋಡಗಳು ವಿಜಯಚ್ಛತ್ರಗಳಂತೆ ಆಡುತ್ತಿವೆ. ಕೆನ್ನೆಗೆತಾಗಿ

ಇಳಿದ ಮೋಡಗಳು ಅವನ ದಾಡಿಯಂತೆ ಕಾಣುತ್ತಿವೆ. ಬಾಲದ ತುದಿಯ ವಲಯಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಂಡವುಗಳು ಬಾಲದ ಗೊಂಡೆಗಳಾಗಿವೆ. ಗಾಳಿಗೆ ತೂರಿಬಂದ ಪಕ್ಕದ ಮೋಡಗಳು ಅವನಿಗೆ ಚಾಮರ ಬೀಸುವಂತಿವೆ. ಹೆಗಲಲ್ಲಿ ಅವನ ತಲೆಗೂದಲು ಇಳಿಬಿದ್ದಂತಿವೆ. ಎದೆಯ ಮುಂಚೂಣಿಯ ವೇಗದಿಂದ ಕಿರಿದಾಗಿ ಮಡಿಸಿ ಪಟ್ಟೆ ಮಾಡಿದ ಉತ್ತರೀಯದಂತಾಗಿವೆ. ಹೀಗೆ ಬಿಳಿಯ ಮೋಡಗಳ ಸಮೂಹದಲ್ಲಿ ಸಾಗುತ್ತಿದ್ದ ಹನುಮಂತ. ಈ ಅನುಭವ ಈಗ ನಮಗೆ ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಪ್ರಯಾಣಿಸುವಾಗ ವಿಮಾನಕ್ಕೆ ಹೋಲಿಸಬಹುದಲ್ಲವೆ.]

ಉದ್ದವಾಗಿ ಆಕಾಶಬಾಣ (ರಾಕೆಟ್) ದಂತೆ ಗಗನದಲ್ಲಿ ಸಾಗುತ್ತಿದ್ದ ಹನುಮಂತನು ಗಗನಕ್ಕೇ ಒಂದು ಸೇತುವೆ ಮಾಡಿದಂತೆ ಕಾಣುಸಿದ್ದ. ಒಮ್ಮೊಮ್ಮೆ ಪಶ್ಚಿಮದ ಸೂರ್ಯ ಮಂಡಲ ಕೆಂಪಗೆ ತಾವರೆ ಹೂವಿನಂತೆ ಕಾಣಿಸಿದಾಗ ಇವನ ಬಾಲ ಅದರ ನಾಳದಂತೆ ನೀಡಿತ್ತು. ಬಾಲವನ್ನು ಬೀಸುತ್ತಾ ಸಾಗರಾಕಾಶಗಳನ್ನು ಹಗ್ಗದಿಂದ ಅಳತೆ ಮಾಡುವಂತಿದ್ದ. (ಲಂಕಾಮಾರ್ಗದಸರ್ವೆ ಮಾಡುವವನಂತಿದ್ದ) ಮೇಲೆತ್ತಿದ ಅವನ ಬಾಲ ಲಂಕೆಗೆ ಈಗಲೇ ತೋರಿಸಿದ ಧೂಮಕೇತುವಿನಂತೆ ದುರ್ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿತ್ತು.

(ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ 570)

ಜನಪದದ ಗ್ರಾಮೀಣ ಜಾನಪದ ಆಡುಮಾತುಗಳು ಅನೇಕ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಸಾಹಿತ್ಯ ವಾಙ್ಮಯದಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲಲ್ಲೇ ಇಣಕಿವೆ. ಇವನು ಶಾಸ್ತ್ರ ಕವಿ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಕಾವ್ಯ ಕವಿ ಮಾತ್ರನೂ ಅಲ್ಲ, ಜಾನಪದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಕವಿಯೂ ಆಗಿದ್ದಾನೆ. ಕನ್ನಡಿಗರಿಗೆ ಪರಿಚಿತವಾದ ಅನೇಕ ಜಾನಪದ ಮಾತುಗಳು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಬಂದಿವೆ. ಹಿಂದೆ ಜಯಾದಿತ್ಯ ಎಂಬ ರಾಜನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹಿಮಪಾತದಿಂದ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾಗಿ ನಾಶವಾಗಿದ್ದ ಕಾಶ್ಮೀರದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಣವಿಲ್ಲದ ಸ್ಥಳೀಯ ಜನರನ್ನು ಸುಶಿಕ್ಷಿತರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಲು ಅವನು ಕರ್ಣಾಟಕದಿಂದ ವಿದ್ವಾಂಸರನ್ನು ಕರೆದೊಯ್ದು ಆಪಂಡಿತರಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣ ಮೊದಲಾಗಿ ಸಕಲಶಾಸ್ತ್ರ ಕಲೆಗಳನ್ನೂ ಕಲಿಸಿ, ಆಟ ಪಾಟ ಊಟ ಉಪಚಾರಗಳಲ್ಲೂ ಪ್ರಾಚೀನ ಭಾರತದ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಸಿದ್ದ. ಈ ಇತಿಹಾಸವು ಕಾಶ್ಮೀರದ ಮಂತ್ರಿಯ ಮಗ ಮಹಾಕವಿ ಕಲ್ಹಣ = ಕಲ್ಹಣನಿಂದ ರಾಜತರಂಗಿಣಿಯಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿದೆ. ಮಲ್ಲಣ್ಣ ಬಿಲ್ಲಣ್ಣ ಮುಂತಾದ ವಿದ್ವಾಂಸರ ಹೆಸರುಗಳೂ ಮಲ್ಹಣ ಬಿಲ್ಹಣ ಎಂದಾಗಿ ರೂಪಾಂತರಗೊಂಡಿದೆ. ಇಂತಹ ಕಾಶ್ಮೀರದ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ವಾಣಿ ಅನೇಕ ಜಾನಪದ ಸೊಗಡಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಇವನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲದೆ ಸಮಯ ಮಾತೃಕಾ ಮುಂತಾದ ಲಘು ಕಾವ್ಯಗಳನ್ನು ಓದಿ ನೋಡಬೇಕು. ನಾಲಿಗೆ ಸೀಳಿ ನೋಡಿದರೂ ಒಂದಕ್ಷರ ಬಾರದು. ಲದ್ದಿ ಬಿದ್ದಂತೆ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದಾನೆ. ಕತ್ತೆಗೂ ಆನೆಗೂ ಸಮವೆ! ಬಲಗೈ ಎಡಗೈ ನಂಬೋದಿಲ್ಲ. ಇತ್ಯಾದಿ ಆಡು ಮಾತುಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರೆ ಇವೆಲ್ಲ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಿಗುವ ಕರ್ಣಾಟಕದ ಮಾತುಗಳು. ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕಿಯಾಯ್ತು ಸಿಗಲಿಲ್ಲ ಎಷ್ಟು ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಹುಡುಕಿದಿರಿ ಎಂದರೆ ಮಾಯಾವಿ ರಾವಣ ಸೀತೆಯನ್ನು ಒಂದು ಹುಲ್ಲಿನ ಗರಿಮಾಡಿ ಬಚ್ಚಿಟ್ಟಿದ್ದರೂ ನಾವು ಬಿಡದೆ ಹುಲ್ಲುಗರಿಗಳನ್ನೂ ಸೀಳಿ ನೋಡಿ ಹುಡುಕಿದೇವೆ ಎನ್ನುವ ವಾನರರ ಮಾತು ಜಾನಪದದ ಆಡು ಮಾತಲ್ಲವೆ.

**ಪರೀಕ್ಷಿತಾನಿ ಯತ್ನೇನ ದ್ವಿಧಾಕೃತ್ವಾತೃಣಾನ್ಯಪಿ ।**
**ಸೀತಾ ನಾಸಾದಿತಾಽಸ್ಮಾಭಿಃ ಸಂಪತ್ ಭಾಗ್ಯಚ್ಯುತೈರಿವ ॥**

(ಕಿಷ್ಕಿಂ 307)

**ಯಥಾ ಜಾತ್ಯತುರುಗಸ್ಯ ನ ಶಕೃತ್ ಜಾತ್ಯ ಮುಚ್ಯತೇ ॥**

ಕುದುರೆ ಒಳ್ಳೆ ಜಾತಿ ಕುದುರೆ ಆದ್ರೇನು ಅದರ ಲದ್ದಿಗೆ ಅಂತಹ ಜಾತಿ ಉಂಟೆ ಇತ್ಯಾದಿ.

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಗಳು ಮೂರು. ಭಾರತೀಯ ವಿಶ್ವಸಾಹಿತ್ಯದ ಮೇರು ಪ್ರಮೇರು ಸುಮೇರುಗಳಂತೆ ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಭಾರತ ಬೃಹತ್ಕಥೆಗಳು ಕಾವ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ ಜಾನಪದಗಳ ಮೂರು ಉತ್ತುಂಗ ಗ್ರಂಥಗಳು. ಇವು ಮೂರನ್ನೂ ಒಂದೊಂದು ಮುಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದು ತೋರುವಂತೆ ಮಣಿದರ್ಪಣದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಡುವಂತೆ ಈಗಿನ ಛಾಯಾಚಿತ್ರ ಪಟಗಳಂತೆ

ಸಂಕ್ಷೇಪ ಸರ್ವವನ್ನೂ ತೋರಿದವನು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಒಬ್ಬನೇ ಒಬ್ಬ. ಇವನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ ಭಾರತ ಮಂಜರಿ ಬೃಹತ್ಕಥಾ ಮಂಜರಿಗಳು ಹೀಗೆ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದುವು. ಇವನ ಇತರ ಗ್ರಂಥಗಳೂ ನೂರಾರು ಇವೆ. ಕೆಲವು ಮುದ್ರಿತ ಕೆಲವು ಅಮುದ್ರಿತ. ದೆಹಲಿಯ ಲೋದಿ ಕಾಲೋನಿಯಲ್ಲಿರುವ ರಾಮಾಯಣ ಭವನದಲ್ಲಿ ಕಾಶ್ಮೀರ ಮಹಾರಾಜ ಎಂ.ಪಿ. ಮತ್ತು ಕಾಂಗ್ರೆಸ್ ಮುಖಂಡ ಕರಣ ಸಿಂಹರು ಕಾಶ್ಮೀರದ ಎಲ್ಲ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಶೇಖರಿಸಿ ರಕ್ಷಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಪಾಲು ಅಧಿಕ. ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಚೊಕ್ಕದಾಗಿ ಓದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗುವ ಶೈಲಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದು. ಇವುಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲ ಸಮಾಜಕ್ಕೆ ನೀತಿ ಬೋಧನೆ ಮುಖ್ಯವಾಗಿದೆ. ಒಂದೊಂದು ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲೂ ಹಲವಾರು ಒಳ್ಳೆಯ ನೀತಿಗಳನ್ನು ಎತ್ತಿ ಹೇಳುವ ಸಮಾಜ ಸುಧಾರಕ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಕೆಲವು ಉದಾಹರಣೆಗಳು ಮಾತ್ರ ಇಲ್ಲಿ ಗಮನಿಸತಕ್ಕವು.

ಪರಶಿವನು ಪಾರ್ವತಿಯೊಡನೆ ಹಿಮಗಿರಿಯಲ್ಲಿ ತಪಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ನಿರತನಾಗಿದ್ದ. ಇವನಿಗೇಕೆ ತಪಸ್ಸು? ಲೋಕ ಕ್ಷೇಮಕ್ಕಾಗಿ ಮಾತ್ರ, ಇದು ತನಗಾಗಿ ಅಲ್ಲ.

**ಪರಕಾರ್ಯಸುಖಾಸ್ಯಂತಃ ಸ್ವಸುಖೇಷು ಪರಾಙ್ಮುಖಾಃ ।**

(ಅಯೋಧ್ಯಾ 222)

ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರನ್ನು ಭೇಟಿಮಾಡಿದಾಗ ಹೇಳುವ ಮಾತು ಸಜ್ಜನರ ಭೇಟಿ ಎಂದಿಗೂ ಒಳ್ಳೆಯದೇ.

**ಮನೋರಥಾವತೀರ್ಣೋऽಪಿ ಧನ್ಯತಾಂ ಆದಧಾತಿ ಯಃ ।**
**ಸ ಸಾಧು ಸಂಗಮಃ ಕಸ್ಯನ ಪ್ರಿಯಃ ಕುಶಲೋದಯಃ ॥**

(ಅಯೋಧ್ಯಾ 326 )

ತ್ರಿಶಂಕುಮಹಾರಾಜನು ಸಹಾಯವಿಲ್ಲದೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಬಳಿ ಹೇಳುವ ಮಾತು

**ಉದೇತಿ ಮೃತ್ಯುಃ ಪೀಯೂಷಾತ್, ಕಿಮನ್ಯದ್ ವಿಧುರೇ ವಿಧೌ ।**
**ಸುಹೃದಶ್ಶತ್ರುತಾಂ ಯಾಂತಿ ಸಂಶ್ರಿತಾಶ್ಚ ಅವಿಧೇಯತಾಂ ॥**

(ಅಯೋಧ್ಯಾ 387)

ವಿಧಿ ಲಿಖಿತ ಶೂನ್ಯವಾಗಿದ್ದರೆ, ಅಮೃತವೂ ವಿಷ, ಮಿತ್ರರೂ ಶತ್ರುಗಳು, ಆಶ್ರಿತರೂ ಹೇಳಿದ್ದನ್ನೂ ಕೇಳರು.

ಮಂಥರೆಯ ಮಾತಿಗೆ ಮರುಳಾದ ಕೈಕೇಯಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಕವಿಯ ಮಾತು;-

ಹೆಂಗಸರು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಮುಗ್ಧ ಸ್ವಭಾವದವರು. ಇವರನ್ನು ನೀಚರಾದ ಮೋಸಗಾರರು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಜಿಂಕೆಗಳನ್ನು ಬಲೆ ಹಾಕಿ ಹಿಡಿಯುವಂತೆ ಹಿಡಿದು ಬಿಡುತ್ತಾರೆ. ರಾಜರನ್ನೂ ಹೀಗೆಯೇ.

**ಪ್ರಾಯೇಣ ಮುಗ್ಧಹೃದಯಾಃ ಶಿಶವೋ ಭೂಮಿಕಾಃ ಸ್ತ್ರಿಯಃ ।**
**ಹ್ರಿಯಂತೇ ಲುಬ್ಧಕೈರ್ನೀಚೈಃ ಕುರಂಗಾ ಇವ ಕಾನನೇ. ॥**

(ಅಯೋಧ್ಯಾ 702)

ಕವಿ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನಿಗೆ 'ವ್ಯಾಸದಾಸ' ಎಂಬುದು ವೈಷ್ಣವ ದೀಕ್ಷೆಯ ಹೆಸರು. ನಿಜವಾಗಿಯೇ ಇವನು ವ್ಯಾಸರನ್ನು ಮೀರಿಸಿದ ಕವಿ. ಸಹೃದಯ ವ್ಯಾಸಶಿಷ್ಯ ಪರಂಪರೆಯವನು. ವರ್ಣನೆಯಿಂದಲೇ ವಿವಿಧಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೊಮ್ಮಿಸುವ ಶಬ್ದಾರ್ಥ ಶಕ್ತಿ ಇವನದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಮೀರಿಸಿದವರು ವ್ಯಾಸರು. ವ್ಯಾಸರುನ್ನೂ ಮೀರಿಸಿ ಅವರಿಬ್ಬರ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲೇ ಸಾಗುವವರು ಶ್ರೀಕಾಳಿದಾಸಾದಿಗಳು. ಅವರ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲೇ ಸರ್ವಸಾಹಿತ್ಯ ಕೃಷಿಕನಾಶಿ ಮುನ್ನಡೆದು ಅಪೂರ್ವ ಉಪಮೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ ರೂಪಕಗಳ ಮೂಲಕ ರುಚಿಸುವ ಔಚಿತ್ಯ ಪೂರ್ಣವಾದ ಕವಿತೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನದು. ಉದಾಹರಣೆಗೆ ಕೆಲವು ವಿಷಯಗಳು–

[ದಶರಥನಿಗೆ ನಾಲ್ವರು ಪುತ್ರರು ದಿಗ್ಗಜ ಐರಾವತಕ್ಕೇ ನಾಲ್ಕು ದಂತಗಳಿದ್ದಂತೆ, ಜಲದೇವತೆ ವರುಣನಿಗೆ ಸುತ್ತ ನಾಲ್ಕು ಸಮುದ್ರಗಳಿದ್ದಂತೆ, ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ನಾಲ್ಕು ತೋಳುಗಳಿದ್ದಂತೆ ಹೀಗೆನ್ನುತ್ತಾನೆ ಕವಿ] ಆನೆಗಳಿಗೆ ದಂತಗಳೇ ಲಕ್ಷಣ. ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಸದೆಬಡಿಯಲು ದಶರಥನಿಗೆ ಈಗ ಒಂಟಿತನವಿಲ್ಲ. ನಾಲ್ಕು ವೀರರು ಮಕ್ಕಳಿದ್ದಾರೆ ವರುಣನಿಗೆ ರತ್ನಾಕರಗಳು ನಾಲ್ಕು ಸಮುದ್ರಗಳು. ವಸಿಷ್ಠಾದಿಗಳಿಂದ ಮತ್ತು ಕೌಸಲ್ಯೆ ನಡೆಸುತ್ತಿದ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ  ಗುರುಕುಲದಲ್ಲಿ ರತ್ನಗಳಂತೆ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಸಕಲ ವಿದ್ಯೆಗಳನ್ನೂ ಕಲೆಗಳನ್ನೂ ಕಲಿತು

ರತ್ನಾಕರದಂತಿರುವ ನಾಲ್ವರು ಪುತ್ರರಿದ್ದಾರೆ ದಶರಥನಿಗೆ. ದಾನ ಮಾಡಲು ಎರಡು ಕೈ ಸಾಲದೆಂಬಂತೆ ನಾಲ್ಕು ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳನ್ನೂ ಏಕ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಾನ ಮಾಡಲು ನಾಲ್ಕು ಕೈ ವಿಷ್ಣುವಿಗಿರುವಂತೆ ಉದಾರಿಗಳಾದ ನಾಲ್ಕು ಮಕ್ಕಳು ಈಗ ದಶರಥನಿಗೆ ರಾಷ್ಟ್ರರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಎರಡು ತೋಳ್ಬಲದಿಂದ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ದಶರಥನಿಗೆ ಈ ನಾಲ್ವರಿಂದಾಗಿ ಎರಡರಷ್ಟು ರಾಷ್ಟ್ರರಕ್ಷಣೆ ಮತ್ತು ವಿಸ್ತರಣೆ ಮಾಡುವ ಶಕ್ತಿ ಬಂದಿದೆ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಓದಿದರೆ ಈ ನಾಲ್ವರೂ ಭಾರತದ ಪಶ್ಚಿಮೋತ್ತರಗಳಲ್ಲೂ ಸುರಾಜ್ಯ ವಿಸ್ತರಣೆ ಮಾಡಿದ ವಿಷಯ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ರಾಮ ಒಬ್ಬನೇ ದಕ್ಷಿಣ ಆಗ್ನೇಯ ಭಾರತ ದ್ವೀಪ ಉಪದ್ವೀಪಗಳನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಏಕರಾಷ್ಟ್ರ ಮಾಡಿದ್ದೇ ರಾಮಾಯಣದ ಮುಖ್ಯ ಫಲ. ಇದು ರಾವಣ ವಧದಿಂದಾಯ್ತು. ವಿಭೀಷೇಣ ಸುಗ್ರೀವರ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದಿಂದಾಯ್ತು. ಹೀಗೆ ಈ ನಾಲ್ವರು ವೀರರು ಉತ್ತಮ ವಿದ್ಯಾವಂತರು ಉದಾರಿಗಳು ಸರ್ವಕಾರ್ಯ ಸಮರ್ಥರು ಎಂಬ ವ್ಯಂಗ್ಯಾರ್ಥ ವಸ್ತು ಧ್ವನಿ ಈ ಉಪಮಾನಗಳಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ.

15. [ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮುನಿ ಬಂದು ಬಾಲ ರಾಮನನ್ನು ನನ್ನ ಜತೆ ಕಳುಹಿಸಿಕೊಡು ಎಂದು ದಶರಥನಿಗೆ ಹೇಳಿದಾಗ ದಶರಥನು ರಾಮನ ಗುಣಗಳನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸಿ ಹೇಳಿ ವಾತ್ಸಲ್ಯದಿಂದ ಇಂತಹ ಮಗನನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿರಲಾರೆ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಅಸೂಯೆಯಿಂದ ಮುಸಿ ನಗುತ್ತಾನೆ. ಅಸೂಯೆ ಇಲ್ಲಿ ಅವನಿಗೇಕೆ ಬಂತು. ದಶರಥನಿಗಿರುವ ಪುತ್ರವಾತ್ಸಲ್ಯ ತನಗಿಲ್ಲದೇ ಹೋಯಿತಲ್ಲಾ, ತಾನು ಎಷ್ಟೆಷ್ಟು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಶಪಿಸಿ ಹೊರಗಟ್ಟಿ ಬಿಟ್ಟೆ, ಎಂಬುದು ಮುನಿಯ ನೆನಪಿಗೆ ಬಂದಿರಬೇಕು. ಈ ಅಂಶ ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲವಾದರೂ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ ಹೊಮ್ಮಿ ಬಂದಿದೆ, ಆಹಾ! ಎಂತಹ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ ಕವಿಯದು.]

ಮಿಥಿಲೆಗೆ ಬರುವಾಗ ಮಧ್ಯೆ ಗೌತಮಾಶ್ರಮ ನೋಡಿದರೆ ಅದು ಶೂನ್ಯವಾದರೂ ಸುಂದರವಾಗಿತ್ತು. ಬಡವನಾದರೂ ಗುಣ ಪೂರ್ಣನಾದ ವ್ಯಕ್ತಿಯಂತೆ. ಈ ಉಪಮಾನ ಇಲ್ಲಿ ಅಪೂರ್ವ.

[ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ವರಿಸುವಾಗ ತನ್ನ ಕಣ್ಣೋಟದಿಂದಲೇ ರಾಮನನ್ನು ಆವರಿಸಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದಳು ಎಂಬುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ವರ್ಣನೆ.

**'ರಾಘವೋಽರ್ಹತಿ ವೈದೇಹೀಂ, ತಂಚೇಯಂ ಅಸಿತೇಕ್ಷಣಾ'**

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ವರ್ಣನೆ ಇನ್ನೂ ರಸವತ್ತಾಗಿ ಮುಂದೆ ಸಾಗುತ್ತದೆ. ಸೀತೆಯ ಆ ನೀಲಿ ಕಣ್ಣುಗಳು ರೆಪ್ಪೆಗಳ ನೀಳವಾದ ಬಾಗಿದ ಬಿಲ್ಲಿನಂತಹ ಕಾಂತಿಯು ನಿಜವಾಗಿ ಕಾಮನ ಬಿಲ್ಲಿನಂತಿತ್ತು. ರಾಮನು ಅದನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ಆಗ ರಾಮ ರಾಮನಾಗಿರದೇ ಕಾಮನೇ ಆಗಿದ್ದ. ನಾವೂ ಇನ್ನೂ ಮುಂದುವರೆದು ವರ್ಣಿಸಬಹುದು ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ಮುರಿದು ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ಗೆದ್ದ. ಕಾಮಧನುಸ್ಸನ್ನು ಬೀರಿ ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಗೆದ್ದಳು (ಇದು ಶ್ರೀ ರಾಮಕರ್ಮನಾದ ನನಗೆ ಈಗ ಏರ್ಪಟ್ಟ ಭಾವ) ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಕಾಮನನ್ನಾಗಿಸಿಬಿಟ್ಟಳು ಎಂಬುದು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಅಪೂರ್ವವಾದ ಭಾವ. ಹೀಗೆ ನೂರಾರು ಚಮತ್ಕಾರಗಳು ಕ್ಷೇಮೆಂದ್ರನವಾಣಿಯಲ್ಲಿವೆ.]

ರಾಮ ಪರಶುರಾಮನೊಡನೆ ಕಾದಲು ನಿಂತಾಗ ರಾಮನಬಿಲ್ಲು ಸೂರ್ಯ ತನ್ನ ಮಂಡಲವನ್ನು ಪಸರಿಸಿದಂತೆ ದೇದೀಪ್ಯಮಾನವಾಗಿತ್ತು. ಈ ಸೂರ್ಯನ ಮುಂದೆ ದೀಪದಂತೆ ಪರಶುರಾಮ ಮಂಕಾಗಿಬಿಟ್ಟ. ಏಕೆಂದರೆ ಅವನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಆವರೆಗೆ ಯಾವೊಬ್ಬ ಕ್ಷತ್ರಿಯನೂ ಅವನನ್ನು ಹೀಗೆ ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಎದುರಿರಲಿಲ್ಲ.

ದಶರಥ ಯುವರಾಜ ಪಟ್ಟಾಭೀಷೇಕ ಮಾಡಲು ರಾಮನನ್ನು ತನ್ನ ಎದುರಿಗೆ ಕೂರಿಸಿಕೊಂಡು ನಗುತ್ತ ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಅವನ ಶುಭ್ರವಾದ ಹಲ್ಲಿನ ಸಾಲಿನ ಕಾಂತಿ ಶಿರಬಾಗಿದ ರಾಮನ ತಲೆಯ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ಈಗಲೇ ಜರಿಯ ಬಿಳಿಯ ಪೇಟ ರಾಮನಿಗೆ ಮುಡಿಸಿ ಪಟ್ಟಕಟ್ಟಿ ಬಿಟ್ಟಂತೆಯೇ ಆಗಿತ್ತು. ಮುಂದೆ ರಾಮನಿಗೆ ದಶರಥ ಪೇಟಧಾರಣೆ ಮಾಡುವ ಸಂದರ್ಭ ಬರದೇ ಹೋದರೂ ಕವಿಯ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಈಗಲೇ ಆಗಿತ್ತು. ಇಂತಹ ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಣನೆಗಳು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿವೆ. ಓದಿ ತಿಳಿಯಲೇ ಬೇಕು ಓದಿದರೆ ಅವರು ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನನ್ನು ಮೀರಿಸುವ ಕವಿಗಳಾದಾರು.

ದಶರಥನಿಗೆ ಕೈಕೇಯಿ ಹೇಳುವ ಮಾತು – ಮಾತಿಗೆ ತಪ್ಪುವವರ ಮಾತು ಬೀದಿಯ ರೊಚ್ಚೆ ಕೊಚ್ಚೆಗಳನ್ನು ಗುಡಿಸುವ ಕಸಪರಿಕೆಯಂತೆ (767 ಅಯೋಧ್ಯಾ) ಈ ಹೋಲಿಕೆ ಹಿಂದಿನ ಕವಿಗಳಾರೂ ಕೊಟ್ಟಂತಿಲ್ಲ. ಮನೆ ಗೂಡಿಸುವ ಕಸಬರಿಕೆ ಮನೆಯೊಳಗೇ ಮೂಲೆಯಲ್ಲಾದರೂ ಇರುತ್ತದೆ. ಬೀದಿಯ ಕಸಬರಿಕೆ ಎಂದೂ ಮನೆಯೊಳಗೆ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಹಾಗೆ ನಿನ್ನ ಮಾತು ಹೊರಗೇ ಇಡಬೇಕಾದ ಮಾತು ಎಂದರ್ಥ.

ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಕೈಕೇಯಿಯ ಮೇಲೆ ಕೋಪಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ರಾಮನು ಹೇಳುವ ಮಾತು. ಕೋಪ ಬಿಡು. ಉಚಿತ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವವರೇ ಮಹಾತ್ಮರೆನಿಸುವರು.

**ಕ್ರಿಯತಾಂ ವಿಮಲಂ ಚೇತಃ, ಕೋಪಃ ಶಾನ್ತ್ಯಾಚ ವಾರ್ಯತಾಂ ।**
**ಔಚಿತ್ಯ ಚಾರುಚರಿತಂ ಸಹಜಂ ಹಿ ಮಹಾತ್ಮನಾಂ** ॥ 849

ಗುರು ಭಕ್ತಿ, ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ, ಧೈರ್ಯ, ಕೋಪಿಸಿದವರಲ್ಲಿ ಕ್ಷಮೆ, ದೀನರಲ್ಲಿ ದಯೆ ಇವು ನಾಲ್ಕು ಯಶಸ್ಸಿನ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಧರಿಸಬೇಕಾದ ಎರಡು ಜೋಡಿ ಮಾಲೆಗಳು.

**ಏತಾಸ್ತಾ ಯಶಸಶ್ಶುಭ್ರಾಃ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವಿಭವ ಸ್ರಜಃ॥**
**ಭಕ್ತಿರ್ಗುಣಾ, ಧೃತಿರ್ದುಃಖೇ, ಕ್ಷಮಾ ಕೋಪೇ, ದಯಾಕೃಶೇ** ॥ 851

ಸಜ್ಜನರಲ್ಲಿ ದೌರ್ಜನ್ಯ ಸೇರದು, ಗುಣವಿರುವಲ್ಲಿ ಡೊಂಕುತನ ಸೇರದು, ವಿವೇಕವಿರುವಲ್ಲಿ ಒರಟುತನ ಬರದು,

**ಕ್ವ ! ಸನ್ತಃ  ಕ್ವಚ ! ದೌರ್ಜನ್ಯಂಕ್ವಗುಣಾಃ ಕ್ವಚ ವಕ್ರತಾ ।**
**ಕ್ವ ! ವಿವೇಕಃ, ಕ್ವ ಪಾರುಷ್ಯಂ ! ದೂರಮೇತತ್ ಪರಸ್ಪರಂ** ॥ 852

ಪತಿಯನ್ನು ಬಟ್ಟಿರಲಾರದ ಸೀತೆ ಹೇಳುವ ಮಾತು:– ತ್ಯಾಗವಿಲ್ಲದ ಐಸಿರಿಯಂತೆ, ಸತ್ಯವಿಲ್ಲದ ವಾಣಿಯಂತೆ, ನೆಮ್ಮದಿಯಿಲ್ಲದ ವಿದ್ಯೆಯಂತೆ, ಪತಿಯ ಜತೆಗಿಲ್ಲದ ಪತ್ನಿಯ ಪಾಡು ನಿರರ್ಥಕ.

**ವಿಭೂತಿ ಸ್ತ್ಯಾಗ ಹೀನೇವ, ಸತ್ಯಹೀನೇವ ಭಾರತೀ ।**
**ವಿದ್ಯಾ ಪ್ರಶಮ ಹೀನೇವ, ನ ಭಾತಿ ಸ್ತ್ರೀ ಪತಿಂ ವಿನಾ** ॥ 876

ದಶರಥ ರಾಮನಿಗೆ ಯುವರಾಜ್ಯ ಪಟ್ಟಾಭೀಷೇಕ ಮಾಡಲು ನಿಶ್ಚಯಸಿದ್ದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವೊಂದನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ರಘುವಂಶದವರ ಐಶ್ವರ್ಯ ಯೋಗ್ಯರಾದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ವಹಿಸಬೇಕಾದುದು ಧರ್ಮ. ಹೀಗಾಗಿ ನಾರಾಯಣ ಮೂರ್ತಿಯ ಬಳಿ ಇದ್ದು ಶುದ್ಧವಾಗಿ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ದೈವಧ್ಯಾನ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ.

**ಪ್ರಯತಸ್ಸಹ ವೈದೇಹ್ಯಾ ಪವಿತ್ರೇ ಕುಶಸಂಸ್ತರೇ ।**
**ಧ್ಯಾಯನ್ ನಾರಾಯಣಂ ರಾಮಃ ತಸ್ಥೌನಿಶಿ ಹುತಾನಲಃ** ॥ 660

ದಶರಥ ಕೈಕೇಯಿಗೆ ಎಷ್ಟು ಸಮಾಧಾನ ಹೇಳಿದರೂ ಅವಳು ಬದಲಾಗಲಿಲ್ಲ. ಇದು ದೈವಚಿತ್ತ ನಾವೇನೂ ಮಾಡಲಾಗದು.

**ದೈವಪ್ರೇರಿತ ಚಿತ್ತಾನಾಂ ವಚೋಭಿಃ ಕಾ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ** । 740

ಕೈಕೇಯಿಯ ಮಾತು ಧರ್ಮವೋ ಅಧರ್ಮವೋ ನನ್ನ ನಿಶ್ಚಯ ಬದಲಾಗದು.

**ಕೃತೋ ಧರ್ಮೋಽಸ್ತು ನಿಶ್ಚಯೋ ನಾನ್ಯಥಾ** ॥

ಈ ಮಾತು ದೈವಪ್ರೇರಿತ ಚಿತ್ತರಮಾತು ಭಕ್ತಿಯಿಂದಲೋ ಒರಟುತನದಿಂದಲೋ ಹೇಳಬಹುದಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಉದಾಹರಣೆ.

ಪಾಂಚತಂತ್ರಾಗಮದ ಗೌತಮತಂತ್ರ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿದಿನ ಕೃಷ್ಣಾರಾಧನೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಬೇಕಾದ ನಾರದರ ಮಾತು

**ಜಾನಾಮಿ ಧರ್ಮಂ ನ ಚಮೇ ಪ್ರವೃತ್ತಿಃ,**
**ಜಾನಾಮ್ಯ ಧರ್ಮಂ ನ ಚಮೇ ನಿವೃತ್ತಿಃ ।**
**ಕೇನಾಪಿ ದೈವೇನ ಹೃದಿಸ್ಥಿತೇನ ಯಥಾ ನಿಯುಕ್ತೋಽಸ್ಮಿತಥಾಕರೋಮಿ ॥**

ಇದೇ ಪದ್ಯವನ್ನು ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ ಸಂಧಿ ಮಾಡಲು ಬಂದಾಗ ದುರ್ಯೋಧನನೂ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ ಇದು ಪಾಂಡವರಗೀತೆ ಎಂಬ ಹೆಸರಿನ ಪಾಂಡುರಂಗ ಭಕ್ತರೊಬ್ಬರು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿರುವ ಸ್ತೋತ್ರ ಸಂಗ್ರಹದಲ್ಲಿದೆ. ಕೃಷ್ಣ ಪೂಜೆಯಲ್ಲಿ ಅಂತರಾತ್ಮ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ಮಾಡುವುದನ್ನು ದೇವ! ನೀನು ತಪ್ಪೋ ಸರಿಯೋ ಕ್ಷಮಿಸು ಎಂದು ಭಾವ. ದುರ್ಯೋಧನ ಇದೇ ಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ತೋರಿದ್ದನ್ನು ಮಾಡುತ್ತೇನೆ. ನೀನೇನು ಹೊರಗಿರುವವನು ದೇವರೋ ಎಂಬ ಅಹಂಕಾರ ಆಕ್ಷೇಪಗಳು ಹೇಳುವವನ ಅಭಿಪ್ರಾಯ. ಹೀಗೆ ಕೈಕೇಯಿಯ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ವನವಾಸ ಯುವರಾಜ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಭರತನಿಗೆ ಆಗಲೇಬೇಕು ಎಂಬ ಭಾವವು ದೃಢವಾಗಿದೆ. (ಈ ಪದ್ಯ ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿಲ್ಲ)

[ರಾಮನು ವಾಲಿಯ ವಾಗ್ವಾದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಸಮಾಧಾನ ಕೊಟ್ಟಾಗ ವಾಲಿ ರಾಮನನ್ನು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತು 'ತಪ್ಪಾಯಿತು ಕ್ಷಮಿಸಿ ಬಿಡು' ಈ ಸ್ಪಷ್ಟನುಡಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿಲ್ಲ ಅಲ್ಲಿ ಗೂಢವಾಗಿದೆ. ತಾರೆ ಪತಿ ಮರಣದಿಂದ ದುಃಖಿತಳಾಗಿದ್ದಾಗ ಹನುಮಂತ ಸಮಾಧಾನ ಪಡಿಸಿದ ಎಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಅನ್ತಃಪುರದ ರಕ್ಷಕನಾದ ವೃದ್ಧನೊಬ್ಬ ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಿದ ಎಂದಿದೆ. ತಾರೆ ರಾಮನಿಗೆ ಶಾಪಕೊಟ್ಟಳೆಂದು ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ. ನೀನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಶ್ರೀ ಭೂಪತಿ ಎಂದು ತಾರೆ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿ ಸ್ತೋತ್ರ ಮಾಡಿದಳೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ತಿಳಿಸುತ್ತಾರೆ. "ಕ್ಷಿತಿಕ್ಷಮಾವಾನ್ ಕ್ಷತಚೋ ಪಮಾಕ್ಷ!" ಕ್ಷಮಾ–ಭೂವಿ, ಕ್ಷಿತಿ–ಶ್ರೀದೇವಿ 'ಶೃಣಾತಿ ನಿಖಿಲಾರ್ ದೋಶಾರ್ ಶ್ರೀಂ' ಎಂಬುದು ಶ್ರೀ ಶಬ್ದ ದನಿರುಕ್ತಿ ಕ್ಷಿತಿ ಶಬ್ಧಕ್ಕೂ ಇದೇ ಅರ್ಥ. ಇಂತಹ ರಾಮ ಭಕ್ತೆ ರಾಮನಿಗೆ ಶಾಪ ಕೊಡುವಳೆ!

**ಕಿಸ್ತು ಪ್ರಾಸ್ತಾಮಪಿ ಚಿರಂನ ಸೀತಾಂ ಉಪಭೋಕ್ಷ್ಯನೇ ॥**

(ಕಿಷ್ಕಿಂ 190)

ತಾರೆಯ ಮಾತು:–

**ಚೂತಶ್ಚಿನ್ನಂ ಶ್ರಿತೋನಿಂಬಃ ಪಾಂಥೇನ ಕ್ರಿಯತೇಽತ್ರಕಿಂ ॥**

ಮಾವು ಕಡಿದು ಬೇವು ಬೆಳೆಸಿದರು ಎಂದು ಕನ್ನಡದ ಗಾದೆ. ವಾಲಿಗೆ ರಾಮನು ಹೇಳುವ ಮಾತು. ನಮ್ಮ ಕಣ್ಣಿಗೆ ನಮ್ಮ ಕಣ್ಣು ಕಾಣದು ಹಾಗೆ ತನ್ನ ದೋಷ ತನಗೆ ತಿಳಿಯದು ಇತರರ ದೋಷಗಳು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕಾಣುವುವು.

**ಅನ್ಯಸ್ಯ ದೋಷಂ ಪಶ್ಯಂತಿ ಸುಸೂಕ್ಷ್ಮಮಪಿ ತತ್ಪರಾಃ ।**
**ಸ್ವನೇತ್ರಮಿವ ನೇಕ್ಷಂತೇ ಸ್ವದೋಷಂ ಮಲಿನಾ ಜನಾಃ ॥** 176 (ಕಿಷ್ಕಿಂ)

ವಾಲಿ ಹೇಳಿದ ಮಾತು ಕವಿ ತೋರಿಸುತ್ತಾನೆ

**ವಾಲೀ ವಿಗಲಿತ ಕ್ರೋಧಃ 'ಕ್ಷಮ್ಯತಾಂ' ಇತ್ಯುವಾಚತಂ ॥** 179

(ಕಿಷ್ಕಿಂ)

ಹೀಗೆ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಸುಭಾಷಿತಗಳು ಸ್ವಾರಸ್ಯವಾದ ಅಪೂರ್ವ ಪ್ರಸಂಗಗಳಿವೆ.

ಇದರಂತೆಯೇ ಇವನ ದಶಾವತಾರ ಚಂಪೂಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಮಾವತಾರ ಚರಿತ್ರೆ ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಸ್ವಾರಸ್ಯವಾಗಿದೆ ಸಾಧ್ಯವಾದರೆ ಗಮನಿಸೋಣ.

ಮಾಯಾಮೃಗ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಸೀತೆಹೇಳುವ ಮಾತು–

**ಗುಣಾ ಜನಾಪವಾದಾನ್ತಾಃ, ದುಷ್ಪಕ್ರಾಂತಾಃ ಕುಲಸ್ತ್ರಿಯಃ, ।**
**ಸ್ತ್ರೀಭೇದಾನ್ತಾಃ ಸುಹೃತ್ ಸ್ನೇಹಾಃ, ದುರ್ನಯಾನ್ತಾಶ್ಚ ಸಂಪದಃ ॥**
778 (ಆರಣ್ಯ)

ಪೂಜ್ಯ ಅತ್ತಿಗೆ! ಹೆಂಗಸಿನ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಬರುವ ಒಡತಿನಿಂದ ಅಣ್ಣತಮ್ಮಂದಿರ ಸ್ನೇಹವೂ ಹಾಳಾಗಿ ಬಿಡುವುದು. ಹಿರಿಯನ ಮಾತನ್ನು ಮೀರುವುದು ನೀತಿಯಲ್ಲ ಆದರೂ ಅಣ್ಣನಂತೆ ನೀನೂ ಪೂಜ್ಯಳು. ನಿಮ್ಮ ಸೇವಕ ನಾನು ಆದಿದರಿಂದ ನಿನ್ನ ಮಾತಿನಂತೆ ನಾನು ಇದೋ ಹೊರಡುತ್ತೇನೆ ಎಂದು ಹೇಳಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಹೊರನೆಡೆದ.

ಸೀತಾವಿವಾಹ ಪ್ರಕರಣದಲ್ಲಿ ಕವಿ ಹೇಳುವ ಮಾತು-

**॥ ಸುಖೋದಗ್ರೋತ್ಸವವ್ಯಗ್ರಾ ಧನ್ಯಾಃ ಪಶ್ಯಂತಿ ಬಾಂಧವಾನ್ ॥**

556 (ಅಯೋಧ್ಯಾ ಪರ್ವ)

ಮದುವೆ ಮುಂಜಿ ಹಬ್ಬ-ಹರಿ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಜಾತ್ರೆಗಳಲ್ಲಿ ಏನು ವಿಶೇಷ ಸೀತಾ ರಾಮ ವಿವಾಹೋತ್ಸವದಲ್ಲಂತೂ ರಾತ್ರಿಯೆಲ್ಲ ರತ್ನ ದೀಪಗಳಿಂದ ಹಗಲಿನಂತೆಯೇ ಬೆಳಕಿತ್ತು ಆಟ ಪಾಟ ಹರಟೆಗಳಲ್ಲಿ ಮಗ್ನರಾದವರು ರಾತ್ರಿ ಎಂಬುದನ್ನೇ ಮರೆತು ಬಿಟ್ಟಿದ್ದರು. ವಿಲಾಸಗಳು ಮುಗಿಯುತ್ತಲೇ ಇರಲಿಲ್ಲ. ಇಂತಹ ಸುಖ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳೇ ಮೇಲಾಗಿರುವ ಉತ್ಸವಗಳಲ್ಲಿ ಬೇರೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಮರೆತು ಉತ್ಸವದಲ್ಲೇ ಮಗ್ನರಾಗಿ ಸಂಭ್ರಮಿಸುವ ಪರಿಚಿತರನ್ನು ನೆಂಟರನ್ನು ಒಂದೆಡೆ ನೋಡಿ ಅನುಭವಿಸುವುದೇ ಅಲ್ಲವೆ ಉತ್ಸವಗಳ ಪ್ರಯೋಜನ. ಇದನ್ನು ಪಡೆದ ಜನರೇ ಧನ್ಯರು ಇಂತಹ ಮೈತ್ರೀ ವಿನಿಮಯದ ಭಾಗ್ಯ ಸಿಗುವುದು ಪೂರ್ವ ಪುಣ್ಯದಿಂದ ಇತ್ಯಾದಿ ಈ ಪ್ರಕರಣದ ತಾತ್ಪರ್ಯ.

~0~0~

ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿರುವ ಸಾವಿರಾರು ಸುಭಾಷಿತಗಳನ್ನು ಒಂದೆಡೆ ಸೇರಿಸಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಒಂದು ಸಂಪುಟ ಮಾಡಿದರೆ ಸಮಾಜಕ್ಕೆ ಸನ್ನೀತಿಗಳು ಸಿಕ್ಕಿ ಉಪಕಾರವಾಗುವುದು.

ವೇದೋಪನಿಷತ್ತುಗಳು ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನು ಜಗತ್ಕಾರಣನೆಂದೂ ಸೃಷ್ಟಿ ಸ್ಥಿತಿಸಂಹಾರಗಳು ಅವನ ವಶದಲ್ಲಿದೆಯೆಂದೂ, ಇದಕ್ಕಿಂತ ಮೇಲಾದ "ಮೋಕ್ಷ"ವೆಂಬುದು ಮಹಾನಂದರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದು ಅದೂ ಅವನ ವಶದಲ್ಲಿದ್ದು ಅವನು ಕರುಣೆಯಿಂದ ಬೇಡಿದವರಿಗೆ ಕೊಟ್ಟರೆ ಉಂಟೆಂದೂ ನಿಶ್ಚಯಿಸಿವೆ. ಈ ಪರಮಾತ್ಮನೇ ರಾಮನಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದ ವಿಷ್ಣು ಎಂಬುದು ಸರ್ವ ವೇದೇತಿಹಾಸ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿರುವ ನಿರ್ಣಯ.

ಇಂತಹ ಪರಮಾತ್ಮನು ಎಲ್ಲ ಜೀವಾತ್ಮಗಳಿಗೂ ಒಳಗೆ ಒಂದೇ ಆತ್ಮನಾಗಿರುವನು. ಇವನನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ವೇದಶಾಸ್ತ್ರಗಳ ಉಪದೇಶಗಳನ್ನೂ ಗುರುವಿನಿಂದ ಕೇಳಿ ತಿಳಿಯಬೇಕು. ಕೇಳಿದುದನ್ನೆಲ್ಲಾ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮನನ ಮಾಡಬೇಕು. ಮನನ ಮಾಡಿ ನಮಗೆ ಇದು ಸರಿ ಎನಿಸಬೇಕು. ಅನಂತರ ಅದನ್ನೇ ಧ್ಯಾನಿಸಬೇಕು. ಹೀಗೆ ಧ್ಯಾನಿಸಿದರೆ ಧ್ಯಾನದ ಕೊನೆಯ ಮಜಲು ಪರಮಾತ್ಮ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ.

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನು ಮಹಾಕವಿ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ ಉತ್ತಮ ದಾರ್ಶನಿಕ. ವೈಷ್ಣವ ದೀಕ್ಷೆ ಪಡೆದು ವ್ಯಾಸದಾಸ ಎಂಬ ನಿಜವಾದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದವನು. ವ್ಯಾಸರಂತೆ ಸಮಸ್ತ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಪಡೆದವನು ಇವನಿಗೆ ಒಮ್ಮೆ ವಿಷ್ಣು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದಾಗ ಸಂತೋಷದಿಂದ ವಿಷ್ಣುವಿಗೆ ಯಾವ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಲಿ ಎಂದು ಯೋಚಿಸಿ, ಅವನ ದಶಾವತಾರಗಳ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನೂ ಕಾವ್ಯರೂಪದಲ್ಲಿ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಧನ್ಯನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

ಹೀಗೆ ಋಷಿಗಳಂತೆ ದಿವ್ಯ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಪಡೆದ ಮಹಾತ್ಮ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ. [ಇವನ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಮರಿ ಎನ್ನುವಂತಿದೆ] ಈ ದಶಾವತಾರ ಚರಿತ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅವತಾರ ತತ್ವವನ್ನೂ ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತಿಯನ್ನು ಸರಳವಾಗಿ ಸರಸವಾಗಿ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾಗಿ ನಿರೂಪಿಸಿರುವನು.

ರಾಮಾವತಾರದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿ ಹೇಳದೆ ಬಿಟ್ಟಿರುವ ಕೆಲವು ಅಂಶಗಳಿವೆ.

ವೇದವತಿ ರಾವಣನಿಂದ ಅವಮಾನಿತಳಾಗಿ ಹೋಮಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ದೇಹ ತ್ಯಾಗಮಾಡಿದಳೆಂದು ಮಂಜರಿಯಲ್ಲಿದೆ. ಹೋಮಕಾರ್ಯ ಮುಗಿಸಿ ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಧುಮುಕಿ ದೇಹ ತ್ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದಳೆಂದು ಚರಿತದಲ್ಲಿದೆ ಮತ್ತು ದಿವ್ಯವಾದ ಒಂದೆಡೆ ತಾವರೆ ಹೂವಿನಲ್ಲಿ ದಿವ್ಯಕನ್ಯೆಯಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಯಂತೆ ಚಲುವಾದ ಮಗುವಾಗಿದ್ದಳು ರಾವಣ ಮೂರುಬಾರಿ ಆದಿತ್ಯ ಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನೂ ನೋಡಿ ಆಶ್ಚರ್ಯಪಟ್ಟು ಕೊನೆಗೆ ಆ ಮಗುವನ್ನೂ ತಂದು ಮಂಡೋದರಿಯ ಕೈಲಿರಿಸಿ ಈ ಮಗು ನಮಗೆ ಸಾಕು ಮಗಳಾಗಿರಲಿ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಮಂಡೋದರಿ ಸಾಕುತ್ತಿದ್ದಾಗ ನಾರದರು

ಬಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಇವಳನ್ನೂ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬೇಡ ದೊಡ್ಡವಳಾದಾಗ ರಾವಣ ಇವಳನ್ನೂ ಬಿಡುವುದಿಲ್ಲ ಇವಳನ್ನೇ ಪಟ್ಟದ ರಾಣಿ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳವನು. ನಿನ್ನ ಸ್ಥಾನಮಾನಗಳು ಆಗ ಹಾಳಾಗುತ್ತದೆ ಆದುದರಿಂದ ಎಲ್ಲಾದರೂ ಬಿಟ್ಟು ಬಿಡು ಎಂದು. ಮಂಡೋದರಿ ಒಂದು ಚಿನ್ನದ ತಗಡಿನ ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ಬಟ್ಟೆ ಹೊದಿಸಿ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟು ಬಿಡುತ್ತಾಳೆ. ಆ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ ಎಲ್ಲೋ ಹೋಗಿ ಕೊನೆಗೆ ನೆಲದೊಳಗೆ ಸೇರಿ ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನ ಯಜ್ಞ ಭೂಮಿ ಅಗೆದಾಗ ಸಿಕ್ಕಿ ಆ ಮಗು ಆಗ ಆರು ವರ್ಷದ ಕನ್ಯೆಯಾಗಿದ್ದು ಸೀತೆ ಎನಿಸಿತು. ಹೀಗೆ ಸೀತಾವತಾರದ ಒಂದು ಅಂಶ ಚರಿತದಲ್ಲಿದೆ.

ಸೀತೆ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದ ಹೆಣ್ಣು. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ತಂದೆಯಂತೆ ಇವಳನ್ನು ಕಾಪಾಡಿದ ಎಂಬ ಸೀತಾಚರಿತೆಯ ಮುಖ್ಯತ್ವವು ಒಂದು ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗೆ ಮಂಜರಿಗಿಂತ ಹೆಚ್ಚಿನ ಕೆಲವು ಅಂಶಗಳೂ ಪೌರಾಣಿಕ ರಾಮಾಯಣಾಂಶಗಳ ವ್ಯತ್ಯಾಸಗಳೂ ಇದರಲ್ಲಿವೆ. ಕಥನ ಕಲೆ ವಿನೂತನವಾಗಿದೆ. ಕಾಳಿದಾಸನ ರಘುವಂಶದ ರಾಮಚರಿತದ ಕೊನೆಯ ಮಾತು ಇಲ್ಲಿ ಅನುವಾದವಾಗಿದೆ. ರಾಮನು ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ಹೊರಟು ತನ್ನ ಮೂಲ ಸ್ಥಾನ ಕ್ಷೀರಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರಿದ ಎಂದು ಚರಿತದಲ್ಲಿದೆ.

ರಾಮಾವತಾರ ಸಂಕ್ಷೇಪ್ತ

**ಅಥಸ ಭಗವಾತ್ ವಿಷ್ಣುಃ ಕೃತ್ವಾ ಜಗನ್ನಿರುಪಪ್ಲವಂ**
**ದಶಮುಖಭಯಂ ಹೃತ್ವಾ ಹರ್ಷಪ್ರದಃ ತ್ರಿದಶಶ್ರಿಯಃ ॥**
**ಪವನತನಯಂ ಧೃತ್ವಾಧೀರೋನ್ನತಂ ಸವಿಭೀಷಣಂ**
**ಭುವನ ಭವನೇ ಕೀರ್ತಿಸ್ತಂಭಂ ಜಗಾಮ ಸುಧಾಮ್ಯುಧಿಂ ॥**

(ರಾಮಾವತಾರ 294)

ಸೀತಾಚರಿತ ಸಂಕ್ಷೇಪ್ತ

**ಬಾಲ್ಯೇ ಭೂಮಿತಲೇತಿರ್ಪಿತಾ, ತದನುಚ ಕ್ಲಿಷ್ಟಾವನೇಭೀಷಣೇ, ।**
**ಪೌಲಸ್ತ್ಯೇನ ಹೃತಾ, ಭಯಕ್ಷತಧೃತೀ ರುದ್ಧಾಚಲಂಕಾವನೇ ॥**
**ಲಬ್ಧಾ ಶುದ್ಧ್ಯನಲೇ, ಚ್ಯುತಾ, ಪುನರಪಿತ್ಯಕ್ತಾಸತೀ, ಜಾನಕೀ ।**
**ಸಂಸಾರೇ ಸತಕಾಶ್ರುಪಾತಿನಿ ನೃಣಾಂಧಜ್ ನಿತ್ಯದುಃಖಸ್ಥಿತಿಮ್ ॥**

(ರಾಮಾವತಾರ 264)

ಆರು ವಯಸ್ಸಿನವರೆಗೆ ಭೂಗರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬದುಕುಳಿದಳು, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಭಯಂಕರವಾದ ಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಎದುರಿಸಿದಳು, ಪುಲಸ್ತ್ಯ ಮುನಿಯ ಮೊಮ್ಮಗನಿಂದಲೇ ಅಪಹೃತಳಾದಳು, ಭಯದಿಂದ ಧೈರ್ಯಕಳೆದು ಕೊಂಡಳು, ಎಲ್ಲೂ ಹೋಗಲಾರದೆ ಲಂಕೆಯವನದಲ್ಲಿ ಸೆರೆಯಾದಳು, ಪರಿಶುದ್ಧಿಗೊಳಿಸುವ ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದೆದ್ದಳು, ಮತ್ತೆ ಪರಿತ್ಯಕ್ತೆಯಾದಳು ಏಕಪತಿವ್ರತೆಯಾದ ಶ್ರೀದೇವಿಯ ಅವತಾರವೆನಿಸಿದ ಜಾನಕಿ, ಸೀತೆ ಇಷ್ಟಾದರೂ ಅವಳು ಜನಕಮಗಳಾದುದರಿಂದ ತಂದೆಯಂತೆ ನಿರಹಂಕಾರಿಯೂ ನಿರ್ಲಿಪ್ತಳೂ ಆಗಿದ್ದಳು. ಇಂತಹವಳಿಗೆ ಇಷ್ಟೆಲ್ಲ ಕಷ್ಟ ಬಂದುದಕ್ಕೆ ಕಷ್ಟವನ್ನೇ ಅನುಭವಿಸುತ್ತ ಈ ಲೋಕಜನ ಇವಳಿಗಾಗಿಯೂ ದುಃಖ ಪಡುವಂತಾಯಿತಲ್ಲಾ! ಹೀಗೆ ಕರುಣ ರಸಕ್ಕೆ ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಮುಖ್ಯ ವಿಷಯ ಸೀತೆಯೇ ಆಯಿತು.

**"ಕಾವ್ಯಂ ರಾಮಾಯಣಂಕೃತ್ಸ್ನಂ ಸೀತಾಯಾಶ್ಚರಿತಂ ಮಹತ್"**

ಎಂಬ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ವಚನಕ್ಕೆ ಬಲ ಸಂವರ್ಧನೆ ಮಾಡುವಂತಿದೆ ಶ್ರೀ ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರ ಮಹಾಕವಿಯ ವಚನಗಳು

"ಸ್ವಸ್ತಿ ಶ್ರೀಃ"

ಕ್ಷೇಮೇಂದ್ರನ ಜೀವ ಸಿದ್ಧಿಸಾರ ಹೀಗಿದೆ:-

ಸಂತೋಷೋಯದಿ ಕಿಂಧನ್ಯೈಃ !, ಸುಖಶತ್ಯೈಃ ಕಿಂ ! ಯದ್ಯನಾಯತ್ತ ತಾ,
ವೈರಾಗ್ಯಂ ಯದಿ ಕಿಂವ್ರತ್ಯೈಃ !, ಕಿಮಖಿಲೈಸ್ತ್ಯಾಗೈರ್ವಿವೇಕೋಯದಿ ।
ಸತ್ಸಜೋಯದಿ ಕಿಂ ದಿಗನ್ತಗಮನ ಪ್ರಸ್ಥಾನ ತೀರ್ಥಶ್ರಮೈ ಃ!
ಶ್ರೀಕಾನ್ತೇ ಯದಿ ಭಕ್ತಿರಪ್ರತಿಹತಾ ತತ್ಕಿಂ ಸಮಾಧಿ ಕ್ರಮೈಃ! ॥

1.15 ದಶಾವತಾರ ಚರಿತಂ

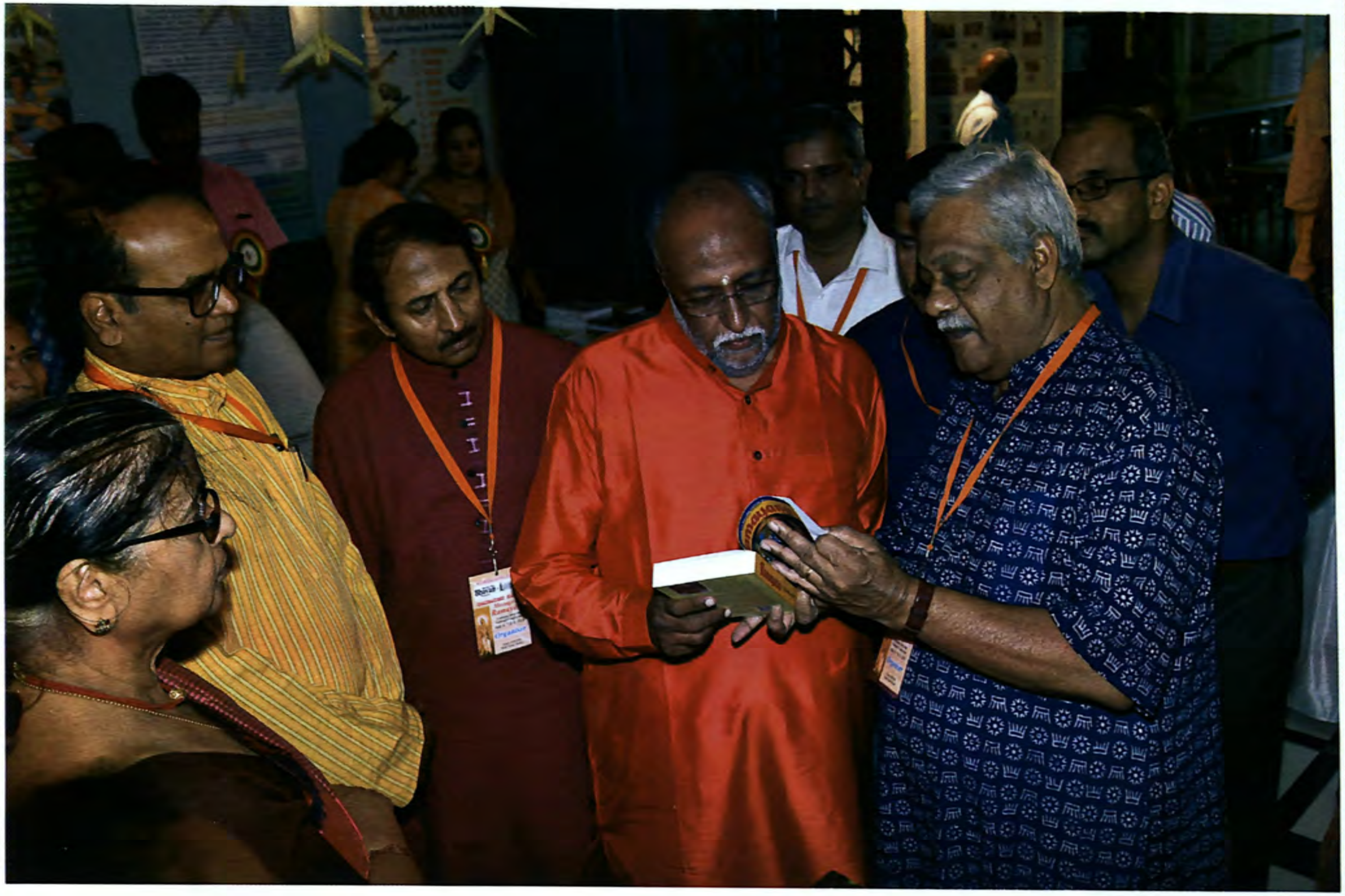

*Swami Sukhabodhananda interacting with Shri H.N. Suresh, Director, BVB*

# a critical analysis of raghuvilasa: a play by sri ramachandra suri

**Dr. R.N. Nagaraj**

Ramayana has been the source of innumerable poetic works in Sanskrit as also Mahabharata. Bhasa the celebrated dramatist wrote Abhishekanatakam, Pratimanatakam and Yajnaphalam based on Ramayana. The play Raghuvilasa is from the pen of a Jain monk, Sri Ramachandra Suri of the 10th Century AD.

## INTRODUCTION:

Ramayana has been the source of innumerable poetic works in Sanskrit as also Mahabharata. Bhasa the celebrated dramatist wrote Abhishekanatakam, Pratimanatakam and Yajnaphalam based on Ramayana. The play Raghuvilasa is from the pen of a Jain monk, Sri Ramachandra Suri of the 10th Century AD.

## 1. The Dramatist:

### 1.1 Sri Ramachandra Suri

Sri Ramachandra Suri the dramatist fortunately provides at least some biographical details about himself and his works. In the prologue to the extant play he says that he is the distinguished student (pattadhara) of the most celebrated preceptor Acharya Hemachandra, the author of Siddhahemachandra, a text on grammar. Ramachandra is also the author of a Nyaya text DravyAlaMkAra and also several plays, of which four are referred to in the extant play: RaghavAbhyudayaM, YAdavAbhyudayaM, NalavilAsa and RaghuvilAsa. He is also the co-author of the work Natyadarpana, a work on dramaturgy in collaboration with Gunachandra. However the examples quoted in the latter work are generally authored by Ramachandra.

He confidently asserts through the Utradha in Raghuvilasa that he has the creative skill and workmanship of the dramatist; his words are fragrant and his speech is with a novel twist; he has an absolute command over all the varieties of dramatic forms and is well versed in poesy and Upanishads.

व्युत्पत्तिर्मुखमेव नाटकगुणन्यासे तु किं वर्ण्यते ?,
सौरभ्यप्रसवा नवा भणितिरप्यस्त्येव काचित् क्वचित् ।

यं प्राणान् दशरूपकस्य सकरोत्क्षेपं समाचक्षति,
साहित्योपनिषद्विदः स तु रसो रामस्य वाचां परम् ॥४॥

He himself claims that he was the foremost disciple of Hemachandra, the most famous Jain polyglot of that era. And that he is well known as an author of no mean achievement.

पञ्चप्रबन्धमिषञ्चमुखानकेन
विद्वन्मनःसदसि नृत्यति यस्य कीर्तिः ।

विद्यात्रयीचणमचुम्बितकाव्यतन्द्रं
कस्तं न वेद सुकृती किल रामचन्द्रम् ? ॥३॥

### 1.2 His Date:

He flourished during the reign of Chalukya kings SiddharajaJayasimha and Kumarapala of Gujarat. He was born in Shaka Era 1145 (AD 1223), near about the capital AnahillaapuraPaatan. He was initiated as a Jaina Muni in 1228 AD. He became a Suri in 1244 and he passed away in 1308 AD at a ripe age of 85. His patron Siddharaja attracted several scholars from all over India. Shaivism was the faith of the kings of the day yet Jainism too was patronised.He was a Mahakavi, and King Siddharaja had given him the title Kavikataramalla.He could compose poetry on the spur of the moment and hence was called SheeghraKavi.He was an adept at samasyapurana.

### 1.3 His works

He himself refers to 11 plays penned by him. They include

1. RaghavAbhyudayam,
2. YadavAbhyudayam,
3. Nalavilasa,
4. Raghuvilasa,
5. Kaumudimitranandaprakaranam,
6. NirbhayabhImavyayoga,
7. Mallikamakarandaprakarana,
8. Rohinimrigankaprakarana,
9. Vanamalanataka
10. Yaduvilasam and
11. Satya harshcandranatakam.

He is also the author of Prabhandhashatakam and co-author of Natyadarpana on the art of dramaturgy and dravyalankara on nyaya with his co-student Gunachandra which carry their own Vritti or gloss.

### 2.1 On Raghuvilasa and Nataka

He considers his Raghuvilasa as one of the four best plays the other three being Raghav Abhudaya, Yaadavaabhyudaya and Nalavilasa.

The two major full-fledged types of rupaka are nataka and prakarana and Ramachandra's Raghuvilasa is a nataka and Kaumudimitr Ananda is a prakarana.

### 2.2 Nataka

He describes the Nataka as follows in Natyadarpana:

1. It secures for us the three purushaarthas viz., dharma, artha and kama.
2. It has ankas, upaya, dasa and samdhi.
3. Gods help the hero to succeed in his endeavors.
4. It describes the life incidents of famous ancient kins.
5. The protagonist can be dhiroddhata, dhirodattha, dhiralalita or dhiraprashanta.
6. The main difference in the main story between nataka and prakarana is that in case of the former it is well known and in case of the latter, it is an imaginary one. The fomer has a famous king as a hero while in the latter he is dramatist's creation.

### 2.3 Play-wright's tribute to Valmiki's Ramayana

Ramachandra is greatly indebted to Valmiki and his masterpiece Ramayana. It is a gem of a good story – sukatharatna!

It is a royal pearl of poesy of best speech! The story is well known: Ravana abducted Sita through a ruse. Rama brought her back after killing the abductor in the great battle! My daily salutations to that gem of poesy! Says Ramachandra.

सीतां काननतो जहार विहितव्याजः पुरा रावण–
स्तं व्यापाद्य रणेषु तां पुनरथो रामः समानीतवान् ।

एतस्मै कविसूक्तिमौक्तिकमणिस्वात्यम्भसे भूर्भुवः–
स्वर्व्यामोहनकार्मणाय सुकथारत्राय नित्यं नमः ॥२॥

## 2.4 The Play

The play starts with the traditional Prastavana and introduces the Kaikeyi episode where Rama's coronation is stopped and its fall out.

What Kaikeyi's unanticipated action brought about is so beautifully portrayed:

सुवुद्धिः– (सखेदमुच्चैःस्वरम्)
न्याय! स्थानमुपैहि किञ्चिदपरं, सौजन्य! पुण्यक्षयो
जाता[स्ते, गुरुते! हताऽसि, विनय! प्राप्तोऽसि दीनां दशाम्।
आधारो भवतामयं दशरथक्षोणीधरो दैवतः,
कैकेयीकुलिशेन हन्त! पतता निर्मूलमुन्मूल्यते ॥८॥

How Dasharatha feels the anguish at the request of Kaikeyi

न रामस्तैः स्तुत्यैर्नियतमभिरामः सुतगुणै–
रुताहो! व्यक्तं मे विशदगुणगृह्यं न हृदयम् ।
तेदेतत् कैकेयीवचनमुपकर्ण्यापि यदहं,
मरुन्मैत्रीहार्यैर्न तनुतनुखण्डैर्विदलितः ॥१०॥

The ill-forebodings of the evil act of Kaikeyi afflicts him even more!

इतः सत्योच्छेदो रघुकुलकलङ्कप्रथमभूः,
सुतस्य श्लाघ्यस्य प्रवसनमितोऽकीर्तिपटहः ।
अकाण्डे तत् किञ्चित् प्रभवति विधेयं विधिवशाद्,
न चाऽऽदातुं हातुं न च यदिह शक्यं कथमपि ॥११॥

Rama's reaction to the news of Bharata's coronation and his life in forest:

सत्यं रघूद्वहपतेर्भरतस्य राज्यं,
मातुश्च केकयभुवः परमः प्रमोदः ।
मां काननाय दिशता जगतां हितेन,
तातेन कर्म किमु नाद्य कृतं यशस्यम् ? ॥ २६ ॥

Dasharatha is so ashamed of himself that he does not want even to face Rama who is beside him take leave of him prior to his departure to the forest:

नाऽकीर्तिर्गणिता, श्रिता न सरणिर्लोकस्य, वृत्तं सतां
न ध्यातं, गुणशालिनो हृदि धृतं पुत्रस्य न प्रेम च ।
चण्डालाचरणाञ्चिते विरचिते कर्मण्यधर्माविले
वक्त्रं दर्शयितुं न मे समुचितं द्रष्टुं न रामस्य च ॥२०॥

At the end of the first act, the panegyrist's tribute is so beautifully composed so as to suggest the catastrophe that would befall Rama and Sita in the forest as interpreted by the Sutradhara.

रजनीचरेण तमसा तप्तारामस्य देवरिपुजयिनः ।
ह्रियते विलापतुमुला विधुवदनाऽऽशावधूरधुना ॥ २२ ॥

Observe the paranomasia and the anuprasa, a play on words.

सूत्रधारः– (सभयमात्मगतम्) कथमयं मागधः सन्ध्यावर्णनव्याजेन मूर्च्छितायाः निष्प्रत्याशायाः रामप्रियायाः निशाचरेणापहारं सूचयति?। भवतु तावत् । (प्रकाशम्) देव ! सन्ध्याविधिसमयो वर्त्तते ।

With this the first act ends.

## II ACT

The second act begins with the Shambuka's episode.

Ravana enters dandaka, smitten by lust and drawn by the beauty and charm of Sita.

A deviation from the original, Ravana meets Rama, Laxmana and Sita in the forest. He boasts about his exploits vaingloriously by impersonation:

समजनि रणरङ्गे यस्य वक्षोऽभिघातैः,
दलितरदनदण्डः स्वःकरेणुः करेऽणुः ।
रजनिचरचमूनामीश्वरः श्रूयमाणः,
स भवति न भयाय ब्रूहि केषां मृगाक्षि !? ॥१०॥

To which, Rama confidently responds with all the power at his command: don't compare apples with peaches!

शक्रेभद्विजदण्डखण्डनकरं वक्षस्थलस्य स्फुर–
त्कार्कश्यं न खलु प्रपञ्चयति नः पौलस्त्यशौर्यश्रियम् ।
अन्यः कोऽपि स वीरकुञ्चरमनः प्रत्यक्षरूपो न यः,
शोडीर्यस्य न नाम शूरतुलनामर्हन्ति गण्डोपलाः ॥१२॥

The might of Rama frightens even Ravana. Yet, we find in this act Sita being abducted by Ravana though a ruse and Jatayu challenging Ravana thus:

रे रे रात्रिञ्चर! धर मनाकू पुष्पकं, कं शरण्यं
हृत्वा सीतां रचयसि ? पुरो नन्वयं ते जटायुः ।
शातप्रान्तैः खरकररुहैर्वज्रदण्डव्रणार्द्रां,
गुच्छच्छेदं तव दशमुखीमेष सद्यश्छिनद्मि ॥२८॥

Jatayu fights valiantly with his sharp nails, beak and wings but ultimately Ravana vanquishes him with his sword candrahasa.

Here ends the II Act.

## III ACT

The bereaved Rama bereaves his predicament in piteous words:

त्यक्तास्ताः कुलभूमयः, परिहृताः शोकाकुला ज्ञातयः,
प्रारब्धा वनचारिणां समुचिता वृत्तिस्त्रपाकारिणी ।
एतस्मिन् विहितेऽपि दुष्करविधौ वेधा विधास्यत्ययं,
यत् किञ्चित् पुरतः प्रपत्तुमखिलं रामस्तदप्युत्सुकः ॥१॥

Lakshmana bemoans Kaikeyi's cruelty thus:

प्रवासितस्य पुत्रस्य शोकशङ्कुवशा दशाम् ।
पश्य पश्याऽम्ब कैकेयि ! मोदते येन ते मनः ॥४॥

Rama pays rich tributes to Sita whom he calls his army, friend, minister, or relative and pities her plight and ardently desires to see her in person.

त्वमेव पत्तिर्मित्रं वा मन्त्री वा बान्धवोऽथवा ।
तदेहि देहि वैदेहि ! मह्यं दुस्थाय दर्शनम् ॥५॥

Observe the alliterative words in Ehi, Dehi and Vaidehi!

The rest of the act portrays shoka rasa in all its piteousness and ends with the determination of Rama to fight it out:

निहत्य दशकन्धरं सह विपक्षरक्षःकथा-
प्रथाभिरधिसङ्गरं जनकजां ग्रहीष्ये ध्रुवम् ।
शशाक न स रक्षितुं रघुपतिः परेभ्यः प्रिया-
मयं तदपि सम्भवी चिरमकीर्त्तिकोलाहलः ॥२३॥

## IV ACT

The act begins with the poignant observation of the chamberlain which speaks of the perils of serving a wicked master:

कुस्वामी च हुताशश्च द्वावप्येतौ सहोदरौ ।
एकः सेवकसन्तापी स्वभावः कथमन्यथा ? ॥१॥

The poet is at his best in coming out with pithy proverbial expressions. To quote a few:

स्वतो न कश्चन गुरुर्लघुर्वाऽपि न कश्चन ।
उचिता-ऽनुचिताचारवश्ये गौरव-लाघवे ॥२॥

अधार्मिकमलावण्यमगुणं मर्मभाषिणम् ।
यः स्वयं स्वं विजानाति तेन वन्ध्या वसुन्धरा ॥३॥

ऐश्वर्यं वैदग्धी सौन्दर्यं तरुणिमा प्रियवियोगः ।
तदिदममूर्त्तो वह्निर्विक्लवयति कं न धीरमपि ? ॥४॥

प्रायेण पुंसि परिरम्भण - चुम्बनानि,
संतन्वते स्फुरति वामदृशां स्मरार्त्तिः ।
एतास्ततः कतिपयाः प्रियविप्रयोगे,
कालं क्षिपन्ति कुसुमेषुविकारवन्ध्याः ॥७॥

The Act paraphrases efforts of Ravana to woo Sita and her resolute refusal to reciprocate him. The act ends with a desolate Ravana as a still scheming lusty king to continue with his nefarious plans.

The dialogues in this act are racy, captivating and natural with a diction that is rare to find in contemporary Kavyas!

## V ACT

Vibhishana makes his appearance. Ravana still is smitten by lust and wonders how resolute women are when it comes to love disregarding all personal comforts!

आरोहन्ति दुरारोहं मार्गमुज्झन्ति दूरतः ।
योषितः कामिनामर्थे शाखिनामिव वीरुधः ॥३१॥

The act narrates the war that ensues between the two armies and ends in the reporting of Indrajit'sfatality.

## VI ACT

The war continues. Vibhishana joins Rama after his advice is disdainfully discarded by Ravana. Lakshmana is in a precarious state. He is revived.

## VII ACT

Despite the disastrous consequences of his immoral act of abducting Sita, Ravana is obstinate in his lust. Does not heed even Mandodati's advice.

Ravana's words and the directions by the dramatist is novel that probably it is unique:

**रावणः** – (सक्रोधम्)
चक्रं चक्रमरे !
(पुनः सखेदम्)
मनुष्यनिहतौ धिग्! मां समुत्कन्धरं,
(सविमर्श–रोषम्)
वैदेहिं स्पृहयालुरेष हतको, केयं तदस्मिन् कृपा?।
(सविनर्कभयम्)
एतस्मिन्नुपसंहृते किमपि सा कापेयमाधास्यते,
(विनिश्चित्य)
सीताजीवितजीवितस्य तदयं मृत्युर्ममोपस्थितः ॥३१॥

## VIII ACT

The war continues. Rama vanquishes Ravana.

Rama at last avenges Sita's abduction.

Rama seeks Sita's indulgence in a wonderful verse:

**रामः**–(सविनय–रोमाञ्चं सीतां प्रति)
प्राणान् यदू विरहेऽप्यहं विधृतवान् देवी! प्रियप्राणित–
स्तत् क्षन्तव्यमशेषमेष समयः स्मेराक्षि! नैव क्रुधाम् ।
सौमित्रेः कपिभर्त्तुरस्य च मनःप्रीत्यै तदेहि प्रिये!,
हस्तिस्कन्धमलङ्कुरुष्व ननु ते पूर्णः प्रतिज्ञाविधिः ॥२८॥

The play ends with a Bharatavakya by Jambavan that wishes well for all!

कल्याणं भूर्भुवः स्वः प्रसरतु, विपदः प्रक्षयं यान्तु सर्वाः,
सन्तः श्लाघां लभन्तामपचयमयतां दुर्मतिर्दुर्जनानाम् ।
धर्मः प्रुष्णातु वृर्द्धिं, प्रलयमनुकलं कल्मषाणि व्रजन्तु,
प्राप्य स्वातन्त्रयलक्ष्मीमनुभवतु मुदं शाश्र्वतीं रामचन्द्रः ॥२९॥

## CONCLUSION

The play is indeed a great one wherein the playwright has excelled himself in creating a scintillating play despite choosing accurate theme. His mastery over the language is one of the best. The figures of speech and sound that he employs are meaningful, contextual, simple and never far-fetched. The metres are varied yet never boring. The style is simple, direct and easy to understand. The dialogues are natural, free flowing and never contrite. On the whole the play is undoubtedly from the pen of a master-craftsman who is at ease with both the theory and practice of the art of stage-craft.

❑

*Dr. M. Veerappa Moily, Recipient of Saraswati Samman, former Union Minister being felicitated by Shri H.N. Suresh, Director, BVB. While Shri Pathi Sridhara, A Philanthropist join*

# Minor Episodes in the Ramayana – their Sociological Significance

**Dr. Aravind Rao**

The present critical trend is to study the sociological relations as seen in the text. The Ramayana, whether taken as a *kāvya* or as an *itihāsa*, presents glimpses of the society in general by portraying persons of different social strata.

We have three levels of literature in the Indian tradition – the Vedas, the itihāsa / purāṇa-s and the kāvya-s. In all the three, the objective of our seers was to teach the two-fold dharma – that relating to worldly transaction and that relating to liberation. However, each level had its own style of communicating dharma – the Vedas would command like a master, the itihāsa / purāṇa would illustrate like a friend and the kāvyam had the gentle approach of a lover. Itihāsa works on a broader canvas; it has a grand cultural vision for the whole society and wishes to establish a moral and ethical framework by touching various aspects – political, ethical and social. The kāvyam, on the other hand, is on a limited canvas, takes a limited theme and works on it.

Valmiki calls his work a *kāvyam*, a work of art. Tradition calls it a *kāvyam* and also an *itihāsa*. As a *kavyam*, it has the limited story of Rama, and as an *itihāsa*, it is larger in size and touches on various topics such as political, ethical and social. The old critical tradition accepted the Ramayana as a guide for ideal living; it happily endorsed its message on a multiple issues and would read it as a *pārāyaṇa* text. The present critical trend is to study the sociological relations as seen in the text. The Ramayana, whether taken as a *kāvya* or as an *itihāsa*, presents glimpses of the society in general by portraying persons of different social strata. Valmiki, with all his Vedic vision, is also a great story teller. He is comparable to a present day screen-play writer because he shows all the minor details of human conduct in his work. This gives us scope to us to examine the body language of the characters, their interpersonal relationship etc.

I wish to examine a few minor characters and study their significance.

### 1) **The status of Guha vis a vis Rama** – *Ayodhya Kanda,* sargas 50, 51

What was the position of the forest dwellers, whom we call tribals now? The character of Guha reveals certain interesting facts.

Valmiki calls Guha a निषादस्थपति the chief of the hunter tribe. His friendship with Rama is interesting. Rama, along with Sita, Lakshmana, Sumantra and others reaches the village Sringiberapura on the banks of Ganges and wants to halt for the night. Guha is said to be a very dear friend of Rama, dear as his own self – रामस्य आत्मसमः सखा (2-50-33). It is worth noting that he does not inform Guha. Rama shows that a person in distress should not, on his own, go to a friend. It is for the friend to come and console him. Thus, Guha himself, having come to know of Rama's arrival, comes to meet him with all the elders of his tribe, carrying a variety of food stuff. On seeing Guha, Rama moves up to him. *Guha embraces Rama*, welcomes him and says – 'this land is yours. You are our Lord, accept my kingdom and command me as to how I can help you?' Rama could have happily stayed there but as a *kshatriya* he has to keep his honour by not soliciting or accepting help from a person, however good the friend may be. *Rama, then holds Guha by shoulders and embraces him.* "I cannot accept the presents and I will not accept your kingdom. I am here to lead the life of an ascetic. Merely bring fodder for the horses which are tired."

Why did Rama not inform Guha about his arrival? Rama is the exiled prince and as a person who is not in power he is not sure about the friendship of Guha. It was for Guha to give him re-assurance about his friendship by embracing him. Guha is probably apprehensive about Rama's intention and hence offers his kingdom to Rama. Along with friendship, there is subtle diplomacy in the behavior of both.

We can observe the social relations here. Rama embracing Guha is a popular scene which we see in several paintings. It is shown as a symbol of Rama's magnanimity and ability to move even with persons of low social stature. However, we see here that it is Guha who first embraces Rama. The tribal chief was almost on equal terms with Rama, as otherwise, he would not take the liberty to hug Rama.

Commentator Govindaraja discusses whether it was appropriate for Guha to embrace Rama and points out that in those days a tribal chief was even entitled to perform a *yajña*, which is normally the prerogative of the *dwija-s.* निषाद स्थपतिं याजयेत् – he quotes the line from the scripture and says that because of this status it is not inappropriate – अत्यन्तानुचितं न भवति इति अनुमन्तव्यम् He also quotes न शूद्रा भगवद्भक्ता विप्रा भागवताः स्मृताः । सर्ववर्णेषु ते शूद्राः ये ह्यभक्ता जनार्दने ॥ A person who is a devotee of Vishnu is not a *śūdra* and a Brahmin who does not worship Vishnu is a *śūdra.*

Here we see that Valmiki is a political observer too. He shows how Lakshmana was managing to be friendly with Guha & at the same time not careless about guarding Rama.

On the next morning Guha gets the boat ready for Rama to cross the Ganges. He reports to Rama – "noble sir the boat is ready, kindly get on to that". Guha in the *Adhyatma Ramayana* is of a different make. He is a devotee of Rama, the incarnation of Vishnu. He had heard about how a stone was turned into a woman (Ahalya) by the mere touch of Rama's foot. He requests Rama "sir, your feet had turned a stone into a woman. If, by the touch of your feet my boat turns into a woman, I will lose my livelihood. Let me wash your feet." In the present text Valmiki does not show Ahalya as a stone. She was merely remaining unseen by people. Guha is a careful tribal chief, conscious of his strength and limitations.

When Bharata reaches the banks of Ganges, Guha welcomes him too, but not before alerting his own followers to be ready with arms. "Bharata will not cross Ganges if he has an evil intention against Rama", he says, as he was not sure about the intentions of Bharata. He keeps five hundred boats ready with armed men to check Bharata's army crossing the river. With all this readiness, he approaches Bharata with many presents and food. "This is your servant's place, please stay here"– he says. After offering food and slowly endearing himself to Bharata he takes liberty to put a friendly question – "I am apprehensive about the army following you. Does it indicate any hostile plan against Rama?" It is a highly measured and diplomatic question. Bharata breaks down, turns emotional and laments for Rama. Guha is then convinced and congratulates Bharata on his noble behavior.

Thus the tribal chiefs had a significant role in the kingdoms of the time. They were like other subordinate kings, with their own territory and people.

There is a reference to the forest dwellers in 2-3-25. Dasaratha calls for a council of the subordinate kings, tribal chiefs and others, मेच्छाश्चार्याश्च ये चान्ये वनशैलान्तवासिन: The word वनशैलान्तवासिन: literally means the hill tribes. Their representatives were present in order to endorse the *abhiṣeka* of Rama as the prince regent. The tribals were very much a part of the Indian main stream culture. Govindaraja mentions the six types of armies in which आटविकं, the forest contingent, is an important component (2-3-25). Valmiki did not write this for the 21st century liberal intellectuals who wish to theorize that tribals are not part of the main stream. There appears to have been some sharing of power between the tribal chiefs and the kings of those areas.

**2) Study of Vedas** – who all were included?

The episode of Dasaratha's curse – Ayodhya kanda, sargas 63, 64

The episode of the young man serving his invalid parents glorifies the virtue of filial piety. In fact, this used to be a story prescribed for school children. The name of the young man is not mentioned by Valmiki but in the other versions of Ramayana it is noted as Sravana.

Dasaratha was a noted marksman and an accomplished archer of his times. He could hit an unseen target by listening to a sound. This art was called शब्दवेधि. In his youthful exuberance he once went for hunting in the forest on the banks of river Sarayu. He killed a few animals by his art of shooting following a sound. He hears the sound resembling that of an elephant gurgling while taking water with its trunk. He shoots a sharp arrow in that direction and hits a young sage who cries out in pain. Dasaratha is shocked, he moves that person and comes to know of his terrible mistake. The youth narrates the helpless situation of his parents. The young man is groaning in pain as the arrow is stuck in him. He would undergo pain for a long time and die after a lot of torment. He would die more happily if the arrow were to be pulled out. He requests Dasaratha to take to pull out the arrow but the king hesitates.

Dasaratha is in a dilemma whether to pull out the arrow or not. Killing a Brahmin was considered a matter of great sin. He would not hasten the death of the young sage by pulling out the arrow but it was also cruel to allow him to languish. The young sage senses the king's thought and suggests

**न द्विजातिरहं राजन् माभूत्ते मनसो व्यथा ।**
**शूद्रायामस्मि वैश्येनजातो जनपदाधिप ।।**

(2-63-50)

– 'do not worry because you are not killing a Brahmin. I was born to a *śūdra* mother from a *vaiśya* father.' Dasaratha summons courage and pulls out the arrow and the young sage breathes his last.

Dasaratha approaches the old parents and confesses his terrible mistake. "Oh revered one! I am Dasaratha, the king of this land. Desiring to kill an elephant by the sense of sound and I killed your boy mistakenly. It is a great sin to kill a person doing tapas. Order me as to what I can do". The elderly parents are shocked. The sage laments for the departed son, recalling the fond memories.

कस्यवाऽपररात्रेहं श्रोष्यामि हृदयङ्गमम् ।
अधीयानस्य मधुरं शास्त्रं वाऽन्यद्विशेषतः ॥
को मां सन्ध्यामुपास्यैव स्नात्वा हुतहुताशनः ।
श्लाघयिष्यत्युपासीनः पुत्रशोकभयार्दितम् ॥

"With you gone, I will no more be listening to the sonorous voice of yours in the early hours of every day, when you recite the scriptures for us. Who will console me hereafter? You used to perform *sandhyā–vandanam*, offer oblations into fire and serve us every day". The sage blesses his son to attain heavenly worlds which are attained by great kings and saints. He then turns towards Dasaratha and pronounces a curse that he too would die wailing over his son. The sage and his wife prepare fire and end their lives.

This episode reveals some important points. The young sage who died was not a Brahmin. In fact he was born to a *śūdra* woman but he wore matted locks like sages, used to perform *sandhyā-vandanam* and also do the fire rituals. The elderly sage has the power of cursing the *kshatriya* king.

The commentators Govindaraja and Maheswara Tirtha mention that the person born to a *śūdra* woman from a Vysya had the authority to perform *yajña* and also to recite mantras.

We see that the status of a sage was acquired by virtue of *tapas* and not by virtue of his *varṇa*. The fact that the father and the son were engaged in *tapas* raises doubts on the veracity of the episode of Rama killing a *śūdra* named Shambuka, in the Uttara Ramayanam. Dasaratha showed great reverence to the sage, though he was partly *śūdra* and partly *vaiśya*. Rama belonged to the same period and so we cannot visualize him taking up a sword and beheading Sambuka for doing *tapas*. There could not have been such change in social perception between the time of Dasaratha and the time of Rama. Because of such instances many scholars have pointed out that Uttara Ramayanam could not have been authored by Valmiki.

Here we can make a passing mention of the women in Ramayana doing *yajña*, reciting *puruṣa–sūktam* and offering oblations into fires. In the Ayodhya kanda we see Kausalya doing *prāṇāyāma* and also recitation of *puruṣa–sūktam* प्राणायामेन पुरुषं ध्यायमाना जनार्दनम् (2-4-33). In the Sundara kanda Hanuman speculates that Sita would come to the brook for performance of *sandhyā-vandanam* (5-14-49). The commentators specifically mention that Sita was सन्ध्योपासनतत्परा.

### 3) **Shabari** – *Aranya Kanda*, Sargas-73 & 74

The popular stories about Shabari show her as a decrepit woman waiting for the arrival of Rama. In her devotional fervor for Rama she is said to have offered the forest fruits to him after biting and tasting them to ensure that they are fully ripe. This is not the version in Valmiki. There is no mention of fruits at all. She merely conducts Rama through the mysterious hermitage of sage Mathanga.

Valmiki introduces Shabari in the very first *sarga* of the Ramayana as a person well versed in dharma. Valmiki says – शबरीं धर्मचारिणीम् and श्रमणीं धर्मनिपुणाम्. Kabandha advises Rama to visit the hermitage of sage Mathanga near the Pampa lake. Sage Mathanga lived there with his disciples and after a long time of austerities they all ascended to heaven. Shabari used to serve the sage and his disciples and maintain the upkeep of the hermitage. While the sages ascended to heaven they advised her to stay till Rama visited that place. She continued to wait for the arrival of Rama. Kabandha describes her as a परिचारिणी, a servant woman. But she was also a saintly person.

**त्वां तु धर्मे स्थिता नित्यं सर्वभूतनमस्कृतम् ।**
**दृष्ट्वा देवोपमं राम स्वर्गलोकं गमिष्यति ।।**

She is a person in the path of dharma. She is also a person who has done great austerities like her own masters. On seeing her Rama asks –

**कच्चित्ते निर्जिता विघ्नाः कच्चित्ते वर्धते तपः ।**
**कच्चित्ते नियतः क्रोधः आहारश्च तपोधने ।।**

After the formalities of welcoming Rama asks her to show the mysterious hermitage where everything was forever fresh. Valmiki again describes her as – विज्ञाने तां नित्यमबहिष्कृताम् – a person who was not barred from the knowledge of Brahman. Govindaraja writes –जात्या हीनाम् अपि आचार्यप्रसादलब्ध-ब्रह्मज्ञानाम्. She appears to be a person whom we now call a tribal, as even today tribal people named Sabaras live in the central part of India. The Adhyatma Ramayana specifically mentions that she was a person of lower class. She introduces herself as – "योषिन्मूढाऽप्रमेयात्मन् हीनजाति समुद्भवा". Such mention is not found in Valmiki but it is hinted that she is a servant woman. Though she did not have the Vedic learning she was not barred from the knowledge of Self. It is because of her power of austerities (तप:शक्ति) that the flowers offered by the sages were still fresh and the bark robes worn by them and left on the trees for drying were still wet. The fires were still blazing from the sacrificial dais. Rama and Lakshmana were astonished to see the place.

After conducting through the ashram she seeks permission to leave for heaven and offers herself into the fire. She rises from fire in a divine form, clad with divine clothes and ornaments and reached heavenly worlds where her gurus had earlier gone.

In this episode we see the following:

- Women to observed celibacy and became ascetics and also took *saṃnyāsa* .
- They also practiced yoga. Govinda Raja writes –

  **स्त्रिया अपि विदुरादेरिव योगाधिकारः सम्भवति,**
  **यज्ञादिकर्मस्थाने गुरुशुश्रूषा । स्वर्गश्च आदौ अक्षयान्**
  **इत्युक्त्या पुनरावृत्तिरहितं परमपदम् इति अवगम्यते ।**
- All *varṇa*–s, including the tribals were entitled for the knowledge of Self.
- The god (here Rama) is equal to all, he blesses everyone equally.

**4) Mimamsa vs Vedanta** – *the episode of Parasurama – Bala kanda,* sargas 74,75

After completion of the festivities connected to marriage, king Dasaratha takes leave of King Janaka and starts for Ayodhya. The whole retinue of sages and soldiers is with him. The newly married grooms and their brides are in a rejoicing mood. Valmiki introduces Parasurama at this point.

There were frightful screams and cries of birds on the way and the forest animals were also behaving strangely. There was a confusing mixture of bad and good omens seen by them. Dasaratha gets frightened and asks Vasishta about their meaning. Vasishta assures him that there would be a dreadful scene followed by a happy ending.

As they talk, a huge wind storm rises, encompassing the sky with darkness and uprooting the trees. The sun was enveloped in a cloud. From such cloud emerged Parasurama with a battle axe on one shoulder and a huge bow on the other. The sages recognized him and offered due respects. He merely acknowledged them and spoke straight to Rama. "I have heard of your wonderful powers and about breaking of bow. Here is another bow (the bow of Vishnu), equally strong. Brace this string and pull the bow, if you can. I will grant you a duel."

Dasaratha was petrified by such challenge and tried to plead in an entreating manner but Parasurama ignored him totally and continued to address Rama. He narrates the history of the bow. Speaking haughtily, he challenges Rama to pick up the bow.

Rama accepts the challenge but he is gentle and respectful in his words, partly due to the presence of his father and partly due to respect towards a Brahmin. He takes the bow, braces the string, fixes the shaft and also pulls the bow. He addresses Parasurama "Out of respect for you I do not wish to take your life. The shaft of Vishnu's bow cannot go waste. I can either impair you by hitting your ability to fly or alternatively hit the heavenly worlds achieved by you by your austerities." Parasurama realizes that Rama is Vishnu himself and acknowledges as such. He chooses to forego the heavenly worlds achieved by him. Rama accordingly releases the shaft and destroys the worlds.

Valmiki's words are very significant here. He says – "जगामात्मगतिं प्रभुः" (1-77-24). Literally it means that he went in his own way. This would be a very pale interpretation, knowing the nature of Valmiki. Parasurama has merely earned the heavenly worlds which are inferior in nature compared to the knowledge of self. The *Isavasya Upanishad* declares – "The slayers of self attain the worlds which are demonical, after all (Isa-3)". A seeker of self knowledge does not aim to achieve such worlds. Self-realization is the highest goal as per Vedanta. Valmiki conveys this message in a subtle way when he mentions in that Parasurama departs for *ātma-gati* (1-77-24). The word '*gati*' is also indicative of knowledge, as per the Vedanta tradition. Rama did not hit the '*gati*' of Parasurama but merely destroyed the worlds. It is a clear message that one should aspire for self-knowledge. What Parasurama does here is precisely the same. The episode could be a reference to the rivalry between the *mīmāṃsaka*-s and the Vedantins. The *mīmāṃsaka*-s valued *yajña*-s and heavenly worlds whereas the Vedantins valued knowledge of the Self. There are other instances in which sages (like Sutikshna) offer the heavenly worlds gained by them to Rama, but Rama gently declines them.

This episode cannot be construed as a power struggle between the Brahmins and the warrior class, as a lay reader may feel. A single soldier with a battle axe cannot wipe out the warriors from the face of the earth. It has only to be understood symbolically. In the earlier episode of the clash between Vasishta and Vishwamitra, we saw that it was a clash between *sattva* and *rajas*. It was a spiritual journey of Vishwamitra in which he had to overcome *kāma* (desire) and *krodha* (anger). Here, by contrast, Parasurama the Brahmin is displaying *rajas* whereas Rama is displaying *sattva*, which is the characteristic of Vishnu.

Valmiki has not portrayed Parasurama as an *avatār* of Vishnu, though some *purāṇa*-s have claimed so. The traditional commentators Govindaraja and others have pointed out the *purāṇa* version too and said that the visit of Parasurama was intended to transfer Vishnu's energy and glory from Parasurama to Rama. This looks dramatic but Valmiki is silent on this.

**5) The mentoring role of sages:**

Throughout the *Ramayana* we see several sages counseling Dasaratha or Rama on several occasions. Sages like Viswamitra, Bharadwaja and Agastya give divine weapons to Rama as they are aware of the future role of Rama in killing the demons.

The meeting with sage Bharadwaja was a testing moment for Bharata. After the introductory formalities, the sage directly asks him "what is your mission in coming to the forest? I hope you do not have any evil intention against the sinless person Rama" (2-90-13). Again, Bharata is crest-fallen. He says – "Your words are like a death blow to me. Please do not apprehend any wrong on my part (2-90-15)". He further clarifies his innocence.

Sage Bharadwaja hosts a lavish royal dinner to Bharata's entourage, including the whole army (2-91). By using his spiritual powers he invokes the divine architect to prepare dwelling places for the king and all others. He invokes several rivers to provide a stream of liquors. He invokes several deities to provide choicest food, containing meat of several types. He also summons several divine damsels to entertain the entourage. The sage asks Bharata to rest in the royal mansion. A highly embellished royal throne was ready for Bharata but he visualizes Rama as sitting in the throne and respectfully goes around it and sits in the chair meant for the minister. The army was in merriment but Bharata's mind was on Rama.

Why did Bharadwaja host a dinner to Bharata, though he gave a frugal dinner to Rama only a few days ago? Probably he wanted to see whether there was any lurking desire in the mind of Bharata for the throne. He saw Bharata respectfully keeping away from it. The sage was also probably demonstrating his spiritual powers, so that Bharata would not deviate from his word. This episode is like a psychological test for Bharata.

*Yajña* was a dominant feature in social life in the *tretā–yuga*. (Cf. Mun.Up.) However, seekers of other types, who did not perform *yajña*–s but who engaged themselves in tapas, meditation, can be seen. They are *vaikhānasa*–s, *vālakhilya–s* and others who approach Rama in sarga 6. They see Rama's ability after killing of Viradha.

Govindaraja calls it समर्थकारुणिकत्वम्, the opposite of ineffectual compassion.

*Vaikhānasa*-s and others were not into *yajña* but engaged in tapas. It means that the upanishadic thought was coexisting with the *yajña* and rituals. Perhaps these are the upanishadic sages too. (See the episode of Dasaratha performing the *aśvamedha*, in which there were *śāstra* discussions during intervals).

The encouraging and appreciating words of Agastya to Sita (sarga 13 of Aranya kanda) are a psychological preparation for her for the future troubles. In the earlier *sarga*, Agastya has given weapons to Rama, saying that they would be useful in killing the great *asura-s* in the mighty battle. Valmiki portrays Agastya as a great psychological counselor. After giving weapons to Rama, Agastya compliments Sita for being a dutiful wife following dharma in an exemplary manner. He also tells Rama 'your promised tenure in the forest is coming to an end. You will fulfill your word to your father and will get back your kingdom' (13-15). 'I tell this out of my special vision due to meditative powers', he adds. This is a reassurance to Sita. The sage has seen the immediate danger of abduction by Ravana but he has not told it. He cannot say it as he cannot reveal the divine script but act according to it.

If Rama were to merely go back to Ayodhya and rule his kingdom, where is the need for divine weapons? The sages and gods seem to have an understanding of the divine scheme or the divine script in which Rama is a human being who has to be helped by them. The gods give weapons to the sages and the sages give them to Rama. Rama has to be a human so that the boon given to Ravana by Brahma is not violated.

The overall vision presented by the Ramayana is that the ancient society was probably more liberal than what our liberal intellectuals portray. Vedic culture was not the privilege of the few, but large sections of people including *vānara-s* and *rākṣasa*-s were included. Several other hints can be found on the relationship among different social groups of the time. We are not sure as to who the *vānara-s* were. The meaning of *vānara* is '*naro vā*', one who makes us wonder whether the person is a human. They were persons with extraordinary strength and they were also extraordinary in size. They, however, followed the same Vedic culture of the time as we can see from Rama's comments on Hanuman and again from the rituals at the time of coronation of Sugriva. Even the *rākṣasa*-s in Lanka were reciting the Vedas and performing *yajña*-s, perhaps in the *vāmācāra* tradition, as we see in the Nikumbhila episode. It was not the clash between the Vedic culture and a non-Vedic culture but it was a clash between good and evil. Sociological interpretations can be done with reference to the text but not with reference to historical conjectures.

❑

# ramayana and management

**Prof. Maruthi Ram R.**

Though Ramayana looks like a story of Ram the prince of the kingdom "Ayodhya" of ancient India, it has a lot of wider meanings that can be interpreted in different ways. It has the richness of the management mantras embedded in it.

## Introduction

Management in simple words is the art and skill of getting the things done by others. However in the recent times the word "Management" has taken a very wider meaning and the application is very vibrant and need a subtle approach to understand the purpose. Many branches of an enterprise is today carry the word management to its original form or it has even metamorphosed to a different avatar altogether. For example the branch of management studies "Business Policy" of yesteryears is today taken a different form and very popularly called as "Strategic management". The purchase activity transformed into "Materials Management" and now it is known as "Supply Chain Management".

The word "Mantra" is derived from two sanskrit words "Manaha" meaning Mind and "Trayanthi" meaning enhances or thrives. It goes this way "Manaha Trayanthe iti mantraha" means the one which pleases or enhances the ability of mind is called as the "Mantra". It also means that the chanting of the mantras will make the mind to thrive in a positive direction. The mind is the bundle of thoughts. More so the mind always oscillates like a pendulum of a wall clock. It oscillates between the worries of the past and anxieties of future. The chanting of "mantras" helps to hold the mind in present existence. This helps the mind to calm down and reduce the worries and anxieties.

There are many mantras like "Gayatri mantra", Taraka mantra, Shiva panchakshari mantra, Omkara mantra etc. The after effects and the application of these mantras are subjected to the tests and experiments by the modern scientists and the researchers. The results are amazing. There is a proven impact of these mantras on the mind and it is proved with the evidences.

In the normal course the epic Ramayana is considered as one of the ancient epics and it is the story of Ram the incarnation of God himself. The Indians worship Ramayan for the simple reason that it is the story of Lord Vishnu in his incarnation or Avatar as a human being. With the above backdrop there has been an attempt to bring the messages of Ramayana to the management studies.

## The Management

Though Ramayana looks like a story of Ram the prince of the kingdom "Ayodhya" of ancient India, it has a lot of wider meanings that can be interpreted in different ways. It has the richness of the management mantras embedded in it. Here the management mantra means the "Principles of management". The management studies hover around the functions of management namely "organizing, planning, leading, staffing and controlling". In the process of practicing these functions the managers or the management practitioners are expected to follow some principles. These principles are popularly called as the "mantras". These mantras will make an individual and the organisation very successful. Hence these mantras are very important to identify and study and even to relate to the management studies. To simplify our research study it is limited to few of these mantras and an effort is made to relate the same to the aspects of management studies.

**Important aspects of Management in Ramayana**

- Dilemma of choice the role of Sita and the mind control
- Sharpen the communication skills - lessons from Lord Hanuman
- Kill the competition any way – Ram's arrow kills Vali from the back
- Reach the goal first - a focused approach of Hanuman
- Win - Win compromise formula - Sugreev and Ram
- Strategise and take the right path minus emotions – Vibhishan's way

To start with we will understand briefly the epic Ramayana and its overview which will help us to proceed further. The objective of this study is to understand certain episodes in the epic Ramayana as it is, understand its significance as per the situation prevailed and then relate it to the management studies.

## Ramayana a brief over view

The **Ramayana** is the career or story of Ram, is one of the two most important ancient epics of India, the other one is Mahabharata. Ramayana was originally written by sage (rishi) Valmiki of Ancient India. The book has about 24,000 verses and is divided into seven parts. The story of the Ramayana is about Prince Ram who has been exiled from his kingdom of Ayodhya. Different versions of the book are available. It has been translated into all the major languages of the world.

## The seven parts of Ramayana

**They are as under:**

1. The first part is *Balakand*, meaning the book of the childhood.
2. The second part is *Ayodhyakanda,* meaning the book of Ayodhya.
3. The third part is *Aranyakanda,* meaning the book of the forests.
4. The fourth part is *Kishkindhakanda,* meaning the book of Kishkindha.
5. The fifth part is *Sundarakanda,* meaning the book beautiful.
6. The sixth part is *Yuddhakanda,* meaning the book of the war.
7. The seventh part is *Uttarkanda,* meaning the last book.

Ram the prince of Ayodhya goes to the forest to live away from the kingdom for fourteen years as per the conditions of his stepmother Kaikeyi. This condition was to be forced upon Ram because of the promise given by Ram's father Dasharatha. Ram's brother Lakshman and Ram's wife Sita also follow Ram to "vanavas" the exile. While they were in exile Ravan the Demon king of Srilanka kidnaps Sita forcibly and because of this Ram and his brother Lakshman start searching for her. Ram and Lakshman come in contact with Sugreev the leader of "vanara" the monkeys of the place Kishkinda and this happens through Hanuman. Ram builds a bridge across the Ocean with the help of Sugreev and his army of monkeys and proceeds to kill Ravan and gets back to his kingdom to rule further.

This article looks into the management lessons from the epic that communicates to the society in general and to the management studies in particular. Though the epic opens up a Pandora box of information and very valuable management subjects, to limit to a particular space of discussion this article confines to few points. These points are well connected to the essence of management studies and the links are identified to suit the management functions. To have a thorough knowledge that could be learnt from the epic, more so to the management studies the article discusses these points threadbare as follows.

## 1. Dilemma of choice - the role of Sita and the mind control

"Vaidehi" the popular character "Sita" the wife of Ram in the epic shows her urgency in taking a decision to send Lakshman her brother-in-law to look for Ram as she feels that Ram's life was in danger. Inspite of the advice from Lakshman she will be stubborn and adamant and sticks to her view point. She forces and actually pushes Lakshman to go to the deep jungle to save Ram. Lakshman draws three lines and these are veru popularly known as the "Lakshman Rekha" the lines of control. When Lakshman is away searching for Ram Ravan appears in the disguise of a saint and forces her to cross over the "Lakshman Rekha". This leads to her kidnapping by Ravan the villain of the epic Ramayan. Later she had to face all the problems and repent for her emotional decision but it will be too late for that.

The epic depicts Sita as a very cool and matured personality. This is because as per the epic she has evolved from the mother earth. As the mother earth is the symbol of patience the same had to be reflected in Sita. Due to the circumstances Sita loses her cool and acts emotionally. She will mistake the screaming voice of Maareecha the demon in disguise as the golden deer to Ram's voice. She had two choices one to keep cool and believe in the courage and valor of Ram her husband and the other one to rush Lakshman to save her husband. Between the two choices she goes emotional and opts for the second and lands in trouble.

### The management Component – Emotional stability and know the limits

The circumstances will force us to take some decisions by emotionally. This is very common by seen in the corporates. This is even applicable to all human beings in the daily life. The mind has a very bad habit of getting influenced by the external forces. This is also because we will have the insecurity feeling and have the fear in us. The intellect in us should activate and control the mind and guide us to take an appropriate decision.

The leaders should possess the quality of emotional stability. The strategic decisions should be taken with the cool mind. Only when a person is cool and calm he can think wisely and can take appropriate decisions. When the mind is cool it will have the discrimination of correct and incorrect, good and bad, truth and untruth, illusion and reality etc.

The management mantra "emotional stability" is very much implied in Ramayan through this episode. Also the "Lakshman Rekha" the "limitations" in the management practices could be many with respect to the positions and the situations, which has to be understood and to be operated within limits by the practitioners to be successful. If one does not understand the limitations it could lead to many wrong decisions and strategically it could land in failures of different magnitude.

## 2. Sharpen the communication skills - lessons from Lord Hanuman

Ram and Lakshman not knowing the mystery of the sudden disappearance of Sita start searching for her in the jungle. On the way they meet Hanuman the minister of Sugreev. When he meets Ram Lord Hanuman communicates with him and his brother Lakshman. This will be noticed by Ram and he appreciates the communication style of Hanuman. Observing the pronunciation of Hanuman Ram feels that Hanuman should have learnt "Vedas" because the chanting of Veda mantras will help the tongue twisting and enhance the pronunciation. He goes on to add that Hanuman should have practiced yoga and pranayama as he stands erect without bending the back. He expresses that Hanuman's eye contact is wonderful. The body language of Hanuman according to Ram is so good. He even observes that he is a good listener. Ram notes that hanuman gives respect to the other person and that is the quality of a Gentleman.

### Management Component – the effective communication skills

According to the modern management studies the effective communication is very essential for success. The principles of management stresses on communication because it is most essential to get connected with the other person. The "Promotion" is one of the marketing mix ups mentioned in marketing management. The promotion is to communicate with the customers. Hence communication is an important tool and it enhances the brand equity and creates the consumers.

Among all the traits of a leader Communication plays an important role. The person who can master the art of communication will be very successful leader. This enhances the interpersonal skills.

## 3. Kill the competition any way – Ram's arrow kills Vali from the back

Hanuman takes Ram and Lakshman to Sugreev the king of "vanaras" the monkeys. Vaali the brother of Sugreev had thrown him out of the kingdom and Sugreev will be wandering in the jungle. As Vaali was very strong

Sugreev will have lost many battles very badly with him. In this juncture Sugreev needs Ram's help in eliminating Vaali. Ram needs Sugreev's help to search Sita. Hence there will be an agreement between the two. Ram tells Sugreev to invite Vaali for fight. When they are fighting Ram shoots an arrow from behind and kills Vaali.

### Management Component – Kill the competition any way

In today's competitive environment it is very important to observe the competition and plan in advance to counter the same to safe guard the market share. If the competition is allowed to continue and thrive it will be difficult to counter the same when it grows too much and establishes itself in a very comfortable position. It is always important to develop the competitive advantage over the competition. In this aspect one should develop such a strategy to eliminate the competition or minimize the same. That is what Ram did in Ramayan, killing Vaali to accommodate Sugreev. It may look very unnatural a practice for either an individual or n organisation but in business you have no choice. As long as the ultimate objective is to contribute to the society some adjustments have to be accepted. After all the show must go on.

## 4. Reach the goal first - a focused approach of Hanuman

After the killing of Sugreev now it was the turn of Sugreev to send his men to search for Sita as they will not have the clue. Sugreev divides his close confidents into four parts and send each team to the four directions. Out of the four teams one that goes towards south will be lead by Jambuvan. In this group Hanuman will be there apart from Nala, Neela and Angadh. Through a big bird called Sampathi they come to known that Ravan has taken Sita to "Srilanka".

The question arises as to who should fly to Lanka City. All the team members decide that Hanuman has to go. He was strong and at the same time very intelligent among the team members. Hanuman flies and faces all the obstacles on the way. He will be very successful in overcoming the troubles with his strength and intelligence. In the beginning of the journey Hanuman had taken an oath that he will not even eat anything till he reaches the objective. He sticks to it and takes food only after locating Sita in the Ashoka Vana of Lanka.

### Management Component – Reach the goal first

The objectives are set to reach and not just to have fun. When this is the fact one should be much focused. In the corporates the strategy implementations are to be carried by the Managers who are the leaders of a group. Here the group formed by Sugreev are all the leaders and among them Hanuman is a leader of highest order. The leaders have to be very alert and focused. There will be lot of obstacles on the way for any leader before reaching the goal. The leaders of highest order will not be disturbed by the problems and go-ahead with the objective in mind. The convergence of their thought and action will help them to reach the goal with ease.

## 5. Win - Win formula – Collaboration of Sugreev and Ram

While searching for Sita in the jungle Ram and Lakshman meet up with Sugreev and the collaboration begins here. Sugreev needed help from Ram to kill Vaali his brother and Ram needed Sugreev's help to locate Sita. The collaboration works. Both of them agree to each other's need and tune accordingly. Here comes the synergic value. Sugreev's army of Monkeys will fight the mighty Ravan and his fellow demons and will be finally very successful.

### Management Component – Win - Win

Win-Win is the management mantra very widely by advocated by Stephen Covey the International famous Management guru. There is a saying "You scratch my back and I scratch your back". This also means the same. If the leaders learn to adjust and accommodate others instead sticking to one's own point of view it could lead to success. Most of the successful Joint Ventures and Mergers and acquisitions have come through with this formula of Win –Win. In the process of joining hands through win–win one may lose something but sure to gain more from the exercise.

The true leaders won't mind losing a little to gain more. This happens in all levels of leaders be it the top leaders, middle level leaders or the leaders in the lower order in an organisation. A manager could give some concession to his subordinates but could gain more when it comes to team work and meeting targets. The leaders create an atmosphere with the win-win formula. This atmosphere could lead to motivate the fellow men in accomplishing a particular Organisational objective. In the endeavor to be successful the leaders always have to exhibit the character and create an aura around them and lead others by setting the standards and this happens with win – win formula.

## 6. Right path minus emotions –Vibhishan's Strategy

Vibhishan one of Ravana's brothers advises Ravan not to hold Sita even tells him to leave her. Ravan will not agree to him and sticks to his action though it is wrong. In fact Vibhishan will be a simple and god fearing person. He believes in the value system and very spiritual. Even after repeated requests and advises of Vibhishan his brother Ravan will ignore him. This triggers Vibhishan and forces him to introspect. He could have two options one be supportive to Ravan though his consciousness won't permit the other one is to desert his brother and join Ram the enemy of Ravan. Knowing the strength of Ram and weakness of Ravan, the wise Vibhishan take the second option.

The emotional attachment with the blood relation will make many to compromise with the value system. This happens with Bheeshma of Mahabharata. Though he knew that Duryodhan was on a wrong path he supports him blindly. It requires a great courage and guts to swim against the high current of River waters. The right path is the one which is universal. It has to be acceptable by one and all. Vibhishan just does that universally acceptable one and joins hands with Ram the all time Hero and the person of value system.

## Management Component – Decision making

It is very difficult to make decisions because there could be many dependent variables which forces one to surrender meekly. The emotions are the variables which come in the way of the right decisions. It is the choice between the heart and the brain. The intellect is the one which will have the discriminating capacity. This has to be used to make decisions. The leaders face a lot of emotional situations in the real life. The balancing act is the one which becomes a necessity. Here Mahatma Gandhi could be the best example. Inspite of all the obstacles Mahatma sticks to "Truth" the satya and "Non cruelty" the ahimsa. Finally he wins and country wins and the whole world worships him. That one ultimately is the decision making.

## Conclusion

"Ramayana" be it a story or the history or the epic it offers a lot of serious management theories and introspections. The mantras are the management principles which are being taught and practiced by the modern management gurus. These are all the derivatives of our old scriptures like Vedas, Upanishads, Ramayana, Mahabharata and Bhagavad-Gita.

Dilemma of choices, communication skills, killing the competition, Objective orientation, Right path and overcoming the emotions are all the aphorisms of the modern management practitioners. All these are very much explained in the epic Ramayana. Though the epic Ramayana looks like a simple story it has plenty which could be referred by the management practitioners.

One can take the example of Ram to be a great leader who could build a bridge across the ocean and fight a war against mighty Ravan with the help of the army of Monkeys. This is not possible for the ordinary people. The researchers apply the lenior programming models to solve the research problems. They speak about maximizing the profits with constraints. The same will apply here also. This article concludes that Ramayan is not just an epic or a story but it is the holy treasury of management mantras.

## References

1. Drucker, Peter, 1968. The Practice of Management, Pan Books, London.
2. Easwaran, Eknath, 1998. The Bhagavad Cita. Nilgiri Press California.
3. Farrow N, 1987. The Cower Handbook of Management, 2nd edition, Gower, Vermont (USA).
4. "Gita according to Gandhi" in http://members.aol.com/jajnsn/anasa.html (reproductions of text written by Mahatma Gandhi in 1931)
5. Hee, Charles Chow Hoi A Holistic Approach to Business Management: Perspectives from the Bhagavad Gita, Singapore Management Review, 2007

6. Mascaro, Juan, 1972. The Bhagavad Gita, Penguin Classics, Harmondsworth, UK.

7. Nawal K Prinja (editor), 1998. Explaining Hindu Dharma, Vishwa Hindu Parishad UK, Surrey.

8. Online edition of the Hindu,feb.'12, 2002 Radhakrishnan S, 1960. The Bhagavadgita, George Allen and Unwin, London.

9. The Times of India, New Delhi dated Nov.' 02, 2007

❑

*Justice Dr. M.Rama Jois, Former Chief Justice of Punjab and Haryana, Former Governor of Bihar and Jharkhand being honored by dignitaries during the conference.*

# depiction and consciousness of environment in valmiki ramayana

**Dr. S. Dakshinamurthy Sarma**

Environment consciousness was a part and parcel of the life of civilized societies during Ramayana period. Habitations of those societies flourished in the midst of rich and vivid ecological environment without disturbing others.

## ABSTRACT

*The Ramayana, with a prefix of "SRIMAD" is an epic written by ancient Indian Saint* **'VALMIKI'**. *It is not merely a revered book of Indians. It leaves us an amazement of narrating various Social and Scientific aspects. The theme of the Ramayana is of the heroics of Rama, the Chief Prince of Ayodhya. Many discussions are made about the time of writing Ramayana. The very Ramayana proclaims that the author was a contemporary of Rama. Yet, there is no doubt that, it was written even before emergence of Buddhism (4th Century B.C). Ayodhya, the city of Rama still exists with the same name in India. Millions of Indians consider Rama to be a person who set noblest and eternal ideals and for mankind.*

*Environment means "the relation of plants and living creatures to each other and to their environment"*

*Environment consciousness was a part and parcel of the life of civilized societies during Ramayana period. Habitations of those societies flourished in the midst of rich and vivid ecological environment without disturbing others. They practically learnt that causing disturbance would lead to self-destruction. The ideals established in the Ramayana cannot simply be forsworn by prejudice. This paper makes an attempt to present few of such ideals of Indians in ancient time.*

**Key words:** *Ecology, Environment, Ideology, India, Ramayana, Society Survival*

* * * *

## PROEM:

Ramayana is the *Adi Kavya* (first literary work) in Sanskrit language. The interaction between man and nature is quite evident through the *kavya.* The very first instance, which formed the source of the Epic Poem, is the episode of Sage Valmiki, cursing a hunter who shot down a heron bird, when it was in coupling with female counterpart. By seeing the act of hunter, Valmiki outbursts with following verse, which became "first" verse to be composed by a man:-

***Maa Nishada pratishtaam tvam agamah saasvatee***
***samaah /***
***Yat Kraunca-mithunaad ekam avadheeh kaama-***
***mohitam//***

'Oh Hunter! You won't live long as you have killed the lustful male of the pair of Kraunca birds" (VRS Press)

This suggests the importance attached to the preservation of lives in the forests. None was entitled to kill any bird or animal in the vicinity of *tapovana* (penance groves) or even the forests unless it was absolutely necessary.

The above words are in fours stanzas, consisting of equal number of alphabet in each. They had some rhythm and could be sung. This incident happened in the forest, where some threat occurred to the existence of a helpless creature. Killing other creatures for food is the order of nature of carnivores. No doubt, Saint Valmiki was familiar with this. Then, why did he pronounce such cursing words? Sans doubt, lack of discretion and mercy of irresponsible person in exploiting the sources made him utter those words.

Exploitation of sources allowed but deserves a good management. The exploiter needs patience. He must allow the sources to get renewed. He should not be in a hurry to exploit all at once. It is nothing but suicide. For example, a branch of tree is cut; few more branches do sprout, in due course of time. But, the tree permanently dies, if the very roots are cut out of indiscretion. Even today, the environmentalists suggest to plant ten saplings, if cutting of a grown tree is unavoidable. The birds, in the above instance, were involved in the process of producing their progeny. The stupid merciless hunter blindly shot and killed one of them. It was inexcusable exploitation.

## CATEGORISATION OF SOCIETY:

Four categories of civilized societies are described in Ramayana viz., *Humans* (mankind), *Vanaras* (Monkeys), *Asuras* (Demons) and *Suras* (Gods). These societies lived in their own realms. They varied from others by their way of life or life-objectives. Yet, they had no conflicts among them in the beginning.

All the above four societies had wonderful civilization and lived in a prosperous Environment. They loved *flora* and *fauna* and developed an impressive environment in and around their habits.

Many wonderful gardens such as *"Madhuvana"* of Vanaras, *"Asokavana* and *Nikumbhilavana"* of Asuras and *"Nandanavavana* and *"Chitraratha"* of Suras were mentioned in the Ramayana.

*Ayodhya* was one of the Big cities of the times of Ramayana. It was built on the banks of river *Sarayu,* where the main roads of the city were very broad. Trees were grown on both sides of the roads. Water was being sprinkled on the roads to control the rising dust. Many parks full of trees were developed for the pleasure of citizens.. like this, the city of *Ayodhya* was explicitly narrated. This narration clearly shows, the kings were reasonably conscious of the indispensable Environment for comfortable habitation of their subjects.

Even the people in the Villages led a simple but happy life in the countryside. Most of them were peasants. They used to plough the fertile land and sow the seeds. The villagers were generous donors. They worshipped Environment as their mother. This shows how they lived in a wonderful land with clear Environment.

## ENVIRONMENTAL CRISIS AVERTED:

Ramayana narrates stories of few kings who tried to avoid Environmental crisis at their best. *Romapada*, the king of ***Anga*** consulted the scholars seeking a way to save his subjects from terrible famine. This can be seen in *Balakanda*, **Sumantra**, the Minister of king **Dasaratha**, details the importance of Sage ***Rishyasringa*** and beseeches the king to invite that Sage to preside over the contemplated Vedic ritual, because the Sage's entry into kingdom is auspicious for that land and people, by whose presence rains in abundance would take place. The advice given him to the king is surprising for modern people. *Romapada* successfully implemented their plan (*Balakanda 1-9-8, 9, 10, 11&12.*

***Tatra ca aaniiyamaane tu vipre tasmin mahaatmani /***
***Vavarsha sahasaa devo jagat prahladayan tadaa // 1-10-29***

"While that great soul and Brahman *Rishysringa* while being brought into Angarajya, then the **Rain-God quickly showered rain** in *Angarajya* to the delight of the world."

It clearly reflects the act of men should be in order to get the rain in season, in time.

Few kings lacked foresight and caused some Environmental disasters. Later, their successors tried hard to restore and compensate the Environment by some persistent accomplishments. Sons of King *Sagara* dug earth to the deepest point, without any discretion. Numbers of living creatures were set on the edge of extinction as their biosphere severely got damaged. However, the grandson of those kings, ***Bhageeratha*** undertook many pains to bring river *Ganga,* down to the plains. Thus, he could successfully reinstate the lost habitats of various living creature.

When we see the other *Kandas* of Ramayana, mainly *Kishkinda* and *Sundara Kandas* - Hills and forest were the habitats of the society of the Vanaras. *Kishkindha*, their capital city was surrounded by many rocky hills and clean lakes. They were agile champions in long jump and high jump. They were strong enough to hold a strong running elephant with their hands and easily impose a sudden halt their movement. They could survive anywhere, as they could race water spots and food sources by instinct. They never spoiled the Environment for their self.

As far as the references made in Ramayana, natural vegetation can be classified into – Forests and Grasses. The diversity of Indian climate must have been responsible for the growth of different types of trees all over the country.

In Yuddha Kanda, there is the description of Hanuman bringing ***Sanjeevani Mountain***, which contained valuable medicinal herbs with the help of which Lakshmana was revived. Thus, the forests became abodes of sages as well as demons.

The Ramayana thus provides vast and interesting information about Nature in all her variety. Living in conformity with Nature is the way of the civilized and this was welcomed by all. ***Going against Nature was considered unethical and disastrous.*** The holy sages living in forests and meditating on the banks of rivers were honouring Mother Nature. Those who made the forests and sacred spots as their hide outs for unethical activities were put down by Rama with an iron hand.

The **Ramayana** is NOT a story or epic kavya; it is guidance for human relationship. It is a history of a human, who ruled once Bharat under one umbrella and lived as an example how a HUMAN should be.

Since ancient time, nature has served man, giving him everything he needs: air to breathe, food to eat, water to drink, wood for buildings and fuel for heating his home. For thousands of years people lived in harmony with the environment and it seemed to them that the resources of Nature had no end or limit. Indeed, the Ramayana emerged for resurrection of Environmental Consciousness and Awareness!!

**The EARTH is our HOME. The world around us is wonderful. Our aim should be to make it more beautiful and to preserve it for ourselves and for future generations.**

**Protection of Environment was taken by our sages and seers in the ancient time itself.**

## CONCLUSION:

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महितले। तावत् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति

## BIBLIOGRAPHY:

1. Valmiki Ramayana – Vavilla Ramaswamy Sastrulu & Sons, Chennnai
2. Analysis of Ramayana – Gaurang Bhatt
3. Raamayana of Gita Press, Gorakhpur.
4. Critical Analysis of Ramayana – Sarahanne.

❑

*Prof. Shashiprabha Kumar from New Delhi felicitates Dr. Urmi Sameer Shah from Ahmedabad.*

# Fine Arts in Ramayanam

**Dr. Arathi V.B**

*Ramayanam* the *Adikavya*, has been the prime source of content, aesthetic inspiration and dignity not only for the world of Indian poetry and aesthetics, but also for all forms of fine arts that evolved in different ages in the Indian subcontinent.

*Ramayanam* the *Adikavya*, has been the prime source of content, aesthetic inspiration and dignity not only for the world of Indian poetry and aesthetics, but also for all forms of fine arts that evolved in different ages in the Indian subcontinent. The prime factor for aesthetic appreciation is *rasa*, according to Bharata's *natyashastram*. Valmiki's *Ramayanam,* all through, generates the *rasa* experience silently but effectively with gross & subtle details.

The term *Lalita-kalaa* used commonly in many texts and treatises and also particularly in the lists of the 64 *kalaas (chatusshashtikalaavali).* It is a general term that refers to all kinds of performing arts and fine arts like*geetam*(vocal and instrumental music)*, nrtyam* (dance), *naatakam* (Drama), *chitrakalaa* (drawing and painting) *shilpakalaa* (sculpture) and various crafts pursued for aesthetic contemplation. These *vidyas* are prominently aesthetic in nature. They have been enriching the temple traditions, festive traditions, entertainment modes and the very cultural identity of our land since ages. So much so that India, at any given point of time, ancient, medieval or modern, can never even be imagined without its rich fine arts! To this day, fine arts of India carry an irresistible charm that attracts hearts and intellects across the world.

The *lalitakalaas,* though vastly popular and funded by kings and the commoners, continued to retain more of an artistic and meditative appeal and eventually got attached to socio-religious and artistic traditions than to commercials involved. Temples, rituals, family and social events, cultural platforms have indeed impregnated themselves with most of the fine arts of contemporary times thus creating a permanent platform for the growth and development of these artforms. As documented in vedic, the classical and folk literature, inscriptions and living traditions and almost all general accounts, fine arts have been promoted as a religious duty, at all times. Unlike in the western cultures where fine arts are more of artistic ventures for personal satisfaction and appreciation alone)

******

## Glimpses of Fine art elements in Valmiki's Ramayanam

The celebrated *Ramayanam* reflects the popularity and importance that fine art claimed in the contemporary society. *Ramayanam* carries many references to *geeta, vadya, nrtya, nataka, chitra, shilpa* art forms here and there. These give us a glimpse of the popularity of fine arts in those times. We shall have a bird's eyeview of the same-

Valmiki excels in his descriptions of *utsava* episodes. He hints towards the great interest of people in celebrations by referring to the city of Ayodhyäas *samajotsavashaalini* (समाजोत्सवशालिनी) - (that which is buzzling with great celebrations) *(Ayodhyakanda).*

The sudden announcement of Rama's coronation rises a wave of joy and celebration in the whole kingdom. Manthara, the wicked relative of queen Kaikeyi, who was unaware of this, climbs the top of the palace and sees the whole city rejoicing with profuse music and dance. (*Balakanda*) It was by that she got to know that Rama was being crowned. This implicates that music and dance was a popular part of public life, highlighted in all colour during celebrations in particular. On the eve of Rama's *pattabhishekam*, all night people sang and played instruments and danced in delight on every street. Old and young men and women of all communities joined in the merrymaking. (Balakanda) There was joy and merry-making signified by music and dance events in every corner of the royal campus, inside the palace harems, courtyards and galleries. It was like a *vasanta* (spring season) coming inside another *vasanta*[i] (spring season)! The very word *vasanta* implicates music and dance and celebrations.

## References to Music and Dance in *Ramayanam*-

Since the oldest times *Sangeetam* has always meant 'an ensemble of *geeta, (singing) vadya (instrumental music)* and *nrtya* (dance)'. In course of time, probably only from the latest few centuries, *sangeetam* has come to be understood as 'an ensemble of vocal and instrumental music'. Accordingly in most of the references in *Ramayanam*, we see dance and music together. The Major events and festivities elaborated in the *Ramayanam* all describe profuse music and dance performances.

Rama himself is mentioned to be a talented musician. (Balakanda) The story of *Ramayanam* itself begins with the *Ramayanam* narration song sung by of the little musicians Lava and kusha. (Balakanda) They were actually Rama's sons, being brought up by Seeta, who had taken resort in sage Valmiki's *ashrama*. Like all other hermit children, they were educated in *veda*, *vedangas* and spiritual and material knowledge systems. But since they were actually princes (which they were unaware of according to the story) they were also imparted excellent training in warship, fine arts and poetry.

Valmiki describes the episode wherein Lava and Kusha, presented for the first time, sage Valmiki's newly composed *Ramayanamkavyam* in an assembly of sages and *tapasvins* in an event at the ashram. The little boys, wearing pleasing bark garments, playing their *Veena* instruments and *taala* in their hands and dancing graceful with jingles on their feet, sang so melodiously that the whole assembly was amazed. So great was the appreciation that the *Ramayana-kavyam* and the little boys' rendering won, that the sages were overwhelmed with admiration and gratefulness. The delighted sages embraced the boys, praised them and the *kavyam* and lauded its uniqueness wholeheartedly. It was so spontaneous that they gave away gifts to the boys in appreciation. One sage gave away the bark garment he was wearing while another gave away his *danda* (the staff used for resting the hand during *Japa*), yet another sage donated his *japa-malaa*while another gave away the thread used to tie his locks. Another gave away the deer skin used as an *asana* (seat) when yet another gave away his very *koupeenam!* The *tapasvins*, who had nothing praise worthy to gift to the artists, were so excited that they gave away their meagre belongings as a token of appreciation! What else indeed can be a higher laurel to an artist! The spontaneity with which the sages gave away their possessions to the little artists, also shows the great love and appreciation that poetry and fine arts commanded in the contemporary times. It also suggests that artists were duly rewarded on every stage rendering. Sages, as unfortunately depicted in the modern day theatre and dance were not merely the sober faced, tapasvins, devoid of taste and appreciation for music.

Lava and Kusha's rendering of the *Ramayana-kavyam,* in the assembly became so popular that soon the boys were invited to various assemblies to present the same. The name and fame of the *Ramayanakavyam* as well as the talents of the little boys spread across everywhere, till it reached Ayodhya city. The people of Ayodhya who were great patrons of fine arts, invited the boys to present the *Ramayanam* narration on various platforms in the kingdom. Soon Lava and kusha became the darlings of the art connoisseurs of Ayodhya. The news reached the royal family too very soon! Lord Rama and the royal members invited the boys for a rendering in the palace. The rendering generated thrill in Rama and the royal family members. Not only did the extraordinary beauty and dignity of the *Ramayanamkavya* thrilled their souls, the sweetness of musical rendering enchanted them all. The musical appreciation episode turned out into a nostalgic moment, soon when Sage Valmiki revealed that Lava and Kusha were indeed the children of Seeta and Rama. The people of Ayodha voluntarily demanded the return of Seeta with her children to Ayodhya. This episode of Valmiki is rich in every sense. Not only is the immense appreciation of people for literature, poetry, new compositions and fine arts in those times is reflected all through, but also the union of Rama with his children generates nostalgic feelings in the connoisseurs.

Coming to other episodes of music and dance in Valmiki's *Ramayanam*, each episode mirrors the spirit of religiosity and celebration with meticulous details. The descriptions cover a wide range of aspects including the religious rites and vows related, the noble guidance of sages and *brahmanas*, the role of artisans, engineers and others in the arrangements, the song-dance and merriment features, feastings, the spectacular costumes, crowds on the streets and their excited chatter, hospitality of guests, decorations and large scale arrangements and so on. In the *Balakanda* of *Ramayanam,* the spring celebrations had just ended and the *putrakameshti-yaaga* was to begin in a grand way. Sage Valmiki says with a poetic flair that it was '*vasanta* followed by another *vasanta'* spring followed by another spring. Here the word *vasanta* does not explicitly mean the season but rather suggests the celebrative mood. (Balakanda)

On the death of king Dasharatha, the sages express concern over the problems that arise in the absence of a ruler - "In a kingless kingdom, actors and businessmen, festivals and celebrations do not flourish"- (Ayodhyakanda).

The *Putrakamestiyaga* performed by Dasharatha is an episode that mirrors how the event was a source of employment to a large variety of people. Ranging from the servants upto the monarch, everyone had a role in it. Sage Vasistha directs as to who were to be formally employed in the event. The list includes old and experienced *brahmanas* for advise, servants to assist, engineers, carpenters, tillers, astrologers, sculptors, ***Natanartakaah*** (dancers actors), scholars and other skilled persons- *(Balakanda)* The descriptions imply that the huge amount of money spent for the celebration and people of different occupations gained handsome earnings and opportunities on the occasion.

The courtesans who are the professional danseuses as well as the custodians of fine arts in tradition, have a special mention here and there. In the *baalakaanda*, the *devanganas* (the courtesans) carried the *kalasha* and lead the processions alongside the learned and pious *brahmanas*! (ch ,sl ) This implicates that they were considered very auspicious and enjoyed representation in social events. Unlike in the European context, the Indian courtesans have had a social status of their own. They were employed in many cultural activities. At the coronation ceremony of Rama, the royal paraphernalia included a band of courtesans who assembled in the second enclosure of the palace. *(Rmn, Ayodhyakanda)*

Other prominent *utsava* episodes are the *putrotsava* on the birth of Räma and his brothers *(1.18)* Räma's *Vivähotsava* at Mithilä *(Balakanda),* the colourful reception for the newly-wed princes at Ayodhyä *(Balakanda)*, the *utsava* on the eve of Räma's proposed coronation *(Ayodhyakanda)*, Räma's final coronation *(yuddhaknada)* and the coronations of Sugreeva (Kishkindhakanda) and Vibheeshana *(Sundara-kanda)*. In each of these, there are descriptions of people singing dancing with instruments in groups on the streets. *Ramayanam* mentions instruments like mrdangam, bheri, veena, etc—

Valmiki's *Ramayanam* has inspired the birth of many poetic works based on the episodes of Rama's life. One such popular work is Hanumakavi's *Hanümannatakam*. It refers to the sound of instruments like *nissala-mardala-rasäla-gabhiräbheri-jhankära-täla* and *kahala* during Rama's marriage. *(1. 57)*

Valmiki's appreciation of music as well as poetic capabilities can be seen in the *varsha-rtuvarnanam* (descriptions of the Rainy season) in the *kishkindha-kanda*. There are verses that compare the rain showers and the sounds to a music concert by the nature! Poet Välmèki fancies the rainy season to resemble a *sangeetotsava* (musical ensemble)-

षट्पादन्त्रीमधुराभिदानंप्लवङ्गमोदीरितकण्ठतालमू ।
आविष्कृतंमेघमृदङ्गनादैः वनेषुसङ्गीतमिवप्रवृत्तम् ॥

*"The hums of the bees being like the melodies of the lute, the chatters of apes being like the rhythms, the roars of the clouds being the drums made the forests appear to be hosting a sangeetotsava (musical ensemble). Birds singing sweetly and peacocks ornate with colourful feathers sang and danced to the music respectively." (Kishkindhakanda 28. 36-37).*

Ravana is mentioned to be a great connoisseur of fine arts. He was not only a great patron of arts but a great artist himself. In his harem, there were countless instruments arranged in majesty. Many other folk and native versions of Ramayanam refer to Ravana as a great musician and patron of fine arts. Folk stories even narrate how he once played Veena, using his intestines as the strings to appease Lord Shiva. A Shivastuti, said to have been composed by Ravana himself, is majestic and rich with metrical beauty and has many danceable aspects to it.

In Valmiki *Ramayanam*, when Hanuman stealthily enters Ravana's harem in search of Seeta, he saw Ravana's women resting here and there on their coaches. After having rejoiced all night in singing and dancing, many had slipped to sleep with veena and other instruments still in their hands! (*Sundarakanda*)

While describing the *pushpaka-vimana,* the poet mentions that it hosted galleries equipped with musical instruments. People could rejoice with music as the vehicle transported them to their destinations! (*sundarakanda*)

### Processions

The best platforms for fine arts in all colour and pomp have always been *shobhaa-yaatra* (processions). It is in processions that not only musicians, instrumentalists, dancers, folk artists get to showcase their talents in public, but even public join in clapping singing and dancing along and cheering them in unison. To this day processions in the form of *rathotsavah, pallakiutsavah, doloysavah or shobhaayaatra* for Gods, kings, bride and bridegrooms, Gurus, or victorious personalities etc., has been a colourful mark of Indian culture.

In *Ramayanam*, the references to processions are marked with profuse singing dancing and instrumental music. When the newly married prince Rama and his brothers returned to Ayodhya, from Mithila with their brides, they were welcomed with great pomp and splendour. The people jubilantly sang danced and cheered the new weds all the way, waving flags and banners to welcome them.

Another instance when a procession is described is when Rama returned to Ayodhya after 14 years of exile. The whole kingdom has gathered on the boundaries of the kingdom along with the royal family. It was a nostalgic as well as delightful moment for everyone. Rama, Seeta, Lakshmana and their troupe of vanara friends were given a befitting welcome. The skies thundered with the sounds of instruments singing and dancing.

### References to *Drama*

From very ancient times, there were many professional drama teams. *Rämäyanam* mentions that there were hundreds of *vadhü-näöakamaëòalis* (women drama troupes) in Ayodhyä city

**वधूनाटकसङ्घैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीं–**

*– (Balakanda, 5. 12)*

### *Kavyaghosti-*

Episodes in *Puränas, Rämäyanam* and *Mahäbhäratam* contain examples for this tradition. *Rämäyanam* hails the scholars who participated in Dasharatha's *putrakämeshtithus-* "There was none among them who was ignorant of the six *vedängas*[ii] none who did not uphold the vow of celibacy, none who was not a scholar, no Brahmin who was not a skilled debater. (Balakanda, 14. 21)

*Hanümannatakam* describes how the great *dhanurutsava* was arranged at Seetä's *swayamavara* in Mithilä. This attracted many great warriors. Having heard that all the competing princes were humbled by the might of the bow, Räma was curious to see the bow. Along with Sage

Viswämitra and Laksmana he arrived in Mithilä. Seetä was to be given as the price of valour to the warrior who could string the bow. *(act 1)*

### Paintings and sculpture and decorations described

*Ramayanam* refers to Galleries with paintings and sculptures in the harems of Ravana. Bhavabhutis *uttararama-charitam* describes- *chitrashaala* - an exclusive gallery of painting of Rama's ancestors and the Rama's *vanavaasa*. A pregnant Seeta, gets nostalgic on seeing them and desires to visit the forest once again. The walls of palaces and houses, including Ravana's harem as well as the *pushpakavimana* were ornate with paintings, figurines and colourful artworks.

The description of *Ashoka-vatika* wherein the tree platforms were embedded with designs, figurines paintings and busts embedded with precious gems.

The *vivahamandapam* prepared for Seeta-Rama's marraige decorations descriptions also reflect the artistic creations involved.

Infact, many art forms have even evolved with Ramayanam legends in their background. For example the famous *Madhubani* cloth paintings are an age old folk art form, evolved from Mithila-Nepal-Bihar area. The art form owes its origin to a legend around Seeta's marriage. It seems when, Rama broke the great bow to the delight of everyone, immediately his marriage was arranged with Seeta. The people of Mithila were excited and began to deck up the city in excitement and hurry. The women prepared vegetal dyes and painted the story of the two royal clans on the walls of the city and galleries. Legends say that this was the first form of *Madhubani* art. Eventually painting Seeta's marriage episodes on walls cloths banners and costumes became a tradition with the women of east India and Nepal and that came to be recognized as the *Madhubani* art. To this day, Sarees of *Madhubani* paintings have a cherished place in the Indian women's wardrobe.

### Costumes-

*Ramayanam* describes how the guests were all dressed in finery during the *putrakämeñöi.* Brahmanas and other guests who arrived in the luncheons were all dressed in finery. Not only the royal members and guests, but even the royal attendants and employees were dressed in fine garments and ornaments *(Balakanda, 14. 18)*

Princes in particular dressed grandly during special occasions. Describing the spectacular occasion of Rama's *vivahotsava, Ramayanam* refers to the bridal attires of Rama and his brothers and Seeta and her sisters. *(Balakanda, 73)* The bride Seeta is brought to the marriage altar as a *sarvaabharanabhushitaa*, (decked up with lot of jewelry) and given in marriage to the beautifully dressed handsome Rama.

The play *Pratimanatakam* refers to an instance when Rama entered in ordinary dress to the surprise of all. They were yet to know of the disastrous news of the sudden cancellation of the coronation event and Rama's unconditional exile. *(act 1)*

When Seeta insisted to go on exile along with Rama, she was given royal garment by the king. A few pairs of golden yellow silken robes and very special jewellery to wear all through. During the *vanavasa,* when Rama, Seeta and Lakshmana visit the *ashrama* of Maharshi Atri, his noble wife Anasuya gives gifts of precious jewelry and very special cosmetics to Seeta. She mentions that the cosmetics would never fade at all.

******

## *Ramayana's* influence on fine arts at all times

*Ramayanam* is **पाठ्येगेयेचमधुरम्** ... *i.e* 'Sweet to read as well as sing'. The verses are metrical and also carry beautiful rhyme in very many places. It is convenient to set them to musical tunes. Thus the verses, episodes or the whole of *Ramayana-kavyam* itself have been time and again set to different tunes and rendered to delight the masses.

Infact *Rama-kathaa* is very much a part of *"Harikathaa/ kathaa-kaalakshepa"* art form. To this day the episodes like *Rama-janma, Seeta-svayamvara, Rama-pattabhisheka, Rama-vana-gamana,* Anjaneya's *samudra-langhana,* etc., are the favourite episodes to depict for *Harikathaa* artists. Connoisseurs also welcome these again and again with fresh enthusiasm! *Ramayanam*, thus has always been *puraaapinava*! (very old but ever new). Even music, dance, drama, yakshaganna, sculpture and many more art forms derive their stores and themes from *Ramayanam* to this day. Despite the arrival of plenty of themes and stories, *Ramayanam* never ceases to keep coming back on the stages in newer forms.

The influence of *Ramayanam* on successive artists, poets and religious traditions has been immense. Hundreds of *Ramayanams* were born, adopting the core story of Valmiki's *Ramayanam*. Countless poets and singers sang the glories of Rama. No amount of repetition of Rama's glories has ever bored any Indian till date! Such is the admiration Rama has won, and such is the charm and rasa experience of the *Ramakathaa!*

Sri Tyagaraja, the greatest of the *Sangeetatrimurtis,* has in particular lavished his compositions on the name and virtues of the great Rama like no one has! His rich outpour of devotion and aesthetic descriptions of Rama, has enriched the treasury of *kritis* in Karnataka *Shastreeyapaddhati.* Infact most of his compositions are about Rama than about any other God head. Particularly in his cute *utsavasampradayas,* Sri Tyagaraja unfold different moods with Rama. He wakes up Rama, caresses him, bathes him, dresses him, applies sandal on his limbs, Garlands him, worships him, sings for him, feeds him, puts him to sleep, gently swings him--- with delicate love and sweetness! Each *Utsavasampradaya* opens the doors to Rama's harem, where one can visualize all these sevas mentally! The sweet experience of nearness, Bhakti and seva to The Lord is simply beyond words!

The *utsavasampradaya* where the *pallavi* mentions the Seeta Rama kalyana is indeed most popular! No marriage in South India is complete without the singing ***Seetaakalyaanavaibhogame! Raamakalyaana Vaibhogame!***

This creative outpour of *Ramabhakti* by Sri Tyagajara has inspired similar compositions by many other great poets. Our own *Dasavarenya* Purandaradasa has composed some songs narrating specific episodes of *Ramayanam*. For example-The kriti ಅಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ರಾಮ ಇಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ರಾಮ narrates an instance in Rama-Ravana battle, wherein Rama shoots the *sammohana-astra* weapon. As a result everyone in the battle field gets illusionized and begin to hallucinate! Everyone appeared like Rama to everyone else! The demons in fit of rage killed each other mistaking each other to be Rama! The Vanara soldiers on the other hand, stopped fighting for a while and enjoyed hugging the 'Rama' beside them!

After Valmiki Ramaynaam, the most popular in North India is Goswami Tulasidas's *Ramacharitmanas*. The verses are very musical and metrical, most useful to sing. They are sung in every household of North India everyday! Parts of them are extremely popular songs in Hindustani classical, Thumri and folk and bhajan traditions too

In the *Bhajanasampradaya*, Rama's *naamasankeertanam* is most popular. The story of Rama is weaved into the *Rama-nama-sankeertanam- Shuddha brahma paraatpara Raama*..... and is most suitable for chorus singing and a mental contemplation of Rama *kathaa.* Simply repeating *Sri Rama Jaya Rama Jaya Jaya Raama* itself is a very popular tradition. Countless people chant or sing this line in meditative steadfastness. There are yet countless others who write the *Ramanaama* thousands or lakhs of times with great devotion and love.

Till the invasions, happened and *Vasantotsava* enjoyed great patronage, Rama Navami, which falls in the mid spring has enjoyed great pomp. After the unfortunate invasions and ban on public celebrations and depatronizing of *vasanta* celebrations also, *Ramanavami* has nevertheless continued as *Ramotsava*! Incidentally in Karnataka, *Ramotsava* is prominently a season of music! Hundreds of big and small platforms host music concerts all over the state. The best of artists are invited from different parts of the country to present their talents. People to this day, throng in huge numbers to enjoy the music festivals.

On the whole Rama and *Ramayanam,* have seeped into the very core of Indian culture for eternity. The rich rasa experience that the *kavyam* gives , the noble and dynamic personalities of Rama, Seeta, Lakshmana, Anjaneya, Bharata and others. The added convenience to aesthetic depiction of fine arts is the progress of the *Ramakathaa* into different venues ranging from the aristocracies of the royal palace at Ayodhya, to the delightful heights of Chitrakoota down to the dense forests of Dandaka, down to the rocky terrain of Kishkindha, to the secret and dangerous underground territories governed by Swayamprabha, to the enchanting seashores, upto Lanka in the midst of the seas, upto the extremely beautiful *Ashoka-vana* garden of Ravana, and so on. The silent by effective depiction of family values, social values political strategies, character depictions, nature descriptions, and philosophical doctrines all through also give food for the artists to unfold many aspects of life through *Ramayanam*.

Thus *Ramayanam*, itself being a 'fine art', has thrown open infinite scope for artistic creation and reproduction.

And this has gone on for ages, unperturbed even by the worst of onslaughts that our land has faced! Considering the limits of this study, only a general glance forth has been made so far. Detailed study can reveal many more broad and smaller references to fine artistic aspects in the *Ramayanam*.

---

[i] *The vasantamaasa, spring season was always associated to countless festivities, and cultural events since Vedic times. Thus the very name of the vasanta-maasahas come to be understood as 'celebrations and cultural events'! Spread across almost 3 months, Vasanta enjoyed royal patronage for millennia under Vedic, Bouddha and Jaina rulers, till the cruel Islamic and British invaders and the foreign rule that followed, banned and de-patronized them systematically. But still the local landlords and commoners have somehow kept the spirit of vasanta celebrations alive, although not in the mass and grandeur that they once had in the past.*

❑

*Artists performing during Sangeeta Ramayana with commentary and Direction by Dr. T.S. Satyavathi, Bengaluru*

# the principles of administration in rāmāyaṇa

**Prof. P. Sashirekha**

*B*ālakāṇḍa provides a beautiful picture of a prosperous kingdom ruled by king *Dasaratha*, the father of *'SriRama'*. Then in the same kāṇḍa sarga 51 deals with the matter of administration in a brief manner.

*sundarakāṇḍa* and *yuddhakāṇḍa* too discuss a little regarding the administration. If the information from all the *kāṇḍas* are put together, then a perfect system of 'Administration' in ancient India appears in front of the readers. Here an attempt is made to bring out the contribution of *Vālmīkī* to the science of Administration through his great poem for the wellbeing of the later generations.

**कालो वा कारणं राज्ञः राजा वा कालकारणम् ।**
**इति ते संशयो माभूत् राजा कालस्य कारणम् ॥**
MBH Santi 69-79

There need not be any doubt such as 'whether the time is the cause of the king or the king is the cause of time.' Undoubtedly the king is the cause (maker) of the time.

This is the statement of *Bhīṣma* in the great epic *Mahābhārata.* The great epic at the outset declares that there is nothing that is not found in *Mahābhārata*. The four goals of human life *Dharma, Artha, Kāma* and *Mokṣa* are discussed in this great epic. Hence, whatever is found in this epic is found elsewhere, if something is not found mentioned in this means it is nowhere.

**घर्मे चार्थे च कामे च माक्षे च भरतर्षभ ।**
**यदिहास्ति तदन्यत्र यत्रेहास्ति न तत् क्वचित् ॥** MBH Adi 62-53

Though such declaration is not found in *Rāmāyaṇa* the first epic too has dealt with all the above topics in a *'Kantasammita' Kāvya* style. Hence, it is called *'ādikāvya'* and also a role model to later *kāvyas*. Based on its style of dealing with the subject matter later *Alankarikas* have given a prominent place to this work in Sanskrit literature. It is considered as *'Laksya' kāvya* i.e. an example to the rules of *Alankara sastra*. The ancient poets like Bhasa and Kālidāsa have chosen plots for their works from the story of *Rāmāyaṇa. Kālidāsa* in his poem *Raghuvaṃśam* describes the qualities of the kings of *Raghu* dynasty under whose rule all the subjects were happy and prosperous. Thus the glimpses of Administration in ancient India are found in this great epic *kāvya* and *Ramarajya* is always mentioned as an exemplary one to the kings in later times. One thing to be noted here is though *'Ramarajya'* is praised in the literary works, Rama's role as a ruler is not found in *'Vālmīkī Rāmāyaṇa'*. He was not even coroneted as a prince has spent his entire life in a forest, finally when he comes back and occupies the throne there ends *Rāmāyaṇa*. Then how to accept that *'Ramarajya'* was excellent. To answer this question one has to go through the entire *Rāmāyaṇa* which discusses the principle of Administration in various contexts. At first *Bālakāṇḍa* provides a beautiful picture of a prosperous kingdom ruled by king *Dasaratha*, the father of *'SriRama'*. Then in the same kāṇḍa sarga 51 deals with the matter of administration in a brief manner.

An exhaustive description covers the main principles of administration in *Ayodhyakāṇḍa* through the words of Rama. This is the context through which the political wisdom of Rama is highlighted. *sundarakāṇḍa* and *yuddhakāṇḍa* too discuss a little regarding the administration. If the information from all the *kāṇḍas* are put together, then a perfect system of 'Administration' in ancient India appears in front of the readers. Here an attempt is made to bring out the contribution of *Vālmīkī* to the science of Administration through his great poem for the wellbeing of the later generations. The topics of polity which are found in the works on polity like *manusmṛti Kautilay's Arthaśāstra and Kamandakiya* etc, are already dealt with in *Rāmāyaṇa. Acarya Kautilya*, the great statesman refers to *Ravana* in the context of *'Indriyajaya'* while mentioning the names of the kings who perished due to the lack of self restraint. He says' **मानाद्रावणः परदारानप्रयच्छन्** (*Ravana* due to arrogance by not returning other's wife) (K.A.1-6-87). Even the Alaṅkāra works while explaining the sweet and agreeable communication of a *kāvya* which is like the statement of beloved **'रामवत् वर्तितव्यम् न रावणादिवत्'** mean to say that one should be like *Rama* not like *Ravana* is the message of *Rāmāyaṇa*. Thus *Rāmāyaṇa* plays an important role in the field of literature as a source of material not only to *sravya* and *Drsya kāvyas* but also to the *Alaṅkāra* works. Even the four goals of human life are suggested through this great epic. As per the description of *Vālmīkī. Rama* is endowed with all the qualities of a noble king. In the monarchy system king is the sole authority in every field of Administration. Hence, the prosperity of any kingdom depends upon the king. According to *saptanga* theory king is the best of all constituents.

**'स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः'** (K.A.6-1-11). **सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते** This is the definition found in the works on ancient Indian polity (M.S.9-294) Being the head of the *'Saptanga'* the king is *'Uttarnanga'* The great poet *Magha* describes the unique personality of the king in the following words.

**बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गः घनसंवृतिकञ्चुकः ।**
**चारेक्षणो दूतमुखः पुरुषः कोऽपि पार्थिवः ।।** S 2-84-1

Intellect as weapon, prakriti (constituents of polity) as limbs, maintaining the secrecy of the council as armour, the spies as eyes the ambassador as his voice, the king is an unique one (his form is some thing different).

coning to the *'Saptanga'* theory the detailed explanation is as follows 1. Svami - The king, 2. Amatya - The minister, 3. Janapada - The kingdom, 4. Durga - The fort (Security system), 5. Kosa - The treasury (state economy) 6. Danda - Army, Law and order, 7. Mitrani - the Allies (foreign relations).

Amatya means one who is always with the king to assist in Royal affairs. **अमा-सह गच्छतीति अमात्यः** Thus Amatyas play an important role in the administration.

As mentioned earlier *'Rāmāyaṇa'* is a *laksya kāvya* even for the science of polity. Hence, to understand the polity in *Rāmāyaṇa* it is necessary to take the help of the works on polity though they are posterior to the great epic *Rāmāyaṇa.* In this context *Manusmṛti, Kautilya's Arthaśāstra* etc, are to be taken to focus. On the principle of Administration in *Rāmāyaṇa* particularly the *Arthaśāstra* of Kautilya is of a great help as it presents a perfect form of administration. *Kamandakiya* follows *Kautilya* in the subject matter.

To take the discussion further, the principles of administration in *Arthaśāstra* may be mentioned in a brief manner, that too which are relevant for the present topic.

The welfare of the kingdom is based on its seven constituents. Hence, the selection of each constituent and its maintenance are very important. Being a *kāvya Rāmāyaṇa* does not explain the procedure of selection of ministers, spies etc. But it may be understood through the suggestion in this mahakāvya which is found in a detailed form in *Dharma* and *Artha sastras*. The following discussion would focus on certain principles of Administration as reflected in *Rāmāyaṇa.*

At first the words of Rama in 100th sarga of *Ayodhyakāṇḍa* are to be noted which cover entire polity in a nutshell. The king should begin all his royal affairs preceded by purohita the royal priest. The etemology of 'purohita' is **पुरतः हितः** placed in front. Mantri and purohita both hold a key position in Administration. *Vasistha* was purohita of Ikshvakukings. Hence, Rama asks Bharata is Vasistha the virtuous scholarly lustrous brahman (vedic scholar) treated by you with due respect?

**स कच्चिद् ब्राह्मणो विद्वान् धर्मनित्यो महाद्युतिः ।**
**इक्ष्वाकूणामुपाध्यायो यद्यावत्तात पूज्यते ॥ अ.** 100-9

Rama also enquires whether Bharata is taking care of scholars, brahmans and elderly people and honoring them. Because, the *'Vrddhaseva'* is one of the qualities of a noble king.

He should pay respect to them and should listen to their advises. According to *Kautilya* the king should meet the seniors who are experts in *sastras* for the development of his personality **नित्यश्च विद्यावृद्धसंयोगो विनयवृद्ध्यर्थम्, तन्मूलत्वाद्विनयस्य** I K.A.1-5-11).

The king should have an expert of *Arthaśāstra* (The definition of *Arthaśāstra* would be explained) and *Dhanurveda* (science of weapons) in his court. Rama asks Bharata. Are you following the advise of the great teacher *Sudhanva* who is an expert of weapons and arrows and the science of Administration.

इष्वस्त्रवरसम्पन्नमर्थशास्त्रविशारदम् ।
सुधन्वानमुपाध्यायं कच्चित्त्वं तात मन्यसे ।। अ. 100-14

There is a difference in the meaning of two words *Mantri* and *Amatya.* Though they are some times used in the general meaning of a minister, according to the technical meaning both are different. This is well explained in *Kautilya's Arthaśāstra.* There is a secret test known as **उपधा** to test the integrity of the ministers in the field of *Dharma, Artha* and *Kāma.* They are known as **धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा**. one more test is **भयोपधा** through which the courage would be examined. The persons who could get through all the four tests should be appointed as *Mantris*. Because only mantris are qualified for the counsel. They are members of the counsel of the king. *Amatyas* are different. This **उपधा** is mentioned in the words of Rama which is as follows -

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः ।
कुलीनश्चेङ्गितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः ।। अ. 100-15

The qualifications of persons to be appointed to various positions are enlisted in *Kautilya's Arthaśāstra.* As mentioned earlier *Arthaśāstra* if taken as a *laksana* work. *Rāmāyaṇa* may be taken as laksya work which provides suitable illustrations. Mantra the secrecy of the counsel should be protected. No mediatorship of media in the monarcly system. The plans for various under takings were never revealed and were not supposed to be revealed. Kālidās in Raghuvaṃśam says - **फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव** । Raghu 1-20

The plans were known only after the results come like the *samskaras* of previous birth are known by seeing the state of a person in present birth.

The prosperity and safety of a kingdom depend on its counsel and it is the root of success. Rama too being expert in polity enquires the maintenance of the confidentiality of Royal affairs. He tells Bharata -

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव ।
सुसंवृतो मन्त्रधरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः ।। अ.100-16.

Success of a king is rooted in the mantra (Secret counsel), which is well understood and protected by the ministers experts in the science of Administration.

Rama also asks how Bharata is conducting the deliberations. Because, there are certain principles regarding the counsel. The king neither should take the decisions all alone nor be supposed to involve too many members in the counsel. He should select two or three trustworthy persons in such a way that the secrecy should not run into the kingdom.

**कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिस्सह ।**
**कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति ।। अ.** 100-18

In this context Kautilya says - **मन्त्रपूर्वाः सर्वारम्भाः** (K.A.1-15-2). All the affairs are rooted in counsil. The revealer of the secrecy should be severely punished. **उच्छिद्येत मन्त्रभेदी** (K.A.1-15-6).

The works well done only are to be known to the kings of other states, not all the works which are undertaken but not completed should not be revealed.

**कच्चित्तु सुकृतान्येव कृतरूपाणि वा पुनः ।**
**विदुस्ते सर्वकार्याणि न कर्तव्यानि पार्थिवाः ।। अ** 100-20.

Not only that the confidential matters should be maintained in such a way that, they should be beyond the reach even through the guess work or analytical approach by the experts in polity of other kingdoms.

**कच्चिन्न तर्कैर्युक्त्या वा ये चाप्यपरिकीर्तिताः ।**
**त्वया वा तव वामात्यैर्बुध्यते तात मन्त्रितम् ।। अ.** 100-21

This is an important point to be noted by the rulers. There is a possibility of the matters discussed in the counsel get revealed during conversation with others. The intelligent people can easily grasp the things through the guess or logical thinking. Hence, the king should be vigilant in dealing with the royal affairs.

Even in the present administration the top secrets would never get revealed, if they come out means due to the treacherous persons or due to negligence. Many scopes for the leakage of the secrecy are described elaborately in Kautilya's Arthaśāstra. Such details are not required during the conversation of two princes as both of them are well trained in polity and one word would be enough to understand the entire idea.

As mentioned earlier the Mantris and Amatyas are separately mentioned in *Rāmāyaṇa.* According to *Rāmāyaṇa*, king *Dasaratha* had eight members in his cabinet. The number varies to the counsel of *Ravana. Dasaratha*'s ministry as follows -

There were eight ministers who were righteous and affectionate to the king and experts in royal affairs.

**अष्टौ बभूवुर्वीरस्य तस्यामात्या यशस्विनः ।**
**शुचयश्चानुरक्ताश्च राजकृत्येषु नित्यशः ।। बा.** 7-2

They are - 1. Dhrsti, 2. Jayanta, 3. Vijaya, 4. Siddhartha, 5. Arthasadhaka, 6. Asoka, 7. Mantrapala, 8. Sumantra.

**धृष्टिर्जयन्तो विजयः सिद्धार्थोऽर्थसाधकः ।**
**अशोको मन्त्रपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोऽभवत् ।। बा.** 7-3

The names of ministers indicate their virtues. Sumantra appears to be the most important one who is involved in the affairs of royal harem also.

There were two *purohitas Vasistha* and *Vamadeva* and also other mantris to assist him in all the royal affairs.

**ऋत्विजौ द्वावभिमतौ तस्यास्तामृषिसत्तमौ ।**
**वसिष्ठो वामदेवश्च मन्त्रिणश्च तथापरे ।। बा.** 7-4

Unlike in democracy in monarchy there is a system of selection of all the employees including ministers. Present term Sachivalaya known as secretariat was Amatyalaya in ancient India. There are certain parameters to select the ministers who directly participate in the deliberations and take part in administration and management of the kingdom.

At first the basic qualifications to be verified and then the secret tests should be conducted. The basic qualities are termed as अमात्यसम्पत् the properties (characteristics) of the candidates which are described in Arthaśāstra by Acarya Kautilya. They come under the preview of qualities mentioned in Rāmāyaṇa. These qualities are as follows -

विद्याविनीता ह्रीमन्तः कुशला नियतेन्द्रियाः ।
श्रीमन्तश्च महात्मानः शास्त्रज्ञा दृढविक्रमाः ।।
कीर्तिमन्तः प्रणिहिता यथावचनकारिणः ।
तेजः क्षमायशः प्राप्ताः स्मितपूर्वाभिभाषिणः।। बा. 7-5,6

Trained in all the branches of knowledge, modest, skilled, self controlled, rich, great, acquainted with sastras (sciences), great warriors, famous, stable minded, do the work as per the instruction, possessed of luster, for bearance and popularity and persons who talk with a smile.

They do not speak lies either due to anger or lust. There is no matter that does not come to their notice whether is done, the case of own country or other country, whatever is done, going on or going to happen would be known to them through the spies.

क्रोधात्कामार्थहेतोर्वा न ब्रूयुरनृतं वचः ।
तेषामविदितं किञ्चित्स्वेषु नास्ति परेषु वा ।।
क्रियमाणं कृतं वापि चारेणापि चिकीर्षितम् ।। बा. 7-7

Their efficiency and working style is praiseworthy. They are skilled in dealing with the royal assignments and their loyalty is tested and judged by their friendly circle. They do not hesitate to punish their own sons if proved guilty.

कुशला व्यवहारेषु सौहृदेषु परीक्षिताः ।
प्राप्तकालं तु ते दण्डं धारयेयुः सुतेष्वपि ।। बा. 7-8.

They are experts in the maintenance of state economy and also the army.

कोशसंग्रहणे युक्ता बलस्य च परिग्रहे । बा. 7-9.

Thus in the company of such great ministers and also with the assistance of spies (The department of intelligence) king Dasaratha ruled the kingdom keeping his subjects always happy by removing the attitude of Adharma in the people.

अवेक्षमाणश्चारेण प्रजा धर्मेण रञ्जयत् ।
प्रजानां पालनं कुर्वन् अधर्मान् परिवर्जयन् ।। शशास .. बा.7-19

Two important wings are mentioned in the above description, 1. Kosa, 2. Army. As mentioned in the beginning, these two are constituents of 'saptanga' a sovereign kingdom.

The heads of these two wings play an important role even in present administration. Who should be given such key positions how to select them etc, is explained by Acarya Kautilya which would be discussed later.

The third constituent element of *saptanga* is *Janapada*, the kingdom. A perfect town plan may be seen in *Bālakāṇḍa* in the description of the city *Ayodhya*, construction of multistoried buildings in various shapes, the allotment of land for the market, houses for persons of various professions, and Garden etc. (बा..5-7-17). 'Durga' the fort is the fourth constituent element which plays an important role in the protection of the kingdom. The name '*Ayodhya*' is true to its capital which can not be attacked by the enemies. The maintenance of *kosa* and *Danda* (army) is discussed above. The seventh one is mitra the allies. *Dasaratha* had good relations with neighboring kings. His ministers were capable of dealing with foreign policy which is known by the term *'Sadgunlam'* (would be dealt with in forth coming discussion).

Coming to the administration as narrated by Rama it may be stated that in one canto he has explained the entire system of good governance in the form of enquiry about the welfare of the kingdom. In this context the literary excellance of Vālmīkī flashes through each word. The way he has embedded each topic in one sloka is amazing and the communication is endowed with the suggestive meaning.

The administration may be divided mainly into two. 1. Internal administration and 2. External administration. The Mantris, Amatyas and sacivas assist the king in internal administration. The chief of the Army, the ambassadors and the spies help in the external administration.

Before going to discuss these details it is necessary to know the selection of these officers and allocation of port folios to each one of them. It is already mentioned that the candidates should be examined through the test **उपधा.** Now the procedure of upadha test as described in K.A. may be referred to for the clear understanding of the present topic.

The upadha test is four fold 1. **धर्मोपधा** 2. **अर्थोपधा**, 3. **कामोपधा**, 4. **भयोपधा.** These are mentioned in *Manu* and *Yajnavalkya smritis* and also in some other works on polity. Probably these secret tests are conducted in modern administration also in the selection of top one officers. This is nothing but the test of conduct and character of a person.

Without going in to the detailed description of the tests, how these tests help the selection of important officers would be focused here.

The *Dharmopadha* test is to know the upright character of a person. *Arthopadha* is to test the loyalty of the person in financial affairs. *Kamopadha* helps to understand the behavior of a person towards women. *Bhayopadha* is a test to know the courage of a person to take up the affairs involving risk to life. After all the tests are completed, the selection of officers to various positions will be done with the help of mantri, purohita etc, the chief advisors to the king. The persons proved righteous should be appointed as judges and magistrates to look into the judicial matters. Those who are qualified in *Arthopadha* should be made the finance minister (chief finance officers). The candidates got through the *Kamopadha* should be allotted the department of women, welfare. Those who are proved courageous should be appointed in security wing as personal security officers and body guards.

Those who have come out through all the above tests should be made as *Mantris*. Thus the position of *Mantri* is high next to the king. *Amatyas* are not *Mantris* as understood in modern times. *Mantri* is always with the king in all deliberations, *Amatyas* hold various positions in the administration and the *sacivas* are secretaries in royal affairs. This *saciva* term is used in modern times also with the same meaning. It is also interesting to note that the secretaries in *sacivalayas* are IAS officers in present administration who have to go a long way to reach that status and the ministers carry out the works with the help of these secretaries.

But in ancient Indian administration although there were *sacivas Amatyas*, and they also were highly qualified who had to face the above mentioned *upadha* test. If the *Amatyas* are not qualified in the subject of their department how it is possible to look into the affairs. All this is explained in *Rāmāyaṇa* through the dialogue of Rama in a brief manner.

Rama regarding the appointment of *Amatyas* asks Bharata whether he has appointed the best persons in important positions after testing them.

**अमात्यानुपधातीतान् पितृपैतामहान् शुचीन् ।**
**श्रेष्ठान् श्रेष्ठेषु कच्चित्त्वं नियोजयसि कर्मसु ।। अ.** 100-26

The basic qualities of a person aspirant to be Amatya are **– जानपदः, अभिजातः, स्ववग्रहः, कृतशिल्पः, चक्षुष्मान्, प्राज्ञः, धारयिष्णुः, दक्षः, वाग्मी, प्रगल्भः, प्रतिपत्तिमान् उत्साहप्रभावयुक्तः, क्लेशसहः, शुचिः, मैत्रः, दृढभक्तिः, शीलबलारोग्यसत्त्वयुक्तः स्तम्भाचापलहीनः, संप्रियः, वैराणामकर्ता – इति अमात्यसम्पत्** (K.A.1-9-1).

A person who is native, noble born, capable of holding in check, skilled in arts, has vision, intelligent, has good memory is efficient, eloquent, bold, quick grasping, energetic, powerful, bears troubles, upright, friendly, firmly devoted, has good character, strong, healthy, devoid of rigidity and fickleness, amiable and does not create animosities. These are the excellence of a minister.

Those who are lacking quarter of these qualities is second grade and lacking half of the above is considered third grade.

Keeping this in view the appointments are made. Now the *Rāmāyaṇa* suggests administrative principles through the following slokas.

At first the king should be always active. He should fix up a schedule to look into the royal affairs. Rama asks Bharata. I hope you are waking at proper time and are not going under the control of sleep? Are you thinking in early hours to implement the action plan in a perfect manner ?

**कच्चिन्निद्रावशं नैषीः कच्चित्काले प्रबुध्यसे ।**
**कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम् ।। अ.** 100-17.

Acarya Kautilya describes the routine of the king in detail. The day and night each are divided into eight parts each in which the entire state craft is discussed by the king with his team. The above sloka is an example to state that the good governance was there in India by the epic age itself.

The king should not take the decisions on his own. At the same time he is not supposed to involve too many members in the discussion of confidential matters. Hence, Rama asks Bharata. I hope you are not thinking the royal affairs all alone and also in the company of too many. I also hope that your secret discussion is not spread all over the state.

**कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिस्सह ।**
**कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति ।। अ.** 100-18

The law and order is the means of controlling the people. But there is a way to implement it. Even in present times lot of debate is taking place among the judges regarding the punishment system. This, which is called *Dandaniti* in ancient law texts was well taken care of. Almost all the major works on polity have dealt with this topic in detail. According to Acarya Kautilya the punishment should be in accordance with the offence. He says -

**तीक्ष्णदण्डो हि भूतानामुद्धेजनीयो भवति । मृदुदण्डः परिभूयते । यथार्हदण्डः पूज्यते ।** (K.A.1-4-8-10). The king who imposes the punishment very harsh would become a source of terror to the subjects, one who gives punishment very mild would be disregarded. One who punishes according to the offence would be honoured. This **तीक्ष्णदण्ड** effect in the words of Rama is as follows –

कच्चिन्नोग्रेण दण्डेन भृशमुद्वेजितप्रजम् ।
राज्यं तवानुजानन्ति मन्त्रिणः कैकयीसुत ।। अ. 100-27.

It is the duty of Mantris and concerned *amatyas* to look into the proper implementation of justice. Otherwise, enraged with wrong punishment people resort to break the law and become thorns to the kingdom. In any administration the concerned authorities should take care of such matters. Hence, Rama asked Bharata in the above manner. "I hope your mantris are not allowing the subjects getting excited by harsh punishments".

Thus a simple sloka conveys a great message. As both brothers are trained in polity they understand the central idea of each word.

Another sloka is a warning to the rulers. It is the nature of people who are under the influence of lust for riches to mislead the employees work with them. The ruler should have a watch over them. Here comes the role of the spies in the administration. Through spies the king should know the traitors and should punish them. Otherwise, he himself gets perished. This is briefly stated in the following sloka –

उपायकुशलं वैद्यं भृत्यसंदूषणे रतम् ।
शूरमैश्वर्यकामं च यो न हन्ति स हन्यते ।। अ. 100-29

One who is skilled in means of sovereignty, sama etc, scholarly one, expert in spoiling the employees, hero, desirous of riches such person can easily harm the king and the kingdom. If such person is not punished then the king would perish. This is proved by the history where prosperous kingdom perished due to crooked polity of wicked persons.

As mentioned earlier the army is an important constituent which protects from the external enemies. Therefore the king should appoint a commander in chief who has contentment, is a valorous one, wise, courageous, upright, noble born, devoted and efficient. Rama asks –

कच्चिद्धृष्टश्च शूरश्च मतिमान् धृतिमान् शुचिः ।
कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः ।। अ.100-30

The above qualities are mentioned in the list of *Amatya sampat* discussed earlier. The warriors should be honoured with awards and rewards. Their salaries should not be delayed. If this is not followed then it causes frustration and anger in them which is dangerous to the kingdom. This is spoken by Rama in the following slokas.

बलवन्तश्च कच्चित्ते मुख्या युद्धविशारदाः ।
दृष्टापदाना विक्रान्तास्त्वया सत्कृत्यमानिताः ।। अ. 100-31

I hope the mighty warriors experts in the wars, whose great deeds are seen earlier are honoured by you.

कच्चिद् बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम् ।
संप्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे । अ. 100-32.

I hope you are paying the food and salary to the Army on time which is allotted to them.

कालातिक्रमणात्यैव भक्तवेतनयोर्भृताः ।
भर्तुः कुप्यन्ति दुष्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान् स्मृतः ।।अ. 100-33

At the delay of the food (provisions) and payments the employees get irritated and does harm to the king which is very bad for the country.

In this context the *Arthaśāstra* of *Kautilya* is to be referred. Discussing the harmful persons in own region and enemy's region he gives a lot of details. According to him there are many reasons for the people to become terrorists. He categorises them mainly into four 1. **क्रुद्धवर्गः** – Group of enraged 2. **लुब्धवर्गः** – group of greedy, 3. **भीतवर्गः** – group of frightened, 4. **मानिवर्गः** – group of proud. (K.A.1-14-2 to 5).

The detailed description is given by *Acarya Kautilya*. The word '*Kupyanti*' in the above sloka applies to all these groups as they are the people indifferent to the king owing to various reasons. It is very important to identify such persons and please them with various means.

An important department in the administration is 'vigilence or intelligence which plays a role in the security of the entire kingdom. The royal affairs are three fold – 1. **प्रत्यक्ष** directly perceived 2. **परोक्ष** – indirectly known, 3. **अनुमेय** – known through inference. *Paroksha* and *Anumeya* are to be ascertained with the help of spies. *Dasaratha* ruled the kingdom in a perfect manner knowing the matters through the spies. Therefore, the king is known as **चारचक्षु** who has spies as his eyes. Another important department is of external affairs. These two come under the constituents Durga and Mitra respectively.

The qualities of a duta, an ambassador in Rama's words are A native, scholarly one, efficient, has presence of mind, one who speaks as it is (said by the king), and wise. He said to Bharata –

> **कच्चिज्जानपदो विद्वान् दक्षिणः प्रतिभानवान् ।**
> **यथोक्तवादी दूतस्ते कृतो भरत पण्डितः ।। अ.**100-35

I hope you have made a person as your envoy who is native, scholar, capable, smart, speaks as told, and wise. The VVIP's of a country are known as '*Tirthas*' in ancient polity. The definition and description of this term is found in Sanskrit texts. *Rāmāyaṇa, Mahābhārata, Manusmrti, Yajnavalkya smrti* and *Arthaśāstra* use this term and also some other works such as '*Magha*' use this term. These *Tirthas* are eighteen in number. They are called *Tirthas* because through them one can reach the king.

The eighteen *Tirthas* are not mentioned in detail in *Rāmāyaṇa* but the number is mentioned. According to Acarya Kautilya they are 1,**मन्त्री** – The chief minister, 2. **पुरोहित** – Royal priest, 3. **सेनापति** – chief of Army, 4. **युवराज** – The prince, 5. **दौवारिक** – the chief guard of palace, 6. **अन्तर्वंशिक** – The Guard of royal harem, 7. **प्रशास्ता** – The administrator (gen) 8. **समाहर्ता** – The collector (Revenue), 9. **सन्निधाता** – Director of stores, 10. **प्रदेष्टा** – magistrate 11. **नायक** – The commandant, 12. **पौरव्यावहारिक** – The city judge 13. **कार्मान्तिक** – The director of factories, 14. **मन्त्रिपरिषदध्यक्ष** – The chief of the cabinet, 15. **दण्डपाल** – The chief of the Army 16. **दुर्गपाल** – The commandant of the fort, 17. **अन्तपाल** – The commandant of frontier fort (BSF), 18. **आटविक** – The forest chieftain.

These are the officers through whom the king can be approached. Not only that the confidential matters can be known through them, there should be secret agents to observe the character of these high officials.

Even in present times, the majority of the problems in the administrative affairs have the hand of a key person at the root level.

Rama says to Bharata –

कच्चिदष्टादशान्येषु स्वपक्षे दशपञ्च च ।
त्रिभि स्त्रिभिरविज्ञातैर्वेत्सि तीर्थानि चारकैः ।। अ. 100-36

I hope you know the details of the eighteen Tirthas of other countries and fifteen of your own through three types of spies in each (side).

(The *Tirthas* are fifteen in own territory excluding mantri, purohita and yuvaraja). The intelligence network is widely spread throughout the world not only in those days but in modern times also.

Regarding the state administration Rama enquires the well being of each department. The cattle rearing and agriculture, elephant, forests, income and expenditure allocation of funds to gods, Brahmans, guests, soldiers, and allies etc, all were taken care of well according to *Rāmāyaṇa.*

There were no orphanages as every one was protected by the king. There was separate department to take care of the aged, children, learned etc. Diversion or misuse of royal income were not allowed. *Dharma* and *Artha* are complementary to each other. Both are to be followed in a proper manner. It is stated that '*Dharma* should not be disturbed by *Artha*, and *Artha* should not be disturbed by *Dharma* and both these should not be struck by *Kāma*. All should be given due importance. *Rama* says to *Bharata* –

कच्चिदर्थेन वा धर्ममर्थं धर्मेण वा पुनः ।
उभौ वा प्रीतिलोभेन कामेन च न बाधसे ।। अ. 100-62

Before concluding his dialogue Rama sums up entire polity in three slokas which convey the entire administrative system. These slokas are as follows –

दशपञ्चचतुर्वर्गान् सप्तवर्गं च तत्त्वतः ।
अष्टवर्गं त्रिवर्गं च विद्यास्तिस्रश्च राघव ।।

इन्द्रियाणां जयं बुद्ध्वा षाङ्गुण्यं दैवमानुषम् ।

कृत्यं विंशतिवर्गं च तथा प्रकृतिमण्डलम् ।
यात्रादण्डविधानं च द्वियोनी सन्धिविग्रहौ ।
कच्चिदेतान् महाप्राज्ञ यथावदनुमन्यसे ।। अ. 100-68 to 70

These three slokas would be understood only by the experts in polity. Rama addresses *Bharata* as '*Mahaprajna*' O great intellectual who could take out the meaning of each word. Such slokas appear in *Mahābhārata* also.

The above slokas are interpreted in a different way by the authors on polity as per their understating. Acarya Sri Ramachandrudu garu has explained in detail in his telugu commentary *Balanandini* on *Rāmāyaṇa.* According to his commentary the complete meaning of each sloka is as follows – First sloka in the above mentions the group of ten **(दशवर्ग)**, the group of five **(पञ्चवर्ग)**, the group of four **(चतुर्वर्ग)**, group of seven **(सप्तवर्ग)**, group of eight **(अष्टवर्ग)**, group of three **(त्रिवर्ग)**, and three vidyas **(विद्याः तिस्रः)** The details are given below.

1. दशवर्गः - मृगयाऽक्षो दिवास्वापः परीवादः स्त्रियो मदः ।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः ।। मनु. 7-45

Hunting, gambling, Day sleep, gossip, women (amorous sports), intoxication, songs dance, music, roaming without purpose – These ten are the vices due to desire.

2. **पञ्चवर्गः** – Here, the commentary is different to the context. According to the context this may be applicable to the five sense organs which are to be controlled. There are examples in Darsanas how these sense organs result in tragedy if not controlled. For example. **मातङ्ग, कुरङ्ग, पतङ्ग, भृङ्ग** and **मीन** These five perish due to the sense organs which go out of control **रूप, रस, गन्ध, स्पर्श** and **शब्द** are the five which are perceived and received with the sense organs **चक्षु, जिह्वा, घ्राण, त्वक्** and **श्रोत्र**. The **मातङ्ग** etc., getting attracted to one quality are perishing, then what to say about human being who has five sense organs? Hence, senses, control is important.

3. **चतुर्वर्गः** – For *caturvarga sama, Dana, Bheda, Danda*, may be taken also *Dharma, Artha, Kāma, Mokṣa* which are the means of sovereignty and goals of human life respectively.

4. **सप्तवर्गः** – The seven constituents of a sovereign kingdom come under saptavarga.

5. **अष्टवर्गः** – There are eight bad qualities arise in human beings due to anger. They are 1.Tale bearing 2. Violence, 3. Trait, 4. Jealousy 5.Hatredness, 6. Financial misuse, 7. Abusive talk, 8. Physical assault.

**पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थ दूषणम् ।**
**वाग्दण्डयोश्च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गुणोऽष्टकः ।। मनु.** 7

5. **त्रिवर्गः** – Dharma, Artha and kāma three are considered as Trivarga. Similarly the power of the king, the powerful counsel (ministers) and powerful (Enthusiastic) Army these three also considered as Trivarga **(प्रभु मन्त्र उत्साह शक्तयः)**

6. **विद्याः तिस्रः** – Three branches of knowledge 1. Triple of Vedas, 2. Economics and Trade

3. Scince of polity **(त्रयी, वार्ता, दण्डनीति)**

7. **षाड्गुण्यम्** – Sixfold foreign policy – 1. Sandhi (treaty) 2. Vigraha (enemity) 3. Yana – expedition, 4.Asana – (staying quiet) 5. Samsraya (taking shelter under other king), 6. Dvaidhibhava (dual policy).

7. **कृत्यं** – This is a group of seducible people who are mentioned earlier under **कुप्यवर्ग** etc.

8. **विंशतिवर्गः** – *Kamandaka* mentions a group of twenty which provoke the enemity. They are

**राज्यस्त्री स्थान देशानां ज्ञातीनां धनस्य च ।**
**अपहारो मदो मानः पीडा वैषयिकी तथा ।।**
**ज्ञानार्थशक्ति धर्माणां विघातो दैवमेव च ।**
**मित्रार्थ योश्चापमानस्तथा बन्धु विनाशनम् ।।**
**भूतानुग्रहविच्छेदस्तथा मण्डलदूषणम् ।**
**एकार्थाभिनिवेशित्वमिति विग्रह योनयः ।।**

Taking away the kingdom, ladies, place, state, relative, and riches, pride, Arrogance, causing harm to the state, destruction (violation) of knowledge, riches, power, virtues and gods (worship), exploitation of friends and their riches, destruction of relative, obstructing the grace of gods (by violating sacred rituals), spoiling the circle of kings, aspiring for the same thing. These are the causes of enmity. Many of above mentioned are the causes for the war between *Rama* and *Ravana*.

1. **मण्डलः** – This is a circle of kings the vijigisu in the middle. This is applicable to each king and kingdom. The total number of the kings is twelve.

1. Vijigisu - desirous to conquer, 2. Ari - Enemy King, 3. Mitra - Ally, 4.Arimitra - Ally of the enemy, 5.Mitrasatru - Enemy of the ally, 6. Arimitra mitra - The ally of ally of enemy, 7. Parasnigraha – Holder of the heel (coming from the back), 8. Akranda - who comes at a cry,
9. Parsnigrahasara – Helper of Parsnigraha, 10. Akranda – Sara (Helper of Akranda), 11.Madhyastha - The middle king, 12. Udasina – The neuternal King.

When a king wishes to proceed on expedition he and his counsel should assess the troops of all these kings. This is found in *Yuddhakanda* of *Rāmāyaṇa.* The poet *Magha* in his '*Sisupalavadha' Mahakāvya* explains this topic through the words of *uddhava*.

10. **द्वियोनीसन्धिविग्रहौ** – The two main sources of *sadgunya* are *Sandhi* and *vigraha*. Thus a perfect frame of polity is presented in *Rāmāyaṇa*.

The message regarding the administration here is applicable to any kingdom. Whether it is democracy or monarchy the leader should be a noble one. The characteristics of a ruler mentioned in *Rāmāyaṇa* and later *Smrtis*, *Arthaśāstra* agree with each other.

The qualities of *Mantri* and *Amatyas* are discussed. The law and order is given importance. The Asamanja who was the son of Sagara was banished from the kingdom for his criminal behavior. No person was exploited by the officers in the regin of *Dasaratha*. When there was drought for quite a long period he made human efforts and divine worships. Sages were happy in the Tapovanas.

Even in Ravana's kingdom the people were happy and prosperous. Except *Vibhisana* all his relatives and subjects followed his orders, whether it was right or wrong. All this focuses on the peaceful and pleasant life of the people in their kingdoms.

No professional rivalry or jelousy existed in the people. Rama's dialogue with Bharata is a guide to the noble administration. A reference book on polity may be brought out with the matter embedded in it.

**यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।**
**तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचलिष्यति ॥**

**Abbreviations : -**

1. MBH - Mahābhārata.
2. M.S. - Manusmrti
3. Raghu - Raghuvaṃśam
4. Sis - Sisupalavadham
5. K.A. - The Kautiliya Arthaśāstra
6. **अ** - **अयोध्याकाण्डः**
7. **कामन्दक** - **कामन्दकीय नीतिसारः**
8. **बा** - **बालकाण्डः**

**Bibligraphy**

1. Kamandakiya Nitisara - Anandasram series - 136
2. Mahābhārata - Gorakhpur press.
3. Manusmrti - Chowkamba Vidya bhavan.
4. Raghuvaṃśam by Kalidasa - Chowkamba Surabharati prakasam, Varanasi 1983
5. Rāmāyaṇa with telugu commentary by Prof. P. Sri Ramachandrudu, Arshavijnana Trust Hyderabad.
6. Sisupalavadham (Magha) Bharatiya Book corporation, Delhi – 1990.
7. The Kautiliya Arthasastra – R. P.Kangle, Motilal Banarasidas – 1986. ❑

*Prof. Mallepuram G Venkatesh, Former Vice Chancellor, Karnataka Sanskrit University being honored by Shri N Ramanuja, Chairman, B.V.B. and Shri Peeyush Jain, Hon. Treasurer, B.V.B.*

# ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳ ಅಲಂಕಾರ ಸೌಭಾಗ್ಯ

ಶತಾವಧಾನಿ ಡಾ॥ ಆರ್. ಗಣೇಶ್

ಭಗವಾನ್ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಆದಿಕಾವ್ಯ ರಾಮಾಯಣವು ಕಾಳಿದಾಸನ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ "ಕವಿಪ್ರಥಮಪದ್ಧತಿ" – ಕವಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ಮೊದಲ ಹೆದ್ದಾರಿ. ಇದು ಬಹ್ವರ್ಥಗ್ರಾಸಿಯಾದ ಯಥಾರ್ಥವರ್ಣನೆ. ರಾಮಾಯಣವು ರಸಿಕರಂಜನೆಯಾಗಿ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಕವಿ–ಕಲಾವಿದರ ಪಾಲಿಗೂ ನಿರಂಜನಪ್ರೇರಕಸಾಮಾಗ್ರಿಯಾಗಿ ರಾಜಿಸಿದೆ. ಹೀಗೆ ಭಾವಯಿತ್ರೀ ಮತ್ತು ಕಾರಯಿತ್ರೀ ಪ್ರತಿಭೆಗಳೆರಡಕ್ಕೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಒತ್ತಾಸೆ ಮಿಗಿಲಾಗಿದೆ. ಪ್ರಸ್ತುತಲೇಖನವು ಕವಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ನೆರವಾಗಬಲ್ಲ ರಾಮಾಯಣದ ಒಂದು ಮಹತ್ತ್ವದ ಮುಖವನ್ನು ವಿವೇಚಿಸಲಿರುವುದು ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಿಂದಲೇ ಸುವೇದ್ಯ.

ಈ ತಿಳಿಬೆಳಕಿನಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳ ಅನ್ಯಾದೃಶವಾಗ್ವಿಲಾಸವನ್ನು ಪರಿಕಿಸೋಣ. ಅವರು ಇತಿವೃತ್ತ–ಪಾತ್ರನಿರ್ಮಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಗೆ ದಕ್ಷರೋ ಹಾಗೆಯೇ ಅಲಂಕಾರವಿನ್ಯಾಸ–ವಾಚೋಯುಕ್ತಿವಿಲಾಸಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅಸಮಾನರು. ಹೆಚ್ಚಿನ ಜನತೆಗೆ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಥನತಂತ್ರ ಮತ್ತು ರಸಸೃಷ್ಟಿಗಳ ಬಗೆಗೆ ಸ್ಥೂಲವಾದರೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಅರಿವಿರುವಂತೆ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ಸೊಗಸನ್ನು ಕುರಿತು ತಿಳಿವಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಸದ್ಯದ ಪ್ರಯತ್ನ ಉಪಾದೇಯವಾಗಬಹುದು. ಅಲ್ಲದೆ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಜಗತ್ತಿನ ಮೊತ್ತಮೊದಲ ಸುಂದರಕಾವ್ಯವೆನೆಸಿದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಅದರ ಅಂದ–ಚಂದಗಳಿಗೆ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಯೋಗದಾನ ಅದೆಷ್ಟು ಮುಖ್ಯ ಮತ್ತು ಅನಿವಾರ್ಯವೆಂಬುದೂ ಈ ಮೂಲಕ ತಿಳಿಯದಿರದು.

ವಿವಿಧಘನಾಲಂಕಾರಂ ವಿಚಿತ್ರರ್ಣಾವಲೀಮಯಸ್ಫುರಣಮ್ ।
ಶಕ್ರಾಯುಧಮಿವ ವಕ್ರಂ ವಲ್ಮೀಕಭುವಂ ಕವಿಂ ನೌಮಿ॥
(ಆರ್ಯಾಸಪ್ತಶತೀ ೧.೩೦)

ಭಗವಾನ್ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಆದಿಕಾವ್ಯ ರಾಮಾಯಣವು ಕಾಳಿದಾಸನ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ “ಕವಿಪ್ರಥಮಪದ್ಧತಿ” – ಕವಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ಮೊದಲ ಹೆದ್ದಾರಿ. ಇದು ಬಹ್ವರ್ಥಗ್ರಾಸಿಯಾದ ಯಥಾರ್ಥವರ್ಣನೆ. ರಾಮಾಯಣವು ರಸಿಕರಂಜನೆಯಾಗಿ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಕವಿ-ಕಲಾವಿದರ ಪಾಲಿಗೂ ನಿರಂಜನಪ್ರೇರಕಸಾಮಾಗ್ರಿಯಾಗಿ ರಾಜಿಸಿದೆ. ಹೀಗೆ ಭಾವಯಿತ್ರೀ ಮತ್ತು ಕಾರಯಿತ್ರೀ ಪ್ರತಿಭೆಗಳೆರಡಕ್ಕೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಒತ್ತಾಸೆ ಮಿಗಿಲಾಗಿದೆ. ಪ್ರಸ್ತುತಲೇಖನವು ಕವಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ನೆರವಾಗಬಲ್ಲ ರಾಮಾಯಣದ ಒಂದು ಮಹತ್ತ್ವದ ಮುಖವನ್ನು ವಿವೇಚಿಸಲಿರುವುದು ಶೀರ್ಷಿಕೆಯಿಂದಲೇ ಸುವೇದ್ಯ.

ಕವಿಲೋಕವು ಸರ್ವಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಹೆಣಗುತ್ತಿರುತ್ತದೆ. ಕಾವ್ಯಶಿಲ್ಪದ ಇಡಿ ಮತ್ತು ಬಿಡಿಗಳನ್ನು ರಸ ಮತ್ತು ವಕ್ರೋಕ್ತಿಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸುತ್ತವೆಂಬುದು ಪ್ರಾಯಿಕವಾಗಿ ಎಲ್ಲ ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸಕರ ನಿಗಮನ. ಇವೆರಡರಲ್ಲಿ ರಸವು ಕವಿ-ಸಹೃದಯರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಸಲ್ಲುವ ಸತ್ತ್ವ, ಆದರೆ ವಕ್ರೋಕ್ತಿಯು ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಕವಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಬೇಕು. ಅಲ್ಲದೆ ಅವನ ಪಾಲಿಗೆ ಉಳಿಯುವ ಮೂರ್ತವಾದ ಸಾಧನವೆಂದರೆ ಇದೊಂದೇ. ಈ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದಲೇ ವಕ್ರತೆಯನ್ನು ಕವಿದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಪ್ರಧಾನವೆಂದೂ ರಸಧ್ವನಿಯನ್ನು ಸಹೃದಯದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಪ್ರಮುಖವೆಂದೂ ಬಗೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ. ಕಾವ್ಯನಿರ್ಮಾಣದ ಸ್ವಾರಸ್ಯವನ್ನು ಮುಷ್ಟಿಮೇಯವಾಗಿ ತಿಳಿಸುವಲ್ಲಿ ವಕ್ರತಾವ್ಯಾಪಾರದ ಒಂದು ಮುಖ್ಯಾಂಗವೆನಿಸಿದ ಅಲಂಕಾರವು ಪ್ರಧಾನಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನೇ “ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆ”ಯೆಂದು ಕುಂತಕನು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅವನೇ ವಿಭಾಗೀಕರಿಸುವ ವಿವಿಧಸ್ತರದ ವಕ್ರತೆಗಳ ಪೈಕಿ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯು ಮಧ್ಯಮಣಿ. ಏಕೆಂದರೆ ಪದಪೂರ್ವಾರ್ಧವಕ್ರತೆ ಮತ್ತು ಪ್ರತ್ಯಯವಕ್ರತೆಗಳು ವಾಕ್ಯವೊಂದರ ಘಟಕವಾದ ಪದದಲ್ಲಿಯೇ ಅಡಗುವ ಕಾರಣ ಇವೆರಡೂ ಒಂದು ಮಗ್ಗುಲಿಗೆ ಬಂದರೆ ಪ್ರಕರಣವಕ್ರತೆ ಮತ್ತು ಪ್ರಬಂಧವಕ್ರತೆಗಳು ಅನೇಕ ವಾಕ್ಯಗಳ ಸಮುಚ್ಚಯವಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಸೇರುವ ಕಾರಣ ಮತ್ತೊಂದು ಮಗ್ಗುಲಿಗೆ ಬರುತ್ತವೆ. ಹೀಗೆ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ಸ್ಥಾನ ಕೀಲಕಪ್ರಾಯವಾದುದು. ಅಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲ ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ವಿಮರ್ಶೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒದಗಿಬರುವಂಥದ್ದು. ಏಕೆಂದರೆ ಬಿಡಿಯಾದ ಉದಾಹರಣೆಗಳ ಮೂಲಕ ಕಾವ್ಯಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ವಿವೇಚಿಸಲು ಪದ ಮತ್ತು ಪದಾಂಶಗಳು ತುಂಬ ಚಿಕ್ಕವು; ಪ್ರಕರಣ ಮತ್ತು ಪ್ರಬಂಧಗಳು ತುಂಬ ದೊಡ್ಡವು. ಹೀಗಾಗಿ ಇವುಗಳನ್ನು ಯಥಾವತ್ತಾಗಿ ಉದ್ಧರಿಸಿಕೊಂಡು ವಿವೇಚಿಸುವಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ತೊಡಕಾದೀತು. ಅಲ್ಲದೆ ಮುಕ್ತಕಕಾವ್ಯದಂಥ-ಅಥವಾ ಭಾವಗೀತದಂಥ-ಏಕಘನರಚನೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ವಲಯಕ್ಕೆ ಬರುವ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಯೋಗದಾನ ಅಪಾರ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ನಮ್ಮ ಹೆಚ್ಚಿನ ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸಕರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಂಥಗಳಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರಗಳ ವಿವೇಚನೆಗೇ ಬಹಳಷ್ಟು ಭಾಗವನ್ನು ಮೀಸಲಿರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದನ್ನರಿಯದೆ ಅವರನ್ನೆಲ್ಲ ಧ್ವನಿವಿರೋಧಿಗಳೆಂದೋ ಸಮಗ್ರತೆಯ ಕಲ್ಪನೆಯೇ ಇಲ್ಲದವರೆಂದೋ ಹಣೆಪಟ್ಟಿ ಹಚ್ಚಿ ಸಾರಾಸಗಟಾಗಿ ತಿರಸ್ಕರಿಸುವುದು ಅಯುಕ್ತ.

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಅಲಂಕಾರಗಳಹೆಸರನ್ನೆತ್ತಿದೊಡನೆಯೇ ಆಧುನಿಕ ವಿಮರ್ಶಕರು ಹುಬ್ಬೇರಿಸುವುದುಂಟು. ಅವರ ಪ್ರಕಾರ ಇವು ಯಾತಯಾಮ, ಗತರಸ; ಅಲ್ಲದೆ ಇವು ಕ್ಲಿಷ್ಟ ಮತ್ತು ಕೃತಕ. ಆದರೆ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಯಾವುದೇ ದೇಶ-ಕಾಲವಲಯದಲ್ಲಿಯೂ ಉಕ್ತಿಯೊಂದರ ಚೆಲುವು ಅಲಂಕಾರವನ್ನು ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಆಶ್ರಯಿಸಿರುತ್ತದೆಂಬುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿದಿರುತ್ತದೆ. ಕೇವಲ ನಮ್ಮ ಪ್ರಾಚೀನಾಲಂಕಾರಿಕರ ಪರಿಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಅವುಗಳ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದೊಂದೇ ಅಪರಿತವೂ ಕಷ್ಟಕರವೂ ಆದ ಸಂಗತಿಯಾಗಿ ತೋರಬಹುದು. ಇದಾದರೂ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಅಪ್ರಸಿದ್ಧವೂ ದುರೂಹ್ಯವೂ ಆದ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಬಗೆಗೆ ಸಲ್ಲುವ ಮಾತು. ಆದರೆ ಸಹಜವೂ ಚಿರಂತನವೂ ಆದ ಸುಪ್ರಸಿದ್ಧ-ಸ್ಫುಟಾಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಇಂಥ ಆಕ್ಷೇಪ

ಸಲ್ಲದು. ಸಂಜ್ಞೆ-ಪರಿಭಾಷೆಗಳು, ಲಕ್ಷ್ಯ-ಲಕ್ಷಣಸಮನ್ವಯಗಳು ಯಾವುದೇ ಶಾಸ್ತ್ರದ ಅನಿವಾರ್ಯ ಧರ್ಮ; ಇದು ಎಲ್ಲ ಜಿಜ್ಞಾಸುಗಳು ಪ್ರಮಾಣಿಕವಾಗಿ ಅರಿತು ಅನುಸಂಧಾನಿಸಬೇಕಾದ ಸಾತ್ತ್ವಿಕಕರ್ಮ.

ಈ ತಿಳಿಬೆಳಕಿನಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳ ಅನ್ಯಾದೃಶವಾಗ್ವಿಲಾಸವನ್ನು ಪರಿಕಿಸೋಣ. ಅವರು ಇತಿವೃತ್ತ-ಪಾತ್ರನಿರ್ಮಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಗೆ ದಕ್ಷರೋ ಹಾಗೆಯೇ ಅಲಂಕಾರವಿನ್ಯಾಸ-ವಾಚೋಯುಕ್ತಿವಿಲಾಸಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅಸಮಾನರು. ಹೆಚ್ಚಿನ ಜನತೆಗೆ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಥನತಂತ್ರ ಮತ್ತು ರಸಸೃಷ್ಟಿಗಳ ಬಗೆಗೆ ಸ್ಥೂಲವಾದರೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾದ ಅರಿವಿರುವಂತೆ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ಸೊಗಸನ್ನು ಕುರಿತು ತಿಳಿವಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಸದ್ಯದ ಪ್ರಯತ್ನ ಉಪಾದೇಯವಾಗಬಹುದು. ಅಲ್ಲದೆ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಜಗತ್ತಿನ ಮೊತ್ತಮೊದಲ ಸುಂದರಕಾವ್ಯವೆನಿಸಿದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಅದರ ಅಂದ-ಚಂದಗಳಿಗೆ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಯೋಗದಾನ ಅದೆಷ್ಟು ಮುಖ್ಯ ಮತ್ತು ಅನಿವಾರ್ಯವೆಂಬುದೂ ಈ ಮೂಲಕ ತಿಳಿಯದಿರದು.

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಲಕ್ಷಣೈಕವೇತ್ತರು ಅಲಂಕಾರಗಳೂ ಸೇರಿದಂತೆ ಅನೇಕಕಾವ್ಯತತ್ತ್ವಗಳ ವಿಕಾಸದಲ್ಲಿ ಅದೊಂದು ಬಗೆಯ ರೇಖಾತ್ಮಕ ಪ್ರಗತಿಯನ್ನು ಕಾಣಿಸುವುದುಂಟು. ಅವರ ಪ್ರಕಾರ ಭರತಮುನಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ನಾಲ್ಕು ಅಲಂಕಾರಗಳು ದಂಡಿ-ಭಾಮಹ-ವಾಮನ-ರುದ್ರಟ-ಮಮ್ಮಟ-ಭೋಜ-ರುಯ್ಯಕ-ಜಯದೇವ-ಅಪ್ಪಯ್ಯದೀಕ್ಷಿತಾದಿಗಳ ಮೂಲಕ ಹಲವು ಹತ್ತಾಗಿ ನೂರ ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕರ ಗಡಿಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿತೆಂದು ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಇದು ಆಂಶಿಕಸತ್ಯ. ಏಕೆಂದರೆ ನ್ಯೂಟನ್ನನಿಗಿಂತ ಮುನ್ನವೇ ಗುರುತ್ವಾಕರ್ಷಣವಿದ್ದ ಹಾಗೆ ಅಲಂಕಾರಿಕರ ಅಸ್ತಿತ್ವಕ್ಕೂ ಮುನ್ನ ಅಲಂಕಾರಗಳಿದ್ದವು. ಕೇವಲ ಅವುಗಳ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾನ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷಣೀಕರಣ ಮಾತ್ರ ಉತ್ತರೋತ್ತರ ಬೆಳೆದುಬಂದವು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಆದಿಕವಿಗಳಲ್ಲಿ ಹತ್ತಾರು ಸ್ಮರಣೀಯಸುಂದರವಾದ ಸಹಜಾಲಂಕಾರಗಳ ಸಮೃದ್ಧಿಯುಂಟು. ಅನಂತರದ ವಿದ್ವತ್ಕವಿಗಳ ರಚನೆಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನಸಿದ್ಧವೆಂಬಂತೆ ಕಾಣುವ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯಗಳು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳಲ್ಲಿ ನಿಸರ್ಗರಮಣೀಯತೆಯಿಂದ, ಅಯತ್ನಸೌಂದರ್ಯದಿಂದ, ಸಂದರ್ಭಶುದ್ಧಿಯಿಂದ, ರಸಪೋಷಕತೆಯಿಂದ ಸೊಗಯಿಸುತ್ತವೆ. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ನೂರಾರು ಅಲಂಕಾರಗಳ ಪೈಕಿ ಯಾವ ಕೆಲವು ಕವಿಲೋಕಕ್ಕೆಲ್ಲ ಎಟುಕಬಲ್ಲ ಸ್ಫುಟ-ಸಹಜ-ಸರಳ-ಸುಂದರವಾದ ವಾಕ್ಯವಿಲಾಸಗಳೆಂದೂ ಮನವರಿಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಬೆಲೆಬಾಳುವ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ. ಹೀಗೆ ಕವಿಶಿಕ್ಷಾಗ್ರಂಥವಾಗಿಯೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿವೇದವು ಧ್ವನಿಸುವ ಪರಿ ಮನನೀಯ.

ಅಲ್ಲದೆ ಅನಂತರದ ಆಸ್ಥಾನಕವಿಗಳ ವಿದ್ವತ್ತೆಯೆಲ್ಲ ಸುಂದರಿಯ ಮೊಗವೋ ಕಣ್ಣೋ ತಾವರೆಯಂತೆಯೋ ನೈದಿಲೆಯಂತೆಯೋ ತೋರುತ್ತದೆಂಬ ಸರಳವಾದ ಸಾದೃಶ್ಯವನ್ನು ಸಂಕೀರ್ಣವಾಗಿ ಹೇಳುವ ದುಷ್ಕರಾಲಂಕಾರಗಳ ಅವಿಷ್ಕಾರದಲ್ಲಿಯೋ ಅನುಸಂಧಾನದಲ್ಲಿಯೋ ಕಳೆದುಹೋದರೆ, ಆದಿಕವಿಗಳ ಅಲಂಕಾರವಿಲಾಸವು ವ್ಯಾಪಕವಾದ ಲೋಕಾನುಭವದಲ್ಲಿಯೂ ಆಳವಾದ ಜೀವನದರ್ಶನದಲ್ಲಿಯೂ ಮುಳುಗಿ ಹಚ್ಚಹೊಸತಾದ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ಮುತ್ತಗಳನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮೇಲೆತ್ತಿ ತರುತ್ತದೆ. ಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾಗಿ ಹೇಳುವುದಾದರೆ, ಅವರ ಅಲಂಕಾರಪ್ರಜ್ಞೆಯು ಕೆಲವೇ ಉಪಮಾನಗಳ ಸುತ್ತ ಗಿರಿಕಿಹೊಡೆಯದೆ ವ್ಯಾಪಕವಾದ ಉಪಮಾನ ಸಾಮಾಗ್ರಿಯನ್ನು ಸೂರೆಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ಈ ಮೂಲಕ ವಸ್ತುವೈವಿಧ್ಯಕ್ಕೆ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಕುರುಡಾಗಿ, ಹೇಳುವ ರೀತಿಯೊಂದೇ ಅಲಂಕಾರದ ಜೀವಾಳವೆಂಬ ಏಕದೇಶೀಯವಾದ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತಾತತ್ತ್ವಾಭಾಸಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಥವಾದ ಪರಿಷ್ಕಾರವನ್ನೂ, ಪರಿಪೂರ್ಣತೆಯನ್ನೂ ತಂದುಕೊಡುತ್ತದೆ. ಇದು ಪ್ರಾಯಿಕವಾಗಿ ಸಾದೃಶ್ಯಮೂಲಾಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಅಭಿಪ್ರಾಯವಾದರೂ ಎಲ್ಲ ಬಗೆಯ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸಬಲ್ಲ ತತ್ತ್ವ. ಅಲ್ಲದೆ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಮಾತು ಪ್ರವಾಹಧೋರಣೆಯದು. ಅವರು ಲೆಕ್ಕಾಚಾರದ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡುವ ಶಬ್ಧಲೋಭಿಗಳಲ್ಲ. ಇದು ಅವರ ಅಲಂಕಾರವಿನ್ಯಾಸಕ್ಕೂ ಅನ್ವಯಿಸುವ ಸಂಗತಿ. ಅದುದರಿಂದ ಅದೆಷ್ಟೋ ಕಡೆ ಹಿತ-ಮಿತವಾದಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ಹೆಚ್ಚೆನಿಸುವಂಥ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತಾಪೂರವು ತೋರುವುದುಂಟು. ಆದರೆ ಇದೆಂದೂ ಕಥಾನಕತೀರವನ್ನಾಗಲೀ, ಪಾತ್ರಸಮೂಹದ್ವೀಪಗಳನ್ನಾಗಲಿ ಕೊಚ್ಚಿ ಹಾಕುವುದಿಲ್ಲ; ಬದಲಾಗಿ ಅವುಗಳ ಪರಿವೇಷವನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು ಚೆಲುವುಗೊಳಿಸುತ್ತದೆ.

ಅಲಂಕಾರಗಳೇನೋ ಅಸಂಖ್ಯ ಅವುಗಳ ಚೆಲುವೂ ಅಪಾರ. ಆದರೆ ಅವುಗಳ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ -ನಿರ್ದುಷ್ಟಲಕ್ಷಣೀಕರಣವು ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಅಸಾಧ್ಯ ಅಥವಾ ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯ. ಇದು ಲಕ್ಷಣನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿಯೇ ಇರುವ ಸಮಸ್ಯೆಯಾದರೆ, ಇನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಯವೆನಿಸಿದ ಮಹಾಕವಿಗಳ ಪ್ರತಿಭಾಪ್ರಸೂನಗಳನ್ನು ಮುಂದಿರಿಸಿಕೊಂಡು ಅವು ಯಾವ ಅಲಂಕಾರಪ್ರಭೇದಕ್ಕೆ ಸಲ್ಲುತ್ತವೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸುವುದು ಮತ್ತೂ ಕಷ್ಟಕರ ಅಥವಾ ಕಷ್ಟತಮ. ಏಕೆಂದರೆ ಯಾವ ಸಹಜಕವಿಯೂ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ಕಣ್ಣೆದುರು ನಿಲ್ಲಿಸಿಕೊಂಡು ಕವನಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಆತನ ಕಲ್ಪನೆಯು ಸಂಕೀರ್ಣವಾಗಿಯೇ ರೂಪುಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ಕೇವಲ ಅಭ್ಯಾಸಿಗಳ ಅನುಕೂಲಕ್ಕಾಗಿ ಕರಾರುವಾಕ್ಕಾದ ಕೆಲವೊಂದು ಉದಾಹರಣೆಗಳ ಮೂಲಕ ಅಲಂಕಾರಿಕರು ಅಲಂಕಾರಗಳ ರೂಪ-ಸ್ವರೂಪಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವರಲ್ಲದೆ ಎಲ್ಲ ಕವಿಗಳ ಅನನ್ಯಾಭಿರಾಮಕವಿತೆಗಳಿಗೂ ಹದಿನಾರಾಣೆ ಸಲ್ಲುವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನಿರ್ದೇಶನವೀಯಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ.

ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಕುಂತಕನಂಥ ಪ್ರಾಜ್ಞರು ತಮ್ಮ ಕಾಲಕ್ಕೇ ಶತಧಾ ವಿಸ್ತರಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದ ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಕೆಲವೊಂದು ಮೂಲಭೂತವಾದ ಮಾದರಿಗಳಿಗೇ ಸೀಮಿತಗೊಳಿಸಿದರು. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ರುದ್ರಟ, ರುಯ್ಯಕ ಮುಂತಾದ ಇನ್ನಿತರರ ಯೋಗದಾನವೂ ಸ್ಮರಣೀಯ. ಲಕ್ಷಣ ನಿರ್ದೇಶನಗಳೇನಿದ್ದರೂ ಲಕ್ಷ್ಯಗಳ ಸ್ಥೂಲಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಒದಗಿಬರುತ್ತವೆ. ಇದು ಸಂಗೀತದ ರಾಗಲಕ್ಷಣಗಳಿಗೂ ಮನೋಧರ್ಮದಿಂದ ಗಾಯಕವರೇಣ್ಯರು ಹಾಡುವಾಗ ಆಯಾ ರಾಗಗಳು ತಳೆಯುವ ಪ್ರತ್ಯಗ್ರನಾವೀನ್ಯಕ್ಕೂ ಸಂವಾದಿ. ಲಕ್ಷಣಪರಿಷ್ಕಾರದ ಪ್ರಯತ್ನವಷ್ಟೂ ವ್ಯರ್ಥವೆಂದು ಸರ್ವಥಾ ತಾತ್ಪರ್ಯವಲ್ಲ. ಆದರೆ ಲಕ್ಷ್ಯಗಳು ಸರ್ವದಾ ಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ನಿಲ್ಲುತ್ತವೆಂಬುದು ಸತ್ಯ. ಏನಿದ್ದರೂ ಲಕ್ಷಣವು ಕೈತೂಕ-ಬಾಯಿಬಣ್ಣಗಳ ಮಟ್ಟದ್ದು. ಅವುಗಳಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅವ್ಯವಸ್ಥೆಯೇ ತಾಂಡವಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಕಾರಣ ಅವುಗಳಿಗೊಂದು ಅರ್ಥವಿದೆ. ಆದರೆ ಪರಮಾರ್ಥವಿಲ್ಲ. ಇದು ಎಲ್ಲ ಮೃದುಶಾಸ್ತ್ರಗಳ (Soft Sciences) ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ. ಇದನ್ನರಿಯದೆ ಲಕ್ಷಣೈಕಚಕ್ಷುಗಳಾಗಿ ಆಗ್ರಹಿಸುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ. ಅದೆಷ್ಟೋ ಬಾರಿ ಮೂಲಭೂತವಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳೆನಿಸಿದ ಉಪಮೆ, ರೂಪಕ, ಅತಿಶಯ, ವಿರೋಧ ಮುಂತಾದುವುಗಳಲ್ಲಿಯೇ ನಮಗೆ ಸಂದೇಹ ಬರುವುದುಂಟು. ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಂಡ ಕಾಡನ್ನೋ ನಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡ ನಾಡನ್ನೋ ಸಾಕ್ಷಾತ್ತಾಗಿ ನೋಡಿದಾಗ ಸಮನ್ವಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಅದೆಷ್ಟು ಕಷ್ಟವೆಂಬ ಅರಿವಿದ್ದವರಿಗೆ ಅರ್ಥವಾದಿತು. ವಿಶೇಷತಃ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳಂಥ ಸಹಜಾತಿಸಹಜಕವಿಗಳ ಪ್ರತಿಭೈಕವಿಶ್ರಾಂತವಾದ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಗೊಂದಲವು ಹೆಜ್ಜೆ ಹೆಜ್ಜೆಗೂ ತೋರುತ್ತದೆ.

ಆದುದರಿಂದ ಪ್ರಕೃತಪ್ರಯತ್ನದಲ್ಲಿ ಲೇಖಕನ ಆಯಾ ಹೊತ್ತಿನ ಅರಿವು-ಅನುಭವಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ಅಲಂಕಾರನಿಷ್ಕರ್ಷೆಯನ್ನು ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಆತನ ನಾಲ್ಕು ದಶಕಗಳ ಸಾಹಿತ್ಯಶಾಸ್ತ್ರಚಿಂತನೆಯೂ ಹಲವು ಹತ್ತು ಬಾರಿ ನಿರ್ಲಜ್ಜವಾಗಿ ಕೈಚೆಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಅಸಹಾಯಕತೆಯನ್ನು ತೋರಿರುವುದುಂಟು. ಹೀಗಾಗಿ ಹಲವು ಅಲಂಕಾರಗಳು ಬೆರೆತುಕೊಂಡ ಅನೇಕ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಕರವೆಂದೋ ಸಂಸೃಷ್ಟಿಯೆಂದೋ ಒಂದು ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಹೇಳಿ ಕೈತೊಳೆದುಕೊಂಡು ಸಾಗುವ ಜಾಣ್ಮೆ ತೋರದೆ ಅಲ್ಲಿ ಎದ್ದುತೋರುವ ಪ್ರಧಾನಾಲಂಕಾರವನ್ನು ಗುರುತಿಸಿಕೊಂಡು ಮಿಕ್ಕವನ್ನು ಯಥಾಮತಿ ಗೌಣವಾಗಿಯೋ ನಗಣ್ಯವಾಗಿಯೋ ಕಂಡದ್ದಾಗಿದೆ. ಇಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ, ತೀರ ನಿಕಟವಾಗಿರುವ ದೃಷ್ಟಾಂತ-ನಿದರ್ಶನ, ಐತಿಹ್ಯ-ಲೋಕೋಕ್ತಿ, ವಿರೋಧ-ವಿಷಮ, ದೀಪಕ-ಪ್ರತಿವಸ್ತೂಪಮೆ ಮುಂತಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳ ನಿಷ್ಕರ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಆ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಸ್ಫುರಿಸಿದ ಸಮನ್ವಯವನ್ನು ನೆಮ್ಮಲಾಗಿದೆ. ಈ ಬಗೆಯ ಸಮಸ್ಯೆ ಆಲಂಕಾರಿಕಲೋಕದಲ್ಲಿಯೇ ಉಂಟೆಂಬುದು ಒಂದು ಸಮಾಧಾನದ ಮಾತು. ಆದರೆ ಇದೇನೂ ಸಂತೋಷದ ಮಾತಲ್ಲ. ಒಂದೇ ಅಲಂಕಾರವನ್ನು ಹಲವರು ಅಲಂಕಾರಿಕರು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಲಕ್ಷಣೀಕರಿಸಿರುವುದೂ ಹಲವು ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಒಂದೇ ಅಲಂಕಾರವೆಂಬಂತೆ ಭಾವಿಸಿರುವುದೂ ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿ. ಒಂದೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧಲಕ್ಷ್ಯಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಬಗೆಯ ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಿರುವುದೂ ಮತ್ತವು ಪರಸ್ಪರವಿರುದ್ಧವಾಗಿರುವುದೂ ದೃಷ್ಟಚರ. ಹೆಚ್ಚೇನು, ಅದೆಷ್ಟೋ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಇಬ್ಬರು ಆಲಂಕಾರಿಕರು ಐಕಮತ್ಯಕ್ಕೆ ಬರದಿರುವುದೂ ಉಂಟು! ಆದುದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿರುವುದು ಶೃಂಗಗ್ರಾಹಿಯಾದ ಪ್ರಧಾನವ್ಯಪದೇಶ.

ಇರಲಿ; ಮತ್ತೂ ವಿಸ್ತರಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾದ ಸಾಹಿತ್ಯತತ್ತ್ವ ಮೀಮಾಂಸೆಯನ್ನು ಸದ್ಯಕ್ಕೆ ಬದಿಗಿರಿಸಿ ಪ್ರಕೃತೋದ್ದಿಷ್ಟವಾದ ಆನ್ವಯಿಕಮೀಮಾಂಸೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸೋಣ. ಸ್ವನಾಮಧನ್ಯರಾದ ಅಲಂಕಾರಶಾಸ್ತ್ರವೇತ್ತ ಕೆ. ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿಯವರ ಪಥಪ್ರದರ್ಶಕ ಲೇಖನವೊಂದನ್ನಲ್ಲದೆ[1]. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತಾವ ಬರವಣಿಗೆಯನ್ನೂ ಪ್ರಕೃತಲೇಖಕನು ಗಮನಿಸಿರದ ಕಾರಣ, ಈ ಬರಹದಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೂ ಹೆಚ್ಚಿನ ಉದಾಹರಣೆಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಮೂಲಕ ಪ್ರಾಯಿಕವಾಗಿ ಇಡಿಯ ರಾಮಾಯಣದ ಉಕ್ತಿಸೌಂದರ್ಯವನ್ನೆಲ್ಲ ಒಂದೆಡೆ ಪರಿಶೀಲಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಸಾಗಿದೆ. ಕೆಲವೊಂದು ಶ್ಲೋಕಗಳು ಲುಪ್ತವಾಗಿರಬಹುದಾದರೂ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸ್ವಾರಸ್ಯವೆಲ್ಲ ಇಲ್ಲಿ ಅಡಕವಾಗಿದೆಯೆಂಬ ಭರವಸೆಯನ್ನಂತೂ ನೀಡಬಹುದು. ಆದರೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ನುಡಿಬೆಡಗಿನಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾದ ಹಾಗೂ ಅವಿಭಾಜ್ಯವೂ ಆದ ಸೊಗಸುಂಟು: ಅದು ನುಡಿಗಟ್ಟು ಅಥವಾ ವಾಚೋಯುಕ್ತಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದೆ. ಇದನ್ನು ಭಾಷೆಯೊಂದರ ಜೀವಾಳವೆಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು. ವಾಕ್ಯಾಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಈ ಅಂಶವು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ಹೊರತೇ ಆದ ಕಾರಣ ಸದ್ಯದ ಬರವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಇದರ ವಿವೇಚನೆ ಬಹಿರ್ಭೂತವಾಗಿದೆ. ಅದು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿಯೇ ಕೈಗೊಳ್ಳಬೇಕಿರುವ ಇಷ್ಟೇ ಮಹತ್ವದ ವಿದ್ವತ್ಕಾರ್ಯ.

ಮೊದಲಿಗೆ ಮಹರ್ಷಿಗಳ **ಉಪಮಾಪ್ರಪಂಚ**ವನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸೋಣ. ಹೇಳಿ ಕೇಳಿ ಉಪಮೆಯ ಸಕಲಾಲಂಕಾರಗಳಿಗೂ ಮಾತೃಭೂತವಾದ ಕಾರಣ ಇದರಿಂದಲೇ ನಮ್ಮ ವಿವೇಚನೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸುವುದು ಸಮುಚಿತವೂ ಹೌದು[2].

ಆದಿಕವಿಗಳು ಲೋಕವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬಲ್ಲವರಾದ ಕಾರಣ. ಪ್ರಕೃತಿ ಮತ್ತು ಮಾನವಪ್ರಕೃತಿಗಳನ್ನು ಸಂಸ್ಕೃತಿಪುರಸ್ಸರವಾಗಿ ಅರಿತವರಾದ ಕಾರಣ, ಅವರಿಗೆ ಸಾದೃಶ್ಯಗಳೂ ಅವುಗಳ ಅಂತರಂಗದಲ್ಲಿರುವ ಸಾಧರ್ಮ್ಯಗಳೂ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿ ಹೊಳೆಯುತ್ತವೆ. ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ರಸಪೇಶಲವಾದ ಮನಸ್ಸು ಅವರದಾದ ಕಾರಣ, ಭಾವುಕೋಪಮೆಗಳಿಗೇ ಅಗ್ರಪೂಜೆ ಸಂದಿದೆ. ಸಂಸ್ಕೃತದ ಮಟ್ಟಿಗಂತೂ ಅವರೇ ನುಡಿಯೊಡತಿಗೆ ಮೊದಲ ಬೆಡಗನ್ನು ತಂದುಕೊಟ್ಟವರಾದ ಕಾರಣ ಅವರ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಹೋಲಿಕೆಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತೋರುವ ಹೊಸತನ ಅವಿಸ್ಮರಣೀಯ. ಪರವರ್ತಿಗಳಾದ ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳ ಸಕಲಕವಿಗಳೂ ಅವರ ಅಡಿಜಾಡಿನಲ್ಲಿಯೇ ನಡೆದವರು. ಆದುದರಿಂದ ಈ ಕಾಲದ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ನಮಗೆ ಹಲವೊಮ್ಮೆ ಆದಿಕವಿಗಳ ವಾಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ನಾವೀನ್ಯ ತಗ್ಗಿದೆಯೆಂದು ತೋರಬಹುದು. ಆದರೆ ಇದು ಉತ್ತರಕಾಲೀನ ಕವಿಗಳ ಅನುಕರಣೆಗೆ ಒಗ್ಗಿದ ನಮ್ಮ ಮನಸ್ಸಿನ ಅಸಂವೇದನೆಯಲ್ಲದೆ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಪ್ರತಿಭಾಪ್ರಥಮಪ್ರಸೂನಗಳ ಬಣ್ಣವಾಗಲಿ, ಪರಿಮಳವಾಗಲಿ, ಮಕರಂದಬಂಧುರತೆಯಾಗಲಿ ಮಾಸಿದ ಕಾರಣದಿಂದಲ್ಲ. ಹೆಚ್ಚೇನು ಇಲ್ಲಿರುವ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಮೂಲಕ ಸಂವೇದನಶೀಲರಾದ ಸಹೃದಯರು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಮನಸ್ಸನ್ನೂಅವರ ಕಾವ್ಯದ ಸಮಾಜ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯನ್ನೂ ಸೊಗಸಾಗಿ ಪುನರ್ನಿರ್ಮಿಸಬಹುದು. ಈಗ ಕಾಂಡಾನುಸಾರವಾಗಿ ಪರಿಶೀಲಿಸೋಣ:

**ಬಾಲಕಾಂಡ**ದಲ್ಲಿ ಮನಮುಟ್ಟುವ ಉಪಮೆಗಳೇ ವಿರಳ, ಅಷ್ಟೇಕೆ, ಉಳಿದ ಅಲಂಕಾರಗಳೂ ಕಡಮೆ. ಆದರೂ ಪ್ರಾತಿನಿಧಿಕವಾಗಿ ಅತ್ಯುತ್ತಮವೆನ್ನಬಹುದಾದ ಒಂದು ಉದಾಹರಣೆಯನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು:

---

1. Ref: *"Alaṅkāra-s in Vālmīki-Rāmāyaṇa,"* Krishnamoorthy, K. *Indian Literary Theories: A Reappraisal.* New Delhi: Meharchand Lachhmands Publishres, 1985. pp.148-162
2. ಉಪಮೇಯ ಬೀಜವಿರುವುದು ಸಾದೃಶ್ಯವಾದರೋ ರಾಗ-ದ್ವೇಷಮೂಲವಾದ ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಹೊಳೆಯುವುದು ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿಗೆ ಮಾತ್ರ ತಾರ್ಕಿಕನಾದ ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿಗೆ ಹೊಳೆಯುವ ಸಾದೃಶ್ಯವು ಬೆಳೆಸಿದರೆ, ಭಾವುಕನಾದ ಪ್ರತಿಭಾಶಾಲಿಗೆ ಸ್ಫುರಿಸುವ ಸಾದೃಶ್ಯವು ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಬೆಳಗುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಹಜಾಲಂಕಾರಗಳೆಲ್ಲ ಸಾದೃಶ್ಯಮೂಲವಾದವು. ಇನ್ನು ವಿರೋಧಮೂಲಾಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸಾದೃಶ್ಯತತ್ತ್ವವೇ ಪ್ರತೀಪರೂಪದಿಂದ ಬರುತ್ತದೆ. ಇನ್ನುಳಿದ ನ್ಯಾಯಮೂಲ ಮತ್ತು ಶೃಂಖಲಾಮೂಲದ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಬೌದ್ಧಿಕ ಪ್ರಾಬಲ್ಯದ ಫಲಗಳು ವಾಸ್ತವಮೂಲವಾದ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯಂತೂ ಯಾವುದೇ ಬಗೆಯ ಸಾದೃಶ್ಯ-ವೈಸದೃಶ್ಯ-ತರ್ಕಸರಣಿ-ಶೃಂಖಲಾಸರಣಿಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸದ ಕಾರಣ, ದಂಡಿಯು ಹೇಳುವಂತೆ ಅದೊಂದು ಆದ್ಯಾಲಂಕೃತಿಯೆನಿಸಿ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿಯೇ ನಿಲ್ಲುತ್ತದೆ. ವಸ್ತುತಃ ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ "ಗುಣಕಲ್ಪ"ವಾದ ಅಲಂಕಾರ. ಈ ಬಗೆಗೆ ಅನ್ಯತ್ರ ವಿಸ್ತರಿಸಿ

**ಅಕರ್ದಮಮಿದಂ ತೀರ್ಥಂ ಭರದ್ವಾಜ ನಿಶಾಮಯ ।**
**ರಮಣೀಯಂ ಪ್ರಸನ್ನಾಂಬು ಸನ್ಮನುಷ್ಯಮನೋ ಯಥಾ॥ (೧.೨.೫)**

ಇಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳು ತಮ್ಮ ಶಿಷ್ಯ ಭರದ್ವಾಜನಿಗೆ ತಮಸಾನದಿಯ ತಿಳಿನೀರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಿರ್ಮಲವಾದ ನದೀಜಲವು ಸಜ್ಜನರ ಮನಸ್ಸಿನಂತೆ ಕಾಣುತ್ತದೆಂದು ಹೇಳುವ ಕವಿಯ ಪ್ರತಿಭೆ ನಿಜಕ್ಕೂ ಅಸಾಧಾರಣ. ಮೂರ್ತವನ್ನು ಅಮೂರ್ತಕ್ಕೆ ಹೋಲಿಸುವ ಪರಿ ನಿತರಾಂ ಪ್ರಶಂಸನೀಯ. ಏಕೆಂದರೆ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಭಾವುಕೋಪಮೆಯು ಸದೃಶ ವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿಯೇ ಸಾದೃಶ್ಯವನ್ನು ಕಾಣುವಂಥ ಸರಳಸುಂದರಪ್ರಕಾರ. ಇಂಥ ಕುಸುಮಕೋಮಲ ಪ್ರಕಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಮೂರ್ತಾಮೂರ್ತಗಳನ್ನು ಒಟ್ಟಿಗೆ ನಿರುಕಿಸಬಲ್ಲ, ಹಾಗೆ ನೋಡಿಯೂ ಅವುಗಳ ಪ್ರಸನ್ನತೆ ಮತ್ತು ಸಹಜತೆಗಳನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಡಬಲ್ಲ ಕಾಣ್ಕೆ ಅಸಮಾನ. ರಾಮಾಯಾಣದ ಶಕ್ತಿಯು ಇಂಥ ದರ್ಶನದಲ್ಲಿಯೇ ನೆಲೆಯಾಗಿದೆಯೆಂದರೆ ಅತಿಶಯವಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ಮೇಲ್ನೋಟಕ್ಕೆ ಮುಗ್ಧಮನೋಹರವಾಗಿ ತೋರುವ ಈ ಕಾವ್ಯದ ಆಳದಲ್ಲಿರುವುದು ಎಂಥ ವಿಕಟವಾಸ್ತವಗಳನ್ನೂ ಶೀತಲೋಜಸ್ವಿತೆಯಿಂದ ಗ್ರಹಿಸಬಲ್ಲ ಧೀರತೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಈ ಶ್ಲೋಕದ ನಾಲ್ಕನೆಯ ಪಾದದಲ್ಲಿ ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವ ಉಪಮೇಯ ವಕ್ರೋಕ್ತಿಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾದರೆ ಮೂರನೆಯ ಪಾದವಾದ "ರಮಣೀಯಂ ಪ್ರಸನ್ನಾಂಬು" ಎಂಬುದು ಸ್ವಯಂಪೂರ್ಣವಾದ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯ ಸಂಕೇತವೂ ಹೌದು. ಹೀಗೆ ಬಲುಚಿಕ್ಕದಾದ ಶ್ಲೋಕಾರ್ಧದ ಕುಕ್ಷಿಯಲ್ಲಿಯೂ ಅಲಂಕಾರ ಪ್ರಪಂಚದ ಎರಡು ಮುಖಗಳಾದ ವಕ್ರೋಕ್ತಿ-ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಗಳನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಅಡಕಮಾಡಿರುವುದು ಅವರ ಕವಿತ್ವಶಕ್ತಿಗೇ ಎತ್ತಿದ ನೀರಾಜನ.

**ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡ**ವು ರಾಮಾಯಾಣದ ಹೃದ್ಭಾಗವೆಂದೇ ಡಿ.ವಿ.ಜಿ.ಯವರ ನಿಶ್ಚಯ ರಸಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ ಪರ್ಯವಸಿಸುವ ಮಾತುಗಳೇ ಇಲ್ಲಿ ಮೆರೆಯುವ ಕಾರಣ. ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯದ ವಲಯಕ್ಕೆ ಬರುವ ಸ್ಫುಟಾಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವುದು ಸಹಜವೇ ಆಗಿದೆ. ಆದರೂ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಹಜಾಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ದಾರಿದ್ರ್ಯವಿಲ್ಲ. ಅಂಥ ಕೆಲವೊಂದು ಉಪಮೆಗಳನ್ನೀಗ ನೋಡೋಣ:

ಮಂಥರೆಯ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿ ಬುದ್ಧಿಗೆಟ್ಟ ಕೈಕೇಯಿಯು ಹಾದಿತಪ್ಪಿದ ಹೆಣ್ಣು ಕುದುರೆಯಂತಾದಳೆಂದು ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಒಕ್ಕಣೆ:

---

ಚರ್ಚಿಸಿರುವ ಕಾರಣ ಪುನಃಪರಾಮರ್ಶೆ ಅನವಶ್ಯ, ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಸಾದೃಶ್ಯಮೂಲಾಲಂಕಾರಗಳೇ ಕಾವ್ಯಾಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನ. ಭೇದವೇ ಮೂಲಧರ್ಮವಾಗಿರುವ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಅಭೇದವು ಸಾಧ್ಯತತ್ತ್ವವಲ್ಲದೆ ಸಿದ್ಧತತ್ತ್ವವಲ್ಲ. ಇಲ್ಲಿ ಪರಮಾರ್ಥರೂಪದ ಅಭೇದಜ್ಞಾನವನ್ನು ವೇದಾಂತವಿದ್ಯೆಯು ಶಾಶ್ವತವಾಗಿ ತಂದೀಯಲಾರದು. ಅದರದೇನಿದ್ದರೂ "ಸದ್ಯಃಪರನಿರ್ವೃತಿ" ಇಹದಲ್ಲಿ ಬೇರುಬಿಟ್ಟು ಪರದತ್ತ ಕೊಂಬೆಗಳನ್ನು ಚಾಚಬಲ್ಲ ಶಕ್ತಿ. ಆದರೆ ಇದೇನೂ ಅಲ್ಪ-ಸ್ವಲ್ಪದ್ದಲ್ಲ. ಸ್ವಾರ್ಥವು ತತ್ಕಾಲಿಕವಾಗಿಯಾದರೂ ಕರಗದೆ, ಅಹಂಕಾರವು ಆ ಹೊತ್ತಿಗಾದರೂ ಅಳಿಯದೆ ಜಗತ್ತಿನ ಅಸಂಖ್ಯಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ನಡುವೆ ಸಾಧರ್ಮ್ಯದ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಉದಿಸದು. ಮೇಲೆ ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವ ಚೆಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾದ ಮಣಿಗಳಂಥ ಲೋಕಸತ್ತೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಮನ್ವಯಸೂತ್ರದ ಅದ್ವೈತ ಬೋಧೆ ರಸಸಿದ್ಧನಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಸಾಧ್ಯ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಭಟ್ಟತೌತನು **"ವಿಚಿತ್ರಭಾವಧರ್ಮಾಂಶತತ್ತ್ವಪ್ರಖ್ಯಾ"** ಎಂಬುದಾಗಿ ಈ ತೆರನಾದ ಸಮನ್ವಯದರ್ಶನವನ್ನು ಒಕ್ಕಣಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಹೀಗೆ ಸಾದೃಶ್ಯವು ಕಲಾಪ್ರಪಂಚದ ಬುನಾದಿ. ಇದರ ಪ್ರಧಾನಮುಖವಾದ ಉಪಮೆಯ ಕವಲುಗಳಾಗಿಯೇ ರೂಪಕ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ, ಅನನ್ವಯ, ಸಸಂದೇಹ, ಪ್ರತೀಪ, ಸ್ಮರಣ, ಭ್ರಾಂತಿಮತ್, ಉಲ್ಲೇಖ, ದೃಷ್ಟಾಂತ, ನಿದರ್ಶನಾ, ವ್ಯತಿರೇಕ, ವಿರೋಧ, ವಿಷಮಾ, ಸಹೋಕ್ತಿ, ಸಮಾಸೋಕ್ತಿ, ತುಲ್ಯಯೋಗಿತೆ, ಪ್ರತಿವಸ್ತೂಪಮೆ, ಉಪಮೇಯೋಪಮೆ, ಅಪ್ರಸ್ತುತಪ್ರಶಂಸಾ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಹೊಮ್ಮುತ್ತವೆ. ಇಲ್ಲೆಲ್ಲ ಶ್ಲೇಷವು ಸೊಗಸನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಲು ಬರಬಹುದು. ವಸ್ತುತಃ ಶ್ಲೇಷವೂ ಕೂಡ ಅದೊಂದು ಬಗೆಯ ಶಾಬ್ದಿಕ-ಆರ್ಥಿಕಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದಲೇ ಹೊಮ್ಮುವ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯ

ಆಲಂಕಾರಿಕರು ಉಪಮೇಯವನ್ನು ಅನೇಕಪ್ರಕಾರಗಳಾಗಿ ವಿಭಾಗಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಈ ವಿಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಅಂಥ ಪರಮಾರ್ಥವಿಲ್ಲ. ನಾವು ಬೇರೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ವಿಭಾಗಿಸಿಕೊಂಡಲ್ಲಿ ಒಳಿತಾದೀತು. ಆ ಪ್ರಕಾರ "ಲೋಕೋಪಮೆ" ಮತ್ತು "ಕಾವ್ಯೋಪಮೆ"ಗಳೆಂಬ ಪ್ರಧಾನವಾದ ವಿಭಾಗಗಳೆರಡು. ಮೊದಲನೆಯದು ತಾರ್ಕಿಕರ ಉಪಮಾನಪ್ರಮಾಣಕ್ಕೆ ಸಮೀಪವರ್ತಿ. ಇದರಲ್ಲಿ ವಿಚಾರವೊಂದನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುವ ಹವಣಲ್ಲದೆ ಸೌಂದರ್ಯದೃಷ್ಟಿಯಿಲ್ಲ; ಅಥವಾ ಇದ್ದರೂ ಅದು ತೀರ ಗೌಣ. ಎರಡನೆಯದಾದ ಕಾವ್ಯೋಪಮೆಯೇ ನಮಗೆ ಪ್ರಸ್ತುತ. ಇಲ್ಲಿ ವಿಚಾರವಲ್ಲದೆ ಅನುಭೂತಿಗೇ ಅಗ್ರತಾಂಬೂಲ. ಇದನ್ನು ಮತ್ತೆ "ಬೌದ್ಧಿಕೋಪಮೆ" ಹಾಗೂ "ಭಾವುಕೋಪಮೆ" ಎಂದು ಎರಡಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಬಹುದು. ಹೆಸರುಗಳೇ ತಿಳಿಸುವಂತೆ ಇವು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಬುದ್ಧಿಚಮತ್ಕಾರಪ್ರಧಾನ ಮತ್ತು ಭಾವಸಂವೇದನಪ್ರಧಾನ. ಬೌದ್ಧಿಕೋಪಮೆಯು ಶುಷ್ಕತಾರ್ಕಿಕಸ್ತರದ್ದಲ್ಲವೆಂಬುದಂತೂ ಸ್ಪಷ್ಟ, ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನ-ಉಪಮೇಯಗಳ ನಡುವಿರುವ ವಿಚಿತ್ರರೂಪದ ಸಾಧರ್ಮ್ಯವೇ ಚಮತ್ಕಾರಸಾಧಕ. ಇದು ನಿರಪವಾದವೆಂಬಂತೆ ಹೃದಯಕ್ಕಿಂತ ಬುದ್ಧಿಗೇ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಹೊಳೆಯುವ ಕಾರಣ ಬೌದ್ಧಿಕೋಪಮೆಯೆಂಬ ಹೆಸರನ್ನು

**ಕಿಶೋರೀವೋತ್ಪಥಂ ಗತಾ** । (೨.೯.೩೭)

ಈ ಮಾತಿನ ಸ್ವಾರಸ್ಯ ಸಹೃದಯರಿಗೆ ಸುಲಭವೇದ್ಯ. ವಿಶೇಷತಃ, ಅಂಕೆತಪ್ಪಿದ ಕುದುರೆಯ ಆಟಾಟೋಪವನ್ನು ಬಲ್ಲವರೇ ಬಲ್ಲರು. ಇನ್ನು ತನಗೆ ದುರ್ಬೋಧೆ ಮಾಡಿದ ವಿಕೃತಾಕಾರದ ಮಂಥರೆಯನ್ನು ಸ್ವಾರ್ಥದಿಂದ ಕುರುಡಾದ ಕೈಕೇಯಿ ಕಂಡ ಬಗೆಯಂತೂ ಅನ್ಯಾದೃಶ:

**ತ್ವಂ ಪದ್ಮಮಿವ ವಾತೇನ ಸಂನತಾ ಪ್ರಿಯದರ್ಶನಾ** । (೨.೯.೪೧)

ಮಂಥರೆಯ ಗೂನುಬೆನ್ನು ಕೈಕೇಯಿಯ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಗಾಳಿಗೆ ಬಾಗಿದ ಕಮಲದಂತೆ ಕಂಡಿತಂತೆ! ಅರ್ಥ-ಕಾಮಕೃಪಣವಾದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಯಾವುದೂ ಹೇಗೂ ಕಾಣುವುದೆಂಬುದಕ್ಕೆ ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಒಳ್ಳೆಯ ನಿದರ್ಶನ ಬೇಕಿಲ್ಲ. ಆದಿಕವಿಗಳ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಹೀಗೆ ಬಹ್ವರ್ಥಗ್ರಾಸಿ. ದಿಟವೇ, ಇಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನೋಪಮೇಯಗಳ ನಡುವೆ ಲಿಂಗೈಕ್ಯವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಉದ್ವೇಜಕವಾಗಿಲ್ಲ.

ಕೈಕೇಯಿಯ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿ ರಾಮನನ್ನು ಕಾಡಿಗಟ್ಟಿದರೆ ತನ್ನನ್ನು ಲೋಕವೆಲ್ಲ ಹಳಿಯುತ್ತದೆಂದು ದಶರಥನು ಹಲುಬುವಾಗ ಆತ ತನ್ನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯು ಮದ್ಯಪಾನವನ್ನು ಮಾಡಿ ಬೀದಿಬೀದಿಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಶಿಷ್ಟರ ದೂಷಣೆಗೆ ತುತ್ತಾದ ಬ್ರಾಹ್ಮಣನ ಪಾಡಾಗುತ್ತದೆಂದು ಹೇಳುವುದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಮಾರ್ಮಿಕೋಪಮೆ:

**ಧಿಕ್ಕರಿಷ್ಯಂತಿ ರಥ್ಯಾಸು ಸುರಾಪಂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣಂ ಯಥಾ** । (೨.೧೨.೭೮)

ಸೀತೆಯನ್ನೊಡಗೂಡಿದ ರಾಮನು ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದೊಡನೆ ಸೇರಿಕೊಂಡ ಸುಧಾಂಶುವಂತಿದ್ದನೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಕೊಡುವ ಚಿತ್ರಣವು ಮೇಲ್ನೋಟಕ್ಕೆ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕವೆಂಬಂತೆ ಕಂಡರೂ ವಸಂತರ್ತುವಿನಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಶೋಭಿಸುವ ಸಂಪೂರ್ಣಮಂಡಲನಾದ ಚಂದ್ರನ ಸ್ವರೂಪವನ್ನೂ ಆ ಋತುವಿನ ಲೋಕಮೋಹಕತೆಯನ್ನೂ ಚಿತ್ರಾಪೂರ್ಣಿಮೆಯಂದು ಶಶಿಬಿಂಬದ ಹತ್ತಿರ ನಮ್ರಸೌಮ್ಯತೆಯಿಂದ ನಿಲ್ಲುವ ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದ ಸ್ನಿಗ್ಧಕಾಂತಿಯನ್ನು ಧ್ವನಿಸುವ ಬಗೆಯನ್ನು ಭಾವಿಸಿದಾಗ ಇಲ್ಲಿಯ ಕಾವ್ಯಕೌಶಲ ಮನಮುಟ್ಟದಿರದು:

**ಉಪೇತಂ ಸೀತಯಾ ಭೂಯಶ್ಚಿತ್ರಯಾ ಶಶಿನಂ ಯಥಾ** । (೨.೧೬.೧೦)

ಕಾಳಿದಾಸನು ರಘುವಂಶದ ಮೊದಲ ಸರ್ಗದಲ್ಲಿ ದಿಲೀಪ-ಸುದಕ್ಷಿಣೆಯರನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವಾಗ ಇದೇ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು

---

ಹೊಂದಿದೆ. ಈ ಪ್ರಕಾರವು ಸಹಜವಾಗಿಯೇ ಕವಿಗಳ ಅಹಂಕಾರವನ್ನು ಕೆಣಕುವ ಕಾರಣ ಇಲ್ಲಿ ಗತಾನುಗತಿಕತೆಯ ಅಪಾಯ ಹೆಚ್ಚಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಸ್ವಂತಿಕೆಯ ಹೆಮ್ಮೆಯಲ್ಲಿ ರಸಪಾರಮ್ಯವನ್ನೇ ಮರೆಯುವ ಮತ್ತೂ ಮಿಗಿಲಾದ ಅಪಾಯ ಸಾಧ್ಯವಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಎಲ್ಲ "ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯ" ರೂಪದ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳೂ "ಅರ್ಥಚಿತ್ರ"ಗಳ ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಇಳಿಯುವ ಅನರ್ಥವೂ ಎದುರಾಗಬಹುದು. ಭಾವುಕೋಪಮೆಯಾದರೋ ಉಪಮಾನ-ಉಪಮೇಯಗಳ ನಡುವಿರುವ ಸ್ಫುಟ-ಸಮೃದ್ಧಸಾಧರ್ಮ್ಯದ ಮೇಲೆ ರೂಪುಗೊಂಡಿದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಇಲ್ಲಿಯ ಸಾಧರ್ಮ್ಯದ ಸೊಗಸು ಎಷ್ಟೇ ಮಿಗಿಲಾಗಿರಲಿ, ಅದರ ಸ್ಫುರಣೆಗೆ ಬುದ್ಧಿಕಾರ್ಯ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಅನವಶ್ಯ ಆದುದರಿಂದಲೇ ಇಲ್ಲಿ ಭಾವಕ್ಕೆ ಮಿಗಿಲಾದ ಅವಕಾಶವಿದೆ. ಇಂಥ ಉಪಮೆಯನ್ನು ಬಳಸಿ ಗೆಲ್ಲುವುದು ಬಹುಕಷ್ಟ. ಕೇವಲ ರಸಸಿದ್ಧರಾದ ಮಹಾಕವಿಗಳಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಇದು ಸಾಧ್ಯ. ಹಾಗಲ್ಲವಾದರೆ "ಸುಲಭಸೌಂದರ್ಯ"ದ ಜೌಗಿನಲ್ಲಿ ಜಾರಿಹೋಗುವ ಸಂಭವ ಅಪಾರ (ಪೂರ್ವಸೂರಿಗಳು ರಸಸಿದ್ಧರೇ ಆಗಿದ್ದರೂ ಅವರು ಸ್ವಯಂ ಕಂಡುಕೊಂಡ ಕಾವ್ಯಪದ್ಧತಿಯನ್ನು ಕುರುಡಾಗಿ ಅನುಕರಿಸುವ ಮೈಗಳ್ಳತನಕ್ಕೋ ಪ್ರತಿಭಾದಾರಿದ್ರಕ್ಕೋ ಸಂಪ್ರದಾಯಶರಣತೆಗೋ ತುತ್ತಾದ ಮುಂದಿನ ಕವಿಗಳ ಕಾವ್ಯನಿರ್ಮಾಣಶೀಲತೆಯನ್ನು ಈ ಪದವು ಧ್ವನಿಸುತ್ತಿದೆ. ಇದರ ಮೂಲ ಡಿ.ಎಚ್.ಎಚ್. ಇಂಗಾಲ್ಸ್ ಅವರು ವಿದ್ಯಾಕರನ ಸುಭಾಷಿತ ರತ್ನಕೋಶಕ್ಕೆ ಬರೆದ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಲ್ಲಿದೆ. ಇದನ್ನವರು "Easy Beauty" ಎಂದು ಮಾರ್ಮಿಕವಾಗಿ ಹರಳುಗಟ್ಟಿಸಿದ್ದಾರೆ). ಆದುದರಿಂದ ಸುಕವಿಯಾದವನು ಬುದ್ಧಿ-ಭಾವಗಳ ಸಂತುಲನವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಸ್ವಂತಿಕೆಯನ್ನು ಸಂಪ್ರದಾಯವನ್ನೂ ಎಚ್ಚರದಿಂದ ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಬೌದ್ಧಿಕೋಪಮೆಯಿಂದ ಅನನ್ಯತೆಯೂ ಭಾವುಕೋಪಮೆಯಿಂದ "ಸಾಧಾರಣೀಕರಣ"ವೂ ಹದವಾಗಿ ಸಿದ್ಧಿಸುತ್ತವೆ. ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ **ಅಹಂ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ಮಿ** ಮತ್ತು **ಸರ್ವಂ ಖಲ್ವಿದಂ ಬ್ರಹ್ಮ**ಗಳ ಸಮನ್ವಯದಂತೆ. ಇವೆರಡೂ ವಿಭಾಗಗಳು ಪುನಃ "ಪೂರ್ಣೋಪಮೆ" ಮತ್ತು "ಲುಪ್ತೋಪಮೆ"ಗಳೆಂದು ಉಪಪ್ರಭೇದಗಳಾಗಿ ಒಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತವೆ. ಪೂರ್ಣೋಪಮೆಯಲ್ಲಿ ಎದ್ದುತೋರುವ ವಾಚ್ಯತಾಂಶವು ಲುಪ್ತೋಪಮೆಯಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ತಗ್ಗುವ ಕಾರಣ ಇಲ್ಲಿ ವ್ಯಂಜನಾವ್ಯಾಪಾರಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಹೆಚ್ಚು ವಿಶೇಷತಃ "ಧರ್ಮಲುಪ್ತೋಪಮೆ"ಯಾದಲ್ಲಿ ಸ್ವಾರಸ್ಯಕ್ಕೆ ಮಿಗಿಲಾದ ಸ್ಥಾನ. ಅದೇ "ಉಪಮಾನಲುಪ್ತ" ವೋ "ಉಪಮೇಯಲುಪ್ತ"ವೋ ಆದರೆ ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ಸಂದಿಗ್ಧತೆಯೂ ಉದಿಸೀತು. ಇನ್ನು "ಉಪಮಾವಾಚಕಲುಪ್ತಿ"ಯು ಒಂದಿಷ್ಟು ನಷ್ಟವನ್ನೇ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಏಕೆಂದರೆ ದಂಡಿಯಂಥ ಆಲಂಕಾರಿಕರು ಉಪಮಾವಾಚಕಗಳನ್ನೇ ಅದ್ಭುತವಾಗಿ ಬೆಳೆಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಮುಂದಿನ ಕವಿಗಳ ಯೋಗದಾನವೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ದಕ್ಕಿದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಬಗೆಬಗೆಯ ಉಪಮಾವಾಚಕಗಳ ಮೂಲಕ ಬಂದೊದಗುವ "ಲಕ್ಷಣಾಮೂಲಧ್ವನಿ"ಗಳೂ "ಉಪಚಾರವಕ್ರತೆ"ಗಳೂ ಉಪಮಾವಾಚಕಲುಪ್ತ ಪ್ರಕಾರಕ್ಕೆ ದಕ್ಕದೆ ಹೋಗುತ್ತವೆ. ಆದುದರಿಂದ ಧರ್ಮಲುಪ್ತೋಪಮೆಯೇ ಪ್ರಶಸ್ತತಮ.

ಸಿಂಗರಿಸಿ ಬಳಸಿರುವುದನ್ನು ನೆನೆದಾಗ ಆದಿಕವಿಯ ಚಾತುರಿಯನ್ನು ವರಕವಿಯಷ್ಟೇ ಅರಿಯಬಲ್ಲನೆಂಬ ಸ್ಫುರಣೆ ನಮಗಾಗದಿರದು.

ಕೈಕೇಯಿಯ ತಂತ್ರಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿದ ತನ್ನ ತಂದೆಯನ್ನು ರಾಮನು ಕಂಡಾಗ ಆತನು ಸುಳ್ಳಾಡಿದ ಋಷಿಯಂತಿದ್ದನೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಹೇಳುವ ಮಾತಂತೂ ಹೃದಯವೇಧಕ. ದಶರಥನು ಎಂಥ ದೌರ್ಬಲ್ಯಗಳ ನೆಲೆಯಾಗಿದ್ದರೂ ಅನೃತದೋಷ ಮಾತ್ರ ಆತನದಾಗಿರಲಿಲ್ಲ. ಈ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಕೃತೋಪಮೆ ಅನನ್ಯ: **ಉಕ್ತಾನೃತಮೃಷಿಂ ಯಥಾ** (೨.೧೮.೬).

ತನ್ನನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ರಾಮನು ಕರೆದೊಯ್ಯುತ್ತಿಲ್ಲವೆಂಬ ಪ್ರೀತಿಯ ಕನಲಿಕೆಯಿಂದ ಸೀತೆಯು ಪತಿಯನ್ನು ಆಕ್ಷೇಪಿಸುವಾಗ ಆತನನ್ನು ನಟನೆಂದು ದೂಷಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವೃತ್ತಿಪರನಟವರ್ಗವು ತನ್ನ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ತವರಿನಲ್ಲಿಯೋ ಮತ್ತಾವ ಬಂಧುಗಳಲ್ಲಿಯೋ ಬಿಟ್ಟು ಊರೂರು ಸುತ್ತಿ ಹೊಟ್ಟೆಹೊರೆಯುತ್ತಿತ್ತಂತೆ. ಇದೀಗ ರಾಮನು ಒಂಟಿಯಾಗಿ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದರೆ ಅವನಿಗೆ ಈ ಪರಿಯ ಕಲಂಕವಂಟೀತೆಂದು ಸೀತೆಯ ಇಂಗಿತ:

**ಶೈಲೂಷ ಇವ ಮಾಂ ರಾಮ ಪರೇಭ್ಯೋ ದಾತುಮರ್ಹಸಿ ।** (೨.೩೦.೮)

ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ನಟರಿಗೆ "ಕುಶೀಲವ"ರೆಂದೂ ಹೆಸರುಂಟು. ಅವರ ಶೀಲವೂ ಶಿಥಿಲವೆಂದು ಲೋಕಪ್ರಥೆ. ಹೀಗಾಗಿ ರಾಮನಂಥ ಮರ್ಯಾದಾಪುರುಷೋತ್ತಮನಿಗೆ ಶೈಲೂಷರ ಸಾದೃಶ್ಯ ಸಂದಲ್ಲಿ ಅದು ಅವನಿಗೆ ಸಲ್ಲದ ಆರೋಪ. ಆದುದರಿಂದ ಇಂತಾದರೂ ಮಾನಕ್ಕಂಜಿದ ಪತಿಯು ತನ್ನನ್ನು ಜೊತೆಗೆ ಕರೆದೊಯ್ದಾನೆಂದು ಸೀತೆಯ ಹವಣು. ಹೀಗೆ ಆಕೆಯ ಆಕ್ಷೇಪದ ಹಿಂದಿರುವುದು ಅನುರಾಗವು ಹೂಡಿದ ತಂತ್ರವಲ್ಲದೆ ಕುತ್ಸಿತವಾದ ನಿಂದೆಯಲ್ಲ.

ಕೈಕೇಯಿಯ ಅರ್ಥಲುಬ್ಧಸ್ವಭಾವವನ್ನೂ ಆಕೆಯ ಒರಟುತನವನ್ನೂ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ನಿರೂಪಿಸುವ ಪರಿ ಮಾರ್ಮಿಕ. ರಾಮನೊಡನೆಯೇ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಸಿರಿಯೆಲ್ಲ ಕಾಡಿಗೆ ಸಾಗಲೆಂದು ಹೇಳುವ ದಶರಥನಿಗೆ ಆಕೆ ಪ್ರತಿರೋಧ ತೋರುವ ಬಗೆ ಹೀಗಿದೆ:

**ರಾಜ್ಯಂ ಗತಧನಂ ಸಾಧೋ ಪೀತಮಂಡಾಂ ಸುರಾಮಿವ ।**
**ನಿರಾಸ್ವಾದ್ಯತಮಂ ಶೂನ್ಯಂ ಭರತೋ ನಾಭಿಪತ್ಸ್ಯತೇ ॥** (೨.೩೬.೧೨)

ಸಿರಿಯಿಲ್ಲದ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದಿಂದ ಭರತನಿಗೆ ಯಾವ ಸುಖ ತಾನೆ ಸಿಕ್ಕೀತು? ಅದೇನಿದ್ದರೂ ಸ್ವಾರಸ್ಯವಿಲ್ಲದ, ಮದವೇರದ ಹೆಂಡದ ಬುರುಡೆಯಂತೆಂದು ಆಕ್ಷೇಪಿಸುವ ಕೈಕೇಯಿಯ ಸಂಸ್ಕಾರ ಈ ಒಂದು ಉಪಮೆಯಿಂದಲೇ ಬಟ್ಟಬಯಲಾಗಿದೆ.

ಇಂಥ ಹಠಮಾರಿ ಹೆಣ್ಣನ್ನು ಕುರಿತು ಕೌಸಲ್ಯೆಯು ಹೇಳುವ ಮಾತೂ ಗಮನಾರ್ಹ. ಆ ಪ್ರಕಾರ ರಾಮನನ್ನು ಕಾಡಿಗಟ್ಟಿದ ಕೈಕೇಯಿ ಪೊರೆಕಳಚಿದ ಹಾವಿನಂತೆ ಮತ್ತಷ್ಟು ಮಿಂಚುತ್ತಾಳೆ, ಇನ್ನಷ್ಟು ಕ್ರೂರಿಯಾಗುತ್ತಾಳೆ:

**ವಿಚರಿಷ್ಯತಿ ಕೈಕೇಯೀ ನಿರ್ಮುಕ್ತೇವ ಹಿ ಪನ್ನಗೀ ।** (೨.೪೩.೨)

ಆದಿಕವಿಗಳು ಶಾಸ್ತ್ರಪ್ರಸಿದ್ಧಸಂಗತಿಗಳನ್ನೂ ಉಪಮಾನಕ್ಕೆ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವುದರಲ್ಲಿ ಹಿಂದೆಗೆಯುವುದಿಲ್ಲ. ಅಂಥದ್ದೊಂದು ನಿದರ್ಶನವಿಲ್ಲಿದೆ.

**ಪಾತಯಿತ್ವಾ ತು ಕೈಕೇಯ್ಯಾ ರಾಮಂ ಸ್ಥಾನಾದ್ಯಥೇಷ್ಟತಃ ।**
**ಪ್ರವಿದ್ಧೋ ರಕ್ಷಸಾಂ ಭಾಗಃ ಪರ್ವಣೀವಾಹಿತಾಗ್ನಿನಾ ॥** (೨.೪೩.೫)

ಕೌಸಲ್ಯೆಯ ಕೈಕೇಯಿಯ ತಂತ್ರದ ಕಾರಣ ತನ್ನ ಮಗನಿಗೆ ದಕ್ಕದೆಹೋದ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವು ದೇವತೆಗಳ ಕೈಗೆ ದಕ್ಕದೆಹೋದ ಹವಿಸ್ಸು ರಾಕ್ಷಸರಿಗೆ ಸಂದಂತಾಯಿತೆಂದು ಸಂಕಟಪಡುವ ಭಾವ ಮೇಲಣ ಉದಾಹರಣೆಯಲ್ಲಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಆರ್ಷೇಯಸಾದೃಶ್ಯ ಮನನೀಯ. ಈ ಮಾತನ್ನಾಡುವ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಕೌಸಲ್ಯೆಯು ಅದೇ ತಾನೇ ಸ್ವಯಂ ಹೋಮವನ್ನು ಮಾಡಿ ಮುಗಿಸಿದ್ದಳೆಂಬುದನ್ನು ನೆನೆಗಾದ ಈ ಹೋಲಿಕೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯ ಮತ್ತಷ್ಟು ಮನದಟ್ಟಾಗದಿರದು.

ಆದಿಕವಿಗಳು ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಂಥ ಕರುಣನಿರ್ಭರ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿಯೂ ಸಮುಚಿತವಾಗಿ ಹಾಸ್ಯವನ್ನು ಹೊಮ್ಮಿಸಬಲ್ಲರೆಂಬುದಕ್ಕೆ ಕೈಕೇಯಿಯ ಸಮ್ಮಾನದಿಂದ ಸಿಂಗಾರಗೊಂಡ ಮಂಥರೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಪರಿಯೇ ಸಾಕ್ಷಿ. ಮೈಯೆಲ್ಲ ಒಡವೆಗಳನ್ನು ಹೇರಿಕೊಂಡ ಆಕೆಯು ಹಗ್ಗಗಳಿಂದ ಕಟ್ಟಲ್ಪಟ್ಟ ಹೆಣ್ಣುಕೋತಿಯಂತೆ ಕಂಡಳೆಂದು ಚಿತ್ರಿಸಿದ ಬಗೆ ಎಂದೂ ಮರೆಯುವಂತಿಲ್ಲ:

**ಮೇಖಲಾದಾಮಭಿಶ್ಚಿತ್ರೈರನ್ಯೈಶ್ಚ ಶುಭಭೂಷಣೈ: ।**
**ಬಭಾಸೇ ಬಹುಭಿರ್ಬದ್ಧಾ ರಜ್ಜುಬದ್ಧೇವ ವಾನರೀ ॥** (೨.೭೮.೭)

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಸಂದರ್ಭವೊದಗಿದಾಗ ಮಾಲೆಮಾಲೆಗಳಾಗಿ ಉಪಮೆಗಳನ್ನು ಹೆಣೆದು ಕಥಾಕಾಂತೆಯನ್ನು ಸಿಂಗರಿಸುವುದುಂಟು. ಇದು ಅವರ ಅನರ್ಗಲವಾಗ್ವಿಲಾಸಕ್ಕೊಂದು ಅರ್ಹಸಾಮರ್ಥ್ಯವೂ ಹೌದು. ಇಂಥ ಒಂದು ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ರಾಮ- ದಶರಥರಿಲ್ಲದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯು ಭರತನಿಗೆ ಕಂಡ ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವಿಸಬಹುದು. ಆ ಪ್ರಕಾರ ಅಯೋಧ್ಯೆಯು ಪಾಪಗ್ರಹದಿಂದ ಪೀಡಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ರೋಹಿಣಿಯಂತೆ, ಬೇಸಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಂದ ಹಕ್ಕಿಯಂತೆ, ಗ್ರೀಷ್ಮದಲ್ಲಿ ಸೊರಿಗದ ನಿರ್ಝರಿಣಿಯಂತೆ, ಹವಿಸ್ಸಿಲ್ಲದೆ ಬಾಡುತ್ತಿರುವ ಹೋಮಾಗ್ನಿಶಿಖೆಯಂತೆ, ನಾಯಕನಿಲ್ಲದ ಸೇನೆಯಂತೆ, ಪ್ರಕ್ಷುಬ್ಧವಾದ ಅಲೆಯಂತೆ, ವೃಷಭದಿಂದ ದೂರವಾದ ಧೇನುವಿನಂತೆ, ಸೂತ್ರದಿಂದ ಜಾರಿಹೋದ ಮಣಿಯಂತೆ, ಪುಣ್ಯವು ನೀಗಿ ಭೂಮಿಗೆ ತಾರಾರೂಪದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಜೀವಿಯಂತೆ, ದಾವಾಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಂದ ವನಲತೆಯಂತೆ, ವಾಣಿಜ್ಯವು ಸೊರಗಿದ ಪೇಟೆಯ ಬೀದಿಯಂತೆ, ಮೋಡಕವಿದ ಬಾನಿನಂತೆ, ಮದ್ಯಪಾಯಿಗಳಿಲ್ಲದ ಪಾನಭೂಮಿಯಂತೆ, ನೀರಿಲ್ಲದ ಅರವಟ್ಟಿಗೆಯಂತೆ, ಬಿಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹೆದೆಯಂತೆ, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಗಾಸಿಗೊಂಡ ಹೆಣ್ಣುಕುದುರೆಯಂತೆ, ಕಮಲಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಕೊಳದಂತೆ, ಅಲಂಕಾರವಿಲ್ಲದ ಶರೀರದಂತೆ, ಸಿಂಹವಿಲ್ಲದ ಗುಹೆಯಂತೆ, ಸೂರ್ಯನಿಲ್ಲದ ಹಗಲಿನಂತೆ, ಜಡಿಮಳೆಯಿಂದ ಅಂದಗೆಟ್ಟ ಶುಕ್ಲಪಕ್ಷದ ರಾತ್ರಿಯಂತೆ ಕಳಾಹೀನವಾಗಿತ್ತು. ಇಲ್ಲಿಯ ಉಪಮೆಗಳ ವೈವಿಧ್ಯ-ಸಾರ್ಥಕ್ಯಗಳು ಸ್ವಯಂವೇದ್ಯ (೨.೧೧೪.೩–೨೧.೨೮–೨೯). ಮಹಾಕವಿಯಾದವನು ಸಮಾಸ-ವ್ಯಾಸಗಳೆರಡನ್ನೂ ಬಲ್ಲವನಾಗಿರಬೇಕೆಂಬ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಭಾಗವು ಮತ್ತೂ ಪರಿಭಾವನೀಯ.

**ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ**ದ ಉಪಮಾಪ್ರಪಂಚ ಸಾಕಷ್ಟು ವಿಸ್ತಾರವಾದುದು. ವಿಶೇಷತಃ ಅಲ್ಲಿಯ ಹೇಮಂತವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಉಪಮೆಯ ವಿಶ್ವರೂಪವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.

ಸೂರ್ಯನು ದಕ್ಷಿಣದಿಕ್ಕಿಗೆ ತಿರುಗಿದ ಕಾರಣ ಉತ್ತರದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಕಾಂತಿ ಕುಂದಿ ಅದು ತಿಲಕವಿಲ್ಲದ ಹೆಣ್ಣಿನಂತೆ ಹತಪ್ರಭೆಯಾಗಿದೆ. ಇದನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳ ಮಾತು ಅಡಕವಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದೆ:

**ವಿಹೀನತಿಲಕೇವ ಸ್ತ್ರೀ ನೋತ್ತರಾ ದಿಕ್ಪ್ರಕಾಶತೇ ।** (೩.೧೬.೮)

ಚಳಿಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹಿಮದ ಆವರಣದೊಳಗೆ ಹುದುಗಿದ ವಿಧುಮಂಡಲವು ಕುರುಡುಗನ್ನಡಿಯಂತೆ ಮಂಕಾಗಿದೆಯೆಂದೂ ಚಂದ್ರನ ಕಾಂತಿಯೆಲ್ಲವೂ ಸೂರ್ಯನಿಗೇ ಸೇರಿಹೋಗಿದೆಯೆಂದೂ ವರ್ಣಿಸುವಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಂತ ವಿನೂತನ ಕಲ್ಪನೆಯಿದೆ. ವಿಶೇಷತಃ 'ಕುರುಡುಗನ್ನಡಿ'ಯೆಂಬ ನುಡಿಯಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಅತ್ಯಂತ ತಿರಸ್ಕೃತ ವಾಚ್ಯಧ್ವನಿಯನ್ನು ಆನಂದವರ್ಧನನು ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಕೊಂಡಾಡಿದ್ದಾನೆ. ಇದು ಕುಂತಕನ ಪ್ರಕಾರ ಉಪಚಾರವಕ್ರತೆಯ ಒಂದು ವಿಲಾಸ. ಹೀಗೆ ಅಲಂಕಾರವೊಂದರಲ್ಲಿ ಧ್ವನಿವಕ್ರತೆಗಳ ಹಲವಂಶಗಳು ಸೇರುವುದು ಸಂಕೀರ್ಣಕಾವ್ಯಶಿಲ್ಪದ ಸೊಗಸು. ಇದು ಮಹಾಕವಿತ್ವದ ಹೆಗ್ಗುರುತು:

**ರವಿಸಂಕ್ರಾಂತಸೌಭಾಗ್ಯಸ್ತುಷಾರಾವೃತಮಂಡಲಃ ।**
**ನಿಶ್ವಾಸಾಂಧ ಇವಾದರ್ಶಶ್ಚಂದ್ರಮಾ ನ ಪ್ರಕಾಶತೇ ॥** (೩.೧೬.೧೪)

ಇದೇ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬೆಳದಿಂಗಳು ಕೂಡ ಹಿಮದ ಕಾರಣ ಮಂಕಾಗಿರುವುದನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುತ್ತ ಮಾಗಿಯ ಬಿಸಿಲಿಗೆ ಬಣ್ಣ ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಸೀತೆಯಂತೆ ಬೆಳದಿಂಗಳು ಬಿಳಿಚಿಕೊಂಡಿದೆಯೆಂದು ಹೇಳುವ ಪರಿಯಂತೂ ಅಸಾಧಾರಣ:

**ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾತುಷಾರಮಲಿನಾ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ನ ರಾಜತೇ ।**
**ಸೀತೇವ ಚಾತಪಶ್ಯಾಮಾ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ನ ತು ಶೋಭತೆ** ॥ (೩.೧೬.೧೪)

ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನುವರ್ಣಿಸುವ ಹೇಮಂತದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಪ್ರಸ್ತಾಪ ಅವನಿಂದಲೇ ಬಂದಿರುವುದು ರಸೋಚಿತವಾಗಿದೆ. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಆತನ ಲಘುಹಾಸ್ಯದ ಸ್ವಾರಸ್ಯವನ್ನೂ ಧ್ವನಿಸಿದೆ. ಜೊತೆಗೆ "ತುಷಾರಮಲಿನಾ" ಎಂಬ ವಿಶೇಷಣವು ತನ್ನ ಉಪಚಾರವಕ್ರತೆಯ ಕಾರಣ ಇಡಿಯ ಪದ್ಯವನ್ನು ಇನ್ನಷ್ಟು ಅಂದಗೊಳಿಸಿದೆ.

ಹೇಮಂತದ ಚಳಿಗೆ ಅಂಜಿದ ಜಲಪಕ್ಷಿಗಳು ಕೂಡ ನೀರಿಗಿಳಿಯಲು ಸಾಹಸಿಸುತ್ತಿಲ್ಲ. ಇದು ಕೈಲಾಗದವರು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಮುಂದಾಗದಂತಿದೆಯೆಂದು ರಾಮನ ಕಲ್ಪನೆ. ಇದರ ಸೌಂದರ್ಯವಂತೂ ನಿರುಪಮಾನ. ಸುಕ್ಷತ್ರಿಯನಾದ ರಾಮನಿಗಲ್ಲದೆ ಮತ್ತಾರಿಗೆ ತಾನೇ ವೀರರ ಹಾಗೂ ಹೇಡಿಗಳ ಪರಿಚಯ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಇರಲು ಸಾಧ್ಯ?

**ಏತೇ ಹಿ ಸಮುಪಾಸೀನಾ ವಿಹಗಾ ಜಲಚಾರಿಣಃ ।**
**ನಾವಗಾಹಂತಿ ಸಲಿಲಮಪ್ರಗಲ್ಭಾ ಇವಾಹವಮ್** ॥ (೩.೧೬.೨೨)

ಕಿವಿ-ಮೂಗುಗಳನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ಖರನ ಬಳಿ ಬಂದು ಅಲವತ್ತುಕೊಳ್ಳುವಾಗ ಅವಳ ರಕ್ತಸಿಕ್ತಮುಖವು ನಿರ್ಯಾಸದಿಂದ ಜುಗುಪ್ಸಾವಹವಾದ ಸಲ್ಲಕೀತರುವಿನಂತೆ ತೋರಿತೆಂಬ ಹೋಲಿಕೆಯಂತೂ ಆದಿಕವಿಗಳ ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಶೀಲನಕ್ಕೆ ಸುಂದರನಿದರ್ಶನ. ಏಕೆಂದರೆ ಖರನ ಬಳಿ ಬರುವ ಹೊತ್ತಿಗಾಗಲೇ ಅವಳ ಮುಖದಲ್ಲಿ ಸುರಿಯುತ್ತಿದ್ದ ನೆತ್ತರು ಸ್ವಲ್ಪ ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿ ಒಣಗಿತ್ತು. ಇದು ಸಲ್ಲಕಿಯ ನಿರ್ಯಾಸವನ್ನು ಹೋಲುತ್ತಿತ್ತು ಎಂಬಲ್ಲಿ ಹೊಂದಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಮಾನಧರ್ಮವು ಕೇವಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮನಿರೀಕ್ಷಣೆಗಷ್ಟೇ ದಕ್ಕಬಲ್ಲದು:

**ಉಪಗಮ್ಯ ಖರಂ ಸಾ ತು ಕಿಂಚಿತ್ಸಂಶುಷ್ಕಶೋಣಿತಾ ।**
**ಪಪಾತ ಪುನರೇವಾರ್ತಾ ಸನಿರ್ಯಾಸೇವ ಸಲ್ಲಕೀ** । (೩.೨೦.೨೪.೨೫)

ಇದೇ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ರಾವಣನ ಬಳಿ ಸಾರಿ ಆತನನ್ನು ರಾಮನ ವಿರುದ್ಧ ಎತ್ತಿಕಟ್ಟುವಾಗ ತೋರುವ ತಂತ್ರಗಾರಿಕೆಯು ಆಕೆಯ ರಾಜಧರ್ಮವ್ಯಾಖ್ಯಾನದ ಮಿಥ್ಯಾಗಾಂಭೀರ್ಯದ ನಡುವೆ ಮಿಂಚುವ ಹೋಲಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಅತಿಶಯಿಸುತ್ತದೆ. ಅವಳ ಪ್ರಕಾರ ಅರ್ಥೈಕಪಾರಾಯಣನಾಗಿ ಮೈಮರೆತ ಪ್ರಭುವನ್ನು ಪ್ರಜೆಗಳು ಸುಡುಗಾಡಿನ ಬೆಂಕಿಯಂತೆ ತಿರಸ್ಕರಿಸುತ್ತಾರೆ; ಕೆಸರು ತುಂಬಿದ ಕೊಳವನ್ನು ಆನೆಗಳು ಉಪೇಕ್ಷಿಸುವಂತೆ ದೂರವಿಡುತ್ತಾರೆ. ಇಂಥ ದೊರೆಯು ಹಿರಿಮೆಯನ್ನು ಗಳಿಸಿದರೂ ಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿದ ಪರ್ವತದಂತೆ ಹೊರಗೆ ತೋರುವುದೇ ಇಲ್ಲ:

**ಲುಬ್ಧಂ ನ ಬಹುಮನ್ಯಂತೇ ಶ್ಮಶಾನಾಗ್ನಿಮಿವ ಪ್ರಜಾಃ ।**
**ವರ್ಜಯಂತಿ ನರಾ ದೂರಾನ್ನದೀಪಂಕಮಿವ ದ್ವಿಪಾಃ ।**
**ತೇ ನ ವೃದ್ಧ್ಯಾ ಪ್ರಕಾಶಂತೇ ಗಿರಿಯಃ ಸಾಗರೇ ಯಥಾ** । (೩.೩೩.೩,೫,೬)

ಇಂಥ ಬೆಲೆಬಾಳುವ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಕೇವಲ ಸ್ವಾರ್ಥಪ್ರೇರಿತೆಯಾಗಿ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ಸೊಲ್ಲಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಳೆಂಬ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಂತೂ ಇವುಗಳ ವಿಪರೀತಾರ್ಥವು ಮತ್ತೂ ಸ್ವಾರಸ್ಯಕರ.

ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಅನುಪಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಸೆಳೆದೊಯ್ಯಲು ಕಪಟಸಂನ್ಯಾಸಿಯಾಗಿ ಬಂದ ಪರಿಯನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುತ್ತ ಸೂರ್ಯ-ಚಂದ್ರರಿಲ್ಲದಿರುವಾಗ ಸಂಧ್ಯೆಯನ್ನು ನುಂಗಿ ನೊಣೆಯಲು ಬಂದ ಕತ್ತಲಿನಂತಿದ್ದನೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ:

**ರಹಿತಾಂ ಚಂದ್ರಸೂರ್ಯಾಭ್ಯಾಂ ಸಂಧ್ಯಾಮಿವ ಮಹತ್ತಮಃ ।**
**ತಾಮಪಶ್ಯತ್ತತೋ ಬಾಲಾಂ ರಾಮಪತ್ನೀಂ ಯಶಸ್ವಿನೀಮ್** ॥ (೩.೪೬.೫)

ಇಲ್ಲಿಯ ಔಚಿತ್ಯ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಸೌಂದರ್ಯಗಳೆಲ್ಲ ಪರಿಪೂರ್ಣತೆಯ ಪದವನ್ನು ಮುಟ್ಟಿವೆಯೆಂಬುದು ನಿಸ್ಸಂದೇಹ. ಈ ಅಡಕದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಸಮಗ್ರತೆಯನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುವುದು ಎಲ್ಲ ಕಾಲದ ಕವಿಗಳ ಹಂಬಲ, ಆದರ್ಶ. ಆದರೆ ಕೃತಪುಣ್ಯರಿಗಷ್ಟೇ ಇದು ಕರಗತ. ಈ ಹೋಲಿಕೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯವೇ ಬಹುಶಃ ಕಾಳಿದಾಸನನ್ನು ತನ್ನ ರಘುವಂಶಕಾವ್ಯದ ಎರಡನೆಯ ಸರ್ಗದಲ್ಲಿ ದಿಲೀಪ-ಸುದಕ್ಷಿಣೆಯರ ನಡುವೆ ನಂದಿನೀಧೇನುವು ರಾಜಿಸಿದ

ಪರಿಯು ಹಗಲಿರುಳುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಸಂಜೆಯಂತೆ ತೋರಿತೆಂದು ಬಣ್ಣಿಸುವಲ್ಲಿ ಪ್ರೇರಿಸಿದೆಯೆನ್ನಬೇಕು.

ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ತುಡುಕಲು ಹೋದಾಗ ಅವನು ತೋರಿದ ಬಗೆಯನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಹೀಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ;

**ಅಭ್ಯವರ್ತತ ವೈದೇಹೀಂ ಚಿತ್ರಾಮಿವ ಶನೈಶ್ಚರಃ ।**
**ಸ ಪಾಪೋ ಭವ್ಯರೂಪೇಣ ತೃಣೈಃ ಕೂಪ ಇವಾವೃತಃ ॥** (೩.೪೬.೧೦)

ಈ ಪ್ರಕಾರ ಆ ಪಾಪಿಯು ಶನಿಗ್ರಹವು ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರದತ್ತ ದಾಪಿಡುವಂತೆ ಸಾಗಿದ. ಹುಲ್ಲುಮುಚ್ಚಿದ ಹಾಳುಬಾವಿಯಂತೆ ತೋರುವ ಆ ಧೂರ್ತನು ಸಂನ್ಯಾಸಿಯ ವೇಷವನ್ನು ತಳೆದದ್ದೊಂದು ವಿಡಂಬನೆಯಾಗಿತ್ತು. ಇಲ್ಲಿಯ ಹೋಲಿಕೆ ಹೃದಯಂಗಮ. ಚೈತ್ರಮಾಸದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನೊಡನೆ ಸೇರಿ ಪೂರ್ಣಮೆಯ ತುಂಬುತನವನ್ನು ಕಾಣಲಿರುವ ಚಿತ್ರಾನಕ್ಷತ್ರಕ್ಕೆ ಪಾಪಗ್ರಹವಾದ ಶನೈಶ್ಚರನ ಛಾಯೆ ಬರುವುದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಖಗೋಲಶಾಸ್ತ್ರದ ವಿಪರ್ಯಾಸ. ಇಂಥ ವೈಜ್ಞಾನಿಕಸ್ವಾರಸ್ಯದ ಉಪಮೆ ಆದಿಕವಿಗಳ ಬತ್ತಳಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಹಲವೊಮ್ಮೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಇದೇ ಶ್ಲೋಕದ ಮತ್ತೊಂದು ಹೋಲಿಕೆ **"ತೃಣೈಃ ಕೂಪ ಇವಾವೃತಃ"** ತನ್ನ ಸ್ವಾರಸ್ಯದ ಕಾರಣ ಕಾಳಿದಾಸನನ್ನೂ ಮರುಳುಮಾಡಿದೆ. ಇಲ್ಲವಾದಲ್ಲಿ ಅವನ ಅನರ್ಘರೂಪಕ ಶಾಕುಂತಲದ ಪಂಚಮಾಂಕದಲ್ಲಿ ದುಷ್ಯಂತನನ್ನು ದೂಷಿಸಲು ಶಕುಂತಲೆಯ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಇದೇ ಮಾತುಗಳನ್ನೇಕೆ ತರುತ್ತಿದ್ದ? ರಾಮಾಯಣದ ಭುವನೋಪಜೀವ್ಯಮಹತ್ತ್ವವನ್ನು ಕುರಿತಾದ **"ಪರಂ ಕವೀನಾಮಾಧಾರಮ್"** ಎಂಬ ಬ್ರಹ್ಮನ ಶಾಸನವನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಶಿರೋಧಾರ್ಯವಾಗಿ ಪಾಲಿಸುವವರೇ ಸರಿ!

ಇದೇ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ರಾವಣನು ತನ್ನ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಸೀತೆಯು ಸೆಳೆದ ಪರಿ ನದಿಯು ದಡವನ್ನು ಕೊಚ್ಚಿಹಾಕುವಂತಿದೆಯೆಂದು ಹೇಳುವುದಂತೂ ಬಹುಮಾರ್ಮಿಕ. ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರವಾಹಪುಷ್ಟನದಿಯ ವೇಗಕ್ಕೆ ಕುಸಿದುಬೀಳುವ ದಡವು ತಾನೇ ಹಾಳಾಗುವುದಲ್ಲದೆ ನದಿಗೆ ಯಾವುದೇ ಕುಂದಿಲ್ಲವೆಂಬ ಧ್ವನಿ ಅನ್ಯಾದೃಶವಾಗಿದೆ. ಜೊತೆಗೆ ದಡವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ವನಪ್ರಪಂಚವೂ ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಕೊಚ್ಚಿಹೋಗುವ ಚಿತ್ರವನ್ನು ನೆನೆಗಾದ ರಾವಣನೊಬ್ಬನ ಅವಿವೇಕದಿಂದ ಇಡಿಯ ಲಂಕೆಯೇ ಬೆಂಕಿಗೆ ಬಿದ್ದು ಮಸಣವಾದ ವಿಪರ್ಯಾಸವು ಕೂಡ ಅನುರಣಿಸದಿರದು. ಮಹಾಕವಿಯ ಮಾತು ಹೀಗೆ ಬಹ್ವರ್ಥಗ್ರಾಸಿ:

**ಮನೋ ಹರಸಿ ಮೇ ಕಾಂತೇ ನದೀಕೂಲಮಿವಾಂಭಸಾ ।** (೩.೪೬.೨೧)

ಹೀಗಿದ್ದೂ ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕದ್ದೊಯ್ದು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿರಿಸಿ, ಅಲ್ಲಿಯ ರಾಕ್ಷಸಿಯರಿಗೆ ನಯ-ಭಯಗಳಿಂದಾದರೂ ಹೆಣ್ಣಾನೆಯನ್ನು ಪಳಗಿಸುವಂತೆ ಇವಳನ್ನು ತನಗೊಲಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಿರೆಂದು ಆದೇಶವನ್ನೀಯುವ ಬಗೆ ವಿಭಾವನೀಯ:

**ಆನಯಧ್ವಂ ವಶಂ ಸರ್ವಾ ವನ್ಯಾಂ ಗಜವಧೂಮಿವ ।** (೩.೫೬.೩೧)

ಈ ಹೋಲಿಕೆಯ ಸಾರ್ಥಕ್ಯ ಸ್ಪೃಹಣೀಯ. ಮದಿಸಿದ ಕಾಡಾನೆಯನ್ನು ಪಳಗಿಸುವ ಕಷ್ಟ ಮತ್ತು ಅಂಥ ಮತಂಗಜವು ಸೈನ್ಯಕ್ಕೆ ಅದೆಷ್ಟು ಅನಿವಾರ್ಯವೆಂಬ ತಥ್ಯ ರಾವಣನಂಥ ಸಂಗ್ರಾಮಕೋವಿದನಲ್ಲದೆ ಮತ್ತಾರು ತಾನೇ ತಿಳಿದಾರು? ಅಲ್ಲದೆ, ಅದೊಂದು ಹಂತದ ಬಳಿಕ ವನ್ಯಗಜಗಳನ್ನು ಪಳಗಿಸುವಂಥ ಅಪಾಯಕಾರಿಕ್ರೀಡೆಯೇ ಅಧಿಕಾರಸ್ಥರಿಗೆ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಮಾದಕವಾದ ಚಟವೂ ಆದೀತೆಂಬ ಧ್ವನಿಯೂ ಇಲ್ಲಿದೆ.

ಆದಿಕವಿಗಳ ಅನ್ನರಸಪ್ರೀತಿ ಅನ್ಯಾದೃಶ. ಮಿತಾಹಾರಿಗಳಾದ ತಪಸ್ವಿಗಳೇ ಅವರಾದರೂ ತಮ್ಮ ಪಾತ್ರಗಳ ಜಿಹ್ವಾಚಾಪಲ್ಯವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಗಮನಸಿಕೊಂಡವರವರು. ಹಾಗಲ್ಲದೆ ಕವಿಗಳಾಗಲು ಸಾಧ್ಯವೇ? ಶಾಪವಿಮುಕ್ತನಾದ ಕಬಂಧನು ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣರಿಗೆ ಪಂಪಾಸರಸ್ಸಿನ ಹಾದಿಯನ್ನು ಹೇಳುವಾಗ ಅಲ್ಲಿಯ ಕೊಕ್ಕರೆಗಳ ರುಚಿಯನ್ನು ಮರೆಯುವುದಿಲ್ಲ! ಅವು ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ತುಪ್ಪದ ಗಡ್ಡೆಗಳಂತೆ ತೋರುತ್ತವೆಂದು ಬಾಯಲ್ಲಿ ನೀರೂರುವಂತೆ ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾನೆ:

**ಘೃತಪಿಂಡೋಪಮಾನ್ ಸ್ಥೂಲಾಂಸ್ತಾನ್ದ್ವಿಜಾನ್ ಭಕ್ಷಯಿಷ್ಯಥಃ ।**
(೩.೭೩.೧೪)

**ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ**ವಂತೂ ಉಕ್ತಿಕಲ್ಪನೆಯ ತವನಿಧಿ. ಇಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮೂರು ಋತುಗಳ ಬಣ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರನಿಧಿಯೆಲ್ಲ ಸೂರೆಯಾಗಿದೆ. ಇವುಗಳಿಂದ ಆಯ್ದ ಕೆಲವು ಸೌಂದರ್ಯಶಕಲಗಳನ್ನು ಪರಿಭಾವಿಸೋಣ.

ಪಂಪಾಸರಸ್ಸಿನ ಕಮಲಗಳು ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಬಾಲಸೂರ್ಯರಂತೆ ಬೆಳಗುತ್ತಿವೆಯೆಂದು ರಾಮನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ:

**ನಲಿನಾನಿ ಪ್ರಕಾಶಂತಿ ಜಲೇ ತರುಣಸೂರ್ಯವತ್** । (೪.೧.೫೯)

ಅಲ್ಲಿ ಬೀಸಿಬರುವ ಗಾಳಿಯೂ ಸೀತೆಯ ನಿಟ್ಟುಸಿರಿನಂತೆ ಹೃದಯಂಗಮವಾಗಿತ್ತು:

**ನಿಶ್ವಾಸ ಇವ ಸೀತಾಯಾ ವಾತಿ ವಾಯುರ್ಮನೋಹರಃ** । (೪.೧.೮೨)

ವಾಲಿಯೊಡನೆ ಸೆಣಸುವಾಗ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞೆಗಾಗಿ ಸುಗ್ರೀವನ ಕೊರಳಿಗೆ ರಾಮನು ಗಜಪುಷ್ಪೀಮಾಲೆಯನ್ನು ಹಾಕಿಸುವನಷ್ಟೆ ಆಗ ಅವನು ಸಂಧ್ಯಾಕಾಂತಿಯಲ್ಲಿ ಕಂಗೊಳಿಸುವ ಕಾರ್ಮೋಡದ ಮೇಲೆ ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿಗಳು ಹಾರಿದ ಹಾಗೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದವೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ಬಣ್ಣಿಸಿರುವುದಂತೂ ಅಸಮಾನವಾದ ಪ್ರಕೃತಿ ನಿರೀಕ್ಷಣೆ:

**ಸ ತಯಾ ಶುಶುಭೇ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಲತಯಾ ಕಂಠಸಕ್ತಯಾ ।**
**ಮಾಲಯೇವ ಬಲಾಕಾನಾಂ ಸಸಂಧ್ಯ ಇವ ತೋಯದಃ** ॥ (೪.೧೨.೪೧)

ಇಲ್ಲಿ ಬಿಳುಪಾದ ಗಜಪುಷ್ಪೀಮಾಲೆಯ ಹೂಗಳು ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿಗಳ ಸಾಲಿಗೂ ಸುಗ್ರೀವನ ಎಣ್ಣೆಗೆಂಪುಬಣ್ಣವು ಸಂಜೆಗೆಂಪಿನಲ್ಲಿ ಸೊಗಯಿಸುವ ಮೋಡದ ಕಾಂತಿಗೂ ಸಮೀಕೃತವಾಗಿರುವುದು ಮನೋಹರವಾದ ಧರ್ಮೈಕ್ಯಪ್ರಕಾರದ ಉಪಮೆಯೆನ್ನಬೇಕು.

ಹೀಗೆ ಮಾಲಾಧಾರಿಯಾದ ಸೂರ್ಯಪುತ್ರನು ಕಂಡ ಬಗೆಯನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಮತ್ತೂ ವಿನೂತನವಾಗಿ ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ವಿಪರೀತ ಇವಾಕಾಶೇ ಸೂರ್ಯೋ ನಕ್ಷತ್ರಮಾಲಯಾ** । (೪.೧೪.೧೦)

ಬೆಳ್ಳಗಿನ ಹೂಗಳ ಮಾಲೆಯನ್ನು ತೊಟ್ಟ ಸುಗ್ರೀವನು ತಾರೆಗಳ ಹಾರದಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸಿದ ಸೂರ್ಯನಂತೆ ಕಂಡನೆಂಬ ಈ ಅಲಂಕಾರವು ಉಪಮೇಯೇ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯೇ ಎಂದು ಅಲಂಕಾರಿಕರೂ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಕಾರರೂ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ತಲೆಕೆಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ಕಾರಣವಿಷ್ಟೇ: ಉಪಮೆಯು ಇರುವುದನ್ನು ಇದ್ದ ಮತ್ತೊಂದರೊಡನೆ ಹೋಲಿಸುವುದರಲ್ಲಿದೆ. ಅಂದರೆ, ಅದು ವರ್ತಮಾನಸಂಗತಿಗಳ ಸಾದೃಶ್ಯವನ್ನಷ್ಟೇ ತೋರುವ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯ. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಾದರೋ ಇರದಿರಬಹುದಾದುದನ್ನು ಅಥವಾ ಇರಲೂ ಸಾಧ್ಯವೆಂದು ಒಪ್ಪಬಹುದಾದುದನ್ನು ಸಾದೃಶ್ಯದಿಂದ ಬೆಸೆಯುವ ನುಡಿಬೆಡಗು. ಈ ಪದ್ಯವಾದರೋ ಇವೆರಡು ಪ್ರಕಾರಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಸ್ವಲ್ಪ ವಿಭಿನ್ನವೆಂದು ವಿಜ್ಞರ ಮತ. ದಿಟವೇ, ವಿಜ್ಞಾನವನ್ನು ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಸೂರ್ಯನ ಉದಯಾಸ್ತನಿರಪೇಕ್ಷವಾಗಿ ತಾರೆಗಳು ಸುತ್ತವರಿದಿರುತ್ತವೆಂದೂ ಸ್ವಯಂ ಸೂರ್ಯನೇ ಒಂದು ತಾರೆಯೆಂದೂ ತಿಳಿದಿರುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಏನು ಮಾಡುವುದು, ಈ ವಾಸ್ತವಜ್ಞಾನವೂ ಸದ್ಯದ ಸೌಂದರ್ಯಮೀಮಾಂಸೆಗೆ ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನೆರವಾಗದು! ಆದುದರಿಂದ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಕಡೆಗೆ ಇದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಒಂದು ಹೊಸತಾದ ಉಪಮಾಪ್ರಕಾರವನ್ನೇ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಆ ಪ್ರಕಾರ ಇದು "ಅಭೂತೋಪಮೆ" ಅಥವಾ "ಕಲ್ಪಿತೋಪಮೆ". ಒಂದು ವೇಳೆ ಸೂರ್ಯನ ಪ್ರಭೆಯಿಂದ ಇದೀಗ ಮರೆಯಾದ ತಾರೆಗಳು ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವಂತಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಆ ದೃಶ್ಯವು ಹೇಗಿರುತ್ತಿತ್ತೋ ಹಾಗೆ ಹಾರವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಸುಗ್ರೀವನು ತೋರಿದನೆಂದು ತಾತ್ಪರ್ಯವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಈ ಹೆಸರಾದರೂ ನಿರ್ದುಷ್ಟವೆಂದು ಹೇಳುವಂತಿಲ್ಲ ಸಕಲಾಲಂಕಾರಗಳೂ ಕಲ್ಪಿತವಷ್ಟೆ ಏನೇ ಆದರೂ ಇಂಥ ಚೆಲುವನ್ನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕರಿಸಿದ ಆದಿಕವಿಯ ಪ್ರತಿಭೆ ಮಾತ್ರ ಅಭಿನಂದನೀಯ, ಅಭಿವಂದನೀಯ ಮಹಾಕವಿಯ ರಸಸೃಷ್ಟಿಯು "ನಿಯತಿಕೃತನಿಯಮರಹಿತ"ವಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲ. ಶುಷ್ಕಶಾಸ್ತ್ರಕಾರರ ಮನೋಬುದ್ಧಿಗಳಿಗೂ ಅತೀತವೆಂದು ಇದೊಂದು ಸಂದರ್ಭದ ಮೂಲಕವೇ ಸಿದ್ಧವಾಗದಿರದು.

ರಾಮನ ಶರಾಘಾತಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗಿ ಭೂಮಿಗೆ ಬಿದ್ದ ವಾಲಿಯನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಅಭಿಜಾತಯುಗದ ಪರ್ವಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಒಂದೇ ಹೋಲಿಕೆಯಿಂದ ಚಿತ್ರಿಸಿ ಮನಮುಟ್ಟಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಇಂದ್ರಧ್ವಜ ಇವೋದ್ಧೂತಃ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ಮಹೀತಲೇ ।**
**ಆಶ್ವಯುಕ್ ಸಮಯೇ ಮಾಸಿ ಗತಶ್ರೀಕೋ ವಿಚೇತನಃ ॥** (೪.೧೬.೩೭)

ಪ್ರಾಚೀನ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಮಳೆಗಾಲವು ಮುಗಿದ ಬಳಿಕ. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಳೆಯನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಕಾರಣ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಕೃತಜ್ಞತೆಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುವ ರೂಪದಲ್ಲಿ "ಇಂದ್ರಧ್ವಜೋತ್ಸವ"ವೆಂಬ ಹಬ್ಬವು ಶರತ್ಕಾಲವಿಡೀ ಸಂಭ್ರಮೋತ್ಸಾಹಗಳಿಂದ ಸಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಇದೇ ಈ ಹೊತ್ತಿನ ನವರಾತ್ರ-ದೀಪಾವಳಿಗಳ ಪೂರ್ವರೂಪ. ಆಗ ಇಂದ್ರನ ಗೌರವಾರ್ಥ ಧ್ವಜಸ್ತಂಭವೊಂದನ್ನು ನೆಟ್ಟು, ಅದನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸಿ, ಪೂಜಿಸಿ ಸಮಗ್ರ ಸಮಾಜವು ನಲಿದಾಡುತ್ತಿತ್ತು. ಅನಂತರ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಈ ಧ್ವಜವನ್ನು ಇಳಿಸಿ, ಧ್ವಜಸ್ತಂಭವನ್ನು ವಿಧ್ಯುಕ್ತವಾಗಿ ನೆಲಕ್ಕೊರಗಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಹೀಗೆ ಸಮುನ್ನತವಾದ ಪತಾಕಾಸ್ತಂಭವು ಹಲವು ಕಾಲ ಮಲೆತು ನಿಂತು ಮಾನ್ಯತೆಯನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಅನಂತರ ನೆಲಕ್ಕೊರಗುವ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಕಂಡವರಿಗೆ ಮಹಾವೀರನಾದ ವಾಲಿಯ ಪತನವು ಅದೆಂಥ ಅನುರೂಪ ಸಾದೃಶ್ಯವೆಂದು ತೋರುವಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲ. ಆದಿಕವಿಗಳು ಇಂಥ ಇಂದ್ರಧ್ವಜಪತನಚಿತ್ರವನ್ನು ತಮ್ಮ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಲವೆಡೆ ಬಳಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಅವರದೇ ಸ್ವೋಪಜ್ಞಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದ ಕಾರಣ ಪುನರಾವೃತ್ತಿ ಸಹಜ. ಅಲ್ಲದೆ ಇದು ತಾಳುವಂಥದ್ದೂ ಹೌದು. ಇಂಥ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಕವಿಲೋಕಸಾಮಾನ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿ ಕಾಣಬಹುದು. ಪರವರ್ತಿಗಳಾದ ಕವಿಗಳೆಲ್ಲ ಈ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಯಥೋಚಿತವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ವಾಲಿಯು ರಾಮನನ್ನು ನಿಂದಿಸುವಾಗ ಆತನು ಹುಲ್ಲುಮುಚ್ಚಿದ ಹಾಳುಬಾವಿಯಂತೆ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಉರಿಯುವ ಬೆಂಕಿಯಂತೆ, ಸಾಧುಗಳ ವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಪಾಪಿಷ್ಠನಂತೆ ಅನಾಚಾರಿಯೆಂದು ಹೇಳುವುದಂತೂ ತುಂಬ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಹೋಲಿಕೆಗಳ ಸಾಲು:

**ಜಾನೇ ಪಾಪಸಮಾಚಾರಂ ತೃಣೈ: ಕೂಪಮಿವಾವೃತಮ್ ।**
**ಸತಾಂ ವೇಷಧರಂ ಪಾಪಂ ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಮಿವ ಪಾವಕಮ್ ॥** (೪.೧೭.೨೧)

ಈ ಶ್ಲೋಕದ "ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಮಿವ ಪಾವಕಂ" ಎಂಬ ಸೊಲ್ಲು ತುಂಬ ಮಾರ್ಮಿಕ. ಅಗ್ನಿಪ್ರಮಾದಗಳ ಬಗೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಇದರ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯತೆ ಸುವೇದ್ಯ. ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಹೊತ್ತಿಕೊಂಡ ಬೆಂಕಿಯು ದಳ್ಳುರಿಯಾದ ಬಳಿಕವೇ ಅರಿವಿಗೆ ಬರುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಆ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ ಕೈಮೀರಿರುತ್ತದೆ. ಇದೇ ವಿಧಿವೈಕಟ್ಯ.

ಮರಣಾಸನ್ನನಾದ ವಾಲಿಯು ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸುತ್ತ ಆತನು ಹೊಗರನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಕಮಲಬಾಂಧವನಂತೆ, ನೀರೆಲ್ಲ ಸೋರಿಹೋದ ಬೆಳ್ಮೋಡದಂತೆ, ಆರಿಹೋಗುತ್ತಿರುವ ಅಗ್ನಿಯಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದನೆಂದು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದೊಂದು ಉಪಮೆಗಳೂ ಸಹಜ, ಸಾರ್ಥಕ:

**ತಂ ನಿಷ್ಪ್ರಭಮಿವಾದಿತ್ಯಂ ಮುಕ್ತತೋಯಮಿವಾಂಬುದಮ್ ।**
**ಉಕ್ತವಾಕ್ಯಂ ಹರಿಶ್ರೇಷ್ಠಮುಪಶಾಂತಮಿವಾನಲಮ್ ॥** (೪.೧೮.೨)

ಮುಮೂರ್ಷುವಾದ ವಾಲಿಯು ಮೊದಲಿಗೆ ಕಳೆಗುಂದಿದ್ದು ಕಾಂತಿಹೀನ ಸೂರ್ಯನ ಸದೃಶವಾದರೆ, ಆತನು ರಕ್ತವನ್ನೂ ಶಕ್ತಿಯನ್ನೂ ಬಸಿದುಕೊಂಡದ್ದು ನೀರಿಲ್ಲದ ಮುಗಿಲಿಗೆ ಸಲ್ಲುವ ಹೋಲಿಕೆ. ಇನ್ನು ಪ್ರಾಣಜ್ಯೋತಿಯ ನಿರ್ವಾಣವು ಆರಿಹೋಗುವ ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಸಾಮ್ಯವನ್ನು ಮಾರ್ಮಿಕವಾಗಿ ತೋರಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ.

ಮಳೆಗಾಲವನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾ, ಬೆಂದ ಬುವಿಯೊಡಲು ಮೊದಲ ಮಳೆಹನಿಗೆ ತನ್ನೊಳಗಿನ ಹಬೆಯನ್ನು ಹೊಮ್ಮುವ ಮೂಲಕ ತೋರುವ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗೆ ಸೀತೆಯ ಬೆಂದೊಡಲನ್ನು ಸಮೀಕರಿಸುವ ರಾಮನ ಸಂವೇದನಶೀಲತೆ ನಿರುಪಮಾನ. ಇದನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಕವಿನಿಬದ್ಧಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿಸಿರುವುದು ಅವರ ಕಾವ್ಯಕೌಶಲಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿ:

**ಸೀತೇವ ಶೋಕಸಂತಪ್ತಾ ಮಹೀ ಬಾಷ್ಪಂ ವಿಮುಂಚತಿ ।** (೪.೨೮.೭)

ಶರತ್ಕಾಲದ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ನುಡಿಬೆಡಗು ಮುಗಿಲು ಮುಟ್ಟುತ್ತದೆ.

ಇಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವೊಂದು ಉಪಮೆಗಳು ರೂಪಕದ ಬೆಂಬಲವನ್ನೂ ಮತ್ತಷ್ಟು ಪರಿಣಾಮಕಾರಿಯಾಗಿವೆ:

**ದರ್ಶಯಂತಿ ಶರನ್ನದ್ಯಃ ಪುಲಿನಾನಿ ಶನೈಃ ಶನೈಃ ।**
**ನವಸಂಗಮಸಂವ್ರೀಡಾ ಜಘನಾನೀವ ಯೋಷಿತಃ ॥** (೪.೩೦.೨೫)

ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಡವನ್ನು ಮೀರಿ ಉಕ್ಕಿಹರಿದ ನದಿಗಳು ಇದೀಗ ಶರತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಪುಲವಾದ ಮಳಲದಿಣ್ಣೆಗಳ ದಡಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಹರಿಯುತ್ತಿವೆ. ಇದು ಮೊದಲ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಮಾನಿನಿಯರು ತಮ್ಮ ನಲ್ಲರಿಗೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ತಮ್ಮೊಡಲನ್ನು ತೆರೆದು ತೋರುವಂತೆ ಭಾಸವಾಗಿದೆ. ಇಂಥ ಉತ್ತಾನಶೃಂಗಾರದ ಸಭ್ಯಸೀಮೆಯನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಲು ಮಿಗಿಲಾದ ಔಚಿತ್ಯದ ಎದೆಗಾರಿಕೆ ಬೇಕು. ಅದು ಆದಿಕವಿಗಳದೇ ಸೊತ್ತು.

**ರಾತ್ರಿಃ ಶಶಾಂಕೋದಿತಸೌಮ್ಯವಕ್ತ್ರಾ**
**ತಾರಾಗಣೋನ್ಮೀಲಿತಚಾರುನೇತ್ರಾ ।**
**ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾಂಶುಕಪ್ರಾವರಣಾ ವಿಭಾತಿ**
**ನಾರೀವ ಶುಕ್ಲಾಂಶುಕಸಂವೃತಾಂಗೀ ॥** (೪.೩೦.೪೭)

ಇರುಳೆಂಬ ಚೆಲುವೆಯು ಚಂದ್ರಮುಖಿಯಾಗಿ, ನಕ್ಷತ್ರನೇತ್ರೆಯಾಗಿ, ಚಂದ್ರಾತಪವಸ್ತ್ರೆಯಾಗಿ ಮನವನ್ನು ಗೆಲ್ಲುತ್ತಿದ್ದಾಳೆಂಬ ಇಲ್ಲಿಯ ಚಿತ್ರಣವು ಸಾವಯವರೂಪಕವಾಗುವ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಉಪಮೆಯಾದ ಒಂದು ವಾಗ್ವಿಲಾಸ. ಇಂಥ ಸಂಕೀರ್ಣಾಲಂಕಾರಗಳು ರಾಮಾಯಾಣದಲ್ಲಿ ಅಸಂಖ್ಯ.

**ವಿಪಕ್ವಶಾಲಿಪ್ರಸವಾನಿ ಭುಕ್ತ್ವಾ**
**ಪ್ರಹರ್ಷಿತಾ ಸಾರಸಚಾರುಪಂಕ್ತಿಃ ।**
**ನಭಃ ಸಮಾಕ್ರಾಮತಿ ಶೀಘ್ರವೇಗಾ**
**ವಾತಾವಧೂತಾ ಗ್ರಥಿತೇವ ಮಾಲಾ ॥** (೪.೩೦.೪೭)

ಹಾಲುಕಾಳಿನ ಬತ್ತದ ತೆನೆಗಳನ್ನು ತಿಂದ ಕೊಕ್ಕರೆಗಳ ಸಾಲು ಉಲ್ಲಾಸದಿಂದ ವೇಗವಗಿ ಅಂಬರಕ್ಕೆ ನೆಗೆದಾಗ ಮಾಲೆಯೊಂದು ಗಾಳಿಯಲ್ಲಿ ತೇಲಿಬಂದಂತೆ ತೋರುವುದಂತೆ! ಇಲ್ಲಿಯ ಸರಸೋದಾರವಾದ ಉಪಮೆಯು ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯ ಬೆಂಬಲವನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಶರಚ್ಚಿತ್ರವೊಂದನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿರುವುದು ಪರಿಭಾವನೀಯ.

**ಸುಪ್ತೈಕಹಂಸಂ ಕುಮುದೈರುಪೇತಂ**
**ಮಹಾಹ್ರದಸ್ಥಂ ಸಲಿಲಂ ವಿಭಾತಿ ।**
**ಘನೈರ್ವಿಮುಕ್ತಂ ನಿಶಿ ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರಂ**
**ತಾರಾಗಣಾಕೀರ್ಣಮಿವಾಂತರಿಕ್ಷಮ್ ॥** (೪.೩೦.೪೯)

ಇದು ಶರತ್ಕಾಲದ ಒಂದು ಹೃದ್ಯಚಿತ್ರ ನಿರ್ಮಲವಾದ ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಅರಳಿ ನಗುವ ಬೆಳ್ದಾವರೆಗಳ ನಡುವೆ ಹಂಸವೊಂದು ನೆಮ್ಮದಿಯಾಗಿ ನಿದ್ರಿಸಿದೆ. ಇದು ಮಳೆಮುಗಿಲುಗಳಿಲ್ಲದ ಬಾನಿನಲ್ಲಿ ತಾರೆಗಳ ನಡುವೆ ತಿಂಗಳಿನಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ನಿಸರ್ಗಚಿತ್ರಣದ ಅವ್ಯಾಜಮನೋಹರತೆ ಸರ್ವಹೃದಯಹಾರಿ.

**ಮೀನೋಪಸಂದರ್ಶಿತಮೇಖಲಾನಾಂ**
**ನದೀವಧೂನಾಂ ಗತಯೋಽದ್ಯ ಮಂದಾಃ।**
**ಕಾಂತೋಪಭುಕ್ತಾಲಸಗಾಮಿನೀನಾಂ**
**ಪ್ರಭಾತಕಾಲೇಷ್ವಿವ ಕಾಮಿನೀನಾಮ್ ॥** (೪.೩೦.೫೫)

ಶರತ್ಕಾಲದ್ದೇ ಮತ್ತೊಂದು ಚಿತ್ರವಿಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಉತ್ತಾನಶೃಂಗಾರಕಥಾನಕದ ಮಧುರೋಪಸಂಹಾರದಂತೆ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯಾಗಿ, ದಡಗಳ ನಡುವೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಹರಿಯುವ ನದಿಗಳು ತಮ್ಮಪಾತ್ರದೊಳಗೆ ಸುಳಿಯುವ ಮೀನುಗಳೂ ಕಾಣುವಷ್ಟು ಪಾರದರ್ಶಕವಾಗಿವೆ. ಅವುಗಳ ಲಲಿತಾಲಸಗತಿಯು ಇರುಳೆಲ್ಲ ರತಿಯಲ್ಲಿ ಮಿಂದೆದ್ದ ಸುಂದರಿಯರು ಮುಂಜಾನೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಮೇಖಲೆಯ ಸೊಲ್ಲಿನೊಡನೆ ಸಾಗುತ್ತಿರುವಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಮಹರ್ಷಿವರೇಣ್ಯರ ನಿತ್ಯಶಾಂತಸ್ವರೂಪವು ಮಾತ್ರ ಈ ಬಗೆಯ ಹೃದಯಂಗಮಶೃಂಗಾರವನ್ನು ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳೂ ಸಂತೋಷಪಡುವಂತೆ ರೂಪಿಸಬಲ್ಲದು.

**ಸಚಕ್ರವಾಕಾನಿ ಸಶೈವಲಾನಿ**
**ಕಾಶೈರ್ದುಕೂಲೈರಿವ ಸಂವೃತಾನಿ ।**

**ಇಂದ್ರಧ್ವಜ ಇವೋದ್ಧೂತಃ ಪೌರ್ಣಮಾಸ್ಯಾಂ ಮಹೀತಲೇ ।**
**ಆಶ್ವಯುಕ್ ಸಮಯೇ ಮಾಸಿ ಗತಶ್ರೀಕೋ ವಿಚೇತನಃ ॥** (೪.೧೬.೩೭)

ಪ್ರಾಚೀನ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಮಳೆಗಾಲವು ಮುಗಿದ ಬಳಿಕ. ಒಳ್ಳೆಯ ಮಳೆಯನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಕಾರಣ ಇಂದ್ರನಿಗೆ ಕೃತಜ್ಞತೆಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುವ ರೂಪದಲ್ಲಿ "ಇಂದ್ರಧ್ವಜೋತ್ಸವ"ವೆಂಬ ಹಬ್ಬವು ಶರತ್ಕಾಲವಿಡೀ ಸಂಭ್ರಮೋತ್ಸಾಹಗಳಿಂದ ಸಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಇದೇ ಈ ಹೊತ್ತಿನ ನವರಾತ್ರ-ದೀಪಾವಳಿಗಳ ಪೂರ್ವರೂಪ. ಆಗ ಇಂದ್ರನ ಗೌರವಾರ್ಥ ಧ್ವಜಸ್ತಂಭವೊಂದನ್ನು ನೆಟ್ಟು, ಅದನ್ನು ಅಲಂಕರಿಸಿ, ಪೂಜಿಸಿ ಸಮಗ್ರ ಸಮಾಜವು ನಲಿದಾಡುತ್ತಿತ್ತು. ಅನಂತರ ಹುಣ್ಣಿಮೆಯ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಈ ಧ್ವಜವನ್ನು ಇಳಿಸಿ, ಧ್ವಜಸ್ತಂಭವನ್ನು ವಿಧ್ಯುಕ್ತವಾಗಿ ನೆಲಕ್ಕೊರಗಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಹೀಗೆ ಸಮುನ್ನತವಾದ ಪತಾಕಾಸ್ತಂಭವು ಹಲವು ಕಾಲ ಮಲೆತು ನಿಂತು ಮಾನ್ಯತೆಯನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಅನಂತರ ನೆಲಕ್ಕೊರಗುವ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಕಂಡವರಿಗೆ ಮಹಾವೀರನಾದ ವಾಲಿಯ ಪತನವು ಅದೆಂಥ ಅನುರೂಪ ಸಾದೃಶ್ಯವೆಂದು ತೋರುವಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲ. ಆದಿಕವಿಗಳು ಇಂಥ ಇಂದ್ರಧ್ವಜಪತನಚಿತ್ರವನ್ನು ತಮ್ಮ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಲವೆಡೆ ಬಳಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಅವರದೇ ಸ್ವೋಪಜ್ಞಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರವಾದ ಕಾರಣ ಪುನರಾವೃತ್ತಿ ಸಹಜ. ಅಲ್ಲದೆ ಇದು ತಾಳುವಂಥದ್ದೂ ಹೌದು. ಇಂಥ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯನ್ನು ಕವಿಲೋಕಸಾಮಾನ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿ ಕಾಣಬಹುದು. ಪರವರ್ತಿಗಳಾದ ಕವಿಗಳೆಲ್ಲ ಈ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಯಥೋಚಿತವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ವಾಲಿಯು ರಾಮನನ್ನು ನಿಂದಿಸುವಾಗ ಆತನು ಹುಲ್ಲುಮುಚ್ಚಿದ ಹಾಳುಬಾವಿಯಂತೆ, ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಉರಿಯುವ ಬೆಂಕಿಯಂತೆ, ಸಾಧುಗಳ ವೇಷವನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಪಾಪಿಷ್ಠನಂತೆ ಅನಾಚಾರಿಯೆಂದು ಹೇಳುವುದಂತೂ ತುಂಬ ತೀಕ್ಷ್ಣವಾದ ಹೋಲಿಕೆಗಳ ಸಾಲು:

**ಜಾನೇ ಪಾಪಸಮಾಚಾರಂ ತೃಣೈಃ ಕೂಪಮಿವಾವೃತಮ್ ।**
**ಸತಾಂ ವೇಷಧರಂ ಪಾಪಂ ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಮಿವ ಪಾವಕಮ್ ॥** (೪.೧೭.೨೧)

ಈ ಶ್ಲೋಕದ "ಪ್ರಚ್ಛನ್ನಮಿವ ಪಾವಕಂ" ಎಂಬ ಸೊಲ್ಲು ತುಂಬ ಮಾರ್ಮಿಕ. ಅಗ್ನಿಪ್ರಮಾದಗಳ ಬಗೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಇದರ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯತೆ ಸುವೇದ್ಯ. ಗುಟ್ಟಾಗಿ ಹೊತ್ತಿಕೊಂಡ ಬೆಂಕಿಯು ದಳ್ಳುರಿಯಾದ ಬಳಿಕವೇ ಅರಿವಿಗೆ ಬರುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಆ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ ಕೈಮೀರಿರುತ್ತದೆ. ಇದೇ ವಿಧಿವೈಕಟ್ಯ.

ಮರಣಾಸನ್ನನಾದ ವಾಲಿಯು ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸುತ್ತ ಆತನು ಹೊಗರನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಕಮಲಬಾಂಧವನಂತೆ, ನೀರೆಲ್ಲ ಸೋರಿಹೋದ ಬೆಳ್ಮೋಡದಂತೆ, ಆರಿಹೋಗುತ್ತಿರುವ ಅಗ್ನಿಯಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದನೆಂದು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದೊಂದು ಉಪಮೆಗಳೂ ಸಹಜ, ಸಾರ್ಥಕ:

**ತಂ ನಿಷ್ಪ್ರಭಮಿವಾದಿತ್ಯಂ ಮುಕ್ತತೋಯಮಿವಾಂಬುದಮ್ ।**
**ಉಕ್ತವಾಕ್ಯಂ ಹರಿಶ್ರೇಷ್ಠಮುಪಶಾಂತಮಿವಾನಲಮ್ ॥** (೪.೧೮.೨)

ಮುಮೂರ್ಷುವಾದ ವಾಲಿಯು ಮೊದಲಿಗೆ ಕಳೆಗುಂದಿದ್ದು ಕಾಂತಿಹೀನ ಸೂರ್ಯನ ಸದೃಶವಾದರೆ, ಆತನು ರಕ್ತವನ್ನೂ ಶಕ್ತಿಯನ್ನೂ ಬಸಿದುಕೊಂಡದ್ದು ನೀರಿಲ್ಲದ ಮುಗಿಲಿಗೆ ಸಲ್ಲುವ ಹೋಲಿಕೆ. ಇನ್ನು ಪ್ರಾಣಜ್ಯೋತಿಯ ನಿರ್ವಾಣವು ಆರಿಹೋಗುವ ಅಗ್ನಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಸಾಮ್ಯವನ್ನು ಮಾರ್ಮಿಕವಾಗಿ ತೋರಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ.

ಮಳೆಗಾಲವನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾ, ಬೆಂದ ಬುವಿಯೊಡಲು ಮೊದಲ ಮಳೆಹನಿಗೆ ತನ್ನೊಳಗಿನ ಹಬೆಯನ್ನು ಹೊಮ್ಮುವ ಮೂಲಕ ತೋರುವ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗೆ ಸೀತೆಯ ಬೆಂದೊಡಲನ್ನು ಸಮೀಕರಿಸುವ ರಾಮನ ಸಂವೇದನಶೀಲತೆ ನಿರುಪಮಾನ. ಇದನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಕವಿನಿಬದ್ಧಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿಸಿರುವುದು ಅವರ ಕಾವ್ಯಕೌಶಲಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿ:

**ಸೀತೇವ ಶೋಕಸಂತಪ್ತಾ ಮಹೀ ಬಾಷ್ಪಂ ವಿಮುಂಚತಿ ।** (೪.೨೮.೭)

ಶರತ್ಕಾಲದ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ನುಡಿಬೆಡಗು ಮುಗಿಲು ಮುಟ್ಟುತ್ತದೆ.

ಇಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವೊಂದು ಉಪಮೆಗಳು ರೂಪಕದ ಬೆಂಬಲವನ್ನೂ ಮತ್ತಷ್ಟು ಪರಿಣಾಮಕಾರಿಯಾಗಿವೆ:

**ದರ್ಶಯಂತಿ ಶರನ್ನದ್ಯಃ ಪುಲಿನಾನಿ ಶನೈಃ ಶನೈಃ ।**
**ನವಸಂಗಮಸಂವ್ರೀಡಾ ಜಘನಾನೀವ ಯೋಷಿತಃ ॥** (೪.೩೦.೨೫)

ವರ್ಷಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಡವನ್ನು ಮೀರಿ ಉಕ್ಕಿಹರಿದ ನದಿಗಳು ಇದೀಗ ಶರತ್ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಪುಲವಾದ ಮಳಲದಿಣ್ಣೆಗಳ ದಡಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಹರಿಯುತ್ತಿವೆ. ಇದು ಮೊದಲ ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಮಾನಿನಿಯರು ತಮ್ಮ ನಲ್ಲರಿಗೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ತಮ್ಮೊಡಲನ್ನು ತೆರೆದು ತೋರುವಂತೆ ಭಾಸವಾಗಿದೆ. ಇಂಥ ಉತ್ತಾನಶೃಂಗಾರದ ಸಭ್ಯಸೀಮೆಯನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಲು ಮಿಗಿಲಾದ ಔಚಿತ್ಯದ ಎದೆಗಾರಿಕೆ ಬೇಕು. ಅದು ಆದಿಕವಿಗಳದೇ ಸೊತ್ತು.

**ರಾತ್ರಿಃ ಶಶಾಂಕೋದಿತಸೌಮ್ಯವಕ್ತ್ರಾ**
**ತಾರಾಗಣೋನ್ಮೀಲಿತಚಾರುನೇತ್ರಾ ।**
**ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾಂಶುಕಪ್ರಾವರಣಾ ವಿಭಾತಿ**
**ನಾರೀವ ಶುಕ್ಲಾಂಶುಕಸಂವೃತಾಂಗೀ ॥** (೪.೩೦.೪೭)

ಇರುಳೆಂಬ ಚೆಲುವೆಯು ಚಂದ್ರಮುಖಿಯಾಗಿ, ನಕ್ಷತ್ರನೇತ್ರೆಯಾಗಿ, ಚಂದ್ರಾತಪವಸ್ತ್ರೆಯಾಗಿ ಮನವನ್ನು ಗೆಲ್ಲುತ್ತಿದ್ದಾಳೆಂಬ ಇಲ್ಲಿಯ ಚಿತ್ರಣವು ಸಾವಯವರೂಪಕವಾಗುವ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಉಪಮೆಯಾದ ಒಂದು ವಾಗ್ವಿಲಾಸ. ಇಂಥ ಸಂಕೀರ್ಣಾಲಂಕಾರಗಳು ರಾಮಾಯಾಣದಲ್ಲಿ ಅಸಂಖ್ಯ.

**ವಿಪಕ್ವಶಾಲಿಪ್ರಸವಾನಿ ಭುಕ್ತ್ವಾ**
**ಪ್ರಹರ್ಷಿತಾ ಸಾರಸಚಾರುಪಂಕ್ತಿಃ ।**
**ನಭಃ ಸಮಾಕ್ರಾಮತಿ ಶೀಘ್ರವೇಗಾ**
**ವಾತಾವಧೂತಾ ಗ್ರಥಿತೇವ ಮಾಲಾ ॥** (೪.೩೦.೪೭)

ಹಾಲುಕಾಳಿನ ಬತ್ತದ ತೆನೆಗಳನ್ನು ತಿಂದ ಕೊಕ್ಕರೆಗಳ ಸಾಲು ಉಲ್ಲಾಸದಿಂದ ವೇಗವಗಿ ಅಂಬರಕ್ಕೆ ನೆಗೆದಾಗ ಮಾಲೆಯೊಂದು ಗಾಳಿಯಲ್ಲಿ ತೇಲಿಬಂದಂತೆ ತೋರುವುದಂತೆ! ಇಲ್ಲಿಯ ಸರಸೋದಾರವಾದ ಉಪಮೆಯು ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯ ಬೆಂಬಲವನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಪರಿಪೂರ್ಣವಾದ ಶರಚ್ಚಿತ್ರವೊಂದನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿರುವುದು ಪರಿಭಾವನೀಯ.

**ಸುಪ್ತೈಕಹಂಸಂ ಕುಮುದೈರುಪೇತಂ**
**ಮಹಾಹ್ರದಸ್ಥಂ ಸಲಿಲಂ ವಿಭಾತಿ ।**
**ಘನೈರ್ವಿಮುಕ್ತಂ ನಿಶಿ ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರಂ**
**ತಾರಾಗಣಾಕೀರ್ಣಮಿವಾಂತರಿಕ್ಷಮ್ ॥** (೪.೩೦.೪೯)

ಇದು ಶರತ್ಕಾಲದ ಒಂದು ಹೃದ್ಯಚಿತ್ರ ನಿರ್ಮಲವಾದ ಸರೋವರದಲ್ಲಿ ಅರಳಿ ನಗುವ ಬೆಳ್ದಾವರೆಗಳ ನಡುವೆ ಹಂಸವೊಂದು ನೆಮ್ಮದಿಯಾಗಿ ನಿದ್ರಿಸಿದೆ. ಇದು ಮಳೆಮುಗಿಲುಗಳಿಲ್ಲದ ಬಾನಿನಲ್ಲಿ ತಾರೆಗಳ ನಡುವೆ ತಿಂಗಳಿನಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ನಿಸರ್ಗಚಿತ್ರಣದ ಅವ್ಯಾಜಮನೋಹರತೆ ಸರ್ವಹೃದಯಹಾರಿ.

**ಮೀನೋಪಸಂದರ್ಶಿತಮೇಖಲಾನಾಂ**
**ನದೀವಧೂನಾಂ ಗತಯೋಽದ್ಯ ಮಂದಾಃ।**
**ಕಾಂತೋಪಭುಕ್ತಾಲಸಗಾಮಿನೀನಾಂ**
**ಪ್ರಭಾತಕಾಲೇಷ್ವಿವ ಕಾಮಿನೀನಾಮ್ ॥** (೪.೩೦.೫೫)

ಶರತ್ಕಾಲದ್ದೇ ಮತ್ತೊಂದು ಚಿತ್ರವಿಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಉತ್ತಾನಶೃಂಗಾರಕಥಾನಕದ ಮಧುರೋಪಸಂಹಾರದಂತೆ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಶರದೃತುವಿನಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯಾಗಿ, ದಡಗಳ ನಡುವೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಹರಿಯುವ ನದಿಗಳು ತಮ್ಮಪಾತ್ರದೊಳಗೆ ಸುಳಿಯುವ ಮೀನುಗಳೂ ಕಾಣುವಷ್ಟು ಪಾರದರ್ಶಕವಾಗಿವೆ. ಅವುಗಳ ಲಲಿತಾಲಸಗತಿಯು ಇರುಳೆಲ್ಲ ರತಿಯಲ್ಲಿ ಮಿಂದೆದ್ದ ಸುಂದರಿಯರು ಮುಂಜಾನೆ ಮೆಲ್ಲಮೆಲ್ಲನೆ ಮೇಖಲೆಯ ಸೊಲ್ಲಿನೊಡನೆ ಸಾಗುತ್ತಿರುವಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಮಹರ್ಷಿವರೇಣ್ಯರ ನಿತ್ಯಶಾಂತಸ್ವರೂಪವು ಮಾತ್ರ ಈ ಬಗೆಯ ಹೃದಯಂಗಮಶೃಂಗಾರವನ್ನು ಸಂನ್ಯಾಸಿಗಳೂ ಸಂತೋಷಪಡುವಂತೆ ರೂಪಿಸಬಲ್ಲದು.

**ಸಚಕ್ರವಾಕಾನಿ ಸಶೈವಲಾನಿ**
**ಕಾಶೈರ್ದುಕೂಲೈರಿವ ಸಂವೃತಾನಿ ।**

**ಸಪತ್ರಲೇಖಾನಿ ಸರೋಚನಾನಿ**
**ವಧೂಮುಖಾನೀವ ನದೀಮುಖಾನಿ** ॥ (೪.೩೦.೫೬)

ಇದೂ ಶರದೃತುವಿನ ಮತ್ತೊಂದು ಮುಖ ಇಲ್ಲಿರುವುದು ಸಮುದ್ರದತ್ತ ಸಾಗುವ ನದಿಗಳ ವರ್ಣನೆ. ಇವು ಮಳೆಗಾಲದ ನದಿಗಳಂತೆ ಕೊಬ್ಬಿ ಹರಿಯುವುದಿಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದ ಇವುಗಳ ಗತಿಯಲ್ಲಿ ಅಂಕೆ ಮೀರಿದ ಜಂಬಗಾರ್ತಿಯರ ಗಾಡಿಯಿಲ್ಲ. ಚಕ್ರವಾಕಪಕ್ಷಿಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡು, ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ದಟ್ಟಹಸುರಿನ ಜಲನೀಲಿಗಳನ್ನು ಸೆಳೆದುಕೊಂಡು, ಇರ್ಕೆಲದ ತೀರದಲ್ಲಿ ತೊನೆದಾಡುವ ನಸುಬಿಳಿಯ ನೊದೆಹುಲ್ಲಿನ ವಲಯವನ್ನು ಲಾಲಿಸುತ್ತ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ಸೇರುವ ಈ ತರಂಗಿಣೀರಮಣಿಯರು ಚಕ್ರವಾಕಸದೃಶಸ್ತನೆಯರಾಗಿ, ಕಾಶಸಂಕಾಶದುಕೂಲೆಯರಾಗಿ, ಮಕರಿಕಾಪತ್ರ ಚಿತ್ರ ರಚನೆಯಿಂದೊಡಗೂಡಿ ನಾಚಿ ನಲಿಯುವ ನವವಧುಗಳು ತಮ್ಮ ವದನಕಮಲವನ್ನು ಪ್ರಿಯತಮರಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವಂತಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಕಲ್ಪನೆ ಅದೆಷ್ಟು ಸುಕುಮಾರಮನೋಹರವೆಂಬುದು ವಿವರಣಾತೀತ. ಅಲ್ಲದೆ ಇಲ್ಲಿಯ ವಿಶೇಷಣಗಳು ಅದೆಂತು ಧ್ವನಿಸ್ಪೃಕ್ಕಾಗಿವೆಯೆಂಬುದೂ ಗಮನಾರ್ಹ.

ಸೀತಾನ್ವೇಷಣೆಗಾಗಿ ನಿಯುಕ್ತರಾದ ವಾನರವೀರರೆಲ್ಲ ರಾಮನ ಬಳಿ ಬಂದು ಕೈಮುಗಿದಾಗ ಅದು ಕಮಲಕೋರಕಗಳಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸುವ ಸರೋವರದ ನೋಟವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡುವಂತಿತ್ತೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಕೃತಾಂಜಲೌ ಸ್ಥಿತೇ ತಸ್ಮಿನ್ ವಾನರಾಶ್ಚಾಭವಂಸ್ತದಾ ।**
**ತಟಾಕಮಿವ ತದ್ದೃಷ್ಟ್ವಾ ರಾಮಃ ಕುಡ್ಮಲಪಂಕಜಮ್** ॥ (೪.೩೮.೧೭)

ಈ ನಿಸರ್ಗರಮಣೀಯಚಿತ್ರವನ್ನು ಕಂಡು ಮನಸೋತ ಕಾಳಿದಾಸನು ಪ್ರಾಯಶಃ ಇದರ ಸ್ಫೂರ್ತಿಯಿಂದಲೇ ಕುಮಾರಸಂಭವಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಒಂದೆಡೆ ಸಾವಿರ ಕಂಗಳ ಇಂದ್ರನು ಬೃಹಸ್ಪತಿಯತ್ತ ನಿಟ್ಟಿಸಿದಾಗ ತಾವರೆಗಳಿಂದ ತುಂಬಿದ ಪುಷ್ಕರಿಣಿಯ ಮೇಲೆ ಮಂದಾನಿಲವೊಂದು ಬೀಸಿ ಹೂಗಳೆಲ್ಲ ಒತ್ತಟ್ಟಿಗೆ ಸಂದಂತ್ತಿತ್ತೆಂದು ವರ್ಣಿಸಿರಬಹುದು. ಎಲ್ಲರೂ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಾವ್ಯಾರ್ಥದ ಉಪಜೀವಿಗಳೇ. ಇದಕ್ಕೆ ಕವಿಕುಲಗುರುವೂ ಹೊರತಲ್ಲ. ದಿಟವೇ, ಇಲ್ಲಿ ಉಪಮಾನೋಪಮೇಯಗಳ ನಡುವೆ ವಚನೈಕ್ಯವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ ಅದು ಕವಿಪ್ರತಿಭೆಯಲ್ಲಿ ಮುಚ್ಚಿಹೋಗಿದೆ.

ಹೀಗೆ ಅಣಿಗೊಂಡ ವಾನರವೃಂದವು ಎಲ್ಲೆಡೆಗೂ ಸೀತಾನ್ವೇಷಣತತ್ಪರತೆಯಿಂದ ಸುಳಿದಾಗ ಭುವಿಯೆಲ್ಲ ಮಿಡತೆಗಳಿಂದ ಮುಚ್ಚಿಹೋದಂತ್ತಿತ್ತೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ. ಮಿಡತೆಗಳ ವ್ಯಾಪನಶೀಲತೆಯನ್ನು ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಈ ಉಪಮೆಯ ಔಚಿತ್ಯ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಮನ ಮುಟ್ಟಿದಿರದು:

**ಶಲಭಾ ಇವ ಸಂಛಾದ್ಯ ಮೇದಿನೀಂ ಸಂಪ್ರತಸ್ಥಿರೇ** । (೪.೪೫.೩)

ಸೀತೆಯನ್ನು ಸರ್ವತ್ರ ಅರಸಿ ನಿರಾಶರಾದ ಕಪಿಗಳು ಸಂಪಾತಿಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ವೈಫಲ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವಾಗ ಈ ಪರಿಶ್ರಮವು ಇರುಳಿನಲ್ಲಿ ರವಿಕಾಂತಿಯನ್ನು ಹುಡುಕಿದಂತಾಯಿತೆಂದು ಹಳಹಳಿಸಿಕೊಳ್ಳತ್ತಾರೆ. ಈ ಕಲ್ಪನೆಯು ತನ್ನ ಸಹಜತೆಯ ಕಾರಣ ಮತ್ತೂ ಮನೋಗ್ರಾಹಿಯಾಗಿದೆ:

**ವೈದೇಹೀಂ ನಾಧಿಗಚ್ಛಾಮೋ ರಾತ್ರೌ ಸೂರ್ಯಪ್ರಭಾಮಿವ** । (೪.೫೭.೨೩)

ಹನೂಮಂತನ ಸಮುದ್ರೋಲ್ಲಂಘನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಕಂಪಿಸಿದ ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತದ ನೆಲೆಯಿಂದ ಭಯಭೀತರಾದ ಮುನಿಗಳೆಲ್ಲ ದೂರಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದಾಗ ಆ ಗಿರಿಯು ಸಾರ್ಥವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಒಂಟಿಯಾದ ಹಾದಿಗನಂತೆ ಕಂಗೆಟ್ಟಿತೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುವ ಪರಿಯಂತೂ ಅಭಿನವಕಲ್ಪನೆ:

**ಋಷಿಭಿಸ್ತ್ರಾಸಸಂಭ್ರಾಂತೈಸ್ತ್ಯಜ್ಯಮಾನಶಿಲೋಚ್ಚಯಃ ।**
**ಸೀದನ್ಮಹತಿ ಕಾಂತಾರೇ ಸಾರ್ಥಹೀನ ಇವಾಧ್ವಗಃ** ॥ (೪.೬೭.೪೯)

ಇಲ್ಲಿ ವರ್ತಕರ ಗುಂಪಾದ ಸಾರ್ಥವು ತನ್ನ ನಾಯಕನಾದ ಸಾರ್ಥವಾಹನ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿ ತನ್ನೊಡನೆ ಅನೇಕ ಪಾಂಥರನ್ನೂ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರಾಚೀನ ಭಾರತದ ಚಿತ್ರ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಟ್ಟಿದಿರದು. ಇಂಥ ಹೋಲಿಕೆಗಳು ಅಭಿಜಾತ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ವಿರಳ.

**ಸುಂದರಕಾಂಡವು** ಹೆಸರೇ ಸೂಚಿಸುವಂತೆ ಸುಂದರಸಂನಿವೇಶಗಳ ತವನಿಧಿ. ಇಲ್ಲಿಯ ಉಪಮೆಗಳು ಎಂದಿನಂತೆ ರಸಿಕರ ಹೃದಯವನ್ನು ಸೆಳೆಯದಿರವು. ಇವುಗಳ ಸೊಗಸನ್ನಿಷ್ಟು ನೋಡೋಣ.

ಬಾನಿಗೆ ನೆಗೆದ ವಾಯುಪುತ್ರನ ಬಾಲವು ಗರುಡನಿಂದ ಕೊಂಡೊಯ್ಯಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವ ಮಹಾಸರ್ಪದಂತೆ ತೋರಿತೆಂಬ ಒಂದೇ ಹೋಲಿಕೆಯಿಂದ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಹನೂಮಂತನ ಲಂಘನಲೀಲೆಯನ್ನೂ ಆಕಾರವಿಶೇಷವನ್ನೂ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಟ್ಟುವಂತೆ ಬಣ್ಣಿಸಿದ್ದಾರೆ:

**ತಸ್ಯ ಲಾಂಗೂಲಮಾವಿದ್ಧಮಾತ್ತವೇಗಸ್ಯ ಪೃಷ್ಠತಃ ।**
**ದದೃಶೇ ಗರುಡೇನೇವ ಹ್ರಿಯಮಾಣೋ ಮಹೋರಗಃ ॥** (೫.೧.೩೪)

ಕಡಲನ್ನು ದಾಟಲು ಆಗಸಕ್ಕೆ ನೆಗೆದ ಹನುಮನನ್ನು-ಅವನ ಪ್ರಬಲವೇಗದ ಸೆಳೆತಕ್ಕೆ ಸಿಲ್ಕಿ ಕಿತ್ತಬಂದ-ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತದ ಗಿಡ-ಮರಗಳು ಸ್ವಲ್ಪದೂರ ಅವನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸಿ ಹಾರಿದುವಷ್ಟೆ. ಅವುಗಳು ಪ್ರಿಯಬಂಧುವನ್ನು ಬೀಳ್ಕೊಡುವ ಬಾಂಧವರಂತೆ, ದೊರೆಯನ್ನು ಬೀಳ್ಕೊಡುವ ಸೇನೆಯಂತೆ ಕಂಡವೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಲ್ಪನೆ:

**ಪ್ರಸ್ಥಿತಂ ದೀರ್ಘಮಧ್ವಾನಂ ಸ್ವಬಂಧುಮಿವ ಬಾಂಧವಾಃ ।**
**ಅನುಜಗ್ಮುರ್ಹನೂಮಂತಂ ಸೈನ್ಯಾ ಇವ ಮಹೀಪತಿಮ್ ।**
(೫.೧.೪೭.೪೮)

ಹೀಗೆಯೇ ತನ್ನ ವೇಗದ ಕಾರಣ ಅಲ್ಲಿಯ ಬನದ ಸುಮರಾಜಿಯನ್ನೆಲ್ಲ ಮೈಗಂಟಿಸಿಕೊಂಡ ಪವನಸುತನು  ಮಿಂಚುಹುಳಗಳಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸುವ ಮಲೆಯಂತೆ ತೋರಿದನೆಂದು ವರ್ಣಿಸುವಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಶೀಲನೆ ಅತ್ಯದ್ಭುತವಾಗಿ ಕಂಡಿದೆ:

**ಸ ನಾನಾಕುಸಮೈಃ ಕೀರ್ಣಃ ಕಪಿಃ ಸಾಂಕುರಕೋರಕೈಃ ।**
**ಶುಶುಭೇ ಮೇಘಸಂಕಾಶಃ ಖದ್ಯೋತೈರಿವ ಪರ್ವತಃ ॥** (೫.೧.೫೧)

ಬೆಟ್ಟಕ್ಕೆಲ್ಲ ಮಿಂಚುಹುಳುಗಳು ಮುತ್ತಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಮಳೆಗಾಲದ ಮಲೆಸೀಮೆಯ ಪರಿಚಯವಿದ್ದವರಿಗೂ ಪುಣ್ಯವಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಕಾಣಬಲ್ಲ ನೇತ್ರನಿರ್ವಾಣದೃಶ್ಯ. ಇದನ್ನು ಕಂಡವರು, ನಮಗೂ ಕಾಣಿಸಬಲ್ಲವರು, ಆದಿಕವಿಗಳು.

ಹನೂಮಂತನಿಗೆ ಮುಸ್ಸಂಜೆಯ ಮಾದಕಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕನಕಲಂಕೆಯು ಸೊಗಸಾಗಿ ಸಿಂಗರಗೊಂಡ ಸುಂದರಿಯಂತೆ ಕಂಡಿದಂತೆ: **ಪ್ರಮದಾಂ ಭೂಷಿತಾಮಿವ** (೫.೩.೧೮). ಅದೆಷ್ಟು ಅಡಕದಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಈ ಚಿತ್ರವನ್ನಿತ್ತಿದ್ದಾರೆ! ಲಂಕೆಯು ಅದೆಷ್ಟೇ ಶ್ರೀಮಂತಿಕೆಯ ಚೆಲುವಿನಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸಿದರೂ ನೈಷ್ಠಿಕಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಹೆಣ್ಣು ಮಣ್ಣೇ ತಾನೆ!

ರಾವಣಾಂತಃಪುರದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ್ದ ಮದವತಿಯರು ತಮ್ಮ ಜಘನಪುಲಿನಗಳಿಂದ, ಕಿಂಕಿಣೀಕಮಲಮುಕುಲಗಳಿಂದ, ವದನಪದ್ಮಗಳಿಂದ, ಹಾವ-ಭಾವಗಳೆಂಬ ನಕ್ರ-ಮಕರಗಳಿಂದ, ಚೆಲುವಿನ ಬಲ್ಮೆಯ ತೀರಗಳಿಂದ ಮನಸೆಳೆಯುವ ನದಿಗಳಂತಿದ್ದರಂತೆ:

**ಅಪಗಾ ಇವ ತೇ ರೇಜುರ್ಜಘನ್ಯೈಃ ಪುಲಿನ್ಯೈರಿವ ।**
**ಕಿಂಕಿಣೀಜಾಲಸಂಕೋಶಾಸ್ತಾ ಹೇಮವಿಪುಲಾಂಬುಜಾಃ ॥** (೫.೯.೫೧)
**ಭಾವಗ್ರಾಹಾ ಯಶಸ್ತೀರಾಃ ಸುಪ್ತಾ ನದ್ಯ ಇವಾಬಭುಃ ।** (೫.೯.೫೨)

ಇಲ್ಲಿಯ ಉಪಮೆಯು ಸಾವಯವ ರೂಪಕದಿಂದ ಗಳಿಸಿದ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯತೆ ಪರಿಭಾವನೀಯ.

ಅಂಜನಾತನಯನಿಗೆ ನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ದಶಗ್ರೀವನು ಕಂಡ ಪರಿಯನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಅನ್ಯಾದೃಶವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ:

**ಮಾಷರಾಶಿಪ್ರತೀಕಾಶಂ ನಿಶ್ಶ್ವಸಂತಂ ಭುಜಂಗವತ್ ।**
**ಗಾಂಗೇ ಮಹತಿ ತೋಯಾಂತೇ ಪ್ರಸುಪ್ತಮಿವ ಕುಂಜರಮ್ ॥**
(೫.೧೦.೨೮)

ರಾವಣನು ಉದ್ದಿನಕಾಳಿನ ರಾಶಿಯಂತೆ ಕಪ್ಪಗಿದ್ದನು, ಕಾಳಸರ್ಪದಂತೆ ಬುಸುಗುಟ್ಟುತ್ತಿದ್ದನು, ಗಂಗಾನದಿಯ ತೀರದಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ್ದ ಮದ್ದಾನೆಯಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದನು. ಇಲ್ಲಿಯ ಮೂರು ಉಪಮೆಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ ರಾವಣನ ಶ್ಯಾಮವರ್ಣದ ಬೃಹದ್ಗಾತ್ರವನ್ನೂ ನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿ

ಕೂಡ ಭಯಂಕರವಾಗಿ ತೋರುತ್ತಿದ್ದ ಪರಿಯನ್ನೂ ಹಾಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮೈಚೆಲ್ಲಿ ಮಲಗಿದ ವಿಲಾಸವಿಸ್ತಾರವನ್ನೂ ಬಿಂಬಿಸಿರುವ ಪರಿ ಅದೆಷ್ಟು ಸಾರ್ಥಕವೆಂಬುದು ಸಹೃದಯಸಮಾಜಕ್ಕೆ ಸುವೇದ್ಯ. ಹೀಗೆ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಟ್ಟುವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವರ್ಣ್ಯವಿಷಯವನ್ನು ಮನಮುಟ್ಟಿಸುವುದೇ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಮೂಲೋದ್ದೇಶ. ಇದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳಿಗೆ ಜನ್ಮಜಾತಿವಿದ್ಯೆ.

ಸೀತಾನ್ವೇಷಣೆಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಗ್ರನಾಗಿದ್ದ ಹನೂಮಂತನಿಗೆ ಶಿಶಿರಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಹೂ-ಚಿಗುರುಗಳಿಲ್ಲದ ಅಶೋಕವನವೃಕ್ಷಗಳು ಜೂಜಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಜೂಜಾಳಿಗಳಂತೆ ಕಂಡುವಂತೆ:

**ನಿರ್ಧೂತಪತ್ರಶಿಖರಾಃ ಶೀರ್ಣಪುಷ್ಪಫಲಾ ದ್ರುಮಾಃ ।**
**ನಿಕ್ಷಿಪ್ತವಸ್ತ್ರಾಭರಣಾ ಧೂರ್ತಾ ಇವ ಪರಾಜಿತಾಃ ॥** (೫.೧೪.೧೫)

ತಪೋವನದಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯಾನುಷ್ಠಾನಮಗ್ನರಾಗಿ ಬಹಿಃಪ್ರಪಂಚವನ್ನೇ ಮರೆತ ಮುನಿಗಳಿಗೆ ಕಿತವಸಭೆಯ ವಿವರಗಳೆಲ್ಲ ಅದು ಹೇಗೆ ಕರಗತವಾದುವೋ ತಿಳಿಯದು! ಇಂತಲ್ಲದೆ ಕವಿತ್ವ ದಕ್ಕುವುದುಂಟೇ?

ಸುಂದರಕಾಂಡದ ಸಾರವತ್ತಾದ ಭಾಗಗಳಲ್ಲೊಂದು ಸೀತೆಯನ್ನು ಹನೂಮಂತನು ಕಂಡದ್ದು. ವಿಶೇಷತಃ ಆಕೆಯನ್ನು ಹತ್ತಾರು ಹೋಲಿಕೆಗಳ ಮೂಲಕ ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುವಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು-ಕಡಮೆ ಒಂದು ಸರ್ಗವನ್ನೇ ಮೀಸಲಿಟ್ಟಿದಾರೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವು ಸೂಕ್ತಿಗಳು ಸ್ಮರಣೀಯ:

**ತಾಂ ಸ್ಮೃತೀಮಿವ ಸಂದಿಗ್ಧಾಮೃದ್ಧಿಂ ನಿಪತಿತಾಮಿವ ।**

**ಸೋಪಸರ್ಗಾಂ ಯಥಾ ಸಿದ್ಧಿಂ ಬುದ್ಧಿಂ ಸಕಲುಷಾಮಿವ ।**
**ಅಭೂತೇನಾಪವಾದೇನ ಕೀರ್ತಿಂ ನಿಪತಿತಾಮಿವ ॥** (೫.೧೫.೩೩.೩೪)

**ಆಮ್ನಾಯಾನಾಮಯೋಗೇನ ವಿದ್ಯಾಂ ಪ್ರಶಿಥಿಲಾಮಿವ ।**

**ಸನ್ನಾಮಿವ ಮಹಾಕೀರ್ತಿಂ ಶ್ರದ್ಧಾಮಿವ ವಿಮಾನಿತಾಮ್ ।**
**ಪ್ರಜ್ಞಾಮಿವ ಪರಕ್ಷೀಣಾಮಾಶಾಂ ಪ್ರತಿಹತಾಮಿವ ॥**

**ಆಯತೀಮಿವ ವಿಧ್ವಸ್ತಾಮಾಜ್ಞಾಂ ಪ್ರತಿಹತಾಮಿವ ।**
**ದೀಪ್ತಾಮಿವ ದಿಶಂ ಕಾಲೇ ಪೂಜಾಮಪಹೃತಾಮಿವ ॥**

**ವೇದೀಮಿವ ಪರಾಮೃಷ್ಟಾಂ ಶಾಂತಾಮಗ್ನಿಶಿಖಾಮಿವ ।**
(೫.೧೯.೧೧.೧೨.೧೩.೧೫)

**ಪ್ರತಿಪತ್ಪಾಠಶೀಲಸ್ಯ ವಿದ್ಯೇವ ತನುತಾಂ ಗತಾ ।** (೫.೫೯.೩೫)

ರಾವಣನ ಸೆರೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಸಂದಿಗ್ಧಾರ್ಥವುಳ್ಳ ಸ್ಮೃತಿಯಂತೆ, ಕ್ಷೀಣವಾದ ಸಂಪತ್ತಿಯಂತೆ, ವಿಘ್ನಗಳಿಂದ ತತ್ತರಿಸಿದ ತಪಸ್ಸಿದ್ಧಿಯಂತೆ, ಮಲಿನವಾದ ಬುದ್ಧಿಯಂತೆ, ಮಿಥ್ಯಾಪವಾದಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾದ ಕೀರ್ತಿಯಂತೆ, ಅಭ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ಮರೆತುಹೋದ ವಿದ್ಯೆಯಂತೆ, ಉಪೇಕ್ಷೆಗೊಂಡ ಶ್ರದ್ಧೆಯಂತೆ, ಸೊರಗಿದ ಪ್ರಜ್ಞೆಯಂತೆ, ತಿರಸ್ಕೃತವಾದ ಆಶೆಯಂತೆ ಹಾಳಾದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಂತೆ, ಮನ್ನಣೆ ದಕ್ಕದ ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ, ಪ್ರಳಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬೆಂಕಿಬಿದ್ದ ದಿಕ್ಕಿನಂತೆ, ಕಸಿದೊಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟ ಪೂಜಾಪ್ರಕಲ್ಪದಂತೆ, ಮೈಲಿಗೆಯಾದ ಯಜ್ಞವೇದಿಯಂತೆ, ಆರಿಹೋಗುತ್ತಿರುವ ಶ್ರೌತಾಗ್ನಿಯಂತೆ, ಅನಧ್ಯಯನಕಾಲದಲ್ಲಿ ವೇದಾಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ತೊಡಗಿದವನ ಶ್ರುತಿಶೀಲದಂತೆ ನವೆಯುತ್ತಿದ್ದಳೆಂಬುದು ಇಲ್ಲಿಯ ತಾತ್ಪರ್ಯ. ಈ ಉಪಮೆಗಳೊಂದೊಂದರ ಸೊಗಸೂ ಮನನೀಯ. ವಿಶೇಷತಃ ಉಪಮಾನೋಪಮೇಯಗಳ ಲಿಂಗಸಾಮ್ಯಕ್ಕಾಗಿ ಆದಿಕವಿಗಳು ವಹಿಸಿದ ಜಾಗರೂಕತೆ, ಉಪಮೆಗಳ ಹೊಸತನವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವಲ್ಲಿ ಕಾಯ್ದುಕೊಂಡ ಪ್ರಜ್ಞಾಪಾಟವ ಮತ್ತು ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಮೂಲದ ಹೋಲಿಕೆಗಳನ್ನು ಹೆಣೆಯುವಲ್ಲಿ ತೋರಿದ ಕೌಶಲಗಳು ಯಾರನ್ನೂ ಮಣಿಸದಿರವು.

ಅಶೋಕವನಧ್ವಂಸವನ್ನು ಕಾವಲಿನ ಪಡೆಯ ಮೂಲಕ ಅರಿತ ರಾವಣನ ಕಣ್ಣುಗಳಿಂದ ರಕ್ತಬಿಂದುಗಳೇ ಉದುರಿದವಂತೆ. ಅವು ದೀಪದ ಕುಡಿಯಿಂದ ಜ್ವಾಲಾಲಿಪ್ತವಾದ ತೈಲಬಿಂದುಗಳನ್ನು ಹೋಲುತ್ತಿದ್ದವೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ತಸ್ಯ ಕ್ರುದ್ಧಸ್ಯ ನೇತ್ರಾಭ್ಯಾಂ ಪ್ರಾಪತನ್ನಸ್ರಬಿಂದವಃ ।**
**ದೀಪ್ತಾಭ್ಯಾಮಿವ ದೀಪಾಭ್ಯಾಂ ಸಾರ್ಚಿಷಃ ಸ್ನೇಹಬಿಂದವಃ ॥** (೫.೪೨.೨೩)

ದೀಪದ ಕುಡಿಯಿಂದ ಹೊತ್ತಿಕೊಂಡ ಎಣ್ಣೆಯ ಹನಿಗಳು ಉರಿಯುವುದನ್ನು ಕೇವಲ ಸೂಕ್ಷ್ಮನಿರೀಕ್ಷಣೆ ಮಾತ್ರ ಅರಿಯಬಲ್ಲುದು.

ಕಾಳಿದಾಸನೂ ತನ್ನ ರಘುವಂಶದ ಎಂಟನೆಯ ಸರ್ಗದಲ್ಲಿ ಇಂದುಮತಿಯ ಸಾವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವಾಗ ಇದೇ ಉಪಮೆಯನ್ನು ಪ್ರಕಾರಾಂತರವಾಗಿ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಹೀಗೆ ಆದಿಕವಿಗಳಿಗೆ ಅವನ ಆಧಮರ್ಣ್ಯವು ಸಲ್ಲುವ ಪರಿ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಕಾಣಸಿಗುತ್ತದೆ.

**ಯುದ್ಧಕಾಂಡವು** ಹೊಡೆದಾಟ-ಬಡಿದಾಟಗಳ ನೆಲೆಯಾದ ಕಾರಣ ಅಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಆಸ್ಪದವಿಲ್ಲವೆಂದು ಭಾವಿಸುವುದು ಪಾಮರಪ್ರಜ್ಞೆ. ಆದಿಕವಿಗಳಿಗೆ ಇಲ್ಲಿಯೂ ಅಸಂಖ್ಯಾವಕಾಶಗಳುಂಟು. ಇಂಥ ಕೆಲವು ಹೋಲಿಕೆಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸೋಣ.

ಲಂಕಾಸಮರದಲ್ಲಿ ಉಭಯಪಕ್ಷಗಳೂ ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೇ ರಾತ್ರಿಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಸನ್ನದ್ಧವಾಗುತ್ತವೆ. ನಿಶಾಚರರೆನಿಸಿದ ರಾಕ್ಷಸರಿಗೆ ಅನುಕೂಲಕಾರಿಯೇ ಸರಿ. ಆದರೆ ಕಾಂಚನಕವಚಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿದ ಅವರನ್ನು ಕಪಿವೀರರು ಸುಲಭವಾಗಿ ಗುರುತಿಸಿ ಘಾತಿಸುವಂತಾಯಿತು. ಆ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಅಸುರಸೇನೆಯು ಜ್ಯೋತಿರ್ಲತೆಗಳಿಂದ ಮಿನುಗುವ ಪರ್ವತಪಂಕ್ತಿಯಂತ್ತಿತ್ತೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ಹೋಲಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಸಂಪ್ರಾದೃಶ್ಯಂತ ಶೈಲೇಂದ್ರಾ ದೀಪ್ತೌಷಧಿವನಾ ಇವ ।** (೬.೪೪.೫)

**ಚಪಲಸ್ನೇಹ ಕೃತ್ಯಾನಿ ಸಹಸಾನುಪ್ರಧಾವತಃ ।**
**ಛಿದ್ರಮನ್ಯೇ ಪ್ರಪದ್ಯಂತೇ ಕ್ರೌಂಚಸ್ಯ ಖಮಿವ ದ್ವಿಜಾಃ ॥** (೬.೬೩.೧೯)

ನಿದ್ದೆಯಿಂದೆಬ್ಬಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕುಂಭಕರ್ಣನು ರಾವಣನಿಗೆ ವ್ಯರ್ಥವಾದ ಹಿತೋಪದೇಶವನ್ನು ಮಾಡುವಾಗ ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು. ದುಡುಕಿ ನಡೆಯುವ ಚಂಚಲಚಿತ್ತನೂ ಆದ ವ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಹುಳುಕನ್ನು ಹುಡುಕಲು ಸದಾ ವೈರಿಗಳು ಸಿದ್ಧರಿರುತ್ತಾರೆ. ಕ್ರೌಂಚಪರ್ವತದ ರಂಧ್ರವನ್ನು ವಲಸೆಯ ಹಕ್ಕಿಗಳು ಸದಾ ಅರಸುತ್ತಿರುವುದಷ್ಟೆ. ಇದು ಅಪ್ಪಟ ಲೋಕಜ್ಞತೆಯ ಹಾಗೂ ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಶೀಲನೆಯ ಫಲ. ಇದರ ಸೊಗಸು ವ್ಯುತ್ಪನ್ನರಿಗಷ್ಟೆ ಸಾಧ್ಯ.

ಕುಂಭಕರ್ಣನು ರಾವಣನೊಡನೆ ಮಾತನಾಡಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ತೆರಳುವಾಗ ನೀರಿಲ್ಲದ ಮೋಡಗಳಂತೆ ವೀರಯೋಧರು ವ್ಯರ್ಥವಾಗಿ ಗರ್ಜಿಸುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ:

**ಗರ್ಜಂತಿ ನ ವೃಥಾ ಶೂರಾ ನಿರ್ಜಲಾ ಇವ ತೋಯದಾಃ ।** (೬.೬೫.೩)

ಈ ಹೋಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಶೂರರಲ್ಲದವರ ಅಸ್ತಿತ್ವವು ಶರನ್ನೀರದಗಳ ಹಾಗೆ ಹಗುರ ಮತ್ತು ಅವರ ಮುಖಗಳು ನೆತ್ತರ ಪಸೆಯಿಲ್ಲದೆ ಬಿಳಿಚಿಕೊಂಡಿರುತ್ತವೆಂಬ ಧ್ವನಿಯು ಹೃದಯಂಗಮ.

**ಶ್ರೋಣೀಸೂತ್ರೇಣ ಮಹತಾ ಮೇಚಕೇನ ವ್ಯರಾಜತ ।**
**ಅಮೃತೋತ್ಪಾದನೇ ನದ್ಧೋ ಭುಜಂಗೇನೇವ ಮಂದರಃ ॥** (೬.೬೫.೨೯)

ರಾವಣನ ಮಾತಿನಂತೆ ರಣಕೇಳಿಗೆ ಸಾಗುವ ಕುಂಭಕರ್ಣನನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳು ಆತನ ಗಾತ್ರವಿಸ್ತಾರವನ್ನು ಮನಗಾಣಿಸಲು ಕೇವಲ ಅವನ ನಡುಪಟ್ಟಿಯೊಂದನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿ ಮಿಕ್ಕಂತೆ ನಮ್ಮ ಕಲ್ಪನಗೇ ಬಿಡುತ್ತಾರೆ. ಆ ಪ್ರಕಾರ ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಕಟಿಪಟ್ಟಿಯು ಕಪ್ಪಗೆ ಹೊಳೆಹೊಳೆಯುತ್ತಿತ್ತು. ಇದು ಅಮೃತಮಥನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮಂದರವನ್ನು ಬಳಸಿ ಬಂದ ವಾಸುಕಿಸರ್ಪವನ್ನು ಹೋಲುತ್ತಿತ್ತು! ಈ ಮೂಲಕ ಅವನ ಪರ್ವತೋಪಮಗಾತ್ರವೂ ಮುಂದೆ ಅವನು ವಾನರಸೇನಾಸಮುದ್ರವನ್ನು ಪ್ರಮಥಿಸುವ ಕೋಲಾಹಲವೂ ಅದೆಷ್ಟು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ಧ್ವನಿತವಾಗಿದೆ!

ರಾಮಶರದಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕರ್ಣಕುಂಡಲಮಂಡಿತವಾದ ಕುಂಭಕರ್ಣನ ಶಿರಸ್ಸು ಪುನರ್ವಸುನಕ್ಷತ್ರೋದಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆ ನಕ್ಷತ್ರಪುಂಜದ ನಡುವೆ ಉದಿಸಿದ ಚಂದ್ರಬಿಂಬದಂತಿತ್ತೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಕುಂಭಕರ್ಣಶಿರೋ ಭಾತಿ ಕುಂಡಲಾಲಂಕೃತಂ ಮಹತ್ ।**
**ಆದಿತ್ಯೇಽಪ್ಯುದಿತೇ ರಾತ್ರೌ ಮಧ್ಯಸ್ಥ ಇವ ಚಂದ್ರಮಾಃ ॥** (೬.೬೭.೧೮೨)

ಇದೊಂದು ಖಗೋಲಶಾಸ್ತ್ರೀಯವಾದ ಉಪಮೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪೌರಾಣಿಕಾಂಶವೂ ಸೇರಿದೆ. ಪುನರ್ವಸುನಕ್ಷತ್ರವು ದೇವಮಾತೆಯಾದ

ಅದಿತಿಗೆ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಪ್ರಿಯ. ಹೀಗಾಗಿ ಅದು ಆದಿತ್ಯ ಈ ನಕ್ಷತ್ರಪುಂಜವಾದರೋ ಎರಡು ಪ್ರಜ್ವಲತಾರೆಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡ ಜ್ಯೋತಿಸ್ಸಮೂಹ. ಈ ಎರಡು ತಾರಾಸ್ತೋಮದ ನಡುವೆ ಚಂದ್ರಬಿಂಬವು ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ವಿರಳವಾದ ನೋಟವೇ ಹೌದು. ಇಂಥ ಖಗೋಲಶಾಸ್ತ್ರವೈಚಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಕಟಾಕ್ಷಿಸಿರುವುದಿಲ್ಲಿ ಪರಿಭಾವನೀಯ.

ಅಂಗದನು ಶೋಣಿತಾಕ್ಷನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನನ್ನು ಕರವಾಲದಿಂದ ಕತ್ತರಿಸಿದ ಪರಿ ಹೇಗಿತ್ತೆಂದರೆ, ಅವನ ಕತ್ತಿಯ ಬೀಸಿನಿಂದ ವೈರಿಯ ಎದೆಯಲ್ಲಿ ಯಜ್ಞೋಪವೀತಾಕೃತಿಯ  ಸೀಳು ಮೂಡಿತಂತೆ!

**ಯಜ್ಞೋಪವೀತವಚ್ಚಿನಂ ಚಿಚ್ಛೇದ ಕಪಿಕುಂಜರಃ ।** (೬.೭೬.೧೦)

ಈ ಉಪಮೆಯ ಅಬಿನತೆ ಮತ್ತು ಅಭಿರಾಮತೆಗಳು ನಿಜವಾಗಿ ಅವಿಸ್ಮರಣೀಯ. ಇಲ್ಲಿಯ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರವೂ ಶ್ರಾವ್ಯ.

ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಡನೆ ಸೆಣಸುವಾಗ ಕವಚವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಮೈಯೆಲ್ಲ ನಟ್ಟ ಬಾಣಗಳ ಮೂಲಕ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು ಮರಗಳಿಂದ ಕಿಕ್ಕಿರಿದ ಮಲೆಯಂತೆ ತೋರಿದನೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ಅದೊಂದೆಡೆ ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ವಿಧೂತವರ್ಮಾ ನಾರಾಚೈರ್ಬಭೂವ ಸ ಕೃತವ್ರಣಃ ।**
**ಇಂದ್ರಜಿತ್ಸಮರೇ ವೀರಃ ಪ್ರರೂಢ ಇವ ಸಾನುಮಾನ್ ॥** (೬.೮೯.೨೦)

ಇಲ್ಲಿ ತಾನಾಗಿ ಧ್ವನಿಸುವ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತಿನ ಪರ್ವತೋಪಮಗಾತ್ರವೂ ಪರಿಭಾವನೀಯ.

ಇದೇ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವೀರರಿಬ್ಬರೂ ಪರಸ್ಪರಶರಾಘಾತದಿಂದ ಗಾಯಗೊಂಡಿದ್ದ ಪರಿಯನ್ನು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತ ಅವರು ಎಲೆಯನ್ನುದುರಿಸಿಕೊಂಡು ಮೈಯೆಲ್ಲ ಹೂವೇ ಆಗಿ ಮಲೆತಬೂರುಗ ಮತ್ತು ಮುತ್ತುಗದ ಮರಗಳನ್ನು ಹೋಲುತ್ತಿದ್ದರೆನ್ನುತ್ತಾರೆ:

**ತಯೋಃ ಕೃತವ್ರಣೌ ದೇಹೌ ಶುಶುಭಾತೇ ಮಹಾತ್ಮನೋಃ ।** (೬.೮೯.೩೬)
**ಸಪುಷ್ಪಾವಿನ ನಿಷ್ಪತ್ರೌ ವನೇ ಶಾಲ್ಮಲಿಕಿಂಶುಕೌ ।** (೬.೮೯.೩೭)

ಈ ಉಪಮೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯವಿರುವುದು ಆದಿಕವಿಗಳ ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಶೀಲನ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಯಲ್ಲಿ. ಬೂರುಗ ಮತ್ತು ಮುತ್ತುಗದ ಮರಗಳು ಶಿಶಿರಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿಯೇ ಎಲೆಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಉದುರಿಸಿಕೊಂಡು ವಸಂತಾರಂಭದ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಮೈಯೆಲ್ಲ ಕೆಂಪಗಿನ ಹೂಗಳಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸುತ್ತವೆ. ಬೂರುಗವು ಕೆನ್ನೀಲಿಯ ದೊಡ್ಡ ದೊಡ್ಡ ಹೂಗಳನ್ನು ತಳೆದರೆ ಮುತ್ತುಗವು ಕೆಂಗೇಸರಿಯ ಸುಮಗಳನ್ನು ತಳೆಯುತ್ತದೆ. ಇವೆರಡೂ ಒತ್ತಾದ ಹೂಗಳ ನಿಬಿಡತೆಯಿಂದ ಎಲ್ಲಿಯೂ ಎದ್ದುತೋರುವಂತಿರುತ್ತವೆ. ಇದನ್ನು ಕಂಡವರಿಗೆ ಪ್ರಕೃತೋಪಮೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯ ಮತ್ತಷ್ಟು ಸ್ಫುರಿಸದಿರದು.

ಇಂದ್ರಜಿದ್ವಧೆಯ ಬಳಿಕ ಅವನ ಹಿಂಬಾಲಕರಾದ ಅಸಂಖ್ಯರಾಕ್ಷಸರು ನೋಡನೋಡುತ್ತಿದ್ದಂತೆಯೇ ಕಾಣೆಯಾದರು. ಇದನ್ನು ಅನುದಿನದ ಅನುಭವದ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಸೂರ್ಯನು ಮುಳುಗಿದ ಬಳಿಕ ಅವನ ಕಿರಣಗಳು ಕಣ್ಮರೆಯಾಗುವಂತಿತ್ತೆಂದು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ರಾಕ್ಷಸಾನಾಂ ಸಹಸ್ರೇಷು ನ ಕಶ್ಚಿತ್ಪ್ರತ್ಯದೃಶ್ಯತ ।**
**ಯಥಾಸ್ತಂ ಗತ ಆದಿತ್ಯೇ ನಾವತಿಷ್ಠಂತಿ ರಶ್ಮಯಃ ॥** (೬.೯೧.೮೫)

ಎಲ್ಲರ ಅನುಭವದಲ್ಲಿಯೂ ಇರುವ ಈ ಹೋಲಿಕೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯವೆಲ್ಲ ಅಸುರಸೇನೆಯನ್ನು ಸೂರ್ಯರಶ್ಮಿಗೆ ಹೋಲಿಸಿರುವಲ್ಲಿ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸೂರ್ಯಾಸ್ತದ ಬಳಿಕ ಬೆಳಕು ಇಲ್ಲವಾಯಿತೆಂದು ಹೇಳುವುದುಂಟು. ಇದು ತೀರ ಯಾತಯಾಮೋಪಮೆ. ಆದರೆ ಕಿರಣಗಳು ಕಾಣೆಯಾಗುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸುವುದು ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಗೆ ಸಾಕ್ಷಿ. ಅಲ್ಲದೆ "ರಶ್ಮಿ"ಯೆಂಬ ಪದವೂ ಇಲ್ಲಿ ಗಮನಾರ್ಹ. ಇದಕ್ಕೆ ಕಿರಣ ಮತ್ತು ಕಡಿವಾಣಗಳೆಂಬ ಅರ್ಥವುಂಟು. ಸೂರ್ಯನು ಮುಳುಗಿದ ಬಳಿಕ ಅವನ ಕಿರಣಗಳೂ ಇಲ್ಲ, ಅವನ ಕುದುರೆಗಳಿಗೆ ಕಡಿವಾಣವೂ ಇಲ್ಲವೆಂಬ ಧ್ವನಿ ಮೂಡದಿರದು. ಆದುದರಿಂದ ಕತ್ತಲೆಯ ದಾಳಿಗೆ ಕಡಿವಾಣವಿಲ್ಲವೆಂಬ ಅನುರಣನಶೀಲಸ್ವಾರಸ್ಯವು ಸ್ಫುರಿಸಿ, ಇಲ್ಲಿ ಕತ್ತಲೆಂದರೆ ಅಸುರರ ಪಾಲಿಗೆ ಶೋಕವೇ ಆಯಿತೆಂಬ ಸೂಚನೆಯೂ ಸಿಗದಿರದು. ಹೀಗೆ ತುಂಬ ಸರಳವಾದ ಒಂದು ಹೋಲಿಕೆಯು ಅದೆಷ್ಟು ದೂರಗಾಮಿಯಾದ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಬೀರುವುದೆಂಬುದಕ್ಕೆ ಇದೊಂದು

ಸಮರ್ಥೋದಾಹರಣೆ. ಅದುದರಿಂದಲೇ ಇಲ್ಲಿ "ರಶ್ಮಿ" ಶಬ್ದದ ಸ್ತ್ರೀಲಿಂಗವು ಉಪಮಾಶಾಸ್ತ್ರೀಯತೆಗೆ ಉದ್ವೇಜಕವಾಗಿಲ್ಲ.

ತುಮುಲಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ವಾನವೀರರೆಲ್ಲ ಗುಂಪುಗುಂಪುಗಳಾಗಿ ಧಾವಿಸಿ ಬಂದು ಒಬ್ಬೊಬ್ಬ ರಕ್ಕಸನಿಗೂ ನೂರು ನೂರು ಕಪಿಗಳಂತೆ ಅಟಕಾಯಿಸಿದಾಗ ಹಣ್ಣುತುಂಬಿದ ಮರಕ್ಕೆ ಹಕ್ಕಿಗಳೆರಗಿದಂತಾಯಿತೆಂದು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಏಕೈಕಂ ರಾಕ್ಷಸಂ ಸಂಖ್ಯೇ ಶತಂ ವಾನರಪುಂಗವಾಃ ।**
**ಅಭ್ಯಧಾವಂತ ಫಲಿನಂ ವೃಕ್ಷಂ ಶಕುನಯೋ ಯಥಾ ॥** (೬.೮೪.೧೫)

ರಾಮನ ಅಮೋಘಶರಗಳು ರಾಕ್ಷಸರ ಮೈಗಳಲ್ಲಿ ಹೆದ್ದಾರಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವರು ಬಾಣಗಳ ಏಟನ್ನಷ್ಟೇ ಅನುಭವಿಸಿ ಅರಿತರಲ್ಲದೆ ಆ ನಿಶಿತನಾರಾಚಗಳನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಿರುವ ಧಾನುಷ್ಕನನ್ನು ಅರಿಯಲಿಲ್ಲ. ಇದು ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಗಳ ಮೂಲಕ ಪಂಚಭೂತಗಳನ್ನು ಅರಿಯುತ್ತಾ ಸ್ವಶರೀರದಲ್ಲಿಯೇ ಇರುವ ಜೀವರು ಶಾರೀರನಾದ ಪರಮಾತ್ಮನನ್ನರಿಯದಂತಾಗಿತ್ತೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ನೀಡುವ ವೇದಾಂತಮಯವಾದ ಹೋಲಿಕೆಯು ನಿಜಕ್ಕೂ ಅದ್ಭುತ. ಹೀಗೆ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯಸಾದೃಶ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವಲ್ಲಿ ಪರವರ್ತಿಗಳಿಗೆಲ್ಲ ಆದಿಕವಿಗಳೇ ಪರಮಾಚಾರ್ಯರು:

**ಪ್ರಹರಂತಂ ಶರೀರೇಷು ನ ತೇ ಪಶ್ಯಂತಿ ರಾಘವಮ್ ।**
**ಇಂದ್ರಿಯಾರ್ಥೇಷು ತಿಷ್ಠಂತಂ ಭೂತಾತ್ಮಾನಮಿವ ಪ್ರಜಾಃ ॥** (೬.೯೪.೨೩)

ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಿರುವ ಸೀತೆಯು ಮಂತ್ರಪೂತವಾದ ಪೂರ್ಣಾಹುತಿಯು ಆಧ್ವರಾನಲದಲ್ಲಿ ಹೋಗುವಂತಿತ್ತೆಂದು ವರ್ಣಿಸುವಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಮೈಥಿಲಿಯ ಪವಿತ್ರಪಾತಿವ್ರತ್ಯವನ್ನು ಧ್ವನಿಸಿರುವುದು ಅಸಮಾನ. ಇಲ್ಲಿಯ ಅರ್ಥೋಪಮೆಯೂ ಅನನ್ಯ:

**ಪತಂತೀಂ ಸಂಸ್ಕೃತಾಂ ಮಂತ್ರೈರ್ವಸೋರ್ಧಾರಾಮಿವಾಧ್ವರೇ ।**
(೬.೧೧೯.೩೩)

ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯು ಪ್ರಾಥಮಿಕಾಲಂಕಾರಗಳ ಪೈಕಿ ತುಂಬ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿ. ಇದು ಉಪಮೆಯಷ್ಟು ಸರಳವೂ ಅಲ್ಲ, ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಷ್ಟೂ ಅಬ್ಬರದ್ದೂ ಅಲ್ಲ. ಸಂಭವನೀಯತೆಯೇ ಈ ಅಲಂಕಾರದ ಜೀವಾಳ. ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಾದರೋ ಅಧ್ಯವಸಾಯಮೂಲದ್ದಾದ ಕಾರಣ ಸಂಭವನೀಯತೆಯನ್ನೂ ಮೀರಿ ಕಲ್ಪಿತವನ್ನು ಕೂಡ ವಾಸ್ತವವೆಂಬಂತೆ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ಸಾದೃಶ್ಯವನ್ನೇ ನಚ್ಚುವ ಕಾರಣ ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಉಪಮೆ ಮತ್ತು ಅತಿಶಯಗಳ ನಡುವಣ ಸುವರ್ಣಸೇತುವೆಯಾಗಿ ವ್ಯವಹರಿಸುತ್ತದೆ.
ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳಿಗೆ ಕೊರತೆಯಿಲ್ಲ. ಹೇಳಿ ಕೇಳಿ ಎತ್ತರದ ನೋಟವೇ "ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ" (ಉತ್+ಪ್ರೇಕ್ಷೆ)ಯಾದ ಕಾರಣ ಈ ದರ್ಶನವು ಅವರಲ್ಲಿ ಸಹಜವಾಗಿ ಮೈಗೂಡಿದೆ.

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ವಾಸ್ತವಜಗತ್ತಿನ ಏರಿಳಿತಗಳೇ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಾರಣ ಇಲ್ಲಿ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಎಡೆಯಿಲ್ಲ. ಆದರೂ ಎದ್ದುತೋರುವ ಒಂದೆರಡು ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಲೇಬೇಕು.

ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆ ಸಜ್ಜಾಗುತ್ತಿರುವ ರಾಮನನ್ನು ತಂದೆ ದಶರಥನು ಕಾಣುವ ಪರಿ ಹೃದಯಂಗಮ :

**ತಂ ಪಶ್ಯಮಾನೋ ನೃಪತಿಸ್ತುತೋಷ ಪ್ರಿಯಮಾತ್ಮಜಮ್ ।**
**ಅಲಂಕಾರಮಿವಾತ್ಮಾನಮಾದರ್ಶತಲಸಂಸ್ಥಿತಮ್ ॥** (೨.೩.೩೮)

ಇಲ್ಲಿರುವುದು ತನ್ನ ಮುದ್ದಿನ ಮಗ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಕಂಡ ದಶರಥನ ಆನಂದಚಿತ್ರಣ. ಅವನಿಗೆ ಮಗನನ್ನು ಕಂಡಾಗ ಸಾಲಂಕೃತನಾದ ತಾನೇ ಕನ್ನಡಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸಿದಂತೆ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು. "ಆತ್ಮಾ ವೈ ಪುತ್ರನಾಮಾಸಿ" ಎಂಬ ಸೂಕ್ತಿಗೆ ಇದಕ್ಕಿಂತ ಸಮುಚಿತನಿದರ್ಶನ ಬೇಕೆ?

ರಾಮನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಟಾಗ ತಮಸಾನದಿಯು ಆತನನ್ನು ಅಕ್ಕರೆಯಿಂದ ತಡೆಯುವಂತೆ ಅಡ್ಡವಾಯಿತೆಂದು ಆದಿಕವಿಯು ವರ್ಣಿಸಿದ ಪರಿ ಅನಾದೃಶ:

**ದದೃಶೇ ತಮಸಾ ತತ್ರ ವಾರಯಂತೀವ ರಾಘವರ್ಮ ।** (೨.೪೫.೩೨)

ಇದೇ ಭಾವವನ್ನು ಮುಂದೆ ಕಾಳಿದಾಸನು ತನ್ನ ರಘುವಂಶದಲ್ಲಿ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಲು ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ರಥದಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ಕೊಂಡೊಯ್ಯುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಹಾದಿಯಲ್ಲೆದುರಾದ ಗಂಗೆಯು ಈ ದುಷ್ಕಾರ್ಯವು ಸಲ್ಲದೆಂದು ಅಲೆಗೈಗಳಿಂದ ತಡೆಯುವಂತಿತ್ತೆಂದು ಕವಿಯು ಮಾಡಿದ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಪ್ರಸಾದವೇ ಆಗಿದೆ.

ಅಣ್ಣನನ್ನು ಅರಸಿ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಭರತನನ್ನು ಶಂಕಿಸಿದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ರಾಮನು ತಿಳಿಯಹೇಳಿದಾಗ ಸೌಮಿತ್ರಿಯು ತನ್ನ ವರ್ತನೆಗೆ ತಾನೇ ಲಜ್ಜಿಸಿ ತನ್ನೊಳಗೆ ಹುದುಗಿಹೋದಂತಾದಳಂತೆ!

**ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ಪ್ರವಿವೇಶೇವ ಸ್ವಾನಿ ಗಾತ್ರಾಣಿ ಲಜ್ಜಯಾ ।** (೨.೯೭.೧೯)

ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪವನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. ಹೀಗೆ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ವಾಕ್ಕು ಸರ್ವಭಾವಭಣಿತಿಸಮರ್ಥ.

ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳಿಗೆ ಬರವಿಲ್ಲ. ಅಲ್ಲಿಯ ಎರಡು ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳು ಹೀಗಿವೆ:

**ಅವಶ್ಯಾಯತಮೋನದ್ಧಾ ನೀಹಾರತಮಸಾವೃತಾಃ ।**
**ಪ್ರಸುಪ್ತಾ ಇವ ಲಕ್ಷ್ಯಂತೇ ವಿಪುಷ್ಪಾ ವನರಾಜಯಃ ॥** (೩.೧೬.೨೩)

ಹೇಮಂತಸಮಯದಲ್ಲಿ ಸಮಸ್ತಲೋಕವೂ ಹಿಮವೆಂಬ ತಮಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿದ್ದಾಗ ಗಿಡ–ಮರಗಳಿಗೆ ಹೂಗಳಾದರೂ ಹೇಗೆ? ಹೀಗೆ ಚಳಿಗಾಲವೆಂಬ ಇರುಳಿನಲ್ಲಿ ವನವೆಲ್ಲ ಹೂಗಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಮುಚ್ಚಿ ಮಲಗಿರುವಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಆದಿಕವಿಗಳು ಅದ್ವಿತೀಯಕವಿಗಳೂ ಹೌದೆಂದು ಸಾಬೀತುಮಾಡಲು ಈ ಒಂದೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ ಸಾಕು.

**ಶರೈರಾವಾರಿತಸ್ತಸ್ಯ ಸಂಯುಗೇ ಪತಗೇಶ್ವರಃ ।**
**ಕುಲಾಯಮುಪಸಂಪ್ರಾಪ್ತಃ ಪಕ್ಷೀವ ಪ್ರಬಭೌ ತದಾ ॥** (೩.೫೧.೧೩)

ಸೀತೆಯ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಸೆಣೆಸಿದ ಜಟಾಯುವು ರಾವಣನ ಬಾಣಪಂಜರದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದಾಗ ಗೂಡಿನಲ್ಲಿ ಸೀಮಿತವಾದ ಬಡಹಕ್ಕಿಯಂತೆ ಕಂಡನೆಂದು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಾರೆ. ವಿಶೇಷತಃ ನಿಶಿತಶರಗಳೆಂಬ ಹುಲ್ಲುಕಡ್ಡಿಗಳ ಮೂಲಕ ಅಸ್ತವ್ಯಸ್ತವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿತವಾದ ಗೂಡನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡಾಗ ಈ ಚಿತ್ರಣದ ಸಾರ್ಥಕ್ಯ ಒಡಮೂಡದಿರದು. ಜೊತೆಗೆ ರಾವಣನ ಬಾಣಗಳು ಜಟಾಯುವಿನಂಥ ವಿಹಗೇಂದ್ರನಿಗೆ ಗೂಡಿನ ಹುಲ್ಲುಕಡ್ಡಿಗಳಷ್ಟೇ ನಿರುಪದ್ರವಿಗಳೆಂಬ ಧ್ವನಿಯೂ ಇಲ್ಲಿದೆ.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡವನ್ನಂತೂ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾಲಂಕಾರಗಳ ತವನಿಧಿಯೆನ್ನಬೇಕು. ಇಲ್ಲಿ ಹೆಜ್ಜೆ ಹೆಜ್ಜೆಗೆ ಸುಂದರವಾದ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳು ತಾಂಡವಿಸುತ್ತವೆ. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾಲಂಕಾರವು ವರ್ಣನಾವ್ಯಾಪಾರದಲ್ಲಂತೂ ತನ್ನ ವಿಶ್ವರೂಪವನ್ನು ತೋರುವುದೆನ್ನಬೇಕು. ಅಂಥ ಕೆಲವು ಸಂದರ್ಭಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸೋಣ. ಈ ಕಾಂಡದ ಮೊದಲಿಗೇ ಬರುವ ವಸಂತವರ್ಣನೆಯು ಶ್ರೀರಾಮನ ವಿಪ್ರಲಂಭಶೃಂಗಾರಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಥವಾದ ಉದ್ದೀಪನವಿಭಾವವಾಗಿದೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವು ಸೊಲ್ಲುಗಳು ಹೀಗಿವೆ:

**ಮತ್ತಕೋಕಿಲಸಂನಾದೈರ್ನರ್ತಯನ್ನಿವ ಪಾದಪಾನ್ ।**
**ಶೈಲಕಂದರನಿಷ್ಕ್ರಾಂತಃ ಪ್ರಗೀತ ಇವ ಚಾನಿಲಃ ॥** (೪.೧.೧೫)

**ಅಮೀ ಸಂಸಕ್ತಶಾಖಾಗ್ರಾ ಗ್ರಥಿತಾ ಇವ ಪಾದಪಾಃ ।** (೪.೧.೧೬)
**ಸ್ತಬಕೈಃ ಪವನೋತ್ಕ್ಷಿಪ್ತೈಸ್ತರ್ಜಯನ್ನಿವ ಮಾಂ ಸ್ಥಿತಃ ।** (೪.೧.೫೯)

**ಪಾದಪಾತ್ಪಾದಪಂ ಗಚ್ಛನ್ ಶೈಲಾಚ್ಛೈಲಂ ವನಾದ್ವನಮ್ ।**
**ವಾತಿ ನೈಕರಸಾಸ್ವಾದಸಂಮೋದಿತ ಇವಾನಿಲಃ ॥** (೪.೧.೮೬)
**ಪುಷ್ಪಮಾಸೇ ಹಿ ತರವಃ ಸಂಘರ್ಷಾದಿವ ಪುಷ್ಪಿತಾಃ ।** (೪.೧.೯೨)

ಆ ಮಧುಮಾಸದ ಮಾರುತವು ಕೋಗಿಲೆಗಳ ಹಾಡಿಗೆ ಮರ–ಗಿಡಗಳನ್ನು ಕುಣಿಸುವಂತಿತ್ತು. ಗಿರಿ–ಕಂದರಗಳಲ್ಲಿ ಸುತ್ತಿ ಸುಳಿದು ಬರುವಾಗ ತಾನೇ ಹಾಡುವಂತಿತ್ತು. ಈ ಕುಸುಮಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕೊನರಿದ ತರು–ಲತೆಗಳು ತಮ್ಮ ಕೊಂಬೆ–ರಂಬೆಗಳನ್ನು ಅದೆಷ್ಟು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹೆಣೆದುಕೊಂಡಿದ್ದವೆಂದರೆ ಇಡಿಯ ವನರಾಜಿಯೇ ಒತ್ತಾಗಿ ಪೋಣಿಸಿದಂತಿತ್ತು. ಇಂಥ ವಸಂತವೈಭವದ ವಿಪಿನಸ್ಥಲಿಯು ತನ್ನ ಕೊಂಬೆ–ರಂಬೆಗಳ ಬೆರಳುಗಳನ್ನೆತ್ತಿ ಗಾಳಿಯ ಬೀಸಿನ ಮೂಲಕ ರಾಮನನ್ನೇ

ಗದರಿಸುವಂತಿತ್ತು. ಮರದಿಂದ ಮರಕ್ಕೆ, ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಬೆಟ್ಟಕ್ಕೆ, ಕಾಡಿನಿಂದ ಕಾಡಿಗೆ ಸುಳಿದಾಡುತ್ತಿದ್ದ ತಂಗಾಳಿಯು ಅನೇಕ ರಸಗಳನ್ನು ಆಸ್ವಾದಿಸಿ ನಲಿಯುವ ರಸಿಕನಂತಿತ್ತು. ಈ ಸುಗ್ಗಿಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬನದ ತರು-ಲತೆಗಳೆಲ್ಲ ಪರಸ್ಪರಸ್ಪರ್ಧೆಯಿಂದ ಮಲರಾಂತು ಮೆರೆವಂತೆ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು.

ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಉಜ್ವಲವಾಗಿ, ನೈಜವಾಗಿ ವಸಂತದ ಪ್ರತೀತಿಯನ್ನು ಯಾವ ಕವಿ ತಾನೆ ಕಟ್ಟಿಕೊಟ್ಟಾನು?

ಮಳೆಗಾಲದ ಬಣ್ಣನೆಯಲ್ಲಂತೂ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳು ಸಾಲುಗಟ್ಟಿವೆ. ವರ್ಷಾವಿಜೃಂಭಣೆಗೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಂಥ ಪ್ರಖರಾಲಂಕಾರವು ಸಾರ್ಥಕವಿಭೂಷಣ. ಇಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವು ಸೊಲ್ಲುಗಳು ಹೀಗಿವೆ:

**ಸ್ನಿಗ್ಧೈರಭ್ರಪಟಚ್ಛೇದೈರ್ಬದ್ಧವ್ರಣಮಿವಾಂಬರಮ್** । (೪.೨೮.೫)

ಸಂಧ್ಯಾಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಗಸವನ್ನು ಕವಿದ ಮಳೆಮುಗಿಲುಗಳು ಬಾನಿಗಾದ ಗಾಯಗಳಿಗೆ ಕಟ್ಟಿದ ಪಟ್ಟಿಗಳಂತೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದವಂತೆ! ಈ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯ ಹೊಸತನ ಇಂದಿಗೂ ಹಸುರಾಗಿದೆ. ರತ್ನಾಕರ, ಶಿವಸ್ವಾಮಿ ಮುಂತಾದ ಮುಂದಿನ ವಿದ್ವತ್ಕವಿಗಳೆಲ್ಲ ಈ ಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ತಮ್ಮ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಧಾರಾಳವಾಗಿ ಬಳಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

**ಮಂದಮಾರುತನಿಶ್ವಾಸಂ ಸಂಧ್ಯಾಚಂದನರಂಜಿತಮ್** ।
**ಆಪಾಂಡುಜಲದಂ ಭಾತಿ ಕಾಮಾತುರಮಿವಾಂಬರಮ್** ॥ (೪.೨೮.೬)

ಆಗಸವು ಮಂದಮಾರುತವೆಂಬ ನೆಮ್ಮದಿಯ ನಿಟ್ಟುಸಿರಿನಿಂದ, ಸಂಜೆಗೆಂಪಿನ ರಕ್ತಚಂದನಲೇಪನದಿಂದ, ಬೆಳ್ಮುಗಿಲಿನ ಶುಭ್ರವಸ್ತ್ರದಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸುತ್ತಾ ಕಾಮಾತುರನಂತೆ ಭಾಸವಾಗಿದೆಯೆಂಬ ಈ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯು ಮೂರು ಪಾದಗಳಲ್ಲಿ ರೂಪಕದ ಬೆಂಬಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಮೃದುಮಧುರವಾದ ದಂತ್ಯಾಕ್ಷರಗಳ ಹಾಗೂ ಅನುನಾಸಿಕಗಳ ಅಂದವನ್ನೂ ಗಳಿಸಿ ಮತ್ತಷ್ಟು ಸೊಗಸಾಗಿದೆ. ಇಂಥ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ಕೊಡುವಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಲೇಖನಿ ಗಳಿಸಿದ ಸಿದ್ಧಿ ಅನನ್ಯಾದೃಶ.

**ಮೇಘಕೃಷ್ಣಾಜಿನಧರಾ ಧಾರಾಯಜ್ಞೋಪವೀತಿನಃ** ।
**ಮಾರುತಾಪೂರಿತಗುಹಾಃ ಪ್ರಾಧೀತಾ ಇವ ಪರ್ವತಾಃ** ॥ (೪.೨೮.೧೦)

ಕಾರ್ಮುಗಿಲೆಂಬ ಕೃಷ್ಣಾಜಿನವನ್ನು ಹೊದ್ದು, ಬೆಳ್ಳಗೆ ಭೋರ್ಗರೆದು ಸುರಿಯುವ ಅಬ್ಬಿಗಳೆಂಬ ಯಜ್ಞೋಪವೀತಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿ, ಪರ್ವತವಟುಗಳು ತಮ್ಮ ಗುಹಾವದನಗಳಲ್ಲಿ ಸುಳಿದಾಡುವ ಕಾರ್ಗಾಳಿಯ ಮೂಲಕ ವೇದಾಧ್ಯಯನವನ್ನು ಮಾಡುವಂತಿದೆ! ಈ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಂತೂ ಸಂಸ್ಕೃತಸಾಹಿತ್ಯದ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಭಾರತೀಯಸಾಹಿತ್ಯದ ಸೀಮೆಯಲ್ಲಿಯೇ ನಿರುಪಮವಾದ ಆರ್ಷೇಯಚಿತ್ರಣ. ಈ ಶ್ಲೋಕದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧವು ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದರೂ ತಾತ್ಪರ್ಯದಿಂದ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯನ್ನೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸುವುದು ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞರಿಗೆ ಸುವೇದ್ಯ.

**ಕಶಾಭಿರಿವ ಹೈಮೀಭಿರ್ವಿದ್ಯುದ್ಭಿರಭಿತಾಡಿತಮ್** ।
**ಅಂತಸ್ತನಿತಘೋಷಂ ಸವೇದನಮಿವಾಂಬರಮ್** ॥ (೪.೨೮.೧೧)

ತನಿಮಿಂಚುಗಳೆಂಬ ಹೊನ್ನಚಾವಟಿಗಳಿಂದ ಬಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟ ಕಾರ್ಮುಗಿಲು ಗುಡುಗಿದಾಗಲೆಲ್ಲ ಅದು ನೋವಿಗೆ ಚೀರಿಡುವಂತಿತ್ತು! ಈ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯವು ಪ್ರಕೃತಿಯನ್ನೇ ಜೀವಂತವಾಗಿ ಪರಿಭಾವಿಸದೆ ಸಿದ್ಧಿಸದ ಸೌಂದರ್ಯ. ಇಂಥ ಚೆಲುವಿಗೆ ಕಾಳಿದಾಸನಂಥವನೂ ಮರುಳಾಗಿರುವುದು ಆತನ ಮೊದಲ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿಯೇ ದೃಷ್ಟಚರ.

**ಮೇಘಾಭಿರಾಮಾ ಪರಿಸಂಪತಂತೀ**
**ಸಂಮೋದಿತಾ ಭಾತಿ ಬಲಾಕಪಂಕ್ತಿಃ** ।
**ವಾತಾವಧೂತಾ ವರಪೌಂಡರೀಕೀ**
**ಲಂಬೇವ ಮಾಲಾ ರಚಿತಾಂಬರಸ್ಯ** ॥ (೪.೨೮.೨೩)

ಮಳೆಮುಗಿಲಿನೆಡೆ ಮುದದಿಂದ ಹಾರುತ್ತಿರುವ ಕೊಕ್ಕರೆಸಾಲು ಬಾನ್ದೇವಿಯು ತಳೆದ, ಮಳೆಗಾಳಿಗೆ ತೊನೆವ ಬೆಳ್ದಾವರೆಗಳ ಮಾಲೆಯೋ ಎಂಬಂತಿತ್ತಂತೆ! ಉಪಮೆಯೋ ಎಂಬಷ್ಟು ನೈಜವಾಗಿರುವ ಈ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯ ಮಂದಶ್ರುತಿಗಾನವು ನಿಜಕ್ಕೂ ಅಭಿರಾಮ.

**ಬಾಲೇಂದ್ರಗೋಪಾಂತರಚಿತ್ರಿತೇನ**
**ವಿಭಾತಿ ಭೂಮಿರ್ನವಶಾದ್ವಲೇನ ।**
**ಗಾತ್ರಾನುವೃತ್ತೇನ ಶುಕಪ್ರಭೇಣ**
**ನಾರೀವ ಲಾಕ್ಷೋಕ್ಷಿತಕಂಬಲೇನ ॥** (೪.೨೮.೨೪)

ಕೆಂಬಣ್ಣದ ಇಂದ್ರಗೋಪಕ್ರಿಮಿಗಳ ಚಿತ್ತಾರದಿಂದ ಚೆಲುವಾದ ಹುಲ್ಲಿನ ಹಾಸು ಅರಗಿನ ಕಸೂತಿಯಿಂದ ಸೊಗಯಿಸಿದ ಹಸುರುಪತ್ತಲವನ್ನು ತಿರೆತಾಯಿಗೆ ತೊಡಿಸಿದಂತಿತ್ತು! ಈ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯ ಅಂದ ಅಸಮಾನ. ಭೂದೇವಿಗೆ ತಾಯ್ತನವು ತುಂಬಿ ಬರುವುದು ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿಯೇ. ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಗರ್ಭವತಿಗೆ ತುಂಬುಹಸುರಿನ ಸೀರೆಯುಡಿಸುವುದು ಚಿರಸಿದ್ಧಸಂಪ್ರದಾಯ. ಇಂಥ ಜಾನಪದಜೀವನಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ನಮ್ಮ ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಸಂಸ್ಕಾರಾನುಸಾರ ಆದಿಕವಿಯಲ್ಲಿ ಅನುಭವಿಸಬಹುದು.

**ಅಂಗಾರಚೂರ್ಣೋತ್ಕರಸಂನಿಕಾಶೈಃ**
**ಫಲೈಃ ಸುಪರ್ಯಾಪ್ತರಸೈಃ ಸಮೃದ್ಧೈಃ ।**
**ಜಂಬೂದ್ರುಮಾಣಾಂ ಪ್ರವಿಭಾಂತಿ ಶಾಖಾ**
**ನಿಲೀಯಮಾನಾ ಇವ ಷಟ್ಪದೌಘೈಃ ॥** (೪.೨೮.೩೧)

ಇದ್ದಿಲ ತುಂಡುಗಳನ್ನು ಅಂಟಿಸಿದಂತೆ ನೇರಿಳೆಮರಗಳಲ್ಲಿ ತನಿವಣ್ಣುಗಳು ತೋರುತ್ತಿವೆ. ಅವು ಆ ಮರಗಳಿಗೆ ಮುತ್ತಿಕೊಂಡ ದುಂಬಿಗಳೋ ಎಂಬಂತೆ ಭಾಸವಾಗುತ್ತಿವೆ! ಇದಂತೂ ಅತ್ಯದ್ಭುತಕಲ್ಪನೆ. ಈ ಪದ್ಯದ ಪೂರ್ವಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಉಪಮೆಯಿದ್ದರೂ ಪ್ರಧಾನವ್ಯಪದೇಶವು ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿಯೇ. ಇಂಥ ಕಲ್ಪನೆಗಳು ಮುಂದೆ ಕಾವ್ಯ-ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಕೋಡಿವರಿದದ್ದನ್ನು ಅಸಂಖ್ಯಸುಭಾಷಿತಕೋಶಗಳ ಮೂಲಕ ಮನಗಾಣಬಹುದು.

**ಕ್ವಚಿತ್ಪ್ರಗೀತಾ ಇವಾ ಷಟ್ಪದೌಘೈಃ**
**ಕ್ವಚಿತ್ಪ್ರನೃತ್ತಾ ಇವ ನೀಲಕಂಠೈಃ ।**
**ಕ್ವಚಿತ್ಪ್ರಮತ್ತಾ ಇವ ವಾರಣೇಂದ್ರೈ-**
**ರ್ವಿಭಾಂತ್ಯನೇಕಾಶ್ರಯಿಣೋ ವನಾಂತಾಃ ॥** (೪.೨೮.೩೩)

ಮಳೆಗಾಲದ ವಿಪಿನಪರಿಸರವು ಅಲ್ಲಲ್ಲಿಯ ಭ್ರಮರಝುಂಕಾರದಿಂದ ಹಾಡುತ್ತಿದ್ದಂತೆ, ಅಲ್ಲಲ್ಲಿಯ ಮತ್ತಮಯೂರಗಳ ಚಲನೆಯಿಂದ ನೃತ್ತಕ್ಕೆ ಸಜ್ಜಾದಂತೆ, ಅಲ್ಲಲ್ಲಿಯ ಗಂಧಸಿಂಧುರಗಳ ಉನ್ಮತ್ತವರ್ತನೆಯಿಂದ ಮದಿಸಿದಂತೆ ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು! ಇಲ್ಲಿ ಇಡಿಯ ಕಾಡೇ ಮಳೆಯೆಂಬ ಮದ್ಯವನ್ನು ಕುಡಿದು ಅಮಲೇರಿದಂತೆ ಕಲ್ಪಿಸಿದ ಚಿತ್ರಣವು ಹೃದಯಂಗಮ.

**ಕದಂಬಸರ್ಜಾರ್ಜುನಕಂದಲಾಢ್ಯಾ**
**ವನಾಂತಭೂಮಿರ್ನವವಾರಿಪೂರ್ಣಾ ।**
**ಮಯೂರಮತ್ತಾಭಿರುತಪ್ರನೃತ್ತೈ-**
**ರಾಪಾನಭೂಮಿಪ್ರತಿಮಾ ವಿಭಾತಿ ॥** (೪.೨೮.೩೪)

ಕದಂಬ, ಸರ್ಜಾ, ಬಿಳಿಮತ್ತಿ, ನೀರುಬಾಳೆ ಮುಂತಾದ (ಮದ್ಯವನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಬಳಕೆಯಾಗುವ) ಮರ-ಗಿಡಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ, ಮಾದಕವಾಗಿ ಕೇಕೆ ಹಾಕಿ ಕುಣಿಯುವ ನವಿಲುಗಳಿಂದ ಒಡಗೂಡಿ, ಇಡಿಯ ವನಭೂಮಿಯೇ ಹೆಂಡದಂಗಡಿಯಾಗಿ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು! ಇಂಥ ಅವೆಷ್ಟೋ ಚಿತ್ರಗಳ ಮೂಲಕ ಆದಿಕವಿಗಳು ತಮ್ಮ ಮಡಿವಂತಿಕೆಯ ಸೊಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲದ ಕಲ್ಪಕತೆಯನ್ನು ಮೆರೆದಿದ್ದಾರೆ: ನಿಜವಾದ ಕವಿಗೆ ಬೇಕಾದ ಹೃದ್ವೈಶಾಲ್ಯವನ್ನು ನಿರೂಪಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಷಡ್ಪಾದತಂತ್ರೀಮಧುರಾಭಿಧಾನಂ**
**ಪ್ಲವಂಗಮೋದೀರಿತಕಂಠತಾಲಮ್ ।**
**ಆವಿಷ್ಕೃತಂ ಮೇಘಮೃದಂಗನಾದೈ-**
**ರ್ವನೇಷು ಸಂಗೀತಮಿವ ಪ್ರವೃತ್ತಮ್ ॥** (೪.೨೮.೩೬)

ದುಂಬಿಗಳ ಝುಂಕಾರವೆಂಬ ತಂತ್ರೀವಾದ್ಯಗಳಿಂದ, ಕಪ್ಪೆಗಳ ವಟಗುಟ್ಟುವಿಕೆಯೆಂಬ ಶುಷ್ಕಾಕ್ಷರಪಾಠದಿಂದ (ಇದನ್ನೇ ಸಮಸಾಮಯಿಕಸಂಗೀತದಲ್ಲಿ "ಜತಿ" ಅಥವಾ "ಸೊಲ್ಲುಕಟ್ಟು" ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ), ಮೊಳಗುವ ಮುಗಿಲುಗಳ ಮೃದಂಗನಾದದಿಂದ ಕಾಡುಗಳಲ್ಲಿ ವಾದ್ಯಗೋಷ್ಠಿಯ ಸಂಗೀತಕಾರ್ಯಕ್ರಮವೇ ಪ್ರವರ್ತಿಸಿದಂತಿತ್ತು! ಇದು ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಲಾಭಿಜ್ಞತೆಗೂ ಸಾಕ್ಷಿ.

ಶರತ್ಕಾಲದ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿಯೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾದೀಕ್ಷೆಯು ಮುಂದುವರೆದಿದೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಒಂದು ಶ್ಲೋಕ ಉಲ್ಲೇಖನೀಯ:

**ಅಭಿವೃಷ್ಟಾ ಮಹಾಮೇಘೈರ್ನಿರ್ಮಲಾಶ್ಚಿತ್ರಸಾನವಃ ।**
**ಅನುಲಿಪ್ತಾ ಇವಾಭಾಂತಿ ಗಿರಯಶ್ಚಂದ್ರರಶ್ಮಿಭಿಃ ॥** (೪.೩೦.೨೭)

ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಮಹಾಮಜ್ಜನವನ್ನು ಮಾಡಿದ ಪರ್ವತಪ್ರವರಗಳು ಇದೀಗ ಶರತ್ಕಾಲದ ನಿರ್ಮಲೇಂದುಕಾಂತಿಯಲ್ಲಿ ಚಂದನಲೇಪನವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡಂತಿದೆಯಂತೆ! ಬೆಳ್ದಿಂಗಳಿನಲ್ಲಿ ಬೆಟ್ಟ-ಬೆಟ್ಟಗಳೂ ಮಿಂದೆದ್ದ ಭವ್ಯದೃಶ್ಯವನ್ನು ಕಾಣದ ಮನಸ್ಸು ಇಂಥ ವರ್ಣನೆಯನ್ನು ಮಾಡಲಾರದು.

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕಥಾನಿರೂಪಣೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿಯೂ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಅಷ್ಟೇಕೆ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ಸಂವಾದಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದು ತಲೆದೋರುತ್ತದೆ. ತನ್ನ ಭುವನಕೋಶಪ್ರಜ್ಞೆಗೆ ಬೆರಗಾದ ರಾಮನನ್ನು ಕುರಿತು ಸುಗ್ರೀವನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ–ವಾಲಿಯು ಬೆನ್ನಟ್ಟಿ ಬರುವಾಗ ತಾನು ಜಗವನ್ನೆಲ್ಲ ಸುತ್ತಿದ ಕಾರಣ ಇಡಿಯ ಭೂಮಿಯೇ ಕೈಗನ್ನಡಿಯಂತೆ ಕಾಣುತ್ತಿತ್ತು. ಇಡಿಯ ಭೂಗೋಳವೇ ಅಲಾತಚಕ್ರದಂತೆ (ಕೊಳ್ಳಿಯೊಂದನ್ನು ಗಿರಗಿರನೆ ತಿರುಗಿಸಿದಾಗ ಮೂಡುವ ಬೆಳಕಿನ ವರ್ತುಲದಂತೆ) ತೋರುತ್ತಿತ್ತು, ಸಮುದ್ರವು ಹಸುವಿನ ಗೊರಸಿನ ಗುರುತಿನಲ್ಲಿ ಹಿಡಿಸುವ ನೀರಿನಷ್ಟಾಗಿತ್ತು:

**ಆದರ್ಶತಲಸಂಕಾಶಾ ತತೋ ವೈ ಪೃಥಿವೀ ಮಯಾ ।**
**ಅಲಾತಚಕ್ರಪ್ರತಿಮಾ ದೃಷ್ಟಾ ಗೋಷ್ಪದವತ್ತದಾ ॥** (೪.೪೬.೧೩)

ವಾನರಯೂಥವು ಕಂಡ ಕಡಲು ಸಮಸ್ತ ಜಗತ್ತಿನ ಪ್ರತಿಬಿಂಬದಂತೆ ತೋರಿತಂತೆ!

**ಕೃತ್ಸ್ನಂ ಲೋಕಸ್ಯ ಮಹತಃ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಮಿವ ಸ್ಥಿತಮ್ ।** (೪.೬೪.೪೩)

ಹನೂಮಂತನು ಹಾರುವಾಗ ಆತನ ಅಬ್ಬರಕ್ಕಂಜಿದ ಹಾವುಗಳು ಮಹೇಂದ್ರಪರ್ವತದ ಬಿಲಗಳಿಂದ ಬುಸುಗುಟ್ಟುತ್ತ ಅರ್ಧಾರ್ಧವಾಗಿ ಹೊರಬಿದ್ದಾಗ ಇಡಿಯ ಬೆಟ್ಟವೇ ಪಟಪಟಿಸುವ ಪತಾಕೆಗಳಿಂದ ಸಿಂಗಾರಗೊಂಡಂತೆ ತೋರಿತಂತೆ!

**ನಿಶ್ವಸದ್ಭಿಸ್ತದಾತ್ಯೈಸ್ತು ಭುಜಂಗೈರರ್ಧನಿಸ್ಸೃತೈಃ ।** (೪.೪೬.೪೮)
**ಸಪತಾಕ ಇವಾಭಾತಿ ಸ ತದಾ ಧರಣೀಧರಃ ॥** (೪.೪೬.೪೯)

ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದೊಂದು ಮಾತುಗಳೂ ವ್ಯಂಜಕ. ಆನಂದವರ್ಧನನು ಹೇಳುವ ಸಾರ್ಥಕಾಲಂಕಾರಗಳ ಸಮಸ್ತಲಕ್ಷಣಗಳೂ ಇಲ್ಲಿವೆ. ಹೆಚ್ಚೇನು, ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಬಲುಮಟ್ಟಿನ ವಾಕ್ಯವಕ್ರತೆಯ ಪರಿಣಾಮವೇ ಇದು. ಇಲ್ಲಿ ಹೊಯ್ದಾಡುವ ಪತಾಕೆಗಳನ್ನು ಸೂಚಿಸುವ ಹಾವುಗಳ ಹೋಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯಂಗಸೌಂದರ್ಯವಿದೆ. ಆ ಹಾವುಗಳು ತಮ್ಮ ಬಿಲಗಳಿಂದ ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹೊರಬಂದಿದಲ್ಲಿ ಈ ಹೋಲಿಕೆಗೆ ಔಚಿತ್ಯವಿರುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವುಗಳ ಅರೆಬರೆಯಾದ ಹೊರಹೊಮ್ಮಿಕೆಯೇ ಇಲ್ಲಿಯ ಸೂಕ್ಷ್ಮಸ್ವಾರಸ್ಯ. ಇದಕ್ಕೆ ಬಣ್ಣಕಟ್ಟುವಂತೆ ಬಾವುಟಗಳ ಹೊಯ್ದಾಟವೂ ತನ್ಮೂಲಕ ಹೊಮ್ಮುವ ಸದ್ದೂ ಹಾವುಗಳ ಸಹಜವಾದ ಹೆಡೆಯಾಟ ಮತ್ತು ನುಲಿದಾಟಗಳಲ್ಲಿ ಬುಸುಗ್ಗುಟ್ಟುವಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಅನ್ಯಾದೃಶವಾಗಿ ಹೊಂದಿಬಂದಿವೆ. ಹೀಗೆ ಚಿಕ್ಕ ಶ್ಲೋಕವೊಂದರೊಳಗೆ ಪ್ರತಿಪದವನ್ನೂ ಧ್ವನನಶೀಲವಾಗಿ ಶಿಲ್ಪಿಸುವಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿ ತೋರಿದ ಕೌಶಲ ಮುಂದಿನ ಎಲ್ಲ ಕವಿಗಳಿಗೂ ನಿಲುಕಲಾಗದ ಎತ್ತರವೆನ್ನಬೇಕು.

ಸುಂದರಕಾಂಡವು ಕೂಡ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಾವೀಚಿಗಳ ಆಕರವಾದ ಅಮೃತೋದಧಿ. ಆರಂಭದಲ್ಲಿಯೇ ಹನೂಮಂತನ ವ್ಯೋಮವ್ಯಾಪಕಲಂಘನವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವಾಗ ಆ ಭವ್ಯತೆಗೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳೇ ಶರಣ್ಯವೆಂದು ಆದಿಕವಿಗಳು ಭಾವಿಸಿದಂತಿದೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಒಂದೆರಡು ಸೂಕ್ತಿಗಳು ಸರ್ವಥಾ ಸ್ಮರಣೀಯ:

**ಪಿಬನ್ನಿವ ಬಭೌ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಸೋರ್ಮಿಮಾಲಂ ಮಹಾರ್ಣವಮ್ ।**
**ಪಿಪಾಸಿಸುವ ಚಾಕಾಶಂ ದದೃಶೇ ಸ ಮಹಕಪಿಃ ॥** (೫.೧.೫೭)

ಹನೂಮಂತನು ಹಾರುತ್ತಿರುವಾಗ ತರಂಗಪರಿಪ್ಲುತವಾದ ಶರಧಿಯನ್ನೇ ಕುಡಿಯುವಂತೆ ಕಂಡನಂತೆ। ಆಗಸವನ್ನವನು ಎವೆಯಿಕ್ಕದೆ ನಿಟ್ಟಿಸುವಾಗ ಅದನ್ನೇ ಹೀರುತ್ತಿರುವನಂತೆ ತೋರಿದನಂತೆ। ಹೀಗಲ್ಲದೆ ವಾಯುಪುತ್ರನ ಅಮೇಯಗಾತ್ರ-ಪಾತ್ರಗಳ, ಕಾರ್ಯ-ಧೈರ್ಯಗಳ ಕಲ್ಪನೆ ನಮಗಾಗದು.

ಅವನ ವಾಯುವೇಗದ ಲಂಘನಕ್ಕೆ ಸಮುದ್ರದ ಮೇಲ್ಮೆಯು ತತ್ತರಿಸಿದ ಪರಿಯನ್ನೂ ಮುನಿಗಳು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಸ ತು ತಸ್ಯೋರುವೇಗೇನ ಸೋನ್ಮಾದ ಇವ ಲಕ್ಷ್ಯತೇ ।** (೫.೧.೬೮)

ಅಲೆಗೈಗಳಿಂದ ಹೊಯ್ದಾಡುತ್ತ, ನೊರೆಯನ್ನು ಕಕ್ಕುತ್ತ, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಮೊರೆಯುತ್ತ ತತ್ತರಿಸುವ ಬಡಗಡಲಿನ ಚಿತ್ರವು ನಮ್ಮೆದುರು ಸುಳಿದಾಗ ನಿಜಕ್ಕೂ ಅದು ಅಪಸ್ಮಾರಸಂತ್ರಸ್ತನಂತೆ ತೋರದಿರದು. ಇದನ್ನೇ ಮಾಘನು ತನ್ನ "ಶಿಶುಪಾಲವಧ" ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದರೂ ಆದಿಕವಿಯ ಔಚಿತ್ಯವು ಅವನಿಗೆಟುಕದೆ ಅಲ್ಲಿ ಈ ಚಿತ್ರವು ಜುಗುಪ್ಸಾವಹವಾಗಿದೆ. ಮಹಾಕವಿಯಿಂದ ಅನಾಮತ್ತಾಗಿ ಉಕ್ತಿವೈಚಿತ್ರ್ಯಗಳನ್ನು ಲಪಟಾಯಿಸಬಹುದು; ಆದರೆ ಶಕ್ತಿಸಂಪೃಕ್ತಿಯು ಬೇಕಲ್ಲ! ಅದಿಲ್ಲದೆ ಔಚಿತ್ಯವೂ ತನ್ಮೂಲಕ ರಸಸಿದ್ಧಿಯೂ ಮೃಗಮರೀಚಿಕೆಯಷ್ಟೇ.

ಮುಂದೆ ರಾವಣಾಂತಃಪುರದ ರಮಣಿಯರನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವಾಗ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಲ್ಪನಾಪ್ರಾವಣ್ಯವು ಮುಗಿಲುಮುಟ್ಟುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಒಂದು ಅನರ್ಘಭಾಸ್ವರವಾದ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ ಹೀಗಿದೆ:

**ರಾವಣೇ ಸುಖಸಂವಿಷ್ಟೇ ತಾಸ್ತ್ರಿಯೋ ವಿವಿಧಪ್ರಭಾಃ ।** (೫.೯.೬೭)
**ಜ್ವಲಂತಃ ಕಾಂಚನಾದೀಪಾಃ ಪ್ರೈಕ್ಷಂತಾನಿಮಿಷಾ ಇವ ।** (೫.೯.೬೮)

ರಾವಣನು ಮಲಗಿದ್ದ ಕಾರಣ ಶಂಕೆಯಿಲ್ಲದೆ ನಿದ್ರಾಮುದ್ರಿತಸುಂದರಿಯರನ್ನು ಕಾಣಬಹುದೆಂಬ ಕಾಂಕ್ಷೆಯಿಂದ ಅಂತಃಪುರದ ಹೊನ್ನ ಹಣತೆಗಳು ತಮ್ಮ ಸ್ತಬ್ಧಸ್ತಿಮಿತಜ್ವಾಲೆಗಳ ಮೂಲಕ ಅವರನ್ನು ಎವೆಯಿಕ್ಕದೆ ನಿಟ್ಟಿಸುವಂತೆ ತೋರುತ್ತಿತ್ತೆಂಬ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಜಗತ್ತಿನ ಕವಿಕಲ್ಪಕತೆಯೆಲ್ಲ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಸೆರೆಯಾಗಲು ಸಮ್ಮತಿಸಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ "ಅನಿಮಿಷ" ಪದವು ತನ್ನ ಶ್ಲಿಷ್ಟಾರ್ಥದಿಂದ ಮತ್ತೂ ಮಾದಕವಾಗಿದೆ. ಏಕೆಂದರೆ ದೀಪಗಳು ಎವೆಯಿಕ್ಕದೆ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದುವೆಂಬ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯೊಡನೆ ಅನಿಮಿಷರ–ಅರ್ಥಾತ್ ದೇವತೆಗಳ–ಹಾಗೆ ದೀಪಗಳು ನಿರುಕಿಸುತ್ತಿದ್ದುವೆಂಬ ಅರ್ಥವೂ ಹೊಮ್ಮುತ್ತದೆ. ಇದು ಉಪಮೆಯೇ ಆಗಿದೆ. ಜೊತೆಗೆ ರಾವಣನ ಅಂಜಿಕೆಯ ಕಾರಣ ಅವನ ಅಂತಃಪುರದಲ್ಲಿದ್ದ ಸುರಸುಂದರಿಯರನ್ನು ಕಾಣಲು ದೇವತೆಗಳೂ ರೂಪಾಂತರದಿಂದ ಬಂದು ಕದ್ದುಮುಚ್ಚಿ ನೋಡಬೇಕೆಂಬ ಧ್ವನಿಯೂ ತಲೆದೋರಿ ಪ್ರಕಾರಾಂತರವಾಗಿ ರಾವಣನ ವಿಕ್ರಮವೇ ಅನುರಣಿಸುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ ಇದು ವಸ್ತುಧ್ವನಿ, ಅಲಂಕಾರಧ್ವನಿ ಮತ್ತು ರಸಧ್ವನಿಗಳಿಗೆ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅನನ್ಯಾಯತನವೆನಿಸಿದೆ. ಇಂಥ ಕಾವ್ಯಸಿದ್ಧಿಯು ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಆದಿಕವಿಗೆ ಸಂದಿರುವುದು ನಮ್ಮ ಪುಣ್ಯ !

ಅಶೋಕವನದಲ್ಲಿ ಸೀತಾನ್ವೇಷಣತತ್ಪರನಾದ ಹನೂಮಂತನಿಗೊಂದು ಕ್ರೀಡಾಶೈಲವು ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲಿ ಹರಿಯುತ್ತಿದ್ದ ನಿರ್ಝರಿಣಿಯೂ ತತ್ಪರಿಸರದ ವನಸೌಂದರ್ಯವೂ ಅತಿಲೋಕಮನೋಹರತೆಯಿಂದ ಹೀಗೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷಿತವಾಗಿವೆ:

**ದದರ್ಶ ಚ ನಗಾತ್ತಸ್ಮಾನ್ನದೀಂ ನಿಪತಿತಾಂ ಕಪಿಃ ।**
**ಅಂಕಾದಿವ ಸಮುತ್ಪತ್ಯ ಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಪತಿತಾಂ ಪ್ರಿಯಾಮ್॥**

**ಜಲೇ ನಿಪತಿತಾಗ್ರೈಶ್ಚ ಪಾದಪೈರುಪಶೋಭಿತಾಮ್।**
**ವಾರ್ಯಮಾಣಾಮಿವ ಕ್ರುದ್ಧಾಂ ಪ್ರಮದಾಂ ಪ್ರಿಯಬಂಧುಭಿಃ ॥**
(೫.೧೪.೨೯.೩೦)

ಶೈಲದಿಂದ ಸುರಿದುಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ನಿರ್ಝರಿಣೀಯು ಪತಿಯ ತೊಡೆಯಿಂದ ಜಾರಿಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಭಾಮಿನಿಯಂತೆ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು! ಆ ಝರಿಯ ಪಾತ್ರದೊಳಗೆ ಕೊಂಬೆ–ರೆಂಬೆಗಳನ್ನು ಚಾಚಿದ ಇರ್ಕೆಲದ ಮರಗಳು ಹೀಗೆ ಕನಲಿ ದೂರ ಸರಿಯುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರಮದೆಯನ್ನು ಅನುನಯಿಸುವ ಬಂಧುವರ್ಗದಂತಿದ್ದುವು! ಇಂಥ ಶೃಂಗಾರಪಾರಮ್ಯದ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ರಾವಣನ ಪ್ರಮದವನದ ವರ್ಣನಾವಸರದಲ್ಲಿ ಕಲ್ಪಿಸಿದ ಆದಿಕವಿಯು ಕೌಶಲ ಅಸಮಾನ. ಪ್ರಿಯನ ತೊಡೆಯಿಂದ ಜಾರಿಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರಮದೆಗೆ ಬೆಟ್ಟದಬ್ಬಿಯನ್ನು ಒಪ್ಪವಿಟ್ಟ ಈ ಪ್ರತಿಭೆಗೆ ಶರಣಾಗಿಯೇ ಕಾಳಿದಾಸನು ತನ್ನ ಮೇಘದೂತಕಾವ್ಯದ ಪೂರ್ವಮೇಘಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೈಲಾಸದಿಂದ ಜಾರಿಹೋಗುತ್ತಿದ್ದ ದೇವಗಂಗೆಯ ಕೆಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಅಲಕೆಯ ವರ್ಣನೆಯನ್ನು ಇದೇ ಜಾಡಿನಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ.

ಹನೂಮಂತನು ಲಂಕೆಯಿಂದ ಮರಳಿಬರುವಾಗ ಪುನರ್ಲಂಘನಕ್ಕಾಗಿ ಅರಿಷ್ಟವೆಂಬ ಗಿರಿಯನ್ನು ಏರುತ್ತಾನೆ. ಆ ಶೈಲವನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಅತಿಶಯವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪದ್ಯದ ಚತುರ್ಥಪಾದವೂ ಒಂದೊಂದು ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಾಗಿದೆ. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಇಡಿಯ ಪದ್ಯವೇ ಉಪಚಾರವಕ್ರತೆಗೆ ತವರಾಗಿದೆ. ಇಂಥ ಸಂಕೀರ್ಣಸುಂದರವಾದ ರಚನಾಶಿಲ್ಪವು ಯಾರಿಗೂ ಎಟುಕದ ಕೌಶಲ:

**ಸೋತ್ತರೀಯಮಿವಾಂಭೋದೈಃ ಶೃಂಗಂತರವಿಲಂಬಿಭಿಃ** । (೫.೫೬.೧೦)
**ಬೋಧ್ಯಮಾನಮಿವ ಪ್ರೀತ್ಯಾ ದಿವಾಕರಕರೈಃ ಶುಭೈಃ** । (೫.೫೬.೧೧)

**ತೋಯೌಘನಿಸ್ಸವನ್ಯೈರ್ಮಂದ್ರೈಃ ಪ್ರಾಧಿತಮಿವ ಪರ್ವತಃ** ।
**ಪ್ರಗೀತಮಿವ ವಿಸ್ಪಷ್ಟೈರ್ನಾನಾಪ್ರಸ್ರವಣಸ್ವನೈಃ** ॥ (೫.೫೬.೧೨)
**ದೇವದಾರುಭಿರತ್ಯುಚ್ಚೈರೂರ್ಧ್ವಬಾಹುಮಿವ ಸ್ಥಿತಮ್** । (೫.೫೬.೧೩)

**ವೇಪಮಾನಮಿವ ಶ್ಯಾಮೈಃ ಕಂಪಮಾನೈಃ ಶರದ್ವನೈಃ** ।
**ವೇಣುಭಿರ್ಮಾರುತೋದ್ಧೂತೈಃ ಕೂಜಂತಮಿವ ಕೀಚಕೈಃ** ॥ (೫.೫೬.೧೪)

**ನೀಹಾರಕೃತಗಂಭೀರೈರ್ಧ್ಯಾಯಂತಮಿವ ಗಹ್ವರೈಃ** । (೫.೫೬.೧೫)
**ಜೃಂಭಮಾಣಮಿವಾಕಾಶೇ ಶಿಖರೈರಭ್ರಶಾಲಿಭಿಃ** ॥ (೫.೫೬.೧೬)

ಆ ಗಿರಿಯು ತನ್ನ ಶಿಖರಗಳ ನಡುವೆ ಸುಳಿಯುವ ಮುಗಿಲುಗಳಿಂದ ಉತ್ತರೀಯವನ್ನು ಹೊದ್ದಂತೆ, ಮೇಲೆ ಸುಳಿಯುವ ಸೂರ್ಯಕಿರಣಗಳಿಂದ ತಟ್ಟಿ ಎಬ್ಬಿಸಲ್ಪಡುತ್ತಿರುವಂತೆ, ಮೊರೆಯುವ ಝರಿಗಳ ಮಂದ್ರಧ್ವನಿಯ ಮೂಲಕ ವೇದಾಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ ತೊಡಗಿದಂತೆ, ಜುಳಜುಳನೆ ಹರಿಯುವ ಹೊನಲುಗಳ ಮೂಲಕ ಹಾಡುತ್ತಿರುವಂತೆ, ನೇರವಾಗಿ ಬೆಳೆದ ದೇವದಾರುತರುಗಳ ಮೂಲಕ ಕೈಗಳನ್ನು ಮೇಲೆ ಚಾಚಿದಂತೆ, ಗಾಳಿಗೆ ಹೊಯ್ದಾಡುತ್ತಿರುವ ಹುಲ್ಲುಗಾವಲುಗಳ ಮೂಲಕ ಮೆಲ್ಲನೆ ಕಂಪಿಸುತ್ತಿರುವಂತೆ, ಬಿದಿರಿನ ಮೆಳೆಗಳಲ್ಲಿ ಸುಳಿದ ಗಾಳಿಗಳ ಮೂಲಕ ಶಿಳ್ಳು ಹಾಕುತ್ತಿರುವಂತೆ, ಇಬ್ಬನಿ ತುಂಬಿದ ಗುಹೆಗಳ ಮೂಲಕ ಪರಮಗಂಭೀರಧ್ಯಾನಕ್ಕೆ ತೊಡಗಿರುವಂತೆ, ಮೋಡಗಳಲ್ಲಿ ಮೈಚಾಚಿದ ಕೋಡುಗಲ್ಲುಗಳ ಮೂಲಕ ಮೈಮುರಿದು ಆಕಳಿಸುವಂತೆ ತೋರುತ್ತಿತ್ತು! ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದೊಂದು ಕಲ್ಪನೆಯೂ ಆ ಪರ್ವತದ ಮಾನುಷೀಕರಣಕ್ಕೆ ಸೂರ್ಯಸಾಕ್ಷಿ. ಹೀಗೆ ಜಡದಲ್ಲಿಯೂ ಚೈತನ್ಯವನ್ನು ಕಂಡು ಕಾಣಿಸಬಲ್ಲ ಶಕ್ತಿ ಕವಿಯದು; ಕಾಣುವ ಶಕ್ತಿ ಮಾತ್ರ ಋಷಿಯದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಎರಡೂ ಆದವರು. ನಮಗೂ ಕ್ಷಣಕಾಲ ಈ ಅನುಭೂತಿಯನ್ನು ತುಂಬಿಸಬಲ್ಲವರು. ನಾವು ಒಲಿದರೆ ಇದನ್ನು ಜೀವನವಿಡೀ ತುಂಬಿಕೊಡಬಲ್ಲ ಕಾವ್ಯೌದಾರ್ಯ ಅವರದು.

ಹನೂಮಂತನು ತನ್ನ ಪುನಃಪ್ರಯಾಣದಲ್ಲಿ ತೋರಿಕೊಂಡ ಬಗೆಯನ್ನು ಕವಿಗಳು ಹಲವು ಮಾಲೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳಲ್ಲಿ ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿಯ ಒಂದೆರಡು ಸೊಲ್ಲುಗಳು ತುಂಬ ಸ್ಮರಣೀಯ:

**ಗ್ರಸಮಾನ ಇವಾಕಾಶಂ ತಾರಾಧಿಪಮಿವೋಲ್ಲಿಖನ್** ।
**ಹರನ್ನಿವ ಸನಕ್ಷತ್ರಂ ಗಗನಂ ಸಾರ್ಕಮಂಡಲಮ್** ॥ (೫.೫೭.೫)

**ಮಾರುತಸ್ಯಾತ್ಮಜಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಕಪಿರ್ವ್ಯೋಮಚರೋ ಮಹಾನ್** ।
**ಹನೂಮಾನ್ಮೇಘಜಾಲಾನಿ ವಿಕರ್ಷನ್ನಿವ ಗಚ್ಛತಿ** ॥ (೫.೫೭.೬)

ಪ್ರಾಣಪುತ್ರನು ಆಗಸವನ್ನೇ ನುಂಗುವಂತೆ, ಸುಧಾಂಶುವನ್ನೇ ಪರಚುವಂತೆ, ಸೂರ್ಯನನ್ನೇ ಕಸಿಯುವಂತೆ, ನಕ್ಷತ್ರಗಳನ್ನೇ ಕಿತ್ತೊಯ್ಯುವಂತೆ, ಮೋಡಗಳನ್ನೇ ಸೆಳೆದೊಯ್ಯುವಂತೆ ಹಾರಿಹೋಗುತ್ತಿದ್ದನಂತೆ ! ಈ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಅವನು ಕಣ್ಣಾಮುಚ್ಚಾಲೆಯಾಡುವ ಚಂದ್ರನಂತೆ ಮೋಡಗಳ ನಡುವೆ ತೋರುತ್ತಿದ್ದನೆಂದೂ ಮುನಿಗಳು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡವು ಸಾಮಾನ್ಯಕವಿಗಳಿಗೆ ಸಖೇದಾಶ್ಚರ್ಯವನ್ನು ತರುವಂತೆ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳಿಲ್ಲದೆಯೇ ಸಾಗಿದೆ. ಇದು ರಸಿಕರ ಪಾಲಿಗೆ ಮತ್ತೂ ರೋಚಕ. ಅಲ್ಲಿಯ ವಿರಳೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳ ಪೈಕಿ ಒಂದೆರಡನ್ನು ಗಮನಿಸೋಣ. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ತಮ್ಮ ಅಪೂರ್ವಾಭಿರಾಮತೆಯಿಂದ ನಮ್ಮ ಬಗೆಯನ್ನು ಸೆಳೆದರೆ ಮತ್ತೆ ಕೆಲವು ಪೂರ್ವಕಲ್ಪಿತಚಮತ್ಕಾರದಿಂದ ಹಳೆಯ ಗೆಳೆಯರಂತೆ ನಮಗೆ ತೋರುತ್ತವೆ:

**ಹಸಂತಮಿವ ಫೇನೋಘೈರ್ನೃತ್ಯಂತಮಿವ ಚೋರ್ಮಿಭಿಃ** ।
**ಚಂದ್ರೋದಯಸಮುದ್ಭೂತಂ ಪ್ರತಿಚಂದ್ರಸಮಾಕುಲಮ್**॥

**ಪಿನಷ್ಟೀವ ತರಂಗಾಗ್ರೈರರ್ಣವಃ ಫೇನಚಂದನಮ್।**
**ತದಾದಾಯ ಕರೈರಿಂದುರ್ಲಿಂಪತೀವ ದಿಗಂಗನಾಃ॥** (೬.೪.೧೧೪,೧೧೫)

ಇಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರೋದಯದಿಂದ ಉಕ್ಕೇರಿದ ಕಡಲಿನ ಮತ್ತು ಬೆಳುದಿಂಗಳಿನ ರೋಮಹರ್ಷಕವಾದ ವರ್ಣನೆಯುಂಟು. ಭೋರ್ಗರೆಯುವ ಸಮುದ್ರತರಂಗಗಳು ನೊರೆನಗೆಯಿಂದ ಸೊಗಯಿಸುತ್ತ ನರ್ತಿಸುವಂತಿದ್ದುವು. ಒಂದೊಂದು ಅಲೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಚಂದ್ರಬಿಂಬವು ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿ ಅನಂತಸಂಖ್ಯೆಯ ವಿಲಾಸವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿತ್ತು !

ಹೀಗೆ ಉಕ್ಕಿ ಹರಿಯುವ ಅಲೆಗೈಗಳಿಂದ ಸಮುದ್ರವು ನೊರೆಯೆಂಬ ಚಂದನವನ್ನು ತೇಯ್ದು ಅದನ್ನು ಹಿಮಕಿರಣನ ರಶ್ಮಿಹಸ್ತಗಳಿಂದ ದಿಕ್ಸುಂದರಿಯರಿಗೆ ಲೇಪಿಸಿದಂತೆ ಬೆಳ್ದಿಂಗಳಿನ ಕಾಂತಿ ಕೋಡಿವರಿದಿತ್ತು! ಇಲ್ಲಿಯ ಕವಿತಾಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಮೆಚ್ಚದ ರಸಿಕರಿಲ್ಲ. ಅಪ್ಪಯ್ಯದೀಕ್ಷಿತರಂಥ ಪರಿಪಕ್ವರಸಿಕರೂ ತಮ್ಮ ಕುವಲಯಾನಂದದಲ್ಲಿ ಈ ಶ್ಲೋಕವನ್ನು ಉದಾಹರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಜಗಾಮ ಮೇರುಂ ನಗರಾಜಮಗ್ರ್ಯಂ**
**ದಿಶಃ ಪ್ರಕರ್ಷನ್ನಿವ ವಾಯುಸೂನುಃ ॥** (೬.೭೪.೫೧)

ಸಂಜೀವಿನಿಯನ್ನು ತರಲೆಂದು ಹಿಮಾಲಯಕ್ಕೆ ಸಾಗಿದ ಹನೂಮಂತನು ಅಲ್ಲಿಯ ಮೇರುಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ದಿಕ್ಕುಗಳನ್ನೇ ಸೆಳೆಯುವಂತೆ ಸುಳಿದಾಡಿದನಂತೆ!

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ರಾವಣವಧೆಯ ಬಳಿಕ ವಿಲಪಿಸುವ ಮಂದೋದರಿಯ ಬಾಯಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಅಗ್ಗಳಿಕೆಯನ್ನು ಹಲವು ಬಗೆಯಾಗಿ ಹಾಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲೊಂದೆಡೆ ಆಕೆಯು ಯಾವ ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ಗೆದ್ದು ರಾವಣನು ಸಂಯಮಿಯಾಗಿ ತಪೋಬಲದಿಂದ ತ್ರಿಲೋಕವಿಜಯಿಯಾದನೋ ಆ ಇಂದ್ರಿಯಗಳೇ ಇದೀಗ ಸೇಡಿನಿಂದ ಅವನ ಮೇಲೆ ತಿರುಗಿಬಿದ್ದು ವಿಜಯಿಗಳಾಗಿ ಅವನಿಗೆ ಸಾವನ್ನು ತಂದಿವೆಯೆಂದು ದುಃಖಿಸುತ್ತಾಳೆ.

**ಇಂದ್ರಿಯಾಣಿ ಪುರಾ ಜಿತ್ವಾ ಜಿತಂ ತ್ರಿಭುವನಂ ತ್ವಯಾ ।**
**ಸ್ಮರದ್ಭಿರಿವ ತದ್ವೈರಮಿಂದ್ರಿಯೈರೇವ ನಿರ್ಜಿತಃ ॥** (೬.೧೧೪.೧೮)

**ಪ್ರವಿಶಂತೀವ ಗಾತ್ರಾಣಿ ಸ್ವಾನ್ಯೇವ ಜನಕಾತ್ಮಜಾ ।** (೬.೧೧೯.೩)

ರಾಮನ ಅಪಲಾಪವನ್ನು ಕೇಳಿ ಕಂಗೆಟ್ಟ ಸೀತೆಯು ತನ್ನ ಮೈಯೊಳಗೇ ತಾನು ಹುದುಗಿಹೋದಂತಾಗಿ ಮುಜಗರಗೊಂಡಳಂತೆ! ಈ ಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ಚಿತ್ರಕೂಟಕ್ಕೆ ಭರತನು ಬರುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಅವನನ್ನು ಶಂಕಿಸಿದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ರಾಮನು ತಿಳಿಯಹೇಳುವ ಹೊತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಆದಿಕವಿಗಳು ಬಳಸಿಕೊಂಡಿರುವುದನ್ನು ನಾವಿಲ್ಲಿ ನೆನೆಯಬಹುದು.

**ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ**ಯನ್ನು ಕಾವ್ಯಲೋಕದ ಜೀವಾಳವೆಂದೇ ಆನಂದವರ್ಧನನು ಆದರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಅಧ್ಯವಸಾಯ ಅಥವಾ ಮಿಗಿಲಾದ ಕಲ್ಪನೆಯೇ ಇದರ ಹೃದಯ. ಕವಿಪ್ರತಿಭೆಯು ಸಾದೃಶ್ಯ–ಸಂಭಾವ್ಯಗಳ ಗಡಿಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ನಿರಂಕುಶವಾಗಿ ಅಪರಪ್ರಜಾಪತಿಯಂತೆ ಸೌಂದರ್ಯಮಹಾಕಾಶದಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಹಂಸಗತಿಯಿಂದ ಹಾರುವುದು ಇಲ್ಲಿ ಸ್ವಾರಸ್ಯ. ಯಾವುದೇ ಅಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಸೀಮೋಲ್ಲಂಘನಸ್ವವಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅದು ಹೊಳಪಿಲ್ಲದ ಒಡವೆಯಾಗಿ ಅದನ್ನು ತೊಡಿಸಿಕೊಂಡ ಕಾವ್ಯವನಿತೆಗೆ ಬರಿಯ ಭಾರವಾಗಿ ತೋರದಿರದು. ಈ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು 'ಚಮತ್ಕಾರ'ವೆಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು.

ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಮೇಲೆ ಕಾಣಿಸಿದ ಅತಿಶಯತೆಯು ಬಲುಮಟ್ಟಿನ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಜೀವಾಳವಾಗಿದ್ದರೂ ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯೆನಿಸುವ ನಿದರ್ಶನಗಳು ವಿರಳ. ಸಹಜಸೌಂದರ್ಯದ ಹರಿಕಾರರಾದ ಆದಿಕವಿಗಳಿಗೆ ಉಪಮೋತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಗಳ ಮೇಲಿರುವ ಅಕ್ಕರೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಅಬ್ಬರದ್ದೆನ್ನಬಹುದಾದ ಅಳತೆಯ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯ ಕಡೆ ಇಲ್ಲ. ಹಾಗೆಂದು ಅವರು ಕಲ್ಪಿಸಿದ ಈ ಮಾದರಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಂದವೇನೂ ಕುಂದಿಲ್ಲ.

ರಾಮನನ್ನು ಇಡಿಯ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಧರ್ಮದ ಸಾಕಾರವೆಂದು ಕೊಂಡಾಡಿದ್ದಾರೆ: **ರಾಮೋ ವಿಗ್ರಹವಾನ್ ಧರ್ಮಃ** (೩.೩೭.೧೩) ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಇದು ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಾದರೂ ತತ್ತ್ವತಃ ಇಲ್ಲಿರುವುದು ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯೇ! ಇದು ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಇಂಗಿತವೂ ಹೌದು. ಆದರೆ ಶಾಸ್ತ್ರನಿರ್ಬಂಧದ ಕಾರಣ ನಾವಿದನ್ನು ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯೆನ್ನಬೇಕಿದೆ.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸೀತಾವಿರಹಸಂತಪ್ತನಾದ ರಾಮನ ಪಾಲಿಗೆ ಪುಷ್ಪಪಲ್ಲವಪರಿಪ್ಲುತವಾದ ಅಶೋಕವು ಸುಡುಬೆಂಕಿಯಾಗಿ ತೋರಿತು:

**ಅಶೋಕಸ್ತಬಕಾಂಗಾರಃ ಷಟ್ಪದಸ್ವನನಿಸ್ವನಃ** । (೪.೧.೨೯)
**ಮಾಂ ಹಿ ಪಲ್ಲವತಾಮ್ರಾರ್ಚಿರ್ವಸಂತಾಗ್ನಿಃ ಪ್ರಧಕ್ಷ್ಯತಿ** । (೪.೧.೩೦)

ಈ ಉದಾಹರಣೆಯಲ್ಲಿ ಸಾವಯವರೂಪಕದ ಒತ್ತಾಸೆಯಿರುವುದಾದರೂ 'ವಸಂತಾಗ್ನಿಃ ಪ್ರಧಕ್ಷ್ಯತಿ' (ವಸಂತವಹ್ನಿಯು ಸುಡುತ್ತದೆ). ಎಂಬ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸುಡುವಿಕೆಯೇ ಅತಿಶಯದ ಜೀವಾಳವಾಗಿದೆ. ಮತ್ತಿದು ಇಡಿಯ ಪದ್ಯವನ್ನು ಪರ್ಯಂತಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದೆ ಕೂಡ. ಆದುದರಿಂದ ಇದನ್ನು ತಾತ್ಪರ್ಯತಃ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯೆನ್ನಬೇಕು. ಇದೇ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಮಳೆಗಾಲವನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತ ರಾಮನು ಕೇದಗೆಯ ಹೂಗಳ ಪರಿಮಳವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಗಾಳಿಯನ್ನು ಬೊಗಸೆಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಿಕೊಂಡು ಹೀರಬಹುದೆನ್ನುತ್ತಾನೆ:

**ಶಕ್ಯಮಂಜಲಿಭಿಃ ಪಾತುಂ ವಾತಾಃ ಕೇತಕಗಂಧಿನಃ** । (೪.೨೮.೮)

ಸರಲೋದಾರವಾದ ಈ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯ ಪ್ರತಿನವತೆ ಅಸಮಾನ. ಮುಂದೆ ಎಷ್ಟೋ ಕವಿಗಳು ಇದೇ ಜಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳದಿಂಗಳು, ಮುಂಜಾನೆಯ ಹೊಂಬೆಳಕು, ಸವಿಯುಲಿಯ ಇಂಪು-ಸೊಂಪುಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಬೊಗಸೆಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಿ ತುಂಬಿ ಕುಡಿಯಬಹುದೆಂದು ಅತಿಶಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸೀತಾನ್ವೇಷಣತತ್ಪರನಾದ ಮಾರುತಿಯು ರಾವಣಾಂತಃಪುರದ ರಮಣಿಯರನ್ನು ನೋಡುವಾಗ ಪರಸ್ಪರ ತೋಳುಗಳನ್ನು ಬೆಸೆದುಕೊಂಡು ಮಲಗಿದ್ದ ಅವರು ಚೆಲುವಾದ ಸ್ತ್ರೀಮಾಲೆಯೇ ಆಗಿದ್ದರೆಂದು ಭಾವಿಸುವಲ್ಲಿ ರುಚಿರವಾದ ಅತಿಶಯವಿದೆ. ಇಲ್ಲಿಯ "ಗ್ರಥನ" ಶಬ್ಧವೇ ಪ್ರಸ್ತುತಾಲಂಕಾರದ ಕೀಲಕ:

**ಅನ್ಯೋನ್ಯಭುಜಸೂತ್ರೇಣ ಸ್ತ್ರೀಮಾಲಾ ಗ್ರಥಿತಾ ಹಿ ಸಾ** । (೫.೯.೬೩)

ರಾವಣಸಂಹಾರದ ಬಳಿಕ ತನ್ನೆದುರು ನಿಂತ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ಹಳಿದಾಗ ನಾಚಿದ ಅವಳು ಮೈಯೆಲ್ಲ ಹಿಂಜಿಕೊಂಡು ತನ್ನ ಮೈಯೊಳಗೇ ಹುದುಗಿಹೋದಳಂತೆ:

**ಲಜ್ಜಯಾ ತ್ವವಲೀಯಂತೀ ಸ್ವೇಷು ಗಾತ್ರೇಷು ಮೈಥಿಲಿ** । (೬.೧೧೭.೩೩)

ಹಿಂದೆ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಭರತಾಗಮನಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಚಿತ್ರಣ ಬಂದಿತ್ತು. ಆದರೆ ಅದು ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯ ಕಕ್ಷೆಗೆ ಸಂದಿತ್ತು. ಇದೀಗ ಅದೇ ಕಲ್ಪನೆ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಾಗಿದೆ. ಕಾವ್ಯಕರ್ಮದಲ್ಲಿ ಇವೆಲ್ಲ ದೃಷ್ಟಚರ.

ಉಪಮೇಯ ಅಲಂಕಾರಜಗತ್ತಿನ ಮಹಾಮಾತೆಯಾದರೆ **ರೂಪಕವು** ಈ ಲೋಕದ ಮಹಾರಾಜ. ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆಯನ್ನು ಈ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ಪಟ್ಟಮಹಿಷಿಯೆನ್ನಬಹುದು. ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿಯಂತೂ ಸಮ್ರಾಜ್ಞಿಯೇ ಸರಿ. ಆದರೆ ಮತ್ತಾವ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೂ ಇಲ್ಲದ ಅಂದ, ಆಡಕ, ಜೌನತ್ಯ, ಭವ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಪರಿಣಾಮಪ್ರಜ್ವಲತೆಗಳು ರೂಪಕಕ್ಕುಂಟು. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಇದರ ನಿರ್ಮಾಣವೂ ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಸರಳ, ಸುಲಭ. ಈ ಎಲ್ಲ ಕಾರಣಗಳಿಂದಲೇ ಆಧುನಿಕ ಕವಿಗಳೂ ಸೇರಿದಂತೆ ಎಲ್ಲ ಕಾಲದ ಲೇಖಕರೂ ರೂಪಕಕ್ಕೆ ಅಗ್ರತಾಂಬೂಲವನ್ನಿತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಎಚ್ಚರವಿಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ ಏಕತಾನತೆಯ ಅಪಾಯ ತಪ್ಪದು.

ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಹೇಳುವುದಾದರೆ, ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತಗಳೆರಡಕ್ಕೂ (ಹೋಲಿಕೆ ಮತ್ತು ಹೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತುಗಳು) ರೋಮಹರ್ಷಕವಾದ ಅಭೇದವನ್ನು ಅನಿರೀಕ್ಷಿತ ವೇಗದಲ್ಲಿ ತಂದಿರಿಸುವ ರೂಪಕದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಅವರ್ಣನೀಯ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ವ್ಯಾವಾರಿಕಲೋಕದಲ್ಲಿ ಹೋಲಿಕೆಯೇ ಅಷ್ಟಾಗಿ ಕೈಗೆಟುಕದ ಮೌಲ್ಯ. ಏಕೆಂದರೆ ಅನುದಿನದ ಜಗತ್ತು ನಿಂತಿರುವುದೇ ದ್ವೈತಬುದ್ಧಿಯ ಮೇಲೆ. ಇದಕ್ಕಿಂತ ಸ್ವಲ್ಪ ಮೇಲ್ಮಟ್ಟಕ್ಕೇರುವ ಸಾದೃಶ್ಯಸಂವೇದನೆಯು ಅದೊಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತವೆನ್ನಬಹುದು. ರೂಪಕವಾದರೋ ಒಮ್ಮೆಲೇ ಪರಮಾದ್ವೈತಸತ್ತರಕ್ಕೇರುತ್ತದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಇದರ ಪರಿಣಾಮ ದೊಡ್ಡದು.

ಅನುದಿನದ ಸುಷುಪ್ತ್ಯವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ಯಾವ ಅಭೇದಾನುಭವದ ಫಲವಾದ ಆನಂದವು ಉದಿಸಿಯೂ ಜಾಗ್ರತ್ತಿನಲ್ಲಿ ನಮ್ಮರಿವಿಗೆ ಬಾರದಂತೆ ಮರೆಯಾಗುವುದೋ, ಅದು ಕ್ಷಣಮಾತ್ರವಾದರೂ ರೂಪಕಾಲಂಕಾರದ ಸಂವೇದನೆಯಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೊಳಗೆ ಮಿಂಚಿ ಮಾಯವಾಗುವುದು. ಇಂಥ ಸಂವಿತ್ಸ್ಪಂದವು ವಕ್ರೋಕ್ತಿಪ್ರಪಂಚದ ಭಾಗ್ಯ. ಜೊತೆಗೆ ಸಮಾನಧರ್ಮವೆಂಬುದಿಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಧ್ವನಿತವಾಗುವ ಕಾರಣ ಧ್ವನನಶೀಲತೆಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಮಿಗಿಲಾದುದು. ಇದೇ ಆನಂದದ ಮೀಟುಗೋಲೂ ಹೌದು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಪ್ರಾಯಿಕವಾಗಿ ಎಲ್ಲ ರೂಪಕಾಲಂಕಾರಗಳೂ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯಗಳೇ. ಇದು ಮಿಕ್ಕ ಅಲಂಕಾರಗಳಿಗೆ ಸುಲಭವಾಗಿ ದಕ್ಕದ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ರೂಪಕದ ಈ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಅರಿತೋ ಏನೋ ಪ್ರಾಯಶಃ ಕವಿಗಳೆಲ್ಲ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಇದನ್ನೇ ಆಶ್ರಯಿಸುತ್ತಾರೆ. ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯಸಾಹಿತ್ಯಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ರೂಪಕವನ್ನು ಒಂದು ಸ್ವತಂತ್ರಸಾಹಿತ್ಯಮೌಲ್ಯದ ಮಟ್ಟಕ್ಕೇ ಏರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಹೀಗೆ ರೂಪಕವನ್ನು ಎಣೆಮೀರಿ ಬಳಸಿದಾಗ ಅದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ದುಂದಿನ ವ್ಯವಹಾರವೂ ಆದೀತು; ಕಾವ್ಯಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ವೈವಿಧ್ಯವೂ ಸೊರಗೀತು. ಏನೇ ಆಗಲಿ, ರೂಪಕದ ಶಕ್ತಿ ಅಪಾರ. ನಮ್ಮ ಆಲಂಕಾರಿಕರು ಇದಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಮನ್ನಣೆ ಸಲ್ಲಿಸದಿದ್ದರೂ ಹೆಚ್ಚಿನ ಅಂತರ್ದೃಷ್ಟಿಯ ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮಾಡದಿದ್ದರೂ ಕವಿಗಳು ಮಾತ್ರ ತಮಗೆ ಸಹಜವಾಗಿ ಸಿದ್ಧವಿರುವ ಪ್ರತಿಭಾದೃಷ್ಟಿಯ ಕಾರಣ ರೂಪಕದ ಮಹತ್ತ್ವವನ್ನು ಮನಗಂಡು ಅದನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿಯೇ ದುಡಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಿದ್ದಾರೆ. ಇಂಥ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಬುನಾದಿಯನ್ನು ಹಾಕಿಕೊಟ್ಟವರಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳ ಸ್ಥಾನ ಅನುಪಮ.

ಇದೀಗ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಕೆಲವೊಂದು ರೂಪಕಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸೋಣ.

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ರಾಮವನಗಮನದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಅಣ್ಣನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸುವ ಸೌಮಿತ್ರಿಗೆ ತಾಯಿ ಸುಮಿತ್ರೆಯು ಮಾಡಿ ಕಳುಹುವ ಮಂಗಲಾಶಾಸನದಲ್ಲಿ ಹೃದ್ಯವಾದ ರೂಪಕವು ಹುದುಗಿದೆ:

**ರಾಮಂ ದಶರಥಂ ವಿದ್ಧಿ ಮಾಂ ವಿದ್ಧಿ ಜನಕಾತ್ಮಜಾಮ್ ।**
**ಅಯೋಧ್ಯಾಮಟವೀಂ ವಿದ್ಧಿ ಗಚ್ಛ ತಾತ ಯಥಾಸುಖಮ್॥** (೨.೪೦.೯)

ರಾಮನನ್ನೇ ದಶರಥನೆಂದು ಭಾವಿಸು, ಸೀತೆಯನ್ನೇ ನಾನೆಂದು ಭಾವಿಸು, ಕಾಡನ್ನೇ ನಾಡೆಂದು ಭಾವಿಸು; ಕಂದ, ಹಾಯಾಗಿ ಹೋಗಿ ಬಾ. ಎಂದು ಸರಳವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಸುಮಿತ್ರೆಯ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಅದೆಷ್ಟು ಸಹಜವಾಗಿ ಈ ಅಲಂಕಾರವು ಸಂದಿದೆ! ಆದಿಕವಿಗಳ ಅನೂಹ್ಯ ಸರಳ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕೂ ಪಾರಿಣಾಮಿಕಭವ್ಯತೆಗೂ ಈ ಶ್ಲೋಕವು ಸಮರ್ಥ ದೃಷ್ಟಾಂತ.

ಪ್ರಾಯಶಃ ಸಾವಯವ ರೂಪಕಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ಆದಿಕವಿಗಳೇ ಆದ್ಯಾಯತನ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಹಲವು ರಚನೆಗಳಿವೆ. ಅವುಗಳ ಪೈಕಿ ದಶರಥವಿಲಾಪ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಹೊಮ್ಮಿರುವ ಶೋಕ ಸಾಗರದ ಸಮಗ್ರರೂಪಕವು ಹೃದಯಸ್ಪರ್ಶಿ. ಇಲ್ಲಿ ಪುತ್ರವಿಯೋಗವಿಹ್ವಲನಾದ ಅಸಹಾಯಕರಾಜನು ತಾನು ಈಜಲಾಗದೆ ಮುಳುಗುತ್ತಿರುವ ಶೋಕಕಸಮುದ್ರದ ಸೆಳವೇ ರಾಮವಿಯೋಗ, ಕುಸಿಯುವ ದಡವೇ ಸೀತಾವಿಯೋಗ, ಸಂಕಟದ ನಿಟ್ಟುಸಿರೇ ತೆರೆಸುಳಿಗಳು, ಕಣ್ಣೀರೇ ನೊರೆ, ಅಸಹಾಯಕತೆಯಿಂದ ಕೈಚೆಲ್ಲುವುದೇ ಜಲಚರಸಂಚಾರ, ವ್ಯಾಕುಲತೆಯ ಹಾಹಾಕಾರವೇ ಸಾಗರಘೋಷ, ದಿಕ್ಕೆಟ್ಟು ಕೆದರಿದ ತಲೆಗೂದಲೇ ಶೈವಲ, ಕುಟಿಲೆ ಕೈಕೇಯಿಯ ತಂತ್ರವೇ ಬಡವಾಗ್ನಿ, ಕುಬ್ಜೆ ಮಂಥರೆಯ ಮಸಲತ್ತೇ ಮೊಸಳೆ, ಸಂತಾಪಾಶ್ರುವೇ ಲವಣೋದಕವೆಂದು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ಹಲುಬುತ್ತಾನೆ:

**ರಾಮಶೋಕಮಹಾವೇಗಃ ಸೀತಾವಿರಹಪಾರಗಃ ।** (೨.೫೯.೩೩)

**ಶ್ವಸಿತೋರ್ಮಿಮಹಾವರ್ತೋ ಬಾಷ್ಪಫೇನಜಲಾವಿಲಃ ।**
**ಬಾಹುವಿಕ್ಷೇಪಮೀನೌಘೋ ವಿಕ್ರಂದಿತಮಹಾಸ್ವನಃ ॥** (೨.೫೯.೩೪)

**ಪ್ರಕೀರ್ಣಕೇಶಶೈವಾಲಃ ಕೈಕೇಯೀವಡವಾಮುಖಃ ।**
**ಮಮಾಶ್ರುವೇಗಪ್ರಭವಃ ಕುಬ್ಜಾವಾಕ್ಯಮಹಾಗ್ರಹಃ ॥** (೨.೫೯.೩೫)

ಕವಿನಿಬದ್ಧಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿರುವ ಈ ಭಾಗವು ಕವಿಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೂ ಔಚಿತ್ಯವಿರುತ್ತಿತ್ತು. ಏಕೆಂದರೆ ದುಃಖದಲಿತನಾಗಿದ್ದ ದಶರಥನು

ಇಷ್ಟು ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾದ ಸಾವಯವರೂಪಕಪ್ರಪಂಚವನ್ನು ತೆರೆದಿಡುವುದು ಅಷ್ಟಾಗಿ ಸಂಭಾವ್ಯವೆನಿಸದು.

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಕೆಲವೊಮ್ಮೆ ಶಬ್ದವನ್ನನುಸರಿಸಿ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರವನ್ನು ರೂಪಿಸುವುದುಂಟು. ಇದು ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ವಿರಳವೇ. ಆದರೆ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸತ್ಕವಿಲೋಕವು ರೂಪಕನಿರ್ಮಾಣಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇಂಥ ಜಾಡನ್ನು ಅನುಸರಿಸುತ್ತದೆ. ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತವಸ್ತುಗಳ ವಾಚಕಗಳಲ್ಲಿ ವರ್ಣಮೈತ್ರಿಯೊದಗಿದಾಗ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರವೆನಿಸಿದ ರೂಪಕದಲ್ಲಿ ಅದೊಂದು ಬಗೆಯ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಸ್ವಾರಸ್ಯವೂ ಮೈದುಂಬಿಕೊಂಡು ಇಡಿಯ ಬಂಧವು ಅತಿಶಯಿಸುತ್ತದೆ. ಅಂಥ ಒಂದು ಅಡಕವಾದ ರೂಪಕಃ **ವ್ಯಸನವಾಗುರಾ** (೩.೬೭.೨೭). ರಾವಣನ ಸೆರೆಗೆ ಸಿಲುಕಿದ ಸೀತೆಯು ತನ್ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ಬಂದು ಗತಾಯುವಾದ ಜಟಾಯುವನ್ನು ಕಂಡು ದುಃಖಿಸುತ್ತಾ ತಾನೀಗ ಭೀಕರಸಂಕಟದ ಬಲೆಯಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದೆನೆಂದು ಹಳಹಳಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಬಲೆಗೆ ಸಿಲುಕುವ ಹಕ್ಕಿಗಳಿಗೆ ಬದಲಾಗಿ, ತನಗಾಗಿ ಬಲಿಯಾದ ಹಕ್ಕಿಗಿಂತ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ತಾನೇ ಬಲೆಗೆ ಬಿದ್ದೆನೆಂದು ಸೀತೆಯು ಭಾವಿಸುವಲ್ಲಿ ಈ ರೂಪಕದ ಔಚಿತ್ಯ ನಿರತಿಶಯವಾಗಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಕವಿನಿಬದ್ಧಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿ ಹೊಮ್ಮಿದ ಈ ಸೊಲ್ಲಿನ ಅಂದ-ಅಡಕಗಳೂ ಮೆಚ್ಚುವಂತಿವೆ.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಒಂದು ರೂಪಕವು ತನ್ನ ವಿನೂತನತೆಯ ಕಾರಣ ಸ್ಮರಣೀಯವಾಗಿದೆ. ತಾರೆಯು ವಾಲಿಗೆ ಸುಗ್ರೀವನಲ್ಲಿ ವೈರವು ಸಲ್ಲದೆಂದು ಹಿತವನ್ನು ಹೇಳುವಾಗ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆತನ ಗುಣಗಳನ್ನು ಗಣಿಸುವಾಗ ಅವನು ಸಜ್ಜನರಿಗೆ ಆಶ್ರಯತರುವೆಂದು ಹೃದಯಂಗಮವಾಗಿ ಹೆಸರಿಸುತ್ತಾಳೆ: **ನಿವಾಸವೃಕ್ಷಃ ಸಾಧೂನಾಮ್** (೪.೧೫.೧೯) ಇಲ್ಲಿ ಸಜ್ಜನರೇ ಹಕ್ಕಿಗಳೆಂಬ ಧ್ವನಿಯು ಸಹಜವಾಗಿ ಉನ್ಮೀಲಿಸುತ್ತದೆ. ಸಾಹಿತ್ಯಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಮುಂದೆ "ನಿವಾಸವೃಕ್ಷ"ವೆಂಬ ರೂಪಕವು ವ್ಯಾಪಕವಾಗಿ ಬೆಳೆದುಬಂದದ್ದನ್ನಿಲ್ಲಿ ನೆನೆಯಬಹುದು.

ರಾಮನ ಬಾಣಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾದ ವಾಲಿಯು ಆತನನ್ನು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ನಿಂದಿಸುವಾಗ ತಾನು ಧರ್ಮವೆಂಬ ಅಂಕುಶವಿಲ್ಲದ ರಾಮನೆಂಬ ಮತ್ತಮಾತಂಗದಿಂದ ತುಳಿಯಲ್ಪಟ್ಟೆನೆಂಬ ಆಕ್ಷೇಪವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ:

**ತ್ಯಕ್ತಧರ್ಮಾಂಕುಶೇನಾಹಂ ನಿಹತೋ ರಾಮಹಸ್ತಿನಾ ।** (೪.೧೭.೪೩)

ಇದರ ಸೌಂದರ್ಯ-ಸ್ವಾರಸ್ಯಗಳು ಸ್ವಯಂವೇದ್ಯ. ವಿಶೇಷತಃ ದೋಷಿಯು ದಂಡನೆಗೆ ತುತ್ತಾದಾಗ ಅಸಹಾಯಕತೆಯಿಂದ ಕನಲಿ ಆಕ್ರೋಶಿಸುವ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಮಾತು ಮತ್ತೂ ಮನೋಗ್ರಾಹಿ.

ಸೋದರನ ವಧೆಯ ಬಳಿಕ ಸುಗ್ರೀವನು ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪದಿಂದ ವ್ಯಥಿಸುವಾಗ ಅವನ ಬಾಯಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಸಾವಯವರೂಪಕಪ್ರಧಾನವಾದ ಶ್ಲೋಕವೊಂದನ್ನು ಹೇಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇದು ಕವಿಪ್ರೌಢೋಕ್ತಿಯಾಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಮತ್ತೂ ನೈಜತೆಯಿಂದ ಸೊಗಯಿಸುತ್ತಿತ್ತು. ಆದರೂ ಇಲ್ಲಿಯ ಚಿತ್ರಣ ಪರಿಣಾಮರಮಣೀಯ:

**ಸೋದರ್ಯಘಾತಾಪರಗಾತ್ರವಾಲಃ**
**ಸಂತಾಪಹಸ್ತಾಕ್ಷಿಶಿರೋವಿಷಾಣಃ ।**
**ಏನೋಮಯೋ ಮಾಮಭಿಹಂತಿ ಹಸ್ತೀ**
**ದೃಪ್ತೋ ನದೀಕೂಲಮಿವ ಪ್ರವೃದ್ಧಃ ॥** (೪.೨೪.೧೭)

ಅಣ್ಣನ ಸಾವಾಗಿ ಮೈದಳೆದು, ಸಂಕಟವೆಂಬ ಸೊಂಡಿಲು-ದಂತಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿ, ನನ್ನ ಪಾತಕವೆಂಬ ಮದ್ದಾನೆಯು ನನ್ನನ್ನು ನದೀತೀರವನ್ನು ಕೆಡಹುವಂತೆ ತಿವಿಯುತ್ತಿದೆಯೆಂದು ಸುಗ್ರೀವನು ಶೋಕಿಸುತ್ತಾನೆ.

ಇಲ್ಲಿ ಕಡೆಯ ಪಾದವು ಉಪಮೆಯೆಂಬಂತೆ ತೋರಿದರೂ ಪಾತಕಹಸ್ತಿಯ ಸಾವಯವರೂಪಕವೇ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಸ್ಫುರಿಸುವ ಕಾರಣ ಇದನ್ನು ಉಪಮೆಯ ವಲಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿಸಿಲ್ಲ.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ರೂಪಕಾಲಂಕಾರವು ಸಾವಯವರೂಪಕರೂಪದಿಂದ ಹಲವು ಕಡೆ ವ್ಯಾಪಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಇದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಪ್ರಿಯಪಥವೆಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು. ಅಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವು ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಮನನಿಸೋಣ:

**ಧನುರ್ಜ್ಯಾತಂತ್ರಿಮಧುರಂ ಹಿಕ್ಕಾತಾಲಸಮನ್ವಿತಮ್ ।**
**ಮಂದಸ್ತನಿತಸಂಗೀತಂ ಯುದ್ಧಗಾಂಧರ್ವಮಾಬಭೌ ॥** (೬.೫೨.೨೫)

ಲಂಕಾಸಂಗ್ರಾಮವು ಮೊದಲಾದಾಗ ವಾನರವೀರರ ಅಬ್ಬರಕ್ಕೆ ತಬ್ಬಿಬ್ಬಾದ ಅಸುರಸೇನೆಯು ತನ್ನ ಪ್ರತಿರೋಧವನ್ನು ತುಮ್ಬ ತಗ್ಗಿಸಿಕೊಂಡಿತು. ಆಗ ಅವರ ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಗಳ ಮೀಟು ತಂತ್ರೀವಾದ್ಯಕೋಮಲವಾದುವು, ಭಯದ ಬಿಕ್ಕಳಿಕೆಗವೇ ತಾಲಾಸ್ಫಾಲಕ್ಕೆ ಸಂವಾದಿಯೆನಿಸದುವು, ಅಂಜಿಕೆಯ ಪಿಸುಗುಟ್ಟುವಿಕೆಯೇ ಮಂದ್ರಸ್ಥಾಯಿಯ ಮೆಲ್ಲುಲಿಯಾಯಿತು. ಹೀಗೆ ವಾನರವೀರರ ಮುಂದೆ ರಾಕ್ಷಸವೀರರ ಯುದ್ಧ ಸಂಗೀತದಂತಾಯಿತು. ರಣರಂಗದಲ್ಲಿಯೂ ರಸರಂಗದ ಪ್ರಸ್ತಾವವನ್ನು ಸಂದರ್ಭಶುದ್ಧಿಗೆ ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲದೆ ತಂದ ಆದಿಕವಿಗಳ ಚಾತುರ್ಯ ಪ್ರೇಕ್ಷಣೀಯ.

ಪ್ರಹಸ್ತವಧೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸಾಗಿದ ಭೀಕರಸಂಗ್ರಾಮವನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಮೈ-ಮನಗಳು ಜುಮುಗುಟ್ಟುವಂತೆ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ರಣತರಂಗಿಣಿಯ ಸಾವಯವರೂಪಕವಂತೂ ಅವಿಸ್ಮರಣೀಯ:

**ಹತವೀರೌಘವಪ್ರಾಂ ತು ಭಗ್ನಾಯುಧಮಹಾದ್ರುಮಾಮ್ ।**
**ಶೋಣಿತೌಘಮಹಾತೋಯಾಂ ಯಮಸಾಗರಗಾಮಿನೀಮ್ ॥**

**ಯಕೃತ್ಪ್ಲೀಹಮಹಾಪಂಕಾಂ ವಿನಿಕೀರ್ಣಾಂತ್ರಶೈವಲಾಮ್ ।**
**ಭಿನ್ನಕಾಯಶಿರೋಮೀನಾಮಂಗಾವಯವಶಾದ್ವಲಾಮ್ ॥**

**ಗೃಧ್ರಹಂಸಗಣಾಕೀರ್ಣಾಂ ಕಂಕಸಾರಸಸೇವಿತಾಮ್ ।**
**ಮೇದಃಫೇನಸಮಾಕೀರ್ಣಾಮಾರ್ತಸ್ತನಿತನಿಸ್ಸ್ವನಾಮ್ ॥**

**ತಾಂ ಕಾಪುರುಷದುಸ್ತಾರಾಂ ಯುದ್ಧಭೂಮಿಮಯೀಂ ನದೀಮ್।**
**ರಾಕ್ಷಸಾಃ ಕಪಿಮುಖ್ಯಾಶ್ಚ ತೇರುಸ್ತಾಂ ದುಸ್ತರಾಂ ನದೀಮ್ ॥**
(೬.೫೮.೨೯-೩೩)

ಮೃತವೀರರೆಂಬ ದಡಗಳಿಂದ, ಮುರಿದ ಕೈದುಗಳೆಂಬ ತೇಲಿಬರುವ ಮರಗಳಿಂದ, ರಕ್ತಪ್ರವಾಹದಿಂದ, ಪಿತ್ತಕೋಶ-ಮೇದೋಜೀರಕಗಳೆಂಬ ಕೆಸರಿನಿಂದ, ಚೆಲ್ಲಾಪಿಲ್ಲಿಯಾದ ಕರುಳೆಂಬ ಪಾಚಿಯಿಂದ, ಕತ್ತರಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಕೈ-ಕಾಲುಗಳೆಂಬ ಮೀನುಗಳಿಂದ, ಹಾರಿಬರುವ ಹದ್ದುಗಳೆಂಬ ಹಂಸಗಳಿಂದ, ರಣಹದ್ದುಗಳೆಂಬ ಕೊಕ್ಕರೆಗಳಿಂದ, ಕೊಬ್ಬೆಂಬ ನೊರೆಯಿಂದ, ಚೀತ್ಕಾರವೆಂಬ ಮೊರೆತದಿಂದ ಭೀಕರವಾದ ಸಂಗ್ರಾಮಸ್ರವಂತಿಯನ್ನು ಹೇಡಿಗಳು ದಾಟಲಾರರು. ಅದು ಹೇಗೋ ಕಪಿ-ರಾಕ್ಷಸವೀರರು ಅದನ್ನು ದಾಟಿದರು ।

ಶ್ರೀರಾಮನೇ ಅಪ್ರತಿಮಪರಾಕ್ರಮದಿಂದ ಹೋರಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ಆತನ ವೀರವಿಹಾರವು ಕಾಲಚಕ್ರಸದೃಶವಾಗಿ ವೈರಿಗಳ ಪಾಲಿಗೆ ತೋರಿತಂತೆ. ಇದನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ಸಾವಯವರೂಪಕವಾಗಿ ಹೀಗೆ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾರೆ:

**ಶರೀರನಾಭಿ ಸತ್ತ್ವಾರ್ಚಿಃ ಶರಾರಂ ನೇಮಿಕಾರ್ಮುಕಮ್।**
**ಜ್ಯಾಘೋಷತಲನಿರ್ಘೋಷಂ ತೇಜೋಬುದ್ಧಿಗುಣಪ್ರಭಮ್ ॥**
(೫.೧೪.೧೫)

**ದಿವ್ಯಾಸ್ತ್ರಗುಣಪರ್ಯಂತಂ ನಿಘ್ನಂತಂ ಯುಧಿ ರಾಕ್ಷಸಾನ್ ।**
**ದದೃಶೂ ರಾಮಚಕ್ರಂ ತತ್ಕಾಲಚಕ್ರಮಿವ ಪ್ರಜಾಃ ॥** (೬.೯೭.೨೯-೩೦)

ರಾಮಚಕ್ರಕ್ಕೆ ಅವನ ಒಡಲೇ ಕೇಂದ್ರವಾಗಿತ್ತು, ಬಾಣಗಳೇ ಅರಗಳಾಗಿದ್ದವು, ಬಿಲ್ಲೇ ನೇಮಿಯಾಗಿತ್ತು, ಬಲವೇ ಬೆಂಕಿಯಾಗಿತ್ತು, ಬಿಲ್ಲಿನ ಹೆದೆಯ ಸದ್ದೇ ಚಕ್ರಚೀತ್ಕೃತಿಯಾಗಿತ್ತು, ಆತನ ಬುದ್ಧಿಪರಾಕ್ರಮಗಳೇ ಪ್ರಭೆಗಳಾಗಿದ್ದುವು.

ರಾವಣಸಂಹಾರದ ಬಳಿಕ ವಿಭೀಷಣನು ವಿಲಪಿಸುತ್ತಾ ಅಣ್ಣನ ಗುಣಗಳನ್ನು ಕೊಂಡಾಡುವಾಗ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಸಾವಯವರೂಪಕಗಳ ಪ್ರಪಂಚವನ್ನೇ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ್ದಾರೆ: ಧೈರ್ಯವೆಂಬ ಚಿಗುರನ್ನು, ಛಲವೆಂಬ ಹೂಗಳನ್ನು, ತಪಸ್ಸೆಂಬ ದಾರ್ಢ್ಯವನ್ನು, ಶೌರ್ಯವೆಂಬ ಬೇರನ್ನು ತಳೆದು ಬೆಳೆದ ರಾಕ್ಷಸರಾಜವೃಕ್ಷವನ್ನು ರಾಘವಮಾರುತವು ಮುರಿದುಹಾಕಿತು; ಪರಾಕ್ರಮದಂತವನ್ನು, ಅನುಗ್ರಹಶುಂಡವನ್ನು, ಸತ್ಕುಲೀನತೆಯೆಂಬ ಪೂರ್ವಕಾಯವನ್ನು, ಕೋಪವೆಂಬ ಅಪರಗಾತ್ರವನ್ನು ತಳೆದ ರಾವಣಮಾತಂಗವು ರಾಮಸಿಂಹದಿಂದ ಸಿಗಿದುಹೋಯಿತು; ಪರಾಕ್ರಮಜ್ವಾಲೆಯಿಂದ ನಿಶ್ವಾಸಧೂಮದಿಂದ, ಪ್ರಾಬಲ್ಯಪ್ರತಾಪದಿಂದ ಬೆಳಗುತ್ತಿದ್ದ ರಾವಣಾಗ್ನಿಯು ರಾಮಜಲಧರದ ಮಳೆಯಿಂದ

ಆರಿಹೋಯಿತು; ಸೇನಾಶೃಂಗವನ್ನು ತಳೆದು ಚಾಪಲ್ಯವೆಂಬ ಕಿವಿ-ಕಣ್ಣುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ವೈರಿಭೀಕರವಾದ ರಾವಣವೃಷಭವನ್ನು ರಾಮಶಾರ್ದೂಲವು ಕೊಂದುಹಾಕಿತು(೬.೧೧೨.೧೦-೧೩) ಹೀಗೆ ಸಾಗುವ ಅಸಂಖ್ಯರೂಪಕಪರಂಪರೆಯು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಹಂತದಲ್ಲಿಯೂ ಸಮಗ್ರಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಕೊಡುತ್ತದೆ. ಇದರ ವಿಸ್ತಾರವನ್ನೇ ಗ್ರೀಕರ ಆದಿಕವಿ ಹೋಮರನ "ಮಹೋಪಮೆ"ಯೆಂದು ಹೆಸರಾದ ಹೋಲಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು.

ಹೀಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ರೂಪಕಗಳು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ರಚಿತವಾಗಿವೆ.

**ದೃಷ್ಟಾಂತವು** ಔಪಮ್ಯಪ್ರಕಾರದ ಅಲಂಕಾಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಹೋಲಿಸುವ ಮತ್ತು ಹೋಲಿಸಲ್ಪಡುವ ವಸ್ತುಗಳ ನಡುವೆ ಬಿಂಬ-ಪ್ರತಿಬಿಂಬಭಾವವು ರೂಪುಗೊಂಡಲ್ಲಿ ಈ ಅಲಂಕಾರವು ಸಿದ್ಧ. ಇದು ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಉಪಮೆಯಂತೆಯೇ ಹೌದು. ಆದರೆ ಪ್ರಸ್ಫುಟವಾದ ಎರಡು ಸದೃಶಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನಮ್ಮೆದುರು ನೀಡುವ ಕಾರಣ ಇದಕ್ಕೊಂದು ಬಗೆಯ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವುಂಟು. ಆದರೆ ಇಂಥ ಪ್ರಸ್ಫುಟೀಕರಣಪ್ರಯತ್ನವು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ವಾಚ್ಯತೆಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾರಣ ಉಪಮೆಯಲ್ಲಿರುವ ಗಮ್ಯಾರ್ಥಗಳಿಗಿಲ್ಲಿ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದಲೇ ಈ ಅಲಂಕಾರವನ್ನು ನೀತಿ-ತತ್ತ್ವ-ಉಪದೇಶಾದಿಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ವಿನಿಯೋಗಿಸುವುದುಂಟು. ಅಪ್ಪಟ ಕಾವ್ಯವಾದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ದೃಷ್ಟಾಂತಾಲಂಕಾರದ ಪ್ರಾಚುರ್ಯ ನಿರೀಕ್ಷಿತರೀತಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಅತ್ಯಲ್ಪ. ಇಂಥ ಕೆಲವೊಂದು ಸುಂದರಸೂಕ್ತಿಗಳನ್ನು ಪರಾಂಬರಿಸೋಣ:

**ತ್ಯಕ್ತಭೋಗಸ್ಯ ಮೇ ರಾಜನ್ ವನೇ ವನ್ಯೇನ ಜೀವತಃ ।**
**ಕಿಂ ಕಾರ್ಯಮನುಯಾತ್ರೇಣ ತ್ಯಕ್ತಸಂಗಸ್ಯ ಸರ್ವತಃ ॥**

**ಯೋ ಹಿ ದತ್ತ್ವಾ ಗಜಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಕಕ್ಷ್ಯಾಯಾಂ ಕುರುತೇ ಮನಃ ।**
**ರಜ್ಜುಸ್ನೇಹೇನ ಕಿಂ ತಸ್ಯ ತ್ಯಜತಃ ಕುಂಜರೋತ್ತಮಮ್ ॥** (೨.೩೭.೨-೩)

ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಟ ರಾಮನ ಹಿಂದೆ ಸೈನ್ಯವೂ ಸೇವಕವರ್ಗವೂ ಸಾಗಲೆಂಬ ದಶರಥನ ಮಾತಿಗೆ ರಾಮನು ಒಪ್ಪದೆ ಹೀಗೆನ್ನುತ್ತಾನೆ: ರಾಜ್ಯಭೋಗವನ್ನೇ ವರ್ಜಿಸಿ ವಾನಪ್ರಸ್ಥವ್ರತವನ್ನು ಕೈಗೊಂಡು ಕಾಡಿಗೆ ಸಾಗಲಿರುವ ನನಗೆ ಈ ಹಿಂಬಾಲಕರ ಕೋಲಾಹಲವೇಕೆ? ಆನೆಯನ್ನೇ ಬಿಟ್ಟುಕೊಟ್ಟಮೇಲೆ ಅದನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಹಗ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿತಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವ ಹೊಲಬೇ?

**ಯಥಾ ಕಾಷ್ಠಂ ಚ ಕಾಷ್ಠಂ ಚ ಸಮೇಯಾತಾಂ ಮಹೋದಧೌ ।**
**ಸಮೇತ್ಯ ಚ ವ್ಯಪೇಯಾತಾಂ ತದ್ವದ್ಭೂತಸಮಾಗಮಃ ॥** (೨.೧೦೫-೨೬)

ಹೇಗೆ ಮಹಾಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದ ಮರದ ತುಂಡುಗಳು ಅಲೆಗಳ ಹೊಡೆತಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿ ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಹತ್ತಿರ ಬಂದು ಅಷ್ಟೇ ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ದೂರವೂ ಸಾಗುತ್ತವೆಯೋ ಹಾಗೆಯೇ ಜೀವ-ಜೀವಗಳ ಸಂಗಮ-ವಿಗಮಗಳೂ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಯಾದೃಚ್ಛಿಕ. ಈ ಒಂದು ದೃಷ್ಟಾಂತದ ಭಯಾನಕವಾಸ್ತವ ನಿಜಕ್ಕೂ ನಮ್ಮನ್ನು ತಲ್ಲಣಗೊಳಿಸುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರವೊಂದು ಜೀವನದ ವಿಕಟರಹಸ್ಯವನ್ನೇ ಬಯಲುಮಾಡುವ ದಾರ್ಶನಿಕಸೂಕ್ತಿಯ ಮಟ್ಟಕ್ಕೇರಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹ.

* * *

**ನಿದರ್ಶನಾಲಂಕಾರವು** ದೃಷ್ಟಾಂತಕ್ಕೆ ನಿಕಟಬಂಧು. ಇದು ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತಗಳನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುವ ವಾಕ್ಯವಿನ್ಯಾಸದಲ್ಲಿ ಸಾಮ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಂಥದ್ದು. ಇಲ್ಲಿಯೂ ವಾಚ್ಯತಾಂಶದ ಹೆಚ್ಚಳವುಂಟು. ಆದುದರಿಂದಲೇ ಉಪದೇಶಪರವಾದ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ ಮಿಗಿಲಾದ ಅವಕಾಶ. ಅಂಥ ಒಂದು ಹಿತಕಥನದ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಗಮನಿಸಬಹುದು. ರಾವಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕದ್ದೊಯ್ಯಲು ಮುಂದಾದಾಗ ಆಕೆಯು ಅವನಿಗೆ ಈ ದುಷ್ಕಾರ್ಯದ ಪರಿಣಮರೌದ್ರತೆಯನ್ನು ನಿದರ್ಶನಮಾಲೆಯ ಮೂಲಕ ಮನಮುಟ್ಟಿಸಿ ಎಚ್ಚರಿಸುವ ಪರಿ ಪರಿಶೀಲನೀಯ:

**ಆಶೀವಿಷಸ್ಯ ವದನಾದ್ದಂಷ್ಟ್ರಾಮಾದಾತುಮಿಚ್ಛಸಿ ।** (೩.೪೭.೩೯)
**ಮಂದರಂ ಪರ್ವತಶ್ರೇಷ್ಠಂ ಪಾಣಿನಾ ಹರ್ತುಮಿಚ್ಛಸಿ ।**
**ಕಾಲಕೂಟಂ ವಿಷಂ ಪೀತ್ವಾ ಸ್ವಸ್ತಿಮಾನ್ ಗಂತುಮಿಚ್ಛಸಿ ॥** (೩.೪೭.೪೦)
**ಅಕ್ಷಿ ಸೂಚ್ಯಾ ಪರಿಮೃಜಸಿ ಜಿಹ್ವಯಾ ಲೇಢಿ ಚ ಕ್ಷುರಮ್ ।** (೩.೪೭.೪೧)

**ಅವಸಜ್ಯ ಶಿಲಾಂ ಕಂಠೇ ಸಮುದ್ರಂ ತರ್ತುಮಿಚ್ಛಸಿ ।**
**ಸೂರ್ಯಾಚಂದ್ರಮಸೌ ಚೋಭೌ ಪಾಣಿಭ್ಯಾಂ ಹರ್ತುಮಿಚ್ಛಸಿ ॥**
(೩.೪೭.೪೨)
**ಅಗ್ನಿಂ ಪ್ರಜ್ವಲಿತಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ವಸ್ತ್ರೇಣಾಹರ್ತುಮಿಚ್ಛಸಿ ।** (೩.೪೭.೪೩)

ರಾಮನ ಪ್ರಿಯಪತ್ನಿಯಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಲೆಳಸುವುದೆಂದರೆ ಘೋರಸರ್ಪದ ಕೋರೆಗಳನ್ನು ಕೀಳಲೆಳಸಿದಂತೆ, ಮಂದರಪರ್ವತವನ್ನು ಕೈಯಿಂದ ಕಸಿಯಲು ಬಯಸಿದಂತೆ, ಕಾಲಕೂಟವವಿಷವನ್ನೂ ಕುಡಿದು ಸ್ವಸ್ಥವಾಗಿ ಬದುಕಲು ಬಯಸಿದಂತೆ, ಸೂಜಿಯಿಂದ ಕಣ್ಣನ್ನು ಸವರಿಕೊಂಡಂತೆ, ಕತ್ತಿಯಲಗನ್ನು ನೆಕ್ಕಿ ನಲಿದಂತೆ, ಕೊರಳಿಗೆ ಬಂಡೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕಡಲಿಗೆ ಬಿದ್ದು ಈಜಲೆಳಸಿದಂತೆ, ರವಿ–ಶಶಿಗಳನ್ನು ಇರ್ಕೈಗಳಿಂದಲೂ ಕವರಿಕೊಳ್ಳಲು ಬಯಸಿದಂತೆ, ಧಗಧಗಿಸುವ ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಬಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡೊಯ್ಯಲು ಯತ್ನಿಸಿದಂತೆ....

ಈ ಮಾಲಾನಿದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಕೋಪ, ಕಳವಳ, ಧಾವಂತ, ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸಗಳೆಲ್ಲ ಅಹಮಹಮಿಕೆಯಾಗಿ ಹೊಮ್ಮುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಹೀಗೆ ಪುಂಖಾನುಪುಂಖವಾಗಿ ನಿದರ್ಶನಗಳ ಮೂಲಕ ಎಚ್ಚರ ನೀಡುವುದು ಸಂದರ್ಭಸಹಜವೂ ಹೌದು. ಇದು ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರಾಧಿಕ್ಯವೆಂದು ತೋರುವುದಿಲ್ಲ. ಅಲ್ಲದೆ ನಿದರ್ಶನಗಳ ನೈಜತೆಯೂ ಪದ್ಯಫಣಿತಿಯ ಧಾರಾಶುದ್ಧಿಯೂ ಇಲ್ಲಿ ಮತ್ತಷ್ಟು ಸಹಕಾರಿಗಳಾಗಿವೆ.

ಇಂದ್ರಜಿತ್ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ನಡುವಣ ಘೋರಸಂಗ್ರಾಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಭೀಷಣನು ಕಪಿಸೈನ್ಯವನ್ನು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಗೊಳಿಸುತ್ತಾ ಈವರೆಗೆ ಎಂಥೆಂಥ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನೆಲ್ಲ ಕೊಂದು ವಿಜೃಂಭಿಸಿದ ನಿಮಗೆ ಈ ಒಂದು ಯುದ್ಧವು ಲೆಕ್ಕವೇ? ಸಾಗರವನ್ನೇ ಈಜಿ ದಾಟಿದವರಿಗೆ ಇದೊಂದು ಗೋಷ್ಪಾದಮಾತ್ರದ ತಾಣವು ಹಿರಿದೇ? ಎಂದು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ಗಾದೆಮಾತಿನಂಥ ನಿದರ್ಶನಾಲಂಕಾರವು ಸೊಗಯಿಸಿದೆ:

**ಬಾಹುಭ್ಯಾಂ ಸಾಗರಂ ತೀರ್ತ್ವಾ ಲಂಘ್ಯತಾಂ ಗೋಷ್ಪದಂ ಲಘು ।**
(೬.೯೦.೧೫)

**ವಿಷಮಾ**ಲಂಕಾರವು ವಿರೋಧಮೂಲದ ವಾಗ್ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇದು ತನ್ನೊಳಗಿನ ವೈಷಮ್ಯಚಿತ್ರಣದ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಸುಲಭವಾಗಿ ಎದ್ದುತೋರುತ್ತದೆ. ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತೀರೂಪದ ಉಪಮಾಲಂಕಾರವೆನ್ನಬೇಕು. ಏಕೆಂದರೆ ಉಪಮೆಯ ಮೂಲ ಸಾಮ್ಯದಲ್ಲಿದ್ದರೆ, ವಿಷಮದ ಮೂಲ ವೈಷಮ್ಯದಲ್ಲಿದೆ. ಆದಿಕವಿಗಳು ಇಂಥ ಅಲಂಕಾರವನ್ನೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಸಾಮ್ಯವನ್ನರಸುವ ಆದರ್ಶೋನ್ಮುಖವಾದ ಮನಸ್ಸು ಇಹದಲ್ಲಿರುವ ವೈಷಮ್ಯವನ್ನು ಉಪೇಕ್ಷಿಸದ ವಾಸ್ತವಪ್ರಜ್ಞೆಯನ್ನೂ ಹೊಂದಿರಬೇಕಷ್ಟೆ. ಇದು ಕವಿಯಾಗಬಯಸುವವರಿಗೆ ಬೇಕಾದ ಪ್ರಥಮಾರ್ಹತೆಗಳಲ್ಲೊಂದು.

ವಿಷಮ ಮತ್ತು **ವಿರೋಧಾ**ಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸುವಾಗ ಶಬ್ದಮೈತ್ರಿಗೆ ಎಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಮಹತ್ತ್ವವುಂಟು. ಏಕೆಂದರೆ ಶಾಬ್ದಿಕವಾಗಿ ಸಾಮ್ಯವಿರುವಲ್ಲಿಯೂ ಆರ್ಥಿಕವಾಗಿ ಎಂಥ ವೈಷಮ್ಯವುಂಟೆಂದು ಧ್ವನಿಸುವಾಗಲೇ ಈ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಚೆಲುವು ಇಮ್ಮಡಿಸುತ್ತದೆ. ಇದು ಆದಿಕವಿಗಳಿಂದಲೇ ಪ್ರವರ್ತಿತವಾದ ಕವಿಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ.

ರಾಮನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಟಾಗ ಅಯೋಧ್ಯಾಪ್ರಜೆಗಳು ಆತನ ನಿಷ್ಪರಿಚ್ಛದನಿರ್ಗಮನವನ್ನು ಹೀಗೆ ಬಣ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ.

**ಯಂ ಯಾಂತಮನುಯಾತಿ ಸ್ಮ ಚತುರಂಗಬಲಂ ಮಹತ್ ।**
**ತಮೇಕಂ ಸೀತಯಾ ಸಾರ್ಧಮನುಯಾಸ್ಯತಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣಃ ॥** (೨.೩೩.೬)

ಯಾವನು ಹೊರಟುನಿಂತಾಗ ಸಮಗ್ರಚತುರಂಗಬಲವೇ ಹಿಂಬಾಲಿಸುತ್ತಿತ್ತೋ ಅಂಥವನಿಂದು ಕಾಡಿಗೆ ತೆರಳುವಾಗ ಬರಿಯ ಸೀತಾ–ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಮಾತ್ರ ಅನುಸರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಎಂಥ ವಿಪರ್ಯಾಸ! ಇಲ್ಲಿಯ ಅಯತ್ನಸಾಮಾನ್ಯ ಕಥನವೇ ಅದ್ಭುತಕಾವ್ಯವಾಗಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹ. ಲೋಕರೂಢಿಯ ಸವಕಲುಮಾತೂ ಮಹಾಕವಿಯ ಮೂಸೆಯಿಂದ ಹೊರಬಿದ್ದಾಗ ಸ್ವರ್ಗದಲ್ಲಿಯೂ ಸಲ್ಲಬಲ್ಲ ಸುವರ್ಣನಾಣ್ಯವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಶೂರ್ಪಣಖೆಯನ್ನು ಆದಿಕವಿಗಳು ನಮಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುವಾಗ ಆಕೆಯನ್ನು ರಾಮನೊಡನೆ ಜೊತೆಜೊತೆಯಾಗಿ ಹೋಲಿಸಿ ಅಲ್ಲಿಯ ವೈಷಮ್ಯವನ್ನು ಮನಮುಟ್ಟಿಸುವ ಪರಿ ಅನ್ಯಾದೃಶ:

**ಸುಮುಖಂ ದುರ್ಮುಖೀ ರಾಮಂ ವೃತ್ತಮಧ್ಯಂ ಮಹೋದರೀ ।**
**ವಿಶಾಲಾಕ್ಷಂ ವಿರೂಪಾಕ್ಷೀ ಸುಕೇಶಂ ತಾಮ್ರಮೂರ್ಧಜಾ ॥**

**ಪ್ರೀತಿರೂಪಂ ವಿರೂಪಾ ಸಾ ಸುಸ್ವರಂ ಭೈರವಸ್ವರಾ ।**
**ತರುಣಂ ದಾರುಣಾ ವೃದ್ಧಾ ದಕ್ಷಿಣಂ ವಾಮಭಾಷಿಣೀ ॥**

**ನ್ಯಾಯವೃತ್ತಂ ಸುದುರ್ವೃತ್ತಾ ಪ್ರಿಯಮಪ್ರಿಯದರ್ಶನಾ ।**
**ಶರೀರಜಸಮಾವಿಷ್ಟಾ ರಾಕ್ಷಸೀ ವಾಕ್ಯಮಬ್ರವೀತ್ ॥** (೩.೧೭.೧೦–೧೨)

ಅವನು ಸುಮುಖ ಇವಳು ದುರ್ಮುಖಿ, ಅವನು ಬಡನಡುವಿನವನು ಇವು ಹೆಬ್ಬೊಟ್ಟೆಯವಳು, ಅವನು ಚೆಲುಗಣ್ಣಿನವನು ಇವಳು ಕೆಡುಗಣ್ಣಿನವಳು, ಅವನು ಸೊಗಸುಗುರುಳವನು ಇವಳು ಕೆಂಗೂದಲ ಕಾಳಿ, ಅವನು ಸುರೂಪ ಇವಳು ಕುರೂಪಿ, ಅವನು ಇನಿದನಿಯವನು ಇವಳು ಬಿರುದನಿಯವಳು, ಅವನು ಸಹಜತರುಣ ಇವಳು ವಿಕೃತವೃದ್ಧೆ, ಅವನು ನೇರನುಡಿಯವನು ಇವಳು ಕೊಂಕುನುಡಿಯವಳು, ಅವನು ಸರಿದಾರಿಯವನು ಇವಳು ಹಾದಿಬಿಟ್ಟವಳು. ಇಂಥ ಶೂರ್ಪಣಖೆಯು ಕಾಡುವ ಕಾಮದ ಕಾಟದಿಂದ ಅವನನ್ನು ಕಾಡಿ-ಬೇಡಿದಳು.

ಇಲ್ಲಿಯ ಸೊಗಸು ಸ್ವಯಂವೇದ್ಯ. ವಿಶೇಷತಃ ಕಾಮವನ್ನು "ಶರೀರಜ"ವೆಂಬ ಶಬ್ದದಿಂದ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿರುವುದು ಅತ್ಯಂತಧ್ವನಿಪೂರ್ಣ. ಅಳಿಯುವಿಕೆಯೇ ಲಕ್ಷಣವಾಗಿ ಉಳ್ಳದ್ದು ಶರೀರ. ಅಂಥ ಶರೀರದಿಂದ ಹುಟ್ಟುವ ಕಾಮವು ಶರೀರ ಸುಟ್ಟರೂ ಬಿಡದಲ್ಲ! ಕಾಮನ ಬಿರುಬೇಗೆಯನ್ನು ಇದಕ್ಕಿಂತ ಸೊಗಸಾಗಿ ವ್ಯಂಜಿಸಲು ಯಾರಿಗೆ ಸಾಧ್ಯ? ಇದು ವಿಷಮಾಲಂಕಾರಗಳ ಮಾಲಿಕೆಯ ನಡುವೆ ಅನಿರೀಕ್ಷಿತವಾಗಿ ತಲೆದೋರುವ ಅಗೋಚರ ಪರಿಮಳ.

ಸೀತೆಯನ್ನು ತುಡುಕಲು ಮುಂದಾದ ರಾವಣನನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತ ಆಕೆ ರಾಮನಿಗೂ ರಾವಣನಿಗೂ ಇರುವ ಅಂತರವನ್ನು ಹಲವು ಮಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಹವಣಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆ ಪದ್ಯಗಳು ಪರಿಭಾವನೀಯ:

**ಯದಂತರಂ ಸಿಂಹಶೃಗಾಲಯೋರ್ವನೇ**
**ಯದಂತರಂ ಸ್ಯಂದನಿಕಾಸಮುದ್ರಯೋಃ ।**

**ಸುರಾಗ್ರ್ಯಸೌವೀರಕಯೋರ್ಯದಂತರಂ**
**ತದಂತರಂ ವೈ ತವ ರಾಘವಸ್ಯ ಚ ।**

**ಯದಂತರಂ ಕಾಂಚನಸೀಸಲೋಹಯೋ-**
**ರ್ಯದಂತರಂ ಚಂದನವಾರಿಪಂಕಯೋಃ ।**

**ಯದಂತರಂ ಹಸ್ತಿಬಿಡಾಲಯೋರ್ವನೇ**
**ತದಂತರಂ ದಾಶರಥೇಸ್ತವೈವ ಚ ॥**

**ಯದಂತರಂ ವಾಯಸವೈನತೇಯಯೋ-**
**ರ್ಯದಂತರಂ ಮದ್ಗುಮಯೂರಯೋರಪಿ ।**

**ಯದಂತರಂ ಸಾರಸಗೃಧ್ರಯೋರ್ವನೇ**
**ತದಂತರಂ ದಾಶರಥೇಸ್ತವೈವ ಚ ॥** (೩.೪೭.೪೫–೪೭)

ನರಿ-ಸಿಂಹಗಳ ನಡುವೆ, ಹಳ್ಳ-ಕಡಲುಗಳ ನಡುವೆ, ಗಂಜಿ-ಸುಧೆಗಳ ನಡುವೆ, ಸೀಸ-ಸ್ವರ್ಣಗಳ ನಡುವೆ, ಕೆಸರು-ಚಂದನಗಳ ನಡವೆ ಬೆಕ್ಕು-ಆನೆಗಳ ನಡುವೆ, ಕಾಗೆ-ಗರುಡಗಳ ನಡುವೆ, ನೀರುಕಾಗೆ-ವನಮಯೂರಗಳ ನಡುವೆ, ಹದ್ದು-ಹಂಸಗಳ ನಡುವೆ ಎಷ್ಟು ಅಂತರವುಂಟೋ ಅಷ್ಟು ಅಂತರ ನಿನಗೂ ರಾಮನಿಗೂ ಉಂಟು!

ಈ ತೆರನಾಗಿ ಸೀತೆಯು ಗದರುವಾಗ ಆದಿಕವಿಗಳು ಬಳಸಿದ ವೃತ್ತವಾಗಲಿ, ಪದಗಳಾಗಲಿ, ಕಲ್ಪನೆಗಳಾಗಲಿ ಅಪ್ರತಿದ್ವಂದ್ವ, ಧಿಕ್ಕಾರಕ್ಕೆ ಇದಕ್ಕಿಂತ ಸುಂದರವೂ ಸಮರ್ಥವೂ ಆದ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಮತ್ತೆಲ್ಲಿ?

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲೊಂದು ಮಹೋನ್ನತವಾದ **ವಿಷಮಾಲಂಕಾರ** ಪ್ರಯೋಗವಿದೆ. ಗತಿಸಿದ ಗಂಡನನ್ನು ಕುರಿತು ಶೋಕಿಸುವ

ಮಂದೋದರಿಯು "ವಸ್ತ್ರಾಭರಣಗಳ ಅಲಂಕಾರದಿಂದ ಸರಸದಲ್ಲಿಯೂ ಸಮರದಲ್ಲಿಯೂ ಲೀಲಾಜಾಲವಾಗಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ನಿನ್ನ ಶ್ಯಾಮಲಕಾಯವು ಮಿಂಚಿನ ಬಳ್ಳಿಗಳಿಂದೊಡಗೂಡಿದ ಮಳೆಮುಗಿಲಿನಂತಿತ್ತು. ಅದೀಗ ಸಾವಿರಾರು ಶರಗಳಿಂದ ಕ್ಷತವಿಕ್ಷತವಾಗಿ, ರಕ್ತಸಿಕ್ತವಾಗಿ ತೋರಿದೆ. ಮತ್ತೆಂದೂ ಸಿಗದ ನಿನ್ನ ಶರೀರಸ್ಪರ್ಶಕ್ಕೆ ಹಾತೊರೆಯುವ ನನಗೆ ನಿನ್ನ ಈ ಬಾಣಭರಿತಗಾತ್ರವು ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳಲೂ ಅಸಾಧ್ಯವೆಂಬಂತಾಯಿತಲ್ಲಾ!" ಎಂದು ಹೃದಯವಿದ್ರಾವಕವಾಗಿ ಶೋಕಿಸುತ್ತಾಳೆ:

**ಕಾಂತಂ ವಿಹಾರೇಷ್ವಧಿಕಂ ದೀಪ್ತಂ ಸಂಗ್ರಾಮಭೂಮಿಷು ।**
**ಭಾತ್ಯಾಭರಣಭಾಭಿರ್ಯದ್ವಿದ್ಯುದ್ಭಿರಿವ ತೋಯದಃ ॥**

**ತದೇವಾದ್ಯ ಶರೀರಂ ತೇ ತೀಕ್ಷ್ಣೈರ್ನೈಕೈಃ ಶರೈಶ್ಚಿತಮ್ ।**
**ಪುನರ್ದುರ್ಲಭಸಂಸ್ಪರ್ಶಂ ಪರಿಷ್ವಕ್ತುಂ ನ ಶಕ್ಯತೇ ॥** (೬.೧೧೪.೪೪-೪೫)

ಈ **ಯುಗ್ಮಕದಲ್ಲಿ** ಶೃಂಗಾರವು ಕರುಣಕ್ಕೆ ಅದೆಂತು ಸಹಕಾರಿಯಾಗಿ ಬಂದೊದಗಿದೆಯೆಂಬುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಾಗ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕಾವ್ಯಚಾತುರಿ ವಿಸ್ಮಯ ತರುತ್ತದೆ. ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಇದನ್ನು 'ರಸವದಲಂಕಾರ'ವೆಂದು ಗುರುತಿಸುವುದುಂಟು. ವ್ಯಾಸರಂಥ ಕವಿಬ್ರಹ್ಮರಿಗೂ ಈ ಬಗೆಯ ರಚನೆ ಸ್ಫೂರ್ತಿಪ್ರದವಾಗಿದೆಯೆಂಬುದನ್ನು ನಾವಿಲ್ಲಿ ನೆನೆಯಬಹುದು. ಮಹಾಭಾರತದ ಸ್ತ್ರೀಪರ್ವದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಭೂರಿಶ್ರವನ ಪತ್ನಿಯರ ಪ್ರಲಾಪವು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ಇಂಥ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಮೈದುಂಬಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ.

* * *

**ವಿರೋಧ** ಅಥವಾ **ವಿರೋಧಾಭಾಸಾ**ಲಂಕಾರವು ಕೂಡ ತುಂಬ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿ. ಇದನ್ನು ಕೆಲವರು ವಿಷಮಾಲಂಕೃತಿಗೇ ಸೇರಿಸುತ್ತಾರೆ. ವಿಶೇಷತಃ ಕಾಳಿದಾಸನು ಇದನ್ನು ಹಲವೆಡೆ ಬಳಸಿ ಅಜರಾಮರಗೊಳಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇವನಿಗೂ ಆದಿಕವಿಗಳೇ ಸ್ಫೂರ್ತಿಯೆಂಬುದು ಪುನರುಕ್ತಿಯಾದೀತು.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಎರಡು ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ನೋಡೋಣ:

**ತೀರ್ತ್ವಾ ಸಾಗರಮಕ್ಷೋಭ್ಯಂ ಭ್ರಾತರೌ ಗೋಷ್ಪದೇ ಹತೌ ।** (೬.೪೮.೧೫)

ನಾಗಾಸ್ತ್ರಬದ್ಧರಾದ ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ವಿಮಾನದಿಂದ ಕಂಡ ಸೀತೆಯು "ಅಯ್ಯೋ! ಶತಯೋಜನವಿಸ್ತಾರವಾದ ಸಾಗರವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ದಾಟಿ ಬಂದ ಇವರು ಇದೀಗ ಗೋಷ್ಪದಮಾತ್ರಜಲದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿ ನೊಂದರಲ್ಲಾ!" ಎಂದು ಹಲುಬುತ್ತಾಳೆ. ನಾಗಾಸ್ತ್ರಪ್ರಯೋಗಕ್ಕೆ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತನು ಬಳಸಿದ ಮಂತ್ರೋದಕವು ಗೋಷ್ಪದಮಾತ್ರದ್ದೆಂಬ ಅರಿವು ನಮಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಈ ಅಲಂಕಾರದ ಪರಿಣಾಮ ಅದ್ಭುತವಾದೀತು.

**ತಸ್ಮಿನ್ ಜೀವತಿ ವೀರೇ ತು ಹತಮಪ್ಯಹತಂ ಬಲಮ್ ।**
**ಹನುಮತ್ಯುಜ್ಝಿತಪ್ರಾಣೇ ಜೀವಂತೋಽಪಿ ವಯಂ ಹತಾಃ ॥** (೬.೭೪.೨೨)

ಸರ್ಪಾಸ್ತ್ರಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿ ಕಪಿಸೇನೆಯೆಲ್ಲ ಮೂರ್ಛಿತವಾಗಿದ್ದಾಗ ಜಾಂಬವಂತನು ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು. ಅವನ ಪ್ರಕಾರ ಹನುಮಂತನೊಬ್ಬನು ಬದುಕಿದ್ದರೆ, ಇಡಿಯ ಸೇನೆಯು ಸತ್ತಿದ್ದರೂ ಬದುಕಿದ್ದಂತೆ; ಅವನೇ ಒಂದು ವೇಳೆ ಸತ್ತಿದ್ದಲ್ಲಿ, ಅದು ಬದುಕಿದ್ದರೂ ಸತ್ತಿದ್ದಂತೆ!

ಈ ಮಾತಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ವಿವರಣೆ ಬೇಕಿಲ್ಲ. ರಾಮಾಯಣಮಹಾಮಾಲೆಯ ಮಹಾರತ್ನವೆನಿಸಿದ ಮಾರುತಿಯ ಶಕ್ತಿ-ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನೂ ಸೇವೆ-ನಿಸ್ವಾರ್ಥತೆಗಳನ್ನೂ ಬಲ್ಲವರಿಗೆ ಈ ಒಂದು ಶ್ಲೋಕವು ಆತನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡಲು ಸಾಕು.

**ಸಾಮಾಸೋಕ್ತಿಯು** ಅಲಂಕಾರಪ್ರಪಂಚದ ಒಂದು ಸಾರ್ಥಕಸದಸ್ಯ. ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತವಸ್ತುಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷಣೈಕ್ಯವನ್ನು ತರುವುದೇ ಇಲ್ಲಿಯ ಪ್ರಮುಖಸ್ವಾರಸ್ಯ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಬಾರಿ ಇಂಥ ವಿಶೇಷಣೈಕ್ಯವು ಶ್ಲೇಷದಿಂದ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ. ಈ ಅಲಂಕಾರವು ಜಡವೂ ಅಚೇತನವೂ ಆದ ವಸ್ತು-ವಿಷಯಗಳ ವರ್ಣನಾವಸರದಲ್ಲಿ ಅವುಗಳ ಮೇಲೆ ಚೇತನತ್ವವನ್ನು ಆರೋಪಿಸುವ ಮೂಲಕ ಮತ್ತೂ ಆಕರ್ಷಕವಾಗುತ್ತದೆ. ಆದುದರಿಂದಲೇ

ನಿಸರ್ಗವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಅಲಂಕಾರದ ವಿನಿಯೋಗ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಸೊಗಯಿಸುತ್ತದೆ. ಈ ಬಗೆಯ ಸ್ವಾರಸ್ಯಕ್ಕೂ ಆದಿಕವಿಗಳೇ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿ.

**ನವಮಾಸಧೃತಂ ಗರ್ಭಂ ಭಾಸ್ಕರಸ್ಯ ಗಭಸ್ತಿಭಿಃ ।**
**ಪೀತ್ವಾ ರಸಂ ಸಮುದ್ರಾಣಾಂ ದ್ಯೌಃ ಪ್ರಸೂತೇ ರಸಾಯನಮ್** ॥ (೪.೨೮–೩)

ಕಡಲ ನೀರನ್ನು ಕುಡಿದು, ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳಿಂದ ಗರ್ಭವನ್ನು ತಳೆದ ಗಗನವನಿತೆಯ ಪ್ರಸೂತಿಚಿತ್ರಣವಿಲ್ಲಿ ಹೃದಯಂಗಮ. ವಿಶೇಷತಃ "ರಸ" ಮತ್ತು "ರಸಾಯನ"ಗಳೆಂಬ ಪದಗಳ ಶ್ಲೇಷ ಇಲ್ಲಿಯ ಸಮಾಸೋಕ್ತಿಗೆ ಜೀವ ತುಂಬಿದೆ.

ಜೊತೆಗೆ ಮಳೆಮುಗಿಲುಗಳು ಒಂಬತ್ತು ತಿಂಗಳ ಕಾಲ ಅಗಸದಲ್ಲಿ ಕ್ರಮವಾಗಿ ರೂಪುಗೊಳ್ಳುವುದೂ ಅನಂತರ ಮೂರು ತಿಂಗಳು ಕರಗಿ ಇಳೆಗೆರಗುವುದೂ ಇಲ್ಲಿ ಅಭಿಪ್ರೇತವಾಗಿ ರಮಣೀಯನಿಸರ್ಗಚಿತ್ರಣವು ಮಾನುಷಸ್ಪಂದದಿಂದ ಮೈದುಂಬಿದೆ.

ಶರದ್ವರ್ಣನೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸಂಜೆಯು ಅನುರಾಗವತಿಯಾದ ಸುಂದರಿಯೆಂದು ರೂಪಿಸಿ, ಅವಳು ತನ್ನ ಇನಿಯನಾದ ಚಂದ್ರನ ಕಿರಣಕರಗಳಿಂದ ರೋಮಾಂಚಿತೆಯಾಗಿ ನಲಿದು ಕಣ್ಮಿಟಿಕಿಸುತ್ತಾ ಸ್ವಯಂ ಅಂಬರದಿಂದ ಜಾರಿಹೋಗುವ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿರುವುದು ವಿದ್ವದ್ರಸಿಲೋಕಕ್ಕೆ ಶತಶತಮಾನಗಳಿಂದ ಸಂತಸವನ್ನಿತ್ತ ಸಂಗತಿ. ಇಲ್ಲಿಯ ಶಬ್ದಾರ್ಥಮೈತ್ರಿ ಮತ್ತು ಪ್ರತಿಪದಸಾರ್ಥಕ್ಯಗಳು ಪರಿಪೂರ್ಣತೆಯ ನಿಕಷವೇ ಆಗಿವೆ:

**ಚಂಚಚ್ಚಂದ್ರಕರಸ್ಪರ್ಶಹರ್ಷೋನ್ಮೀಲಿತತಾರಕಾ ।**
**ಅಹೋ ರಾಗವತೀ ಸಂಧ್ಯಾ ಜಹಾತಿ ಸ್ವಯಮಂಬರಮ್** ॥ (೪.೩೦.೪೫)

ಈ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕರಸ್ಪರ್ಶ (ಕಿರಣಗಳ ಸ್ಪರ್ಶ, ಕೈಗಳ ಸ್ಪರ್ಶ), ಉನ್ಮೀಲಿತತಾರಕೆ (ತಾರೆಗಳ ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ, ಕಣ್ಪಾಪೆಯ ಅರಳುವಿಕೆ), ರಾಗವತೀ (ಸಂಜೆಗೆಂಪು, ಪ್ರಣಯವತೀ), ಅಂಬರ (ಅಗಸ, ವಸ್ತ್ರ) ಎಂಬ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಅನರ್ಘಭಾಸ್ವರಶ್ಲೇಷೆಯು ತನ್ನ ಕೃತಕೃತ್ಯತೆಯನ್ನು ಕಂಡಿದೆ.

* * *

**ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತಾ**ಲಂಕಾರವು ಸಂಗತಿಯೊಂದನ್ನು ಪ್ರಕಾರಂತರವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಬಗೆ. ಈ ಪ್ರಕಾರಾಂತರವು ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿಯೆನಿಸಬೇಕೆಂಬುದು ಸ್ವಯಂಸಿದ್ಧನಿಯಮ. ಇದು ತುಂಬ ಪ್ರಖರವಾದ ಅಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲೊಂದು. ವಕ್ರೋಕ್ತಿಯ ಜೀವಾಳವೇ ಇಲ್ಲಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಪ್ರಕಾರಾಂತರಕಥನದ ಮೂಲಕ ಸ್ಫುರಿಸುವ ಅಂಶವು ಧ್ವನಿಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ದೀಪ್ತವಾಗುವ ಕಾರಣ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಅಲಂಕಾರತ್ವಕ್ಕೆ ಮೂಲವೆನಿಸಿದ ಗುಣೀಭೂತವ್ಯಂಗ್ಯವೇ ಇಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸುತ್ತದೆ. ಅನುದಿನದ ಮಾತುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸುಳಿದುಹೋಗುವ ಮೊನೆ–ಮಿನುಗುಗಳಲ್ಲಿ ಪರ್ಯಾಯೋಕ್ತದ ಪಾರಮ್ಯವಿರತ್ತದೆ.

ಮಳೆಗಾಲಮುಗಿದರೂ ನೆರವನ್ನೀಯುವುದಿರಲಿ, ತನ್ನತ್ತ ತಿರುಗಿಯೂ ನೋಡದ ಸುಗ್ರೀವನ ವರ್ತನೆಗೆ ರೋಸಿದ ರಾಮನು ತಮ್ಮನ ಮೂಲಕ ಆತನಿಗೆ ಕಳುಹಿದ ಎಚ್ಚರಿಕೆ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಿದ್ಧಪದ್ಯಗಳಲ್ಲೊಂದು:

**ನ ಚ ಸಂಕುಚಿತಃ ಪಂಥಾ ಯೇನ ವಾಲೀ ಹತೋ ಗತಃ ।**
**ಸಮಯೇ ತಿಷ್ಠ ಸುಗ್ರೀವ ಮಾ ವಾಲಿಪಥಮನ್ವಗಾಃ** ॥ (೪.೩೦.೮೧)

ಯಾವ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ ಅಳಿದ ವಾಲಿಯು ಹೋದನೋ ಅದಿನ್ನೂ ಮುಚ್ಚಿಹೋಗಿಲ್ಲ. ಎಲೈ ಸುಗ್ರೀವ! ಈ ವಾಸ್ತವವನ್ನರಿತು ಸಮಯಕ್ಕೆ (ಕಾಲ ಮತ್ತು ಕರಾರು) ಬದ್ಧನಾಗಿದ್ದು ಬದುಕು; ವಾಲಿಯ ಹಾದಿಯನ್ನು ಹಿಡಿಯಬೇಡವೆಂದು ರಾಮನು ಹೇಳುವ ಮಾತು ಇಂದಿಗೂ ಮಾಸದ ಮೊನೆಯಾದ ಕಟಕಿ, ಹಸನಾದ ಕವಿತೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಸಮಯ ಶಬ್ದದ ಶ್ಲೇಷೆಯಾಗಲಿ, ಮಧ್ಯಮಪುರುಷೈಕವಚನದ ಕ್ರಿಯಾಪದಗಳಾಗಲಿ ಎಣೆಯಿಲ್ಲದ ವ್ಯಂಜಕಸಾಮಗ್ರಿಗಳೆನಿಸಿವೆ. ಜೊತೆಗೆ ದ್ವಿತಿಯಚರಣದ ಎರಡೆರಡೇ ವರ್ಣಗಳ ಪದಗಳು ತಮ್ಮ ಅಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರತೆಯಿಂದ ವ್ಯಂಜಿಸಿರುವ ಕಾವು–ಕೆಚ್ಚು–ಅಬ್ಬರ–ನಿಬ್ಬರಗಳು ತುಂಬ ಗಮನಾರ್ಹ.

ರಾವಣೊನೊಡನೆ ಸೆಣಸುತ್ತ ಹನೂಮಂತನು ಆತನನ್ನು ಬರಿಗೈಗಳಿಂದಲೇ ಕೊಲ್ಲುವೆನೆಂಬುದನ್ನು ಪ್ರಕಾರಂತರವಾಗಿ ಹೇಳುವ ಬಗೆ ಸೊಗಸಾಗಿದೆ. ವೀರರಸದ ಅಮಿಶ್ರಿರಪಾರಮ್ಯವನ್ನೇ ನಾವಿಲ್ಲಿ ಅಸ್ವಾದಿಸಬಹುದು:

**ಏಷ ಮೇ ದಕ್ಷಿಣೋ ಬಾಹುಃ ಪಂಚಶಾಖಃ ಸಮುದ್ಯತಃ ।**
**ವಧಮಿಷ್ಯತಿ ತೇ ದೇಹಾದ್ಭೂತಾತ್ಮಾನಂ ಚಿರೋಷಿತಮ್** ॥ (೬.೫೯.೫೬)

ಇದೋ ನನ್ನ ಬಿಚ್ಚಿದ ಬಲದೋಳನ್ನೆತ್ತಿದ್ದೇನೆ. ಇದು ನಿನ್ನೊಡಲಿನಲ್ಲಿ ನಿಡುಗಾಲದಿಂದಿರುವ ಆತ್ಮವನ್ನು ಹೊರದಬ್ಬುವುದು! ಎಂದು ಹನೂಮಂತನು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ತೋರುವ ವೈದಾಂತಿಕಗಾಂಭೀರ್ಯಾಭಾಸವು ನಿಜಕ್ಕೂ ಮಾರ್ಮಿಕ. ಜೊತೆಗೆ "ವಿಧಮಿಷ್ಯತಿ" ಎಂಬ ಕ್ರಿಯಾಪದದ ಸ್ಥೈರ್ಯ-ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳೂ ಗಮನಾರ್ಹ.

* * *

**ವಿನೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರವು** ಅದೊಂದು ಬಗೆಯ ಸರಳಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ವಾಗ್ವಿಚ್ಛಿತ್ತಿ. ನೈಷೇಧಿಕರೂಪದಿಂದಲೇ ಸ್ವಾರಸ್ಯವೊಂದನ್ನು ಇದು ಹೇಳಲು ಹವಣಿಸುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನೂ ಅದರ ಕೈಸಾಗುವ ಮಟ್ಟಿಗೆ ಆದಿಕವಿಗಳು ದುಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ಅಯೋಧ್ಯಾಜನತೆಯ ಸಿರಿ-ಸಂಪದಗಳನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸುವಾಗ ಸಾಕೇತವಾಸಿಗಳ ಪೈಕಿ ಯಾರೊಬ್ಬನೂ ಮುಕುಟವಿಡದೆ, ಕುಂಡಲ ತೊಡದೆ, ಹಾರ ಧರಿಸಿದೆ, ಚಂದನವನ್ನು ತೊಡೆಯದೆ, ಮಿಗಿಲಾದ ಭೋಗರಾಸಿಕ್ಯವಿಲ್ಲದೆ ಇರಲಿಲ್ಲವಂತೆ:

**ನಾಕುಂಡಲೀ ನಾಮಕುಟೀ ನಾಸ್ರಗ್ವೀ ನಾಲ್ಪಭೋಗವಾನ್ ।**
**ನಾಮೃಷ್ಟೋ ನಾನುಲಿಪ್ತಾಂಗೋ ನಾಸುಗಂಧಶ್ಚ ವಿದ್ಯತೇ** ॥ (೧.೬.೧೦)

ಇದೇ ಅಲಂಕಾರವನ್ನು ಬಳಸಿ ಅಯೋಧ್ಯಾಪೌರರನ್ನು ಮತ್ತೂ ವರ್ಣಿಸಿರುವುದನ್ನು ಮುಂದಿನ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಆಸಕ್ತರು ಗಮನಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು (೧.೬.೧೧-೧೨)

ರಾಮನು ರಥಾರೋಹಿಯಾಗಿ ದಶರಥನ ಮನೆಗೆ ತೆರಳುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಪಟ್ಟಾಭಿಷಿಕ್ತನಾಗಲಿದ್ದ ಆತನ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಬೀಳದವರೂ ಅವನನ್ನು ಕಣ್ತುಂಬಿಸಿಕೊಳ್ಳದವರೂ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಯಾರೊಬ್ಬರೂ ಇರಲಿಲ್ಲ; ಅಂಥವರಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅವರು ನಿಂದ್ಯರೂ ಆಗುತ್ತಿದ್ದರು. ತಮ್ಮನ್ನು ತಾವು ನಿಂದಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಲೂ ಇದ್ದರೆಂದು ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಹೇಳುವುದು ತುಂಬ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿ. ಪ್ರಾಯಶಃ ವಿನೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರಕ್ಕೇ ಇದು ಭೂಷಣ:

**ಯಶ್ಚ ರಾಮಂ ನ ಪಶ್ಯೇತ್ತು ಯಂ ಚ ರಾಮೋ ನ ಪಶ್ಯತಿ** । (೨.೧೭.೧೪)
**ನಿಂದಿತಃ ಸ ಭವೇಲ್ಲೋಕೇ ಸ್ವಾತ್ಮಾಪ್ಯೇನಂ ವಿಗರ್ಹತೇ** । (೨.೧೭.೧೫)

ತುಂಬ ಸೀಮಿತವಾದ ಚೌಕಟ್ಟಿರುವಂತೆ ತೋರುವ ಈ ಅಲಂಕಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಸಾಧಿಸಿದ ವಿಕ್ರಮವನ್ನು ಕಂಡಾಗ "ಕ್ರಿಯಾಸಿದ್ಧಿಃ ಸತ್ತ್ವೇ ಭವತಿ ಮಹತಾಂ ನೋಪಕರಣೇ" ಎಂಬ ಮಾತು ನೆನಪಾಗದಿರದು.

* * *

**ಐತಿಹ್ಯಾಲಂಕಾರವು** ಲೋಕಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಗಾದೆ, ಹೇಳಿಕೆ, ಸಾಮತಿ ಮುಂತಾದುವುಗಳನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಬೆಳಗುವ ನುಡಿಬೆಡಗು. ಇದಕ್ಕೂ **ಲೋಕೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರಕ್ಕೂ** ವ್ಯತ್ಯಾಸ ತುಂಬ ಕಡಿಮೆ. ಐತಿಹ್ಯವು ಜನಶೃತಿಯೆಂದಾದರೆ, ಲೋಕೋಕ್ತಿಯು ಗಾದೆಮಾತೆನ್ನಬೇಕು.

ಅಶೋಕವನದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಆಕೆಯನ್ನು ರಾಮವಾರ್ತೆಯಿಂದ ಮತ್ತೆ ಜೀವನ್ಮುಖಿಯಾಗಿಸಿದ ಹನೂಮಂತನು ಅವಳಿಗೆ ಧೈರ್ಯ ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು:

**ಕಲ್ಯಾಣೀ ಬತ ಗಾಥೇಯಂ ಲೌಕಿಕೀ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಮೇ ।**
**ಏತಿ ಜೀವಂತಮಾನಂದೋ ನರಂ ವರ್ಷಶತಾದಪಿ** ॥ (೫.೩೪.೬)

ಅಮ್ಮಾ, ಇದೊಂದು ಮಂಗಳಕರವಾದ ಗಾದೆಮಾತು ನನಗೆ ಸ್ಫುರಿಸುತ್ತಿದೆ; ಭರವಸೆ ನೀಗದೆ ಬಾಳಿದಲ್ಲಿ ನೂರಾರು ವರ್ಷಗಳು ಉರುಳಿದ ಬಳಿಕವಾದರೂ ಆನಂದವು ನಮ್ಮ ಹುಡುಕಿಕೊಂಡು ಬರುತ್ತದೆಂಬ ಮಾರುತಿಯ ಮಾತು ಎಲ್ಲರ ಪಾಲಿಗೂ ಆಶಾಕಿರಣ.

ಈ ಮಾತನ್ನು ಮುಂದೆ ಭರತನೂ ಆಡುತ್ತಾನೆ (೬.೧೨೬.೨). ಇದು ಹನುಮನೊಡನೆಯೇ ಅವನು ಹಂಚಿಕೊಂಡ ನುಡಿಯೆಂಬುದೂ ಗಮನಾರ್ಹ. ಈ ಶ್ಲೋಕವನ್ನು "ಕುವಲಯಾನಂದ"ವು ಐತಿಹ್ಯಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ಉದಾಹರಣೆಯಾಗಿ ನೀಡಿದೆ.

ಅಶೋಕವನಧ್ವಂಸನವನ್ನು ಮಾಡುವ ಹನೂಮಂತನನ್ನು ಕಂಡು ಅಂಜಿ ಸೀತೆಯನ್ನೇ ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ ರಾಕ್ಷಸಿಯರಿಗೆ ಆಕೆಯು ಜಾಣ್ಮೆಯಿಂದ ಹಾವಿನ ಹೆಜ್ಜೆಯನ್ನು ಹಾವೇ ಅರಿಯುವಂತೆ ಈ ಎಲ್ಲ ಮಾಯೆಯನ್ನು ನೀವೇ ಅರಿಯಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿ ಜಾರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ಈ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳು ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಲೋಕೋಕ್ತಿಯು ಗಮನಾರ್ಹ:

**ಅಹಿರೇವ ಹ್ಯಹೇಃ ಪಾದಾನ್ ವಿಜಾನಾತಿ ನ ಸಂಶಯಃ ।** (೫.೪೨.೯)

ರಾವಣನ ಮರಣದ ಬಳಿಕ ವಿಲಪಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಮಂದೋದರಿಯು ಪತಿವ್ರತೆಯರ ಕಣ್ಣೀರು ಬಿದ್ದ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ನೆಮ್ಮದಿಯಿರುವುದಿಲ್ಲವೆಂಬ ನಾಣ್ನುಡಿ ಸತ್ಯ; ಇದು ಪ್ರಾಯಶಃ ತನ್ನ ಪತಿಯ ಸಾವಿಗೆ ಹೇತುವಾಯಿತೆಂದು ಹಲುಬುವಳು:

**ಪ್ರವಾದಃ ಸತ್ಯ ಏವಾಯಂ ತ್ವಾಂ ಪ್ರತಿ ಪ್ರಾಯಶೋ ನೃಪ ।**
**ಪತಿವ್ರತಾನಾಂ ನಾಕಸ್ಮತ್ಪತಂತ್ಯಶ್ರೂಣಿ ಭೂತಲೇ ॥** (೬.೧೧೪.೬೭)

**ಯಥಾಸಂಖ್ಯಾಲಂಕಾರವನ್ನು** ಹಲವು ಕರ್ತೃ-ಕ್ರಿಯಾವಾಚಕಗಳ ಸಮಾನಾನುಪೂರ್ವಿಯೆನ್ನಬಹುದು. ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಶಾಲಾಪರೀಕ್ಷೆಗಳ ಪ್ರಶ್ನಪತ್ರಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಎದುರಾಗುವ "ಹೊಂದಿಸಿ ಬರೆಯಿರಿ" (Match the Following) ಎಂಬ ಜಾಡಿನದು. ಇದರ ಅಲ್ಪಚಾರುತೆಯ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಕುಂತಕನು ಇದನ್ನೊಂದು ಅಲಂಕಾರವಾಗಿಯೇ ಲೆಕ್ಕಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಆಧುನಿಕರಾದ ವಿ.ರಾಘವನ್ನಂಥವರೂ ಈ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ಅನುಮೋದಿಸುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಸಮಾನಶ್ರುತಿಯ ಪದಗಳು ಸೇರಿಕೊಂಡಾಗ ಯಥಾಸಂಖ್ಯಕ್ಕೆ ಅಂದ ಬಾರದಿರದು. ಆದಿಕವಿಗಳು ಇಂಥ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತಮ್ಮ ಪ್ರತಿಭೆಯನ್ನು ಮೆರೆಯುತ್ತಾರೆ.

ರಾಮ-ಸುಗ್ರೀವರ ಸಖ್ಯವಾದೊಡನೆ ವಾಲಿ-ರಾವಣ-ಮೈಥಿಲಿಯರ ಹೊನ್ನಿನಂತೆಯೂ ಬೆಂಕಿಯಂತೆಯೂ ಕಮಲದಂತೆಯೂ ಇರುವ ಎಡಗಣ್ಣುಗಳು ಮಿಡುಕಿದವೆಂದು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಸಮೀಕರಿಸುವಾಗಲೇ ಇದು ಪುರುಷರಿಗೆ ಅಪಶಕುನ, ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಶುಭಶಕುನವೆಂದು ಬೆಳೆದುಬಂದ ನಂಬಿಕೆಯನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ಕಾರಣ ಮತ್ತಷ್ಟು ಚಮತ್ಕಾರಕಾರಿಯಾಗಿದೆ. ಹೀಗೆ ಸಾಮಾನ್ಯದ ಅಲಂಕಾರಕ್ಕೂ ಅಂದವನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಬಲ್ಲ ಬಲ್ಮೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳದು:

**ಸೀತಾಕಪೀಂದ್ರಕ್ಷಣದಾಚರಾಣಾಂ**
**ರಾಜೀವಹೇಮಜ್ವಲಪೋಪಮಾನಿ ।**
**ಸುಗ್ರೀವರಾಮಪ್ರಣಯಪ್ರಸಂಗೇ**
**ವಾಮಾನಿ ನೇತ್ರಾಣಿ ಸಮಂ ಸ್ಫುರಂತಿ ॥** (೪.೫.೩೨)

ಇಲ್ಲಿ **'ಸ್ಫುರಂತಿ'** ಎಂಬ ಒಂದೇ ಕ್ರಿಯಾಪದದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನಿರ್ವಹಿಸಿದ ಕಾರಣ ಇದು ಸಹೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರವೂ ಆಗಿದೆ ಅನೇಕಕ್ರಿಯೆಗಳಿಗೆ ಒಂದೇ ವಾಚಕವನ್ನು ಬಳಸಿ ನಿರ್ವಹಿಸಿದಾಗ ಸಹೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರವು ಸಿದ್ಧಿಸುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ ಹಲವು ಚಮತ್ಕೃತಿಗಳ ಕಾರಣ ಪ್ರಕೃತಪದ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೊಗಸು ಮಿಗಿಲೆನಿಸಿದೆ.

ಇದೇ ಅಲಂಕಾರದ ಮತ್ತೊಂದು ಮಾದರಿಯನ್ನು ಮಳೆಗಾಲದ ಬಣ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು. ಇಲ್ಲಿರುವುದು ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ಜೋಡಣೆ. ಇದು ಅಪ್ಪಟ ಯಥಾಸಂಖ್ಯೆ:

**ವಹಂತಿ ವರ್ಷಂತಿ ನದಂತಿ ಭಾಂತಿ**
**ಧ್ಯಾಯಂತಿ ನೃತ್ಯಂತಿ ಸಮಾಶ್ವಸಂತಿ ।**

**ನದ್ಯೋ ಘನಾ ಮತ್ತಗಜಾ ವನಾಂತಾಃ**
**ಪ್ರಿಯಾವಿಹೀನಾಃ ಶಿಖಿನಃ ಪ್ಲವಂಗಾ** ॥ (೪.೨೮.೨೭)

ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ನದಿಗಳು, ಮುಗಿಲುಗಳು, ಮತ್ತೇಭಗಳು, ಗಹನಾರಣ್ಯಗಳು, ವಿರಹಿಗಳು, ನವಿಲುಗಳು ಮತ್ತು ಕಪ್ಪೆಗಳು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಹರಿಯುತ್ತ, ಸುರಿಯುತ್ತ, ಮೊರೆಯುತ್ತ, ಹೊಳೆಯುತ್ತ, ಹಲುಬುತ್ತ, ನಲಿಯುತ್ತ, ನೆಮ್ಮದಿವಡೆಯುತ್ತಿವೆ.

ಇಲ್ಲಿಯ ಸಮಾನಶ್ರುತಿಯ ಪದಗಳು ಮತ್ತು ಲೋಕಪರಿಶಿಲನೆ ಸ್ವಾರಸ್ಯವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಿವೆ. ಈ ಪದ್ಯವೇ ಕಾಳಿದಾಸನ ಋತುಸಂಹಾರಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಂದಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹ.

* * *

**ದೀಪಾಲಂಕಾರವು** ಪ್ರಕೃತಾಪ್ರಕೃತಗಳ ಧರ್ಮೈಕ್ಯದ ಮೇಲೆ ನಿಂತಿದೆಯೆಂದು ಶಾಸ್ತ್ರೀಯನಿರ್ವಚನ. ಇದೂ ಸಾದೃಶ್ಯಮೂಲಾಲಂಕಾರವೇ. ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿಯ ಸಾದೃಶ್ಯವು ಧ್ವನಿತವಾಗುವುದೊಂದು ಸ್ವಾರಸ್ಯ.

ಮಳೆಗಾಲವು ಮುಗಿಯುವುದನ್ನೂ ಸುಗ್ರೀವನ ನೆರವು ಬರುವುದನ್ನೂ ಎದುರುನೋಡುತ್ತಿದ್ದ ರಾಮನು ತಾನೀಗ ನದಿಗಳ ಮತ್ತು ಸುಗ್ರೀವನ ಪ್ರಸನ್ನತೆಗಾಗಿ ಕಾದುನಿಂತಿದ್ದೇನೆಂದು ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ಪ್ರಸನ್ನತೆಯೆಂಬ ಧರ್ಮೈಕ್ಯವು ದೀಪಾಲಂಕಾರವನ್ನು ಸಾಧಿಸಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಇದು ಶ್ಲೇಷಮೂಲದ್ದಾದ ಕಾರಣ ಚಮತ್ಕಾರವು ಮತ್ತೂ ಹೆಚ್ಚು:

**ಸುಗ್ರೀವಸ್ಯ ನದೀನಾಂ ಚ ಪ್ರಸಾದಮನುಪಾಲಯನ್** । (೪.೨೭.೪೪)

* * *

ಈ ಮುನ್ನವೇ ಗಮನಿಸಿದಂತೆ **ಸಹೋಕ್ತ್ಯಲಂಕಾರವು** ಸಮಾನಕ್ರಿಯಾವಾಚಕದ ಮೂಲಕ ಉನ್ಮೀಲಿಸುತ್ತದೆ. ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಹಾದಿಗಳೆಲ್ಲ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ, ಯುದ್ಧೋನ್ಮತ್ತರಾದ ರಾಜರ ಸೈನ್ಯಗಳಿಗೆ ಸಂಚಾರವಿಲ್ಲದೆ ಸಂಪರ್ಕಗಳೂ ವೈರಗಳೂ ಸಮಾನವಾಗಿ ಸ್ಥಗಿತವಾದುವೆಂಬ ಶ್ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಸಹೋಕ್ತಿಯ ಸೊಗಸನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು:

**ವೃತ್ತಾ ಯಾತ್ರ ನರೇಂದ್ರಾಣಾಂ ಸೇನಾ ಪಥ್ಯೇವ ವರ್ತತೇ** ।
**ವೈರಾಣಿ ಚೈವ ಮಾರ್ಗಾಶ್ಚ ಸಲಿಲೇನ ಸಮೀಕೃತಾಃ** ॥ (೪.೨೮.೫೩)

* * *

**ಅನುಮಾನಾಲಂಕಾರವು** 'ಅನುಮಾನ'ವೆಂಬ ತಾರ್ಕಿಕ ಪ್ರಮಾಣವನ್ನೇ ಆಧರಿಸಿದೆ. ಇದನ್ನು ಕೆಲವರು ಅಲಂಕಾರವಾಗಿಯೇ ಅಂಗೀಕರಿಸರು. ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಕಾವ್ಯಲಿಂಗದಲ್ಲಿಯೇ ಇದು ಅಡಕವಾದೀತು. ಆದರೆ ಇಂಥ ಅಲಂಕಾರದಲ್ಲಿಯೂ ಆದಿಕವಿಗಳ ಕೌಶಲ ಪ್ರಸ್ಫುಟ.

ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಮೋಡ ಕವಿದು ಸೂರ್ಯನ ಸುಳಿವೇ ಇಲ್ಲದಿದ್ದಾಗ ಸಂಜೆಯಾಗುವುದನ್ನು ತಾವರೆಗಳ ಮುದುಡುವಿಕೆಯಿಂದ, ಹಕ್ಕಿಗಳ ಗೂಡು ಸೇರುವಿಕೆಯಿಂದ, ಜಾಜಿಹೂಗಳ ಅರಳುಗಳಿಂದ ಅನುಮಾನಿಸಬೇಕಿದೆ:

**ನಿಲೀಯಮಾನೈರ್ವಿಹಗೈರ್ನಿಮೀಲದ್ಭಿಶ್ಚ ಪಂಕಜೈಃ** ।
**ವಿಕಸಂತ್ಯಾ ಚ ಮಾಲತ್ಯಾ ಗತೋಽಸ್ತಂ ಜ್ಞಾಯತೇ ರವಿಃ** ॥ (೪.೨೮.೫೨)

* * *

**ಸಾರಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ** ವರ್ಣ್ಯವಸ್ತುಗಳು ಒಂದು ಮತ್ತೊಂದರ ಸಾರವೆಂಬಂತೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಉತ್ಕರ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತವೆ.

ಮಂದೋದರಿಯು ಪತಿವಿಯೋಗದಿಂದ ವಿಲಪಿಸುತ್ತಾ, ರಾವಣನು ಭೂಮಿಯ ಸಾರಭೂತಭಾಗವಾದ, ಸಂಪತ್ತಿನ ಸಾರಭೂತಸಂಪತ್ತಿಯಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಮಿಸಿದ್ದು ತಪ್ಪಾಯಿತೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವಲ್ಲಿ ಸಾರಾಲಂಕಾರದ ಛಾಯೆಯನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ:

**ವಸುಧಾಯಾಶ್ಚ ವಸುಧಾಂ ಶ್ರಿಯಃ ಶ್ರೀಂ ಭರ್ತೃವತ್ಸಲಾಮ್**
(೬.೧೧೪.೨೨)

* * *

**ಉಲ್ಲೇಖಾಲಂಕಾರವು** ವರ್ಣ್ಯವಸ್ತುವನ್ನು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ಬಣ್ಣಿಸುವುದರಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಕೆಲವೊಮ್ಮೆ ರೂಪಕದ ಛಾಯೆಯನ್ನೂ ತಾಳುವುದುಂಟು. ಆಗ ಇದು ಮಾಲಾರೂಪಕದ ಜಾಡನ್ನು ಹಿಡಿದಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಇಂತಲ್ಲದೆ ವರ್ಣ್ಯವಸ್ತುವಿನ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನೇ ಬಗೆಬಗೆಯಾಗಿ ಬಣ್ಣಿಸಿದಾಗ ಅದು ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯಂತೆಯೂ ತೋರಬಹುದು. ಕೇವಲ ಪ್ರಧಾನವ್ಯಪದೇಶದಿಂದ ಅಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಬೇಕೆಂಬ ವಿವೇಕವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ನಿಶ್ಚಯಿಸಬೇಕಷ್ಟೆ.

ಅಣ್ಣನ ಅವಸಾನವನ್ನು ಕಂಡು ವಿಹ್ವಲನಾದ ವಿಭೀಷಣನು ಪ್ರಲಪಿಸುತ್ತ: ಸಜ್ಜನಿಕೆಯ ಸೇತುವೆಯಿಂದ ಮುರಿಯಿತು, ಧರ್ಮದ ಪ್ರತಿರೂಪವು ಅಳಿಯಿತು, ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ಸತ್ತ್ವವೇ ಸತ್ತುಹೋಯಿತು, ಸ್ತುತಿಪಾತ್ರತೆಯೇ ಗತಿಸಿತು, ಅಗ್ನಿಹೋತ್ರವು ಆರಿತು, ಉದ್ಯಮಶೀಲತೆಯು ಉರುಳಿತು ....... ಎಂದೆಲ್ಲ ವ್ಯಥಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿಯ ಒಂದೊಂದು ಮಾತೂ ಸಾರೋಕ್ತಿ:

**ಗತಃ ಸೇತುಃ ಸುನೀತಾನಾಂ ಗತೋ ಧರ್ಮಸ್ಯ ವಿಗ್ರಹಃ ।**
**ಗತಃ ಸತ್ತ್ವಸ್ಯ ಸಂಕ್ಷೇಪಃ ಪ್ರಸ್ತಾವಾನಾಂ ಗತಿರ್ಗತಾ ।**

**ಚಿತ್ರಭಾನುಃ ಪ್ರಶಾಂತಾರ್ಚಿರ್ವ್ಯವಸಾಯೋ ನಿರುದ್ಯಮಃ ।**
**ಅಸ್ಮಿನ್ನಿಪತಿತೇ ಭೂಮೌ ವೀರೇ ಶಸ್ತ್ರಭೃತಾಂ ವರೇ ॥** (೬.೧೧೨.೬-೮)

ರಾವಣನಂಥ ಅಪ್ರತಿಮಪ್ರತಿನಾಯಕನಿಗೆ ಈ ತೆರನಾದ ಚರಮಗೀತೆಯು ಸಲ್ಲುವಂಥದ್ದೇಹೌದು. ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿಯ ಕೆಲವು ಮಾತುಗಳ ಅತ್ಯುಕ್ತಿಯು ಪ್ರಶಂಸೆಯಲ್ಲದೆ ಸ್ತುತಿಯಲ್ಲವೆಂಬುದನ್ನು ರಸಜ್ಞರು ಮರೆಯಬಾರದು.

* * *

**ಉಪಮಾನೋಪಮೇಯಾಂಕಾರವು** ಅದರ ಹೆಸರಿನಿಂದಲೇ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಉಪಮಾನ-ಉಪಮೇಯಗಳು ಪರಸ್ಪರಪರ್ಯಾಯವಾಗುವುದಲ್ಲಿದೆ. ಇದು ಪ್ರತೀಪಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರದ ನಂಟ. ಅನನ್ವಯಾಲಂಕಾರವು ಇದರ ಮತ್ತೂ ಪರಿಣಾಮಿರೂಪವೆನ್ನಬೇಕು. ಉಪಮಾಲಂಕಾರದಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಯಾತಯಾಮತೆಯನ್ನು ನೀಗಲು ಇಂಥ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಒದಗಿಬರುತ್ತವೆ.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುತ್ತ ಆದಿಕವಿಗಳು ಆಗಸವು ಸಾಗರದಂತೆಯೂ ಸಾಗರವು ಆಗಸದಂತೆಯೂ ಇತ್ತೆಂದು ಚಮತ್ಕರಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ಸಾಗರಂ ಚಾಂಬರಂಪ್ರಖ್ಯಮಂಬರಂ ಸಾಗರೋಪಮಮ್ ।**
**ಸಾಗರಂ ಚಾಂಬರಂ ಚೇತಿ ನಿರ್ವಿಶೇಷಮದೃಶ್ಯತ ॥** (೬.೪.೧೨೦)

* * *

**ಅನನ್ವಯಾಲಂಕಾರವು** ವರ್ಣ್ಯವಸ್ತುವಿಗೆ ಅದನ್ನೇ ಹೋಲಿಸುವಂಥ ವಿನೂತನಚಮತ್ಕೃತಿ. ಇದನ್ನು ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರದಂತೆ ಅತ್ಯಂತವಿರಳೋತ್ಕಟ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿಯೇ ಬಳಸಬೇಕಲ್ಲದೆ ಮನಬಂದಂತೆಲ್ಲ ದುಂದುಮಾಡುವಂತಿಲ್ಲ. ಬಹುಶಃ ಈ ಸೂಕ್ಷ್ಮವನ್ನು ಬಲ್ಲ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಅದನ್ನು ತುಂಬ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣವಾಗಿಯೇ ಬಳಸಿದ್ದಾರೆ. ಆದುದರಿಂದಲೇ ಅವರ ಏಕಮೇವಾದ್ವಿತೀಯ ಅನನ್ವಯಲಂಕಾರಶ್ಲೋಕವು ಆಲಂಕಾರಿಕರೆಲ್ಲರ ಬಗೆ ಸೆಳೆದಿದೆ:

**ಗಗನಂ ಗಗನಾಕಾರಂ ಸಾಗರಃ ಸಾಗರೋಪಮಃ ।** (೬.೧೧೦.೨೩)
**ರಾಮರಾವಣಯೋರ್ಯುದ್ಧಂ ರಾಮರಾವಣಯೋರಿವ ॥** (೬.೧೧೦.೨೪)

ಬಾನಿಗೇ ಬಾನೇ ಹೋಲಿಕೆ, ಕಡಲಿಗೆ ಕಡಲೇ ಹೋಲಿಕೆ: ರಾಮ-ರಾವಣರ ಸಂಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ರಾಮ-ರಾವಣರ ಸಂಗ್ರಾಮವೇ ಹೋಲಿಕೆಯೆಂಬ ಈ

---

1. ಗಮನಿಸಿ : 'ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆ', ಗಣೇಶ್ ಆರ್. ಹದನು ಹವಣು. ಮಂಗಳೂರು : ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಮಂಗಳೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ, ೨೦೧೫. ಪು. ೧೭೭-೨೫೧

ಶ್ಲೋಕತಾತ್ಪರ್ಯವು ಪರ್ಯಾಯವಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಕವಿತೆಗೆ ಅದುವೇ ಹೋಲಿಕೆಯೆಂಬ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಬಿಂಬಿಸದಿರದು.

ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯನ್ನು ಮೂಲಭೂತಾಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೆನ್ನಬಹುದು. ಇದನ್ನು 'ಉಪಗುಣ' ಅಥವಾ ಅರ್ಥವ್ಯಕ್ತಿ ಎಂಬ ಗುಣಕ್ಕೆ ತುಂಬ ನಿಕಟವಾದ ಅಲಂಕಾರವೆಂದು ಪ್ರಕೃತಲೇಖಕನು ಅನ್ಯತ್ರ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿರುವುದುಂಟು[೩]. ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದ ಅಕೃತಮನೋಹರಶೈಲಿಗೆ ಈ ಅಲಂಕಾರವು ಸೊಗಸಾಗಿ ಒದಗಿಬಂದಿದೆ. ಅಂಥ ಕೆಲವು ಸಂದರ್ಭಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲೀಸೋಣ:

ವನವಾಸಕ್ಕೆ ತೆರಳುತ್ತಿದ್ಧ ರಾಮನ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ ಗಂಗಾನದಿಯು ಎದುರಾಗುತ್ತದೆ. ಅದನ್ನು ಹತ್ತಾರು ಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳು ಮನದುಂಬಿ ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ:

**ತತ್ರ ತ್ರಿಪಥಗಾಂ ದಿವ್ಯಾ ಶಿವತೋಯಮಶೈವಲಾಮ್ ।**
**ದದರ್ಶ ರಾಘವೋ ಗಂಗಾಂ ಪುಣ್ಯಾಮೃಷಿನಿಷೇವಿತಾಮ್॥** (೨.೫೦.೧೨)

**ಕ್ವಚಿತ್ ಸ್ತಿಮಿತಗಂಭೀರಾಂ ಕ್ವಚಿದ್ವೇಗಜಲಾಕುಲಾಮ್ ।**
**ಕಚಿದ್ಗಂಭೀರನಿರ್ಘೋಷಾಂ ಕ್ವಚಿದ್ಭೈರವನಿಸ್ವನಾಮ್ ॥** (೨.೫೦.೧೭)

**ದೇವಸಂಘಾಪ್ಲುತಜಲಾಂ ನಿರ್ಮಲೋತ್ಪಲಶೋಭಿತಾಮ್।**
**ಕ್ವಚಿದಾಭೋಗಪುಲಿನಾಂ ಕ್ವಚಿನ್ನಿರ್ಮಲವಾಲುಕಾಮ್ ॥** (೨.೫೦.೧೮)

**ಹಂಸಸಾರಸಸಂಘುಷ್ಟಾಂ ಚಕ್ರವಾಕೋಪಕೂಜಿತಾಮ್ ।**
**ಸದಾ ಮತ್ತೈಶ್ಚ ವಿಹಗೈರಭಿಸನ್ನಾದಿತಾಂತರಾಮ್ ॥** (೨.೫೦.೧೯)

**ಕ್ವಚಿತ್ಫುಲ್ಲೋತ್ಪಲಚ್ಛನ್ನಾಂ ಕ್ವಚಿತ್ಪದ್ಮವನಾಕುಲಾಮ್ ।** (೨.೫೦.೨೦)
**ಕ್ವಚಿತ್ಕುಮುದಷಂಡೈಶ್ಚ ಕುಡ್ಮಲೈರುಪಶೋಭಿತಾಮ್ ।** (೨.೫೦.೨೧)

ಗಂಗೆಯು ಕೆಲವೆಡೆ ಸ್ತಿಮಿತಗಂಭೀರವಾಗಿ, ಕೆಲವೆಡೆ ವೇಗವಿಕ್ಷುಬ್ಧವಾಗಿ, ಮತ್ತೆ ಕೆಲವೆಡೆ ಗಂಭೀರಘೋಷಿಣಿಯಾಗಿ, ಇನ್ನೂ ಹಲವೆಡೆ ಭೀಕರನಿನಾದೆಯಾಗಿ ಹರಿಯುತ್ತಿದ್ದಳು. ಆಕೆಯ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳೂ ಮಿಂದೇಳುತ್ತದ್ದರು. ಅವಳ ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಲವಾದ ಕನ್ನೈದಿಲೆಗಳು ಬೆಳಗುತ್ತಿದ್ದುವು. ಅವಳ ದಡಗಳು ವಿಹಾರಯೋಗ್ಯವಾಗಿದ್ದುವು, ಅಲ್ಲಿಯ ಮಳಲು ಚೊಕ್ಕಟವಾಗಿತ್ತು. ಆ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಹಂಸ-ಸಾರಸಗಳು ಗಲಗಲಿಸುತ್ತಿದ್ದುವು, ಚಕ್ರವಾಕಗಳು ಚೀತ್ಕರಿಸುತ್ತಿದ್ದುವು, ಇನ್ನಿತರ ಜಲಪಕ್ಷಿಗಳು ಕೋಲಾಹಲಿಸುತ್ತಿದ್ದುವು. ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಕೆಂದಾವರೆಗಳೂ ಬೆಳ್ದಾವರೆಗಳೂ ಕಲ್ಹಾರಗಳೂ ಮೊಗ್ಗುಗಳಾಗಿ, ಹೂಗಳಾಗಿ ಮೆರೆದಿದ್ದುವು.

ಈ ಪ್ರವಾಹಧೋರಣೆಯ ಪದ್ಯಮಾಲಿಕೆಯ ನಾದಸೌಂದರ್ಯವು ಶ್ರವಣೀಯ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅನನ್ಯವಾದುದು ಹನೂಮಂತನು ಮಂದೋದರಿಯನ್ನು ಸೀತೆಯೆಂದು ಭ್ರಮಿಸಿ ಹಿಗ್ಗಿ ಹಾರಾಡಿದ ಸಂದರ್ಭದ್ದು:

**ಆಸ್ಫೋಟಯಾಮಾಸ ಚುಚುಂಬ ಪುಚ್ಛಂ**
**ನನಂದ ಚಿಕ್ರೀಡ ಜಗೌ ಜಗಾಮ ।**
**ಸ್ತಂಭಾನರೋಹನ್ನಿಪಪಾತ ಭೂಮೌ**
**ನಿದರ್ಶಯನ್ ಸ್ವಾಂ ಪ್ರಕೃತಿಂ ಕಪೀನಾಮ್ ॥** (೫.೧೦.೫೪)

ಅವನೊಮ್ಮೆಲೇ ಬಾಲವನ್ನಪ್ಪಳಿಸಿ, ಹಾರಿಸಿ, ಅದಕ್ಕೆ ಮುತ್ತುಕೊಟ್ಟನು ಉಲ್ಲಾಸದಿಂದ ಹಾಡುತ್ತ, ಹಾರುತ್ತ ಕುಣಿದಾಡಿದನು! ಕಂಬಗಳನ್ನೇರಿ ಧುಮುಕಿದನು! ಹೀಗೆ ತನ್ನ ಕಪಿಸ್ವಭಾವವನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ತೋರಿದನು.

ಇಲ್ಲಿಯ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ವಿವರಗಳೂ ತಮ್ಮಂತೆ ರೋಚಕವಾಗಿವೆ. ವಿಶೇಷತಃ ಬಾಲಕ್ಕೆ ಮುತ್ತನ್ನಿತ್ತದ್ದಂತೂ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಪ್ರಕೃತಿಪರಿಶೀಲನೆಗೆ ನೀಡಿದ ಪರಮಾರ್ಘ್ಯ.

ಮಧುವನಧ್ವಂಸಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿಗಳ ವಿನೋದವಾಣಿಗೆ ಮಿಗಿಲಾದ ಅವಕಾಶ. ಮಧುಪಾನ ಮಾಡಿ ಮತ್ತರಾಗಿ ಮಾರ್ಮಲೆತ ಕಪಿಗಳ ಕೋಲಾಹಲವನ್ನು ಅವರು ಸ್ವಭಾವೋಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಹಿಡಿದಿಟ್ಟ ಪರಿ ಅನಿತರಸಾಧಾರಣ:

ಗಾಯಂತಿ ಕೇಚಿತ್ಪ್ರಣಮಂತಿ ಕೇಚಿ-
ನ್ನೃತ್ಯಂತಿ ಕೇಚಿತ್ಪ್ರಹಸಂತಿ ಕೇಚಿತ್ ।
ಪತಂತಿ ಕೇಚಿದ್ವಿಚರಂತಿ ಕೇಚಿ-
ತ್ಪ್ಲವಂತಿ ಕೇಚಿತ್ಪ್ರಲಪಂತಿ ಕೇಚಿತ್ ॥

ಪರಸ್ಪರಂ ಕೇಚಿದುಪಾಶ್ರಯಂತೇ
ಪರಸ್ಪರಂ ಕೇಚಿದುಪಾಕ್ರಮಂತೇ॥

ದ್ರುಮಾದ್ದ್ರುಮಂ ಕೇಚಿದಭಿದ್ರವಂತಿ
ಕ್ಷಿತೌ ನಗಾಗ್ರಾನ್ನಿಪತಂತಿ ಕೇಚಿತ್।
ಮಹೀತಲಾತ್ಕೇಚಿದುದೀರ್ಣವೇಗಾ
ಮಹಾದ್ರುಮಾಗ್ರಾಣ್ಯಭಿಸಂಪತಂತಿ ॥

ಗಾಯಂತಮನ್ಯಃ ಪ್ರಹಸನ್ನುಪೈತಿ
ಹಸಂತಮನ್ಯಃ ಪ್ರರುದನ್ನುಪೈತಿ
ರುದಂತಮನ್ಯಃ ಪ್ರಣದನ್ನುಪೈತಿ
ನದಂತಮನ್ಯಃ ಪ್ರಣುದನ್ನುಪೈತಿ ॥ (ಸು.೬೧.೧೪-೧೭)

ಅತ್ಯರ್ಥಂ ಚ ಮದಗ್ಲಾನಾಃ ಪರ್ಣಾನ್ಯಾಸ್ತೀರ್ಯ ಶೇರತೇ । (ಸು.೬೨.೧೧)
ಜಾನುಭಿಸ್ತು ಪ್ರಕೃಷ್ಟಾಶ್ಚ ದೇವಮಾರ್ಗಂ ಚ ದರ್ಶಿತಾಃ । (ಸು.೬೨.೧೬)
ವಿಮದಾನುತ್ಥಿತಾನ್ ಸರ್ವಾನ್ಮೇಹಮಾನಾನ್ಮಧೂದಕಮ್ । (ಸು.೬೪.೪)

ಆ ಕಪಿಗಳಲ್ಲಿ ಕೆಲವರು ಹಾಡುವರು, ಕೆಲವು ಕೈಮುಗಿಯುವರು, ಕೆಲವರು ಕುಣಿಯುವರು, ಕೆಲವರು ಕಿಲಕಿಲ ನಗುವರು, ಕೆಲವರು ಜಾರುವರು, ಕೆಲವರು ಓಡುವರು, ಕೆಲವರು ನೆಗೆಯುವರು, ಕೆಲವರು ಹಲುಬುವರು, ಕೆಲವರು ಪರಸ್ಪರ ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳವರು, ಇನ್ನು ಕೆಲವರು ಪರಸ್ಪರ ತಳ್ಳಿಕೊಳ್ಳವರು, ಮತ್ತೆ ಕೆಲವರು ಹರಟಿಕೊಳ್ಳವರು, ಹಲವರನ್ಯರು ಆಡಿಕೊಳ್ಳುವರು, ಮರದಿಂದ ಮರಕ್ಕೆ ಹಾರುವವರು ಕೆಲವರು, ಬೆಟ್ಟದಿಂದ ಭುವಿಗೆ ಬೀಳುವವರು ಕೆಲವರು, ನೆಲದಿಂದ ತರುಶಿಖರಕ್ಕೆ ನೆಗೆಯುವವರು  ಕೆಲವರು. ಒಬ್ಬನು ಹಾಡುತ್ತಿದ್ದರೆ ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ಗೇಲಿಯಾಗಿ ನಗುತ್ತ ಹತ್ತಿರಬರುವನು, ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ನಗುತ್ತಿದರೆ ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಆಳುತ್ತ ಅವನ ಬಳಿ ಸಾರುವನು, ಯಾರೋ ಒಬ್ಬನು ಅಳುತ್ತಿದ್ದರೆ ಅವನತ್ತ ಮತ್ತೊಬ್ಬನು ಚೀತ್ಕರಿಸುತ್ತ ಸಾಗುವನು, ಮತ್ತಾರೋ ಅಬ್ಬರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆ ಇನ್ನೊಬ್ಬನು ಅವನನ್ನು ತಬ್ಬಿ ತಳ್ಳುತ್ತ ನುಗ್ಗುವನು. ಮದ್ಯದ ಮದ ಮಿತಿಮೀರಿ ಕೆಲವರು ಮರಗಳ ಕೆಳಗೆ ಎಲೆ-ಚಿಗುರುಗಳನ್ನು ಹಾಸಿ ಹಾಯಾಗಿ ಮಲಗಿದರು. ಇನ್ನು ಕೆಲವರು ಅಡ್ಡ ಬಂದ ಕಾವಲಿನವರನ್ನು ಬೀಳಿಸಿ, ಮಂಡಿಗಳ ನಡುವೆ ತಮ್ಮ ಕುಂಡಿಗಳನ್ನು ತೋರಿಸಿದರು. ಮತ್ತೇ ಹಲವರು ಮಿತಿಮೀರಿ ಕುಡಿದು ಮೂತ್ರ ವಿಸರ್ಜನೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಮದ್ಯವನ್ನು ಹೊರಚೆಲ್ಲುತ್ತಿದ್ದರು!

ಈ ಪರಿಯ ಮುಕ್ತೋನ್ಮತ್ತವರ್ಣನೆಗೆ ಮತ್ತಾವ ಭಾಷ್ಯ ಬೇಕು? ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಮಾನವಸಾಮಾನ್ಯರ ಚೆಲ್ಲಾಟಗಳನ್ನಿರಲಿ, ಮಂಗಗಳ ಲೀಲೆಯನ್ನೂ ಮಿಗಿಲಾದ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆ-ಸಹೃದಯತೆಗಳಿಂದ ಕಂಡು ಕಾಣಿಸಬಲ್ಲ ಅಂತರ್ವಾಣಿ.

ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳು ವಾಕ್ಯವಿಶ್ರಾಂತವಾದರೆ **ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳು** ಶಬ್ದವಿಶ್ರಾಂತ. ಅಂದರೆ, ಇವುಗಳಿಗೆ ಶಬ್ದರೂಪದಲ್ಲಿಯೇ ತಾತ್ಪರ್ಯ. ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳು ಬುದ್ಧಿಗಮ್ಯವಾಗಿ ಭಾವವನ್ನು ಮೀಡಿದರೆ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳು ಶ್ರವಣಗಮ್ಯವಾಗಿ ಭಾವವನ್ನು ತಟ್ಟುತ್ತವೆ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಪರಿವೃತ್ತಿಸಹತ್ವವಿಲ್ಲ. ಅಂದರೆ ಕವಿತೆಯಲ್ಲಿ ಬಳಕೆಯಾದ ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪರ್ಯಾಯಪದಗಳನಿಟ್ಟರೆ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರವೇ ಮರೆಯಾಗುವ ಸಾಧ್ಯತೆಯುಂಟು. ಇವುಗಳ ನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿ ಕಲ್ಪನೆಗಿಂತ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯ ಪ್ರಮಾಣ ಹೆಚ್ಚು. ವಿಶೇಷತಃ ಇವುಗಳು ಪದಮಾತ್ರವಿಶ್ರಾಂತವಾದ ಕಾರಣ ನಿಘಂಟುಮೂಲದ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯೇ ಇಲ್ಲಿ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಬೇಕು.
ಸಮುದ್ಗಯಮಕದಂಥ ವಾಕ್ಯವ್ಯಾಪಕವಾಗುವ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿಯೂ ವಾಕ್ಯದ ಬಿಡಿಬಿಡಿಯಾದ ಘಟಕಗಳೆನಿಸಿದ ಶಬ್ದಗಳೇ ಮತ್ತೆ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯ ವಹಿಸುವ ಕಾರಣ ಸುಬಂತ-ತಿಙಂತಾದಿ ಸಮಸ್ತಪದಪ್ರಕಾರಗಳಿಗೂ ಇಲ್ಲಿ ವರ್ಣಸಾಮ್ಯೈಕಲಕ್ಷ್ಯವಿರುವುದಲ್ಲದೆ ಇಡಿಯ ವಾಕ್ಯಾರ್ಥದಲ್ಲಲ್ಲ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಶ್ರೇಷ್ಠಮಟ್ಟದ ಕವಿಗಳೂ ಆಲಂಕಾರಿಕರೂ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳನ್ನು ಗೌಣವಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಇವುಗಳಿಗೆ

ತಮ್ಮದೇ ಆದ ಚೆಲುವಿದೆ, ಸಾರ್ಥಕ್ಯವಿದೆ. ಸಹಜಕವಿಯ ವಾಗ್ಧೋರಣೆಯಲ್ಲಿ ಸರಳಸುಭಗವಾದ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳ ಸಮೃದ್ಧಿಯು ಹೇಗೆ ತುಂಬಿರುವುದೋ ಹಾಗೆಯೇ ಸಹಜಸುಂದರವಾದ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳೂ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತವೆ. ಉಪಮೆ, ರೂಪಕ, ಉತ್ಪ್ರೇಕ್ಷೆ, ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ ಮುಂತಾದ ಮೂಲಾಲಂಕಾರಗಳ ಹಾಗೆಯೇ ಅನುಪ್ರಾಸದ ಕೆಲವು ಪ್ರಾಥಮಿಕರೂಪಗಳಾದ ವೃತ್ತ್ಯನುಪ್ರಾಸ, ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ, ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸಾದಿಗಳು ಶ್ರಮವಿಲ್ಲದೆ ಕವಿಯ ನಿರ್ಮಾಣದಲ್ಲಿ ಸಹಕರಿಸುತ್ತವೆ: ಸಹೃದಯರ ಪಾಲಿಗೆ ಸುಬೋಧವೂ ಆಗುತ್ತವೆ.

ಛಂದಸ್ಸೂ ತಾತ್ತ್ವಿಕವಾಗಿ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರವೇ. ಆದರೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಮಂದಿಗೆ ಈ ನಿಟ್ಟಿನ ಅರಿವಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಹೀಗಾಗಿ ಬಗೆಬಗೆಯ ವೃತ್ತಗಳು ಮತ್ತವುಗಳಲ್ಲಿಯ ಗುರು-ಲಘುವಿನ್ಯಾಸ ವೈಚಿತ್ರ್ಯಗಳು ಕೂಡ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಕ್ಕೆ ತಮ್ಮದಾದ ಗಣನೀಯವಾದ ಗುಣ-ಗಾತ್ರಗಳ ಪ್ರಾಭೃತವನ್ನೀಯುತ್ತವೆ. ಇದನ್ನು ಮರೆತಲ್ಲಿ ಪದ್ಯಕಾವ್ಯಕ್ಕೂ ಗದ್ಯಕಾವ್ಯಕ್ಕೂ ವ್ಯತ್ಯಾಸವೇ ಉಳಿಯಲಾರದು. ದಿಟವೇ, ಒಳ್ಳೆಯ ಗದ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ತನ್ನದೇ ಆದ ಗತಿಲಯವುಂಟು. ಆದರೆ ಅದು ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಅನಿಬದ್ಧ. ಪದ್ಯದ ಸಂಗತಿ ಹೀಗಲ್ಲ. ಇಲ್ಲಿಯ ನಿಬದ್ಧತೆಯು ತಂದೀಯುವ ಛಂದೋಗತಿಸ್ವಾರಸ್ಯವು ಅದೆಷ್ಟೋ ಬಾರಿ ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳಿಗಿಂತ ಮಿಗಿಲಾದ ಪರಿಣಾಮವನ್ನುಂಟುಮಾಡಿ, ಮೊದಲ ಕೇಳ್ಮೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಕಾವ್ಯಭಾಸವನ್ನು ಯಾರ ಪಾಲಿಗೂ ದಕ್ಕಿಸುತ್ತವೆ. ಇದನ್ನು ಮೀರಿದ ಸ್ವಾರಸ್ಯಸಿದ್ಧಿ ಬೇಕೆಂದಲ್ಲಿ ವ್ಯಂಜಕಸಾಮಾಗ್ರಿಯಾಗಿ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಬಳಕೆಯನ್ನು ದತ್ತಾವಧಾನರಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕು. ಇದು ವಶ್ಯವಾಕ್ಕುಗಳಾದ ಮಹಾಕವಿಗಳಿಗೆ ಜನ್ಮಜಾತವಿದ್ಯೆ.

ಆದಿಕವಿಗಳ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಪದ್ಧತಿ ಈ ತೆರನಾದದ್ದು. ಅವರ ಶ್ರುತಿಪ್ರಸಾದನವಿದ್ಯೆ ಕಣ್ಣುಕೋರೈಸುವಂಥದ್ದಲ್ಲವಾದರೂ ಮನಮುಟ್ಟುವಂಥದ್ದು. ಇಷ್ಟು ವಿಸ್ತರದ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿಯೂ ನಾದಮಾಧುರ್ಯವು ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಹರಿದುಬಂದಿದೆ. ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಅನುಷ್ಟುಪ್ ಶ್ಲೋಕದ ಸಕಲಭಾವಸ್ಫೋರಕವಾದ ಸಮೃದ್ಧಘೋಷವು ಅವರ ಅಸಾಮಾನ್ಯಶಕ್ತಿಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಸುಮಾರು ಇಪ್ಪತ್ತಮೂರು ಸಾವಿರಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚು ಪದ್ಯಗಳು ಇದೊಂದು ಛಂದಸ್ಸಿನಲ್ಲಿಯೇ ರೂಪುಗೊಂಡಿದ್ದು ಮಿಕ್ಕಂತೆ ಅಲ್ಲೊಂದು ಇಲ್ಲೊಂದು ಎಂಬ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಉಪಜಾತಿಯೋ ವಂಶಸ್ಥವೋ ಪುಷ್ಪಿತಾಗ್ರವೋ ಇಣಿಕುತ್ತವೆ; ತೀರ ಕ್ವಾಚಿತ್ಕವಾಗಿ ರುಚಿರಾ, ಮಾಲಿನೀ, ವಸಂತತಿಲಕಾದಿಗಳು ತಲೆದೋರುತ್ತವೆ. ಹೀಗಿದ್ದರೂ ಅವರ ಅನುಷ್ಟುಪ್ಪಿನಲ್ಲಿ ತಿಲಮಾತ್ರದ ಏಕತಾನತೆಯೂ ಇಲ್ಲ. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಅನುಷ್ಟುಪ್ ಛಂದಸ್ಸಿನ ನೈಸರ್ಗಿಕನಾದದಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಕೊರತೆಯಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಹಾಗೆಂದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಲೆಕ್ಕಾಚಾರದಂತೆ ಬರೆದವರಲ್ಲ; ಆದರೆ ಅವರು ಬರೆದದ್ದೆಲ್ಲ ಲೆಕ್ಕಕ್ಕೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ದಕ್ಕುತ್ತದೆ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ ಒಳ್ಳೆಯ ನಿಸರ್ಗ ಸಹಜ ಸಂಸ್ಕೃತವಾಣಿಗೆ ಅವರ ಕಾವ್ಯವು ಹೇಗೆ ಅನನ್ಯವಾದ ಆಯತನವೋ ಸೊಗಸಾದ ಶ್ಲೋಕರಚನೆಗೂ ಅವರ ಕೃತಿಯೇ ಶರಣ್ಯ. ಪ್ರಕೃತಲೇಖನದಲ್ಲಿ ಉದ್ಧೃತವಾದ ಉದಾಹರಣಪದ್ಯಗಳಿಂದಲೇ ಆದಿಕವಿಗಳ ಛಂದೋನಿರ್ವಾಹನಯವು ನಿರೂಪಿತವಾಗಿರುವ ಕಾರಣ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ವಿವೇಚನೆ ಸದ್ಯಕ್ಕೆ ಬೇಕಿಲ್ಲ. ಆದುದರಿಂದ ಕೇವಲ ಮಿಕ್ಕ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳತ್ತ ಒಂದು ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವೀಕ್ಷಣೆಯನ್ನು ಮಾಡೋಣ.

ಮಹರ್ಷಿಗಳಿಗೆ ಸಹಜವಾಗಿ ಬರುವ ಅನುಪ್ರಾಸಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪ್ರೀತಿ. ಇದು ವೃತ್ತ್ಯನುಪ್ರಾಸರೂಪದ್ದು:

**ಸಮುದಗ್ರಶಿರೋಗ್ರೀವೋ ಗವಾಂಪತಿರಿವಾಬಭೌ । (೫.೧.೨)**
**ಮುಮೋಚ ಚ ಶಿಲಾಃ ಶೈಲೋ ವಿಶಾಲಾಃ ಸುಮನಶ್ಶಿಲಾಃ । (೫.೧.೧೬)**
**ಹಾರನೂಪುರಕೇಯೂರಪಾರಿಹಾರ್ಯಧರಾಃ ಸ್ತ್ರಿಯಃ (೫.೧.೨೬)**
**ತಾರಾಭಿರಭಿರಾಮಾಭಿರುದಿತಾಭಿರಿವಾಂಬರಮ್ । (೫.೧.೫೫)**

ಇವೆಲ್ಲ ಕೇವಲ ಒಂದೇ ಸರ್ಗದಿಂದ ಯಾದೃಚ್ಛಿಕವಾಗಿ ಹೆಕ್ಕಿದ ಉದಾಹರಣೆಗಳು. ಇಷ್ಟು ಧಾರಾಳವಾದ ವಾಕ್ಕು ಅವರದಾದ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ "ಕೂಜಂತಂ ರಾಮ ರಾಮೇತಿ ಮಧುರಂ ಮಧುರಾಕ್ಷರಮ್" ಎಂದದ್ದು. ಇದು ಸುಲಭದ ಸಿದ್ಧಿಯಲ್ಲ.

ಇನ್ನು ಲಾಟಾನುಪ್ರಾಸ-ಛೇಕಾನುಪ್ರಾಸಗಳ ಒಂದೆರಡು ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ನೋಡೋಣ:

**ಹಾರಂ ಚ ಹೇಮಸೂತ್ರಂ ಛ ಭಾರ್ಯಾಯೈ ಸೌಮ್ಯ ಹಾರಯ ।**
(೨.೩೨.೭)
**ಗಚ್ಛಂತಮನುಗಚ್ಛಾಮೋ ಯೇನ ಗಚ್ಛತಿ ರಾಘವಃ ।** (೨.೩೩.೧೬)

**ಮಹೇಂದ್ರಪುತ್ರಂ ಪತಿತಂ ವಾಲಿನಂ ಹೇಮಮಾಲಿನಮ್ ।** (೪.೧೭.೧೧)
**ಇತ್ಯುಕ್ತಃ ಪ್ರಶ್ರಿತಂ ವಾಕ್ಯಂ ಧರ್ಮಾರ್ಥಸಹಿತಂ ಹಿತಮ್ ।** (೪.೧೮.೧)

**ನಿಯತಿಃ ಕಾರಣಂ ಲೋಕೇ ನಿಯತಿಃ ಕರ್ಮಸಾಧನಮ್ ।**
**ನಿಯತಿಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ ನಿಯೋಗೇಷ್ವಿಹ ಕಾರಣಮ್ ॥** (೪.೨೫.೪)

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಶಬ್ದಾಲಂಕೃತಿಕೌಶಲವು ಮುಗಿಲುಮುಟ್ಟುವುದು ಕಿಷ್ಕಂಧಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಋತುಗಳ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಸುಂದರಕಾಂಡದ ಹತ್ತಾರು ಸರ್ಗಗಳಲ್ಲಿ. ತತ್ರಾಪಿ ಉಪಜಾತಿವೃತ್ತದ ನಿರ್ವಾಹಕಾಲದಲ್ಲಿಯೇ ಹೆಚ್ಚಿನ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರವು ತಲೆದೋರುತ್ತದೆ. ಈಗಾಗಲೇ ಕಿಷ್ಕಂಧಾಕಾಂಡದ ಋತುವರ್ಣನಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟು ಉದಾಹರಣೆಗಳು ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರವಿವೇಚನಾಂಗವಾಗಿ ಬಂದಿರುವ ಕಾರಣ ಸುಂದರಕಾಂಡದ ಒಂದೆರಡು ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸೋಣ:

**ತತಃ ಸ ಮಧ್ಯಂ ಗತಮಂಶುಮಂತಂ**
**ಜ್ಯೋತ್ಸ್ನಾವಿತಾನಂ ಮಹದುದ್ವಮಂತಮ್ ।**
**ದದರ್ಶ ಧೀಮಾನ್ ದಿವಿ ಭಾನುಮಂತಂ**
**ಗೋಷ್ಠೆ ವೃಷಂ ಮತ್ತಮಿವ ಭ್ರಮಂತಮ್ ॥** (೫.೫.೧)

**ಹಂಸೋ ಯಥಾ ರಾಜತಪಂಜರಸ್ಥಃ**
**ಸಿಂಹೋ ಯಥಾ ಮಂದರಕಂದರಸ್ಥಃ।**
**ವೀರೋ ಯಥಾಗರ್ವಿತಕುಂಜರಸ್ಥ-**
**ಶ್ಚಂದ್ರೋಽಪಿ ಬಭ್ರಾಜ ತಥಾಂಬರಸ್ಥಃ ।** (೫.೫.೪)

**ವಿನಷ್ಟಶೀತಾಂಬುತುಷಾರಪಂಕೋ**
**ಮಹಾಗ್ರಹಗ್ರಾಹವಿನಷ್ಟಪಂಕಃ ।**
**ಪ್ರಕಾಶಲಕ್ಷ್ಮ್ಯಾಶ್ರಯನಿರ್ಮಲಾಂಕೋ**
**ರರಾಜ ಚಂದ್ರೋ ಭಗವಾನ್ ಶಶಾಂಕಃ ।** (೫.೫.೬)

ಇದೊಂದು ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ-ಆದರೆ ತಕ್ಕಮಟ್ಟಿಗೆ ಸಮಗ್ರವೆನ್ನಬಹುದಾದ-ಅಲಂಕಾರವಿವೇಚನೆ. ಈ ಮೂಲಕ ಆದಿಕವಿಗಳ ಅಪ್ಪಟ ಕಾವ್ಯದ ಒಂದು ವಿಹಂಗವೀಕ್ಷಣೆಯೂ ಆಗುತ್ತದೆ. ಏಕೆಂದರೆ, ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಸಂಸ್ಕೃತವಿದ್ವಾಂಸರೂ ಸೇರಿದಂತೆ ಅನೇಕರು ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆ, ಇತಿವೃತ್ತ, ಪಾತ್ರಚಿತ್ರಣ, ಮೌಲ್ಯಮೀಮಾಂಸೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳ ಕಡೆಗೆ ಅವಧಾನವಿರಿಸಿದಂತೆ ಅದರ ಮುಕ್ತಕಪ್ರಾಯಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ, ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ತೋರಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿವಿಧಾಲಂಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಗಮನಿಸಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಮಾತ್ರವಲ್ಲ, ಗುಣ-ರೀತಿ-ಧ್ವನಿ-ವಕ್ರತೆಗಳಂಥ ಇನ್ನಿತರ ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸಾತತ್ತ್ವಗಳಲ್ಲಿಯೂ ತೇರ್ಗಡೆಯಾಗಬಲ್ಲ ಆದಿಕವಿಸೂಕ್ತಿಗಳತ್ತ ಮನವಿಡುವುದಿಲ್ಲ. ಇದೊಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯೋದಯ-ಚಂದ್ರೋದಯಗಳ ನಿತ್ಯನವೀನವಾದ ಕಾವ್ಯೋಪಮ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಕಾಣದೆಹೋಗುವ ಪ್ರಯೋಜನೈಕಕೃಪಣರ ವರ್ತನೆಯಂತೆಯೇ ಸರಿ. ಸದ್ಯದ ಅಲ್ಪಾರಂಭವು ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಆಸಕ್ತರ ಅವಧಾನವನ್ನು ಸೆಳೆಯುವ ನಮ್ರಯತ್ನ.

ಪ್ರಕೃತಪರಿಶೀಲನೆಯಿಂದ ತಿಳಿದುಬರುವ ಮತ್ತೊಂದು ಅಂಶವೆಂದರೆ, ಉಭಯಾಲಂಕಾರಗಳ ಪಾರಮ್ಯವು ಬಾಲಕಾಂಡ ಮತ್ತು ಉತ್ತರಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ ಎದ್ದುತೋರುವಂತೆ ಮರೆಯಾಗಿದೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಇಡಿಕಿರಿದ ಉಪಕಥೆಗಳ ಪುರಾಣಸದೃಶ್ಯವಾದ ನಿರೂಪಣೆಯೂ ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಿರಬಹುದು. ಆದರೂ ಈ ಅಂಶವು ಇವುಗಳ ಪ್ರಕ್ಷೇಪಸಂಭವನೀಯತೆಗೆ ದಿಕ್ಸೂಚಿಯಾಗಿ ಒದಗಬಹುದು. ಅಲ್ಲದೆ ಇಂಥ ಉಪಕಥೆಗಳೂ ಅತಿಲೋಕ-ಅತಿಮಾನುಷವೃತ್ತಾಂಶಗಳೂ ಬಂದಾಗ ಮಿಕ್ಕ ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಅಲಂಕಾರಗಳು ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗೆ ಸೊರಗಿವೆ. ಅವು ಕೂಡ

ಈ ನಿಗಮನವನ್ನು ಬಲಪಡಿಸಬಹುದು. ವರ್ಣನಪ್ರಧಾನವಾದ ಬಾಗಗಳಿರುವ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ, ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ, ಸುಂದರಕಾಂಡಗಳಂಥವಲ್ಲಿ ಅಲಂಕಾರಗಳ ಹೆಚ್ಚಳ ನಿಚ್ಚಳವಾಗಿದೆ. ಇದು ನಿರೀಕ್ಷಿತವೂ ಹೌದು. ಆದರೆ ಭಾವೈಕಪ್ರಧಾನವಾದ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಘಟನೈಕಪ್ರಧಾನವಾದ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೂ ಅಲಂಕಾರಗಳು ತೀರ ಸೊರಗಿಲ್ಲ. ಇದನ್ನೆಲ್ಲ ಪರಿಭಾವಿಸಿದಾಗ ಆದಿಕವಿಗಳ ವಾಕ್ಕು ಮುಖ್ಯಕಥಾನಕವನ್ನು ನಡಸುವಲ್ಲಿ ಬಲುಮಟ್ಟಿಗೆ ಏಕಾಗ್ರಪ್ರತಿಭೆಯಿಂದ ಸಾಗಿದೆಯೆಂದೂ "ವರ್ಣನಾನಿಪುಣಃ ಕವಿಃ" ಎಂಬ ಮಾತಿಗೆ ಸಲ್ಲುವಂತೆ ಸರ್ವತ್ರ ಶುದ್ಧಕಾವ್ಯಸ್ವಾರಸ್ಯವು ಬೆಳಗಿದೆಯೆಂದೂ ಹೇಳಬಹುದು. ಈ ಕಾರಣದಿಂದಲೇ **ಪರಂ ಕವೀನಾಮಾಧಾರಮ್** ಎಂಬ ಚತುರ್ಮುಖನ ಮಾತಿಗೆ ಎದುರಿಲ್ಲ.

**ಚೇತಸೋಽಸ್ತು ಪ್ರಸಾದಾಯ ಸತಾಂ ಪ್ರಾಚೇತಸೋ**
**ಮುನಿಃ ।**
**ಪೃಥಿವ್ಯಾಂ ಪದ್ಯನಿರ್ಮಾಣವಿದ್ಯಾಯಾಃ ಪ್ರಥಮಂ**
**ಪದಮ್ ॥**

(ಮಧುರಾವಿಜಯಮ್, ೧.೫)

[ಇಲ್ಲಿಯ ಪದ್ಯಗಳನ್ನೆಲ್ಲ ಎನ್.ಆರ್. ಕಾಲೋನಿಯ ಶ್ರೀರಾಮಮಂದಿರವು ಪ್ರಕಟಿಸಿದ ವಿದ್ವಾನ್ ಎನ್. ರಂಗನಾಥಶರ್ಮರ ಕನ್ನಡಾನುವಾದದಿಂದ ಕೂಡಿದ "ಶ್ರೀಮದ್ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣಮ್" ಸಂಪುಟಗಳಿಂದ ಉದ್ಧರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ.]

❑

Bharatiya Vidya Bhavan BANGALORE
&
Srila Prabhupada's ISKCON BANGALORE
ರಾಮಾಯಣದ ಸಂದೇಶ
Message of Ramayana
National Conference - 2018

*Dr. M. Veerappa Moily, Recipient of Saraswati Samman, former Union Minister giving the valedictory address*

# rasa in ramayana

**Dr. Sree Srivatsa**

The Rasa Siddhanta had been established before Vãlmîki and one can have the experience of Rasa throughout the work. In fact Rasa is the aspect to which prominence has been given in the Rãmyãṇa.

श्री

श्रृंगारं क्षिति नन्दिनी विहरणे वीरं धनुर्भञ्जने
कारुण्यं वलिभोजनेऽद्भुतरसं सिन्धौगिरिस्थापने ।
हास्यं शूर्पणखा मुखे भयवहे वीभत्समाजेर्मुखे
रौद्रं रावणमर्दने मुनिजने शान्तं वपुः पातु नः ॥

॥ न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते ॥(1)

Rasa in Sanskrit has a very wide scope. Its connotations are different in various sciences. No science practically speaking seems to do without it. The sense therefore attached to it in each differs according to the context. In the literary world, it is equated with the aesthetic pleasure which is the life of literature. It is in a super physical plane at this level. The aesthetic pleasure is experienced at the recital of a literary work, prose or poetry or at the representation of a dramatic work. Rasa is the most important element in a Kãvya. The importance of Rasa is clearly expressed in rhetorical works by calling it the Atma (soul), Angin (the principal element) ; Pradhãna Pratipãdya (a thing to be mainly conveyed); Svarûpadãyaka (that which makes a composition a Kãvya); Alañkãrya (a thing to be embellished) etc.

Bharata, the author of Naṭya Sãstrais is of the view that the poet should observe certain rules regarding Rasa. He is famous for his Rasa sutra---
विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः(2)

Vibhãvas are certain causes or mainsprings of emotion like love, pathos, fear etc. Anubhãvas are the visible effects or consequents.

Vyabhicãribhãvas are transitory or evanescent emotions that tend only to develop the main sentiment. Through a harmonious blending and representation of the appropriate vibhãvas, anubhãvas and vyabhicãri bhãvas, there arises a certain climax of emotion, invariably accompanied by a thrill and sense of joy and this is Rasa or aesthetic pleasure. There are nine dominant or permanent moods called the sthãyibhavas which when developed transform themselves into the Rasa. The nine Rasas are

श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर्य भयानकाः ।
बीभत्साद्भुत शान्ताश्च रसाः पूर्वैरुदाहृताः ॥(3)
The dominant moods are respectively
रति र्हासश्य शोकश्य क्रोधोत्साहौ भयं तथा ।
जुगुप्साविस्मयशमाश्च स्थायिभावाः स्मृताः ॥(4)

Rasa occupies the highest place and is rightly called the soul of a Kãvya.

The Vãlmîki Rãmyãṇa is recognized as a great epic of outstanding merit-आदिकाव्यमिदं चार्षं पुरा वाल्मीकिनाकृतम् ।

The Rasa Siddhanta had been established before Vãlmîki and one can have the experience of Rasa throughout the work. In fact Rasa is the aspect to which prominence has been given in the Rãmyãṇa. The origin of the Rãmyãṇa is traced to the Kraunñca episode. Seeing the male curlew hit by the arrow of the hunter and the female curlew wailing around, Vãlmîki out of grief bursts out into the couplet.

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥(5)

This becomes the model verse for the whole epic. Vãlmîki himself is surprised and states that his utterance should be accepted as poetry and not otherwise.

शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा ।(6)

The Rãmyãṇa Katha is referred to as the sweet out pourings of the cuckoo Vãlmîki. It has been remarked that no non-sage can be deservingly called a poet and a sage will be worth his name only by virtue of his vision.

नानृषि कविरित्युक्तं ऋषिश्च किल दर्शनात् ।(7)

Poetry was not valued merely for the sake of delight that it brought but also for the instruction it combined. The words of WFH King summarise this view-

All votes he gains who can unite,
Profit with pleasure, and delight
His reader's fancy, all the time
He gives instructions couched.

The poet is a seer and creator unfettered by any law. Based on his poetic vision, the poet makes his creation beautiful and blissful by delineating the Navarasas. Sri Vedanta Desika says

स कविः कथ्यते स्रष्टा रमते यत्र भारती ।
रसभाव गुणीभूतैरलङ्कारैर्गुणोदयैः ॥(8)
अपङ्किलधियः शुद्धाः साधुमानसवृत्तयः ।
वमन्ति श्रुतिजीवातुं ध्वनि नवरसास्पदम् ॥(9)

One point of consensus among ãlankãrikas while evaluating the beauty and quality of a poetic composition is Rasaucitya or conformity with Rasa. The thematic content of literature is constituted by mainly the nine Rasas. These are not just worldly emotions. The poet with a touch of divine vision and creative genius transmits the worldly emotions of love, laughter, heroism etc. as eternal blissful experiences. Vãlmîki's Rãmyãṇa, a Navarasabharita Kãvya is a typical example of the worldly emotions culminating in divine bliss.

## Śṛńgãra Rasa: The Erotic Sentiment

Erotics is the element of experience of all worldly beings Infact kama is one of the four puruṣãrthas. It is considered to be of two types Sambhoga and Vipralambha. Vãlmîki has described the love life of Rãmã and Sîtã not exceeding the limits of decency. Sri K. S. Rãmãswami Sãstri says Vãlmîki's love poetry shows a fine blend of sensuousness and spirituality(10). The description of the love of Rãma and Sîtã can be first seen in Ayodhyã after their marriage.

रामस्तु सीतया सार्धं विजहार बहूनृतून् ।
मनस्वी तद्गतस्तस्या नित्यं हृदि समर्पितः ॥(11)

The high minded Rãma whose mind was set on his spouse and who stood enthroned in her heart, enjoyed life with her for many months. Vãlmîki uses highly poetic and suggestive language. Sri Srinivãsa Sãstri rightly quotes the poet and says, They read each other's thoughts readily; in fact these told each other what they wanted. The tongue and the lips did not play any part, nor perhaps did the eyes, heart spoke to the heart. The desire of each was known to the other. It is difficult to say who loved whom the more.'(12) Vãlmîki maintains decorum by saying

प्रिया तु सीता रामस्य दाराः पितृकृता इति ।(13)

Sîtã was dear to Rãma as a partner made available to him by his father.

The love of Rãma and Sîtã depicted by Vãlmîki on the Citrakûṭa mountain and on the banks of the river Mandãkini, is an excellent suggestion of Śṛṅgãra Rasa. Another depiction of the erotic sentiment is when Rãmã returned after having killed Khara and Dũṣana single handed. He was glorified by the sages and honoured by Lakṣmaṇa. He had made short work of his enemies and brought happiness to the great sages. Sîtã felt rejoiced and embraced him.

तं दृष्ट्वा शत्रु हन्तारं महर्षीणां सुखावहम् ।
बभूव हृष्टा वैदेही भर्तारं परिषस्वजे ॥(14)

Here Rãma is the ãlambana vibhãva. Rãma defeating the Rãkṣasas and sages praising him form the uddîpana vibhãva. Embracing and rejoicing are the anubhãvas. Anxiety, joy, shyness etc. are the vyabhicãri bhãvas. Śṛṅgãra in the heart of Sîtã is beautifully suggested.

Rhetoricians are of the opinion that Sambhoga Śṛṅgãra cannot be depicted in its full glory without Vipralambha Śṛṅgãra

न विना विप्रलम्भेन संभोगः पुष्टिमश्नुते ।(15)

There are four types.

**Purvarãga Vipralambha** - As Vãlmîki has kept Rãma and Sîtã as strangers till their marriage, this type cannot be seen.

**Mãnakṛta Vipralambha** - Such a type can be seen in the description of Kaikeyî. Kaikeyî whose heart was poisoned by the malicious gossip of Mantharã, threw away her ornaments and lay down on the bare floor in the sulking room in a sullen mood.

तया प्रोत्साहिता देवी गत्वा मन्थरया सह ।
क्रोधागारं विशालाक्षी सौभाग्य मद गर्विता ।
अनेक शत सहस्रं मुक्ताहारं वराङ्गना ।
अवमुच्य वरार्हाणि शुभान्याभरणानि च ।(16)

The anger has been rightly suggested in Kaikeyî by the word saubhãgya madagarvita, puffed up with pride born of comeliness.

**Pravãsa Vipralambha** - Vipralambha of this type caused by a curse can be seen in the story of Ahalyã. Indra came in the guise of Gautama and enjoyed the company of Ahalyã. Gautama saw him and cursed him as well as Ahalyã. He cursed her that she would live on air alone remain lying on ashes unperceived by all created beings.

वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी ।
अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन् वसिष्यसि ॥(17)

**Karuṇa Vipralambha** - The fifth sarga of Yuddha kãnda is an excellent illustration of this type. Separated from Sîtã, Rãma lamented that though grief disappears as time passes; it grew day by day in his case as he missed his darling.

शोकश्च किल कालेन गच्छता ह्यपगच्छति ।
मम चापश्यतः कान्तामहन्यहनि वर्धते ॥(18)

Addressing the breeze he asked it to move in haste to the spot where his love was and having fanned her to touch him as well. The touch would be like the meeting of one's gaze with the moon. Just as a crop in a field without water remained alive through contact with the field under water, he survived because of her surviving.

वाहि वात यतः कान्ता तां स्पृष्ट्वा मामपि स्पृश ।
त्वयि मे गात्र संस्पर्शश्चन्द्रे दृष्टिसमागमः ॥
केदारस्येव केदार सोदकस्य निरूदकः ।
उपस्नेहेन जीवामि जीवन्ती यच्छृणोमि ताम् ॥(19)

There could not be a better representation of Vipralambha Śŗṅgãra than this. Vãlmîki reaches great heights when he beautifully suggests this sentiment in the words of Hanûmãn. He says that the mind of the god like lady was set on him and his mind on her and that was the reason for the survival of both of them even for a short while.

अस्या देव्या मनस्तस्मिन्स्तस्य चास्यां प्रतिष्ठितम् ।
तेनेयं स च धर्मात्मा मुहूर्तमपि जीवति ॥(20)

## II Hãsya Rasa - The Comic Sentiment.

The comic sentiment is experienced as that which is caused by one's own or another's strange actions, words or attire. Of all the sentient beings in the Universe, man alone laughs and has a sense of humour. Bergson tells us that laughter serves the ends of social discipline for we generally laugh at the stiff, the clumsy and the mechanical. Laughter is a social gesture and its purpose is to keep men sensitive to their environment.(21)

Smita is one type. An example is Sugrîva opposing the acceptance of Vibhîşana as he had abandoned his brother in times of distress. Rãmã smiled. The smile suggested the action of Sugrîva himself who had got his brother killed.

ईषदुत्स्मयमानस्तु लक्ष्मणं पुण्यलक्षणम् ।
इति होवाच काकुत्स्थो च वाक्यं सत्य पराक्रमः ॥(22)

The Trijata episode is an apt illustration for the Hasîtã type. Trijata was an old Brahmin born in the line of Garga. All his means of subsistence had failed. On the advice of his young wife, he went to Rãmã and requested him to help him. Rãmã there upon said justingly that not even one thousand cows had been given away and that he could get as many of them by throwing his staff across them.

तमुवाच ततो रामः परिहाससमन्वितम् ।
गवां सहस्रमप्येकं न तु विश्राणितं मया ॥
परिक्षिपसि दण्डेन यावत्तावदवाप्स्यसि ॥(23)

The staff thrown by him fell close to a bull covering thousands of cows. Rãmã embraced him and told him not to take it as on offence as he was indulged in jest only.

मन्युर्न रवलु कर्तव्यः परिहासो ह्ययं मम ॥(24)

The word परिहास suggests humour. Two things cause humour here. One is that though he was a sage he obeyed his young wife and the other is that, though he was old and weak, he threw the staff so far. Trijata is the ãlambana vibhãva.

Vãlmîki takes pleasure from every aspect of human nature. In some places he just mentions the ãlambana vibhãva. When Hanûmãn went in search of Sîtã, he saw Mandodari and inferred her to be Sîtã. He was transported with joy. Demonstrating his simian nature, he clapped his arms and kissed his tail rejoiced, frolicked, sang and paced, climbed up the pillars and dropped on the ground.

आस्फोटयामास चुचुंब पुच्छं ननन्द चिक्रीड जगौ जगाम ।
स्तम्भानारोहन्विपपात भूमौ निदर्शयन् स्वां प्रकृतिं कपीनाम् ॥(25)

The dancing was necessary to exhibit happiness but it was out of place and time. The critic can only imagine the consequences if Rãvaṇa had wokenup.

Vãlmîki himself seems to be deriving laughter from the episode of Sûrpaṇakhã. A comic situation arises when Rãmã and Sûrpaṇakhã and Sûrpaṇakhã and Sîtã stand before each other. When Surpanaka asked Rãmã to take her as his wife, Rãmã laughed heartily and telling her that he was married directed her towards Lakşmaṇa. He asked her to accept him even as sunlight wooed the Meru Mountain.

श्रीमानकृतदारश्च लक्ष्मणो नामवीर्यवान् ।
अनुरूपतश्च ते भर्ता रूपस्यास्य भविष्यति ॥
एनं भज विशालाक्षि भर्तारं भ्रातरं मम ।
असपत्नो वरारोहे मेरुमर्कप्रभा यथा ॥(26)

Here were three people wanting a little relief. Sûrpaṇakhã came and afforded them scope for a little jest. Thus as Sri V. S. Srinivasa Sãstri points out, the poet treats it as proper subject for the display of his humour.(27)

## Karuna Rasa – The Pathetic Sentiment

The sentiment of pathos arises when there is a loss of something cherished or something undesired is attained. P B Shelly in his poem "The Skylark" stresses the greatness and sweetness of the sentiment of pathos- Our sweetest songs are those that tell of saddest thoughts.

The first glimpse of the sentiment of pathos can be had in the description of Daśaratha as childless. The magnanimous king Daśaratha of great glory did not have a son to perpetuate the dynasty. He had been grieving.

सुतार्थं तप्यमानस्य नासीद् वंशकरः सुतः ।(28)

Listening to the boon asked for by Kaikeyî, Daśaratha pleaded before her with folded hands. He begged Kaikeyî to show mercy on him who was making piteous entreaties again and again. He touched her feet and asked her to be the protector of Rãmã. The emperor was sore, distressed with agony and was wailing. He had fallen unconscious and was tossing about over whelmed with grief.

अंजलिं कुर्मि कैकेयि पादौ चापि स्पृशामि ते ।
शरणं भव रामस्य माऽधर्मो मामिह स्पृशेत् ॥
इति दुःखाभिसन्तप्तं विलपन्तमचेतनम् ।
धूर्णमानं महाराजं शोकेन समभिप्लुतम् ॥

The ãlambana vibhãva is the boon asked by Kaikeyî for the exile of Rãmã.

When Kaikeyî sternly affirmed what she had said, Daśaratha fell like a tree cut down.

ध्यात्वा रामेति निःश्वस्य छिन्नतरुरिवापतत् ।(29)

The poet makes the scene all the more touching by describing various anubhãvas. Rãmã was brought in. He saw the monarch emaciated through grief and agony, with his senses divested of joy, sighing with a distressed and perturbed mind and looking like an unruffled ocean getting turbulent with a succession of waves, the sun obscured by an eclipse and a sage who had uttered a lie.

इन्द्रियैप्रहृष्टस्तं शोक सन्ताप कर्शितम् ।
निःश्वसन्तं महाराजं व्यथिताकुलचेतसम् ॥
ऊर्मिमालिनमक्षोभ्यं क्षुभ्यन्तमिव सागरम्
उपप्लुतमिवादित्यमुक्तानृतमृषिं यथा ॥(30)

Vãlmîki calls the message as 'maraṇopamam vacanam.'

Rãmã wanted to know as to why the emperor gently shed tears riveted on the ground. The poet here heightens the effect of pathos by the words of Kaikeyî. She said,

यावत्त्वं न वनं यातः पुरादस्मादतित्वरन् ।
पिता तावन्न ते राम स्नास्यते भोक्ष्यतेऽपि वा ॥(31)

So long as you do not depart post haste from this city, your father, O Rãmã would neither bathe nor have his breakfast. Imagine the plight of Daśaratha. His state was such that he could not even negate what had been said by Kaikeyî. His voice was feeble, he was weak. However the poet sums up all the emotions of Daśaratha in just two words - "Dhikkastam". He was overwhelmed with grief and dropped down unconscious.

धिक्कष्टमिति निः श्वस्यराजा शोक परिप्लुतः ।
मूर्च्छितो न्यपतत् तस्मिन् पर्यङ्के हेमभूषिते ॥(32)

When Rãmã met Kausalyã, she told him that Daśaratha was true to his promise and would crown him as Yuvaraja. The joy of Kausalyã was unbound but what a contrast! When Rãmã broke the news of his exile, the hopes and efforts, the joy and enthusiasm – all turned out to be in vain when she heard about the cruel news. The natural reaction of any mother to this day under such circumstances is poetically described.

यदि पुत्र न जायेथा मम शोकाय राघव ।
न स्म दुःखमतो भूयः पश्येयमहमप्रजाः ॥
एक एव हि वन्ध्यायाः शोको भवति मानसः ।
अप्रजास्मीति संतापो न ह्यन्यः पुत्र विद्यते ॥(33)

Kausalyã lamented that if she did not have a son, it would have caused grief. But the agony of separation was greater than the former. There would be only one mental anguish for a barren woman, the feeling of childlessness and no other.

Another important scene is the time of departure of Rãmã to the forest. Rãmã asked the maids of Kaikeyî to get the bark garments but Kaikeyî herself came forward and handed over the garments. She never felt ashamed. Rãmã and Lakṣmaṇa wore the bark garments. But Sîtã's plight was pitiable. She did not even know how to wear them. She looked up at Rãmã and asked him.

कथं नु चीरं बध्नन्ति मुनयो वनवासिनः ।(34)

Leave alone the women, even sage Vasiṣṭha was in tears. Could anyone have dreamt that the daughter of the glorious Janaka, daughter-in-law of the mighty Daśaratha and wife of the righteous Rãmã would undergo such hard ship. Certainly, there is a virtual flow of pathos with Sîtã as the ãlambana vibhãva.

The intensity of the sorrow at the departure of Rãmã is described even among animals and the heavenly planets. They are all anubhãvas helping in the depiction of Karuna Rasa.

नाग्निहोत्राण्यहूयन्त नापचन् गृहमेधिनः ।
अकुर्वन् न प्रजाः कार्यं सूर्यश्चान्तरधीयन ॥
व्यसृजन् कवलान् नागा गावो वत्सान् न पाययन्
पुत्रं प्रथमजं लब्ध्वा जननी नाभ्यनन्दत ॥(35)

No oblations were poured into the sacred fire, no house holder cooked food, people did not carry on their business and the sun went out of sight. Elephants dropped grass from their mouths, cows refused to give milk to their calves and mothers did not rejoice to meet their first born son. Bhavabûti has rightly said

अपि ग्रावा रोदित्यपि च दलति वज्रस्य हृदयम् ।(36)

Bharata meeting Rãmã, Sîtã being abducted by Rãvaṇa, Lakṣmaṇa becoming unconscious when hit by Rãvaṇa, Lakṣmaṇa abandoning Sîtã (Uttara kanda) etc. are other instances where Vãlmîki excels in the description of pathos. Pathos in contrary characters is also suggested. Be it the sorrow of Rãmã or Rãvaṇa, Sîtã or Mandodari or Tara, Vãlmîki has exhibited his skill in delineating the Karuna Rasa. The prevalence of this Rasa throughout the work had made Ananda Vardhana to consider it as the Pradhãna Rasa, which however cannot be taken as the ultimate conclusion.

### Raudra Rasa – The Furious Sentiment

The furious sentiment is defined as anger causing battle and found in demons and haughty people. Rãmã is referred to as extremely compassionate. Hence the sentiment of furiousness cannot be fully developed. However there are occasions wherein Vãlmîki has exhibited his skill in depicting the sentiment.

Sugrîva got back his wife with the help of Rãmã but then he forgot his commitment to Rãmã, being immersed in sensual pleasures. Hence Rãmã sent a warning through Lakṣmaṇa. He told him that the route by which Vali had departed on being killed on the battle field had not been closed. He asked him to abide by the pledge and not to follow the path of Vali. His anger is suggested to have reached the extreme leading to the experience of Raudra Rasa, when he sent word that Vali alone was killed by him with an arrow but he would kill him (Sugrîva) along with his kinsfolk for he had deviated from the truth.

न स संकुचितः पन्था येन वाली हतो गतः ।
समये तिष्ठ सुग्रीव मा वालिपथमन्वगाः ॥
एक एव रणे वाली शरेण निहतो मया ।
त्वं तु सत्यादतिक्रान्तं हनिष्यामि सबान्धवम् ॥(37)

Here Sugrîva is the ãlambana vibhãva

After Rãvaṇa kidnapped Sîtã, Rãmã and Lakşmaṇa went in search of her. Rãmã rented his anger towards all the three worlds including the gods. He threatened the mountains that he would shatter all its crests if it did not show Sîtã.

तां हेमवर्णां हेमांगी सीतां दर्शय पर्वत
यावत् सानूनि सर्वाणि न ते विध्वंसयाम्यहम् ॥(38)

We have another instance where Rãmã's anger is roused due to the non- compliance of the sea. He threatens to make use of his fierce arrows and agitate the sea.

निमर्यादं करिष्यामि सायकैर्वरुणालयम् ।
महार्णव क्षोभयिष्ये महादानव संकुलम् ॥(39)

Lakşmaṇa is always described to be fierce who would never brook injustice. He opposed the idea of Rãmã leaving for the forest. He censured Daśaratha and said that if Ayodhyã stood in opposition to Rãmã he would depopulate the entire city by means of his sharp pointed shaft.

निर्मनुष्यामिमां सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ ।
करिष्यामि शरस्तीक्ष्णैर्यदि स्थास्यति विप्रिये ॥(40)

Vãlmîki has been successful in describing the anger of Rãvaṇa too. A violent anger born of Indrajit's death, took possession of Rãvaṇa. The eyes of Rãvaṇa which were naturally red and were glowing red through the fire of anger, looked very dreadful.

तस्य प्रकृत्या रक्ते च रक्ते क्रोधाग्निनापि च ।
रावणस्य महाघोरे दीप्ते नेत्रे बभूवतुः ॥(41)

The furiousness of Rãvaṇa hints at the greatness of Rãmã who conquered him.

### Vîra Rasa – The Heroic sentiment

The heroic sentiment is based on the energy of a high order. The Rãmãyana is referred to as a Vîra-ãkhyana sung by the bards glorifying the Ikşvãku dynasty.

इक्ष्वाकूणामिदं तेषां राज्ञां वंशे महात्मनाम् ।
महदुत्पन्नमारव्यानं रामायणमिति श्रुतम् ॥(42)

Yuddha, Dana, Dharma and Daya are the four types
**Yuddha Vîra** - The first instance we come across in the Rãmãyana is the killing of Tãṭaka by Rãmã. Viśvãmitra asked him to kill her. Rãmã hit her in the breast with a shaft as she came rushing like a thunder bolt discharged with force, with the result that she fell to the ground and died.

तामापतन्तीं वेगेन विक्रान्तामशनीमिव ।
शरेणोरसि विव्याध सा पपात ममार च ॥(43)

The Yuddhakanda is an excellent piece of depiction of heroism. Rãmã a true Kşatriya did not strike him down, when he was weaponless. He knew that Rãvaṇa was agonized and asked him to depart. He told him to come back seated in a chariot and armed with a bow and then witness his strength.

प्रयाहि जानामि रणार्दितस्त्वं प्रविश्य रात्रिं च रराज लङ्कम् ।
आश्वस्य निर्याहि रथी च धन्वी तदा बलं प्रेक्ष्यसि मे रथस्थः ॥(44)

**Dana Vira** – Daśaratha during the Asvamedha sacrifice, bestowed on the brahmanas ten lakhs of cows, a hundred million gold coins and four times as many silver coins.

गवां शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः ।
दशकोटि सुवर्णस्य रजतस्य चतुर्गुणम् ॥(45)

Here the brãhmanas are the ãlambana vibhãva.

The greatest form of charity can be seen when Rãmã gives away the kingdom that should have come to him legally. He said that the earth including the state of Kosala and its people and full of riches and food grains, being relinquished by him, should be made over to Bharata

इयं सराष्ट्रा सजना धनधान्य समाकुला ।
मया विसृष्टा वसुधा भरताय पदीयताम् ॥(46)

**Dharma Vira –** Vãlmîki calls Rãmã as the personification of Dharma – **रामो विग्रहवान् धर्मः** ।(47)

When Kaikeyî told Rãmã that she would tell him the reason for his father's distress, Rãmã stressed that he would never speak twice that is he would never go back on his word.

करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते ।(48)

He tells Lakşmaņa that having plighted one's word to do the bidding of one's father, mother or a brahmana, he who had taken his stand on righteousness should not falsify it.

संश्रुत्य च पितुर्वाक्यं मातुर्वा ब्राह्मणस्य वा ।
न कर्तव्यं वृथा वीर धर्ममाश्रित्य तिष्ठत ॥(49)

Perhaps these were the words that made Lakşmaņa swear in the name of Rãmã to bring about the end of Indrajit.

धर्मात्मा सत्यसन्धश्च रामो दाशरथिर्यदि ।
पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्वस्तदैनं जहि रावणिम् ॥(50)

A glorious tribute to Rãmã indeed.

**Daya Vira –** When Vibhîşaņa approached Rãmã for refuge, Rãmã promised to offer refuge to anyone and everyone who asked for it just once, thus revealing his extra ordinary compassion towards all living beings. Religious scholars consider this verse to be the Mûlamantra and essence of the Saraņãgati Tattva.

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम ॥(51)

Sîtã goes even a step further in showering her compassion. When Hanûmãn said that he would put an end to the ogresses who gave her trouble, she uttered equally worthy words as Rãmã. She said that compassion should be shown by a noble soul towards sinners as well as the good, nay even for those deserving death, for there was none who never went wrong.

पापानां वाशुभानां वा वधार्हाणां प्लवङ्गम ।
कार्यं करुणमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ॥(52)

Imagine the solace a sinner would experience.

Thus Vãlmîki has excelled in portraying all the four types of heroism.

### Bhayãnaka Rasa- The Terrible Sentiment

When anything fearful is seen or when any powerful person is offended, the sentiment of fearfulness is delineated. This sentiment depends on the ãsraya. For example when Hanûmãn showed his Visvarupa, it only caused wonder and not fear. The same form could cause fear in the demons.

While Daśaratha was returning after his son's wedding a tempest set in. The sun got enveloped in darkness, all people failed to discern the directions. Nay covered all over with dust, the whole of Daśaratha's army stood dumb founded as it were.

तमसा संवृतः सूर्यः सर्वे नावेदिषुर्दिशः ।
भस्मना चावृतं सर्व सम्मूढमिव तद्बलम् ॥(53)

The evil portents are the ãlambana vibhãvas.

In the forest, Virãdha, the ogre rushed towards the trio with anger as Kala, the destroyer of people and attacked them. He made a terrific sound as though making the earth tremble and took Sîtã in his arms.

अभ्यधावत् सुसंक्रुद्धः प्रजा काल इवान्तकः ।
स कृत्वा भैरवं नादं चालयन्निव मेदिनीम् ॥(54)

Again, Rãmã is the cause for fear in Mãrîca. Rãvaṇa met Mãrîca and told him that he had been wronged by Rãmã and that he wanted to kidnap Sîtã. Mãrîca asked Rãvaṇa not to provoke Rãmã. Being terrified he beheld thousands of Rãmãs. The whole of the forest appeared to have turned into Rãmã to him.

अपि राम सहस्राणि भीत पश्यामि रावण ।
रामभूतमिदं सर्वमरण्यं प्रतिभाति मे ॥(55)

## Bîbhatsa Rasa – The Odious Sentiment

The odious sentiment is delineated at the sight of or hearing of disgusting objects. Here we have to distinguish between easy or facile beauty and what Bosanquet calls 'difficult beauty.' (56)

Daśaratha pleaded with Kaikeyî not to send Rãmã to the forest. She was adamant. Daśaratha was disgusted with her and abused woman kind who were malignant by nature and whose supreme concern was to advance their own selfish interests. He then said that he did not speak of all women but Bharata's mother alone.

धिगस्तु योषितो नाम शठाः स्वार्थपरायणाः ।
न ब्रवीमि स्त्रियः सर्वा भरतस्यैव मातरम् ॥(57)

Here Kaikeyî is the ãlambana vibhãva Kausalyã and Bharata are also depicted to be disgusted with Kaikeyî.

The **Kşobaja** type of Bîbhatsa can be seen on the battle field where blood, flesh, fat and narrow are the vibhãvas. When Hanûmãn reached Laṇka in search of Sîtã, he looked for her in the harem as well as the banquet hall. He saw the meats of deer and buffaloes as well as of boars separately arranged in the banquet hall.

मृगाणां महिषाणां च वराहाणां च भागशः ।
तत्रन्यस्तानिं मांसानि पानभूमौ ददर्श सः ॥(58)

**Udvegikŗta** Bîbhatsa is illustrated in the Ayodhyãkanda. Rãmã decided to leave Citrakûṭa as he was disgusted by the impurity caused by the dry dung of horses and elephants due to their campings.

स्कन्धावार निवेशेन तेन तस्य महात्मनः ।
हयहस्तीकरीषैश्च उपमर्दः कृतो भृशम् ।(59)

Bîbhatsa Rasa has been delineated sparingly but certainly with full effect.

## Adbhuta Rasa – The Marvellous Sentiment

The Marvellous sentiment arises when things causing wonder are seen. Though the origin of the work itself is steeped in wonder, the cause however is traced to śoka.

शोकार्तेनास्य शकुनैः किमिदं व्याहृतं मया ।(60)

The descent of Ganga is a wonder. Next coming to Janaka's court at Mithila, Rãmã broke the bow of Śiva into two, the bow which could not be lifted by many warriors.

आरोपयित्वा मौर्वी च पूरयामास तद्धनुः ।
तद् बभञ्ज धनुर्मध्ये न श्रेष्ठो महायशाः ॥(61)

The golden deer sought by Sîtã does cause wonder.

Jambavan reminds Hanûmãn of the extra ordinary feats in his childhood. Taking the sun to be a fruit he rose to the sky.

अभ्युत्थितं ततः सूर्यं बालो दृष्ट्वा महावने ।
फलं चेति जिधृक्षुस्त्वमुत्प्लुत्याभ्युत्पतो दिवम् ॥(62)

Indrajit was an adept in creating illusions causing wonder. He addressed Hanûmãn and said that he would kill Sîtã. With his sharp edged sword, he split asunder that illusory Sîtã who had been sobbing.

तमेवमुक्त्वा रुदती सीतां मायामयीं च ताम् ।
शितधारेण खड्गेन निजघानेन्द्रजित् स्वयम् ॥(63)

We have alaukika and adbhuta too. Sîtã underwent a fire ordeal in order to prove her conjugal fidelity. The ogres and monkeys cried aloud. The God of fire emerged from the burning pyre and restored Sîtã to Rãmã.

ददौ रामाय वैदेहीमङ्के कृत्वा विभावसुः ॥(64)

When Sîtã was asked to prove her chastity again, she requested Mother Earth to take her in her lap. A throne arose and Mother Earth welcomed Sîtã causing wonder.

Rhetoricians have said that in a Kavya, though some other Rasa is prominent, the ending should lead to the experience of Adbhuta Rasa.

अद्‌भुत एव रसोऽन्ते निर्वहणे यत्र ।(65)

This has been followed in the Rãmãyana too. The one hundred and tenth sarga describes the ascent of Rãmã to heaven with the citizens of Kosala. The fact that all beings were going towards heaven with their physical bodies causes wonder. Vãlmîki has justified the term Adikavya for it serves as a model not only to be followed but also for the framing of rules.

## Śãnta Rasa- The Quietistic Sentiment

Bharata's Natyasastra speaks of eight Rasas but Abhinava Gupta, author of Dhvanyaloka has said that Bharata mentions Śãnta Rasa and that it is the king of Rasas. Bharata was a sage himself. Dr. V Raghavan has rightly remarked, 'Bharata therefore could hardly have lost sight of Rsis, forest, tapas etc.(66) There is no surprise if Vãlmîki can delineate the Śãnta Rasa in all its glory.

The hermitages shone like the residence of Lord Brahma resounding with the chanting of Vedic hymns and adorned with highly blessed brahmans, knowers of Brahma.

तद् ब्रह्मभवनप्रख्यं ब्रह्मथोषनिनादितम् ।
ब्रह्मविद्भिर्महाभागै ब्राह्मणैरुपशोभितम् ॥(67)

Here the hermitages are the ãlambana vibhãvas. Describing Agastya's tapovana, he said exalted and realized souls and the greatest sages endowed with new bodies had ascended to heaven aerial cars bright as the sun giving up their worn out body.

अत्र सिद्धाः महात्मानो विमानैः सूर्यसंनिभैः ।
त्यक्त्वा देहान् नवैर्देहैः स्वर्याताः परमर्षयः ॥(68)

There are many verses in the Rãmãyana which depict Śãnta Rasa through nirveda. Our ancestors have developed the concept of fate to explain the experience of sorrow and joy and to give peace to the distressed soul. Rãmã pacified Lakşmaņa who was angry with Kaikeyî by telling him that joy and sorrow, fear and anger, gain and loss, birth and death and any other similar experiences were unquestionably the work of providence.

सुखदुःखे भयक्रोधौ लाभालाभौ भवाभवौ ।
यस्य किञ्चित् तथा भूतं न तु दैवस्य कर्म तत् ॥(69)

Great philosophical truths have been putforth in a simple way. When Bharata implored Rãmã to return to Ayodhyã Rãmã comforted him saying that all accumulations ended in attenuation, all elevations in degradations and allunions in separations. All life had its end in death.

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः ।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम् ॥(70)

Even as two pieces of wood drifting away came together on the surface of an ocean and are drifted apart on reaching a particular moment, so wives and sons as well as relations and riches parted company after coming together, for inevitable was their separation.

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे ।
समेत्य तु व्यपेयातां कालमासाद्य कंचन ॥
एवं भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि च ।
समेत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्येषां विनाभवः ॥(71)

Each and every thought expressed by Rãmã is a pearl of wisdom and that is the ãlambana vibhãva. Conversations between Rãmã and Sumantra, Lakşmaņa and Sumantra, Rãmã and Vali etc. result in acquisition of knowledge leading to the experience of Śãnta Rasa.

Vãlmîki has delineated the Rasas impartially and so naturally that there is no forcible use of any Rasa or alankãra. The words of Bhavabhuti certainly suit Vãlmîki when he says.

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते ।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति ॥(72)

The paper will be incomplete without a reference to Rãsabhãsa. Impropriety is the cause of Rasabhanga leading to Rãsabhãsa.

अनौचित्यदृते नान्दद्रसभङ्गस्यकारणम् ।(73)

Description of love in the secondary hero, in the wives of the sages, preceptors and kings, in the villain, in low characters, in animals and birds etc. is considered to be Śṛńgãrãbhãsa. For example Rãvaṇa addressed Sîtã as a playful and charming lady with sweet smiles, shapely teeth and lovely eyes and told her that she stole away his heart as a river washed away its banks with its current.

चारुस्मिते चारुदंति चारुनेत्रे विलासिनि ।
मनो हरसि मे रामे नदीकूलमिवाम्भसा ॥(74)

However the reply of Sîtã indicates that it is only one sided, thus giving rise to Śṛńgãrãbhãsa. She placed a straw between herself and Rãvaṇa and asked him to be satisfied with his own consorts.

तृणमन्तरतः कृत्वा प्रत्युवाच शुचिस्मिता ।
निवर्तय मनो मत्तः स्वजने प्रीयतां मनः ॥(75)

Transgressing laws of battle, enthusiasm in beings of lower order and eagerness to kill a brahmana is Vîrãbhãsa. Rãvaṇa in order to get the Pushpaka Vimana waged a war against Kubera. Rãvaṇa assumed myriads of forms to bring about the destruction of Yakṣas. Nay, he appeared in many guises but he could not be seen.

ततो मायां प्रविष्टोऽसौ राक्षसी राक्षसेश्वर ।
बहूनि च करोति स्म दृश्यन्ते न त्वसौ ततः ॥(76)

The impropriety has been hinted at by Vãlmîki himself when he makes use of the Vişama ãlankãra to show that the straight warfare of the Yaksas and deceitful warfare of the Rãkşasas was incomparable.

क्व च यक्षार्जवं युद्धं क्व च मायाबलाश्रयम् ॥(77)

Similarly impropriety can be seen for the other Rasas too.

The secret of the appeal of a Mahakavya consists in the clever infusion of the various Rasas by the poet in a suggestive way, but lest the fundamental unity of the poem be impaired, it is necessary that a single. Rasa should be made dominant throughout. One of the four namely Śṛńgãra, Vira, Karuna and Santa among the nine Rasas is said to play the role of Angi Rasa. The remaining five are said to be Angi Rasas. Viśvanatha says

श्रृंगार वीर शान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते
अङ्गानि सर्वेऽपिरसाः ।(78)

Scholars have expressed various opinions regarding the Pradhana Rasa. Rãmãyana is referred to as the story of Sîtã.

काव्यं रामयणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत् ।(79)

Hence some are of the opinion that Śṛńgãra Rasa is predominant. Some refer to the line

पौलस्त्य वधमित्येव चकार चरितव्रतः ।(80)

and say that Vira is the Prãdhana Rasa as it tells about the death of Paulastya. The most accepted view is that Karuna is the sentiment in the Rãmãyana. Vãlmîki himself says that the result of the outburst of pathos was sloka.

शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा ।(81)

However, in my opinion it is the Śãnta Rasa. The main purpose of both Kavya and Sãstra is to produce the sense of direction between good and bad. The Rãmãyana discusses the subjects of sense enjoyment and prosperity and expatiates on the merits of the two other objects of human pursuit viz. piety and final beatitude and thus full jewels like the ocean attracts the ears as well as the mind of all.

कामार्थ गुणसंयुक्तं धर्मार्थ गुणविस्तरम् ।
समुद्रमिव रत्नाढ्यं सर्वं श्रुतिमनोहरम् ॥(82)

Aśvaghosã who was greatly influenced by the Rãmãyana appears to echo Valmîki when he says that his poem dealing with salvation has been written in the Kavya style, not to give pleasure but to further attainment of tranquility.

इत्येषा व्युपशान्तये न रतये मोक्षार्थगर्भाकृतिः ।(83)

Kuntaka and Kşemendra saw the ultimate Śãnta Rasa in the Rãmãyana.

रामायण महाभारतयोश्च शान्ताङ्गित्वं पूर्वसूरिभिरेव निरूपितम् ॥(84)
सर्वं दुःखमयं तदस्तु भवताम् श्लाघ्यो विवेकोदयः ॥(85)

While narrating the episode of Rãma, wandering in the forest searching and weeping for Sîta, Vyãsa says that the Lord demonstrated to the world the pitiful state to which a person fond of the company of women is reduced.

स्त्री सङ्गिव्यनां गतिमिति प्रथयंश्चचार ॥(86)

This leads to vivekodaya.
Prapatti is the means to salvation or experience of Śãnta Rasa. The gods surrender to Vishnu; Bharata, the sages, Sugrîva, Kãkãsura and Vibhîsana surrender to Rãma. This again results in tattvajñãna leading to the relish of Śãnta Rasa.

Vãlmîki, a poet of divine vision has been successful in providing the world a kind of intellectual and spiritual uplift of the highest beauty. Eternal novelty is the nature of this beauty - **क्षणे क्षणे यन्नवतामपैति.** From the Rãmãyana, emerge the Navarasas and finally submerge in Śãnta, the unifying Maharasa. What else other than Śãnta Rasa can emanate from Vãlmîki, the Śãntãtma. To conclude the Navarasabharitakavya Ramayana captivates the mind and enraptures the heart. Vãlmîki witnessing this from heaven might as well say Veni, Vidi, Vici- I came, I saw, I conquered.

॥ जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
श्री रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः ।

## Select bibliography

1) **Dhvamyaloka** with **locana commentary** Hindi Edition, Acharya Jagannãtha Pethata, Chowkambha Vidya Bhuvan, Varanasi, 1979

2) **Sãhitya Darpana** of **Visvanatha,** Hindi Edition, Sri Salagrãmã Sãstri, Motilal Banarsidas, Delhi 1967

3) **Vãlmîki Rãmãyana,** Gita Press, Gorakhpur, 1992

4) **Essays** in **Sanskrit Criticism,** K. Krishnamoorthy, Karnataka University, Dharwad 1964

5) **Number** of **Rasas,** Dr. V Raghavan, Adyar Library and Research Centre, Madras, 1975

6) **Lectures** on the **Rãmãyana,** Rt Hon V.S. Srinivasa Sãstri, Madras Sanskrit Academy, 1977.

7) **Studies in Rãmãyana,** K S Rãmãswami Sãstri, Dept of Education, Baroda, 1968

## References

1) N.S (G.O.S) – p 273
2) N.S (K.S.S) – VI- P- 71
3) Number of Rasas – P- 209
4) Number of Rasas – P-209
5) Balakanda -2-15
6) Balakanda -2-18
7) Kavyanusasana – P- 316
8) Yadavabhyudayam – I – 5
9) Subha Sîtãm – Mahakavi Paddhati- I
10) Studies in the Rãmãyana – Part I – P – 134
11) Balakanda – 77-25
12) Lectures on the Rãmãyana – P-23,24
13) Balakanda – 77-26
14) Aranya Kanda – 30-39
15) Sa Da – P – 256
16) Ayodhyã Kanda – 9-55, 56
17) Balakanda – 48-30
18) Yuddha Kanda – 5-4
19) Yuddha Kanda – 5-6,11
20) Sundara Kanda – 15-52
21) Laughter, and Essay on the meaning of the comic – P-130
22) Yuddha Kanda – 18-7
23) Aranya Kanda – 32-35, 36
24) Aranya Kanda – 32-40
25) Sundara Kanda – 10-54
26) Aranya Kanda – 18- 3 to 5
27) Lectures on the Rãmãyana – P – 80
28) Bala Kanda – 8 -1
29) Ayodhyã Kanda -12-54
30) Ayodhyã Kanda – 18- 5, 6
31) Ayodhyã Kanda –19-16
32) Ayodhyã Kanda – 19-17

33) Ayodhyã Kanda – 20-36, 37
34) Ayodhyã Kanda – 37-12
35) Ayodhyã Kanda – 41-9,10
36) Uttara Rãmã Charitam- I – 18
37) Kishkindha Kanda – 30-81, 82
38) Aranya Kanda – 64 - 30,31
39) Yuddha Kanda – 21- 24
40) Ayodhyã Kanda – 21-10
41) Yuddha Kanda – 92-91
42) Bala Kanda – 5-3
43) Bala Kanda – 26-25
44) Yuddha Kanda – 59-143
45) Balakanda –14-50
46) Ayodhyã Kanda – 34-41
47) Aranya Kanda – 37-13
48) Ayodhyã Kanda – 18-30
49) Ayodhyã Kanda – 21-42
50) Yuddha Kanda – 90-69
51) Yuddha Kanda – 18-33
52) Yuddha Kanda – 113- 45
53) Bala Kanda – 74-15
54) Aranya Kanda – 2-9
55) Aranya Kanda – 39-16
56) Three Lectures on Asesthetics- Bosanquet – P-85
57) Ayodhyã Kanda – 12-108
58) Sundara Kanda – 11-14
59) Ayodhyã Kanda –117-3
60) Balakanda – 2-16
61) Balakanda – 67-17
62) Kishkindha Kanda – 66-21
63) Yuddha Kanda – 81-29
64) Yuddha Kanda – 118-4
65) Natya Darpana with Vrtti – I – 15
66) Number of Rasas – P – 17
67) Aranya Kanda – I – 8
68) Aranya Kanda 11- 92
69) Aranya Kanda – 22-22
70) Aranya Kanda – 105-16
71) Ayodhyã Kanda – 105-26, 27
72) Uttara Rãmã Charitam – I – 10
73) Dhanyaloka – III – 4
74) Aranya Kanda – 46 - 21
75) Sundara Kanda – 21- 3
76) Uttara Kanda 15 - 32, 34

77) Uttara Kanda 15-9
78) Sãhitya Darpana – VI -317
79) Bala Kanda – 4 -7
80) Bala Kanda 4-7
81) Bala Kanda – 2-18
82) Bala Kanda -3-8
83) Saundaranandam – XVIII - 63
84) Vakroktijivita – IV (Vritti) - 44
85) Ramayana Manjari – P 508
86) Srimadbhagavatam – IX – 10-11

❑

*Smt. Seetha Ramachandra, Associate Secretary, BVB honoring Dr. Sree Srivatsa.*

# ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಶರಣಾಗತಿ

ಡಾ॥ ಎನ್.ಕೆ. ರಾಮಶೇಷನ್

ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಶರಣಾಗತಿ ಸಿದ್ಧಾಂತ / ಪ್ರಪತ್ತಿ ತುಂಬಿರುವ ಕಾವ್ಯವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸುವುದರೊಂದಿಗೆ, ದಿನನಿತ್ಯ ಪಾರಾಯಣ (Daily chanting cantos of Sri Rāmāyaṇa) ವಾಗಿರಿಸಿಕೊಂಡು, ಚತುರ್ವಿಧ ಫಲದೊಂದಿಗೇ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸುಲಭವಾದ ಮಾರ್ಗವಿದೆಂದು ಪರಿಭಾವಿಸುತ್ತ, ಕೆಲವು ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿನಿತ್ಯ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಪದ್ಧತಿ ಅನೇಕ ಮನೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದಿದೆ:

ಹರಿ ಓಂ

**ಹರೇ ಕೃಷ್ಣ  ಹರೇ ಕೃಷ್ಣ  ಕೃಷ್ಣ ಕೃಷ್ಣ ಹರೇ ಹರೇ ।**
**ಹರೇ ರಾಮ  ಹರೇ ರಾಮ  ರಾಮ ರಾಮ ಹರೇ ಹರೇ ॥**

ಇದೇ ಶರಣಾಗತಿಯ ಸಾರ, ಎನ್ನಬಹುದು.

ಭಾರತೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ದ್ಯೋತಕವಾಗಿ ಯುಗಯುಗಗಳಿಂದ ಬೆಳಗುತ್ತಲಿದೆ, ಮಹರ್ಷಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಪ್ರಣೀತ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯ. ಇಪ್ಪತ್ತನಾಲ್ಕು ಸಾವಿರ (24,000) ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ಪವಣಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ಈ ಕಾವ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿಯೇ ಅತ್ಯಂತ ಸರಳ, ಸುಮನೋಹರ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿ ಹೃದಯಂಗಮವಾಗಿ ವಿರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವಂಥದು, ಎಂಬುವ ಅಂಶ ಎಲ್ಲ ಸಹೃದಯ ವಿದ್ವಾಂಸರ ಅಭಿಮತ.

ರಾಮನ ಆಯನವೇ ರಾಮಾಯಣ (ಆಯನ–ಮಾರ್ಗ, ಹಾದಿ) ರಾಮಾಯಣವು ಶಾಸ್ತ್ರಗ್ರಂಥವೇ? ಚರಿತ್ರೆಯೇ– ಅದು ಕಾವ್ಯ, ಶಾಸ್ತ್ರ ಚರಿತ್ರೆಗಳೆರಡನ್ನೂ ಒಳಗೊಂಡಿರುವ ಕಾವ್ಯ. ಕಾವ್ಯವೆಂದರೆ? ಮನುಷ್ಯನ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಅವನಿಗೆ ಇಷ್ಟವೆನಿಸಿದ ಅನುಭವ (ಒಮ್ಮೊಮ್ಮೆ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಬಣ್ಣಿಸಲಾಗದು)ವುಂಟು ಮಾಡಿಸಬಲ್ಲ ವಾಕ್ಯ ಸಮುದಾಯವೇ ಕಾವ್ಯ.

ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಶರಣಾಗತಿ ಸಿದ್ಧಾಂತ / ಪ್ರಪತ್ತಿ ತುಂಬಿರುವ ಕಾವ್ಯವೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸುವುದರೊಂದಿಗೆ, ದಿನನಿತ್ಯ ಪಾರಾಯಣ (Daily chanting cantos of Sri Rāmāyaṇa) ವಾಗಿರಿಸಿಕೊಂಡು, ಚತುರ್ವಿಧ ಫಲದೊಂದಿಗೇ ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸುಲಭವಾದ ಮಾರ್ಗವಿದೆಂದು ಪರಿಭಾವಿಸುತ್ತ, ಕೆಲವು ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿನಿತ್ಯ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಪದ್ಧತಿ ಅನೇಕ ಮನೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದಿದೆ:

**ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ಹೇಮಾದ್ರಿನೃತ ಸತ್ವ ಮಣಿಶೇಖರಃ ।**
**ಧರ್ಮ ಪ್ರಮತೀ ಮಹಿತಃ ಶೋಭತೇ ಸರ್ವ ಶೋಭನಃ ॥**

**ಕೂಜಂತಂ ರಾಮ ರಾಮೇತಿ ಮಧುರಂ ಮಧುರಾಕ್ಷರಂ ।**
**ಆರುಹ್ಯ ಕವಿತಾಶಾಖಾಂ ವಂದೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕೋಕಿಲಮ್ ॥**

**ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಿರಿ ಸಂಭೂತಾ ರಾಮ ಸಾಗರಗಾಮಿನೀ ।**
**ಪುನಾತುಭುವನಂ ಪುಣ್ಯಾ ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾನದೀ ॥**

**ಗೋಷ್ಪದೀ ಕೃತ ವಾರಾಶಿಂ ಮಶಕೀಕೃತ ರಾಕ್ಷಸಮ್ ।**
**ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಮಾಲಾರತ್ನಂ ವಂದೇಅನಿಲಾತ್ಮಜಂ ॥**

(ಅನಿಲಾತ್ಮಜಂ)

**ತಪಃ ಸ್ವಾಧ್ಯಾಯ ನಿರತಂ ತಪಸ್ವೀವಾಗ್ವಿದಾಂವರಂ ।**
**ನಾರದಂ ಪರಿಪಪೃಚ್ಛ ವಾಲ್ಮೀಕಿರ್ಮುನಿಪುಂಗವಮ್ ॥**

ಪ್ರತಿ ಸರ್ಗದ ಆರಂಭ, ಈ ಕೆಲವು ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ಮಹರ್ಷಿ ನಾರದರನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅತ್ಯಂತ ವಿನಯದಿಂದ ಕೇಳುವುದಿದೆ,

**"ಕೋನ್ವಸ್ಮಿನ್ ಸಾಂಪ್ರತಂಲೋಕೇ, ಗುಣವಾನ್ ಕಶ್ಚವೀರ್ಯವಾನ್ ।**
**ಧರ್ಮಜ್ಞಶ್ಚ, ಕೃತಜ್ಞಶ್ಚ, ಸತ್ಯವಾಕ್ಯೋ ದೃಢವ್ರತಃ" ॥**

ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಈಗ ಸಕಲ ಸದ್ಗುಣ ಸಂಪನ್ನನಾಗಿರುವ ಪರಾಕ್ರಮಶಾಲಿ, ಧರ್ಮಜ್ಞ, ಸತ್ಯವ್ರತ ಹಿಡಿದವನಾದ, ಮಾಡಿದ ಸಂಕಲ್ಪ ಬಿಡದಾತ, ಪರಂಪರೆಯಿಂದ ಬಂದ ಸದಾಚಾರ ಸಂಪನ್ನ, ಸರ್ವ ಭೂತಗಳ ಹಿತದಲ್ಲಿ ನಿರತ, ಎಲ್ಲ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಬಲ್ಲವ, ಸರ್ವಕಾರ್ಯ ಧುರಂಧರ, ಪ್ರಿಯ ದರ್ಶನ, ಧೈರ್ಯಶಾಲಿ, ಕಾಂತಿವಂತ, ಕೋಪವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವನು, ಅಹಂಕಾರರಹಿತ, ಅಸೂಯೆ ಇಲ್ಲದಾತ, ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ನಿಂತರೆ ದೇವತೆಗಳನ್ನೇ ಜಯಿಸುವವನು–ಹೀಗೆ ಈ ರೀತಿ ಹದಿನಾರು ಗುಣಗಳಿಂದೊಡಗೂಡಿದಾತ ಈಗ ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಇದ್ದರೆ ದಯವಿಟ್ಟು ತಿಳಿಸಿ. ನನಗೆ ತುಂಬ ಕುತೂಹಲ... ನಾನು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೇನೆ. ದೇವರ್ಷಿಗಳೇ! ಎಂದು ಕೋರಿದಾಗ, ನಾರದರು ಮಂದಸ್ಮಿತರಾಗಿ, "ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿ! ನೀ ಕೇಳುವಂತೆ ಸಕಲ ಗುಣಯುತ ಮಹಾಪುರುಷ ಇದ್ದಾನೆ. ಅವನು ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶ ಖ್ಯಾತಿಯ ಶ್ರೀರಾಮ" ಎಂದರು. ಇಲ್ಲೇ ನಾವು ಗಮನಿಸಿದಾಗ್ಗೆ ತಿಳಿಯುತ್ತೇವೆ, ಧೀರೋದಾತ್ತನಾಗಿ, ಪ್ರಪತ್ತಿ ಮೈವೆತ್ತಂತಹ ಶ್ರೀರಾಮನೆಂಬುದನ್ನು!

ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣವು "ಆದಿಕಾವ್ಯಮಿದಂ ಪುರಾ ವಾಲ್ಮೀಕಿನಾ ಕೃತಂ", ತನ್ನ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಬಾಲಕಾಂಡದಿಂದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದವರೆಗೂ (ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಪಾರಾಯಣ ಪದ್ಧತಿ ಇಲ್ಲ, ಆದರೆ ಲವಕುಶರ ಕಥನ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಪರಿಗ್ರಾಹ್ಯವೆನಿಸುತ್ತದೆ!) ಶರಣಾಗತಿಯ ಎಳೆಯನ್ನುಳ್ಳದ್ದಾಗಿದೆ ಎಂದು ತಿಳಿಯ ಬರುತ್ತದೆ, ದಶರಥನ ನಾಲ್ಕು ಜನ ಮಕ್ಕಳು ಎಂಥ ಸಂಪನ್ನಾರು! ರಮಯತೀತಿ ರಾಮ, **ಭರತೋ ಭಕ್ತಿಭರಿತಂ,** ಲಕ್ಷ್ಮಣೋ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಸಂಪನ್ನಃ, ಶತ್ರುಘ್ನೋ ನಿತ್ಯ ಶತ್ರುಘ್ನಃ ಎಂಬುವ ವಿಶೇಷಣ ಉಳ್ಳವರು.

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಹಾಸುಹೊಕ್ಕಾಗಿದೆ ಶರಣಾಗತಿಯ / ಪ್ರಪತ್ತಿಯ ಷಡಂಗಗಳು :- ಇದು ಅಲ್ಲಲ್ಲೇ ಉಕ್ತ ಆಗುತ್ತದೆ-ನಾವು ಪರಿಶೀಲಿಸಿದಾಗ

> ಧರ್ಮಾತ್ಮಾ ಸತ್ಯ ಸಂಧಶ್ಚ - ಯಾವುದು ಪರಮ ಸತ್ಯವೆನಿಸುತ್ತದೆ?
> ಸತ್ಯಮೇವ ಜಯತೇ, ನಾನೃತಂ,
> ಯತೋ ಧರ್ಮ ಸ್ತತೋ ಜಯಃ, ಶ್ರೀರಾಮನೇ ತಿಳಿಸುತ್ತಾನೆ:

> **"ಮಿತ್ರಭಾವೇನ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಂ ಸತ್ಯಂಜೇಯಂ ಕಥಂಚನ ।**
> **ದೋಷೋ ಯದ್ಯವಿರಸ್ಯಸ್ಯಾತ್ಸತಾ ಮೇತದಗರ್ಹಿತಂ ॥**

ವಿಭೀಷಣ ಶರಣಾಗತನಾಗಿ ಬಂದಾಗ ತನ್ನ ಅಪಾರ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ಶ್ರೀರಾಮನು ಆಶ್ರಿತನನ್ನು ತನಗೆ ಸಮಾನನೆಂದು ಭಾವಿಸುತ್ತಾನೆ, ಶರಣಾಗತನಾದವನೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸುತ್ತಿಲ್ಲ. ಮಿತ್ರತ್ವದಿಂದ ಎಂದಲ್ಲಿ ಅರ್ಥ. ಅಂದರೆ ಅನುಕೂಲ್ಯ ಸಂಕಲ್ಪಾದಿಗಳ ಮೂಲಕ ಮಾಡಿದ ಆತ್ಮರಕ್ಷಾಭವ ಸಮರ್ಪಣವು ಪೂಜಿತವಾಗಿರುವುದು. ಶರಣಾಗತನೆಂದು ಬಂದವರನ್ನು ನಾನು ಬಿಡುವುದಿಲ್ಲ ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ಶ್ರೀರಾಮ. ಪ್ರಪತ್ತಿಯು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಮೋಕ್ಷ ಪರ್ಯಂತವಾದ ಸಾಧಕವಾಗುವ ಅಂಶವನ್ನು ನಾವು ತಿಳಿಯಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಇನ್ನು ಶರಣಾಗತಿ ವೇದವೆನ್ನಲು ಕಾರಣ, ದುಷ್ಟಶಿಕ್ಷಣ, ಶಿಷ್ಟರಕ್ಷಣ ಮತ್ತು ಸನಾತನ ವೈದಿಕ ಧರ್ಮದ ಉದ್ಧರಣಗಳಿಗಾಗಿ ನಾನು ಯುಗಯುಗದಲ್ಲಿಯೂ ಜನಿಸಿ ಬರುವೆ, ಇದು ಸೀತೆಯಲ್ಲಿನ ಆಚಾರ್ಯ (ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ) ಆಶ್ವಾಸನೆಯಾದರೂ ಇದು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ದೇವಮಾನವ ಶ್ರೀರಾಮನ ಅಭಯ ಪ್ರದಾನಕ್ಕೆ ಅನ್ವಯವಾಗುವಂಥದು.

> **ಪರಿತ್ರಾಣಾಯ ಸಾಧೂನಾಂ ವಿನಾಶಾಯಚ ದುಷ್ಕೃತಾಮ್ ।**
> **ಧರ್ಮ ಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಾಯ ಸಂಭವಾಮಿ ಯುಗೇ ಯುಗೇ ॥**

ಇದರಂತೆ ಸರ್ವೇಶ್ವರನು ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ದಶರಥ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯ ಕುಮಾರನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ, ಶ್ರೀ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಯು ಬ್ರಹ್ಮಸುತನೆಂಬ ಮಹರ್ಷಿಯ ಸನ್ನಿಧಾನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನ ಅವತಾರವನ್ನು ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಕೇಳಿದನು ಹಾಗೆಯೇ ಯಥಾವತ್ತಾದ ಸಮಂಜಸವಾದ ಶರಣಾಗತಿಸಾರವುಳ್ಳ ಉತ್ತರವನ್ನು ಪಡೆದನು. ಪ್ರಪತ್ತಿ ಶರಣಾಗತಿಯಿಂದ ಎಲ್ಲ ಫಲ ಪಡೆಯುವ ಅವಕಾಶವಿದೆ.

ಮೇಲ್ಕಂಡದಕ್ಕೆ ಪೋಷಕವೆಂಬುವಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮಕೃತ "ರಾಮಸ್ತವ"ದಲ್ಲಿ ಹೀಗೆ ಬರುತ್ತದೆ: ಅದು ತೈತ್ತಿರೀಯ ಮಹಾನಾರಾಯಣೋಪನಿಷತ್ತಿನ ಸಾರವೇ!

> **ನಕರ್ಮಣಾ ನಪ್ರಜಾಯಾಧನೇನ**
> **ತ್ಯಾಗೇನೈಕೇ ಅಮೃತತ್ವಮನಶು : ।**

ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಪನ್ನನಿಗೆ ಜೀವನವೇ ಒಂದು ಆತ್ಮಯಜ್ಞ, ಸರ್ವವೇದಸ ಆತ್ಮ ಸಮರ್ಪಣವೇ (ಶರಣಾಗತಿ) ಸತ್ಯಯಾಗದಂತೆ.

> **ಸರ್ವಧರ್ಮಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ ಮಾಮೇಕಂ ಶರಣಂವ್ರಜ ।**
> **ಅಹಂತ್ವಾ ಸರ್ವ ಪಾಪೇಭ್ಯೋ ಮೋಕ್ಷಯಿಷ್ಯಮಿ ಮಾ ಶುಚ : ॥**

ಶರಣಾಗತಿಯಿಂದ ಸರ್ವಪಾಪ ವಿಮುಕ್ತಿ. ಆದರೆ ಪಾಪವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮಾಡಕೂಡದಷ್ಟೆ. (ರಾಮಾನುಜರು ತಮ್ಮ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಸಿದ್ಧಾಂತದ ಪ್ರತಿಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ಇದನ್ನೇ ಸಾರುತ್ತಾರೆ).

ಲಕ್ಷ್ಮೀತಂತ್ರ ಎಂಬುವ ಪುರತಾನ ಗ್ರಂಥವೊಂದರಲ್ಲಿ ಶರಣಾಗತಿ, ಪ್ರಪತ್ತಿ ಷಡಂಗಗಳಿಂದೊಡಗೂಡಿದ್ದೆಂದು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ, ಇದೇ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ

ಮೊದಲಿಂದ (ಬಾಲಕಾಂಡ) ಕೊನೆಯ ಕಾಂಡವ ತನಕ (ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಕೂಡ ಸೇರಿದಂತೆ) ಕಾಣುವಂಥದು.

**ಷಡಂಗಂ ಕಮುಪಾಯಂಚ, ಶೃಣುಮೇ ಪದ್ಮಸಂಭವೇ ।**
**ಅನುಕೂಲನ್ಯ ಸಂಕಲ್ಪಃ ಪ್ರಾತಿಕೂಲ್ಯಸ್ಯ ವರ್ಜನಂ ॥**
**ರಕ್ಷಿಷ್ಯತೀತ ವಿಶ್ವಾಸಃ ಗೋಪ್ತೃತ್ವವರಣಂ ಕಥಾ ।**
**ಆತ್ಮ ನಿಕ್ಷೇಪ ಕಾರ್ಪಣ್ಯೇ, ಷಡ್ವಿಧಾಶರಣಾಗತಿಃ ॥**

ಇದು ಮಾನವನಾದರೂ ದೈವತ್ವವುಳ್ಳ ಶ್ರೀರಾಮನೆಂಥವನೆಂದು ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. "ಶ್ರೀರಾಮ ಸಹಿವಿಷ್ಣುಃ ಸನಾತನಃ", "ಆದಿದೇವೋ ಮಹಾಬಾಹುಃ ಹರಿಃ ನಾರಾಯಣಃ ಪ್ರಭು !" ಇವೇ ಮೊದಲಾದ ವಾಕ್ಯಗಳಿಂದ ಅಂದರೆ, ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣನನ್ನು ನಂಬಿದ ಭಕ್ತ (ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಭರತ, ಗುಹ, ಜಟಾಯುವಂಥ ಪಕ್ಷಿ, ಆಂಜನೇಯ, ಶಬರಿ, ಸುಗ್ರೀವ, ಸಮುದ್ರ ಶರಣಾಗತಿ, ವಿಭೀಷಣ ಶರಣಾಗತಿ ಹೀಗೆ) ಆ ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ (ಪ್ರಪತ್ತಿ) ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಅನುಕೂಲವಾದದ್ದನ್ನು ಸಂಕಲ್ಪಿಸುತ್ತಾನೆ, ಭಗವಂತನಿಗೆ ಪ್ರತಿಕೂಲವನ್ನು ವರ್ಜಿಸಿ, ನಾವು ನಮ್ಮನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಯಾವತ್ತು ಅಸಮರ್ಥರು ನೀವೇ ರಕ್ಷಕ ಸಾಧನ ಎಂಬುವ ಕಾರ್ಪಣ್ಯ, ಇಡೀ ಲೋಕಕ್ಕೆ ನೀನೇ ಸರ್ವತ್ರ ಸಾಧನ ಎಂಬುವಂಥ ಗೋಪ್ತೃತ್ವವರಣ (Gōptrtvavaraṇa), ಪರಮಾತ್ಮನೇ ನಮ್ಮನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿ ರಕ್ಷಸಿಯೇ ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಾನೆಂಬ ಮಹಾವಿಶ್ವಾಸ, ಆ ಪರಮಾತ್ಮನಲ್ಲಿ ತನ್ನನ್ನು ಸರ್ಮಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು. (Absolute and unconditional Self-Surrender) ಇದು ಪ್ರಪತ್ತಿ–ಶರಣಾಗತಿ ಎನಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತದೆ.

ಭಕ್ತಿ ಎಂದಾಗ, ಅಲ್ಲಿ ಸಾಧನ, ಸಾಧ್ಯ, ಪ್ರಕೃತಿ. (ಪರಾ, ಅಪರಾ) ಹೀಗೆಲ್ಲ ಹಂತಗಳ ನಿರ್ಮಿತಿ. ಪ್ರಪತ್ತಿ ಭಕ್ತಿಗೆ ಮಿಗಿಲು, ಸುಲಭ, ಒಮ್ಮೆ ಒಂದೇ ಸಲ ಮಾಡಿಬಿಟ್ಟರಾಯಿತು. (ಇದನ್ನು ಅನಂತರ ಬಂದ ಆಚಾರ್ಯರಾದ ಶ್ರೀ ವೇದಾಂತದೇಶಿಕರು ವ್ಯಾಸ ವಿಂಶತಿ ಮೊದಲಾದ ಸ್ತುತಿಗಳಲ್ಲಿ ಬಗೆಬಗೆಯಾಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟೀಕರಿಸುತ್ತಾರೆ) ಪ್ರಪತ್ತಿಗೂ ಮುಂದರಿದದ್ದು ಭರನ್ಯಾಸ ಅಂದರೆ, ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮನಾದ ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ ನಡಿದಾವರೆಗಳಲ್ಲಿ ತನ್ನ "ಭಾರ"– ಆವೇಗವನ್ನು ನ್ಯಾಸ ಅಂದರೆ ಒತ್ತೆಯಿಡುವಂಥದು ಅರ್ಪಿಸಿ ಬಿಡುವಂಥದು.

ಈ ತೆರನಾದ ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ / ಶರಣಾಗತಿಗೆ "ನಾಜಾತಿಭೇದಂ ನಕುಲಂ ನಲಿಂಗಂ ನಚ ಸಕ್ತ್ರಿಯಾಂ/ ನದೇಶಕಾಲಾನಾವಸ್ಥಾಂ ಯೋಗೋ ಹ್ಯಯಮಪೇಕ್ಷತೇ" ಯಾವುದೇ ಜಾತಿ, ಲಿಂಗ, ಭೇದವಿಲ್ಲ, ಯಾವುದೇ ಕಾಲ, ದೇಶ, ಅವಸ್ಥೆ, ಯೋಗ, ಯಾವುದನ್ನೂ ಅಪೇಕ್ಷಿಸದು. ಸಂಪೂರ್ಣ ಶರಣಾಗತಿ ಮಾತ್ರ ಅಪೇಕ್ಷಣೀಯವಷ್ಟೇ. ಇದನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಭರತರಿಂದ. ಗುಹನಂಥ ಬೇಡನಿಂದ, ಜಟಾಯುವಂಥ ಪಕ್ಷಿಯಿಂದ, ಶಬರಿಯಂಥ ಬೇಡಿತಿಯಿಂದ (ಮಹಾಭಕ್ತೆ) ಸುಗ್ರೀವ (ಸಂಪೂರ್ಣ ಪ್ರಪನ್ನನಾದವನು ಏಕೆಂದರೆ, ರಾಜ್ಯ ಹೆಂಡತಿ ಕಾಮನೆ ಪೂರೈಕೆಗೆ ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡುವುದು)ನಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಶರಣಾಗತಿ ಭಾವ ತಿಳಿದಿರದಿದ್ದರೆ, ಸ್ವಾಮಿ ಶ್ರೀರಾಮ ಎಂದೆಣಿಸಲಿಲ್ಲ ಮುಂದೆ, ವಿಭೀಷಣನ ತನಕವೂ ಇಡೀ ಸೂತ್ರ ರಾಮನದು ಇಷ್ಟೇ!

**"ಸತ್ಯಮೇವ ಪ್ರಪನ್ನಾಯ ತವಾಸ್ಮೀತಿಚ ಯಾಚತೇ ।**
**ಅಭಯಂ ಸರ್ವಭೂತೇಭ್ಯೋ ದದಾಮಿ ಏತದ್ವ್ರತಂಮಮ ॥**

ಗೀತಾಚಾರ್ಯ ನುಡಿಯುವುದೂ ಇದೇ ತೆರನಾಗಿಯೇ:–

**"ಮನ್ಮನಾಭವ ಮದ್ಭಕ್ತೋ ಮದ್ಯಾಜೀಮಾಂ ನಮಸ್ಕುರು ।**
**"ಮಾಮೇ ವೈಷ್ಯಸಿಸತ್ಯಂತೇ ಪ್ರತಿಜಾನೇ ಪ್ರಿಯೋಸಿಮೇ" ॥**

ಅಕಿಂಚನರಾದ ಪ್ರಪನ್ನರ ರಕ್ಷಣಾದೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಭಗವಂತನು ತಾನಾಗಿಯೇ ವಹಿಸುತ್ತಾನೆ, ಇದರಿಂದ ಆಶ್ರಿತ ಸಂರಕ್ಷಣನೆಂಬುವ ಕೀರ್ತಿಯು ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಮೊಳಗಿ ಬೆಳಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ದುರದೃಷ್ಟ ವಿನಾಶಕಾರನೂ ಆಗುತ್ತಾನೆ (ಅಹಲ್ಯಾ ಶಾಪ ವಿಮೋಚನ ನೆನಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು) ಅದೂ ಎಷ್ಟರ ಮಟ್ಟಿಗೆ, ಎಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ "ಪಾಪೀಯ ಸಃ ಅಪಿಶರಣಾಗತಶಬ್ಧಭಾಜೋ" ಎಲೈ ಭಗವಂತನೇ! ಮಹಾಪಾಪಿಷ್ಠನಾಗಿದ್ದರೂ ಕೂಡ ನಾನು "ಶರಣಾಗತ" ಎಂಬುದಾಗಿ

ಹೆಸರಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ನಿನ್ನಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಮೊರೆಯಿಟ್ಟು ಶರಣಾಗತಿ ಶಬ್ಧವನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಿದ ನನ್ನನ್ನು ಉಪೇಕ್ಷೆ ಮಾಡು ಎಂದರೇನು? ಖಂಡಿತ ಇಲ್ಲ. ಎನ್ನುತ್ತದೆ ರಾಮಾಯಣ. ವಿಭೀಷಣನು, ರಾವಣನೆಂಬುವ ಮೊಸಳೆಯಿಂದ ಹಿಡಿಯಲ್ಪಟ್ಟವನಾಗಿ, ಕಡಲಿನ ಆಚೆ ದಡದಲ್ಲೇ ನಿಂತು "ರಾಘವಾಯ ಶರಣಂಗತಃ" ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದರೆ ಸಾಕು ನಾನು ಕೈಹಿಡಿದು ಕಾಪಾಡುತ್ತೇನೆ. ಇದು ಶ್ರೀರಾಮನ ದೃಢವಾಕ್ಯ-ರಾಮನು ಎಂದೂ ಎರಡು ಮಾತಾಡುವವನಲ್ಲ (ದ್ವಿರ್ನಾಭಿಭಾಷತೇ) ಮತ್ತೂ ಗಮನಿಸೋಣ.

ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಲೋಕಕಂಟಕ, ಸಾತ್ವಿಕ ಋಷಿವೃಂದ ಕಂಟಕನಾದ ರಾವಣನ ವಧೆಗಾಗಿ ದೇವತೆಗಳು ಮಾಡಿದ ಶರಣಾಗತಿ. ಆ ರಾಕ್ಷಸ ವರಪ್ರಸಾದಿತನಾದರೂ ಮನುಷ್ಯರಿಂದ ಅವನ ವಧೆ ಸಾಧ್ಯ – ಅದು ಶ್ರೀಮನ್ನಾರಾಯಣ ಮನುಷ್ಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ದಶರಥಸುತ ಶ್ರೀರಾಮನಾಗಿ ಅವತರಿಸಿದ್ದು ಸಾರ್ಥಕವಾಯ್ತು. ಇಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರ ಶರಣಾಗತಿ ಗಮನಿಸಿ-ಕೌಸಲ್ಯಾ ಸುಪ್ರಜಾರಾಯ ಎಂದು ಅವರು ಹಾಡಿದ ಸುಪ್ರಭಾತ, ಅವರು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಅಸ್ತ್ರದೇವತೆಗಳು ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ ಪ್ರಪತ್ತಿ. ಮುಂದೆ ತನ್ನೊಂದಿಗೇ ಸದಾ ಬಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಪ್ರಪತ್ತಿ – ಬೇಡಗುಹನನ್ನೂ ರಾಘವ ನೀನು ಐದನೆಯ ತಮ್ಮ ಎಂದ! ಶ್ರೀರಾಮನವತಾರವೇ? ವೇದ, ಧರ್ಮ ಸಂಗ್ರಹಾರ್ಥ, ಶರಣಾಗತ ರಕ್ಷಣಾರ್ಥ ಮುಂದೆ ಸೀತೆಯ ಸಮರ್ಪಣಭಾವ, ಪರಶುರಾಮನ ಶರಣಾಗತಿ, ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ರಾಜಕೀಯ !

ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಪದತತ್ವ ನಿರೂಪಣೆ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸೌಶೀಲ್ಯಾದಿ ಗುಣ ವಿವರ ಪ್ರತಿಸಾಧನ ಗುಹನ ಪ್ರಪತ್ತಿ, ರಾತ್ರೋರಾತ್ರಿ ಸೀತಾರಾಮರನ್ನೂ ಕಾದದ್ದು. ಮುಂದೆ, ಚಿತ್ರಕೂಟವನ್ನೂ, ಭರತ ಶರಣಾಗತಿ ಪಾದುಕಾ ಪ್ರಭಾವ (ವೇದಾಂತ ದೇಶಿಕರು. ಈ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ತಮ್ಮ ಆರಾಧ್ಯ ದೈವನಾದ ಶ್ರೀರಂಗದ ಸ್ವಾಮಿಯ ದಿವ್ಯ ಪಾದುಕೆಗಳಿಗೆ ಸಮನ್ವಯ ಮಾಡಿ 1008 ಶ್ಲೋಕಗಳ "ಪಾದುಕಾಸಹಸ್ರಂ" ಕಾವ್ಯವನ್ನೇ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ).

ಇಡೀ ಸೃಷ್ಟಿ-ಸ್ಥಿತಿ-ಲಯಗಳೇ ಭಗವಂತನಿಗೆ ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡುವುದು. ಭಕ್ತಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸ್ವಯಂ ಆಗಿ ವ್ಯಕ್ತಿಗೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲವೇ? ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತದಲ್ಲಿ "ಅಂಜಲಿ", "ತಿರುವತಿ" (ಶ್ರೀಪಾದ)ಕ್ಕೇ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆ ಜೀವಾತ್ಮ ಶೇಷ, ಪರಮಾತ್ಮ ಶೇಷಿ, ಜೀವಾತ್ಮ ದಾಸ, ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಈಶ ! (ಕ್ರಿ.ಶ. 1509–1607ರ ನಡುವೆ ಇದ್ದ ದಾಸರಲ್ಲಿ ಕವಿಗಳೆಂದೇ ಖ್ಯಾತಿವೆತ್ತ ಕನಕದಾಸರ "ಈಶ ನಿನ್ನ ಚರಣ ಭಜನೆ" ಕೀರ್ತನೆಯಾಗಲಿ, "ರಕ್ಷಿಸು ನಮ್ಮನನವರತ" ಎಂದು ಶರಣಾಗತಿ ತತ್ತ್ವವೇ ಮೈವೆತ್ತ ಹರಿಭಕ್ತಿಸಾರ ಕಾವ್ಯವಾಗಲಿ ಪ್ರಚುರಪಡಿಸುವುದು ಶರಣಾಗತಿಯ ಮಜಲುಗಳನ್ನೇ!) "ಪ್ರಾಂಜಲಿಃ ಆಂಜನೇಯಂ" "ಕಿಂ ಮೇ ಧರ್ಮವಿಹೀನಸ್ಯ ರಾಜಧರ್ಮಃ ಕರಿಷ್ಯತಿ" ಪ್ರಭುರಾಘವ! ಸಾಕ್ಷಾತ್ ಧರ್ಮವಾದ ನಿನ್ನನ್ನೇ ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿದವನಿಗೆ ಬರೀ ರಾಜಧರ್ಮದಿಂದೇನು-ಎಂದು ಭರತ ಭಿನ್ನವಿಸುವಲ್ಲಿ ಇರುವುದೇ ಪ್ರಪತ್ತಿ ತಾನೆ?

**ಅರಣ್ಯಕಾಂಡ**

ಪರತತ್ವ ಸ್ವರೂಪಿ ಎಂದು ವೇದ್ಯವಾಗುವುದು ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿಯೇ!

**ಶರಣಾಗತ ರಕ್ಷಣೆಯೇ ಪರಮಧರ್ಮ**
**ತಪಸ್ವಿ ಸಮುದಾಯಕ್ಕೇ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಅಭಯ ಪ್ರದಾನ.**

**(ಅಪ್ಯಹಂ ಜೀವಿತಂ ಜಹ್ಯಾಂ ತ್ವಾಂ ವಾಸೀತೇ ಸಲಕ್ಷ್ಮಣಾಮ್ ।**
**ನಹಿ ಪ್ರತಿಜ್ಞಾಂ ಸಂಶ್ರುತ್ಯ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಭ್ಯೋ ವಿಶೇಷತಃ ॥** ಎಂಬುವ ಶ್ರೀರಾಮನ ಘೋಷಣೆಯಲ್ಲಿ ಬ್ರಾಹ್ಮಣೇಭ್ಯೋ ಎಂದಾಗ ಕೇವಲ ಆ ಜಾತಿಯವನೆಂದಷ್ಟೇ ಅರ್ಥವಲ್ಲ, ಭಗವಂತನಲ್ಲೇ ತನ್ನನ್ನು ಕೀಲಿಸಿಕೊಂಡ ಅರಿವುಳ್ಳವನೆಂದು ಅರ್ಥವಾಗುತ್ತದೆ) ಅರಣ್ಯವಾಸದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೇ ಪರ್ಣಶಾಲೆ ನಿರ್ಮಿಸುವ 'ಕೈಂಕರ್ಯ'. ಅಲ್ಲಿಯೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು, "ಅಣ್ಣಾ, ನಾನು ಸದಾ ನಿನಗೇ ದಾಸ. ದಾಸನಾದವನಿಗೆ ತನ್ನ ಇಷ್ಟ-ಸ್ವಇಚ್ಛೆ-ಎಂಬುದಿಲ್ಲ. ಸ್ವಾಮಿಯ ಇಷ್ಟವೇ ದಾಸನ ಇಷ್ಟ ಇಲ್ಲಿ "ಪರ್ಣಶಾಲೆ ಕಟ್ಟು" ಎಂದು ನೀನು ಆದೇಶಿಸು ಆ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸುವೆನು".

ಮುಂದೆ, ಚಿತ್ರಕೂಟಕ್ಕೆ ಭರತನಾಗಮನ ಅಣ್ಣ-ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ರಾಜ್ಯಾಡಳಿತ ಭಾರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸು, ನನ್ನಿಂದ ಆಗುವುದಿಲ್ಲ ಎಂದು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ಬೇಡುವುದು, ಅಣ್ಣನಡಿದಾವರೆಗಳಲ್ಲಿ ಹೊರಳಾಡುವುದು, ಶ್ರೀರಾಮನಾದರೆ, ಭರತನನ್ನು ತನ್ನ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿಕೊಂಡು ಹಿತೋಪದೇಶ ಮಾಡಿದ್ದು. ವಸಿಷ್ಠ, ಬಾಬಾಲಿ ಮೊದಲಾದ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಆದೇಶಿಸಿದರೂ ವಿನಯದಿಂದಲೇ ತಾನು ಧರ್ಮ-ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ-ತಂದೆಯ ಮಾತಿಗೆ ಬದ್ಧನೆಂದು ತಿಳಿಯಹೇಳುವುದು ಕಟ್ಟಕಡೆಗೆ ಭರತ, ಅಣ್ಣನ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ಬೇಡಿ, ಅವುಗಳಲ್ಲೇ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಕಾಣುತ್ತ ತಾನೂ ಪುರಾಭಿಮುಖನಾಗದೆ, ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ ಪರ್ಯಂತ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಹೊರವಲಯದ ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಜಟಾಧಾರಿ, ವಲ್ಕಲಧಾರಿ ವ್ರತಧಾರಿಯಾಗಿ ಕೇವಲ ರಾಮ ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾಗಿ ರಾಜ್ಯಭಾರ ನಿರ್ವಹಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತೇನೆ, ನೀನು ಮಾತು ಕೊಟ್ಟ ಪ್ರಕಾರ ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ ಕೊನೆಗೊಂಬ ಮರುದಿನ ಅಯೋಧ್ಯೆಯೆಡೆ ನನ್ನಡೆ ಬಾರದಿದ್ದರೆ, ಅಗ್ನಿಗೆ ಹೋಗುವೆನೆಂಬ ಪೂಣ್ಕೆ ಕಳೆದದ್ದು, ಆ ಪ್ರಪತ್ತಿಯ ಧೀರೋದಾತ್ತ ವೈಭವವೇ ಇಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ಮನತುಂಬುತ್ತದಲ್ಲವೇ?

ಕುಲಶೇಖರ ಆಳ್ವಾರ ಶ್ರೀರಾಮ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಹೇಗೋ ಹಾಗೆಯೇ ಅವರು ಹಾಡುವ ಮುಕುಂದಮಾಲೆ, ಭರತನೂ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನವಿಸಿದನ್ನೇ ಎಂಬುವಂತಿದೆ:

> **“ದಿವಿವಾ ಭುವಿವಾ ಮಮಾಸ್ತು ವಾಸಃ**
> **ನರಕೇ ವಾ ನರಕಾಂತಕ ಪ್ರಕಾಮಂ ।**
> **ಅವಧೀರಿತ ಶಾರದಾರವಿಂದೌ**
> **ಚರಣೌ ತೇ ಮರಣೇऽಪಿ ಚಿಂತಯಾಮಿ” ॥**

ಜಟಾಯು ಪಕ್ಷಿಯ ಪ್ರಪತ್ತಿಯೂ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವೇ! ಈ ನಡುವೆ, ಮಾರೀಚ ಹೇಮಮೃಗ ಪ್ರಸಂಗ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನಂಥ ಮಹಾ ತಪಸ್ವಿಗೆ ಅಪಚಾರವೆಸಗಿದಂತೆ ಸೀತೆಯಾಡುವ ಕರ್ಣಕಠೋರ ನುಡಿಗಳು. ಆಕೆ ಭಾಗವತಾಪಚಾರ ಮಾಡಿದಂತಾಯ್ತು-ತನ್ನ ಪ್ರಾಣವಲ್ಲಭ ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಅಗಲಿಕೆಯ ಅಳಲನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದಳು. ಮುಂದೆ ಇದನ್ನು ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿಗೆ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ- ನಾನು ತುಂಬಾ ಅಪಚಾರ ಮಾಡಿಬಿಟ್ಟೆ ಹನುಮಂತ, ರಾಮಾನುಜನಿಗೆ ನೋವುಂಟು ಮಾಡಿ ನನ್ನ ರಕ್ಷಣೆಗೇ ಇದ್ದವನನ್ನು ದೂರ ಮಾಡಿ ಈಗ ಹೀಗೆ ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಬಂಧನದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದೆ.

ಜಟಾಯು ತನ್ನನ್ನೇ ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ರಾವಣ ಅಪಹರಿಸುವ ಕೆಟ್ಟ ಕಾರ್ಯದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಲು ಶಕ್ತಿ ಮೀರಿ ಹೋರಾಡಿ, ಕೊನೆಗೆ ರಾಮನನ್ನು ಕಂಡು ವಿಷಾದಿಸುತ್ತ ಅಸುನೀಗುವ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ ರಾಮನು ದೇವಮಾನವತ್ವ ಮೆರೆದು ತಾನೇ ಜಟಾಯುವಿಗೆ ಅಂತ್ಯೇಷ್ಟಿ ನೆರವೇರಿಸಿ, ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಕಳುಹುವ ಪರಸ್ಪರ ಪ್ರಪತ್ತಿಯ ಪ್ರಕಟಣೆಯ ಸನ್ನಿವೇಶವೇ ಭಕ್ತ ಶರಣಾಗತಿಯನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುತ್ತದೆ. ಮುಂದೆ ಶಬರಿಯ ದರ್ಶನ, ಇಲ್ಲಿ ಶಬರಿಯ ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮನೇ ಶರಣಾದ, ದೇಶಿಕರು ರಘುವೀರ ಗದ್ಯವೆಂಬ ಸ್ತುತಿಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಾರುವಂತೆ, “ಶಬರಿ ಮೋಕ್ಷ ಸಾಕ್ಷೀಭೂತ”ನಾಗಿದ್ದಾನೆ, ಇದಲ್ಲವೇ ಶಬರಿಯ ಶರಣಾಗತಿ ಜತೆಜತೆಗೇ ರಾಮನೇ ಭಕ್ತೆಯ ಪ್ರಪತ್ತಿಗೆ ಪ್ರಪನ್ನನಾಗಿ ಮುಕ್ತಿ ಪ್ರಸಾದಿಸಿದ ಭವ್ಯ ಸನ್ನಿವೇಶ? ಇಲ್ಲಿ ಆಂತರಿಕ ತತ್ವವೇನು? ಶಬರಿ ಆಚಾರ್ಯನಿಷ್ಠಳು. ತನ್ನ ಗುರುವರ್ಯರಾದ ಮತಂಗಋಷಿಗಳನ್ನು ಸೇವೆಗೈಯುತ್ತಿದ್ದಳು. ಯಾರು ಪರಮ ಆಚಾರ್ಯನಿಷ್ಠರೊ ಅವರ ಬಳಿಗೆ ಪರಮಾತ್ಮನು ತಾನೇ ತಾನಾಗಿ ಬರುತ್ತಾನೆ, ಎಂಬುವುದು.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಕಾಂಡ.

ಇಲ್ಲಿಯ ಸೊಗಸೇ ನಮಗಾಗುವ ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿಯ ದರ್ಶನ. ವಿಶಿಷ್ಟಾದ್ವೈತದಲ್ಲಿ ವೈನತೇಯನನ್ನು “ಪೆರಿಯ ತಿರುವಡಿ”ಯೆಂದೂ ಆಂಜನೇಯನನ್ನು “ಶಿರಿಯ ತಿರುವಡಿ”ಯೆಂದೂ ನಮಿಸುವ ಪದ್ಧತಿ.

> **“ನಾ ನೃಗ್ವೇದ ವಿನೀತಸ್ಯ ನಾಯಜುರ್ವೇದಧಾರಿಣಃ ।**
> **ನಾ ಸಾಮವೇದ ವಿದುಷಃ ಶಕ್ಯಮೇವಂ ಪ್ರಭಾಷಿತಮ್ ॥**

ನಾನು ರಾಮನ ಗುಣಗಳಿಗೆ ದಾಸನಾಗಿದ್ದೇನೆ. "ಗುಣೈರ್ದಾಸ್ಯತ್ವಮಾಗತಃ" ಮುಂದೆಯೂ ಅಷ್ಟೇ ಸದಾ "ದಾಸೋಹಂ ಕೋಸಲೇಂದ್ರಸ್ಯ" ಎಂದೇ ಹನುಮಂತ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಇಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ ಶರಣಾಗತವತ್ಸಲನಾದರೂ, ಋಷಿವೃಂದಕ್ಕೇ ಅಭಯ ನೀಡಿದವನಾದರೂ ಸುಗ್ರೀವನ ಅಭಯವನ್ನು ಅಪೇಕ್ಷಿಸುವುದು ಹಾಗೂ ಆಂಜನೇಯ ಆಚಾರ್ಯ ಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದಾನೆಂಬುವಂಥ ಸನ್ನಿವೇಶ. ಸುಗ್ರೀವ, ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿದ ಜೀವ. ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರೋ ಅವನಿಗೆ ದೈವದ ಪ್ರತೀಕ. ದೈವದ ಒಲುಮೆ, ಅನುಗ್ರಹ, ದೈವ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಜೀವನಿಗೆ ಆಚಾರ್ಯನ ಮೂಲಕವೇ ಸಾಧ್ಯ ಎಂಬುದನ್ನು ಸುಗ್ರೀವನ ಸಖ್ಯ ನಿರೂಪಿಸುತ್ತಿದೆ. ಸುಗ್ರೀವನ ಶರಣಾಗತಿ, ಅಗ್ನಿ ಸಾಕ್ಷಿಕ ಸಖ್ಯವನ್ನಾತ ಬಯಸುವುದು ಪ್ರಪತ್ತಿಯ-ರಕ್ಷಿಷ್ಯತೀಹಿ ವಿಶ್ವಾಸಃ ಎಂಬುವ ಪರಿಯದು ಹಾಗೂ ಸುಗ್ರೀವ ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿಯ ಆಚಾರ್ಯಾನುಗ್ರಹಕ್ಕೆ ಪಾತ್ರನಾಗಿ ತನ್ನ ಇಚ್ಛೆ ಪೂರೈಸಿಕೊಂಡದ್ದು-ಹಾಗೆಯೇ ವಾಲಿ, ಅಹಂ ತಮಸ್ಸಿಂದ ಆಚಾರ್ಯಕೃಪಾರಹಿತನಾದದ್ದು.

ಸೀತಾದೇವಿಯು ಕಪಿವೀರರ ನಡುವೆ ಬಾನಿಂದೊಗೆದ ಒಡವೆಗಳನ್ನು ಶ್ರೀರಾಮ ಕಣ್ಣುನೀರು ತುಂಬಿಕೊಂಡೇ ವೀಕ್ಷಿಸುತ್ತ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೂ ಹೇಳುವಾಗ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಪೃಪತ್ತಿ ಎಷ್ಟು ಉನ್ನಾರಸ್ತರದ್ದು? "ನಾಹಂ ಜಾನಾಮಿ ಕೇಯೂರೇ ನಾಹಂ ಜಾನಾಮಿ ಕುಂಡಲೇ!
ನೂಪುರೇತ್ವಭಿಜಾನಾಮಿ ನಿತ್ಯಂ ಪಾದಾಭಿವಂದನಾತ್" - ಎಂಥ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಭಾವ, ಅಲ್ಲವೇ? ಇಂಥ ಭಾವ. ಈಗಲೂ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಕಳಂಕ ವಾತಾವರಣ ಸೃಜಿಸೀತಲ್ಲವೇ?

ದುಃಖವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸುವ ಅಸಮಾನವೆನಿಸುವ ವೇದ ಸಂಪದದ ತಾತ್ಪರ್ಯ ಇತಿಹಾಸಗಳ ಮೂಲಕವೂ ಉಪಪಾದಿತವಾಗಿದೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ, ಇಂದ್ರನ ಮಗನಾದ ಜಯಂತನು ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ಕಾಗೆಯ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಕಾಮಕತ್ವದಿಂದ ಬಂದು, ಪರಮಾತ್ಮ ಸ್ವರೂಪ ಶ್ರೀರಾಮನ ವಲ್ಲಭ ಸೀತಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ತೀವ್ರವೆನಿಸುವ ಅಪಚಾರ ಮಾಡಿದ. (ಅಷ್ಟ ಇಂದ್ರ ಗೌತಮ ಋಷಿ ಪತ್ನಿ ಅಹಲ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಮಾಸಕ್ತನಾದ, ಶಾಪಗ್ರಸ್ತನಾದ ಮಗ ಜಯಂತ ಶ್ರೀರಾಮನ ಪತ್ನಿ-ಜಗನ್ಮಾತೆ ಸೀತಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ಅಪಚಾರವೆಸಗುವುದೇ?) ಅಂತಹ ಮಹಾಪರಾಧಿಯೂ ಕೂಡ ಬದುಕಿ ಬಾಳಲಿ ಎಂದು ಮಹಾ ಕೃಪೆದೋರಿ ಅವನ ಒಂದು ಕಣ್ಣನ್ನಷ್ಟೇ ಶಿಕ್ಷಾರೂಪವಾಗಿ ಶ್ರೀರಾಮ ನಾಶಗೈದು, ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಕೂಡ ಇದರಿಂದ, ಪ್ರಪನ್ನರ ಸಂರಕ್ಷಣೆಯನ್ನು, ಪರಮಾತ್ಮನು ಮತ್ತೊಬ್ಬರಿಗೆ ವಹಿಸದೆ, ತಾನೇ ಸ್ವತಃ ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಾನೆಂಬುದು ಸ್ಥಾಪಿತವಾಯಿತು. ಇಂತಹ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಮುಖ್ಯವಾದದ್ದು, ಭಗವಂತನ ಪಾದಕಮಲ ಕೈಂಕರ್ಯ ಪ್ರಪತ್ತಿಯೆಂಬುವುದೂ ಸೂಚಿತವಾಯಿತು.

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ರತ್ನ ಪ್ರಾಯನಾದವನು ಆಂಜನೇಯ ಹೇಗೋ ಅವನ ವೈಭವದ ಬಣ್ಣನೆಯುಳ್ಳ ಸುಂದರಕಾಂಡವೂ ಪ್ರಪತ್ತಿರತ್ನವೇ. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿ ಪಾರತಂತ್ರವನ್ನು ಪ್ರತಿನಿಧಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಜೀವನ ಪರತಂತ್ರನೇ ಎಂದು ಮನವರಿಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ.

ಸೀತೆಯಿಂದ ಉಪಲಕ್ಷಿತನಾದ ಜೀವ, ತಾನು ಸೆರೆಗೆ ಸಿಲುಕಿದರೂ ತನ್ನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿ ಶರಣೆಂದ ರಾಕ್ಷಸಿಯರಿಗೆ ರಕ್ಷಣೆಯ ಅಭಯವೀಯುವ ಸನ್ನಿವೇಶ, ಇಲ್ಲಿ ನಮನಿಸಿದರೆ, ತಿಳಿಯುವುದು : ಐದು ಕರ್ಮೇಂದ್ರಿಯ, ಐದು ಜ್ಞಾನೇಂದ್ರಿಯ - ಹೀಗೆ ಹತ್ತು ತಲೆಗಳುಳ್ಳ "ಮನಸ್ಸು" ಎಂಬ ರಾವಣನ ಕೈಗೆ ಸಿಲುಕಿ ಮನಸ್ಸು ದುರ್ವಿಷಯಗಳೆಡೆಗೆ ಧಾವಿಸಿದಾಗಲೇ ಸಂಸಾರದ ಸಂಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಜೀವಾತ್ಮ ತಾನು ಸಿಲುಕುವನು. ಶತಯೋಜನ ವಿಸ್ತಾರವುಳ್ಳ ಸಮುದ್ರವೇ ಸಂಸಾರಸಾಗರ, ಅಲ್ಲಿನ ಕ್ರೂರ ತಿಮಿಂಗಲ, ಹಾವು, ಮೊಸಳೆ-ಇವು ನಾನಾ ಕೋಟಲೆ, ಕಷ್ಟಕಾರ್ಪಣ್ಯ ದಾಟಲು ಬಹು ದುಸ್ತರ. ದೇಹವೆಂಬುವುದೇ ಲಂಕೆ, ಅದರಲ್ಲಿ ಹೃದಯವೇ ಅಶೋಕವನ. ಅಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿಯಿಂದ ಉಪಲಕ್ಷಿತವಾದ ಜೀವ ಬಂಧನದಲ್ಲಿದೆ. ಅದಕ್ಕೆ ಕಾವಲಾಗಿ ಭಾರ್ಯಾ, ಪುತ್ರ ಇತ್ಯಾದಿ ರಾಕ್ಷಸಿಯರು. ಅವರೋ ಬಹಳ ಕ್ರೂರಿಗಳು, ಇವರ ನಡುವೆ ಸಿಲುಕಿದ ಜೀವನು, ಇದರಿಂದ ಮುಕ್ತನಾಗಲು ಹಾತೊರೆಯುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆ ಸದಾ ಶ್ರೀರಾಮಧ್ಯಾನದಲ್ಲೇ ಇದ್ದಾಳೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಜೀವನು ಪರಮಾತ್ಮ

ಚಿಂತನೆಯಲ್ಲೇ ಇದ್ದರೆ, ಪರಮಾತ್ಮನೇ ಆ ಜೀವನನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸುವ ಸಲುವಾಗಿ ಕರುಣೆಯಿಂದ ಆಚಾರ್ಯನನ್ನು ಕಳುಹುತ್ತಾನೆ. ಆ ಸದಾಚಾರ್ಯನೇ ಹನುಮಂತ. ಇಲ್ಲಿ ಈ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ತ್ರಿಜಟೆಯ ಶರಣಾಗತಿ, ಸೀತೆಯ ಅಭಯ ಶಮನೀಯ.

ಇಂಥ ಹನುಮನನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ 'ಶತ್ರುಕರ್ಷನ' ಎಂದು ಕರೆದರು. 'ವಾನರಾಣಾಂ ವರಾಣಾಂಚ ಕಥಮಾಸೀತ್ ಸಮಾಗಮಃ' (ಸೀತೆ ಹನುಮಂತನನ್ನು ಕೇಳಿದ್ದು) ಆಚಾರ್ಯನಾದವ ಶಿಷ್ಯನಾದವನನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಬೇಕು. ಇವನು ಸದಾಚಾರ್ಯನೇ ಎಂದು ಕಂಡುಹಿಡಿಯಲು ಜೀವಾತ್ಮ ಪರಮಾತ್ಮರನ್ನು ಒಂದುಗೂಡಿಸುವುದು ಆಚಾರ್ಯನ ಕೆಲಸ. ಅದೇ ಹನುಮನು ಗೈದ ಸೀತಾರಾಮರ ಸಾಂಕೇತಿಕ ಸಮಾಗಮ ಮುದ್ರಿತ-ಚೂಡಾಮಣಿಗಳ ಮೂಲಕ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕರೆದದ್ದು ಸುಂದರಕಾಂಡ. ಇದು ಪ್ರಪತ್ತ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿ ಕಾತರವೇ, ಅನುಸಾರ, ಲಂಕಾದಹನ, ರಕ್ಕಸ ಸಂಕುಲಮರ್ದನ, ಎಲ್ಲ ನೆರವೇರಿಸಿ, ಆಂಜನೇಯ ಕಡಲು ದಾಟಿ ಶ್ರೀರಾಮಾಭಿಮುಖನಾಗುವ ಮುಂಚೆ, ಪುನಃ ಸೀತಾಮಾತೆಯನ್ನು ಕಂಡು ನಮಿಸಿದಾಗ, ಆಕೆ ಮಂಗಳಾಶಾಸನವನ್ನೇ ಮಾಡಿದಳು – "ವಿಕ್ರಾಂತಸ್ತ್ವಂ ಸಮರ್ಥಸ್ತ್ವಂ ಪ್ರಾಜ್ಞಸ್ತ್ವಂ ವಾನರೋತ್ತಮ" ಪ್ರಪತ್ತಿ ಮಾಡಿದ್ದಕ್ಕೆ ಹೊರಟ ಫಲ ವಿಶೇಷ.

ಇನ್ನು ಯುದ್ಧಕಾಂಡ

ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಹೇಗೋ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಹರಹಿನಲ್ಲಿಯೂ ಹನುಮಂತನ ನಿಜವಾದ ದಾಸತ್ವ ಪದೇಪದೇ ಮನದಟ್ಟಾಗುತ್ತದೆ. ಪ್ರಪನ್ನನ ಲಕ್ಷಣಗಳುಳ್ಳವ ಎಂಬುದು. ತಾನು ಅನೇಕ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಕೊಂದ, ಅಕ್ಷಕುಮಾರನಂಥವನನ್ನು ಬಗ್ಗುಬಡಿದ, ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಶತಯೋಜನ ದಾಟಿ ಹಿಂತಿರುಗಿದ – ಆದರೆ ಇದಾವುದನ್ನು ಶ್ರೀರಾಮನ ಮುಂದೆ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲಿಲ್ಲ. ಇದು ಸದಾಚಾರ್ಯನ ನಿಜವಾದ ಲಕ್ಷಣಗಳು-ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅದೆಷ್ಟು ಧ್ವನ್ಯಾತ್ಮಕವಾಗಿ, ರೂಪಕ ಸೃಜಿಸುತ್ತಾರೆ, "ಯಶ್ಶೋಕವಹ್ನಿಂಜನಕಾತ್ಮಜಾಯಃ" ಎನ್ನುವಲ್ಲಿ, ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿಯು, ನೊಂದು ಬೇಯುತ್ತಿದ್ದ ಸೀತಾದೇವಿಯ ಒಡಲಶೋಕಾಗ್ನಿಯನ್ನೆ ತನ್ನ ಬಡವಾಗ್ನಿಯಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಲಂಕೆ ದಹಿಸಿದನಂತೆ !

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಾರಂಭ – ಹನುಮಂತನು ಶ್ರೀರಾಮನ ಸನ್ನಿಧಾನದಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿಯ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾನೆ (ಅಗ್ನಿದೇವನನ್ನೇ ಆ ತಾಯಿಯು ನೀನು ಹನುಮನ ಬಾಲ ದಹಿಸುವ ನೋವುಂಟು ಮಾಡದಿರೆಂದು ನುಡಿಸುವಾಗ್ಗೆ) ಕಂಬರು ತಮ್ಮ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಹಾಡುತ್ತಾರೆ: "ಎನ್‌ಕುಲಂ ಎನಕ್ಕು ಕಂದಾಳ್" ಸೀತೆ ತನ್ನ ಪಾತಿವ್ರತಾಗ್ನಿಯಿಂದ ಹನುಮನ ಬಾಲದಗ್ನಿಯನ್ನು ಶಾಂತಗೊಳಿಸಿದ ಮಹಾತಾಯಿ ಆಕೆಯೊಬ್ಬರಿಂದ, ವಾನರಕುಲ ರಘುಕುಲ, ಜನಕನ ಕುಲ- ಈ ಮೂರು ಕುಲಗಳೂ ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆದವು-"ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಪ್ರಭು! ಅಂತಹ ದೇವಿಯನ್ನು ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಪಡೆಯಲು ಎಲ್ಲ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನಿಸು" ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ ಆಂಜನೇಯ. ಸೀತೆ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ, ಹನುಮಂತನನ್ನು ಅಗ್ನಿಯಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಿದುದರಿಂದಲೇ ಹನುಮಂತರಾಯನ ಕುಲ ಉಳಿಯಿತಂತೆ ಈಗಲೂ ಕಪಿಗಳ ಕುಲವನ್ನು "ಹನುಮಂತರಾಯನ ಕುಲ"ವೆನ್ನುವುದುಂಟು.

ಪ್ರಪತ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಆನುಷಂಗಿಕವಾಗಿ ದೂತರಕುಲ ಪ್ರಸ್ತಾಪಕ್ಕೆ ಬರುವಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ದೂತರಲ್ಲಿ ಮೂರು ವಿಧ. ಸ್ವಾಮಿಯಾದವನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಸಾಧಿಸಿ, ಒಡೆಯನ ಒಳಿತನ್ನು ಅನುಲಕ್ಷಿಸಿ, ಆತ ನಿರ್ವಹಿಸಿದುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಕಾರ್ಯ ಸಾಧಿಸಿಕೊಂಡು ಬರುವಾತ. ಈತ ಉತ್ತಮ ದೂತ, ಪ್ರಪನ್ನ. ಒಡೆಯನು ಹೇಳಿದಷ್ಟನ್ನು ಮಾತ್ರವೇ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಬರುವಾತನು ಮಧ್ಯಮ ದರ್ಜೆಯ ದೂತ.

ಸ್ವಾಮಿ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಸಾಧಿಸದೆಯೆ ಬರುವಾತ ಅಧಮದೂತ.

ಹನುಮಂತ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ ದರ್ಜೆಯ ದೂತನಲ್ಲವೇ? (ಮಹಾಭಾರತದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣ ದೌತ್ಯ ನೆನಪಾಗದೆ? ಪರಿತ್ರಾಣಾಯ ಸಾಧೂನಾಂ ವಿನಾಶಾಯಚ ದುಷ್ಕೃತಾಂ।

ಧರ್ಮ ಸಂಸ್ಥಾಪನಾರ್ಥಾಯ-ಸಂಭವಾಮಿ ಯುಗೇ ಯುಗೇ! ಎಂದವನು ಕೌರವ ಕುಲವನ್ನೇ ಮಥಿಸಿದ, ವಿಶ್ವರೂಪದಂಥ ಅತ್ಯುನ್ನತ ಯೌಗಿಕ ಸ್ವರೂಪ ತೋರಿದ ದುರ್ಯೋಧನ ತಿದ್ದಿಕೊಂಡಾನೆ, ಎಂದು!)

ಶ್ರೀರಾಮನು ಆಂಜನೇಯನನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಅಕ್ಕರೆಯಿಂದ ಸನಿಹಕ್ಕೆ ಕರೆದು, "ಬಾ ಹನುಮಂತ ಹತ್ತಿರ ಬಾ, ನನ್ನಲ್ಲಿ ನಿನಗೆ ನೀಡಲು ಉಡುಗೊರೆ ಯಾವುದೂ ಇಲ್ಲ" ಎನ್ನುತ್ತ ತನ್ನ ಅತ್ಯದ್ಭುತ ತಿರುಮೇನಿಯಿಂದ (ಶರೀರ) ಗಾಢವಾಗಿ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಆಲಂಗಿಸಿದ ಏಷ ಸರ್ವಸ್ವಭೂತೋಽಮೇ ಪರಿಷ್ವಂಗೋ ಹನುಮಂತ: ಇದನ್ನು ಆಳ್ವಾರರೂ, ಆಚಾರ್ಯರೂ ತುಂಬಾ ಅನುಭವಿಸಿದ್ದಾರೆ.

"ಎಂಥ ಭಾಗ್ಯವಂತ ಹನುಮಂತ" ಎಂದು ಕೊಂಡಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಅದಕ್ಕೇ ಮುಂದೆ, ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ತಾನು ವೈಕುಂಠಕ್ಕೆ ಆಗಮಿಸುವ ಮುನ್ನ ಶ್ರೀರಾಮನು ಹನುಮನನ್ನು ಕುರಿತು ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ "ಹನುಮ, ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತೀಯಾ?" ಎಂದು ಕೇಳಿದಾಗ ಹನುಮ, "ಇಲ್ಲ ಪ್ರಭು, ನಾನು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಬಾರೆನು" ಎಂದ: ಶ್ರೀರಾಮನು, "ನಾನಾಗಿಯೇ ನಿನಗೆ ಮೋಕ್ಷ ನೀಡುವೆನೆಂದರೂ ಒಲ್ಲೆ  ಎನ್ನುವಿಯೇಕೆ?" ಎಂದಾಗ, ಹನುಮ ನುಡಿದ: "ಈ ದೇಹ ನಿಮ್ಮ ಅಪೂರ್ವ ಆಲಿಂಗನದಿಂದ ಪವಿತ್ರವಾಗಿದೆ. ಸಾಕು-ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಬಂದರೆ, ಈ ದೇಹ ಹೋಗಿಬಿಡುತ್ತದೆ. ನಿಮ್ಮ ಸ್ಪರ್ಶ- ಪಡೆದ ಈ ದೇಹವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಇಚ್ಛೆ ನನಗಿಲ್ಲ" ಎಂಥ ಅಪರೂಪದ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಹನುಮನದು! ಶರೀರಧಾರಿಯಾಗಿದ್ದಾಗಲೇ ಹನುಮಂತ ಸಾಯುಜ್ಯ ಪಡೆದ. ಇದನ್ನೇ ಹರಿದಾಸರು ಹಾಡಿರುವುದು, "ಹನುಮ ಮತವೇ ಹರಿಯ ಮತ, ಹರಿಯ ಮತವೇ ಹನುಮನ ಮತವು" ಎಂಬುದಾಗಿ.

ವಿಭೀಷಣ ಶರಣಾಗತಿ, ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿನ ಒಂದು ಪ್ರಮುಖ ಘಟ್ಟ. ಇದನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಆಲೋಚಿಸಿಯೇ ಅರಿಯಬೇಕಷ್ಟೇ! ಪ್ರಪನ್ನ ವಿಭೀಷಣ ಪ್ರಪತ್ತಿ ಹೇಗೆ ಕುಲೋದ್ಧಾರಿಯಾಯಿತೆಂದು ನಿರೂಪಿಸಲು!

ವಿಭೀಷಣ ಅಣ್ಣ ರಾವಣನಿಗೆ ಬುದ್ಧಿ ಮಾತಾಡಿದ

**"ಪ್ರಪೀದ ದೇವೇಶ ಸಪುತ್ರ ರಾಘವಃ ।**
**ಪ್ರದೀಯತಾಂ ದಾಶರಥಾಯ ಮೈಥಿಲೀ"**

"ಸೀತೆಯು ನಿಜವಾಗಿ ಕಾಲಸರ್ಪ. ಧರ್ಮವೇ, ಪ್ರಪತ್ತಿಯೇ ಎಲ್ಲ ಪುರುಷಾರ್ಥ ಸಾಧಕ ಎಂದು ತಿಳಿ. ರಾಮ ಸಾಕ್ಷತ್ ದೈವವೇ! ಅವನನ್ನು ಎದುರಿಸಲು ಯಾರಿಂದಲೂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ." ತಮ್ಮನ ಬುದ್ದಿಮಾತನ್ನು ರಾವಣಾಸುರ ಕೇಳಲಿಲ್ಲ. ವಿಭೀಷಣ ನೇರವಾಗಿ ತನ್ನ ಮಂತ್ರಿಗಳೊಂದಿಗೆ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಹೊರಟ "ಆಜಗಾಮ ಮುಹೂರ್ತೇನ ಯತ್ರರಾಮಃ ಸಲಕ್ಷ್ಮಣಃ" ಎಂದರು ವಾಲ್ಮೀಕಿ.

ಹೀಗಾಗಿ, ಪ್ರಪತ್ತಿ / ಶರಣಾಗತಿಯು ಇದು ಪರವಂತರಲ್ಲಿಯೂ ಅರ್ಥಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪ್ರಸಾದಿಸುವಂಥ ಸಿದ್ಧೋಪಾಯ. ಕರ್ಮ, ಜ್ಞಾನ, ಭಕ್ತಿಯೋಗಗಳು ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯ ಶರಣಾಗತಿ ಒಮ್ಮೆಲೇ ಅನುಷ್ಠಿಸುವಂಥದು.

ವಿಭೀಷಣ, ಪ್ರಪನ್ನ ಭಾಗವತ, ರಾಕ್ಷಸಕುಲ ಜಾತನಷ್ಟೇ ಆದರೂ ಸ್ವಭಾವತ ಪ್ರಪನ್ನ-ಸತ್ವಗುಣದ ಪ್ರತೀಕ. ಆತನದು ನಿಶ್ಚಲವಾದ ನಂಬಿಕೆ (ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜರ ಶರಣಾಗತಿ ಮೆಟ್ಟಿಲು ಇಂಥದೇ!) ಇದರಿಂದಾಗಿ ಭಾಗವತರಲ್ಲಿ ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಸ್ಥಾನವಿದೆ.

ಸುಗ್ರೀವನಿಗೂ ವಿಭೀಷಣನಿಗೂ ಒಂದು ವ್ಯತ್ಯಾಸ ಮನನೀಯ. ಇಬ್ಬರೂ ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಬೇಕಾದವರೇ. ಆದರೆ ಸುಗ್ರೀವ ವಾನರ ಸ್ವಲ್ಪ ಹಾಗೆಯೆ ಆಲೋಚನೆಯಲ್ಲೂ ವಿಭೀಷಣ ಹೆಸರಿಗಷ್ಟೇ ರಾಕ್ಷಸ ಕುಲಜ ಆಲೋಚನೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಪನ್ನ.

ಸುಗ್ರೀವನೋ ಬಾಹುರೇಷ ಪ್ರಸಾದಿತ "ನಿನಗೆ ನನ್ನೊಡನೆ ಸಖ್ಯ ಇಷ್ಟವಾದರೆ ಕೈನೀಡು" ಎಂದು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ತಿಳಿಸಿ ಕೈ ನೀಡುತ್ತಾನೆ. ವಿಭೀಷಣ ಹಾಗಲ್ಲ ಶ್ರೀರಾಮನ ದಿವ್ಯ ತಿರುವಡಿ-ಅಡಿದಾವರೆಗಳಲ್ಲೇ ಸಂಪೂರ್ಣ ಶರಣಾದ.

ಸುಗ್ರೀವ ಮೊದಲಿಂದಲೂ ರಾಜ್ಯಕ್ಕಾಗಿ, ಕಳೆದುಕೊಂಡ ಮಡದಿಗಾಗಿ ರಾಮನನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ.

ವಿಭೀಷಣ ಹಾಗಲ್ಲ, ರಾಜ್ಯಕೋಶ, ಹೆಂಡತಿ ಮಕ್ಕಳು, ಬಂಧು ಬಾಂಧವರು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ತೊರೆದ, ರಾಮಾ "ನಿನ್ನನ್ನೇ ಶರಣು ಬಂದಿದೇನೆ" ಎಂದು ಬಂದ. ಆತ ಬರುವಾಗಲೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣಸಹಿತನಾದ ಶ್ರೀರಾಮನಿದ್ದಲ್ಲಿಗೇ ಬಂದ, ಇವರ ಅಂತರಾರ್ಥ, ಆಚಾರ್ಯಸಹಿತನಾದ ರಾಮನನ್ನು ಶರಣು ಹೊಕ್ಕ (ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಆಚಾರ್ಯ ಸಮಾನ) ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸುಗ್ರೀವನು ರಾಮನಿಗೆ ಮರದ ಶಾಖೆ ಹಾಕಿ, ಆಸನ ನೀಡುತ್ತಾನೆ. ಸರಿಸಮಾನವಾದ ನಡವಳಿಕೆ ಎಂಬಂತೆ ಜತೆಗಿದ್ದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನು ಗಮನಿಸಲಿಲ್ಲ. ಹನುಮಂತ, ಹಸುರು ಹಾಸನ್ನು ಹಾಸಿ, ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಅನುವು ಮಾಡಿಕೊಟ್ಟ. ಅಣ್ಣ ರಾವಣನನ್ನು ತೊರೆದು ಬಂದ ವಿಭೀಷಣ ಬರುವಾಗಲೇ ತನ್ನ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಗದೆ–ರಾಮನಿಗೆ ಯುದ್ಧ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಉಪಯುಕ್ತ ಆದೀತು ಎಂದೇ ಬಂದನಂತೆ. ಆಚಾರ್ಯ ಶ್ರೀರಾಮಾನುಜರು ಹಾಗೂ ದೇಶಿಕರು ಹೇಳುವುದಿದು, ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು ಸಾಕ್ಷಾತ್ ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅವತಾರ – ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಶೇಷಾವತಾರಿ ಭರತ ಸುದರ್ಶನನ ಅಂಶ, ಶತ್ರುಘ್ನನು ಪಾಂಚಚನ್ಯ ಶಂಖದಂಶ ಸ್ವರೂಪದು ಇನ್ನುಳಿದದ್ದು ಕೌಮೋದಕೀ ಆ ಅಂಶನೇ ವಿಭೀಷಣ ತಾನು ಅಂಗದಾಂಶನೆಂಬುದನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಿಹನೋ ಎಂಬಂತೆ ಕೈಲಿ ಗದೆ ಹಿಡಿದೇ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಬಂದು ಸೇರಿದನಂತೆ. ಮೊದಲಿನಿಂದಲೂ ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಸೀತಾದೇವಿಯಲ್ಲಿ ದಾಸ್ಯಭಾವ, ಮಾತೃತೆರನಾದ ಭಕ್ತಿ. ಶ್ರೀರಾಮನ ಬಳಿ ಸಾರುವ ಮುನ್ನ ಸೀತಾ ಮಾತೆಯ ಸೇವೆ, ಸರಮೆಯ ಮೂಲಕ ಮಾಡಿದ್ದ ವಿಭೀಷಣ.

ಅಗಸದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಅನುಚರರೊಡನೆ ನಿಂತುಕೊಂಡೆ ವಿಭೀಷಣ ಉನ್ನತ ಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಘೋಷಿಸಿದ: "ರಾವಣೋ ನಾಮ ದುರ್ಮತ್ತೋ" ಆತ ಪ್ರಪತ್ತಿಯ ಮರ್ಮ ಅರಿತವನು. "ನಾನು ಎಲ್ಲ ಬಿಟ್ಟು ನಿನ್ನಡಿದಾವರೆ ಆಸರೆಕೋರಿ ಬಂದಿದ್ದೇನೆ" ಎಂದು ರಾಮನಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದು.

ಇಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನು ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ವಿಭೀಷಣನ ಬಗ್ಗೆ ತಿಳಿಯಾಗಿ ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಡುವ ಮಾತುಗಳೇ ಸೊಗಸು ಯಾವುದನ್ನು ಯಾವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟು ಹೇಳಬೇಕೋ, ಹೇಗೆ ಹೇಳಬೇಕೋ, ಎಂಬುವ ಸೂಕ್ಷ್ಮವನ್ನು ಹನುಮನಿಂದ ಸರ್ವತ್ರ ಕಲಿಯಬೇಕಷ್ಟೆ.

ಮಿತ್ರಭಾವೇನ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಂ – ಶರಣಾಗತ ಭಾವನೇ –ಇದು ರಾಮನ ದೃಢವ್ರತ ಆತ ಶರಣಾಗತ ರಕ್ಷಕ–ಅಭಯ ಪ್ರದಾಯಕ. ಸುಗ್ರೀವ, ಇತರರೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚೆ ಕೊನೆಗೆ ಶ್ರೀರಾಮನದೇ ನಿರ್ಣಯ–ತೀರ್ಪು

**"ಸಕೃದೇವ ಪ್ರಪನ್ನಾಯ ತವಾಸ್ಮೀತಿ ಚ ಯಾಚತೇ ।**
**ಅಭಯಂ ಸರ್ವಭೂತೇಭೋ ದದಾಮಿ ಏಕದ್ವ್ರತಂಮಮ ॥**

ಇದೇ ಮುಂದೆ ಕೃಷ್ಣಾವತಾರದಲ್ಲೂ "ಸರ್ವಧರ್ಮಾನ್ ಪರಿತ್ಯಜ್ಯ, ಮಾ ಮೇಕಂ ಶರಣಂ ವಜ್ರ! ಅಹಂ ತ್ವಾಂ ಸರ್ವ ಪಾಪೇಭ್ಯೋ ಮೋಕ್ಷಯಿಷ್ಯಾಮಿ ಮಾಶುಚಃ" ಶೋಕಿಸದಿರು, ನಾನು ಸರ್ವಪಾಪದಿಂದ ಶರಣಾಗತನಾದ ನಿನ್ನನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತೇನೆ". ಇದಲ್ಲದೆ ಸುಗ್ರೀವನಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮ ತಿಳಿಸುದಿದು: "ನೀನೇನೂ ಬೇರೆ ರೀತಿ ಯೋಚಿಸದಿರು ವಾನರಾಧಿಪ. ನನ್ನ ನಖಾಗ್ರದಿಂದಲೇ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಪಿಶಾಚ, ದಾನವ, ಯಕ್ಷ, ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಹೊಸಕಿ ಹಾಕಿ ಬಿಡಬಲ್ಲೆ. ತಿಳಿಯಿತೇ?" (ನಖಾಗ್ರ ಎಂದರೆ, ನೃಸಿಂಹಾವತಾರ ನೆನಪಾಗಿ)

ಶ್ರೀರಾಮನ ಶರಣಾಗತ ವಾತ್ಸಲ್ಯ ಅನುಪಮವಾದುದು. ಹಿಂದೆ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿ ಕೇಳಿದಾಗ, "ಸೀತೆ ಪ್ರಾಣ ಪ್ರಿಯಳಾದ ನಿನ್ನನ್ನೂ ನಾನು ಬಿಟ್ಟೇನು. ಸೌಮಿತ್ರಿಯನ್ನು ಅಗಲಿಯೇನು ನನ್ನ ಪ್ರಾಣಗಳನ್ನೇ ಕೊಟ್ಟೇನು, ಆದರೆ ಶರಣಾಗತರಾದವರನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕೈಬಿಡೆನು". ಅದಕ್ಕೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು "ಗುಣವಾನ್" ಎಂದದ್ದು! ದೇಶ, ಕಾಲ, ಜಾತಿ, ಕುಲ, ಲಿಂಗ, ಬಡವ–ಬಲ್ಲಿದ, ಯಾರೇ ಆಗಲಿ, ಯಾವಾಗ ಬೇಕಾದರೂ ಶರಣಾಗತಿ ಮಾಡಬಹುದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಪುನಃ ನುಡಿವುದಿದು "ರೀಪೂಣಾಮಪಿ ವತ್ಸಲ"– ಅದರಿಂದಾಗಿಯೇ ವಿಭೀಷಣ ಕೂಗಿ ಹೇಳಿದ

"ಆಯಶೋ ರಾವಣಸ್ಯಾ ಹಂ
ಕೇನ ಚಾಸ್ತ್ಯವ ಯಾನಿತಃ
ಭವಂತಃ ಸರ್ವಭೂತಾನಾಂ
ಶರಣ್ಯಂ ಶರಣಾಗತಃ
ಪರಿತ್ಯಕ್ತಾ ಮಯಾಲಂಕಾ
ಮಿತ್ರಾಣಿ ಚ ಧನಾನಿಚ!
ಭವದ್ಗತಂಮೇ ಕಾಚ್ಯಂಚ ॥

ಇದು ಸರ್ವತ್ರ ಎಲ್ಲ ಜೀವರಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವಂಥದು. ಪ್ರಪತ್ತಿಯಿಂದ ಪರಮಾತ್ಮ ಕೃಪೆ ಸುಲಭ ಸಿದ್ಧ ಹಾಗೂ ಅದೇ ಪರಮಾತ್ಮನ ಅಭಯ ಪ್ರದಾನಕ್ಕೆ ಪೋಷಕ, ಪ್ರೇರಿತ, ಪ್ರಚೋದಕ ಆರದ ಅಮೃತ ಸಮಾನವಾದದ್ದು ಎಂದರೆ ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ ಆಗದು. ನಿಜಕ್ಕೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಶರಣಾಗತಿ ಶಾಸ್ತ್ರವೇ ಸರಿ.

"ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಪರಬ್ರಹ್ಮಣೇ ನಮಃ ॥"

❑

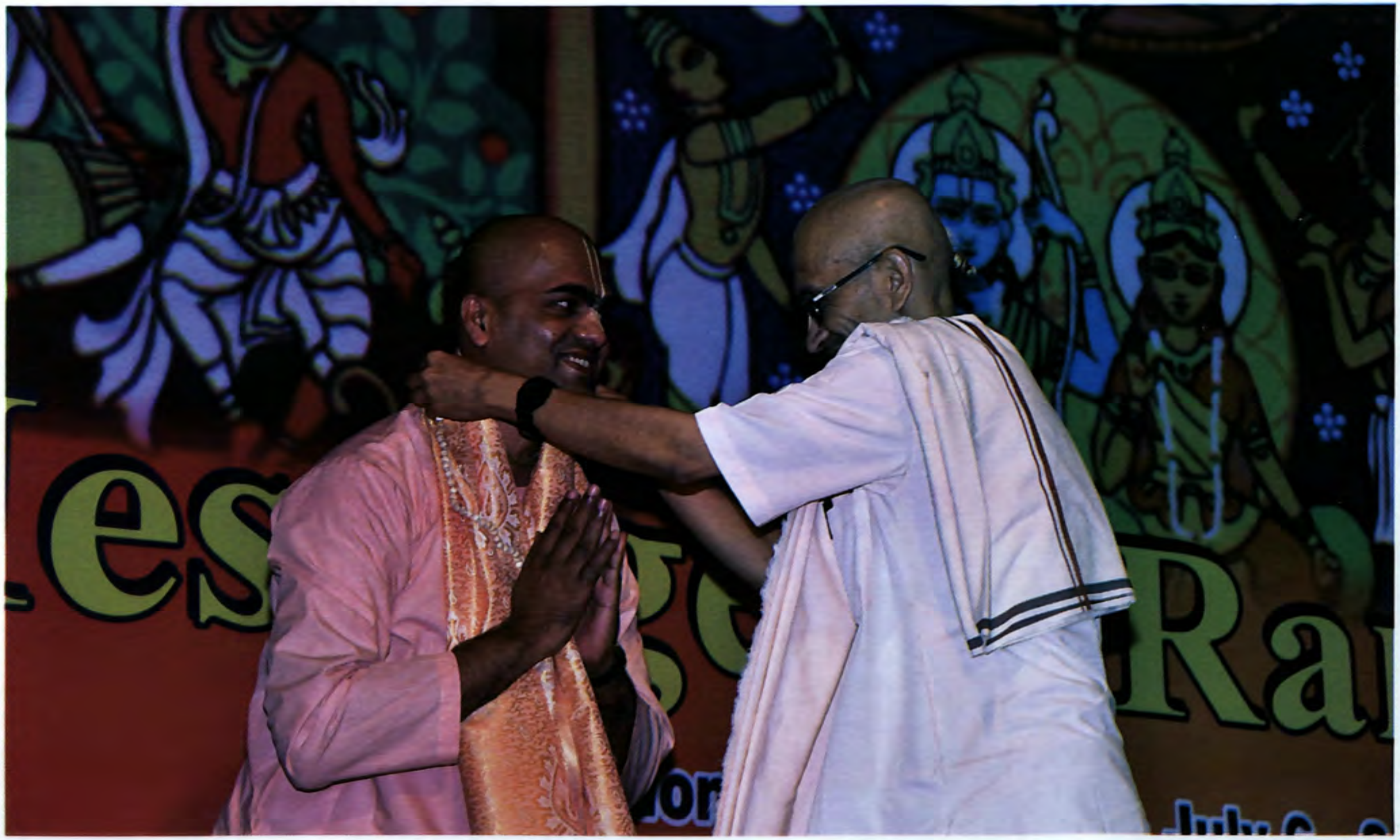

*Shri Stoka Krishna Dasa, ISKCON, Chennai honoring Shri Shukadeva Dasa, ISKCON, Lucknow.*

# the rāmāyana tradition in folklore

**Prof. C. Naganna**

Since the folk people are unlettered, it is natural that their narratives belong to the oral tradition. As they depend solely on their memory, sometimes, there is a possibility of a segment of one story getting grafted to the body of another story. For instance, the story of Shravanakumara which causes the beginning of the Mahabharata gets interwoven to the Ramayana.

Since the folk people are unlettered, it is natural that their narratives belong to the oral tradition. As they depend solely on their memory, sometimes, there is a possibility of a segment of one story getting grafted to the body of another story. For instance, the story of Shravanakumara which causes the beginning of the Mahabharata gets interwoven to the Ramayana. Shravanakumara's father curses Panduraja for causing his son's death in the Mahabharata. But the same story is found in the Ramayana where the king Dasharatha kills Shravanakumara inadvertently white the latter is collecting water in a hollow gourd to quench the thirst of his parents when he is carrying on a Kavadi.

ದಸರೋತ ಏನಾ ಮಾಡ್ಯಾನು
ಮಿರ್ಗಗೋಳ ನೀರಿಗೆ ಬಂದವಂತೆ
ಮರ್ಸಕಟ್ಟಿ ಕುಳ್ಳೊ ಸಮಯದಲ್ಲೆ
ನೀರಿಗೋಳ ಮೊಗವೊ ಸಮಯದಲ್ಲೆ
ನೀರಿನೊಂದು ಶಬ್ದ ಎಂಬಾದೆ
ದಸರತನ ಕೆಮಿಗೆ ಬಿದ್ಯಾವೊ
ದಸರತನ ಕೆಮಿಗೆ ಬಿದ್ಯಾಮ್ಯೆಲೆ
ದಸರತ ಏನಾ ಮಾಡ್ಯಾನೂ
ಮಿರ್ಗಗೊಳೆ ನೀರಿಗೆ ಬಂದವೆಂದೆ
ಬಿಲ್ಲಿನಿಂದ ಬಾಣ ಬಿಡುವಾನೊ

*Dasharatha thinks that the deer came*
*to the water to drink*
*Hearing the sound of approaching*
*animals to the water hole*
*Dasaratha let go the arrow*
*in the direction of the sound*
(*ed. N.R. Naika* 'ಹೇಳುತೇವೊ ಗುಮ್ಮೆ ಪದನಾವಾ')

Actually, Dasharatha is hiding amidst the branches of a tree and he shoots an arrow in the direction of the sound. That's how Shravana is killed. But in the Mahabharata Pandu does not hide behind anything, he puts into practice 'Shabdavedi' and kills Shravana. The difference between these two stories is that in the folklore Ramayana the news of Shravanakumara's death is not communicated to his parents and hence there is no question of they cursing Dasharatha in the manner in which the parents cursing Pandu over there. Also we are kept in the dark regarding the old couple's fate.

A folk singer by name Somashukragowda has sung the narration called 'The progeny of Dasharatha'. As the title itself suggests the narrative is about how Dasharatha he got his progeny. In both formal epic and folk epic the progeny result from drinking 'Payasam', still the folk poet finds an innovative way of narrating the same.

Dasharatha is under deep sorrow that he had no issues for a period of sixty thousand years. He disburdens his pain and anguish to Narada whom he encounters by chance.

ಕೇಳೊ ಕೇಳೊ ನಾರದ ಮುನಿಜೋಮಿ
ನನಗೆ ಮೂರು ಮಂದೀ ಹಿಂಡಾರು
ಮಕ್ಕಳೊಂದು ಚಿಂತಾನಿಲ್ಲೆಂದೆ
ಎಡಬಿಡದು ದುಕ್ಕ ಮಾಡೀನೊ[2] (**Ibid**)

"Nāradamuni, I have three wives but I'm immersed in the sorrow that I have no issues''. On hearing this Nārada comes up with a solution: namely that the three wives must drink 'Payasam' using the substance he gives, then there will be the birth of the bodies.

ಕೇಳು ಕೇಳು ದಶೋರತನೆ
ನಾನು ಒಂದು ಮುದ್ರೆ ಕೊಡುತೀನೋ
ಮೂರು ಜನ ಹಿಂಡಾರೆಂಬೋರೆ
ಪಾಯ್ಸವನ್ನು ಮಾಡೀ ಕಂಡೋಲೆ
ಮೂರು ಜನ ತಿನ್ನಾಬೇಕೆಲೋ
ಮೂರು ಜನ ತಿಂದಾಮ್ಯೈನೆಲೆ
ಪುತ್ರರೋದು ಚಂತಾ ನಗುವುದು[3] **(Ibid)**

In classical ***Ramayana*** Dasharatha obtains ***Payasam*** from 'Yajnapurusha' after 'Putrakāmeshthiyagā'. But in folklore Ramayana it is by using 'Mudra' in 'Payasam' that the wives give birth to the young ones. It is once again the folk imagination that celebrates the fact that Dasharatha ruled his kingdom for 'Sixty one thousand years'.

In folk literature, the songs pertaining to Sita outnumber the songs about the rest. The reason is quite obvious: the songs were sung by women generally and the women seem to have invoked Sita in order to mitigate their trials and tribulations. In a particular folk ***Ramayana*** called ***Tamboori Ramayana***, the beginning of the epic pertains to the birth of Sita. Sita, actually, is daughter of Rāvana and Manḍodari. She is not Jānaki, but 'Rāvanathmaje' On her birth an astrologer predicts that she is going to cause the destruction of her 'Kula' ('Kulanāha nimittike'). Therefore she is placed in a pot and buried in a field, according to Nārada's direction. As 'Aradh Ramayana' says there was no rain in the kingdom of Janaka for many years. The subjects face untold suffering as a result of drought and famine. The priests suggest that Janaka's wife Sodhula should plough the land naked in the middle of the night, there will be rains. Janaka's wife carries out this instruction and while ploughing the field the pot containing a child comes up being hooked to the ploughshare. She brings home the baby and calls it Sita.

In Kannada we have majorly two folk ***Ramayanas***: they are: ***Gonda Ramayana*** and ***Tamboori Ramayana***. The Gonds live near the Sahyadri range of mountains in Karnataka. A singer by name Thimmappa Gonda in Halyadi in Uttara Kannada has sung ***Gonda Ramayana*** along with a co-singer. The epic stretches to about 3000 lines and the same is collected and published by Dr. H.C. Boralingaiah in 1999.

Compared to ***Valmiki Ramayana*** what one finds missing in ***Gonda Ramayana*** are : Krauncha Vadha, Shravanakumara's story, Putrakāmeshthi, Manthara's episode, Ahalya episode, Breaking of Shiva Dhanussu, the episode pertaining to Shabari, the Fire Ordeal, etc. And some of the episodes that are formed here and not found in classical ***Ramayana*** are as follows:

### 'Akashakaki' or the 'crow in the sky'

The crow comes as a substitute for the 'Bow of Shiva', Janaka announces that he would give Sita's hand in marriage to a person who would kill the crow that bothers him when even he sits for meditation early in the morning after his ritual bath. Extremely difficult parameters are laid down to accomplish the death of the bird. Lakshmana accomplishes the task successfully; but Rama marries Sita.

### Episode before marriage

Rama and Lakshmana attend the 'Bow festival arranged by Janaka after completing six years of exited life. Before killing the 'sky-bird' they go to the bedroom of Sita pretending they are thirsty. Sita gives them water and does indulge in all kinds of buffoonery. For example, they drink through the mouth and let out from the nose and subsequently they do the reverse. This is how they test Sita's patience.

### Abduction of Sita

The moment Sita sees the 'Mayamriga' she expresses her desire to get blouse stitched out of its skin. When Lakshmana tarries without going to Rama's rescue she takes him to task: "You don't care, I know, even if Rama dies", she says.

When Ravana carries Sita to Lanka she warns him that he should not touch her body for five years, a period of her exile.

### Abandoning Sita

When washerman Machanna quarrels with his wife and says immoral things about Sita, Rama asks his servants to take Sita to the forest and kill her. When they lift the sword in the forest they see a baby in their sword. So, without killing Sita they abandon her in the forest. When Sita enters the Ashrama of Valmiki Lava is born. While going to the stream, one day, Sita carries the child with her. When she finds the child missing after sometime, Maharshi Valmiki creates Kusha through his ***Mantra***. At the end when Lava and Kusha leave for Ayodhya with Rama, Sita enters into the womb of the earth and she vanishes.

***Janapada Ramayana***, again a Kannada folk epic, contains four versions of ***Ramayana***. The first one is a long form exclusively on Sita.

According to this take, Sita is born as a 'Lotus Flower' in the palace pond. When Ravala (Ravana) smells it, Sita enters into his nostril. When Ravana returns home and sneezes 'Sita falls to the ground. The priests prophecy that she would cause destruction of Lanka; therefore she was given to Brahmins as charity. From them she joins the palace of king Janaka.

Ravala wants Sita who is growing in Janaka's palace. 'ನೀವು ಬಿತ್ತೀದ ಬೆಳೆಯ ನೀವೇಯೆ ಉಂಡಾರೆ' - that means, Janaka asks Ravala 'Are you going to eat the food you yourself have grown?' But still Ravala will not change his mind. Then Janaka throws a challenge that whoever lifts the Bow successfully would get Sita's hand in marriage. Ravana is unable to do it. After that, completing six years of exile Rama and Lakshmana make their appearance. Rama lifts the Bow with a finger and throws it.

After slaying Ravana Rama poses three tests before Sita. She has to bring water in a pot made of sand; she has to make a coil out of a serpent and finally she has to walk the fire. Sita faces all these tests praying Dasharatha, her father-in-law. Dasharatha comes there in person and explains to Rama how Sita has been all along.

The second song in the collection narrates the tale of Sunkumara who is the son of Shoorpanakhi.

Shoorpanakhi is Ravana's sister; her husband is Hallura. He is no named because he has a flaming tongue and burning cinders for teeth. On a particular occasion, he refuses to fall at Ravana's feet. Being enraged by his audacity Ravana kills him.

Shoorpanakhi while cursing Ravala asks her son Sunkumara to obtain Chandrayudha to kill him Sunkumara observes penance for twelve years. But when Chandrayudha manifests itself Lakshmana happens to be there and the weapon chooses to join him. There ensues a battle between Sunkumara and Lakshmana and eventually Sunkumara is killed. Shoorpanakhi wants to avenge her son's death and therefore instigates Ravana against Rama and Lakshmana.

The third tale narrates the story of ***Uttara Ramayana.***

When Rama sets out to bring seven tender tamarind or raw tamarind for pregnant Sita he hears the washerman Machappa's taunt. The humiliated Rama reaches home and asks Lakshmana to behead Sita. She cooks food for them for the last time wailing inconsolably, that is, she is subjected to such 'ill treatment though she happens to be the daughter of king Janaka and daughter-in-law of king Dasharatha'. She says, "Rama, Rama, it's enough being a born woman" and leaves for forest with Lakshmana.

Rama cries that Sita is no more and the tears flow like a river and the mucus from his nose gives birth to two fish. They protect Sita when she takes a plunge into the river in a bid to end her life. Sita call her sons "Kushchalvulu", naming after the fish. When the sage Valmiki comes there Sita runs and hides behind a tree in order to protect her dignity. Subsequently that tree becomes famous as a 'Pregnant Tree' (ಬಸರಿ ಮರ).

### The Ramayana of Thamboori Tradition

This narrative song gives a comprehensive story of the ***Ramayana***. By and large, it resembles the ***Gonda Ramayana***. We can trace the contours of the tale in the following manner:

### Birth of Sita

Ravalasura and Manḍodari had no issues for many many years. Not able to put up with his wife's wailing Ravala goes crawling to the town and prays Lord Shiva for issues. Shiva gives a mango and says "the pulp for Manḍodari and the seed for Ravana".

Because of his hunger Ravala eats up the pulp himself and hands over the seed to Manḍodari. As he eats the pulp he becomes pregnant and when he sneezes Sita is dropped from his nose and she is called Sitamma. After learning that the moment of her birth is inauspicious they place in a golden cradle and in turn that is put in an iron casket and they float it on the river Ganga. While the king of Janakavathi is taking his bath the iron box touches his back and he discovers the child in it which he takes home with great jubilation.

### Seetha's Wedding

When the king of Janakapuri returns home after his bath an iron crow drops its excrement on him. The desperate king announces that anyone who lifts the Bow and hits the iron crow would get Sita's hand in marriage. The brothers Rama and Lakshmana who were in exile in forest come to know about the contest through washerman Machideva and as such they arrive in the city. They accept the challenge and obtain the king's approval.

Before destroying the crow they express their desire to meet Sita. This particular part stretches up to 300 lines. They go the Sita's bedroom in the guise of beggars. When Sita offers them alms they turn their palms upside-down. After that they try to take out a thorn that is stuck in the sole by pricking the upper part of the feet. Sita gives out a guffaw at their stupidity and she herself removes the thorn Then they drink water from the nostrils; while they scratch their stomach, they think it is their back. Like this they entertain Sita a great deal by acting as buffoons and then they get ready to take part in the contest.

When Ravana tries to lift the Bow the Bow falls on him. Lakshmana then, lifts it with the toe of his left foot lying on his back. Then again it is Lakshmana who hits at the iron crow.

Since Rama and Lakshmana are still in exile, Sita's wedding is solemnized with their bows and arrows. Though they try to persuade her not to accompany them as yet she persists and goes with them. In order to take revenge Ravana abducts her assuring the form of 'Mayamriga'.

## Slaying of Ravana

In the last ocean among the seven oceans there is an iron cage. Ravana's breath is contained in the young parrot in the cage. Manḍodari herself tells this to Hanuman.

The monkeys tied their tails to each other and sat and formed a bridge to Lanka. When they reach Lanka and opened the door of palace of lac "Seethadevi emerged as a lively bride".

On the battle field Ravana pleads "I prostrate at your feet, please do not kill me" but Rama kills him with his poisoned arrow.

## Abandoning Sita

Sita does not listen to Rama and Lakshmana when they ask her not to accompany them when they set out for hunting. On the way he hears the words of humiliation uttered by washerman Linganna and unable to tolerate this Rama lifts his sword to put an end to Sita's life. The magical babies are seen on the blade of the sword. Learning that Sita was pregnant, they continue their journey to complete a twelve year hunting.

In the stone palace Sita gives birth to twins. She names them as Lava and Kusha.

## The characters of Sita – Lakshmana and Ravana

The charactersation of these three characters, namely, Sita, Lakshmana and Ravana, is different in oral epic, than in the formal epic. That too the character of Sita is portrayed very differently in different versions.

For example in ***Thamboori Ramayana***, Mandodari is suffering from the barrenness and pleads Ravana to go and ask for the issues with some ascetics. When Ravana sets out to accomplish the task Mandodari says, "I have baked rotti for six days and the food parcel to last for equal number of days". She exactly resemble a farmer's wife in her response in the situation. As we have a lady referred in ***Gonda Ramayana*** Sita wants the Mayamriga in order to get a blouse stitched out of its skin.

In ***Biari Ramayana*** we find all the characters in the Ramayana are Biaries. Shoorpanakhi is Ravana's sister and the wife of a Sultan in the nether world. Since her husband is dead she is on the lookout for another Mapillai. When she is wandering in the forest overly decorating herself to hide her age, on seeing Rama she concludes that "he is an ideal Mapillai for Nikah" and approaches him. When Rama says that he is already married, she asks "what if a man marries four or five women?"

'Dharege Marlyala' or 'She has Returned to Earth' is another longish narrative on the tale of the ***Ramayana***. This resembles totally the ***Chitrapata Ramayana***. But the notable departure here is that it is Kausalye, Sumitra and other mothers-in-law who prevail upon Sita to portray the picture of Ravana. Though Sita carries this out unwillingly, it is the mothers-in-law who show it to Rama so that he suspects Sita's fidelity and seeds her to the forest. Therefore, the characters like Rama, Sita, Kausalya and others that appear in this narrative resemble the characters that we encounter in real life.

That means in Gonda Ramayana, Rama and Lakshmana become Gondas, in ***Bhilla Ramayana*** they become Bhillas. In the ***Ramayana*** of women Sita becomes an ordinary woman who undergoes all the privation one suffered as a pregnant woman and as a nursing mother. May be this is the reason why people of all communities love the ***Ramayana*** and they have narrated their own ***Ramayana*** within the midst of the formal framework.

In the "Stickplay Song" collected by S.K. Karim Khan the episode of "Lanka Dahana" appeas slightly differently.

*After burning Lanka in to cries*
*Hanuma came and bowed before Rama*
*He set the bhavans on fire*
*so did he the stones and treasuries*
*And bowed before Rama*
*He brought the Ring to Seethamma*
*who was in the Leuion Garden*
*who was he that sets Lanka on fire*
*Even as a huge fireball rolls over*
*who else but Rama' loyal devotee Hanuman!*

There is a traditional narrative poem called "The song about Lakshmana' Langhter". Rama has conquered Ravana and his coronation has taken place in Ayodhya Lakshmana seated in the front row, laughs for the reason best known to himself. Sri Rama asks him why he is laughing.

*Tell me the truth*
*Why you are laughing Lakshmana*
*Are you laughing because I descended*
*from Vaikunta and took birth on this Earth*
*Are you laughing because I become Dasharatha's son*
*Though I am beyond the reach of birth and death.*

In this manner Rama asks Lakshmana the reason for the latter's laughter. From his birth to his coronation he traces his entire life until then in one sweep. The dialogue between them creates in the mind of the listeners many expectations. What would be Lakshmana's reply? Will Rama be angry at it? Would he punish Lakshmana severely? What else would result from this encounter? But at the end, contrary to our expectations, nothing unto ward happens and everything ends on a happy note.

Lakshmana's character gets elevated in the context. Lakshmana tells Sri Rama:

*Lakshmana rose from his seat*
*And approaching the king of solar Dynasty*
*Offered his explanation humbleness personified*
*Brother, I was not inconvenienced even a bit*
*in the forest by hunger, thirst and lack of sleep*
*On reaching home I saw everything in plenty*
*and I feel sleepy*
*Thinking about it I gently smiled*
*could I ever find anything amiss*
*in your impeccable character?*

This explanation of Lakshmana is quite appropriate - because during their exile in the forest Lakshmana did not have a wink of sleep burdened by so many responsibilities. Because of the plentitude and ampleness of things in the palace, he feels sleepy so early in the day. That awkward response from him brings laugher to him. This episode clearly establishes that the folk imagination is in no way inferior to the imagination of our classical poets.

In "Kamsale Tradition" we have a narrative song called "Lava Kusha Kalaga". In that narrative we have Sri Rama searching for raw tamarind for pregnant Sita and Sita cooking food for them. Rama says -

*Lakshmana deva I will just go loitering around*
*and I have to fetch raw tamarind*
*for your sister-in-law Seethamma*
*who is seven month's pregnant*
*I am going for that, my dear brother*
*be mindful of the household.*

The folk poet has made Rama very homely in his transaction with his younger brother.

The episode connected with washerman Machayya and his wife "Malluga Devi" is quite interesting. The conversation between this couple is lively as well.

*Machappa placed on his donkey*
*the be mole of clothes collected to wash*
*Then he called his wife Malluga Devi*
*Rama Rama*

Machayya had asked his wife to finish her chores quite fast and bring his food as early as possible. But he had lost his cool as she did not turn up though it was getting late

*As he saw his wife's face*
*even as she got nearer*
*He suppressed his vaulting anger*
*and told her*
*Do you think, my wife,*
*that I'm going to bring back*
*a wife who has been abandoned*
*like that idiot Rama ?*

When the washerman so reacts with his wife we see a resemblance to Valmiki's ***Uttarakanda***. In ***"Kushalavara Kalaga*** of Kamsale tradition we have a reference to ಮುತ್ತುಗ leaf, 'Basira Mara', 'Seethaphala' and so on. "Kushchulavulu" pertains to the fish that rescue Sita when she drowns herself unable to bear the burden of living in the absence of her husband Rama.

*However much I cry there's no one*
*in the wilderness to console me*

*Let me end my life by plunging*
*into the Ganga*
*So saying she dived into water*
*Remembering the feet of Rama*
*But the fish held her arms*
*and swam to the other bank*
*and left her safely, Rama Rama*

After rescuing Sita, they request her to name her sons after them. Ragow, the renowned folklorist, says that this gives her the reassurance that after the birth of her sons Lava and Kusha, her life would take a positive turn.

The "Lavakushara kathe" in "Bayaluseeme Lavani" collected by Dr. Kalegowda Nagavara and ***"Janapada Ramayana"*** collected by Ragow and his fellow scholars resemble each other in many respects; but there is a difference in the ending. Just as Lava and Kusha kill Rama and Lakshmana with their arrows in the first collection, a similar situation obtains in ***Janapada Ramayana*** as well. But the difference lies in the narrative at the end:

*Bring all those that these children*
*have killed to our Ashram*
*who said this? Do you know?*
*It was sage Valmiki*
*Then the sage Anjunayya brought*
*Rejuvenating herbs and chanted the mantra*
*Those who had died got up-one by one.*

This is the story in "Lavakushara Kalaga", but in "Lavakushakathe", it is Sita who brings the dead ones back to life and not Valmiki. Notice how Lava-Kusha address Sita:

*If you are really truthful*
*you bring the dead back to life*
*otherwise, we will kill you*
*as we killed them*
*Then truth personified Seethamma*
*cried inconsolably*

*And shed three palmful of tears*
*If I'm really truthful*
*Let him wake up as if nothing had happened*
*So saying, Seethamma scattered*
*Three palmful of tears*
*Sreerama, truth personified*
*Woke up as if nothing had happened.*

When the children themselves challenge their mother to establish her conjugal loyalty and threaten to kill her if she fails in this test, it really unhinges the reader. This reminds us of Parashurama who killed his own mother. Similarly, in "Lavakushara Kalaga" we have the sage Valmiki rejuvenating Rama and Lakshmana with the help of the 'Rejuvenating Herb', but in "Lavakushara Kathe" Seetha Devi brings Rama back to life by scattering three palmful of tears.

*Sreerama and Seethamma*
*Look birth as human beings*
*and eventually left for Vaikunta*
*as Lakshminarayana*
*Blessing all*
*Rama Rama.*

Sita underwent so much tribulation in the forest during the exile, the folk poet has captured all the sorrow in three lines:

“ಜನಕರಾಯನ ಮಗಳು ಬನಕೆ ತೊಟ್ಟಿಲಕಟ್ಟಿ
ಲವಕುಶರಿಗೆ ಜನ್ಮವಿತ್ತು ತೂಗ್ಯಾಳು ನಗುನಗುತ
ವನವಾಸ ಕಳೆದಾಳು”

Here the poet very significantly says “the daughter of Janaka” instead of Sita. That means, Sita being the daughter of a great king Janakaraja had to bring up her children by tying a cloth as a cradle to a tree. She has undergone untold suffering to protect her children is captured in a couple of lines. She has spent the period of exile in a cheerful way-that’s what the poet is emphasizing.

The episode called “Seethadevi” contains a slice of *Uttara Ramayana*. This pertains to Kusha-Lava.

Seetha Devi puts her baby in a cradle tied to the big banyan trees and asking ‘Ajja Muniya’ to suring the cradle goes to the stream to wash the clothes. When she starts beating cloth keeping the bundle on a stone, she happens to see a horde of monkeys leaping from branch to branch while their young ones have held the mothers tightly. She says “In case the young ones fall while the mothers are jumping they will surely die”. The monkeys reply in this fashion:

*Listen Listen foolish woman*
*If our young one’s die in our hands*
*Listen Listen Seethadevi, you listen*
*you have left the baby with a blind man.*

They mock at Seetha devi. She suddenly realizes her mistake and rushes home and picking up the child without informing ‘Ajja Muniya’ she returns to the stream to continue her work. “Ajja Muniya” stretches his hand to the cradle and not finding the child there he chants mantra holding ‘darbhe’ in his hand. Thus he obtains another child which he lays in the cradle. This is how Seetha Devi had two children Lava and Kusha. The folk poet has called Valmiki ‘Ajja Muniya’ and has made him blind. This is a bit odd.

***Janapada Ramayana*** is not available in its entirety. But, we are fortunate to have different episodes which form the mosaic striking a kinship with the original story. The urgent task of the scholars is to make continued efforts to obtain the full text of the oral epic before the singers complete their earthly journey.

**Reference:**

1. “Hosamadiya Mele Chanduranga” (Kannada)
   Dr. C.N. Ramachandran, Sapna Book House, 2010.
2. “Kannada Janapadadalli Ramayana Mahabarata”
   Dr. Puttaswamy, S.P. Mohit Prakashana, 2003.
3. “Tamboori Sampradayada Janapada Sampoorna Ramayana”, Dr. B.S. Taiwadi, Annapurna publishers and Distributors, 2013
4. “Devaraguddara Kavyagalu” (Kamsale Padagalu)
   Ed. Dr. P.K. Rajashekhara, Kannada & Culture, 2014 ❐

# ‘ಉತ್ತರಕಾಂಡ’ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಅನುಬಂಧದ ಲಕ್ಷಣಗಳು

ಹಲವು ನೂರುವರ್ಷಗಳಿಂದಲೂ ‘ಉತ್ತರಕಾಂಡ’ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದೊಂದಿಗೆ ಸೇರಿಹೋಗಿದೆ. ಆದರೆ ಅದರೊಂದಿಗೇ, ಈ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ರಚನೆಯಲ್ಲ ಎನ್ನಲು ಹಲವು ಕಾರಣಗಳನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ, ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಶೈಲಿ ಹಿಂದಿನ ಕಾಂಡಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನ. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾಮ – ಸೀತೆಯರ ಕಥಾನಕವಿರುವುದು ಕೇವಲ ಎಂಟನೇ ಒಂದರಷ್ಟು ಭಾಗ. ಮಿಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ, ರಾಮ ಹಾಗೂ ರಾವಣರ ವಂಶಾವಳಿಗಳು ಮತ್ತು ಇನ್ನಿತರ ವಿವರಗಳು ಕಾಣುತ್ತದೆ.

ಡಾ॥ ಜಯಂತಿ ಮನೋಹರ್

ರಾಮಾಯಣ ಎಂದಾಕ್ಷಣ ಹಲವು ಜನರಿಗೆ ಹಲವು ರೀತಿಯ ಭಾವಗಳು ತುಂಬಿಬರುತ್ತವೆ. ಇದು ನಮ್ಮ ದೇಶಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸೀಮಿತವಾದುದಲ್ಲ. ಶತಮಾನಗಳ ಹಿಂದೆ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ರೂಪುಗೊಂಡ ಈ ಮಹಾಕಾವ್ಯ, ಸಾಗರದಾಚೆಯ ನಾಡುಗಳಲ್ಲಿ ಹರಡಿ, ಅಲ್ಲಿನ ಜನಮಾನಸದಲ್ಲಿ ನೆಲೆ ನಿಂತಿರುವುದು ಇಂದೂ ಕೂಡ ನಿಚ್ಚಳವಾಗಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಪ್ರಸಕ್ತ ಶಕೆಯ 500ರ ಸುಮಾರಿಗೆ ಲಿಖಿತರೂಪಕ್ಕೆ ಬಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ, ಹಲವು ನೂರು ವರುಷಗಳು ಮೌಖಿಕ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಉಳಿದು ಬಂದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಮೂಲ ಶ್ಲೋಕಗಳು ಲುಪ್ತವಾಗಿ, ಮತ್ತೆ ಹಲವು ಸೇರ್ಪಡೆಯಾಗಿರುವುದು ಸಹಜ. ಆದರೆ, ಯಾವುದು ಮೂಲ ಯಾವುದು ನಂತರದ ಸೇರ್ಪಡೆಗಳು ಎಂದು ನಿರ್ಧರಿಸುವುದು ಸುಲಭಸಾಧ್ಯವಲ್ಲ. ತಂದೆಯ ಮಾತನ್ನು ಪಾಲಿಸಲು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋದ ರಾಮ, ರಾವಣನನ್ನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಂಹರಿಸಿ, ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಡನೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದು ಸುಖವಾಗಿ ರಾಜ್ಯವಾಳುತ್ತಿದ್ದಾನೆ ಎನ್ನುವಲ್ಲಿಗೆ 88 ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ನಾರದರು ರಾಮಕಥೆಯನ್ನು ಮಹರ್ಷಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಅದನ್ನು ಮುಂದೆ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು 24 ಸಾವಿರ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹೇಳಿ, ಮಹಾಕಾವ್ಯವಾಗಿಸಿದರು ಎನ್ನುವ ವಿವರಗಳು ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ.

ಅನೇಕ ಭಾರತೀಯ ಹಾಗೂ ವಿದೇಶೀ ಭಾಷೆಗಳಿಗೆ ಅನುವಾದಗೊಂಡು, ಚಿಂತನ ಮಂಥನಗಳಿಗೆ ದಾರಿ ಮಾಡಿಕೊಟ್ಟಿರುವ ನಮ್ಮ ಆದಿಕಾವ್ಯ, ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಮರುಸೃಷ್ಟಿ ಇಂದು, ಒಂದು ಲಕ್ಷವನ್ನೂ ಮೀರಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿದೆ. ಹೀಗೆ, ಪ್ರಪಂಚದಾದ್ಯಂತ ನಿರಂತರವಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಅಧ್ಯಯನ, ಸಂಶೋಧನೆ ಹಾಗೂ ವಿಚಾರ ವಿಮರ್ಶೆಗಳಿಂದಾಗಿಯೇ ರಾಮಕಥೆ ಇಂದಿಗೂ ಪ್ರಸ್ತುತವಾಗುತ್ತದೆ. ಮೂಲ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ರಾಮನ ಹಲವು ನಡೆಗಳನ್ನು ಭಾರತದ ಹಾಗೂ ವಿಶ್ವದ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾಂಸರು ವಿಮರ್ಶೆಗೆ ಒಳಪಡಿಸುತ್ತಲೇ ಇದ್ದರೂ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಕಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿರುವ ರಾಮ – ಸೀತೆಯರ ಉದಾತ್ತ ಚರಿತೆ ಇಂದಿಗೂ ವಿಶ್ವಮಾನ್ಯವಾಗಿದೆ. ಆದಾಗ್ಯೂ, ಈ ಮರುಕಥನಗಳಲ್ಲಿ ಮಹರ್ಷಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳನ್ನು ಗೌರವಾದರಗಳಿಂದ ನೆನೆಯುತ್ತಲೇ, ಮೂಲ ಕಥಾ ಹಂದರದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ತಂದಿರುವುದು ಬಹಳ ಹಿಂದಿನ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಕಾಣುತ್ತದೆ.

ನಮ್ಮ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಆರ್ಷ ಕಾವ್ಯಗಳು (ನಾಟಕಗಳೂ ಸೇರಿದಂತೆ) ದುಃಖಾಂತವಾಗಿರುವುದಿಲ್ಲ. ರಾಮಾಯಣವೇ ಹೇಳುವಂತೆ, ಮಹರ್ಷಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ರಚಿಸಿರುವ ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಕಾವ್ಯ ಮಹತ್ತರವಾದ ಸೀತಾಚರಿತೆಯೂ ಹೌದು – “ಕಾವ್ಯಂ ರಾಮಾಯಣಂ ಕೃತ್ಸ್ನಂ ಸೀತಾಯಾಶ್ಚರಿತಂ ಮಹತ್.. ಚಕಾರ ಚರಿತವ್ರತಃ” (ಬಾಲಕಾಂಡ: 4–7). ರಾಮಾಯಣದ ಮೊದಲ ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ, (ಅರಣ್ಯ, ಕಿಷ್ಕಿಂಧ, ಸುಂದರ) ರಾಮ–ಸೀತೆಯರನ್ನು ಆದರ್ಶದಂಪತಿಗಳನ್ನಾಗಿ ಕಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿರುವ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು, ರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದೊಂದಿಗೆ ಸುಖಾಂತವಾದ ತಮ್ಮ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮುಂದುವರೆಸಿ, ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ದುಃಖಾಂತವಾಗಿಸುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶಯವಾಗಿತ್ತೇ ಎನ್ನುವ ಪ್ರಶ್ನೆ ಕಾಡುತ್ತದೆ. ಹಾಗಾಗಿಯೇ, ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ರಾವಣ ವಧೆಯಾಗಿ ರಾಮ ಸೀತೆಯರು ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಂದಿಗೆ ಮರಳಿ ಬಂದು ರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾಗುವುದರೊಂದಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಶುಭಕರವಾಗಿ ಸಂಪೂರ್ಣಗೊಂಡಿದೆ ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆ ನಮ್ಮಲ್ಲಿರುವುದು ಅನೇಕ ವಿಚಾರಗಳಿಂದ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿಯೇ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಈ ಪಾರಂಪರಿಕ ನಂಬಿಕೆಯಿಂದಾಗಿಯೇ ನೂರಾರು ವರ್ಷಗಳಿಂದಲೂ **ನಮ್ಮ ಎಲ್ಲಾ ದೇವಾಲಯಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಸೀತಾದೇವಿಯೊಂದಿಗೇ ರಾಮ ಪೂಜೆಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯಿಲ್ಲದೆ ರಾಮನಿಲ್ಲ.**

### ‘ಉತ್ತರಕಾಂಡ’ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ರಚನೆಯೇ?

**ಹಲವು ನೂರುವರ್ಷಗಳಿಂದಲೂ ‘ಉತ್ತರಕಾಂಡ’ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದೊಂದಿಗೆ ಸೇರಿಹೋಗಿದೆ. ಆದರೆ ಅದರೊಂದಿಗೇ,** ಈ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ರಚನೆಯಲ್ಲ ಎನ್ನಲು ಹಲವು ಕಾರಣಗಳನ್ನು

ನೋಡಬಹುದು. ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ, ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಶೈಲಿ ಹಿಂದಿನ ಕಾಂಡಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನ. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾಮ – ಸೀತೆಯರ ಕಥಾನಕವಿರುವುದು ಕೇವಲ ಎಂಟನೇ ಒಂದರಷ್ಟು ಭಾಗ. ಮಿಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ, ರಾಮ ಹಾಗೂ ರಾವಣರ ವಂಶಾವಳಿಗಳು ಮತ್ತು ಇನ್ನಿತರ ವಿವರಗಳು ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಎಲ್ಲಕ್ಕಿಂತಲೂ ಎದ್ದು ತೋರುವ ಅಂಶವೆಂದರೆ, ರಾಮ ಸೀತೆಯರಿಗೆ ಮಗನಂತಿದ್ದ ಹನುಮಂತನ ಅನುಪಸ್ಥಿತಿ. ಒಂದೊಮ್ಮೆ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳೇ ಇದನ್ನೂ ರಚಿಸಿದ್ದರೆ, ಹನುಮಂತನನ್ನು ದೂರವಿಡುವುದು ಸಾಧ್ಯವಿರಲಿಲ್ಲ. ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕಣ್ಣಾರೆ ಕಂಡಿದ್ದ ವಾಯುಪುತ್ರನು ಅಯೋಧ್ಯಾ ಜನರು ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ಸಂದೇಹಿಸಿದಾಗ ಸುಮ್ಮನಿರುತ್ತಿದ್ದನೇ ? ಅಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ, ಲಂಕೆಯಿಂದ ಪುಷ್ಪಕ ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದ ಸಾವಿರಾರು ದಾನವರು, ವಾನರರು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾದೇವಿಗೆ ನಡೆದ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರಿಗೆ ಹೇಳಿರುತ್ತಾರಲ್ಲವೇ ? ಹಾಗಿದ್ದೂ ಅವರು ಸೀತೆಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಸಂದೇಹಿಸುವ ಸಂಭವ ಇಲ್ಲ ಎಂದೇ ಹೇಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ಹೀಗೆ ಹಲವಾರು ಕಾರಣಗಳು ಎದ್ದು ತೋರುವಂತಹದಾಗಿದ್ದಾಗ್ಯೂ, ಉತ್ತರಕಾಂಡವನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಕೊನೆಯ ಭಾಗವಾಗಿ ನೋಡುವುದು ಭಾರತದ ಉದ್ದಗಲದಲ್ಲಿಯೂ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಅದರೊಂದಿಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಹರಿದು ಹೋಗಿರುವ ಸಾಗರೋತ್ತರ ನಾಡುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಇದು ಸೇರಿಕೊಂಡು ಬಂದಿದೆ. **ಹಾಗಾಗಿ ಈ ಭಾಗವನ್ನು 'ಮೂಲ ಉತ್ತರಕಾಂಡ' ಎಂದು ಅಥವಾ ರಾಮಾಯಣದ ಒಂದು ಅನುಬಂಧ ಎನ್ನಬಹುದು.**

### ಮೂಲ 'ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ'ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ

ಮೂಲ 'ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ'ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ ಇಂದಿಗೂ ತೀವ್ರ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟಿರುವ ವಿಚಾರ. ಇದು ರಾಮನ ಹೆಗಲಿಗೇರಿರುವ ದೊಡ್ಡ ದೋಷವೂ ಹೌದು. ರಾವಣನಿಂದ ಅಪಹೃತಳಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ನೆನೆಯುವಾಗಲಾಗಲೀ, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅವರಿಬ್ಬರು ಕಳೆದ ದಿನಗಳ ಚಿತ್ರಣದಲ್ಲಾಗಲೀ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮ ಸೀತೆಯ ಮೇಲಿನ ತನ್ನ ಒಲವನ್ನು ಆಪ್ಯಾಯಮಾನವಾಗಿ ತೋರುತ್ತಾನೆ. ಹಲವು ನೂರು ವರುಷಗಳ ತರುವಾಯ ಬೇರೆ ಯಾವುದೋ ಕವಿಯಿಂದ 'ವಾಲ್ಮೀಕಿ'ಗಳ ಅಂಕಿತದಲ್ಲಿ ಸೀತಾ ಪರಿತ್ಯಾಗದ ಕಥನವಿರುವ 'ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ' ರಚನೆಯಾಗಿರಬಹುದು ಎನ್ನುವ ವಿಚಾರವನ್ನು ಹಲವು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಮುಂದಿಡುತ್ತಾರೆ. ಹಾಗಾಗಿ, ಹಿಂದಿನ ಕಾಲಘಟ್ಟದ ಅನೇಕ ಕವಿಗಳು ಉತ್ತರಕಾಂಡವನ್ನೇ ಕೈಬಿಟ್ಟು, ರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದೊಂದಿಗೆ ಸೀತಾ ರಾಮರು ಸೌಖ್ಯವಾಗಿದ್ದರು ಎಂದು ಸುಖಾಂತವಾಗಿಸಿದ್ದಾರೆ.

### ವನವಾಸದಲ್ಲಿ ರಾಮ ಸೀತೆಯರ ಅನ್ಯೋನ್ಯ ದಾಂಪತ್ಯ – ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ಸುಖ ಸಂಸಾರ

ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ರಾಮ–ಸೀತೆಯರ ಏಕಾಂತವಾಸಕ್ಕಾಗಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸುಂದರವಾದ ಒಂದು ಕೊಠಡಿಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ನೆಲವನ್ನು ಸಮತಟ್ಟಾಗಿಸಿ ಸುಂದರಗೊಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ದೂರದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸುವ ರಮಣೀಯ ಪರ್ವತಶ್ರೇಣಿ, ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದ ತಾವರೆ ಕೊಳ, ಗೋದಾವರೀ ನದಿ, ಸುತ್ತಲೂ ಕಾಣುವ ಹೂ ಬಿಡುವ ಮರಗಳು, ಸ್ವೇಚ್ಛೆಯಾಗಿ ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾ ಕಲರವ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ ಪಶು–ಪಕ್ಷಿ ಸಂಕುಲಗಳು ಜಾನಕಿಯ ಮನವನ್ನು ಮುದಗೊಳಿಸುತ್ತವೆ. ಹೀಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ನಿರ್ಮಿಸಿದ ಸುಂದರ ಪರ್ಣಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಜೀವನ ಬಹುಕಾಲ ಸುಖಮಯವಾಗಿ ಸಾಗಿತು ಎಂದು ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಆದರೆ, ರಾಮ ಸೀತೆಯರ ಗಾಢ ಅನುಬಂಧದ ವಿವರಗಳು ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕಾಣದಿದ್ದರೂ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಅದನ್ನು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು.

ಮುಂದಿನ ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ, ಹನುಮಂತ ಹಾಗೂ ಸೀತೆಯರ ನಡುವೆ ನಡೆದ ಸಂಭಾಷಣೆಯಲ್ಲಿ, ರಾಮ ಸೀತೆಯರ ನಡುವಿನ ಮಧುರ

ಅನುಬಂಧದ ಒಂದೆರಡು ವಿವರಗಳು ಕಾಣುತ್ತವೆ. ಚಿತ್ರಕೂಟದಲ್ಲಿ ಒಮ್ಮೆ, ಸೀತೆಯನ್ನು ಕುಕ್ಕಿ ಹಿಂಸೆ ಮಾಡಿದ ಕಾಗೆರೂಪದ ಇಂದ್ರನ ಮಗನ ಮೇಲೆ ರಾಮ ಬ್ರಹ್ಮಾಸ್ತ್ರವನ್ನೇ ಪ್ರಯೋಗಿಸಿದ್ದ ಸಂಗತಿಯನ್ನು ಸೀತೆ ಹನುಮಂತನಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಅಲ್ಲಿ, ಹನುಮಂತನು, ಪ್ರಸ್ರವಣ ಗಿರಿಯಲ್ಲಿ ತಂಗಿರುವ ರಾಮನ ಮನಸ್ಸು ಸೀತೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಲಯಿಸಿಹೋಗಿರುವುದರಿಂದ, ತನ್ನ ಮೈಮೇಲೆ ಕಾಡುನೊಣಗಳಾಗಲೀ ಸೊಳ್ಳೆಯಾಗಲೀ ಎರಗಿದರೆ ಅವುಗಳನ್ನು ಓಡಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಸದಾ ಶೋಕದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿರುವ ಅವನಿಗೆ ನಿದ್ರೆ ಎಂಬುದೇ ಇಲ್ಲ. ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಕ್ಷಣಕಾಲ ನಿದ್ರೆ ಬಂದರೂ, 'ಹಾ ಸೀತೆ' ಎಂದು ಕನವರಿಸುತ್ತಲೇ ಎಚ್ಚರಗೊಳ್ಳುವನು ಎಂದು ರಾಮನು ಸೀತಾವಿಯೋಗದಲ್ಲಿ ಪಡುತ್ತಿರುವ ಶೋಕವನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ.

ದಂಡಕಾರಣ್ಯ ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಲೇ ಎದುರಾದ ದೈತ್ಯ ವಿರಾಧ ಸೀತೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದಾಗಲೂ ಅತೀವವಾಗಿ ಮರುಗುವ ರಾಮ ಅದು ತನಗೆ, ತಂದೆಯ ಸಾವಿಗಿಂತಲೂ ರಾಜ್ಯ ತಪ್ಪಿಹೋದದ್ದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಮೀರಿದ ಯಾತನೆ ತಂದಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾ ವ್ಯಾಕುಲನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಹೋಗುವ ರಾಮನಿಗೆ ಮೊದಲು ಕಾಣುವುದು ಸೀತೆಯ ಮುಡಿಯಿಂದ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಿರುವ ಹೂವುಗಳು. ಅದನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾ, ಆ ಹೂವುಗಳು ತಾನೇ ಸ್ವತಃ ಗಿಡದಿಂದ ಕಿತ್ತು ತಂದು, ಪೋಣಿಸಿ ಸೀತೆಯ ಮುಡಿಯಲ್ಲಿ ಮುಡಿಸಿದ್ದ ಹೂವುಗಳೆಂದು ರಾಮ ಗುರುತಿಸುತ್ತಾನೆ.

### ರಾಮನಿಗೆ ಸೀತೆಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನುಮಾನವಿತ್ತೇ ?

**ಪ್ರಿಯ ಪತ್ನಿಯನ್ನು ಕಾಣದೆ ರಾಮನ ಶೋಕ** – ತಮ್ಮ ಕುಟೀರದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಣದೆ ಸುತ್ತ ಮುತ್ತಲ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಬಹುವಾಗಿ ಪರಿತಪಿಸುವ ರಾಮ ಸಹೃದಯರನ್ನು ಆರ್ದ್ರಗೊಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ಸೀತಾಪಹರಣದ ಶೋಕದಿಂದ ಸತ್ತುಹೋಗುತ್ತೇನೆ (ಸೀತಯಾ ರಹಿತೋ–ಹಂ ವೈ ನ ಹಿ ಜೀವಾಮಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ) ಎಂದು ಹತಾಶನಾಗುವ ರಾಮ, ಮೇಲಣ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಎದುರಾಗುವ ತಂದೆ ತನ್ನ ಬಗ್ಗೆ ಏನು ಹೇಳಿಯಾನೆಂದು ಕಳವಳಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಹೂವು, ಗಿಡ, ಮರ, ಬಳ್ಳಿ, ಜಿಂಕೆ, ಗಜರಾಜ, ವ್ಯಾಘ್ರ, ಗೋದಾವರೀ ನದಿ, ತಾವರೆ ಕೊಳ, ಪರ್ವತ ಹೀಗೆ ಕಣ್ಣಿಗೆ ಕಂಡದ್ದನ್ನೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಸೀತೆಯ ಸುದ್ದಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸಲು ಬೇಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ.

ಮುಂದೆ, ರಾವಣನಿಂದ ಅಪಹೃತಳಾದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಹೋದ ರಾಮ–ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಸುಗ್ರೀವನ ಸಖ್ಯ ಮಾಡಿ, ವಾಲಿವಧೆಯ ತರುವಾಯ ಸುಗ್ರೀವ ರಾಜನಾದಾಗ ಮಳೆಗಾಲ. ಹಾಗಾಗಿ ಸೀತೆಯ ಅನ್ವೇಷಣೆಗೆ ಹೊರಡಲು ಯುಕ್ತ ಕಾಲಕ್ಕಾಗಿ ಕಾಯಬೇಕಾಯಿತು. ಸೀತೆಯ ನೆನಪಿನಲ್ಲಿ ನಿದ್ರೆಯೇ ಬಾರದ ಆ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮ ಪಟ್ಟ ವೇದನೆಯನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸುವ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು, ಸೀತಾಪಹರಣದ ನೋಟವನ್ನು ರಾಮನ ಬಾಯಲ್ಲಿಯೇ ಹೇಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ನೀಲಮೇಘದ ನಡುವೆ ಮಿಂಚುವ ಮಿಂಚನ್ನು ಕಂಡ ರಾಮ, ರಾವಣನ ಅಂಕದಲ್ಲಿ (ತೊಡೆಯಮೇಲೆ) ಅನಾಥೆಯಾಗಿ ಸಂಕಟಪಟ್ಟ ತಪಸ್ವಿನೀ ಸೀತೆಯಂತೆ ಇದು ಮಿಂಚುತ್ತಿದೆ" ಎಂದು ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಡನೆ ಹೇಳಿಕೊಂಡು ಸಂಕಟಪಡುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ಯಾವುದೇ ಋಣಾತ್ಮಕ ಭಾವ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮನನ್ನು ಕಾಡುವುದಿಲ್ಲ.

**ನೀಲಮೇಘಾಶ್ರಿತಾ ವಿದ್ಯುತ್ ಸ್ಫುರಂತೀ ಪ್ರತಿಭಾತಿ ಮೇ ।**
**ಸ್ಫುರಂತೀ ರಾವಣಸ್ಯಾಂಕೇ ವೈದೇಹೀವ ತಪಸ್ವಿನೀ ॥**

(ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಕಾಂಡ: ಸರ್ಗ: 28:12)

### ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶ

ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ರಚನಾ ಶೈಲಿಯಿಂದ ಭಿನ್ನವಾಗುವ ಪ್ರಮುಖ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿ ಪ್ರವೇಶದ ಸಂದರ್ಭವೂ ಒಂದು. ಪೂರ್ವ ಕಾಂಡಗಳಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಿಯೂ, ಸೀತೆಯ ಮೇಲೆ ಲವಲೇಶ ಸಂಶಯವನ್ನೂ

ಹೊಂದಿರದ ರಾಮ, ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ, ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ತೋರುವ ಕಾಠಿಣ್ಯದ ನಿಲುವು ಕವಿಗಳನ್ನಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ದೇಶ ವಿದೇಶದ ಚಿಂತಕರನ್ನು ಹಲವು ಬಗೆಯ ಜಿಜ್ಞಾಸೆಗಳಿಗೆ ಒಳಪಡಿಸಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಚಿತ್ರಿಸಿರುವ ಧೀರೋದಾತ್ತ ನಾಯಕನಾದ ರಾಮನ ನಡೆ, ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ, ಹಳಿ ತಪ್ಪಿಬಿಡುವುದನ್ನು ಸಮರ್ಥನೆ ಮಾಡುವ ಕವಿಗಳ ಪ್ರಯತ್ನಗಳೆಲ್ಲವೂ ಸೋತಿವೆ ಎಂದೇ ಹೇಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಹಾಗಾಗಿಯೇ ಹಲವಾರು ಮರುಕಥನಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಪ್ರಸಂಗ ಕಾಣುವುದಿಲ್ಲ. ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕಗಳ ಪಿತಾಮಹ, ಭಾಸನ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಇದರ ಸುಳುಹೂ ಕಾಣುವುದಿಲ್ಲ.

ಸೀತೆ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಕ್ಕು ಪವಿತ್ರಳಾಗಿ ಹೊರಬಂದ ಮೇಲೆ, ತನಗೆ ಜಾನಕಿಯ ಚಾರಿತ್ರ್ಯದಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಸಂಶಯವಿಲ್ಲವೆಂದೂ, 'ತಾನು ಮಾಡಿದ್ದು ಕೇವಲ ಲೋಕದ ಜನರನ್ನು ನಂಬಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ' ಎಂದು ಬಿಡುವ ರಾಮ ಅಚ್ಚರಿಮೂಡಿಸುತ್ತಾನೆ (ಪ್ರತ್ಯಯಾರ್ಥಂ ಹಿ ಲೋಕಾನಾಂ...). **ರಾಮನ ಈ ಮಾತಿನ ಬಗ್ಗೆ, ನಮ್ಮ ನಾಡಿನ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಚಿಂತಕರಾದ ಡಿ.ವಿ.ಗುಂಡಪ್ಪನವರು, "ಈ ಸಬೂಬು ನನ್ನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಕುಂಟು ಸಬೂಬಾಗಿ ಕಾಣಿಸುತ್ತದೆ. ಶ್ರೀರಾಮನ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಹೀಗೆ ಆಡಿಸಿದವರು, ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳೋ ಅಥವಾ ಬೇರೊಬ್ಬ ರಾಮಭಕ್ತ ಕವಿಯೋ ಎಂದು ನನ್ನ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಶಂಕೆ ಹುಟ್ಟುತ್ತದೆ" ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ (ಶ್ರೀಮದ್ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ, ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಮುನ್ನುಡಿ – ಅನುವಾದ, ವಿದ್ವಾನ್ ಎನ್.ರಂಗನಾಥಶರ್ಮಾ).** ಕುವೆಂಪುರವರ 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ' ಮಹಾಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ, ರಾಮನೂ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಅಗ್ನಿಯನ್ನು ಹೊಕ್ಕು ಹೊರಬರುವಂತೆ ಅವರು ತಂದಿರುವ ಮಾರ್ಪಾಡು ಮನೋಜ್ಞವಾದುದು.

### ಮೂಲ 'ಉತ್ತರಕಾಂಡ'ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಅಲೌಕಿಕ ಚಮತ್ಕಾರೀ ಘಟನೆಗಳು

ಸೀತೆಯ ಸುವರ್ಣ ಪ್ರತಿಮೆಯನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮಾಡಿದ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ರಾಮಚಂದ್ರ ಲವ-ಕುಶರಿಂದ ರಾಮಾಯಣ ಗಾನ ಕೇಳಿ ಅವರು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳೇ ಎಂದು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆದರೂ, ಸೀತೆ ಎಲ್ಲರೆದುರಿಗೆ ಬಂದು, ತನ್ನ ಪಾವಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಯಿಂದ ಸಿದ್ಧಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಯಾವುದೇ ಮಹಿಳೆಗೆ ಸಾವಿರಾರು ಜನರ ಮುಂದೆ ನಿಂತು ತನ್ನ ಪಾವಿತ್ರ್ಯ ಸಿದ್ಧಮಾಡಬೇಕಾಗುವ ಸನ್ನಿವೇಶ ಅತ್ಯಂತ ಖೇದಕರ. ಅವಳಿಗೆ ಇಂತಹ ಬದುಕೇ ಬೇಡ ಎನಿಸುವುದು ಅತ್ಯಂತ ಸಹಜವಾದ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ. ಹಾಗಾಗಿಯೇ ಅಲ್ಲಿ ಸೀತೆ, "ರಾಘವನನ್ನಲ್ಲದೆ ನಾನು ಬೇರಾರನ್ನೂ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲೂ ಚಿಂತಿಸದಿರುವುದು ಸತ್ಯವಾದಲ್ಲಿ, ಭೂದೇವಿ ನನಗೆ (ತನ್ನಲ್ಲಿ) ಅವಕಾಶ ಕೊಡಲಿ" ಎಂದು ಕರೆದ ಕೂಡಲೇ ಭೂತಲದಿಂದ ಎದ್ದು ಬರುವ ಭೂಮಿತಾಯಿ ಮಗಳನ್ನು ತನ್ನೊಡನೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಾಳೆ. ಹೀಗೆ, ಅಭೂತಪೂರ್ವ ಅಲೌಕಿಕ ಚಮತ್ಕಾರೀ ಘಟನೆ ಜರುಗಿ, ಅಯೋಧ್ಯಾ ಜನರ ಮುಂದೆ, ಸೀತೆಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯ ಸಿದ್ಧವಾದಾಗಲೂ ಸೀತಾರಾಮರ ಸಮಾಗಮವಾಗದೆ, ಅವಳ ಬದುಕು ದುರಂತವಾಗಿಬಿಡುವುದನ್ನು ಬಹುತೇಕ ಪ್ರಾಚೀನ ಕವಿಗಳು ಒಪ್ಪದಿರುವುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತದೆ.

### ಪೂರ್ವಸೂರಿಗಳ 'ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ'ದ ಕಥಾನಕದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಮಾರ್ಪಾಡುಗಳು

'ಉತ್ತರಕಾಂಡ'ಕ್ಕಿಂತ ಭಿನ್ನವಾದ ನಿಲುವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಪದ್ಮಪುರಾಣದ ಪಾತಾಲಖಂಡದ ಪ್ರೇರಣೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಾಗಿದ ಪ್ರಾಚೀನ ಸಂಸ್ಕೃತ ಕವಿಗಳಲ್ಲಿ ದಿಙ್ನಾಗ ಹಾಗೂ ಭವಭೂತಿ ಮೊದಲ ಪಂಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲುತ್ತಾರೆ. ಪ್ರಸಕ್ತ ಶಕೆಯ ಐದನೇ ಶತಮಾನಕ್ಕೆ ಸೇರುವ ದಿಙ್ನಾಗನ ನಾಟಕ 'ಕುಂದಮಾಲಾ' ಹಾಗೂ ಎಂಟನೇ ಶತಮಾನದ ಭವಭೂತಿಯ 'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ'ಗಳು ಈ ದಿಸೆಯಲ್ಲಿ ದಿಟ್ಟ ಹೆಜ್ಜೆಯನ್ನು ಇಟ್ಟಿವೆ. 'ಕುಂದಮಾಲಾ'ದಲ್ಲಿ, 'ದಿವ್ಯರೂಪಧಾರಿಣಿಯಾದ ಪೃಥ್ವೀದೇವಿಯೇ ನನ್ನ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿ ಹೇಳಲಿ' ಎಂದು ಸೀತೆ ಶಪಥ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಂತೆಯೇ, ಪಾತಾಳದಿಂದ ಆಕಾಶವನ್ನು ವ್ಯಾಪಿಸುವ ತುಮುಲ ನಾದ ಉತ್ಪನ್ನವಾಗುತ್ತದೆ. ಪರ್ವತಗಳು ನಡಗುತ್ತವೆ. ಸಮುದ್ರಗಳು

ಉಕ್ಕಿಹರಿದು ಅಲೆಗಳಿಂದ ಸುತ್ತಲಿನ ವನಗಳನ್ನು ಆಕ್ರಮಿಸುತ್ತದೆ. ಇಂತಹ ಅಲೌಕಿಕ ಘಟನೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಪಾತಾಳದಿಂದ ಪೃಥ್ವಿದೇವಿಯು ಮೇಲೆ ಬಂದು ಸಾಕ್ಷಿ ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಅದನ್ನು ಕಣ್ಣಾರೆಕಂಡ ಜನರೆಲ್ಲರೂ ಸೀತೆಯ ಶುದ್ಧ ಚಾರಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಹೊಗಳುತ್ತಾರೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಅಣತಿಯಂತೆ ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿ ಸೀತಾಚರಿತ್ರೆ ಸುಖಾಂತ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ.

ಭವಭೂತಿಯೂ ಅದೇ ಆಶಯದಂತೆ, ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾಟಕ 'ಉತ್ತರ ರಾಮ ಚರಿತ'ದಲ್ಲಿ, ಸೀತೆ ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಮರಳಿ ಹೋಗಿ ಮಕ್ಕಳೊಂದಿಗೆ ಸುಖವಾಗಿ ಬಾಳುವಂತೆ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇವರನ್ನು ಅನುಸರಿಸುವ ಕನ್ನಡದ ಲಕ್ಷ್ಮೀಶನೊಂದಿಗೆ ಹಲವಾರು ಆಧುನಿಕ ಕವಿಗಳು ಕಂಡುಬರುತ್ತಾರೆ.

### ಭವಭೂತಿಯ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತಂ'

'ಮೂಲ ಉತ್ತರಕಾಂಡ'ದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ ಹಲವಾರು ಅನೌಚಿತ್ಯಗಳನ್ನು ಭವಭೂತಿ ಇಲ್ಲಿ ನಿವಾರಣೆ ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ. ಋಷ್ಯಾಶ್ರಮವನ್ನು ನೋಡುವ ಬಯಕೆಗಾಗಿಯಾದರೂ, ಗರ್ಭಿಣಿ ಸೊಸೆಯನ್ನು ರಾಮನ ತಾಯಿ ಒಂಟಿಯಾಗಿ ಹೇಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದಳು ಎಂದು ಕಾಡುವ ಪ್ರಶ್ನೆಗೆ ಉತ್ತರವಾಗಿ, ಗುರು ವಸಿಷ್ಠರೊಂದಿಗೆ ಸೀತೆಯ ಅತ್ತೆಯರನ್ನು ಅಳಿಯ ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಯಜ್ಞಕ್ಕೆಂದು ಕಳುಹಿಸಿಬಿಡುತ್ತಾನೆ ಭವಭೂತಿ. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಕ್ಕೆಂದು ಬಂದ ಜನಕಮಹಾರಾಜನೂ ತನ್ನ ರಾಜಧಾನಿಗೆ ಮರಳಿದ ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮರೆತ ತಂದೆಯ ಅನುಬಂಧವನ್ನು ತೋರುತ್ತಾನೆ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಇಲ್ಲಿ ರಾಮ – ಸೀತೆಯರ ಸುಖೀ ದಾಂಪತ್ಯದ ಮನೋಜ್ಞ ಚಿತ್ರಣವಿದೆ. ಗರ್ಭಿಣಿ ಸೀತೆಯೊಂದಿಗೆ ರಾಮ ತಮ್ಮ ಹಿಂದಿನ ಜೀವನದ ಪ್ರಮುಖ ನೋಟಗಳನ್ನು ಕೊಡುವ ಚಿತ್ರಪಟಗಳನ್ನು ನೋಡುವ ದೃಶ್ಯ, ಭವಭೂತಿಯ ಮನೋಜ್ಞ ಕಲ್ಪನೆ. ಹಿಂದಿನ ಸಾಂಸಾರಿಕ ವಾರ್ತಾಲಾಪ ಇಲ್ಲಿಯೂ ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿಯೇ, ಕವಿ ತನ್ನ ಮುಂದಿನ ದೃಶ್ಯಗಳಿಗೆ ಬೇಕಾದ ಸಂಗತಿಗಳೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಬೀಜರೂಪದಲ್ಲಿ ತೋರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಮುಂದೆ ಅವೆಲ್ಲವೂ ಬೆಳೆದು ಫಲ ಕೊಡುವುದನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಜನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಅನ್ಯೋನ್ಯಾನುರಾಗದಿಂದ ಕಳೆದ ಸುಂದರ ದಿನಗಳ ನೆನಪನ್ನು ಬಿಚ್ಚಿಡುವ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ, "ಕೆನ್ನೆಗೆ ಕೆನ್ನೆ ತಗುಲಿಸಿ ತೋಳ್ಬಳಸಿ ಮೆಲ್ಲ ಮೆಲ್ಲನೆ ನಡೆದ ಸಲ್ಲಾಪದಲ್ಲಿ ರಾತ್ರಿ ಕಳೆದದ್ದೇ ತೋರಲಿಲ್ಲ" ಎಂದು, ರಾಮ ಇಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಒಲವನ್ನು ಮುಕ್ತವಾಗಿ ತೋರುತ್ತಾನೆ.

ಮುಂದೆ ನಡೆದ, ಕಾಂಚನ ಮೃಗದ ಪ್ರಕರಣ, ಸೀತಾಪಹರಣದಂತಹ ಘೋರ ಘಟನೆಗಳ ನೆನಪು ಬೇಡವಾಗಿ ಚಿತ್ರದರ್ಶನ ಸಾಕೆನಿಸಿದೆ ರಾಮನಿಗೆ. ಸೀತೆಯೂ ಅಂದಿನ ವಿಯೋಗವನ್ನು ನೆನೆದು ಭಯಗೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆಯ ಅಗ್ನಿದಿವ್ಯ–ಚಿತ್ರದ ಪ್ರಸ್ತಾಪ ರಾಮನಿಗೆ ನೋವು ತರಿಸುತ್ತದೆ. ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ತಾನು ಆಡಿದ ಕಠೋರ ಮಾತುಗಳಿಗಾಗಿ ಕ್ಷಮೆ ಬೇಡುತ್ತಾನೆ. ಈ ಅಪವಾದ ಜೀವನದುದ್ದಕ್ಕೂ ನಿಲ್ಲಬಹುದೆಂದು ಖೇದಪಡುತ್ತಾ, ಜಾನಕಿಯ ನೋವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಮರೆಸುವಂತಹ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಸಾಂತ್ವನಗೊಳಿಸುತ್ತಾನೆ.

**ಉತ್ಪತ್ತಿಪರಿಪೂತಾಯಾಃ ಕಿಮಸ್ಯಾಃ ಪಾವನಾಂತರೈಃ ।**
**ತೀರ್ಥೋದಕಂ ಚ ವಹ್ನಿಶ್ಚ ನಾನ್ಯತಃ ಶುದ್ಧಿಮರ್ಹತಃ ॥ (1–13)**

"ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಪರಿಶುದ್ಧಳಾದವಳಿಗೆ ಬೇರೆ ಶುದ್ಧೀಕರಣವೇಕೆ ? ಪವಿತ್ರ ತೀರ್ಥ ಹಾಗೂ ಸ್ವತಃ ಅಗ್ನಿಯ ಶುದ್ಧಿಗೆ ಬೇರೊಂದು ವಸ್ತು ಬೇಕೇ ?" ಎನ್ನುವ ರಾಮನ ಈ ಮಾತು ಭವಭೂತಿಯ ಘೋಷವಾಕ್ಯ. ಮುಂದೆ, ಸೀತೆಗೆ ತನ್ನ ಪರಿತ್ಯಕ್ತ ಬದುಕನ್ನು ಭರಿಸಲು ಶಕ್ತಿ ತುಂಬಿದ ಇಂತಹ ಮಾತುಗಳೊಂದಿಗೆ ಭವಭೂತಿ ತನ್ನ ರನ್ನ ಸೌಧ ಕಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ.

ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದ ನಂತರ, ಅಂದಿನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ, ಸಾಮಾನ್ಯ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದ್ದ ಬಹು ಪತ್ನಿತ್ವವನ್ನು ನಿರಾಕರಿಸಿದ ರಾಜ ರಾಮ,

ಸೀತೆಯನ್ನೇ ನೆನೆಯುತ್ತಾ ತಾನೂ ತಪಸ್ವಿಯಂತೆಯೇ ಇರುವುದು ರಾಮರಾಜ್ಯದ ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ನೋವುಂಟು ಮಾಡಿರಬೇಕಲ್ಲವೇ? ಕಾಲಕ್ರಮೇಣ ಅವರಿಗೆ, ತಾವು ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಆಡಿದ ಮಾತು ಕಾಡಿರಬೇಕಲ್ಲವೇ ಎನ್ನುವಂತಹ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮುಂದಿಟ್ಟುಕೊಂಡು, ಭವಭೂತಿಯ ನಾಟಕ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತಂ' ಸಾಗುತ್ತದೆ ಸೀತೆಯ ಗೆಳತಿಯಾಗಿ ಬರುವ ವಾಸಂತಿ ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ಸೀತಾ ಪರಿತ್ಯಾಗವನ್ನು ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುವುದು, ರಾಮನ ತೊಳಲಾಟ, ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿರುವ ಸೀತೆ ರಾಮನ ಅಳಲನ್ನು ನೋಡಿ ಮರುಗುವುದು (ಛಾಯಾ ಸೀತೆ), ಚಿತ್ರದರ್ಶನ ವೃತ್ತಾಂತ, ರಾಮ ರಾಜ್ಯದ ಪ್ರಜೆಗಳ ಅಂತಃಪ್ರಜ್ಞೆಯನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುವ ಗರ್ಭಾಂಕಗಳಂತಹ ಮನೋಜ್ಞ ಕಲ್ಪನೆಗಳು ಕವಿಯ ನವನವೋನ್ಮೇಷ ಶಾಲಿನೀ ಪ್ರತಿಭೆಗೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿ ನಿಲ್ಲುತ್ತವೆ.

ಇಲ್ಲಿ, ಗರ್ಭಿಣಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಭೂದೇವಿ ಹಾಗೂ ಭಾಗೀರತಿಯರು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಾರೆ. ಲವ ಕುಶರು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುವಾಗ ಸೀತೆ ಭೂದೇವಿಯೊಂದಿಗೇ ಇರುತ್ತಾಳೆ. ಭವಭೂತಿಯ ಮೂಲ ಆಶಯವಿರುವುದು ಸೀತಾರಾಮರ ಸಮಾಗಮ. ಅದನ್ನು ಸಾಧಿಸಲು ಪ್ರಮುಖವಾಗಿ ಬೇಕಾದದ್ದು ಸೀತೆಯ ಚಾರಿತ್ರ್ಯವನ್ನು ಶಂಕಿಸಿದ ಅಯೋಧ್ಯಾಜನರ ಮನಃಪರಿವರ್ತನೆ. ನಾಟಕದ ಅಂತಿಮ ಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಕಾಣುವ **'ಗರ್ಭಾಂಕ'** ಭವಭೂತಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿರುವ ರಸ ಪಾಕ. ಇದು ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಮತ್ತೊಂದು ನಾಟಕ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಉತ್ತರ ರಾಮ ಚರಿತೆಯನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ ಎಂದೂ ಹಾಗೂ ಅದನ್ನು ರಂಗದಲ್ಲಿ ತರುತ್ತಾರೆ ಎಂದೂ ತಿಳಿದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರು ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸೇರುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದ ರಾಮ ಹಾಗೂ ಅವನ ಪರಿವಾರದೊಂದಿಗೆ ಗರ್ಭಾಂಕ ಅನಾವರಣಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ಸೀತೆಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯ ಸಿದ್ಧವಾಗಲು ಭವಭೂತಿಯೂ ಒಂದು ಅದ್ಭುತವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಮಾಡುವುದು ಅತ್ಯಗತ್ಯ. ಹಾಗಾಗಿ, ಸೀತಾದೇವಿ, ಭಾಗೀರತಿ ಮತ್ತು ಭೂದೇವಿಯರೊಂದಿಗೆ ನದಿಯಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದು ಬರುವಂತಹ ಅಲೌಕಿಕ ಅಮೋಘ ಘಟನೆಯೊಂದು ನಡೆಯುವಂತಹ ದೃಶ್ಯವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಇದನ್ನು ಕಂಡು ಎಲ್ಲರೂ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ ಪಡುವುದರೊಂದಿಗೆ ಸೀತಾರಾಮರ ಸಮಾಗಮ ನಡೆದು ಭವಭೂತಿಯ ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತ ಸುಖಾಂತವಾಗುತ್ತದೆ.

ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಕವಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀಶನೂ ತನ್ನ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾ ರಾಮ ಸಮಾಗಮವನ್ನು ಮನೋಜ್ಞವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಕುವೆಂಪುರವ ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನದಲ್ಲಿಯೂ ಈ ಸೂಚನೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ. ದೂರದ ಥಾಯ್ ಲ್ಯಾಂಡಿನಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿರುವ ರಾಮಕಥೆ, 'ರಾಮ ಕೀನ್' ನಲ್ಲಿಯೂ ಕೊನೆಗೆ ಸೀತಾ ರಾಮರ ಸಮಾಗಮವಾಗಿ ಸುಖಾಂತವಾಗುತ್ತದೆ.

ಹೀಗೆ ರಾಮಕಥೆಯ ಅಧ್ಯಯನ ಹಾಗೂ ಸಮೀಕ್ಷೆಗಳು ಪ್ರಪಂಚದೆಲ್ಲೆಡೆ ವಿದ್ವಾಂಸರಿಂದ ನಿರಂತರವಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿವೆ. ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ, ದೂರ ದೂರದ ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಕಥೆ ಹೊಸ ಹೊಸ ಆಯಾಮಗಳನ್ನು ಪಡೆದಿವೆ. ಆಯಾ ಪ್ರದೇಶದ ಜನರ ಆಶಯದಂತೆ, ವಿವಿಧ ಕಾಲಘಟ್ಟಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆದಿರುವ ಹಲವಾರು ಮಾರ್ಪಾಡುಗಳನ್ನೂ ಹಾಗೂ ಸೇರ್ಪಡೆಗಳನ್ನೂ ಎಲ್ಲೆಡೆ ತೆರೆದ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದ ಸ್ವಾಗತಿಸುತ್ತಲೇ ಇರುವುದರಿಂದಲೇ, ಇಂದಿಗೂ ರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸ್ತುತವಾಗುತ್ತದೆ.

❑

# ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಸಮೀಕ್ಷೆ

ಡಾ. ಎನ್.ಆರ್. ಲಲಿತಾಂಬ

ಕನ್ನಡಿಗರು ನಾನಾ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹಾಡಿದ್ದಾರೆ, ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ನಡುಗನ್ನಡದ ಶ್ರೇಷ್ಠಕವಿ ಕೃಷ್ಣ ಭಕ್ತ ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನು ತಾನು ಕೃಷ್ಣಕಥೆಯನ್ನು ಬರೆಯಲು ಆಯ್ಕೆಮಾಡಿಕೊಂಡುದರ ಕಾರಣವನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾ "ತಿಣುಕಿದನು ಫಣಿರಾಯ ರಾಮಾಯಣದ ಕವಿಗಳ ಭಾರದಲಿ ತಿಂತಿಣಿಯ ರಘುವರ ಚರಿತೆಯಲಿ ಕಾಲಿಡಲು ತೆರಪಿಲ್ಲ" ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು.

ರಾಮಾಯಣವು ನುಡಿದಂತೆ ನಡೆಯುವ ವಚನ ಪಾಲನೆಯ ಜೀವನ ಸೂತ್ರವೂ, ಮಾನವಜೀವನದ ಆತ್ಮ ಪರೀಕ್ಷಣೆಯ ಒಳನೋಟವೂ ಮಾನವ ಹೃದಯದ ಸಂಸ್ಕಾರಕ್ಕೆ ತಳಹದಿಯೂ, ಸತ್ವಪರೀಕೆಯ ನಿಕಷವೂ ಆಗಿದೆ. ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಕಾವ್ಯ ಸೌಂದರ್ಯ, ಚರಿತ್ರೆ, ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ, ಲೋಕಾನುಭವ, ದರ್ಶನಗಳ ಸಾರವೇ ಆಗಿರುವುದು ರಾಮಾಯಣದ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. "ಶ್ರೀ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ವಿರಚಿತ ಮಹಾಕಾವ್ಯ ರಾಮಾಯಣವು ಭಾರತೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಆಗರ; ಆದರ್ಶಮಾನವ ಸ್ವಭಾವ ವೈಚಿತ್ರ್ಯಗಳನ್ನು ನೈಜವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ ಕಲಾಮಂದಿರ" ಎಂದು ಎಸ್.ಎಸ್.ಬ್ಯಾತನಾಳರು, "ರಾಮಾಯಣ ಎಂಬುದು ಒಂದು ಸಂಕೇತ, ಅದೊಂದು ಮನುಷ್ಯನ ವಿಕಾಸ ಯಾತ್ರೆ ಈ ವಿಕಾಸ ಆಂತರಿಕಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ್ದು. ಆಂತರಿಕ ಶಕ್ತಿ ಬೆಳೆದಂತೆ ಬಾಹ್ಯ ಶಕ್ತಿಗೆ ಹೊಸ ಚಾಲನೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ" ಎಂದು ಮಲ್ಲೇಪುರಂ. ಜಿ. ವೆಂಕಟೇಶರವರು ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಪಡುತ್ತಾರೆ. ರಾಮಕಥಾ ವಸ್ತುವು ಮೊದಲಿಗೆ ಜನಪದರ ಬಾಯಲ್ಲಿದ್ದು, ನಂತರದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಅದು ಭಾರತೀಯ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಹಲವು ಕವಲಾಗಿ ಹರಡಿಕೊಂಡಿದೆ. ಬೌದ್ಧ, ಜೈನ, ವೈದಿಕರಲ್ಲಿ ಯಾರಿಂದ ಮೊದಲಿಗೆ ಲಿಖಿತ ಸ್ವರೂಪ ಪಡೆಯಿತೆಂಬುದರ ಮತ್ತು ಯಾವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಎಂಬುದರ ಬಗೆಗೆ ಒಮ್ಮತವಿಲ್ಲ.

ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ರಾಮಕಥೆಯು ವಿವಿಧ ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಶಿಲ್ಪ, ಜಾನಪದ, ಕಾವ್ಯ, ನಾಟಕ, ಕಥೆ, ಯಕ್ಷಗಾನ, ಗದ್ಯ, ವಿಮರ್ಶೆ, ಕವಿತೆ ಮೊದಲಾದ ವಿವಿಧ ರೂಪಗಳಲ್ಲಿ ಸತ್ವಶಾಲಿಯಾಗಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಗೊಂಡಿದೆ. ಕಲ್ಯಾಣ ಚಾಲುಕ್ಯರ ಕಾಲದ ಪಟ್ಟದಕಲ್ಲಿನ ದೇವಾಲಯದ ಭಿತ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಘಟನೆಗಳ ಸುಂದರ ಪಟ್ಟಿಕಾ ಶಿಲ್ಪಗಳು ಮನಸೆಳೆಯುತ್ತವೆ. ಆ ನಂತರದ ಹೊಯ್ಸಳರು, ವಿಜಯನಗರ ಅರಸರ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮತ್ತಷ್ಟು ವೈವಿಧ್ಯಮಯವಾಗಿ ಅವು ಬಿತ್ತರಗೊಂಡಿವೆ. ಭಕ್ತಿ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ ವಿಶೇಷತೆ ಪಡೆದಿರುವ ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯೇ ಮೈವೆತ್ತಂಥ ರಾಮನ ಬಂಟ ಹನುಮಂತನ ಗುಡಿಗಳು ಹಳ್ಳಿ ಹಳ್ಳಿಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲೂ ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ. ಕರ್ನಾಟಕದ ವೀರ ಪರಂಪರೆಯ ಸ್ವಾಮಿನಿಷ್ಠ ಬಂಟವೃತ್ತಿ, ಜೋಳದ ಪಾಳಿಗಾಗಿ ಒಡೆಯನಿಗಾಗಿ ಪ್ರಾಣ ನೀಗಿದ, ಮಹಾಮರಣಕ್ಕೆ ಸಂದ ಲೆಂಕರು ಜೋಳವಾಳಿಗಳ ಆದರ್ಶಕ್ಕೆ ಆಂಜನೇಯ ಮತ್ತು ಗರುಡರೇ ಸ್ಫೂರ್ತಿ. ಆ ಕಾರಣದಿಂದ ರಾಮನಷ್ಟೇ ಹನುಮನೂ ಕನ್ನಡಿಗರ ಜನಮಮಾನಸದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿದ್ದಾನೆ. ಕನ್ನಡ ನಾಡು ಹನುಮನು ಉದಿಸಿದ ನಾಡೆಂದೇ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದ್ದು, ರಾಮಾಯಣದ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ, ಪಂಪಾಸರೋವರಗಳು ರಾಮನ ಪಾದಧೂಳಿನಿಂದ ಪವಿತ್ರವಾದ ತಾಣಗಳೆಂಬ ಪವಿತ್ರ ಭಾವನೆಯಿದೆ.

ಇಂತಹ ಗಾಢವಾದ ಪ್ರಭಾವದಿಂದಾಗಿ ಕನ್ನಡಿಗರು ನಾನಾ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹಾಡಿದ್ದಾರೆ, ಅನುಸಂಧಾನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ನಡುಗನ್ನಡದ ಶ್ರೇಷ್ಠಕವಿ ಕೃಷ್ಣ ಭಕ್ತ ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನು ತಾನು ಕೃಷ್ಣಕಥೆಯನ್ನು ಬರೆಯಲು ಆಯ್ಕೆಮಾಡಿಕೊಂಡುದರ ಕಾರಣವನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾ "ತಿಣುಕಿದನು ಫಣಿರಾಯ ರಾಮಾಯಣದ ಕವಿಗಳ ಭಾರದಲಿ ತಿಂತಿಣಿಯ ರಘುವರ ಚರಿತೆಯಲಿ ಕಾಲಿಡಲು ತೆರಪಿಲ್ಲ" ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಈ ಮಾತು ಅತಿಶಯೋಕ್ತಿ ಎನಿಸಿದರೂ ಆ ಮಾತಿನ ಭಾವವನ್ನು ನಾವು ಗ್ರಹಿಸಬೇಕಿದೆ. ತನ್ನ ಕಾಲಕ್ಕಿಂತ ಮೊದಲು ರಚಿತವಾಗಿರುವ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕುರಿತು ಈ ಗಮನಿಕೆಯನ್ನು ಕವಿ ಮಾಡದೆ ಆತ ಸಂಸ್ಕೃತದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ, ಆನಂದ, ಆಧ್ಯಾತ್ಮ, ಅದ್ಭುತಾದಿ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನೂ ಪದ್ಮ, ಸ್ಕಂದ, ಬ್ರಹ್ಮ, ವಿಷ್ಣು, ಶಿವ, ಹರಿವಂಶ ಮೊದಲಾದ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿಯ ರಾಮಕಥೆಯನ್ನು, ಸಂಸ್ಕೃತ ಕಾವ್ಯ, ನಾಟಕಾದಿ ಲಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯಗಳಲ್ಲಿಯ ರಾಮಕಥೆಗಳನ್ನೂ ಗಮನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ ಎಂದು ಭಾವಿಸಬಹುದು. ಅಲ್ಲದೆ ಆತ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪ್ರಾಕೃತ ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನೂ ಗಮನಿಸಿರುವ ಸಾಧ್ಯತೆಯನ್ನು ತಳ್ಳಿಹಾಕಲಾಗದು. ಏಕೆಂದರೆ ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳ್ಯಾವೂವೂ ನಮಗೆ ದೊರಕದಿರುವ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ, ಅವು ರಚಿತವಾಗಿರುವ ಸಾಧ್ಯತೆ ಕಡಿಮೆಯೆಂದು ಭಾವಿಸಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಹಾಗಾಗಿ ತನ್ನ ಕಾಲ್ಲದಲ್ಲಿ ಪ್ರಚಲಿತವಾಗಿದ್ದ ಜೈನರಾಮಾಯಣಗಳ ವಿಪುಲತೆಯನ್ನು ಖಂಡಿತವಾಗಿ ಅವನು ಗಮನಿಸಿ ಈ ಮಾತನ್ನು ಹೇಳಿರಬೇಕೆಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ತರ್ಕಿಸಿದ್ದಾರೆ[1] ರಾಮ ಕಥೆಯನ್ನು ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯು ಬರಹಕ್ಕೆ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡ ಕಥಾ ಸ್ವರೂಪಕ್ಕಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾಗಿ ಬೌದ್ಧ, ಜೈನ

ಪರಂಪರೆಗಳು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ. ಬುದ್ಧ ಮಹಾವೀರರ ಕಾಲಕ್ಕಿಂತ ಮುಂಚೆಯೇ ಜೈನ ಮತ್ತು ಬೌದ್ಧ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳು ಮೌಖಿಕ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಇದ್ದುವೆಂಬುದನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಒಪ್ಪಿದ್ದಾರೆ. ಬೌದ್ಧ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮ ಕಥೆಗಳು ಜಾತಕ ಕಥೆಗಳ ರೂಪದಲ್ಲಿದ್ದು ಕ್ರಿ.ಪೂ. 5ನೇ ಶತಮಾನದಿಂದಲೇ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ. ಪಾಳೀ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿರುವ ಇವುಗಳು ಕ್ರಿ.ಶ. 8ನೇ ಶತಮಾನದ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಚೀನೀ ಭಾಷೆಗೆ ಅನುವಾದಗೊಂದಿವೆ ಆದರೆ ಬೌದ್ಧಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳಾವುವೂ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ದೊರಕಿಲ್ಲ.

ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ರಾವಣರ ಕಥೆಯು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ 20ನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರನಾದ ಮುನಿ ಸುವ್ರತನ ಕಾಲದ 8ನೇ ಬಲದೇವ, ವಾಸುದೇವರೆಂಬುದಾಗಿ ನಿರೂಪಿತವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯು ಮತ್ತಷ್ಟು ಪ್ರಾಚೀನವಾಗಿರುವುದನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಿದೆ. ಲಿಖಿತ ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಕ್ರಿ.ಪೂ. 3ನೇ ಶತಮಾನದ ಶ್ವೇತಾಂಬರ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಸ್ಥಾನಾಂದ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದು ಆನಂತರದಲ್ಲಿ ಕೂಚಿಭಟ್ಟಾರಕ, ನಂದಿಮುನಿ, ಕವಿಪರಮೇಷ್ಟಿಗಳು, ರವಿಷೇಣ, ವೀರಸೇನ, ಸಿದ್ಧಸೇನ, ಪದ್ಮನಂದಿ, ಗುಣಭದ್ರಾಚಾರ್ಯ, ಸಕಲಕೀರ್ತಿಗಳ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ಬಂದಿತು. ಕನ್ನಡದ ಕವಿಗಳ ಮೇಲೆ ಸಂಸ್ಕೃತ ಹಾಗೂ ಪ್ರಾಕೃತ ಜೈನ ಕವಿಗಳ ಪ್ರಭಾವವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಈ ಎಲ್ಲ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳತೊಡಗಿದವು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಚಾವುಂಡರಾಯ, ನಾಗಚಂದ್ರ, ಮಾಘಣಂದಿಸಿದ್ಧಾಂತಿ, ಕುಮುದೇಂದು, ನಾಗರಾಜ ಮುಂತಾದವರು ಮುಂದುವರೆಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಪುರುಷೋತ್ತಮನೆಂದು ಗೌರವಿಸಿದರೂ ಅವನಿಗಿಂತಲೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಹಾಗೂ ರಾವಣರ ಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯಿದೆ. ವಿಮಲಸೂರಿಯ ಪ್ರಾಕೃತ 'ಪವುಮಚರಿಅ' ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ನಾಗಚಂದ್ರನು 'ರಾಮಚಂದ್ರಚರಿತಪುರಾಣವನ್ನು (ಕ್ರಿ.ಶ. 12ನೇ ಶತಮಾನ) ಕುಮುದೇಂದು ರಾಮಾಯಣ (12ನೇಶತಮಾನ) ಬಂಧುವರ್ಮನ 'ಜೀವಸಂಬೋಧನೆ (12ನೇ ಶತಮಾನ), ಶಿಶುಮಾಯಣನ ಅಂಜನಾಚರಿತ್ರೆ (15ನೇ ಶತಮಾನ) ದೇವಪ್ಪ ಕವಿಯ 'ರಾಮವಿಜಯಕಾವ್ಯ' (17ನೇ ಶತಮಾನ), ದೇವಚಂದ್ರನ 'ರಾಮಾವತಾರ (19ನೇಶತಮಾನ) ಚಂದ್ರಸಾಗರವರ್ಣಿಯ ಜೈನಭಾರತ (19ನೇಶತಮಾನ) ಮುಂತಾದ ಕಾವ್ಯಗಳು ರಚಿಸಿತವಾಗಿವೆ. ಸಂಘದಾಸ (ಕ್ರಿ.ಶ. 7) ಹರಿಷೇಣ (ಕ್ರಿ.ಶ. 10)ರು ಪ್ರಾಕೃತ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಬರೆದ ಕಾವ್ಯಗಳು ವಿಮಲಸೂರಿ ಹಾಗೂ ಗುಣಭದ್ರ ಪರಂಪರೆಗೆಗಿಂತ ರಾಮೋಪಾಖ್ಯಾನ ಅಥವಾ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದೊಂದಿಗೆ ನಿಕಟ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವದರಿಂದ ಇವರದು ಬೇರೊಂದು ಪರಂಪರೆಯೆಂದು ಗುರುತಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ಸಂಘದಾಸ ಪರಂಪರೆಯ ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯಗಳು ಲಭ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದು ಅಭಿಪ್ರಾಯವಿದೆ.[2] ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನುವಾದಗೊಂಡಿರುವ ಹಾಗೂ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣ ರಚನೆಯ ಮೇಲೆ ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳೂ ಪ್ರಭಾವಿಸಿವೆ. ಎಲ್ಲ ಹದಿನೆಂಟು ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲೂ ರಾಮಕಥೆಯಿದೆ. ಕೆಲವದರಲ್ಲಿ ಬಾಲಕಾಂಡದಿಂದ ಹಿಡಿದು ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದವರೆಗಿದ್ದರೆ ಕೆಲವದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡದ ಕಥೆಯಿದೆ. ಪುರಾಣಗಳ ಅಂತರ್ಗತ ಶೇಷರಾಮಾಯಣ, ಆನಂದರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಗೆ ಹತ್ತಿರವಾಗುವಂತೆ ಕಥೆಗಳನ್ನು ರೂಪಿಸಿರುವುದರಿಂದ ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯ ಕಥೆಯು ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಕವಲಿನಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಇವುಗಳಿಂದಲೂ ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳು ಸ್ಫೂರ್ತಿ ಪಡೆದಿದ್ದಾರೆ. ಆನಂದ ರಾಮಾಯಣ, ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣ, ಆಧ್ಯಾತ್ಮ ರಾಮಾಯಣ, ನಾರದ ರಾಮಾಯಣ, ವಾಸಿಷ್ಠರಾಮಾಯಣ, ಮನೋಹರ ರಾಮಾಯಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನುವಾದಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ಕಾರಣದಿಂದ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲಿ ಜಾನಪದ, ಬೌದ್ಧ, ಜೈನ, ಉಪನಿಷತ್, ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ಆಧ್ಯಾತ್ಮ, ಅದ್ಭುತ, ಇತ್ಯಾದಿ ರಾಮಾಯಣದ ಹಲವು ವೈವಿಧ್ಯಮಯವಾದ ಕಥಾ ಕವಲುಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ. ಅಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೇ ಭಾರತೀಯ ಇತರ ಭಾಷೆಗಳು ಹಾಗೂ ಥಾಯ್ ಭಾಷೆಯಂತಹ ವಿದೇಶೀ ಭಾಷೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ರಾಮಾಯಣಗಳೂ[3] ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನುವಾದಗೊಂಡಿರುವುದರಿಂದ ಕನ್ನಡಿಗರಿಗೆ ಬಹುಮುಖಿಯಾಗಿ ರಾಮಾಯಣ ಅನುಸಂಧಾನಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಒದಗಿದೆ ಎಂದು

ಹೇಳಬಹುದು. ಇಂತಹ ಕಥೆಗಳು ಕಾಲಾಂತರದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲ ಬಗೆಯ ವ್ಯಕ್ತಿಗತ ಮತ್ತು ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಗಡಿಗಳನ್ನು, ಆವರಣಗಳನ್ನು ದಾಟುತ್ತವೆ ಅಲ್ಲದೆ, ಅವುಗಳು ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವವರ 'ಚಹರೆ'ಗಳನ್ನು ಮತ್ತು ಕೇಳುಗನ 'ಬಣ್ಣ'ಗಳನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡು ಬಿಡುತ್ತವೆಂಬುದು ನಿಜ. ಜೊತೆಗೆ ಆಯಾಯ ರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳು ರಚಿತವಾದ ಕಾಲದ ಆಶಯ ಮತ್ತು ಆಕೃತಿಗಳು ಸಹ ಪ್ರಭಾವ ಬೀರಿರುವುದರಿಂದ, ವಿಭಿನ್ನ ಚಹರೆಗಳು, ಬಣ್ಣಗಳೂ ಆಯಾಮಗಳು, ದೃಷ್ಟಿಕೋನ, ದರ್ಶನಗಳೂ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗೆ ಒದಗಿವೆ. ಹಾಗಾಗಿ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಭವ್ಯತೆಯು ತನ್ನ ಮೂಲ ಸತ್ವವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡಿಲ್ಲ. ಅದು ಮತ್ತಷ್ಟು ವಿಸರಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಕ್ರಿ.ಶ. 1999ರ ಅಕ್ಟೋಬರಿನಲ್ಲಿ ಕೌಲಾಲಂಪುರದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಜಾಗತಿಕ ಸಮ್ಮೇಳನದಲ್ಲಿ ಉಪನ್ಯಾಸ ನೀಡುತ್ತಾ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ 600ಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕುರಿತ ಕೃತಿಗಳಿರುವ ಬಗೆಗೆ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀಯುತ ವೆಂಕಟಾಚಲ ಶಾಸ್ತ್ರಿಯವರು ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣ ಗ್ರಂಥಸೂಚಿ ತಯಾರಿಸಿದ್ದು, ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ ಈಗ ಸಾವಿರವನ್ನು ದಾಟಿದ್ದರೆ ಆಶ್ಚರ್ಯವಿಲ್ಲವೆನ್ನುತ್ತಾರೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆ ಈಗಲೂ ಕನ್ನಡ ಬರಹಗಾರರಿಗೆ ಕೃತಿ ರಚನೆಗೆ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ನೀಡುತ್ತಲೇಯಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತಹ ಅನೇಕ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಕಥೆಗಳು ಕನ್ನಡ ಜನಪದದಲ್ಲಿ ಹೇರಳವಾಗಿ ದೊರಕಿವೆ. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಮೂಲ ಜನಪದ ತ್ರಿಪದಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವಿದ್ದಿತು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ "ಜನಕರಾಯನಮಗಳು ಗಿಡಕೆ ತೊಟ್ಟಿಲ ಕಟ್ಟಿ ಲವಕುಶರನಿಟ್ಟು ತೂಗ್ಯಾಳ. ....."ಇತ್ಯಾದಿ ದೊರಕಿರುವ ಕೆಲವು ಬಿಡಿ ತ್ರಿಪದಿಗಳು ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ.[4] ಕನ್ನಡ ಜನಪದ ರಾಮಾಯಣದ ಸಂಗ್ರಹ ಕಾರ್ಯವು ನಡೆದಿದೆ. ಕಂಸಾಳೆಯವರು, ತಂಬೂರಿಯವರು ಹಾಡುವ ರಾಮನ ಕಥೆಗಳು ಮೂಲ ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಬದಲಾವಣೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿಲ್ಲದಿದ್ದರೂ, ಅವುಗಳ ಬಾಹ್ಯ ಸ್ವರೂಪ ಕೆಲವು ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ಕಂಸಾಳೆ ಸಂಪ್ರದಾಯದವರ 'ಲವಕುಶ ಕಾಳಗ' ತಂಬೂರಿಯ ದೊಂಬಿದಾಸರ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ' ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು.

ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಲಿಖಿತರೂಪದಲ್ಲಿ ದೊರೆತಿರುವ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನು ಪದ್ಯ, ಗದ್ಯ ಹಾಗೂ ನಾಟಕಗಳೆಂದು ಮೂರು ಭಾಗಗಳಾಗಿ ನೋಡಬಹುದು. ಹಲವು ಭಾಷೆಯಿಂದ ರಾಮಾಯಣಗಳು ಅನುವಾದಗೊಂಡಿವೆ. ಜೊತೆಗೆ ವಿಪುಲವಾಗಿ ನಡೆದಿರುವ ಅಧ್ಯಯನಗಳು, ವಿಮರ್ಶಾ ಸಾಹಿತ್ಯವು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯು ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಚಂಪು, ಷಟ್ಪದಿ, ತ್ರಿಪದಿ, ಚೌಪದಿ, ದ್ವಿಪದಿ, ಸಾಂಗತ್ಯ, ಗೀತರೂಪಕಗಳು, ಹೊಸಗನ್ನಡ ಕವಿತೆ ಮುಂತಾದ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಷಟ್ಪದಿಕಾವ್ಯಗಳು ಹೆಚ್ಚಿವೆ. **ಚಂಪೂ ಪ್ರಕಾರದಲ್ಲಿ** 'ರಾಮಚಂದ್ರ ಚರಿತ ಪುರಾಣ' (ನಾಗಚಂದ್ರ ಕ್ರಿ.ಶ. 12), 'ಜೀವಸಂಬೋಧನೆ' (ಬಂಧುವರ್ಮ ಕ್ರಿ.ಶ. 17). 'ರಾಮಕಥಾವತಾರ' (ದೇವಚಂದ್ರ ಕ್ರಿ.ಶ. 18–19) ರಚಿತವಾಗಿದ್ದರೆ **ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ** 'ತೊರವೆರಾಮಾಯಣ' (ನರಹರಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 15), ರಾಮಧಾನ್ಯಚರಿತೆ' (ಕನಕದಾಸ ಕ್ರಿ.ಶ. 15), ಜೈಮಿನಿಭಾರತ (ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ ಕ್ರಿ.ಶ. 1550) 'ಕೌಶಿಕರಾಮಾಯಣ (ಬತ್ತಲೇಶ್ವರ ಕ್ರಿ.ಶ. 15), ಕುಮುದೇಂದು ರಾಮಾಯಣ (ಕುಮುದೇಂದು ಕ್ರಿ.ಶ. 15) 'ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆ', **(ನಾರಾಯಣ ಕವಿ ಕ್ರಿಶ 1530),** ಜಿನರಾಮಾಯಣ (ಚಂದ್ರಸಾಗರವರ್ಣಿ ಕ್ರಿ. ಶ. 17), ಷಟ್ಪದಿ ರಾಮಾಯಣ (ವೆಂಕಾಮಾತ್ಯ ಕ್ರಿ.ಶ. 18) 'ಶೇಷರಾಮಾಯಣ (ಸೋಸಲೆ ಅಯ್ಯಾಶಾಸ್ತ್ರಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 20), ನಂಜನಗೂಡು ಸುಬ್ಬಾಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು (ಕ್ರಿ.ಶ. 1834–1906) 'ಉತ್ತರ **ರಾಮಾಯಣ' (ಯೋಗೀಂದ್ರ),** ಉತ್ತರರಾಮಾಯಣಂ' (ತಿರುಮಲೆ ವೈದ್ಯ), 'ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥಾ' (ನರಸ ಕವಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 1612) ಕೃತಿಗಳು ಬಂದಿವೆ. **ಸಾಂಗತ್ಯದಲ್ಲಿ**: 'ಅಂಜನಾ ಚರಿತ್ರೆ' (ಶಿಶುಮಾಯಣ ಕಿ.ಶ. 15), ರಾಮವಿಜಯ ಚರಿತ್ರೆ (ದೇವಪ್ಪಕವಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 17), ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ ಕವಯಿತ್ರಿ ಯಶೋಧೆಯು (ಕ್ರಿ.ಶ. 17–18ನೇ ಶತಮಾನ) 'ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗ', ಸೀತಾ ಕಲ್ಯಾಣ' (ಹೆಳವನಕಟ್ಟೆ ಗಿರಿಯಮ್ಮ ಕ್ರಿ.ಶ. 17) ಮುಂತಾದವು ರಚಿತವಾಗಿವೆ.

ಆಧುನಿಕ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ' (ಕುವೆಂಪು ಕ್ರಿ.ಶ. 20), 'ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ' (ಮಾಸ್ತಿವೆಂಕಟೇಶ ಅಯ್ಯಂಗಾರ್

ಕ್ರಿ.ಶ. 20), 'ನವನೀತರಾಮಾಯಣ' (ಮುಳಿಯ ತಿಮ್ಮಪ್ಪಯ್ಯ ಕ್ರಿ.ಶ. 20), 'ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾನ್ವೇಷಣಂ' (ವೀರಪ್ಪ ಮೊಯಿಲಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 20) ಇವು ಪ್ರಮುಖವಾದವುಗಳು. ವಿಶಿಷ್ಟರಚನೆಗಳಾಗಿ 'ಶ್ರೀ ರಾಮ ಪರೀಕ್ಷಣಂ' (ಡಿ.ವಿ.ಜಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 20) ಹಾಗೂ ಗೀತ ರೂಪಕಗಳನ್ನು (ಪು.ತಿ. ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್ ಕ್ರಿ.ಶ.20) ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಬಹುದು. ಇವಲ್ಲದೆ ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಹೊಸ ಕೃತಿಗಳೂ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ.

ರಾಮಕಥೆಯನ್ನು ಒಳಗೊಂಡ ಗದ್ಯಪ್ರಕಾರದ ಬರಹಗಳು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾಗಿದ್ದು, ಇದರಲ್ಲಿ ಹಳಗನ್ನಡದ ತ್ರಿಷಷ್ಠಿ ಲಕ್ಷಣ ಮಹಾಪುರಾಣ (ಚಾವುಂಡರಾಯ ಕ್ರಿ.ಶ. 10) ಪುಣ್ಯಾಸ್ರವ (ನಾಗರಾಜ, ಕ್ರಿ.ಶ. 12ನೇ ಶತಮಾನ) ಶ್ರೀರಾಮಾಶ್ವಮೇಧಂ' (ಮುದ್ದಣ ಕ್ರಿ.ಶ.19) ಹೊಸಗನ್ನಡದ 'ರಾಮ ಸೀತೆ ರಾವಣ' ಕಾದಂಬರಿ, (ಹೆಚ್.ವಿ. ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮ, ಕ್ರಿ.ಶ. 20) ಮೈಥಿಲಿ ಕಾದಂಬರಿ ಗಂಗಯ್ಯ ಕಂಬಾಳ್, ಕ್ರಿ.ಶ. 21), ಪೋಲಂಕಿ ರಾಮಮೂರ್ತಿಯವರ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸೀತಾಯಣ, ಜಯಂತಿ ಮನೋಹರಿರವರ 'ಸೀತಾಯಣ' ಕೃತಿಗಳು ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿವೆ.

ಇನ್ನು ನಾಟಕ ಪ್ರಕಾರವನ್ನು ಗಮನಿಸುವಾಗ ಕನ್ನಡ, ಸಂಸ್ಕೃತ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ನಾಟಕಗಳು, ಯಕ್ಷಗಾನ ಪ್ರಸಂಗಗಳು, ವೃತ್ತಿರಂಗಭೂಮಿ ಮತ್ತು ಹವ್ಯಾಸಿ ರಂಗಭೂಮಿಯ ನಾಟಕಗಳು, ಹೊಸ ಪ್ರಯೋಗಗಳು, ನೃತ್ಯರೂಪಕಗಳು ಇತ್ಯಾದಿಗಳ ರಚನೆಯಾಗಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು.

ಉಪಲಬ್ಧವಿರುವ ಕನ್ನಡದ ಮೊದಲಕೃತಿ 'ಕವಿರಾಜಮಾರ್ಗ'ದಲ್ಲಿ (ಕ್ರಿ.ಶ 850) ರಾಮಕಥೆಯ ಹನ್ನೊಂದು ಪದ್ಯಗಳಿವೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ 2 ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಶ್ರೀವಿಜಯ ಕೃತವೆಂದು, ಉಳಿದವು ಅವನಿಗಿಂತ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಪದ್ಯಗಳಾಗಿವೆ ಎಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಶ್ರೀವಿಜಯನು 'ರಘುವಂಶ ಪುರಾಣವು' ಎಂಬ ಕೃತಿಯನ್ನು ಬರೆದಿರಬಹುದೆಂಬ ಊಹೆಯಿದೆ. ಇದು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯದಾಗಿದ್ದು, ತನ್ನ ಆಶ್ರಯದಾತನಿಗೆ ಸಮೀಕರಿಸಿ ಬರೆದಿರಬಹುದೆಂಬ ಊಹೆಯಿದೆ. 'ಪಂಪ ಭಾರತ'ದಲ್ಲಿ ಏಳು ಬಾರಿ ರಾಮಾಯಣದ ಉಲ್ಲೇಖವಿರುವುದನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯದ್ದೇ ಆಗಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. ಅವನ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಜನರಲ್ಲಿ ನೆಲೆಯಾಗಿದ್ದ ಕಥೆಯನ್ನಾಧರಿಸಿ ರಚಿತವಾದ ಮಾತುಗಳಿರುವ ಸಾಧ್ಯತೆಯಿದೆ.[5] ಪೊನ್ನನ 'ಭುವನೈಕ ರಾಮಾಭ್ಯುದಯ' ಮತ್ತು ಶ್ರೀವಿಜಯನ 'ರಘುವಂಶ ಪುರಾಣ'ಗಳು ನಮಗೆ ಉಪಲಬ್ಧವಿಲ್ಲ. ಹಾಗಾಗಿ ಇವುಗಳ ರಾಮಕಥೆಯ ಪರಂಪರೆ ಯಾವುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಹೇಳುವುದು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ. ಕನ್ನಡ ಲಕ್ಷಣ ಗ್ರಂಥಗಳಾದ 'ಕಾವ್ಯವಲೋಕನ'ದಲ್ಲಿ ಹದಿಮೂರು ಪದ್ಯಗಳು, 'ಶಬ್ದಮಣಿ ದರ್ಪಣದಲ್ಲಿ ವೈದಿಕ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿತವಾಗಿರುವ ಎಂಟು 'ಲಕ್ಷ್ಯಪದ್ಯ'ಗಳು ದೊರಕಿವೆ. ಹಾಗೇ ಇವು ಜೈನ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದವುಗಳು ಆಗಿರುವ ಸಾಧ್ಯತೆಯಿದೆ. ಪ್ರಸ್ತುತ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಇದುವರೆಗೆ ದೊರಕಿರುವ ಅನುವಾದಿತ ಕನ್ನಡದ ರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳು, ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶಾ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಹೊರತು ಪಡಿಸಿದ ಗದ್ಯ, ಪದ್ಯ, ಕೃತಿಗಳ ಕಿರು ಪರಿಚಯವನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

### ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳು

ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡಲು ನಾಗಚಂದ್ರನಿಗಿಂತ ಹಿಂದಿನ ಯಾವ ಕೃತಿಗಳು ನಮಗೆ ದೊರಕಿಲ್ಲ, ದೊರಕಿರುವ ರಾಮಾಯಣದ ಕೆಲವು ಪದ್ಯಗಳು ಕೃತಿಗಳ ಹೆಸರುಗಳ ಆಧಾರದಿಂದ ಅವು ಯಾವ ಪರಂಪರೆಗೆ ಸೇರಿದವುಗಳೆಂದು ಖಚಿತವಾಗಿ ಹೇಳಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ನಾಗಚಂದ್ರನ 'ರಾಮಚಂದ್ರಚರಿತ ಪುರಾಣಂ' (ಕ್ರಿ.ಶ. 1040) ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ದೊರಕಿರುವ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಮೊಟ್ಟಮೊದಲ ರಾಮಾಯಣವಾಗಿದೆ. ಇದು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಗೆ ಸೇರಿದ್ದು, ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣ, ಕಥಾಪ್ರಕಾರದಿಂದಲೂ ಕವಿ ಪ್ರಭಾವಿತನಾಗಿ ಕೆಲವು ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದು ಚಂಪೂಪ್ರಕಾರದಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿದ್ದು, ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣದೊಂದಿಗೆ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಅಂತರ್ಗತವಾಗಿ ಹೊಂದಿದೆ. ಇಕ್ಷ್ವಾಕು ವಂಶದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಅರಸರು ಆಗಿಹೋದ ನಂತರದಲ್ಲಿ ಅನರಣ್ಯನೆಂಬ ದೊರೆ ಪ್ರಖ್ಯಾತನಾಗಿದ್ದನು. ಅವನಿಗೆ ಅನಂತರಥ ಮತ್ತು

ದಶರಥರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳಿರುತ್ತಾರೆ. ರಾವಣನು ಜಾನಕಿಯ ಕಾರಣದಿಂದ ದಾಶರಥಿಯ ಕೈಯಲ್ಲಿ ಮಡಿಯುತ್ತಾನೆಂಬ ಬವಿಷ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದು ಅದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಲು ದಶರಥ ಮತ್ತು ಜನಕರನ್ನು ಕೊಲ್ಲಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು ನಡೆಯುತ್ತವೆ. ಆದರೆ ಅವರ ಬದಲಿ ಲೆಪ್ಪದ ಗೊಂಬೆಗಳ ತಲೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಿ ಅವರನ್ನು ಕಾಪಾಡುತ್ತಾರೆ. ಮುಂದೆ ದಶರಥನಿಗೆ ಅಪರಾಜಿತೆ, ಸುಮಿತ್ರೆ, ಸುಪ್ರಭೆ, ಕೈಕೆಯರಿಂದ ಅವನಿಗೆ ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಶತೃಜ್ಞ ಹಾಗೂ ಭರತರು ಜನಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಟಿಯ ವಿಚಾರವಿಲ್ಲ. ಜನಕನಿಗೆ ಪ್ರಭಾಮಂಡಲನೆಂಬ ಮಗನೂ ಸೀತೆ ಎಂಬ ಮಗಳೂ ಜನಿಸುತ್ತಾರೆ. ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಜನಕನ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಶತ್ರುಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತವಾಗಿಸಿದಾಗ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು ವಿವಾಹ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ದಶರಥನು ರಾಮನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿ ಭರತನೊಡನೆ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಹೋಗುವುದನ್ನು ತಿಳಿದು ಕೈಕೆ ತನ್ನ ಸ್ವಯಂವರದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ದಶರಥನಿಗೆ ಮಾಡಿದ್ದ ಸಹಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಪಡೆದಿದ್ದವರವನ್ನು ನೆನೆದು ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ ರಾಮನಿಗೆ ವನವಾಸವನ್ನು ಭರತನಿಗೆ ರಾಜ್ಯವನ್ನೂ ಬೇಡುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆ ಮತ್ತು ಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಂದಿಗೆ ರಾಮ ವನವಾಸಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಾನೆ. ಮುಂದೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಶಂಬೂಕನ ತಲೆಯನ್ನು ಕತ್ತರಿಸಿಬಿಡುತ್ತಾನೆ. ಅವನ ತಾಯಿ ಚಂದ್ರನಖಿ ಮಗನ ಸಾವಿಗೆ ಸೇಡು ತೀರಿಸಲುಹೋಗಿ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರಿಗೆ ಮರುಳಾಗಿ ವಿವಾಹಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಕೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆಯ ಮುಗುಳ್ನಗೆ ಅವಮಾನಿತಳಾಗಿ ಗಂಡ ಖರನನ್ನು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಪ್ರೇರೇಪಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಖರನಿಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡಲು ಬಂದ ಅವಳ ಸೋದರ ರಾವಣನು ಸೀತೆಯ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಕಂಡುಮೋಹಿತನಾಗಿ ಅವಲೋಕಿನೀವಿದ್ಯೆಯ ಸಹಾಯದಿಂದ ರಾಮನನ್ನು ಸೀತೆಯಿಂದ ಅಗಲಿಸಿ ಅವಳನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿ ಲಂಕೆಯ ಮಣಿಮಾಡದಲ್ಲಿ ಇರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಯಾರ ಬುದ್ಧಿವಾದವೂ ರಾವಣನಿಗೆ ರುಚಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಬಂದ ರಾಮ ಸುಗ್ರೀವರ ಸಖ್ಯವಾಗಿ ಸೀತಾನ್ವೇಷಣೆ ನಡೆದು, ಹನುಮಂತನಿಂದ ಚೂಡಾಮಣಿ ಪ್ರದಾನವಾಗುತ್ತದೆ. ಸುಗ್ರೀವ, ವಿಯಚ್ಚರರ ದೊಡ್ಡ ಸೈನ್ಯದೊಂದಿಗೆ ರಾವಣನನ್ನು ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಎದುರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ರಾವಣ ವಧೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಈ ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯ ಜೊತೆಗೆ 'ದಶವದನ ವಂಶವರ್ಣನಂ' ಎಂಬ 9ನೇ ಆಶ್ವಾಸದಲ್ಲಿ, ಕೊನೆಯ 25 ಪದ್ಯಗಳು ಹಾಗೂ ಹತ್ತನೆಯ ಆಶ್ವಾಸದಕೊನೆಯಲ್ಲಿ 'ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ ವರ್ಣನಂ' ಮತ್ತು 'ಪರಿನಿರ್ವಾಣ ಕಲ್ಯಾಣೋತ್ಸವ ವರ್ಣನಂ' ಎಂಬ ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥೆಯನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. "ಸರಳವೆನ್ನುವಂತಹ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಅಲಂಕಾರಗಳ ಭಾರವಿಲ್ಲದೇ ಸುಂದರ ಕಾವ್ಯವೊಂದನ್ನು ಇವನಂತೆ ನೀಡಿದ ಕವಿಗಳು ಬಹಳಿಲ್ಲ. ಅರ್ಥವ್ಯಾಪ್ತಿಯ ರಮಣೀಯತೆ ನಾಗಚಂದ್ರನ ಕಾವ್ಯದ ತುಂಬಾ ಎಲ್ಲಿ ನೋಡಿದರಲ್ಲಿ ಕಂಗೊಳಿಸುತ್ತಿದೆ" ಎಂದು ರಂ. ಶ್ರೀ ಮುಗಳಿಯವರು ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಮೆಚ್ಚುನುಡಿಯಾಡಿದ್ದಾರೆ. 'ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಚರಿತ ಪುರಾಣ'ವೆಂಬ ಹೆಸರಿನ ಕವಿ ಚಂದ್ರಶೇಖರ (ಬಂಗವಾಡಿಯಸಾಮಂತ ಅರಸರ ಆಸ್ಥಾನ ಕವಿ ಮತ್ತು ಮೂರನೆಯ ಮೂಲಿಕೆಯ ಪದ್ಮನಾಭ ವಿರಚಿತ 37 ಸಂಧಿಗಳ 5250 ಪದ್ಯಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಸಾಂಗತ್ಯ ಕೃತಿಯು 2015ರಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟವಾಗಿದೆ.[6] ನಾಗಚಂದ್ರನ ಅನುಸರಣೆಯಿದ್ದರೂ ಕೆಲ ಸ್ಥಳೀಯವಾದ ಪ್ರದೇಶದ ಪರಿಸರ ವರ್ಣನೆ ವಿಶೇಷವಾಗಿದೆ.

ನಾಗಚಂದ್ರ ಚಿತ್ರಿಸಿದ ಶಂಬೂಕ ಪ್ರಸಂಗ ಹಾಗೂ ರಾವಣ ಪಾತ್ರಗಳು ಮುಂದಿನ ಅನೇಕ ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳು, ವಿಮರ್ಶಕರು ನಾಟಕಕಾರರನ್ನು ಸೆಳೆದಿವೆ. ಜೈನ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲಿ ಶಂಬುಕ ವಧೆಯೇ ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿ ಸೀತೆಯ ಅಪಹರಣವಾಗುವುದು. ಶಂಬುಕ ರಾವಣನ ತಂಗಿ ಚಂದ್ರನಖಿಯ ಹಾಗೂ ಖರನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗ. ಪಾತಾಳಲಂಕೆಯು ಅವನ ಸ್ಥಳ. ಶಂಬುಕ ಸೂರ್ಯಹಾಸವೆಂಬ ಖಡ್ಗದ ಸಿದ್ಧಿಗಾಗಿ ಸಾಧನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಬರುವುದಕ್ಕೂ ಖಡ್ಗವು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗುವುದಕ್ಕೂ ಸಮಯ ಸರಿಹೊಂದಿ ಹೊಸ ಖಡ್ಗವನ್ನು ಕಂಡ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಸಹಜವಾಗಿ ಅದರ ತೀಕ್ಷ್ಣತೆಯನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಲು ಬಿದುರು ಮೆಳೆಯನ್ನು ಸವರಿದಾಗ ಶಂಬುಕನ ತಲೆ ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಿಹೋಗುವುದು. ಮಗನ ಸಾವಿಗೆ ಚಂದ್ರನಖಿಯ ಶೋಕ, ಪ್ರತೀಕಾರ ಮನೋಭಾವ, ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಬಗೆಗೆ ಮೂಡಿದ ಅವಳ ಮೋಹಪರವಶತೆ, ವಿಷಯಾತುರ ತಿರಸ್ಕೃತಭಾವವೇ ದ್ವೇಶವಾಗಿ ಪರಿಣಮಿಸಿ ಸೀತಾಪಹರಣಕ್ಕೆ

ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆಂಬ ಜೈನಪರಂಪರೆಯ ವಿವರಗಳು ಮುಂದೆ ನರಹರಿಯಿಂದ ಆರಂಭಿಸಿ ಕುವೆಂಪುರವರವರೆಗೆ ಕನ್ನಡದ ಅನೇಕ ಕವಿಗಳ ಕೃತಿರಚನೆಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರಿದೆ. ಅವರು ವೈದಿಕ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಶಂಬೂಕನ ಕಥೆಯನ್ನು ಸರ್ವರಿಗೂ ಸಮಬಾಳೆಂಬ ತತ್ವದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ. ಕುವೆಂಪುರವರು 'ಶೂದ್ರ ತಪಸ್ವಿ' ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮರು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ನಾಗಚಂದ್ರನು ಗಣಧರರು ಹೇಳಿದ ಕ್ರಮದಲ್ಲೇ ಸೀತಾಪಹರಣ ಹಾಗೂ ನಂತರದಲ್ಲಿ ರಾಮ ಸುಗ್ರೀವರ ಸಖ್ಯ, ಮಾಯಾವಿಯ ಸಾವು, ಜಾಂಬೂದನಿ ರಾವಣನ ವಿಚಾರಗಳ ಪರಿಚಯ ರಾವಣನು ಗಳಿಸಿದ ವಿದ್ಯೆಗಳು, ಅವನ ದಿಗ್ವಿಜಯಗಳು, ಪರಾಕ್ರಮಗಳು ಅವನ ಸೋದರರ ಮದುವೆ-ಮಕ್ಕಳ ವಿಚಾರಗಳು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಅಲ್ಲದೆ ರಾವಣನ ಅಸಮಾನತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದಲೇ ಅವನು ಚಂದ್ರಹಾಸವೆಂಬ ಖಡ್ಗವನ್ನು ಹಿಡಿದು ಭೂಮಂಡಲವನ್ನು ಜಯಿಸಿ ಇಂದ್ರಾದಿ ದೇವತೆಗಳನ್ನು ಅಷ್ಟ ದಿಕ್ಪಾಲಕರನ್ನು ಸೆರೆಹಿಡಿದು, ಅಸಹಾಯಶೂರನೆನಿಸಿ ಮೆರೆಯುವುದು ನಳಕೂಬರನ ಪತ್ನಿ ಉಪರಂಭೆಯ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ಅವಳನ್ನು ಧಿಕ್ಕರಿಸಿ 'ಪರಾಂಗನವಿರತಿವ್ರತಿ' ಯಾಗಿ ಮೆರೆಯುವ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾ ಅಂತಹ ರಾವಣನು ಸೀತೆಯ ಸೌಂದರ್ಯಕ್ಕೆ ಮನಸೋತು ತಂದುಕೊಂಡ ದುರ್ದೆಸೆಯನ್ನೂ ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಕಾಲವಶವಾಗಿ, ದುರ್ವಿಧಿಗೆ ಒಳಗಾಗಿ ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಅಧಃಪತನ ಆಗುವುದರತ್ತಲೇ ನಾಗಚಂದ್ರನಿಗೆ ಗಮನವಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಂಪ ರನ್ನರು ಕಡೆದು ನಿಲ್ಲಿಸಿದ ಉದಾತ್ತನಾದ ಪ್ರತಿನಾಯಕ ಪಾತ್ರ ಚಿತ್ರಣದ ಮುಂದುವರಿಕೆಯಂತೆ ರಾವಣ ಕಂಡು ಬರುತ್ತಾನೆ. ರಾವಣನ ಮನಃ ಪರಿವರ್ತನೆ ಪಂಪರಾಮಾಯಣದ ಇನ್ನೊಂದು ವಿಶಿಷ್ಟ ಪ್ರಸಂಗ. ಇದು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾವಣ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ರಾವಣನಂತಲ್ಲದೆ ಉದಾತ್ತ ಮತ್ತು ಸದ್ಗುಣಿ, ಒಂದು ವಿಷನಿಮಿಷದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯಲ್ಲಿ ಮೋಹಿತನಾಗಿ ಅವಳನ್ನು ವಶಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದರೂ ಅವಳ ಪತಿವ್ರತಾ ನಿಷ್ಠೆಯನ್ನರಿತು ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪದಿಂದ ಮರುಗುವುದನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಇದು ಮುಂದಿನ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣ ಬರಹಗಾರರಮೇಲೆ ಅದರಲ್ಲೂ ಕುವೆಂಪುರವರ ಮೇಲೆ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಅವರ 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ' ಮಹಾಕಾವ್ಯದ ದಶಾನನ ಸ್ವಪ್ನ ಸಿದ್ಧಿಯ ಭಾಗವು ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ.

**ಕುಮುದೇಂದುವಿನ ರಾಮಾಯಣ** ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ನಾಗಚಂದ್ರನ ಅನುಕರಣೆ ಇದ್ದರೂ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಕಥೆಯ ಪ್ರಸ್ತಾಪವಿಲ್ಲ. ಶಂಬೂಕವಧೆ ಮಾತ್ರ ಬಂದಿದೆ. ರಾವಣನನ್ನು ವಧಿಸಿದ ರಾಮ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದನೆಂಬಲ್ಲಿಗೆ ಕಾವ್ಯಮುಕ್ತಾಯವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾಮನು ಕೇವಲಿಯಾಗುವ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡ ಕಥೆಯಿಲ್ಲ. ಇದರಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ರಾಮರಿಗೆ ಅನೇಕ ಮದುವೆಗಳಾಗುತ್ತವೆ. ಹನುಮಂತನು ಇಲ್ಲಿ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಯಲ್ಲ. ರಾವಣನು ಬಿಟ್ಟ ಚಕ್ರದಿಂದಲೇ ಅವನನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಕೊಲ್ಲುತ್ತಾನೆ. ಇದು ವರ್ಣಕ ಕಾವ್ಯ. ಕಾವ್ಯ ವಿಶೇಷತೆಯಿಲ್ಲವಾದರೂ ಚಮತ್ಕಾರವಿದೆ. ಸರಾಗವಾಗಿ ಕಥೆ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಅನುಪ್ರಾಸ, ಅಲಂಕಾರಗಳು ಇವನಿಗೆ ಪ್ರಿಯವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಕುಸುಮ, ಭಾಮಿನಿ, ಪರಿವರ್ಧಿನಿ, ವಾರ್ಧಕ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಬಗೆಯ ಷಟ್ಪದಿಗಳ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ. ಒಂದೇ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಈ ರೀತಿಯ ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡಿದವರಲ್ಲಿ ಈತನೇ ಮೊದಲಿಗ.[7] **ದೇವಪ್ಪ ಕವಿಯ 'ರಾಮವಿಜಯ ಕಾವ್ಯಂ'**ದಲ್ಲಿ 20ಸಂಧಿಗಳಿದ್ದು 2913 ಪದ್ಯಗಳಿವೆ.[8] ಇದೊಂದು ಸಾಂಗತ್ಯ ಕಾವ್ಯ. ಇವನ ಕಥೆಯು ವಿಮಲಸೂರಿಯ ಕಥೆಗಿಂತಲೂ ಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದು, ಗುಣಭದ್ರರ ಕಥೆಯನ್ನೂ ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹೋಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇದು ಯಾವ ಪರಂಪರೆಗೆ ಸೇರಿದ್ದೆಂಬುದರ ಬಗೆಗೆ ವಿದ್ವಾಂಸರಲ್ಲಿ ಚರ್ಚೆಯಿದೆ. ಜಿನಭಕ್ತರು ಕೇಳಿದ್ದರಿಂದ ತಾನು ಕಥೆ ಹೇಳಿರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಮಾರೀಚ ಮತ್ತು ಚಿನ್ನದ ಜಿಂಕೆಯ ಸಂಗತಿಯಿದೆ. ಇವನ ಮೇಲೆ ನಾಗಚಂದ್ರನಿಗಿಂತಲೂ ತೊರವೆನರಹರಿಯ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಭಾವವಿದೆ. ಇವನ ರಾವಣನು ಕಪಟಿ, ವಂಚಕ, ಕಾಮುಕ, ಒಮ್ಮೆ ವಿಜಯಾರ್ಧ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿದ್ದಾಗ ಅಲಕಾವತಿಯ ರಾಜನಾದ ಅಮಿತವೇಗನೆಂಬುವವನ ಮಗಳು ಮಣಿಮತಿಗೆ ಆಕರ್ಷಿತನಾಗಿ ಅವಳ ವಿದ್ಯಾಸಾಧನೆಗೆ ಅಡ್ಡಿಯುಂಟುಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಕುಪಿತಗೊಂಡ ಅವಳು **"ನಿನಗೆ ಮಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿ ನಿನ್ನ ಮರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುವೆ" ಎಂದು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆಮಾಡಿ**

**ಮಂಡೋದರಿಯ ಮಗಳಾಗಿ ಹುಟ್ಟಿದಳು ಅವಳೇ ಸೀತೆ ಎಂಬ ಕಥೆ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಇದು ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣದ ವೇದವತಿಯ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೋಲುತ್ತದೆ. ರಾಣನಿಗೆ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಸ್ವಯಂವರದಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ವಿವಾಹ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನು ವಾರಣಾಸಿಯನ್ನು ಗೆದ್ದು ಸೀತೆಲಕ್ಷ್ಮಣರೊಂದಿಗೆ ಉದ್ಯಾನವನದಲ್ಲಿ ವಿಹರಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಗ ರಾವಣ ಅವಳ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಕಂಡು ಅವಳನ್ನು ಒಲಿಸಲು ಮೊದಲು ತಂಗಿ ಶೂರ್ಪನಖಿಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅವಳು ವಿಫಲಳಾದ್ದರಿಂದ ಮಾರೀಚನು ಚಿನ್ನದ ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ಸುಳಿದಾಡಲು ಹೇಳಿ ರಾಮನು ಮಾಯಾಜಿಂಕೆಯನ್ನಟ್ಟಿ ಹೋದಾಗ ರಾವಣನು ರಾಮನಂತೆ ವೇಷತಾಳಿ ಬಂದು ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸುವ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೆಣೆದಿದ್ದಾನೆ.** ಅನ್ಯಕೃತವೆಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಹೇಳುವ ಕೊನೆಯ ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಕೇವಲ ರಾಮರಾಜ್ಯ ವೈಭವವನ್ನು ರಾಮನು ಕೇವಲಿಯಾದ ಸಂದರ್ಭವನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಇತರ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಂಗಗಳಿಲ್ಲ. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ **ದೇವಪ್ಪ ಕವಿಯ ರಾಮಕಥೆಯು ಜೈನ, ಜಾನಪದ, ವೈದೀಕ ಕಥೆಗಳ ಮಿಶ್ರಣವೂ ಅವುಗಳಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹೊಸ ಕಲ್ಪನೆಯನ್ನೂ ಹೊಂದಿ ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಇವನು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯ ಕಟ್ಟಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಳ್ಳದೇ ಒಂದಿಷ್ಟು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯವನ್ನು ವಹಿಸಿದ್ದಾನೆ. ನರಹರಿಯ ಪ್ರಭಾವ ಹೆಚ್ಚಿದ್ದರೂ ತ್ರಿಮೂರ್ತಿಗಳನ್ನು ವಿಡಂಬಿಸಿ ಜಿನನೇ ಶ್ರೇಷ್ಠನೆಂಬುದನ್ನು ಹೇಳಲು ಅವನು ಮರೆತಿಲ್ಲ. ಯಾವ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲದ ದಶರಥ ಮತ್ತು ಅವನ ಮಡದಿ ಸುಬಳಾದೇವಿಯ ಪುತ್ರದೊಹಳ, ರತಿಕ್ರೀಡೆಗಳ ವರ್ಣನೆಯನ್ನು ದೀರ್ಘವಾಗಿ ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ಸೀತಾ ಸ್ವಯಂವರ ವಿವಾಹ, ಪ್ರಕೃತಿ ವರ್ಣನೆಗಳು, ಲಂಕಾದಹನ, ಯುದ್ಧ ಸಿದ್ಧತೆಗಳ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿ ಆ ಕಾಲದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಬದುಕನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಿಡಿದಿಡಲಾಗಿದೆ.**

**“ದೇವಚಂದ್ರನು** ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯೋದ್ಯಾನದ ಹಲವಾರು ವೃಕ್ಷಗಳಿಂದ ವನಸುಮಗಳನ್ನು ತಿರಿತಂದು 'ರಾಮಕಥಾವತಾರ' ಎಂಬ ಒಂದು ಸುಂದರವಾದ ಮುದ್ದಾದ ಮಾಲೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ” ಎಂದು ಬಸವಾರಾಧ್ಯರು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ[9] ಹದಿನಾರು ಆಶ್ವಾಸಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಚಂಪೂ ಕೃತಿ. ಇದು ಸ್ವತಂತ್ರ ಕೃತಿಯಲ್ಲ ಅವನೇ ಹೇಳಿಕೊಂಡಿರುವಂತೆ ಶ್ರೀಮದಭಿನವ ಪಂಪ ವಿರಚಿತ 'ರಾಮಚರಿತ್ರ ಪುರಾಣಂ' ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ರಾಮ ಕಥಾವತಾರ. ಇದು ರಾಮಚಂದ್ರ ಚರಿತಪುರಾಣವೇ ಎನ್ನಬಹುದು. ನಾಗಚಂದ್ರನ ಜೊತೆಗೆ ಕುಮುದೇಂದು ಮತ್ತಿತರ ಜೈನ ರಾಮಾಯಣಕಾರರ ಬಗ್ಗೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಮಾಹಿತಿಯನ್ನು ನೀಡಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಚೀನ ಕೃತಿಗಳಿಂದ ಗದ್ಯ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿರುವದಾಗಿ ಕವಿಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಅದರಂತೆ ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಗಚಂದ್ರನ ರಾಮಚಂದ್ರಚರಿತಪುರಾಣದ ಪದ್ಯ ಹಾಗೂ ಗದ್ಯಭಾಗಗಳೂ, ಪಂಪನ ಆದಿಪುರಾಣದ ಪದ್ಯವೂ ಇವೆ. ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಶ್ಲೋಕಗಳಿವೆ.

**ನಾಗವ ಕವಿಯು** ಭಾಮಿನೀ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ 'ಮಾಣಿಕಸ್ವಾಮಿಯ ಚರಿತ್ರೆ'ಯನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾನೆ. ನಾಗಚಂದ್ರನ ಸಂಪ್ರದಾಯದಲ್ಲೇ ಬರೆದಿದ್ದರೂ ಕೆಲವು ಸಣ್ಣಪುಟ್ಟ ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. **ಶಂಬೂಕನ ವೃತ್ತಾಂತದಲ್ಲಿ ಸಣ್ಣ ಬದಲಾವಣೆಯಿದೆ. ಚಂದ್ರಹಾಸ ಖಡ್ಗವನ್ನು ತನ್ನ ಸೋದರ ಮಾವ ರಾವಣನು ಮಾತ್ರ ಪಡೆದುಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆಂಬ ಈರ್ಷೆಯಿಂದ ತಾನೂ ಕೂಡ ಅದನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕೆಂದು ತಪಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತಾನೆಂದು ಹೇಳಿದೆ.** ಇದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥೆಯ ಬಹುಭಾಗಗಳಿವೆ. ರಾವಣ ಸಂಹಾರಮಾಡಿ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದ ರಾಮ ಸುಖ ಸಂತೋಷದಿಂದಿರುವಾಗ ಸೀತೆ ಗರ್ಭಧರಿಸಿದಳು ಎಂಬಲ್ಲಿಂದ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಆರಂಭಿಸಿದ್ದಾನೆ. ತೌರಿನಿಂದ ತಡವಾಗಿ ಬಂದ ಮಡದಿಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಒಕ್ಕಲಿಗನೊಬ್ಬನು ಸಿದ್ಧನಿಲ್ಲದ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ, ರಾವಣನು ಕದ್ದೊಯ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡು ರಾಮನೇ ಸಂಸಾರ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವಾಗ ನಿನ್ನದೇನು ದೊಡ್ಡಸ್ಥಿಕೆ? ಎಂಬ ಪ್ರಶ್ನೆ ಎದ್ದಿದೆ. ಇದನ್ನು ಖುದ್ದು **ರಾಮನೇ ರಾತ್ರಿಯವೇಳೆ ವೇಷ ಮರೆಸಿಕೊಂಡು ತನ್ನ ಆಡಳಿತವನ್ನು, ರಾಜ್ಯದ ಸ್ಥಿತಿಗತಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಪ್ರಜಾಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯಲು ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ವೇಳೆ ಈ ಸಂಭಾಷಣೆಗಳನ್ನು ಕಿವಿಯಾರ ಕೇಳಿದನೆಂದು, ಮರ್ಮಾಘಾತವಾಗಿ ರಾಮನು ಆಪ್ತರೊಡನೆ ಸಮಾಲೋಚಿಸಿ, ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದನೆಂದು ಕವಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ.** ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಬಿಟ್ಟವರು ಯಾರೆಂಬುದನ್ನಾಗಲೀ ಲವಕುಶರೊಂದಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಮುನಿಯೋರ್ವನ ಆಶ್ರಮದಿಂದ ಕರೆತಂದು ರಕ್ಷಣೆ ನೀಡಿದ ಅರಸನಾರೆಂಬುದನ್ನೂ ಇವನು ಹೇಳಿಲ್ಲ. ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿಯೂ ಈತ ಕೆಲವು ಸಣ್ಣ

ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ರಾಮ ತಮ್ಮ ತಂದೆ ಎಂಬುದನ್ನು **ತಾಯಿಯಿಂದಲೇ ತಿಳಿದ ಲವಕುಶರು ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಕ್ರೋಧಗೊಂಡು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಸೀತೆಯ ಸೋದರನಿಂದ ಅವರು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳೆಂದು ರಾಮನು ತಿಳಿಯುತ್ತಾನೆ ಮತ್ತು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನಾದರೂ ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ರಾಮನನ್ನು ಮೂದಲಿಸುವುದು ವಿಶೇಷ ಇದುವರೆಗೂ ರಾಮನನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದವರೆಲ್ಲರೂ ಸೋದರಸಮಾನರೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ್ದ ಅವಳು,** ಈಗ ರಾಮನೂ ಸೋದರ ಸಮಾನನೇ ಎಂದು ಹೇಳಿ ಬಿಡುತ್ತಾಳೆ. ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಅವನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಜುಗುಪ್ಸೆಗೊಂಡು ಜಿನದೀಕ್ಷೆ ಪಡೆಯುತ್ತಾಳೆ ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ, ಅಗ್ನಿದಿವ್ಯವಿಲ್ಲ.

**ಚಂದ್ರ ಸಾಗರವರ್ಣಿ**ಯ ಜಿನ ರಾಮಾಯಣ'ವು[10] ಭಾಮಿನೀ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿರುವ 74 ಆಶ್ವಾಸಗಳೂ 4309 ಪದ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ. ವನಚರರು ಮಗದ ದೇಶದ ರಾಜ ಶ್ರೇಣಿಕನಿಗೆ ಹೇಳಿದ ಈ ಕಥೆಯನ್ನು ಆತ ತನ್ನ ಮಡದಿ ಚೇಳಿನಿಗೆ ಹೇಳಿದಂತೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸುತ್ತಾನೆ. ಈತ ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತವೆರಡನ್ನೂ ಬರೆದಿರುವುದು ವಿಶೇಷ. ಇವನು ಒಟ್ಟು 46 ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆಂದು ತಿಳಿದುಬರುತ್ತದಾದರೂ 18 ಕೃತಿಗಳು ಮಾತ್ರ ಪ್ರಕಟವಾಗಿವೆ. ಈತನ ಭಾಷಾ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯತೆಯು ವಿದ್ವಾಂಸರ ಗಮನವನ್ನು ಸೆಳೆದಿದೆ. ಆತ ತನ್ನ ಕಾಲದ ಕನ್ನಡದ ಆಡುಮಾತು, ವ್ಯಾವಹಾರಿಕ ಕನ್ನಡದ ಜೀವಂತ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬಳಸಿರುವುದರಿಂದ ಭಾಷಾ ಅಧ್ಯಯನಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚು ಅವಕಾಶವಿದೆ ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಈತನನ್ನು 'ಹೊಸಗನ್ನಡದ ಮುಂಗೋಳಿ' ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.[11] ಇದರಲ್ಲಿ **ರಾವಣನ ವಂಶವರ್ಣನೆ, ಲಂಕಾವರ್ಣನೆ, ರಾವಣನ ವೈಭವ, ಸಾಹಸಗಳು, ಹೆಣ್ಣು ಮಗುವಿಲ್ಲವೆಂಬ ಅವನ ಕೊರಗು, ಗರ್ಭಿಣಿಯಾದ ಮಂಡೋದರಿಗೆ ರಾವಣನ ರಕ್ತ ಕುಡಿಯಬೇಕೆಂಬ ದುರ್ಬಯಕೆ, ಹುಟ್ಟಿದ ಮಗುವಿನಿಂದ ತಂದೆಗೆ ಕೆಡುಕೆಂದು ತ್ಯಜಿಸುವುದು, ಜನಕನಿಗೆ ಆ ಮಗು ಸಿಗುವುದು ಮುಂತಾಗಿ ಕಥೆ ಸಾಗುತ್ತದೆ. ಇವನು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯ ಜೊತೆಗೆ ಜಾನಪದದಿಂದಲೂ, ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣದ ಕಲ್ಪನೆಗಳಿಂದಲೂ ಪ್ರಭಾವಿತನಾಗಿ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೆಣೆದಿದ್ದಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಮಂಥರೆಯ ಬದಲು 'ಮಾಯಾವಿ' ಎಂಬ ರಾಕ್ಷಸಿಯಿಂದ ಕೈಕೆಗೆ ದುರ್ಭೋದೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಶಂಬುಕುಮಾರನ ತಾಯಿ ಶೂರ್ಪನಖಿ ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಸೀತೆಯು ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ದೀಕ್ಷಾಗ್ರಹಣ ಮಾಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಆಡುವ ವೈರಾಗ್ಯದ ಮಾತುಗಳು ಮುಖ್ಯವೆನಿಸುತ್ತದೆ. "ಶ್ರೀರಾಮನಿಗಾದರೋ ಎಂಟು ಸಾವಿರ ಸ್ತ್ರೀಯರಿದ್ದಾರೆ. ಆತನಿಗೇನು ಕೊರತೆ, ಆಗ (ರಾಮನು ತನ್ನನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಿದಾಗ) ನಾನು ಗರ್ಭವತಿಯಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ದೀಕ್ಷಾಗ್ರಹಣಕ್ಕೆ ಮಾರ್ಗವಿಲ್ಲದೇ ನಿಂತೆನು ಸ್ತ್ರೀ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಅನುಭವಿಸಿದೆನು"** ಎನ್ನುತ್ತಾಳೆ. ಆಗ ಸೀತೆಯ ಕಷ್ಟಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಅವಳ ಹಿಂದಿನ ಭವಾವಳಿಗಳ ಕಥೆಯು ಬಿಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ಇವನ ಮೇಲೆ ನಾಗಚಂದ್ರನ ದಟ್ಟ ಪ್ರಭಾವವಿದೆ. ಇವನು ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನಿಂದಲೂ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ಪಡೆದು ಅವನನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಕೆಲವು ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ.

**ಶಿಶುಮಾಯಣನು** 'ಅಂಜನಾಚರಿತ್ರೆ'ಯನ್ನು ಕನ್ನಡ ದೇಸೀ ಛಂದಸ್ಸಾದ ಸಾಂಗತ್ಯದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ್ದು, ಇದರಲ್ಲಿ 15 ಆಶ್ವಾಸಗಳು, 3100 ಪದ್ಯಗಳಿವೆ. ಜೈನನಾದ ಈತ ಅಂಜನಾ ದೇವಿಯ ಹಾಗೂ ಹನುಮಂತನಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕಥೆಯನ್ನು ಜೈನ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಸಂಸ್ಕೃತದ ರವಿಶೇಣನ' 'ಪದ್ಮಚರಿತೆ'ಯನ್ನು ತನ್ನ ಕಥೆ ಆಧರಿಸಿರುವುದಾಗಿ ಆತನೇ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿನ **ಅಂಜನಾದೇವಿಯ ಕಥೆಯು ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿದ್ದು, ಬಲವಂತದಿಂದ ವಿವಾಹವಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಪವನನಂದನನು ಅವಳಿಂದ ದೂರ ಉಳಿದು ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಹೋಗುತ್ತಾನೆ. ಅಲ್ಲಿ ಒಮ್ಮೆ ಚಕೋರಪಕ್ಷಿಯ ಅಳಲನ್ನು ಕಂಡು ಹೆಂಡತಿಯ ನೆನಪಾಗಿ ಗಗನಗಾಮಿಯಾಗಿ ಬಂದು ಯಾರಿಗೂ ತಿಳಿಯದಂತೆ ಅವಳೊಡನೆ ಸಮಾಗಮನವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಗರ್ಭಧರಿಸಿದ ಅಂಜನೆಯನ್ನು ಅವಳ ಅತ್ತೆ ಮಾವಂದಿರು ನಂಬದೆ ಅವಳನ್ನು ಹೊರಹಾಕುತ್ತಾರೆ. ತಂದೆಯ ಮನೆಯಲ್ಲೂ ತಿರಸ್ಕೃತಳಾದ ಅಂಜಾನಾದೇವಿ ಅಡವಿ ಸೇರಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲಿ ಗಂಡುಮಗುವನ್ನು ಆಕೆ ಪಡೆಯುತ್ತಾಳೆ.** ಮುಂದೆ ಅವನು ಹನುಮನಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದು, ರಾವಣನಿಗೆ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಸಹಾಯಮಾಡಿ ಅವನ ತಂಗಿಯ ಮಗಳನ್ನೂ, ಸುಗ್ರೀವನ ಮಗಳನ್ನೂ ಅನೇಕ ಹೆಂಡಿರನ್ನು ವಿವಾಹವಾಗಿ ಸುಖದಿಂದಿದ್ದು ರಾಮನ ಭೇಟಿಯಾಗಿ ಸೀತಾನ್ವೇಷಣೆಯಲ್ಲಿ ಅವನಿಗೆ ಸಹಾಯಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ರಾವಣನ

ಸಂಹಾರದ ನಂತರ ತನ್ನ ರಾಜಧಾನಿಯಲ್ಲಿದ್ದ ಹನುಮಂತನು ಒಮ್ಮೆ ಉಲ್ಕಾಪಾತವನ್ನು ಕಂಡು ವೈರಾಗ್ಯಹೊಂದಿ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ. **ಈ ಕೃತಿಯು ಅಸಾಧಾರಣವಲ್ಲವಾದರೂ ಇಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದೇವಿಯ ಕಥೆ ಕರುಣರಸವನ್ನು ಉಕ್ಕಿಸುತ್ತದೆ. ಸ್ತ್ರೀಯೊಬ್ಬಳು ಅನುಭವಿಸುವ ನಾನಾಪರಿಯ ಚಾರಿತ್ರ್ಯವಧೆ, ಅಪಮಾನ ಸಂಕಟಗಳನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದೇವಿ ಅನುಭವಿಸುವುದನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಈ ಕೃತಿಯನ್ನು ಮಹಿಳಾ ನೆಲೆಯಿಂದ ಅಧ್ಯಯನಮಾಡಲು ಅವಕಾಶವಿದೆ.**

**ಬಂಧುವರ್ಮನ 'ಜೀವ ಸಂಬೋಧನೆ'** ಕೃತಿಯು ಒಂದು ಚಂಪೂ ಕಾವ್ಯವಾಗಿದ್ದು, ಇದರಲ್ಲಿ 12 ಅಧಿಕಾರಗಳಿವೆ. 558 ಪದ್ಯಗಳೊಂದಿಗೆ ಗದ್ಯವು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬಂದಿದೆ. ಪದ್ಯಗಳ ವಾಖ್ಯಾನಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿ ಗದ್ಯ ಬಳಸಲಾಗಿದೆ. **ಅನ್ಯತ್ವಾನುಪ್ರೇಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ 'ರಾವಣಚರಿತ್ರಂ' ಎಂಬ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಪರಾಕ್ರಮವನ್ನು, ಅವನ ವಿದ್ಯಾರ್ಜನೆಯನ್ನು, ಅವನ ಸಿದ್ಧಿಸಾಧನೆಗಳನ್ನೂ ದೃಷ್ಟಾಂತವಾಗಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಲಂಕಾಪುರವನ್ನಾಳುಮ ರಾಕ್ಷಸವಂಶದ ಮೊದಲಿಗ ವಿದ್ಯಾಧರ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯಾದ ರಾವಣ ಅವನು ನಾನಾ ವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಪಾರಂಗತನಾಗಿದ್ದನು. ಇವನು ವಾಲಿಯಂತಹ ಮಹಾವೀರನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿದವನು ಧರಣಿ ಚಕ್ರವನ್ನು ತಿರುಗಿಸಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದವನು ಅಂತಹವನು ಸೀತಾದೇವಿಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿದ ಕಾರಣದಿಂದ ರಾಮಸ್ವಾಮಿಯು ಅವನಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದನು. ರಾವಣನ ಸೋದರ ಅವನನ್ನು ತೊರೆಯುವಂತಾಯಿತು. ಕೈಲಾಸವನ್ನು ಎತ್ತಿದ್ದ ಬಲಶಾಲಿ ರಾವಣ ತಾನೇಬಿಟ್ಟ ಚಕ್ರರತ್ನಕ್ಕೆ ತಾನೇ ಬಲಿಯಾಗಬೇಕಾಯಿತು. ಹೀಗೆ ಮಹಾ ಶಕ್ತಿವಂತನಾದ ರಾವಣನು ಸತ್ತುದನ್ನು ಭಾವಿಸು ಜೀವ** ಎಂಬ ಬೋಧನೆಯಿದೆ.

**ಚಾವುಂಡರಾಯನು** ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಕವಿಯೂ ಹಾಗೂ ಕಲಿಯೂ ಆಗಿ 10ನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿ ಬದುಕಿದ್ದವನು. ಕನ್ನಡ ಗಂಗ ಅರಸರಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಿ ಮತ್ತು ಸೇನಾಪತಿಯೂ ಆಗಿದ್ದನು. ಜೈನ ಧರ್ಮದ ನಿಷ್ಠಾವಂತ ಸೇವಕನಾಗಿ ಬಾಹುಬಲಿಗೊಮ್ಮಟನನ್ನು ಶ್ರವಣಬೆಳಗೊಳದಲ್ಲಿ ಕಡೆಸಿದ್ದಾನೆ. ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಕಲೆಗೆ ಇವನ ಕೊಡುಗೆ ಗಣನೀಯವಾದುದು. ಇವನು ಚಾವುಂಡರಾಯಪುರಾಣ ಎಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿರುವ 'ತ್ರಿಷಷ್ಟಿ ಲಕ್ಷಣ ಮಹಾಪುರಾಣ'ವೆಂಬ ಕೃತಿಯನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾನೆ. ಈ ಕೃತಿಗೆ ಮೂಲ ಆಕರ ಸಂಸ್ಕೃತದ 'ಮಹಾಪುರಾಣ'. 64 ಶಲಾಕಾಪುರುಷರಲ್ಲಿ ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ತೀರ್ಥಂಕರನಾದ ಮುನಿಸುವ್ರತನ ಕಾಲದ 8ನೇ ಬಲದೇವ, ವಾಸುದೇವ, ಪ್ರತಿವಾಸುದೇವರಾದ ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಹಾಗೂ ರಾವಣರ ಕಥೆ ಬರುತ್ತದೆ. ಚಾವುಂಡರಾಯನು ಇದನ್ನು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ಇದು ಉತ್ತರ ಪುರಾಣದ ರಾಮಕಥೆಯ ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ರೂಪವಾಗಿದ್ದು, ಬಲದೇವ ವಾಸುದೇವರ ಹಿಂದಿನ ಮೂರು ಜನ್ಮಗಳ ಕಥೆಯಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುತ್ತದೆ. ಅನೇಕ ಒಳ ಕಥೆಗಳಾಗಿ ಜನ್ಮಾಂತರದ ಕಥೆಗಳು ಬಂದು ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯ ಜಾಡು ತಪ್ಪುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ವೇದವತಿಯ ಶಾಪದ ಬದಲಿಗೆ ಮಣಿಮತಿಯ ಶಾಪವಿದೆ. ಸೀತೆಯಾಗಿ ಅವಳು ಹುಟ್ಟುವುದು. ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ವಿವಾಹ, ವಾರಣಾಸಿಯಲ್ಲಿ ಅವರು ಬೀಡುಬಿಡುವುದು, ಸೀತಾಪಹರಣ, ಹನುಮ ಸುಗ್ರೀವರ ಭೇಟಿ, ರಾಮರಾವಣರ ಯುದ್ಧ ಎಲ್ಲವೂ ವೇಗವಾಗಿ ಮುಗಿದುಹೋಗುತ್ತದೆ. ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಜೈನಧಾರ್ಮಿಕತೆಗೆ ಮಹತ್ವನೀಡಿ ಕಥೆ ಬೆಳೆದಿದೆ. ರಾಮ ಸೀತೆ ಎಲ್ಲರೂ ಕೇವಲಿಗಳಾಗುವುದು, ರಾವಣನನ್ನು ಕೊಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ನರಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪುರಾಣದೃಷ್ಟಿ ಕಥಾ ಸಂಗ್ರಹಣೆಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯತೆಯಿದ್ದು ಕಾವ್ಯ ಗುಣ ಗೌಣವಾಗಿರುವುದನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೊರಕಿರುವ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಾಗ ಗದ್ಯಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಜೈನ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ತಂದ ಶ್ರೇಯಸ್ಸು ಇವನಿಗೆ ಸಲ್ಲುತ್ತದೆ.

ಪುಣ್ಯಾಸ್ರವ ಕೃತಿಯನ್ನು ಗದ್ಯದಲ್ಲಿ ಬರೆದಿರುವ ನಾಗರಾಜ ಕವಿಯು 14ನೇ ಶತಮಾನಕ್ಕೆ ಸೇರುತ್ತಾನೆ. ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಪೂಜೆ, ಪಂಚ ನಮಸ್ಕಾರ, ಶ್ರುತೋಪಯೋಗ, ಶೀಲ, ಉಪವಾಸ ಮತ್ತು ದಾನ ಎಂಬ ಆರು ಕರ್ತವ್ಯ ಕರ್ಮಗಳ ಅನುಷ್ಠಾನಗಳಿಂದ ದೊರಕುವ ಫಲಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಅವುಗಳನ್ನು ಅನುಷ್ಠಾನಗೊಳಿಸಿದ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳುತ್ತಾ ಅವನು ರಾಮಾಯಣ ವಸ್ತುವನ್ನು ಒಳಗೊಂಡ ಆರು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಕೆಲವು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಸುಗ್ರೀವನ ಕಥೆ, ವಾಲಿಯ ಕಥೆ, ಸೀತೆಯಕಥೆ, ವಜ್ರಕರ್ಣ ಮತ್ತು ಲವಕುಶರ ಕಥೆ ಮತ್ತು ಸೀತೆಯ ಸೋದರನಾದ ಪ್ರಭಾಮಂಡಲನ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ.

ಇವನು ಗುಣಭದ್ರರ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಕೃತಿರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದಲ್ಲದೆ ಇವನು ತನ್ನ ಕಥೆಗಳಿಗೆ ರವಿಶೇಣನ ಪದ್ಮಚರಿತೆ, ಜಿನಸೇನನ ಹರಿವಂಶ, ಮಹಾಪುರಾಣ, ಹರಿಶೇಣನ ಬೃಹತ್ ಕಥಾಕೋಶಗಳನ್ನು ಆಕರವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರ ಬಹುದೆಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಪಡುತ್ತಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಜೀವಿಯ ಹಲವಾರು ಜನ್ಮಗಳ ಭವಾವಳಿಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ನಾಗರಾಜನು ಸಹಜ ಕವಿಯಾಗಿದ್ದು, ಅವನಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯ ಕಟ್ಟುವ ಶಕ್ತಿ ಇದ್ದರೂ ಸಹ ಅವನು ಆರಿಸಿಕೊಂಡ ವಸ್ತುವಿನ ಹರಹಿನಲ್ಲಿ ಅದರ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೆ ಅಂತಹ ಅವಕಾಶವಾಗಿಲ್ಲ. ಮೂಲವನ್ನು ತಪ್ಪದೇ ಅನುಸರಿಸಿದ್ದು, ಅವನ ಗದ್ಯದ ಆಕರ್ಷಣೆಯಿಂದಾಗಿ ಈಕೃತಿಗೆ ಬೆಲೆಬಂದಿದೆ ಎನ್ನಲಾಗುತ್ತದೆ.

* * *

ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಮಹಾಕವಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆ ಮತ್ತು ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ರಾಮಾಯಣದ ಕವಲನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ಅಧ್ಯಾತ್ಮ, ಆನಂದ, ನಾರದ, ಮನೋಹರ,ವಾಸಿಷ್ಟ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು ಇವು ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಮೇಲೂ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿವೆ. ಇನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮಹಾಕಾವ್ಯವು ಇಡೀ ಭಾರತದ ಅನೇಕ ಸ್ಥಳೀಯ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿದ್ದು, ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಕೇವಲ ಶಿಷ್ಟ ಕಾವ್ಯಗಳಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ, ಯಕ್ಷಗಾನ, ಬೊಂಬೆಯಾಟ, ಬಯಲಾಟ ವೃತ್ತಿರಂಗಭೂಮಿ ಹವ್ಯಾಸೀನಾಟಕಗಳು, ಬೀದಿನಾಟಕಗಳು, ಹರಿಕಥೆ, ಹರಿದಾಸಸಾಹಿತ್ಯ ಎಲ್ಲದರಲ್ಲೂ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಗೊಂಡಿದೆ. ತೊರವೆ ನರಹರಿಯ ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಆರಂಭಿಸಿ ಐದು ಶತಮಾನಗಳು ಹಲವು ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತವಾಗಿದ್ದು ಇಪ್ಪತ್ತೊಂದನೆಯ ಶತಮಾನದ ಇತ್ತೀಚಿನ ಆಧುನಿಕ ರಂಗಪ್ರಯೋಗ 'ವಾಲಿವಧೆ' ನಾಟಕದವರೆಗೂ ವಸ್ತುವನ್ನು, ಸ್ಫೂರ್ತಿಯನ್ನೂ ನೀಡಿದೆ. ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಮುನ್ನೆಲೆಗೆ ಬಾರದ ಉತ್ತರರಾಮಕಥೆಯನ್ನು ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳು ತಮ್ಮ ಕಾವ್ಯ ರಚನೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ವಸ್ತುವಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳು ದೊರಕುವಷ್ಟು ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳು ಲಭ್ಯವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರೆ ಅವುಗಳ ರಚನೆಯೇ ಕಡಿಮೆಯಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

**ತೊರವೆಯ ನರಹರಿ** (15ನೇ ಶತಮಾನ) ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 6 ಕಾಂಡ 112 ಸಂಧಿಗಳು 5103 ಪದ್ಯಗಳಿವೆ. ದೊರೆತಿರುವ ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲಿ ಇದು ಮೊದಲ ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ. ಇವನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ್ದರೂ ಜಾನಪದ, ಅದ್ಭುತ, ಆಧ್ಯಾತ್ಮ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಕಥೆಗಳ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿದ್ದಾನೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಮದ್ವಾಚಾರ್ಯರ ಟೀಕೆ ಮತ್ತು ಜೈನ ಕತೆಗಳೂ ಇವನನ್ನು ಪ್ರಭಾವಿಸಿವೆ. ಕರ್ನಾಟಕದ ಭಕ್ತಿ ಪರಂಪರೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಜೈನ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣದ ರಾಮ ಭಕ್ತಿಯ ಸುಧೆಯು ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಎದ್ದು ಕಾಣುತ್ತದೆ. "ಮನುಜನಲ್ಲಕಣಾ ರಘು ಕ್ಷಿತಿಜನಪ", "ದೇವರ ದೇವನಲಾ ನೀನು" ಎಂಬುದನ್ನು ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವಕಾಶ ಸಿಕ್ಕಲೆಲ್ಲಾ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ರಾಮನನ್ನು ವಿಷ್ಣುವಿನ ಅವತಾರವೆಂದು, ಭಗವಂತನೆಂದು ನೋಡುವ ಭಾಗವತ ದೃಷ್ಟಿಯ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಗುರುತಿಸಬಹುದು. ನರಹರಿಯನ್ನು ಶ್ರೇಷ್ಠ ಕವಿ ಎಂಬುದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಭಕ್ತನೆಂದು ಹೇಳುವುದೇ ಸರಿ. ಈ ಭಕ್ತಿರಸದಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯ ಕಲೆ, ಔಚಿತ್ಯ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಕೆಲವುಕಡೆ ತಪ್ಪಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದಾದರೂ ಅವನ ಕೆಲವು ಹೊಸ ಕಲ್ಪನೆಗಳು ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಆಕರ್ಷಣೆ ಹೆಚ್ಚಿಸಿವೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ ಅತ್ಯಂತ ನಾಟಕೀಯವಾಗಿ ಚಿತ್ರಣಗೊಂಡಿರುವ ತೃಣಬಿಂದು ಮುನಿಯ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಹನುಮಂತನ ವಿನಯವನ್ನೂ, ಭಕ್ತಿಯಬಲವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸಿ, ಸತ್‌ದಾರಿ, ಸದುದ್ದೇಶಕ್ಕೆ ಸದಾ ಜಯವೆಂಬ ಸಂದೇಶವನ್ನು ನೀಡಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಎಷ್ಟು ಬಟ್ಟೆ ಸುತ್ತಿದರೂ ಹನುಮಂತನ ಬಾಲ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರಲು ಊರವರ ಬಟ್ಟೆಗಳು ಸಾಲದೆ ರಾವಣನ ಕುಮಾರರ ರಾಣಿಯರ ವಸ್ತ್ರವನ್ನೂ ತಂದು ಸುತ್ತಿದ್ದಾಯಿತು, ಎಂದು ತಿಳಿದಮೇಲೆ ರಾವಣ ತನಗೆ ಇಂದ್ರ ಕೊಟ್ಟ ಪಂಚೆ ಮತ್ತು ಪಟ್ಟಾವಳಿ, ಕುಬೇರಕೊಟ್ಟ ಚೀನಿ ರೇಷ್ಮೆ, ಬ್ರಹ್ಮ ಕೊಟ್ಟ ದಿವ್ಯ ವಸ್ತ್ರ, ಯಮ ಕೊಟ್ಟ ನಿಲುವಂಗಿ! ವರುಣ

**ಕೊಟ್ಟ ಕೆಂಪುವಸ್ತ್ರ ಎಲ್ಲವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಟ್ಟನಂತೆ! ಇದನ್ನು ಗಮನಿಸಿ "ಇವನು ಕಂಡವರನ್ನು ಸುಲಿಯುತ್ತಾನೆ ಈ ಭಂಡತನದವರಾವಲ್ಲ" ಎಂದು ಹನುಮಂತ ಬಾಲಕ್ಕೆ ಬೆಳೆಯದಿರುವಂತೆ ಹೇಳಿದನಂತೆ. ಬಾಲಕ್ಕೆ ಬೆಂಕಿ ಹಚ್ಚಲು ರಾಕ್ಷಸರು ಸುರಿದ ತರಹೇವಾರಿ ಎಣ್ಣೆಗಳ ಒಂದು ದೊಡ್ಡಪಟ್ಟಿ ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಎಣ್ಣೆಗಳ ಪರಿಚಯಮಾಡಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ನರಹರಿಯ ಇಂತಹ ಅನೇಕ ಕಲ್ಪಕತೆಗಳು ಆಬಾಲವೃದ್ಧರಾದಿಯಾಗಿ ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಸೆಳೆಯುತ್ತವೆ.**

ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಬಾಲಕಾಂಡದಿಂದ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದವರೆಗಿನ ಕಥೆ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿದೆ, ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಕಥೆಯಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಎಂಟುವರ್ಷದ ಲವಕುಶರು ತಮ್ಮ ತಂದೆ ಯಾರೆಂದು ಕೇಳಿದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಅವರಿಗೆ ಉತ್ತರವಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳು ಈ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದಂತೆ ನಿರೂಪಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಮೂರನೆಯ ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 141 ಪದ್ಯಗಳು ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ವಿಚಾರವನ್ನೇ ಹೇಳುತ್ತವೆ. ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶಂಬುಕ ವೃತ್ತಾಂತದಲ್ಲಿ ಜೈನ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಪ್ರಭಾವವಿದೆ[12] ಇವನ ಮೇಲೆ ತೆಲುಗಿನ ಬಾಸ್ಕರ ಕವಿಯ ಪ್ರಭಾವವನ್ನೂ ಗುರುತಿಸಲಾಗಿದೆ.[13] ಇಲ್ಲಿನ ಶಂಬುಕನು ವೈದಿಕ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳುವಂತೆ ಶೂದ್ರಮುನಿ ಅಲ್ಲ. ಅಪ್ರಾಪ್ತ ವಯಸ್ಸಿನ ಬಾಲಕನ ಮರಣಕ್ಕೆ ಇವನ ತಪಸ್ಸು ಕಾರಣವಾಗಿ ರಾಮನಿಂದ ಸಂಹರಿಸಲ್ಪಡುವುದಿಲ್ಲ. ಇವನು ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ಮಗ, ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಕೊಂದದ್ದರಿಂದ ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ಸೇಡಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿದ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಕಷ್ಟಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಯಿತೆಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. **ಇವನು ವೈದೀಕ ಕವಿಯಾದರೂ ಅವೈದಿಕ ಧಾರೆಯಲ್ಲಿನ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿರುವುದು ವಿಶೇಷವಾಗಿದೆ.**

ರಾಮಾವತಾರದ ಉದ್ದೇಶ ಸಾಧನೆಯ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಇವನು ಮಂಥರೆಯನ್ನು 'ಪೂರ್ವಮಾಯಾ ತರುಣಿ' ಎಂದು ಕರೆದಿದ್ದಾನೆ.ಇದರ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಮುಂದೆ ಬಂದ ಬತ್ತಲೇಶ್ವರ ಹಾಗೂ ಕುವೆಂಪುರವರು ಮಂಥರೆಯನ್ನು ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿ ಗೌರವಿಸಿ ಅವಳನ್ನು 'ಕಾರಣಪುರುಷಳು', 'ಮಮತೆಯಸುಳಿ' ಯೆಂದು ಚಿತ್ರಿಸಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಸೀತೆಯ ಅಪಹರಣ, ರಾವಣವಧೆಗಳನ್ನು ಸಮಂಜಸವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ನರಹರಿಯು ಕುಮಾರ ವ್ಯಾಸನಿಂದ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ಪಡೆದಿದ್ದರೂ ಅವನ ಎತ್ತರಕ್ಕೆ ಏರಲಾಗಿಲ್ಲ. ಇವನನ್ನು ಸಾಧಾರಣಕವಿ ಎಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದರೂ ಅವನ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸೊಗಸನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.[14] ಇವನ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿ ಅವನ ಕಾಲದ ಆಡುಭಾಷೆಯ ಸೊಗಡನ್ನು, ಅನ್ಯ ಭಾಷೆಯ ಎರವಲು ಪದಗಳನ್ನೂ, ಅವನ ಕಾಲದ ಯುದ್ಧಗಳ, ಕೋಟೆಕಾಳಗಗಳ ವಿವರಣೆಗಳನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.

**ಕನಕದಾಸರ 'ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ'ಯು** ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿದ್ದು 158 ಪದ್ಯಗಳಿವೆ. ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತವಾಗಿ ಮೂಲರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯು ಮೊದಲಿಗೆ ಬರುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಬಂದಿರುವ ರಾಮಕಥೆಯಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವೇನೂ ಇಲ್ಲ. ರಾಮಕಥೆಗೆ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯೂ ಇಲ್ಲ. ರಾವಣವಧೆಯನಂತರ ರಾಮನು ವಿಭೀಷಣ, ಹನುಮಂತ, ಸುಗ್ರೀವ ಇವರ ಪರಿವಾರದೊಂದಿಗೆ ಗೌತಮ ಮುನಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ತಂಗುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿ ವಿವಿಧ ಬಗೆಯ ಧಾನ್ಯಗಳಿಂದ ಸವಿರುಚಿಯಾದ ಔತಣವೇರ್ಪಡಿಸಿದ್ದು ವಿವಿಧ ಖಾದ್ಯಗಳ ವಿಶೇಷತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಯಲು, ಆ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ನೋಡಬೇಕೆಂದು ಹನುಮಂತನು ಬಯಸುತ್ತಾನೆ. ಆ ಎಲ್ಲಾ ನವಧಾನ್ಯಗಳ ಪರಿಚಯದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ನರೆದಲಗ ಮತ್ತು ವ್ರೀಹಿಗಳ ನಡುವೆ ವಾಗ್ಯುದ್ಧವೇ ನಡೆದು ಹೋಗುತ್ತದೆ. ರಾಮನು ಅವೆರಡಕ್ಕೂ ಆರು ತಿಂಗಳ ಕಾರಾಗೃಹವನ್ನು ವಿಧಿಸಿ, ಆನಂತರದಲ್ಲಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಕರೆಸಿಕೊಂಡು ತೀರ್ಮಾನ ಕೈಗೊಳ್ಳುವುದಾಗಿ ಮಾತುಕೊಟ್ಟು ಹೊರಟು ಹೋಗುತ್ತಾನೆ. ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದನಂತರ ಅವೆರಡನ್ನೂ ಕರೆಸಿಕೊಂಡು ಇಂದ್ರಾದಿ ಪ್ರಮುಖರ, ಮುನಿಗಳ ಸಮಕ್ಷಮದಲ್ಲಿ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಅವುಗಳ ಶ್ರೇಷ್ಠತೆಯ ಪರೀಕ್ಷೆ ನಡೆಯುತ್ತದೆ. ಆರೇಳುತಿಂಗಳ ಸೆರೆವಾಸದಲ್ಲೂ ರೂಪುಗೆಡದೆ ಸದೃಢವಾಗಿದ್ದ ನರೆದಲಗನಿಗೆ ರಾಮನು 'ರಾಘವ'ನೆಂಬ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನಿತ್ತು ಸನ್ಮಾನಿಸುತ್ತಾನೆ. ಎಲ್ಲರೂ ನರೆದಲಗನನ್ನು ಕೊಂಡಾಡುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನ ನಿಷ್ಪಕ್ಷಪಾತವಾದ ತೀರ್ಮಾನವನ್ನು ಮುನ್ನೆಲೆಗೆ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. 15ನೇ ಶತಮಾನದ ಕರ್ನಾಟಕದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಜೀವನ, ಅಲ್ಲಿನ ತರತಮದ ಮೇಲೆ ಬೆಳಕು ಚೆಲ್ಲುವ ಈಕೃತಿ ರೂಪಕಾತ್ಮಕವಾಗಿ

ಉಳ್ಳವರ ಮತ್ತು ಇಲ್ಲದವರ ಸಂಘರ್ಷವನ್ನು ಧ್ವನಿಸುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಸ್ವಸ್ಥ ಸಮಾಜಕ್ಕೆ ತರತಮವಿಲ್ಲದೆ ಹೊಂದಿ ಸಹಬಾಳ್ವೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬ ಸಂದೇಶವನ್ನು ರಾಮನಿಂದ ಕೊಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಬೇಧಭಾವವಿಲ್ಲದೇ ಸತ್ವವನ್ನು ಪ್ರಭುತ್ವವು ಗುರುತಿಸಿ ಅವಕಾಶವನ್ನು, ಮಾನಸಮ್ಮಾನವನ್ನು ರಾಮನಂತೆ ನೀಡಬೇಕೆಂಬುದು ಕನಕರ ಆಶಯವಾಗಿದೆ.

ಕನಕದಾಸರಂತೆ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಕೃತಿರಚನೆ ಮಾಡದಿದ್ದರೂ ಇತರ ಹರಿದಾಸರು ರಾಮ ಕೃಷ್ಣರ ಕಥೆಗಳ ಅನೇಕ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಪುರಂದರದಾಸರು ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ರಾಮಾಯಣವೆಂಬ ಪದ್ಯಕಾವ್ಯವನ್ನೇ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.[15] ಇದು ಕೀರ್ತನೆಯ ಸ್ವರೂಪಕ್ಕಿಂತ ಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದು, ಚೌಪದಿಯಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ಗಣೇಶ, ಲಕ್ಷ್ಮಿ, ಪಾರ್ವತಿಯರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯೊಂದಿಗೆ ಆರಂಭವಾಗಿ ಉತ್ತರಕಾಂಡವನ್ನು ಹೊರತುಪಡಿಸಿ ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಪ್ರತಿ ಪಾದಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ 'ರಾಮಾ'ಎಂಬುದು ಬಂದಿದೆ. ಸುವಾಸಿನಿಯರ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಇಂದಿಗೂ ನಿತ್ಯ ಪಾರಾಯಣಗೊಳ್ಳತ್ತದೆ. ವಿಜಯದಾಸರು, ಶ್ರೀಪಾದರಾಯರು, ವಾದಿರಾಜರು, ಪ್ರಸನ್ನವೆಂಕಟದಾಸರೆಲ್ಲರೂ ರಾಮಾಯಣದ ಪಾತ್ರಗಳ, ಅನೇಕ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಬತ್ತಲೇಶ್ವರ ಕವಿಯ** 'ಕೌಶಿಕರಾಮಾಯಣ' ತೊರವೆ ನರಹರಿಯ ರಾಮಾಯಣದಂತೆಯೇ ಕನ್ನಡಿಗರಿಂದ ನಿತ್ಯಪಾರಾಯಣವಾಗುತ್ತಿದ್ದ ಕಾವ್ಯ. ಉತ್ತರ ಕನ್ನಡ, ದಕ್ಷಿಣ ಕನ್ನಡ ಜಿಲ್ಲೆ, ಶಿವಮೊಗ್ಗಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಜನಪ್ರಿಯವಾಗಿದ್ದು ಇದನ್ನು ಶಿವರಾಮಕಾರಂತರು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಪ್ರಕಟಿಸಿದರು. ಇದು 44 ಸಂಧಿಗಳ ಭಾಮಿನೀ ಷಟ್ಪದಿಯ ಬೃಹತ್ ಕಾವ್ಯ. 'ಯಾಣದವರಕವಿ' ಎಂದು, ತನ್ನ ಕಥಾದೃಷ್ಟಿ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಪರವೆಂದು ಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ.ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಷ್ಟ್ಯರಾಮಾಯಣವಿರುವುದರ ಸ್ಫೂರ್ತಿಯಿಂದ ಹಾಗೂ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರು ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ತಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕರೆದೊಯ್ದು ಲೋಕಕಲ್ಯಾಣಕ್ಕೆ ಪ್ರೇರೇಪಿಸಿದುದರ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ 'ಕೌಶಿಕ ರಾಮಾಯಣ'ವೆಂಬ ಹೆಸರಾಗಿರಬೇಕೆಂದು ಕಾರಂತರು ಊಹಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಮೂಲರಾಮಾಯಣದ ಬಾಲಕಾಂಡದಿಂದ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದವರೆಗಿನ ಭಾಗಗಳು ಮಾತ್ರವಿದೆ. ಇವನ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಜನಿತವಾದ ಹಲವು ಪ್ರಸಂಗಗಳು ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ. ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಈತನಿಗೆ ಆಸಕ್ತಿಯಿಲ್ಲ ಆಧ್ಯಾತ್ಮ ರಾಮಾಯಣ, ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಮತ್ತು ಜೈನ ಕಥೆಯ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿದ್ದಾನೆ. ತಾನು ತನ್ನ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕುರಿತು **“ಇದು ಮನೋಭಿಪ್ರಾಯ ಸಾಧಕವಿದು ಪರೇಹ ಸುಖ ಪ್ರದಾಯಕವಿದು ಸುಖಾಬ್ದಿಗೆ ಮೂಲ ಸಾಧನವಿದು ಸುಖಪ್ರದವು ಇದು ಸಕಲ ಪೌರಾಣವೇದದ ಹೃದಯ ಮುನಿವಾಲ್ಮೀಕಿ ವರ್ಣಿತಯಿದರ ಮಹಿಮೆಯ ಬಲ್ಲನೀಶ್ವರನುಳಿದ ಮಾತೇನು”** ಎಂಬುದು ಅವನ ನಿಲುವು. ಅವಕಾಶದೊರೆತಾಗಲೆಲ್ಲಾ ಇವನೂ ರಾಮ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಕೊಂಡಾಡಲು ತೊಡಗುತ್ತಾನೆ. **“ರಾಮನು ಹರಿಕಣಾ ಭೂಭಾರದ ಸಂಹರಿಕಣಾ” ಎಂಬಂತಹ ಹೇಳಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮನ ದೈವತ್ವವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ನೆನಪಿಸುತ್ತಾನೆ. ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನ ಕಾವ್ಯ ಶೈಲಿಯ ದಟ್ಟ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಇವನ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಗುರುತಿಸಬಹುದು. ಸೀತಾ ಸ್ವಯಂವರದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಉಪಸ್ಥಿತನಿದ್ದ ರಾವಣನು ತಲೆಬಾಗದೆ ಕುಳಿತಿದ್ದಾಗ ಬಿಲ್ಲೆತ್ತಲು ಹೋಗುವಾಗ ರಾಮನು ಸನಿಹದ ಮಣಿಪೀಠದ ನೆಲವನ್ನು ತನ್ನ ಕಾಲಿನಿಂದ ಒತ್ತಿ ಅವನು ಎರಗುವಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡನೆಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ.** ಇದು ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನ ಉದ್ಯೋಗ ಪರ್ವದ ಕೃಷ್ಣ ಸಂಧಾನದ ಧುರ್ಯೋಧನ ಗರ್ವಭಂಗ ಪ್ರಸಂಗದ ಪ್ರೇರಣೆ ಎಂಬುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುತ್ತದೆ. ಇವನ ಕಾವ್ಯ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ನರಹರಿಯಂತೆಯೇ ಸಮಕಾಲೀನ ಸಮಾಜದ ಜನ ಅವರ ಸ್ವಭಾವ ನಡವಳಿಕೆ ಹಾಗೂ ಅವರ ಊಟೋಪಚಾರ ತಿಂಡಿತೀರ್ಥ, ವ್ಯಾಪಾರ-ವ್ಯವಹಾರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ಸೊಗಸಾಗಿ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿನ ಶಂಬುಕನ ಕಥೆಯು ಜೈನ ಪುರಾಣವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದೆ.

ಕೊನೆಕೊನೆಗೆ ಹಿರಣ್ಯಕಶಿಪುವನ್ನು ನರಹರಿಯು ಸೀಳಿದಂತೆ ರಾಮನು ತನ್ನನ್ನು ಈ ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಕೊಲ್ಲುತ್ತಾನೆಂದು ಇವನ ರಾವಣನಿಗೆ ತಿಳಿದುಬಿಡುತ್ತದೆ. ರಾಮನನ್ನು ಕೆಣಕಬೇಕಾದರೆ ಅವನ ಹೆಂಡತಿಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಬೇಕೆಂದು ತರ್ಕಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಮಂಡೆಬೋಳಿನ, ಕರಕಮಂಡಲ, ದಂಡ, ಧೋತ್ರದ ಕಾಸೆವೇಷದ ಲಂಡ ಸನ್ಯಾಸಿಯ ವೇಷದಲ್ಲಿ ಬಂದು ರಾವಣ ಗೆರೆ ದಾಟಿ ಬಂದ ಸೀತೆಯನ್ನು

ಅಪಹರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅಹಲ್ಯೆಯ ಶಾಪದ ಕಥೆಯನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಂತೆಯೇ ಮೊದಲಿಗೆ ಹೇಳಿದ್ದರೂ ಮತ್ತೆ ಗೌತುಮರ ಮಗಳಾದ ಹನುಮಂತನ ತಾಯಿ ಅಂಜನಾದೇವಿ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಅಹಲ್ಯೆಯು ಇಂದ್ರನ ಸಹವಾಸಮಾಡಿ ವಾಲಿ ಎಂಬ ಮಗನನ್ನೂ ಸೂರ್ಯನ ಸಹವಾಸಮಾಡಿ ಸುಗ್ರೀವನೆಂಬ ಮಗನನ್ನೂ ಪಡೆದಳು ಎಂಬ ವಿಚಾರವನ್ನು ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇವೆಲ್ಲವೂ ಆಧ್ಯಾತ್ಮ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಬತ್ತಲೇಶ್ವರನು ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಮಾರ್ಪಾಟುಗಳಾಗಿವೆ. ಆದರೆ ಇದು ತೆಲುಗಿನ 'ದಶಾನನ ವಿಲಾಪ'ದ ಪ್ರಭಾವವೆಂದೂ, ತೆಲುಗಿನ ಬಾಸ್ಕರ ಕವಿಯನ್ನು ನರಹರಿಯು ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾನೆಂದು ಹೇಳುವುದು ತಾಲನಿಕ ಅಧ್ಯಯನದ ಕೊರತೆಯ ದ್ಯೋತಕವೆಂದು ಪ್ರಭಾವತಿಯವರು ಅಭಿಪ್ರಾಯಿಸುತ್ತಾರೆ.[16] ಈ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಮನು ವಾಲಿಯ ವಧೆಮಾಡಲು ಕಾರಣವಾದ ವಿಚಾರವನ್ನು ಹೊಸದಾಗಿ ಹೇಳಿದೆ. ವಾಲಿ ರಾವಣನನ್ನು ಕಂಕುಳಲ್ಲಿಟ್ಟು ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿಸಿ ತಂದು ಮಗನ ತೊಟ್ಟಿಲ ಕಾಲಿಗೆ ಕಟ್ಟಿದ್ದನೆಂದೂ ರಾವಣ ಜೀವ ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಿದಾಗ ಕನಿಕರಿಸಿ ಬಿಟ್ಟನೆಂದೂ, ಅಪೇಕ್ಷಿಸಿದಾಗ ಸಹಾಯ ನೀಡುವೆನೆಂದು ಹೇಳಿರುವುದರಿಂದ ರಾವಣನನ್ನು ಗೆಲ್ಲಲು ಪರಾಕ್ರಮಿಯಾದ ವಾಲಿಯ ಹತ್ಯೆಯು ಅವಶ್ಯಕವೆಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿದು, ಹನುಮಂತನ ಮಾತಿನಂತೆ ರಾಮ ವಾಲಿಯ ವಧೆ ಮಾಡಲು ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ಕಥೆಯಿದೆ. ರಾಮ ಏಳು ತಾಳೆ ಮರ ಕತ್ತರಿಸಿ ಶಕ್ತಿ ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಇವನು ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣದಂತೆ ರೂಪಿಸಿದ್ದಾನೆ. ವಾನರರನ್ನು ಕನ್ನಡಿಗರು ಎಂದು ಭಾವಿಸುವ ಇವನು ಹೆಮ್ಮೆಯಿಂದ ಕಥೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮವೃತ್ತಾಂತವು ಈ ಕವಿಯನ್ನು ಸೆಳೆದಿದೆ. **ಇದರಲ್ಲಿ ಹನುಮನ ಜನನ, ಸೂರ್ಯನನ್ನು ಹಣ್ಣೆಂದು ಭ್ರಮಿಸಿ ಪೆಟ್ಟುತಿನ್ನುವುದು, ಹನುಮನೆಂಬ ಹೆಸರು ಪ್ರಾಪ್ತವಾದ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಆಸ್ತೆಯಿಂದ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಇವನಿಗೆ ತನ್ನ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಆಕರ್ಷಕ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ಉತ್ಸಾಹವಿದೆಯೇ ಹೊರತು ಅದರ ಕಾವ್ಯಾತ್ಮಕತೆಯ ಕಡೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಗಮನವಿಲ್ಲ.**

**ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ** 'ಕವಿಚೂತವನಚೈತ್ರ'ನೆಂಬ ಬಿರುದನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದ ನಡುಗನ್ನಡದ ಉದ್ದಾಮ ಕವಿಯು ತನ್ನ ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯ ಜೈಮಿನಿಭಾರತ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ, ಲವಕುಶ ಜನನ, ರಾಮನ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ ಮತ್ತು ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗ, ರಾಮ–ಸೀತೆಯರ ಪುನರ್ಮಿಲನದ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಅರ್ಜುನ ಬಭ್ರುವಾಹನ ಕಾಳಗಕ್ಕೆ ದೃಷ್ಟಾಂತವಾಗಿ ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ಆ ಭಾಗಗಳು ವಿಮರ್ಶಕರಿಂದ ಬಹಳವಾಗಿ ಪ್ರಶಂಸೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿವೆ. ಕರುಣರಸ ಪೂರಿತವಾಗಿರುವ ಸೀತಾ ಪರಿತ್ಯಾಗವು ಕನ್ನಡ ಜನಮಾನಸವನ್ನು ಸೂರೆಗೊಂಡಿದೆ.ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಪಾತ್ರ ಚಿತ್ರಣಗಳು ಜೀವಂತವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ. ಇಡೀ ಜೈಮಿನಿ ಭಾರತದಲ್ಲೇ ಈ ಆಖ್ಯಾನವು ರಸದ ಘಟ್ಟಿಯಾಗಿದೆ. ಲಕ್ಷ್ಮೀಶನ ಭಾಷಾ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿ ಸ್ವಂತಿಕೆಯಿದೆ. ಅವನ ಉಪಮೆಗಳು ಕಾವ್ಯದ ಜೀವಾಳವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೇ ಅವನು 'ಉಪಮಾಲೋಲ'ನೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದಾನೆ. ಕಥೆ ಪಾಂಡವರ ಅಶ್ವಮೇಧವಾದರೂ ಅದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಈ ಕಿರು ಆಖ್ಯಾನವನ್ನು ತಂದಿದ್ದರೂ, ಇಲ್ಲಿನ ಉತ್ತಮ ಕವಿತ್ವಗುಣ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯದಿಂದಾಗಿ ಸ್ವತಂತ್ರವಾದ ರಾಮ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಬರೆದ ಇತರ ಕವಿಗಳಿಗಿಂತ ಲಕ್ಷ್ಮೀಶನು ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥೆಗೆ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯವಿತ್ತಿರುವ ಕನ್ನಡ ಕೃತಿಗಳು ಹದಿನೇಳನೇ ಶತಮಾನದಿಂದ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಆರಂಭವಾಗುತ್ತವೆ. **ನಾರಾಯಣ ಕವಿಯು (ಕ್ರಿ.ಶ. 1530)**ಬರೆದಿರುವ ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯ 44 ಸಂಧಿಗಳ 2034 ಪದ್ಯಗಳ ಸುದೀರ್ಘ ಕಾವ್ಯ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆ'ಯು ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯ ಕನ್ನಡ ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಅನುಕರಣೆಯಿದ್ದರೂ ಕೊನೆಯ ಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಪದ್ಮಪುರಾಣವನ್ನು ಆಕರವಾಗಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಇದರಲ್ಲಿ ಪರಿನಿರ್ವಾಣದ ಕಥೆಯಿಲ್ಲ. ಇವನ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರೌಢಿಮೆ ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಗುಣ, ಸನ್ನಿವೇಶ ನಿರ್ಮಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಾರಸ್ಯವಿದೆ. ಇವನ ಮೇಲೆ ಕುಮಾರವ್ಯಾಸನ ಶೈಲಿಯ ಪ್ರಭಾವವಿದೆ. **ನಾರಾಯಣನ ನಂತರ ಬಂದ ತಿರುಮಲೆ ವೈದ್ಯ, ನರಸ ಕವಿ,**

**ಯೋಗೀಂದ್ರ ಮುಂತಾದ ಕವಿಗಳು ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.**

**ತಿರುಮಲೆ ವೈದ್ಯ**ನೆಂಬ ಕವಿ 'ಉತ್ತರರಾಮಾಯಣಂ' ಎಂಬ ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾನೆ. 20 ಸಂಧಿಗಳ 1021 ಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದಲ್ಲಿ ಕಥೆ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಸಂಗ್ರಹರೂಪದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಪೂರ್ತಿಯಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಮುಖ್ಯಕಥೆಗೆ ಪೂರಕವಾದ ಉಪಾಖ್ಯಾನಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಉಳಿದ ಅನೇಕ ಉಪಾಖ್ಯಾನಗಳನ್ನು ಬಿಡುವ ಮೂಲಕ ಔಚಿತ್ಯಪ್ರಜ್ಞೆಯನ್ನು ಮೆರೆದಿದ್ದಾನೆ. ಹಿತವಾಗಿ ಎಷ್ಟುಬೇಕೋ ಅಷ್ಟನ್ನು ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟಾಗಿ ಹೇಳಿರುವುದು ಈ ಕೃತಿಯ ವಿಶೇಷ.

**ನರಸ ಕವಿಯು** (ಕ್ರಿ.ಶ. 1612) 'ಉತ್ತರ ರಾಮ ಕಥಾ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನ ಭಾಮಿನೀ ಷಟ್ಪದಿಯ 56 ಸಂಧಿಗಳ 2675 ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ **ಈ ಕಾವ್ಯವು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ದೊರಕಿರುವ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲಾ ದೊಡ್ಡದು. ಸಾಹಿತ್ಯಕ ಮೌಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಇದು ಸಾಧಾರಣವಾದ ಕೃತಿ,** ಇದರಲ್ಲಿ ಮೈರಾವಣಕಾಳಗವನ್ನೂ ಸೇರಿಸಿ ಹೆಚ್ಚಾದ ಅತಿಮಾನುಷ ವರ್ಣನೆಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ಅಧಿಕವಾದ ವಿವರಣೆ, ಆಕರ್ಷಣೆಯಿಲ್ಲದ ವಾಚ್ಯವಾದ ದೀರ್ಘವರ್ಣನೆಗಳು ತುಂಬಿವೆ. ಇದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಇದರ ನಾಟಕೀಯ ಶೈಲಿ.

**ಯೋಗೀಂದ್ರ**ನೆಂಬ ಕವಿ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಕುಸುಮ ಷಟ್ಪದಿಯ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇವನು ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಿಂಹಾವಲೋಕನ ಕ್ರಮದಿಂದ ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣದ ಅನೇಕ ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಮೆಲುಕು ಹಾಕಿದ್ದಾನೆ. ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಎರಡು ಭಾಗವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಮೊದಲನೆಯ ಭಾಗವು ಆಕರ್ಷಕವಾಗಿದ್ದಷ್ಟು ಔಚಿತ್ಯ ಪೂರ್ಣವಾಗಿದ್ದಷ್ಟು ಎರಡನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಇದರಲ್ಲಿನ ಕಥಾ ಸೂತ್ರದಲ್ಲಿ ಬಿಗಿಯಾದ ಹೆಣಿಗೆಯಿಲ್ಲ.

**ಸೋಸಲೆ ಅಯ್ಯಾಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು** 34 ಸಂಧಿಗಳ 1340 ಪದ್ಯಗಳುಳ್ಳ 'ಶೇಷ ರಾಮಾಯಣಂ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಪದ್ಮಪುರಾಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ವಾರ್ಧಕ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. 1927ರಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟವಾಗಿದೆ. ಇವರು ನಾಲ್ವಡಿ ಕೃಷ್ಣರಾಜವಡೆಯರಿಗೆ ಉಪಾಧ್ಯಾಯರಾಗಿದ್ದರು. 'ಮಹಾವಿದ್ವಾನ್' ಹಾಗೂ 'ಕವಿತಿಲಕ' ಎಂಬ ಬಿರುದನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದರು. **ಆಸ್ಥಾನ ವಿದ್ವಾನ್ ಆಗಿದ್ದ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ಪೀಠಿಕಾಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಮುಮ್ಮಡಿ ಕೃಷ್ಣರಾಜವಡೆಯರಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ರಾಜಮನೆತನದ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಉತ್ತರರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವಂತೆ ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೂ ಪಠಣ ಯೋಗ್ಯ ವಾಗಿರಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ರಚಿಸಿರುವುದಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟಾದಶ ವರ್ಣನೆ, ನವರಸಗಳ ವರ್ಣನೆ, ಋತುವರ್ಣನೆ, ಸೂರ್ಯೋಪಾಸನೆ, ಇತ್ಯಾದಿ ವರ್ಣನೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ರುಕ್ಮಾಂಗದ, ಸುರಥ, ಉಪಮನ್ಯು, ದವಳಶ್ವನ ಮುಂತಾದ ಭಕ್ತ ಕಥೆಗಳು ತುಂಬಿಹೋಗಿವೆ.** ರಾಮ ಸೀತೆಯರ ಸಮಾಗಮದೊಂದಿಗೆ ಈ ಕಥೆಯನ್ನು ಸುಖಾಂತವಾಗಿ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.

ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ, ಸೀತೆಯು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ರಾಮನ ನಿರ್ಧಾರವನ್ನು ಹೇಳಿದಾಗ **"ಬರಸಿಡಿಲ್ತಾಗೆ ಭೂಮಿಗೆ ಬಿದ್ದ ಪುರದ ಗೋಪುರದ ಚೆಲ್ವಾಂತ ಪೊಂಬುತ್ತಳಿಯೋ ಕಾಡಾನೆ ಕರದಿಂದೆ ಕಿತ್ತಿಟ್ಟ ಪದ್ಮಲತೆಯೋ, ಸುರಪ ಶಾಪದಿಂ ಸ್ವರ್ಗದಿಂದೆ ಧರೆಗೆ ಕೆಡೆದಿರ್ದ ಅಮರ ಸುಂದರಿಯೋ ......ಎಂಬಂತೆ ಕೆಳಗೆ ಬಿದ್ದಳ್"** ಎಂಬ ವರ್ಣನೆ ಚೆನ್ನಾಗಿದೆ. ಇವರು ನಾಟಕ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲೂ ಕೆಲಸಮಾಡಿದ್ದು, ಸಂಪೂರ್ಣರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನು 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ನಾಟಕಂ' (1904)ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಕವಿಯ ಪಾಂಡಿತ್ಯ, ಪರಿಶ್ರಮ ಎದ್ದು ಕಾಣುತ್ತದೆಯಾದರೂ ಕಾವ್ಯಾತ್ಮಕತೆ ಕಡಿಮೆಯೆಂದೇ ಹೇಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾದ ಬಂಧದಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಕಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ.

**ನಂಜನಗೂಡು ಸುಬ್ಬಾಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು** (ಕ್ರಿ.ಶ. 1834–1906) ಮೈಸೂರು ದೊರೆಗಳ ಆಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿದ್ದವರು. ಇವರ 'ಉತ್ತರ ಸೀತಾ ಚರಿತ್ರೆ' ಎಂಬುದು ಭಾಮಿನಿ ಷಟ್ಪದಿಯ 7 ಉಲ್ಲಾಸಗಳಲ್ಲಿ 118 ಪದ್ಯಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಕಿರು ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ. ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ಇಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯನ್ನು ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಇವರಲ್ಲಿ

ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಕಥಾನಿರೂಪಣೆಯ ಅನುಸರಣೆಯ ಜೊತೆಗೆ ಭವಭೂತಿಯ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯ ಅನುಕರಣೆಯಿರುವುದನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಕವಯಿತ್ರಿ ಯಶೋಧೆಯು** (ಕ್ರಿ. ಶ. 17–18ನೇ ಶತಮಾನ) 'ಲವಕುಶರ ಕಥೆ' ಎಂಬ ಕಿರು ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾಳೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆಯ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ, ಲವಕುಶರ ಜನನ, ತಂದೆ ಮಕ್ಕಳ ಕಾಳಗಗಳನ್ನು 8 ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ 269 ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಸಾಂಗತ್ಯ ಛಂದಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿರುವುದು ವಿಶೇಷ. ಇವಳು ಉತ್ತರ ರಾಮಕಥೆಯನ್ನು ಬರೆದಮೊದಲ ಕವಿಯತ್ರಿ ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇವಳ ಕೃತಿಯ ಹಸ್ತಪ್ರತಿಯು ದೊರೆತಿಲ್ಲ, ಗೌರಿಬಿದನೂರು ಪ್ರಾಂತ್ಯದ ಜರಬಂಡಹಳ್ಳಿಯ ಕುಟುಂಬದ ಸ್ತ್ರೀಯರ ಬಾಯಲ್ಲಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಹಾಡಿನಂತೆ ಉಳಿದುಬಂದಿದ್ದು ಅದನ್ನು ಅನಂತಪದ್ಮರಾಯರು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಸಂಪಾದಿಸಿಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ವಿಶೇಷವಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಶೀಲಕುರಿತು ಪುರಜನರಾಗಲೀ, ಅಗಸನಾಗಲೀ ಹೊರಿಸಿದ ಅಪವಾದವು ಕಾರಣವಾಗದೇ ಸೀತೆಯು ಬರೆದ ರಾವಣನ ಚಿತ್ರಪಟದ ಕಾರಣವನ್ನು ಹೇಳಿದ್ದಾಳೆ. ಸೀತೆಯು ಬರೆದ ರಾವಣನ ಚಿತ್ರಪಟವನ್ನು ನೋಡಿ ಸ್ವತಃ ರಾಮನೇ ಅವಳಬಗೆಗೆ ಸಂಶಯಗೊಂಡು ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಜನಪದ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. "ಕವಯಿತ್ರಿ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಹೆಣ್ಣು ಹೃದಯದಿಂದ ತೂಗಿನೋಡಿದ್ದಾಳೆ, ಹೆಣ್ಣಿನ ಹೃದಯದ ಸೂಕ್ಷ್ಮದೃಷ್ಟಿ, ಕೋಮಲತೆ ಈಕೆಯ ಕಾವ್ಯದ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಗಳು"[17] **ವೆಂಕಾಮಾತ್ಯರ** 'ಷಟ್ಪದೀ ರಾಮಾಯಣಪದ್ಮ ಪುರಾಣ, ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣಗಳ ಪ್ರೇರಣೆಪಡೆದ ಕವಿ, ರಾಮಾಯಣವು ಶಿವನು ಪಾರ್ವತಿಗೆ ಹೇಳಿದ ಕತೆ ಎಂದು ನಿರೂಪಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಹಲವು ಕಾಂಡಗಳೂ ಸಂಧಿಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಬೃಹತ್ ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ. ರಾಮನನ್ನು ಅವತಾರಪುರುಷನೆಂದು ನಂಬಿ ಭಕ್ತಿ ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಬರೆಯಲಾಗಿದೆ. ಹಲವು ಕಡೆಗಳಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಸಂಸ್ಕೃತ ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನೇ ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ವರ್ಣನೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಂತಿಕೆಯಿದೆ ಹಾಗೂ ಚಮತ್ಕಾರವೂಇದೆ. ಇವರು ಹೈದರಲಿ ಖಾನನಲ್ಲಿ ಮಂತ್ರಿಯಾಗಿದ್ದಂತೆ ತಿಳಿದುಬರುತ್ತದೆ. ಇವರು ಪೂರ್ವ ಕವಿಗಳಾದ ಭಾಸ, ಬಾಣ, ಮಯೂರ, ದಂಡಿ, ಕಾಳಿದಾಸಾದಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಕವಿಗಳನ್ನೂ ಕನ್ನಡದ ಹರೀಶ್ವರ, ರುದ್ರಭಟ್ಟರನ್ನೂ ನೆನಸಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ಮೇಲೆ ಬೋಜನ 'ಚಂಪೂ ರಾಮಾಯಣ'ದ ಪ್ರಭಾವವೂ ಕೆಲವು ಪ್ರಸಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬಂದಿರುವುದನ್ನು ಸಂಪಾದಕರಾದ ಟಿ. ಚಂದ್ರಶೇಕರನ್ ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. **ಇವರ ಭಾಗವತ ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದಾಗಿ ತಾಟಕಾ ಸಂಹಾರದ ನಂತರ, ಮಾರೀಚ ವಧೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಿಂದ ವಾಮನಾವತಾರದ ಕತೆ, ರಾಮೋಪಾಸನೆಯನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬೇಕು. ಗೌತಮ, ಅಹಲ್ಯೆ, ಇಂದ್ರರ ಕಥೆಯು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕಿಂತಲೂ ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿದ್ದು ಇಂದ್ರನನ್ನು ಕುರಿತು ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಗತಿಗಳಿವೆ.** ಕಥಾ ಹಂದರದಲ್ಲಿ ಔಚಿತ್ಯದ ಕಡೆಗೆ ಅಷ್ಟಾಗಿ ಗಮನವಿಲ್ಲದ ಕವಿ ಎಲ್ಲೆಂದರಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ವಸಿಷ್ಠರ ಕಥೆ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ ಮೇನಕೆಯರ ಉಪಕಥೆಗಳನ್ನು, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪೂರ್ವಕಥೆಗಳನ್ನು, ಎಲ್ಲೆಂದರಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ, ವೈರಾಗ್ಯಗಳ ಉಪದೇಶಗಳನ್ನೂ ತೂರಿಸಿಬಿಡುವುದರಿಂದ ಕಾವ್ಯಕಲೆ ಸೊರಗಿದೆ. ಇವರ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಕೂಟದ ವರ್ಣನೆ, ಲಂಕೆಯ ವರ್ಣನೆ, ಇತ್ಯಾದಿ ಕೆಲವು ಬಿಡಿಚಿತ್ರಗಳು ಸುಂದರವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿರುವೆ.

**ಮುದ್ದಣ ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ** ಎಂಬ ಕೃತಿಯನ್ನು ತನ್ನ ತಾಯಿ ಮಹಾಲಕ್ಷ್ಮಿಯವರ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟಣೆ ಮಾಡಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಈ ಕೃತಿಯನ್ನು ಪ್ರಕಟಣೆಗೆ ಕಳುಹಿಸುವಾಗ "ಕನ್ನಡಿತಿಯೊರೆದ ನುಡಿಯೆಂದಿದಂ ಭಾವಿಸದೆ ಕನ್ನಡಿಗನೊರೆದ ನುಡಿಯೆಂದು ಸಂಭಾವಿಸುವುದು" ಎಂಬ ಬೇಡಿಕೆಯನ್ನಿಟ್ಟಿದಾನೆ. ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಮನೋಹರನೆಂದು ಪ್ರಾಕಾರಾಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನು ಜೋಡಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 5 ಸಂಧಿಗಳೂ 242 ಪದ್ಯಗಳು ಇವೆ. ನಾಂದಿ ಪದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಚಮತ್ಕಾರವನ್ನು ಶ್ಲೇಷೆಯನ್ನೂ ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ಶ್ರೀ ರಾಮನು ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ವಿಭೀಶಣನಿಗೆ ಲಂಕೆಯ ಪಟ್ಟಕಟ್ಟಿ, ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಸಮೇತನಾಗಿ ಹನುಮಾದಿ ವಾನರರೊಂದಿಗೆ ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ತನ್ನ ನಿರೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಭರತನನ್ನು ಸಂಧಿಸಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಮರಳಿ ತಾಯಂದಿರ ಆಶೀರ್ವಾದವನ್ನು ಪಡೆದು ಪಟ್ಟಾಭಿಶಿಕ್ತನಾಗುವುದು ಈ ಕೃತಿಯ ಕಥಾವಸ್ತು. ಶೇಷರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣಗಳನ್ನು ಆಕರವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಈ ಕೃತಿಯನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರ ಪ್ರತಿಭಾ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಕಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಇದನ್ನು ಒಂದು ಖಂಡ ಕಾವ್ಯವೆಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಕರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಕಿರು ಕಥೆಯ ಆವರಣದಲ್ಲಿ ವರ್ಣನೆಗೇ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯತೆ ಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಜೊತೆಗೆ ರಾಮನ ಸ್ತುತಿ,

ಕೊಂಡಾಟವೇ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪಾಲು ತುಂಬಿಕೊಂಡಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಬರುವ ಭರತ ಕೈಕೆ, ಕೌಸಲ್ಯೆ, ಸೀತೆ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಸುಮಿತ್ರೆ ಹನುಮನ ಪಾತ್ರಗಳು ಸ್ಫುಟವಾಗಿ ಮೂಡಿವೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಕಥೆಗೆ ಇಲ್ಲಿ ಅವಕಾಶವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಬರುವ ಪಾತ್ರಗಳು ಉತ್ಕಟವಾದ ಭಾವದ ಕಡೆಗೆ ಸನ್ನಿವೇಶದ ರಚನಾಕೌಶಲ್ಯದ ಕಡೆಗೆ ಕವಿ ಗಮನಕೊಟ್ಟಿದ್ದು, ಪಾತ್ರ ನಿರೂಪಣಾ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಈ ಕೃತಿ ಗೆದ್ದಿದೆ. ಇದು ಒಂದು ಭಾವಪ್ರಧಾನವಾದ ಕಾವ್ಯವೆಂದು ಕೆ.ಆರ್. ಗಣೇಶರವರು ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ.[18]

**ಸದಾಶಿವ ರಾಮಾಯಣ** ಎಂಬ ವಾರ್ಧಕ ಷಟ್ಪದಿಯ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ವೆಂಕಟನೆಂಬ ಕವಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 58 ಸಂಧಿಗಳಿವೆ.[19] ಈ ಕವಿ ತನಗಿದ್ದ 'ಕವಿತಾವಿಶಾರದ' ಎಂಬ ಬಿರುದನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಈ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿನ ಪರಶುರಾಮ ಗರ್ವಭಂಗ ಪ್ರಸಂಗವು ಕಾವ್ಯಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಪ್ರೌಢವಾಗಿದ್ದು, ರಸಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ [20]

**ಹೆಳವನಕಟ್ಟೆ ಗಿರಿಯಮ್ಮ** ಸೀತಾಕಲ್ಯಾಣ ಹಾಗೂ ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗಗಳೆಂಬ ಎರಡು ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವುದಲ್ಲದೆ ಇನ್ನೂ ಅನೇಕ ಕಥನ ಕಾವ್ಯಗಳನ್ನೂ ಸಾಂಗತ್ಯದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾಳೆ. **ಹೆಳವನ ಕಟ್ಟೆ ರಂಗನ ಅಂಕಿತದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಕೀರ್ತನೆಗಳನ್ನೂ ರಚಿಸಿರುವ ಈ ಕವಿಯಿತ್ರಿಯದು ಭಾಗವತ ದೃಷ್ಟಿಕೋನ. ಸೀತಾಕಲ್ಯಾಣ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ 77 ನುಡಿಗಳಿದ್ದು ರಾಮಜಾನಕಿಯ ಮಂಗಳುತ್ಸವದ ಉರುಟಣೆಯ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾಳೆ, ಮಧುವೆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಧುವರರಿಗೆ ಅರಿಷಿಣ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನಿಡುವ ಶಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಮಾಡುವುದೇ ಇದರ ವಸ್ತು. ಇಲ್ಲಿ ಕಥೆಯಿಲ್ಲ.** ಬ್ರಾಹ್ಮಣರ ಕುಟುಂಬಗಳಲ್ಲಿ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದ ವಿವಾಹದ ಆಚರಣೆಗಳನ್ನು ಆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಮುತ್ತೈದೆಯರು ಹಾಡುವ ಸಂಪ್ರದಾಯ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಇದು ನೆನಪಿಸುತ್ತದೆ. 'ಲವಕುಶರಹಾಡು' ಐದುನೂರು ಪದ್ಯಗಳಿರುವ ಹಾಡುಗಬ್ಬ ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಕಥೆಯನ್ನು ಜಾನಪದದ ಅದರಲ್ಲೂ ಮಧುಗಿರಿಯ ಚಿತ್ರಪಟ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೋಲುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯ ಪ್ರಭಾವವನ್ನೂ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಶೂರ್ಪನಖಿ ಕೊರವಿಯಾಗಿ ಬಂದು ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾವಣನ ಚಿತ್ರ ಬರೆದುಕೊಡಲು ಒತ್ತಾಯಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆ ಒಪ್ಪದಿದ್ದಾಗ ಮರುಳು ಭಸ್ಮವನ್ನು ಸಿಂಪಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆಗ ಸೀತೆ ರಾವಣನ ಅಂಗುಷ್ಠ ಮಾತ್ರ ಗೊತ್ತು ಎಂದರೂ ಬಿಡದೆ ಒತ್ತಾಯದಿಂದಲೇ ರಾವಣನ ಚಿತ್ರವನ್ನು ಬರೆಸಿ ಎಂದೆಂದಿಗೂ ಅಳಿಯದಂತೆ, ಆದರೆ ಲಕ್ಷಣ ದೇವ ಹೊಡೆದರೆ ಮಾತ್ರ ಸಾಯುವಂತೆ ಅದಕ್ಕೆ ಸೀತೆಯಿಂದ ವರಕೊಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆ ಪಟ ಕುಣಿದಾಡತೊಡಗುತ್ತದೆ. ಚಿಂತಿತಳಾದ ಸೀತೆ ಅದನ್ನು ಹಾಸಿಗೆಯ ಕೆಳಗೆ ಮುಚ್ಚಿಟ್ಟು ಮಲಗುತ್ತಾಳೆ ಬೇಟೆಗೆಹೋಗಿದ್ದ ರಾಮಹಿಂದಿರುಗಿ ಬಂದು ಆ ಮಂಚದಮೇಲೆ ಕುಳಿತೊಡನೇ ಅದು ಮುರಿದು ಬೀಳುತ್ತದೆ ಕಾರಣವನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಹಾಸಿಗೆ ಎತ್ತಿದೊಡನೆ ಹತ್ತು ತಲೆಯ ಆ ರಾವಣನ ಪಟ ಮತ್ತೆ ಕುಣಿಯ ತೊಡಗುತ್ತದೆ. “**ಏಸು ದಿವಸ ಘಾಸಿಯಾಗಿ ಬರೆದಿ ಇವನ, ಏಸು ದಿವಸ ಭೋಗಿಸಿದಿ, ಮೋಸ ಮಾಡಿದಿ ದೇವಿ ಎನಕೈಲಿ ಹೇಳದೆ ಘಾಸಿ ಮಾಡಿದಿ ಎನ್ನ", "ಭೂಮಿದೇವಿ ಮಗಳೆಂದು ನಾ ತಂದೆನು ನಾಡೊಳಗೆ ಪತಿವ್ರತೆಯೆಂದು ಪ್ರಾಣವಲ್ಲಭೆ ನೀನು ಗತಿಯೆಂದು ನಂಬಿದೆ, ರಾವಣಗೆ ಮರುಳಾಗೋದರಿಯೆ**” ಎಂದು ಸಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಕೇಳುವ ರಾಮ ನಿಜವನ್ನು ಹೇಳಿದರೂ ನಂಬದೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಕೊಂದು ಬರುವಂತೆ ಆಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಾನೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ದೇವತೆಗಳು ಅಡ್ಡಬಂದುದರಿಂದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲದೆ ಕಾಡಿನಲ್ಲೇ ಬಿಟ್ಟುಬರುತ್ತಾನೆ. ಮುಂದೆ ಲವಕುಶರ ಜನನ, ರಾಮನ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ, ರಾಮನ ಸೈನ್ಯದೊಂದಿಗೆ ಮತ್ತು ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ನಿಜ ಸಂಗತಿಯನ್ನು ತಿಳಿದು ಕೊನೆಗೆ ಮಡದಿ ಮಕ್ಕಳೊಂದಿಗೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹಿಂತಿರುಗುವುದರೊಂದಿಗೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಸುಖಾಂತವಾಗಿ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಅತ್ಯಂತ ಸರಳ ಸುಂದರವಾದ ಈ ಹಾಡನ್ನು ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಹಾಡಿನಂತೆ ಹೆಂಗಸರು ಇತ್ತೀಚಿನವರೆಗೂ ಹಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. (ನಿಟ್ಟೂರು ಜಯಮ್ಮ ಮತ್ತು ಸುಶೀಲಮ್ಮ) “ವಸ್ತು ಯಾವುದೇ ಇರಲಿ ವರ್ಣನೆಯಾವುದೇ ಇರಲಿ ತನ್ನ ವ್ಯಕ್ತಿ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯದ ಸ್ವಾನುಭವ ಸಂಪತ್ತಿಯ ಬಣ್ಣವನ್ನು ತುಂಬಿಸಿ ಓದುಗರು ಅವುಗಳನ್ನು ಆತ್ಮೀಯತೆಯಿಂದ ಅನುಭವಿಸುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಕವಿ ಪ್ರಕೃತಿ ಗಿರಿಯಮ್ಮನಿಗೆ ವಿಶೇಷ. ........ಸ್ತ್ರೀ ಸಹಜ ಕೋಮಲ ಮನೋಧರ್ಮ, ದೈವಭಕ್ತಿ ಪ್ರೇರಿತವಾದ ಆಶುಕವಿ ವಾಣಿಯನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು” ಎಂದು

ವಿದ್ವಾಂಸರು ಅವಳ ಕವಿತ್ವವನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.[21] **ಜಾನಪದ** ರಾಮಾಯಣ ಧಾರೆಯು ಶಿಷ್ಟ ರಾಮಾಯಣಗಳು ರಚಿತವಾಗುವ ಮೊದಲಿನಿಂದಲೂ ಇದ್ದು, ಅದು ಮುಂದೆ ಶಿಷ್ಟಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ ಸಮಾನಾಂತರವಾಗಿ ಹರಿಯುತ್ತಲೇ ಇದ್ದಿತೆಂಬುದು ತಿಳಿದುಬರುತ್ತದೆ. ಅವೈದಿಕ-ವೈದೀಕ ಧಾರೆಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಜಾನಪದದ ವಿಶಿಷ್ಟ ಕಥೆಗಳು ಇದ್ದವು ಈಗಲೂ ಇವೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ರಾಮನನ್ನು ಆರಾಧಿಸುವ ಸಮುದಾಯಗಳು ಇರುವಂತೆಯೇ ರಾವಣನನ್ನು 'ರಾವಳೇಶ್ವರ'ನೆಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಆರಾಧಿಸುವ 'ರಾವಳೇಶ್ವರ ಪಂಥ'ವೊಂದು ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಆಚರಣೆಯಲ್ಲಿದೆ. ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕುರಿತ ಅವರ ದೃಷ್ಟಿಕೋನವು ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ಸಾವಿರಾರು ಕುಟುಂಬಗಳು ಜಾತಿವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲದೆ ರಾವಳೇಶ್ವರನ ಒಕ್ಕಲಾಗಿದ್ದು ಇವರು ಇಂದಿಗೂ ತಮ್ಮ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ರಾಮನ ಹೆಸರನ್ನು ಇಡುವುದಿಲ್ಲ ಮತ್ತು ರಾಮನ ಮೂರ್ತಿಯಿರಲಿ ಒಂದು ಚಿತ್ರಪಟವನ್ನು ಕೂಡ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಲು ವಿರೋಧಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅದು ಅಪಶಕುನವೆಂದೂ, ಕುಟುಂಬ ನೆಮ್ಮದಿಯು ಹಾಳಾಗುವುದೆಂದೂ ನಂಬುತ್ತಾರೆಂಬುದು ಆಶ್ಚರ್ಯದ ವಿಚಾರವಾದರೂ ಸತ್ಯ. ರಾಮಭಕ್ತರಾದ ವೈಷ್ಣವ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಕುಟುಂಬಗಳಿಗೆ ಹೆಣ್ಣು ಕೊಡುವುದಿಲ್ಲ, ಅವರಿಗೆ ದನಕರುಗಳನ್ನು ಮಾರುವುದಕ್ಕಾಗಲೀ ಕೊಳ್ಳುವುದಕ್ಕಾಗಲೀ, ಸಾಲಪಡೆಯುವುದಕ್ಕಾಗಲೀ ನಿಷೇಧವಿದೆ.[22]

ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನ ವಿವಿಧ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮಧುಗಿರಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಚಿತ್ರಪಟ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾ ಪ್ರಕಾರವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಗೊಂಡ ಬುಡಕಟ್ಟಿನ ಗೋಂಡರ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾ ಪ್ರಕಾರವೂ ಇದೆ.[23] ಅದೇ ರೀತಿ ಹೊನ್ನಾಜಮ್ಮ, ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮ ಎಂಬ ಜಾನಪದ ಹಾಡಿನ ಹೆಂಗಸರು ಹಾಗೂ ಕಂಸಾಳೆ ಮಾಹಾದೇವಸ್ವಾಮಿ, ಸಿದ್ದಯ್ಯ ಎಂಬ ಹಾಡುಗಾರರೂ ಹಾಡಿದ ರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸಂಗಗಳು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ ರಾಮಾಯಣ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಪ್ರಕಟಿಸಲಾಗಿದೆ.[24] ಈ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ರಾವಣನಿಗೆ ದುಷ್ಟತನವನ್ನು ಆರೋಪಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ರಾಮನ ನಡತೆಯನ್ನು ಅವನ ರಾಜ್ಯಭಾರವನ್ನು, ತೀರ್ಮಾನವನ್ನು ಜನರು ಬಹಳವಾಗಿ ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಂತೇನೂ ತೋರುವುದಿಲ್ಲ. ಸೀತೆಯು ಎದುರಿಸಿದ ಸಂಕಟಗಳಿಗೆ ಅವರು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಮರುಗಿದ್ದಾರೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣರೇಖೆಯ ವಿಚಾರ, ಜನರಿಗೆ ಖುಷಿಕೊಡುವ ಹನುಮಂತನ ಬಾಲಬೆಳೆದು ಲಂಕೆಸುಡುವುದು, ಇತ್ಯಾದಿ ವಿಚಾರಗಳು ಜನಪದರನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸೆಳೆದಿವೆ. ಈ ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಕ್ರಮವಾಗಿ ಜೋಡಿಸಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಆರಂಭದ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಹೊನ್ನಾಜಮ್ಮ ಹಾಡಿರುವ ಸೀತೆಯ ಜನನ, ಸ್ವಯಂವರ, ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯ ಕಥೆಗಳಿವೆ ಇದನ್ನು ತ್ರಿಪದಿ, ಚೌಪದಿ ಹಾಗೂ ದ್ವಿಪದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಲಾಗಿದೆ. ಎರಡನೆಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ 'ಸುಣ್ಣುಮಾರನ ಕಥೆ'ಯಿದ್ದು ಇದನ್ನು ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮನೆಂಬುವವರು ಹಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇದರ ಮೇಲೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕಥೆಯ ಪ್ರಭಾವವಿರುವುದನ್ನು ಗುರುತಿಸಲಾಗಿದೆ. ಭಾಗಮೂರರಲ್ಲಿ ಕಂಸಾಳೆ ಮಹಾದೇವಯ್ಯ ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ಹಾಡಿರುವ ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗದ ಕಥೆಯನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದೊಂದು ಜಾನಪದ ಚಂಪೂ ಶೈಲಿಯ ಅಂದರೆ ಮಾತು ಮತ್ತು ಹಾಡಿನ ಮಿಶ್ರರೂಪವನ್ನು ಪಡೆದಿದೆ. ಭಾಗ ನಾಲ್ಕರಲ್ಲಿ ಚನ್ನಯ್ಯನೆಂಬುವವರ ಮಗ ಹಾಡಿರುವ ತಂಬೂರಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣವಿದೆ. ಸೀತೆಯ ಜನನವನ್ನು ಅತಿಮಾನುಷನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಮಾವಿನ ಹಣ್ಣನ್ನು ತಿನ್ನುವುದು ಇಲ್ಲವೆ ತಾವರೆಹೂವನ್ನು ಮೂಸುವುದರಿಂದ ಗರ್ಭದರಿಸುವ ವಿಚಾರವಿದೆ. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಜನನ ರಾವಣನಿಗೆ ಅನಿಷ್ಟವಾದ್ದರಿಂದ ಅವಳನ್ನು ತ್ಯಜಿಸಲಾಯಿತು, ಅವಳನ್ನು ಬ್ರಾಹ್ಮಣನಿಗೆ ದಾನಕೊಡಲಾಯಿತು, ಅವಳನ್ನು ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟು ತೇಲಿಬಿಡಲಾಯಿತು ಎಂಬ ವಿವಿಧ ಕಥೆಗಳಿವೆ. ಅವಳು ಜನಕನಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿದಳೆನ್ನುತ್ತವೆ.

ತಂಬೂರಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಮಂಥರೆಯಿಲ್ಲ. **ಸೀತೆಯ ಸ್ವಯಂವರ ಶಿಷ್ಟ ಸಂಪ್ರದಾಯಕ್ಕಿಂತ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಅರಮನೆಯನ್ನು ಹೊಲಸು ಮಾಡಿದ ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಾಗೆಯನ್ನು ಮೀನಿನ ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಎತ್ತಿಸಿ ಕೊಲ್ಲಿಸುವುದಾಗಿಯೂ ಹಾಗೆ ಮಾಡಬಲ್ಲ ಶೂರನಿಗೆ ಮಗಳನ್ನು ಕೊಡುವುದಾಗಿಯೂ ಜನಕ ಪ್ರತಿಜ್ಞೆ ಮಾಡಿರುತ್ತಾನೆ.** ಪಂಥದಲ್ಲಿ ಗೆದ್ದ ರಾಮನ ಬಿಲ್ಲುಬಾಣಗಳಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನು

ಮದುವೆಮಾಡಿಕೊಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಸೀತೆ ಕಾಡಿಗೆ ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ಹೋಗುವುದಿಲ್ಲ. ಆನಂತರದಲ್ಲಿ ಹೋಗಿ ರಾಮನನ್ನು ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಸೀತೆಯ ಹುಟ್ಟುಗುಣವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸುವುದು ಇಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಬಂದಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಶಂಬೂಕ, ಕಾಕಾಸುರ, ಶೂರ್ಪನಖಿಯರ ಕಥೆಗಳು ಒಂದಕ್ಕೊಂದಕ್ಕೆ ಬೆಸೆದುಕೊಂಡು ವಿಲಕ್ಷಣವಾಗಿ ಮೂಡಿದೆ. ಪಾತಾಳ ಲೋಕದ ಯಾತಾಳಪುರದಲ್ಲಿ ಹುಲ್ಲೂರ ಎಂಬ ಅರಸನ ಹೆಂಡತಿಯೇ ಶೂರ್ಪನಖಿ ಅವರ ಮಗ ಸಣ್ಣುಮಾರ. ಈ ಹುಲ್ಲೂರನು ತನಗೆ ಶರಣಾಗಲಿಲ್ಲವೆಂಬಕಾರಣಕ್ಕೆ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ರಾವಣನು ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಸೇಡುತೀರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅವನ ಹೆಂಡತಿ ಶೂರ್ಪನಖಿ ಮಗನಿಗೆ ತಪಸ್ಸುಮಾಡಿ ಚಂದ್ರಹಾಸ ಖಡ್ಗವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಆ ಖಡ್ಗವು ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಕೈಗೆ ಮೊದಲು ಸಿಕ್ಕಿ ಅದರ ಹರಿತವನ್ನು ಪರೀಕ್ಷಿಸುವಾಗ ಮೂಗುತ್ತದಲ್ಲಿದ್ದ ಸಣ್ಣುಮಾರನ ತಲೆ ಕತ್ತರಿಸಿಹೋಗುತ್ತದೆ. ಈ ಕಥಾ ಸರಣಿ ವೈದಿಕ ಕಥಾಸರಣಿಗಿಂತ ತೀರ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ತಂಬೂರಿ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ರಾವಣನೇ ಮಾಯಾವಿಯಾಗಿ ಜಿಂಕೆರೂಪವನ್ನು ತಾಳುತ್ತಾನೆ ಮತ್ತು ರಾಮನ ವೇಷದಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಎರಡು ಪಟ್ಟಣಗಳಿದ್ದು, ಒಂದರಲ್ಲಿ ಮಂಡೋದರಿಯನ್ನೂ ಮತ್ತೊಂದರಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾವಣ ಇಟ್ಟಿದ್ದಂತೆ ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿದೆ. ರಾವಣ ಮಂಡೋದರಿಯರಲ್ಲಿ ವಿರಸವಿದ್ದು, ಆರು ವರ್ಷ ದೂರವಿರುತ್ತಾರೆಂಬ ವಿವರವಿದೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಮೊದಲು ಮಂಡೋದರಿಯನ್ನು ಭೇಟಿಮಾಡಿ, ರಾವಣನ ಸಮಸ್ತ ವಿಚಾರವನ್ನೂ ಅವನ ಪ್ರಾಣವಿರುವ ಜಾಗವನ್ನೂ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮ ರಾವಣರಲ್ಲಿ ಘೋರಯುದ್ಧನಡೆಯುವುದೇ ಇಲ್ಲ. ಹನುಮಂತನು ಲಂಕೆಯನ್ನು ಸುಟ್ಟುಹಾಕಿದ್ದಕ್ಕೇ ರಾವಣ ಹತಾಶನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಬೆಂಕಿಗೆ ನೀರು ಹಾಕಿ ಆರಿಸುತ್ತಿರುವಾಗಲೇ ಅವನು ತಾನು ಮಾಡಿದುದು ತಪ್ಪು ಎಂದು ಕ್ಷಮೆಯನ್ನು ಕೇಳುತ್ತಿರುವಾಗಲೇ ರಾಮನ ಬಾಣಕ್ಕೆ ತುತ್ತಾಗಿ ಸಾಯುತ್ತಾನೆ. ಜನಪದದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಬರುವ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯದ ಪರೀಕ್ಷೆಗಳು ಇಲ್ಲಿಯೂ ಇವೆ. ಮರಳ ಮಡಿಕೆಯಲ್ಲಿ ನೀರುತರುವುದು, ಸರ್ಪವನ್ನೇ ಸಿಂಬಿಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಮತ್ತೊಂದು ಅಗ್ನಿ ದಿವ್ಯ. ಸೀತೆ ಮುಡಿದ ಮಲ್ಲಿಗೆ ಬಾಡದೆ, ಉಟ್ಟ ಬಟ್ಟೆ ಮಾಸದೆ, ಅರಿಶಿನ ಕುಂಕುಮ ಕೆಡದೆ, ಕೈಯಚಿಗುರೆಲೆ ಕಲಕದಂತೆ ಅಗ್ನಿಕುಂಡದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲುವ ಪರೀಕೆಯಿದೆ. ಇಲ್ಲಿನ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಅನೇಕ ಭಿನ್ನತೆಯಿದೆ. ತಡವಾಗಿ ಊಟತಂದ ಹೆಂಡತಿಯನ್ನು ಮಡಿವಾಳನ್ನು ನಿಂದಿಸುವಾಗ ರಾಮನ ಪ್ರಸ್ತಾಪ ಮಾಡುವುದನ್ನು ಸ್ವತಃ ರಾಮನೇ ಗರ್ಭಿಣಿ ಮಡದಿಗೆ ಹುಣಿಸೇ ಹಣ್ಣು ತರಲು ಮರವನ್ನೇರಿದ್ದಾಗ ಕೇಳಿಸಿಕೊಂಡು ದುಃಖಿಸಿ, "ಅಡವಿ ಅರಣ್ಯಕೆ ಅವಳ ಕರಕೊಂಡು ಹೋಗಿ ಸಿರಸೇದ್ನೆಮಾಡಿ ಬಾರೋ ಗುರುತು ತಕಂಡ್ಬಾ" ಎಂದು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾನೆಂದು. "ಪಾಪಿ ಸೀತೆ ಮೈ ಮೇಲಿರುವಂತಾ ಒಡವೇ ಬಂಗಾರನೆಲ್ಲಾ ಕಳಚುಸುಬುಟ್ಟು, ಉಟ್ಟಂತ ಸೀರೆನೆಲ್ಲಾ ಅಳೀಸಿಕೊಂಡು ಹುಟ್ಟು ನಿರ್ವಾಣದಲ್ಲಿ ಅವಳ್ನ ನಿಲ್ಲಸ್ಬುಟ್ಟು ಕೂದು ಬಾರಯ್ಯಾ ಪಾಪಿ ಸಿರವ" ಎಂದು ಆಜ್ಞಾಪಿಸುತ್ತಾನಂತೆ! ಅದರಂತೆ ಸೀತೆ ತನ್ನ ಕೂದಲಿನಿಂದ ಮೈಮುಚ್ಚಿಕೊಂಡು ನಿಲ್ಲಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಅವಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲಾರದೇ ಬನ್ನಿ ಮರಕ್ಕೆ ಹೊಡೆದು ಅದರಲ್ಲಿ ರಕ್ತ ಬರುವಂತೆ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಗುರುತು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುತ್ತಾನೆಂದು ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. ಆನಂತರ ರಾಮನ ದುಃಖ ಅವನ ಕಣ್ಣೀರು ಮಡುವಾಗಿ ಹರಿಯುವುದನ್ನು ಹೇಳುತ್ತದೆ. ಸಾಯಬೇಕೆಂದು ನೀರಿಗೆ ಬಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಎರಡು ಮೀನುಗಳು ತಡೆಯುತ್ತವೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅವಳಿಗೆ ಬಟ್ಟೆಕೊಟ್ಟು ಕಾಪಾಡುತ್ತಾನೆ. ಅವಳು ಹೆತ್ತಿದ್ದು ಒಂದು ಮಗುವನ್ನು, ಒಂದು ದಿನ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಲಗಿದ್ದಾಗ ಸೀತೆ ಸದ್ದಾಗದಂತೆ ಆ ಮಗುವನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಗಂಗೆ ಪೂಜೆಗೆ ಹೋಗಿರುತ್ತಾಳೆ, ಎಚ್ಚರವಾದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಇದು ತಿಳಿಯದೆ ತೊಟ್ಟಿಲಲ್ಲಿ ಮಗುವಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಗಾಬರಿಗೊಂಡು ಅದೇರೀತಿಯ ಮತ್ತೊಂದು ಮಗುವನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆಮೇಲೆಸೀತೆ ಮಗುವಿನೊಂದಿಗೆ ಬರುತ್ತಾಳೆ. ತನ್ನ ತಪ್ಪನ್ನು ಮುಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳಲು ಸೀತೆ ಹಡೆದಿದ್ದು ಅವಳಿಮಕ್ಕಳೆಂದು ಅವಳು ಮೂರ್ಛೆಗೊಂಡಿದ್ದರಿಂದ ಅದು ಅವಳಿಗೆ ತಿಳಿದಿಲ್ಲವೆಂದು ಹೇಳಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅವಳನ್ನು ನಂಬಿಸಿಬಿಡುತ್ತಾನೆ. ಆ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಹೇಳಿದಂತೆ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರೆಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಇಡಲು ಒಪ್ಪದ ಸೀತೆ, ತನ್ನ ಪ್ರಾಣ ಕಾಪಾಡಿದ ಮೀನುಗಳ ಹೆಸರನ್ನೇ ಕುಶಲವರೆಂದು ಇಡುತ್ತಾಳೆ. ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗದ ನಂತರ ಎಲ್ಲರೂ ಭೇಟಿಯಾದಾಗ ಸೀತೆಯು ರಾಮನ ಕಾಲು ಹಿಡಿಯಲು ಹೋದಾಗ ರಾಮ ದೂರ ಸರಿಯುತ್ತಾನೆ. ಬೇಸರಗೊಂಡ ಸೀತೆ ಭೂಮಿತಾಯಿಯ ಒಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ರಾಮ ಅವಳ ಕೈಯನ್ನು

**ಹಿಡಿಯುತ್ತಾನೆ. ಅವನ ಕೈಗೆ ಕೈಬದಲು ಒಂದು ಅರಿಸಿನದ ಕೊನೆಯೂ, ಕೂದಲನ್ನು ಹಿಡಿದಾಗ ದರ್ಬೆಯೂ ಬರುತ್ತದೆ. ಕಾಲ ಕೆಟ್ಟಿತೆಂದು ತಿಳಿದ ರಾಮ ವೈಕುಂಟಕ್ಕೆ ಹೊರಟುಹೋದನೆಂದು ಈ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ** ವರ್ಣಿಸಲಾಗಿದೆ. ಬೇಟೆಗೆ ಹೊರಟ ರಾಮನ ಹಿಂದೆ ಸೀತೆ ಹಟ ಹಿಡಿದು ಕಾಡಿಗೆ ಬರುವುದು ಕೋಪಗೊಂಡ ರಾಮ ಅವಳನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಹೋದಾಗ ಅವಳ ಹೊಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿರುವ ಮಕ್ಕಳ ಬಿಂಬ ಕಾಣಿಸಿ ಬಿಟ್ಟುಬಿಟ್ಟನೆಂಬ ಕಥೆಗಳು ಇದರಲ್ಲಿವೆ. ತಂಬೂರಿ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅಶ್ವಮೇಧದ ಪ್ರಸ್ತಾಪವಿಲ್ಲ ಬದಲಿಗೆ ಬೇಟೆಗೆ ಹೋಗಿದ್ದ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಲವಕುಶರು ಕಟ್ಟಿಹಾಕಿದರೆಂದು, ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ತಲೆಯನ್ನು ಲವಕುಶರು ತೆಗೆದರೆಂದು ಅದನ್ನು ಶಿವನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ಮತ್ತೆ ಅವನು ಪಡೆದನೆಂದು ವಿವರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಮಹಾದೇವಸ್ವಾಮಿಯವರ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕಥೆಯ ಪ್ರಭಾವವಿದೆ. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಈ ಜಾನಪದರು ಹಾಡಿರುವ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಸಣ್ಣಪುಟ್ಟ ವ್ಯತ್ಯಾಸಗಳು ಇವೆ.

ರಾಮಯಣ ಕಥೆಯನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಕೆಲವು ಜಾನಪದ ಬಿಡಿ ಹಾಡುಗಳೂ ಇವೆ. **'ಸೀತಾ ದುಃಖದ ಹಾಡು'** ಎಂಬ ಸಣ್ಣ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ತನ್ನ ಕಥೆಯನ್ನು ದೂತನಾಗಿ ಬಂದ ಹನುಮಂತನ ಮುಂದೆ ತೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವಂತೆಯೂ, ಹನುಮನು ಅದಕ್ಕೆ ಉತ್ತರಿಸುವಂತೆಯೂ ನಿರೂಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಪ್ರತಿ ಸಾಲಿನಕೊನೆಯಲ್ಲೂ ರಾಮರಾಮ ಎಂದು ಬರುತ್ತದೆ. ಈ ಹಾಡು ಸೀತೆಯ ಮನದಾಳದ ಅಳಲನ್ನು ತೀವ್ರವಾಗಿ ಬಿಡಿಸಿಟ್ಟಿದೆ. "ಗಾಳಿಗೊಡ್ಡಿದ ದೀಪದಂತೆ ಕಂಗೆಡುತಿದ್ದೆ, ಬಾಳುವ ಮನವಿಲ್ಲ ಮರಣಕುಪಾಯವಾಯ್ತು ರಾಮರಾಮ, "ಎನ್ನನೆನೆವರೋ ಎನೆಯಾರೋ ಎನಗೊಮ್ಮೆ ಹೇಳಯ್ಯ ರಾಮ ರಾಮ" ಎಂದು ಅವಳು ಕೇಳಿದಾಗ ಹನುಮನು "ನಿಮ್ಮ ಚಿಂತೆ ಚಿಂತೆ ನಿಮ್ಮ ಧ್ಯಾನವೇ ಧ್ಯಾನ ರಾಮರಾಮ, ನಿಮ್ಮ ಹಂಬಲಿಸಿ ಬಡವಾದ ರಘುಪತಿ ರಾಮರಾಮ" ಎಂದು ಉತ್ತರಿಸುತ್ತಾನಲ್ಲದೆ. ರಾಮನನ್ನು "ಒಡಗೊಂಡು ಬರುವೆನು ನಾಳೀಗೆಂಟುದಿನಕೆ ರಾಮಾ ರಾಮಾ, ಕಡು ಪಾಪಿ ರಾವಣನ ಖಳನ ಭಂಜಿಸುವೋರು" ಎಂದು ಅವಳಿಗೆ ಭರವಸೆಯನ್ನೂ ನೀಡುತ್ತಾನೆ. ಈ ಹಾಡು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣಕಥೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿದ್ದು, ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಹಾಡಿನ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ಪಡೆದಿದೆ. ಇದನ್ನು ಅನೇಕ ಬ್ರಾಹಣ ಸ್ತ್ರೀಯರು (ಸುಶೀಲಮ್ಮ ನಿಟ್ಟೂರು) ನಿತ್ಯ ಸ್ನಾನಾನಂತರದಲ್ಲಿ ಸ್ತೋತ್ರಪಠಣದ ಜೊತೆಗೆ ಹಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಪುರಂದರ ದಾಸರ "ಏನೆಂದಳಯ್ಯಾ ಸೀತೆ ಹನುಮ ಏನು ಪೇಳಿದಳಯ್ಯ ಪ್ರೀತೆ' ಎಂದು ಆರಂಭವಾಗುವ ಪುರಂದರ ದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಯೊಂದು ರಾಮ ಹಾಗೂ ಹನುಮರ ನಡುವಿನ ಸಂಭಾಷಣಾರೂಪದಲ್ಲಿದೆ "ಸ್ವಾಮಿರಾಮರ ಪಾದವ ಎಲೆ ಕಪಿಯೆ ನಾನೆಂತು ಬಿಟ್ಟಿರಲಿ, ದಾನವನ ಶಿರತರಿದು ಲಂಕೆಯ ಪುರವನ್ನು ದಹನವ ಮಾಡೆಂದಳೋ ರಾಮ" ಎಂದು ಹನುಮಂತನು ರಾಮನಿಗೆ ಸೀತೆಯ ನಿಷ್ಠೆಯನ್ನೂ, ಸಂಕಟವನ್ನು, ಮನದಾಳದ ಹಂಬಲವನ್ನೂ, ರಾವಣನ ಮೇಲಿನ ಕೋಪವನ್ನೂ ಬಿಡಿಸಿಹೇಳುವ ಕೀರ್ತನೆ ಭಾವಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ.

### ಆಧುನಿಕ ರಾಮಾಯಣ ಕೃತಿಗಳು

**ಪ್ರಾಚೀನ ಕವಿಗಳಂತೆಯೇ ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳೂ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಆಧ್ಯತೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಪುರಾತನವಾದ ಹಾಗೂ ಪುರಾಣದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಆರಿಸಿಕೊಂಡು ಸಮಕಾಲೀನಗೊಳಿಸುವ, ತಮ್ಮ ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಕೋನದಿಂದ ದರ್ಶಿಸುವ, ವೈಚಾರಿಕ ಮತ್ತು ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದ ಶೋಧಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಮಕಾಲೀನ ತವಕ ತಲ್ಲಣಗಳ ಮೂಲಕ ಅಲ್ಲಿನ ಪಾತ್ರಗಳೊಂದಿಗೆ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳೊಂದಿಗೆ ಮುಖಾಮುಖಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಮರುದರ್ಶನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.** ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮೂಲ ಮತ್ತು ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಹಲವು ಪ್ರಸಂಗಗಳು, ಪಾತ್ರಗಳು, ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ನವನಿರ್ಮಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಸೌಂದರ್ಯ, ಸಾಂಕೇತಿಕತೆ, ಧ್ವನಿಗಳ ಮೂಲಕ ಕಾವ್ಯ, ಗದ್ಯ, ನಾಟಕ, ಎಲ್ಲ ಪ್ರಕಾರಗಳಿಗೂ ವಸ್ತುವಾಗಿವೆ, ವಿಮರ್ಶೆಗೆ ಒಳಪಟ್ಟಿವೆ.

**ಮುಳಿಯ ತಿಮ್ಮಪ್ಪಯ್ಯನವರು** 'ನವನೀತರಾಮಾಯಣ'[25.] ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಸರಳ ರಗಳೆಯಲ್ಲಿ ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ತಾಯಿಯಿಂದ ಪ್ರಭಾವಿತವಾಗಿ ಈಕೃತಿಯನ್ನು ಬರೆದು ಆಕೆಗೇ ಅರ್ಪಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾಮನು ವನವಾಸಕ್ಕೆ ತೆರಳುವವರೆಗಿನ ಕಥೆ ಮಾತ್ರವಿದೆ. ಉಳಿದ ಭಾಂಡಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವ ಉದ್ದೇಶವಿದ್ದಿತಾದರೂ ಅದು ಅವರಿಗೆ ಸಾಧ್ಯವಾಗಿಲ್ಲದಿರುವುದರಿಂದ ಇದೊಂದು ಅಪೂರ್ಣ ಕೃತಿ

ಎನ್ನಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಈ ಕಾವ್ಯದ ಶೈಲಿಯನ್ನು 'ನಿಯೋಕ್ಲಾಸಿಕಲ್ ಮಾದರಿ' ಎಂದು ವರ್ಣಿಸುವ ಡಾ.ಕೆ.ವಿ.ನಾರಾಯಣ ರವರು ಇದರಲ್ಲಿ ಕಥನ ಹಾಗೂ ಕಥಾನಕಗಳೆರಡೂ ಬೆರೆತು ಯಕ್ಷಗಾನದ ಭಾಗವತದ ಭೂಮಿಕೆಯನ್ನು ಹೋಲುತ್ತಿದ್ದು, ಒಂದು ಬಗೆಯ ದೇಶ್ಯೀಕರಣಕ್ಕೊಳಗಾಗಿದೆ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.[26] ಇದರಲ್ಲಿ ಜೈನ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಕಥೆಯಿದೆ. ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಮಲಯಾಚಲದ ವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುವ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಾಡಿನ ಸೌಂದರ್ಯದ ವರ್ಣನೆಯಿದ್ದು ಇದು ಬನವಸೆನಾಡಿನ ವರ್ಣನೆಯೇ ಆಗಿದೆ. ಎರಡನೆಯ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಹುಟ್ಟನ್ನು ಅದ್ಭುತವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಭೇರುಂಡವೋ ಗರುಡನೋ ಎಂದು ತಿಳಿಯದಾಗಿ ಗಂಡವೇ ನೆಲಕ್ಕಿಳಿಯುತ್ತಿರುವಂತೆ "ಕಾಣುತ ಕಣ್ಣಿಲ್ಲ, ಕೇಳುತಾ ಕಿವಿಯಿಲ್ಲ, ಭಯರಸಕೆ ಪಕ್ಕಾಗಿ ಮಿಡುಮಿಡುಕುತೆಕ್ಕಾಗಿ ಬೆದರಿಹೋಗುತ್ತಿರುವಾಗ ಒಂದು ಹದ್ದು ನೆಲಕ್ಕಿಳಿಯುವ ರಭಸಕ್ಕೆ ಒಂದು ವ್ಯಕ್ತಿ ಉದ್ಭವಿಸುತ್ತಾನೆ ಅವನೇ ರಾವಣ. ರಾವಣ ವೇದವತಿಯನ್ನು ಕೆಣಕಿ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗುವುದು, ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನು ವಿವಾಹವಾಗುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಲು ರಾವಣಾದಿಗಳು ಮಾಯಾ ಮಿಥಿಲೆಯನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸುವುದು, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಉರಿಗಣ್ಣಿಗೆ ಅದು ನಾಶವಾಗಿ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಮಿಥಿಲೆಯನ್ನು ಸೇರುವುದು, ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ಮುರಿದು ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ವರಿಸುವುದು, ಶಿವಧನುವನ್ನು ಮುರಿದುರಿಂದ ರಾಮನು ಘಾಸಿಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಪರುಶುರಾಮ ವ್ಯಗ್ರನಾಗುತ್ತಾನೆ. 'ಸಾಕೇತಕೆ ಉಳಿವಿಲ್ಲ, ರಾಮಂಗೆ ಆಳ್ಕೆಯಿಲ್ಲ'ವೆಂದು ಚಿಂತಿಸಿ, ರಾವಣನ ಮಂತ್ರಿಯು ಹಿಂದೆ ದಶರಥನು ಕೊಂದಿದ್ದ ಶಂಬರನೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನ ಮಗಳು ಮಂಥರೆಯನ್ನು ಈ ಕಾರ್ಯ ಸಾಧಿಸಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಸಾಗಹಾಕುತ್ತಾನೆ. ಮಂಥರೆಯು ಹೊಸೆದ ಜಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಮನು ರಾಜ್ಯಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ತೆಂಕನಾಡಿನ ಕಾಡಿಗೆ ರಾಮನೊಡನೆ ಸೀತೆ ಬಂದೇ ಬರುವಳೆಂದು ರಾವಣ ಲೆಕ್ಕಹಾಕುತ್ತಾನೆ. ಅದರಂತೆ ರಾಮ ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಚಿತ್ರಕೂಟಕ್ಕೆ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಾನೆಂಬಲ್ಲಿಗೆ ಆ ಅಧ್ಯಾಯ ಮುಗಿದೆ. ಆಕರ್ಷಕವಾದ ಭಾಷಾಶೈಲಿ ಹೊಸ ಹೊಳಹುಗಳಿಂದ ಓದುಗರನ್ನು ಆಕರ್ಷಿಸುವ ಈ ಕಾವ್ಯ ಅಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ. ಈ ಕಾವ್ಯದ ಕೆಲವು ಹೊಸ ಹೊಳಹುಗಳು ಮುಂದೆ ಕುವೆಂಪು, ಪೋಲಂಕಿರಾಮಮೂರ್ತಿ ಮುಂತಾದವರಮೇಲೆ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿದೆ ಎಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಭಾವಿಸುತ್ತಾರೆ.

**ಕುವೆಂಪುರವರ** ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ ಮಹಾಕಾವ್ಯವು ಒಟ್ಟು ನಾಲ್ಕು ಸಂಪುಟಗಳಿದ್ದು, 50 ಅಧ್ಯಾಯಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿದೆ. ಸೋಪಜ್ಞತೆ, ನವದರ್ಶನವುಳ್ಳ ಉತ್ಕೃಷ್ಟಕೃತಿಯಾಗಿದ್ದು, ತನ್ನ ನಂತರದ ಕಾವ್ಯಗಳ ಮೇಲೆ ಅಪಾರ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿದೆ. ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳ ಹೆದ್ದಾರಿಯನ್ನೇ ನಿರ್ಮಿಸಿದ ಕಾವ್ಯವಿದಾಗಿದ್ದು, ಜ್ಞಾನಪೀಠಪ್ರಶಸ್ತಿಯನ್ನು, ಪಂಪಪ್ರಶಸ್ತಿಯನ್ನು ಕವಿಗೆ ಗಳಿಸಿಕೊಟ್ಟಿದೆ. **"ಕಥೆ ನಿನ್ನದಾದೊಡಂ ಕೃತಿನನ್ನ ದರ್ಶನಂ" ಎಂದು ಕವಿಯೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ ಅರಿಕೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವಂತೆ, ಕುವೆಂಪುರವರು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ, ಜೈನ, ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ರಾಮಾಯಗಳೆಲ್ಲದರ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿಯೂ ತಮ್ಮ ದರ್ಶನದಿಂದ ಯುಗಧರ್ಮ, ವಿಶ್ವಧರ್ಮ ಹಾಗೂ ಸಮಾನತೆಯ ತತ್ವಗಳನ್ನು ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀರಾಮನ ಕಿರೀಟದ ಮಣಿಯ ಸೌಂದರ್ಯದಷ್ಟೇ ಹುಲ್ಲಿನ ಮೇಲಿನ ಹಿಮ ಬಿಂದುವಿನ ಸೌಂದರ್ಯವೂ ಕವಿಗೆ ಮುಖ್ಯವೆನಿಸುತ್ತದೆ. ಅವರಿಗೆ ಯಾವುದೂ ಯಕಃಚಿತವಲ್ಲ, ಈ ಸೃಷ್ಟಿಯ ಜಡ ಚೇತನಗಳೆಲ್ಲಕ್ಕೂ ತನ್ನದೇ ಆದ ಒಂದು ಲೀಲೆಯಿದೆ ಎಂದು ಕವಿ ಭಾವಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ದರ್ಶನದಿಂದ ಇಲ್ಲಿನ ಅನೇಕ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು, ಪಾತ್ರಗಳು ಮರುಹುಟ್ಟು ಪಡೆದುಕೊಂಡಿವೆ. ಹಿಂಸೆಯಿಂದ ಯಾವ ಸುಂದರ ಸೃಷ್ಟಿಯೂ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂಬ ಕುವೆಂಪು ಅವರ ವಿಚಾರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಇಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳಾಗಿವೆ. ದಶರಥನ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ವರ್ಣನೆಯಿಲ್ಲ, ಇಲ್ಲಿನ ಮಂಥರೆಗೆ ಮರುಹುಟ್ಟು ದೊರಕಿದೆ, ಅವಳು 'ಮಮತೆಯ ಸುಳಿ'ಯಾಗಿದ್ದಾಳೆ. ಪಾಪಿಗೂ ಉದ್ಧಾರವುಂಟು ಈ ಸೃಷ್ಟಿಯ** ವ್ಯೂಹದಲ್ಲಿ ಎಂಬ ಕಾರಣಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ವ್ಯಕ್ತಿಯು ಕಾಲವಶದಿಂದ ಭಾವವಶದಿಂದಾಗಿ ಮಾಡುವ ತಪ್ಪುಗಳನ್ನು ತಿದ್ದಿಕೊಳ್ಳಲು ಪರಿವರ್ತನೆಗೊಳ್ಳಲು ಅವಕಾಶವಿದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಸಾರುತ್ತಾ ಕವಿ ಇಲ್ಲಿ ಮಂಥರೆ, ವಾಲಿ, ರಾವಣ ಇತ್ಯಾದಿ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಅಂತರಂಗವನ್ನು ಬಿಚ್ಚಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ನೇಪಥ್ಯಕ್ಕೆ ಸರಿದಿರುವ ಅನೇಕ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು

ಪ್ರಸ್ತುತ ಯುಗಧರ್ಮದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಮುನ್ನೆಲೆಗೆ ತಂದು ಒಂದು ಹೊಸ ಹೊಳಹನ್ನು ಸಂದೇಶವನ್ನೂ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಡದಿ ಊರ್ಮಿಳೆಗಾಗಿಯೇ ಒಂದು ಅಧ್ಯಾಯವಿದೆ. ವಿಭೀಷಣನ ಮಗಳು ಅನಲೆಯ ಪಾತ್ರ ಅತ್ಯಂತ ಚೇತೋಹಾರಿಯಾಗಿ ಮೂಡಿದೆ. ಸೀತೆಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ರೇಖೆಯನ್ನು ಹಾಕಿಸದಿರುವುದು, ಅಮಲೆಯ ಮೂಲಕ ರಾಮನೂ ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಹೇಳಿಸಿರುವುದು ಇವೆಲ್ಲವೂ ಈ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಆಧುನಿಕ ಸಂವೇದನೆಗಳಿಗೆ ಮಿಡಿಯುವಂತೆ ಮಾಡಿರುವುದರ ಗುರುತುಗಳಾಗಿವೆ. ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧದಲ್ಲಿ ಒಂದು ನೈತಿಕತೆಯನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಕುವೆಂಪುರವರ ಮನಸ್ಸು ವಾನರರನ್ನು ಕಪಿಧ್ವಜರೆಂದೂ ಅವರು ವನಚರರಂತೆ ವೇಷಗಳನ್ನು ಧರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೆಂಬಂತೆಯೂ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಹಾಗೇ ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವರ ಮಡದಿಯರ ಪರಪುರುಷ ಸಂಸರ್ಗವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಾಲಿ ಸತ್ತಿರುವನೆಂದು ತಿಳಿದಾಗ ತಾರೆ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ಕೂತಳೆಂದೂ, ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವನನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ರುಮೆಯನ್ನು ಸೆರೆಯಲ್ಲಿಟ್ಟನೆಂದೂ ರಾಮನಿಂದ ವಾಲಿ ಹತವಾದಾಗ ಅವನೊಂದಿಗೆ ತಾರೆ ಸಹಗಮನಮಾಡಿದಳೆಂದೂ ಕಥೆಯನ್ನು ಬದಲಿಸಿದ್ದಾರೆ. “ಮಗಳೆನಗೆ ರುಮೆ ತಾರೆ ತಾಂ ಸಾಕ್ಷಿ” ಎಂದು ವಾಲಿ ಸಾಯುವ ಮುನ್ನ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ವಾಲಿಯು 'ಪರಸತಿಗಳಿಪಿದವನಲ್ಲ' ಎಂದು ತಿಳಿದಮೇಲೆ ತನ್ನದು ತಪ್ಪಾಯಿತೆಂದು ರಾಮ ವಾಲಿಯ ಕ್ಷಮೆಯಾಚಿಸುವುದು ವಿಶೇಷವಾಗಿದೆ. ರಾವಣನು ತನ್ನ 'ಜೀವಮಾನದಲ್ಲಿ ತಾನು ಪತಿವ್ರತೆಯರನ್ನೇ ನೋಡಿಲ್ಲ, ನೋಡುವ ಬಯಕೆಯಿದೆ' ಎನ್ನುವುದು, ಧ್ಯಾನಮಾಲಿನಿಯು ರಾವಣನಿಗೆ 'ತನ್ನ ದೇಹ ಮಾತ್ರ ವಶವಾಗಿತ್ತೇ ಹೊರತು ಮನಸ್ಸಲ್ಲ'ವೆನ್ನುವುದು ಸ್ತ್ರೀ ಪುರುಷರ ಸಂಬಂಧದ ಶುಚಿತ್ವವನ್ನು ಕುರಿತಂತೆ ಕುವೆಂಪುರವರಿಗಿರುವ ವಿಚಾರವನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸುತ್ತವೆ.

ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನನ್ನು ಹನುಮಂತನನ್ನು ನರಹರಿಕವಿಯಂತೆ ದೈವತ್ವಕ್ಕೆ ಏರಿಸಿಲ್ಲ. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ರಾಮನು ಅನೇಕ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದನ್ನು ಕುರಿತು ಸೀತೆಯು ಆಕ್ಷೇಪವೆತ್ತುತ್ತಾಳೆ. ಅವರ ಸಹಜವಾದ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ನೆಲೆಗೆ ಹೊರಗಿನವರಾಗಿ ನಾವು ಬಂದು ಆ ಕಾಡಿನ ಮೂಲಿಗರನ್ನು ಆಕ್ರಮಣ ಮಾಡುವುದು, ಕೊಲ್ಲುವುದು ಎಷ್ಟು ಸರಿ ಎಂಬ ಮಹತ್ವದ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಸೀತೆಯಮೂಲಕ ಕೇಳಿಸಿ ಕುವೆಂಪು ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಶಾಹಿ ಮನೋಭಾವವನ್ನೇ ಇಲ್ಲಿ ಖಂಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಮುದ್ರೋಲ್ಲಂಘನ ಹಾಗೂ ಲಂಕೆಯ ದಹನ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಕೊಂಚ ಬದಲಾಯಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇನ್ನು ರಾವಣನ ಪಾತ್ರ ಚಿತ್ರಣದಲ್ಲಿ ಕುವೆಂಪು ನಾಗಚಂದ್ರನ ಉದಾತ್ತ ರಾವಣನನ್ನು ಬಹಳವಾಗಿ ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಿರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ ಅವನ ಮನಃ ಪರಿವರ್ತನೆಯನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಪರಿಭಾವಿಸಿದ್ದಾರೆ. ರಾಮನ ಕತ್ತರಿಸಿದ ಮಾಯಾ ಶಿರಸ್ಸನ್ನು ತೋರಿಸಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ವಶಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬಹುದೆಂಬ ಸಲಹೆಯನ್ನು ಶಾರ್ದೂಲನು ನೀಡಿದಾಗ “ಹಾಗೆ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ತನ್ನ ವಶವಾಗುವುದು ಸೀತೆಯ ಹೃದಯವಲ್ಲ ಅವಳ ಕಳೇಬರಹ” ಎಂದು ಆ ಸಲಹೆಯನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ರಾವಣನಲ್ಲಿದ್ದ ಮಾನವೀಯ ಗುಣಗಳ ಕಡೆಗೆ ಒತ್ತುನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ರಾವಣನು ದಶಕಂಠನಲ್ಲವೆಂದೂ, “ನಾನೇ ಆ ರಾವಣನ ಮೂಲ ಬಲವೆಂದು” ರಾಮನು ಹನುಮನಿಗೆ ರಹಸ್ಯವನ್ನು ಹೇಳಿದನೆನ್ನುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ಹೊಸ ಹೊಳಹುಗಳನ್ನು ತಂದು ರಾವಣತ್ವವು ರಾಮತ್ವದೊಡನೆ ಒಂದಾಯಿತು ಎಂಬಂತೆ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಸೀತೆಯ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯದಿಂದ ಸೋತ ರಾವಣನು ಪುನರ್ಜನ್ಮದಲ್ಲಿ ಮಗುವಾಗಿ ಅವಳ ಪ್ರೀತಿಯ ಆಲಿಂಗನವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. ರಾವಣ ಕುಂಭಕರ್ಣರು ಲವಕುಶರಾಗಿ ಜನಿಸುವ ಅಭೂತ ಪೂರ್ವ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು 'ದಶಾನನಸ್ವಪ್ನಸಿದ್ಧಿ'ಯ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಹೀಗೆ ಕೆಲವು ಅತಿಮಾನುಷ ವಿವರಗಳು ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನೂ ಕುವೆಂಪು ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ ಕೃತಿಯು ವಿಮರ್ಶಕರನ್ನೂ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಚಿಂತಕರನ್ನೂ ತೀವ್ರವಾಗಿ ಸೆಳೆದಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಪಾತ್ರಚಿತ್ರಣ, ಕಾವ್ಯಧರ್ಮ, ಯುಗಧರ್ಮ, ನೀತಿನಡಾವಳಿಗಳು, ರಾಜಧರ್ಮ, ಸಮಕಾಲೀನ ಸಂವೇದನೆಗಳು, ವೈಚಾರಿಕತೆ, ಪ್ರಕೃತಿಕೇಂದ್ರಿತ ಚಿಂತನೆ, ವಿಜ್ಞಾನ ಇತ್ಯಾದಿ ಅನೇಕ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ವಿಶ್ಲೇಷಿಸಿದ್ದಾರೆ.

**ಜ್ಞಾನಪೀಠ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ವಿಜೇತರಾದ ಶ್ರೀ ಮಾಸ್ತಿ ವೆಂಕಟೇಶ ಅಯ್ಯಂಗಾರರು** ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ ಕೃತಿಯನ್ನು ಸರಳರಗಳೆಯಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಮುನ್ನುಡಿಯಲ್ಲಿ ಅವರೇ ಹೇಳಿರುವಂತೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿರುವ ದೈವಸ್ವದ ಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ದೇವತೆಗಳ ಮಧ್ಯ ಪ್ರವೇಶವನ್ನೂ ಪವಾಡಗಳನ್ನೂ ಅಸಹಜ ಘಟನೆಗಳನ್ನೂ ಕೈಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಮಾಸ್ತಿಯವರ ಸಹಜ ಕಥನ ಶೈಲಿಯಾದ ವಾಸ್ತವಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಸರಳವಾಗಿ ರಚಿತವಾಗಿರುವ ಈ ಕೃತಿಯು ದೈವತ್ವ, ಅತಿಮಾನುಷ ಕಲ್ಪನೆಗಳಿಲ್ಲದ ಕನ್ನಡದ ಏಕೈಕ ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯವಾಗಿದೆ. ನಾನು ನಂಬುವ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ನಂಬದ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ರಚಿಸುವ ಕಾವ್ಯವು ಕೆಲವರಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾಗಬಹುದು, ಇಲ್ಲದಿರಬಹುದು ಎನ್ನುವ ಅರಿವು ಕವಿಗೆ ಇತ್ತು. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯಲೋಕದಲ್ಲಿ ಈ ಕೃತಿಯನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಸಹೃದಯರು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಂತೆ ಕಾಣಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಪ್ರಕ್ಷೇಪಗೊಳ್ಳುವ ಮುನ್ನಿನ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಅವರು ಗುರುತಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. "ಚೂಪಾದ ವಿಮರ್ಶಕ ಮತಿಯೊಂದು ರಾಮಾಯಣದ ಬಗ್ಗೆ ಕೇಳಬಹುದಾದ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕವಿ ಕೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಅಂಥ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಸಮಾಧಾನ ಹೇಳುವಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ವ್ಯಾಪಕವಾದ ಅನುಭವ, ವಿದ್ವತ್ತು, ಲೋಕ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪ್ರಕಟ ಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅವರಿಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಒಂದು ಕಾವ್ಯ. ಶ್ರೀ ರಾಮ, ದೇವರಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ಶ್ರೇಷ್ಠಮಾನವನಾಗಲಿಲ್ಲ, ಶ್ರೇಷ್ಠ ಮಾನವನಾಗಿದ್ದುದರಿಂದ ದೇವರೆನಿಸಿಕೊಂಡ ಎಂಬ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಈ ಕಾವ್ಯವು ವ್ಯಾಪಕವಾದ ವಿಮರ್ಶೆ ಆಳವಾದ ಆಧ್ಯಯನಗಳಿಗೆ ನಮ್ಮನ್ನು ಆಹ್ವಾನಿಸುತ್ತದೆ. ಈ ಕಾವ್ಯದ ನಿರೂಪಣಾ ತಂತ್ರ, ಸ್ವಂತಿಕೆ, ಮಾರ್ಪಾಟುಗಳು, ಹೊಸ ಸೇರಿಕೆಗಳು, ತೌಲಿಕ ದೃಷ್ಟಿ, ಜೀವನಧೋರಣೆ, ಮಾನವೀಯ ಸಂಬಂಧಗಳು – ಒಂದೊಂದೂ ವಿವರವಾದ ಅಭ್ಯಾಸಕ್ಕೆ ಅವಕಾಶ ಮಾಡಿಕೊಡುತ್ತದೆ".[27] ಈ ತಮ್ಮ ಕಾವ್ಯವು ರಾಮಾಯಣದ ಬಗೆಗಿನ ತಮ್ಮ ನಿಲುವನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸುತ್ತದೆಂದು ಮಾಸ್ತಿಯವರು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ.

ರಾಮ ಸೀತೆಯರ ವನವಾಸದ ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರುಷದ ಅವಧಿ ಮುಗಿದ ಮರುದಿನದಿಂದ ಕಥೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದು ಕಥೆಯನ್ನು ಸಿಂಹಾವಲೋಕನದ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನ ಭಿನ್ನ ಪಾತ್ರಗಳ ಮೂಲಕ ಅವರವರ ಅನುಭವಗಳನ್ನು, ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಹೇಳಿಸುವ ಮೂಲಕ ಕಟ್ಟಿಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಹನುಮಂತ, ಗುಹ, ಸುಮಂತ್ರ, ಶತೃಘ್ನ, ಅಂಗದ, ತಾರಾದೇವಿ, ಅನಲಾಕುಮಾರಿ, ಕೌಸಲ್ಯಾದೇವಿ, ಕೈಕಯಿ, ಸುಮಿತ್ರಾ ಊರ್ಮಿಳಾ, ಮಂಥರೆ, ಸೀತಾದೇವಿ ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಪರಸ್ಪರರಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡಿಕೊಳ್ಳುವಾಗ ಬಿಚ್ಚಿಕೊಳ್ಳುವ ಅವರ ನೆನಪುಗಳು ಅಪೂರ್ವವಾಗಿದ್ದು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಅವರವರ ಅಂತರಂಗಗಳು, ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳು ದುಃಖ-ದುಮ್ಮಾನ, ಸುಖ-ಸುಮ್ಮಾನಗಳೆಲ್ಲವೂ ತೆರೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತವೆ. ಈ ತಂತ್ರದಿಂದಾಗಿ ಅನವಶ್ಯಕವಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡು ಬಿಡಬಹುದಾದ ಪ್ರಸಂಗಗಳೆಲ್ಲದರ ಭಾರ ಕಡಿಮೆಯಾಗಿ ಒಂದು ಸಂಗ್ರಹಗುಣವೂ ಒಂದು ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಒಳನೋಟವೂ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿದೆ.

ದಶರಥನ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಠಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಿದ್ದು, ರಾಮನು ಉಳಿದ ಸೊದರರಿಗಿಂತ ದೊಡ್ಡವನೆಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಖರದೂಷಣ, ಶೂರ್ಪನಖಿಯರನ್ನು ರಾಕ್ಷಸರೆಂದು ಕರೆದಿಲ್ಲ, ಮತ್ತು ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವರಿಗೆ ಕಿವಿಮೂಗುಹರಿಯುವ ಶಿಕ್ಷೆಯನ್ನು ಕೇಳಿಯೇ ಶೂರ್ಪನಖಿ ಹೆದರಿ ಓಡಿಹೋಗುತ್ತಾಳೆ. (ಮೂಗುಹರಿತದ ಶಿಕ್ಷೆಯು ಪ್ರಾಚೀನ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಕಾಲೀನ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಚಲಾವಣೆಯಲ್ಲಿತ್ತು) ಜಿಂಕೆಯ ವೇಷತೊಟ್ಟು ತಿರುಗುವ ಚಟವಿದ್ದ ತನ್ನ ಬೇಹುಗಾರನಾದ ಮಾರೀಚನನ್ನು ರಾವಣ ಸೀತಾಪಹರಣದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನಷ್ಟೇ, ಜಟಾಯು ಪಕ್ಷಿಯಾಗದೇ ಇಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಋಷಿಯೆಂದು ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. ಪಕ್ಷಿಯೊಂದು ಸೀತೆಯ ರಕ್ಷಣೆಯ ಹೊಣೆ ಹೊತ್ತು ಹೋರಾಡಿತೆಂಬ ಅತಿಮಾನುಷ ಅಂಶವನ್ನು ಮಾಸ್ತಿ ಒಪ್ಪುವುದಿಲ್ಲ. ಹನುಮಂತನಿಗೆ ಲಂಕೆಯನ್ನು ಸುಟ್ಟುಬಿಡಬೇಕೆನಿಸಿದ್ದು ನಿಜವಾದರೂ ಆ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿದರೆ ತನ್ನ ದೂತ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ವಿಳಂಭವಾಗುವುದೆಂದು ಸುಮ್ಮನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸೇತುಬಂಧವು ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿ ಚಿತ್ರಣಗೊಂಡಿದೆ. ನಳನು ತೆಪ್ಪದೋಣಿಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ನಿಪುಣನಾದುದರಿಂದ ಅವನ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕುನೂರು 'ಸಂಘಟ್ಟ'ಗಳನ್ನು ಒಣಗಿದ ಮರಗಳಿಂದ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಸಮುದ್ರವನ್ನು ದಾಟಲಾಯಿತೆಂದು ವಾಸ್ತವದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಂಜೀವಿನಿ ಪರ್ವತದ ವೈಭವೀಕರಣವನ್ನು ಒಪ್ಪದೆ, ವಾನರ ವೈದ್ಯ

ಸುಷೇಣನ ಅಪ್ಪಣೆಯಂತೆ ಹನುಮಂತನು ತಂದ ಸೊಪ್ಪಿನಿಂದ ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನು ಮೂರ್ಛೆಯಿಂದ ಏಳಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತೆಂದು ನಮ್ಮ ಪ್ರಾಚೀನ ವೈದ್ಯ ಪದ್ಧತಿಗೆ ಗೌರವವನ್ನು ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮ ರಾವಣರ ಯುದ್ಧ ರುದ್ರ ಭಯಂಕರವಾಗೇನೂ ಇಲ್ಲ. ಸೀತೆಯ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ರಾಮ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಬಲ್ಲ ದೈವವಾಗಿಯೂ, ಅಥವಾ ರಾಜಧರ್ಮವನ್ನು ಹಿಡಿದ ಕ್ರೂರಿಯಾಗಿಯೂ ಅಥವಾ ತಾನೂ ಅಗ್ನಿದಿವ್ಯವನ್ನೆದುರಿಸಿ ಸೀತೆಯಂತೆಯೇ ತನ್ನ ಶೌಚವನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುವ ಆದರ್ಶವ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿಯೂ ಚಿತ್ರಣಗೊಳ್ಳದೆ, ಅಗ್ನಿದಿವ್ಯವು ನಡೆಯುವಾಗ ಎಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ಸುಟ್ಟುಹೋಗುವಳೋ ಎಂದು ಚಿಂತೆಮಾಡುವ ಸಹಜ ಮನುಷ್ಯನಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಊರ್ಮಿಳೆಯ ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ಸ್ವಲ್ಪ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯಿದೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಂದ ಕಾಡಿನ ಅನುಭವಗಳನ್ನೂ, ತಾರೆಯಿಂದ ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವರ ಕಥೆಯನ್ನೂ ವಿಭೀಷಣನಿಂದ ಲಂಕೆಯ ಕಥೆಯನ್ನೂ, ಇತರರಿಗೆ ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಮಂಥರೆಯು ಅತ್ಯಂತ ಸಹಜವಾದ ಒಬ್ಬ ಸೇವಕಿಯಂತೆ ಒಡತಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯದಾಗಲೀ ಎಂದು ಮಾಡಿದ ತನ್ನ ಯೋಚನೆಯು ಇಷ್ಟಕ್ಕೆಲ್ಲಾ ಕಾರಣವಾಯಿತಲ್ಲ ಎಂದು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನೆನಪಿಸಿಕೊಂಡು ಮರುಗುತ್ತಾಳೆ. ಪ್ರಕ್ಷೇಪವೆಂಬಕಾರಣಕ್ಕೆ ಇದರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡದ ಕಥೆಯನ್ನು ಮಾಸ್ತಿ ಕೈ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ.

**ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಕುಟುಂಬದಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಯಾರದೇ ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಠುರತೆ, ಕೇಡುಗಳಿರುತ್ತವೆಯಾದರೂ ಅದನ್ನು ಸಹನೆ, ಪ್ರೀತಿ, ವಾತ್ಸಲ್ಯ, ಹೊಂದಾಣಿಕೆಗಳಿಂದ ದಾಟಬೇಕೆಂಬ ಸಂದೇಶವನ್ನು ಸಾರಿದ್ದಾರೆ. "ನರರು ಒಬ್ಬರಿಗೊಬ್ಬರು ನಾವು ಕೆಟ್ಟುದನೆ ಬಯಸುವೆವು ದೈವ ಯಾರಿಗೆ ಇರಲಿ ಆ ರೀತಿ ಕೇಡು ಬಯಸುವುದಿಲ್ಲ", "ಬಾಳ ಅರಿಯ ಬಯಸುವವರು ಕೆಲಕಾಲ ವನವಾಸ ನಡೆಸುವುದು ಒಳ್ಳೆಯದು..... ಜಡ ನಾವು ತಿಳಿದಂತೆ ಜಡವಲ್ಲ. ....ಇನ್ನೊಂದು ಜೀವವೇ" ಎನ್ನುವ ಮೂಲಕ ಕೇವಲ ಮಾನವಕೇಂದ್ರಿತ ಬದುಕಲ್ಲದೇ ಜೀವಕೇಂದ್ರಿತವಾದ ಬದುಕಿನತ್ತ ನಮ್ಮ ಗಮನವನ್ನು ಸೆಳೆದು ಬದುಕನ್ನು ಸಹ್ಯವಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದರತ್ತ ನಮ್ಮ ನೋಟವಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಸಾರಿದ್ದಾರೆ.**

**ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾನ್ವೇಷಣ** ಕರ್ನಾಟಕದ ಮಾಜಿ ಮುಖ್ಯಮಂತ್ರಿಗಳಾಗಿದ್ದ ವೀರಪ್ಪ ಮೊಯಿಲಿಯವರು ರಚಿಸಿರುವ **ಸರಳ ರಗಳೆಯ ಮಹಾಛಂದಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿರುವ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟ ರಾಮಾಯಣ ಕಾವ್ಯವಾಗಿದೆ. ಇದುವರೆಗೆ ಕಾಣದ ರಾಮಾಣಯದ ಒಂದು ಹೊಸದಾದ ರಾಜಕೀಯ ಆಯಾಮವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಗುರುತಿಸಬಹುದು.** ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಕುವೆಂಪುರವರ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿಯೂ ತಮ್ಮ ಪರಿಸರದ ಯಕ್ಷಗಾನಗಳಲ್ಲಿನ ಪುರಾಣಕಥೆಗಳ ಪಾತ್ರಗಳು ತಮ್ಮ ಸಂಭಾಷಣೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಕಾಲೀನ ಸ್ಥಿತಿಗತಿಗಳನ್ನು ವಿಶ್ಲೇಷಿಸುವುದಕ್ಕೆ, ವಿಡಂಬಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಪ್ರೇಕ್ಷಕರನ್ನು ಯೋಚನೆಗೆ ಹಚ್ಚುವುದಕ್ಕೆ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವಂತೆ ಇವರ ರಾಮಾನ್ವೇಷಣೆಯೂ ಓದುಗನನ್ನು ಆಲೋಚನೆಗೆ ಹಚ್ಚುತ್ತದೆ. ಸ್ವತಃ ರಾಜಕೀಯ ಮುತ್ಸದ್ದಿಯಾಗಿರುವ ಶ್ರೀ ಮೊಯಿಲಿಯವರು **ರಾಮಾಯಣದ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು, ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಪ್ರಭುತ್ವ ಮತ್ತು ಅಧಿಕಾರದ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಒಳಹೊಕ್ಕು ವಿವೇಚಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.** ರಾಜಕೀಯ ಕ್ಷೇತ್ರದ ಸಮಕಾಲೀನ ತಿಳುವಳಿಕೆಯ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಇಂದಿನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ರಾಮಕಥೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಮೀಕರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ಕಾವ್ಯವು "ಇದು ರಾಮಾಯಣವೂ ಅಲ್ಲ, ಸೀತಾಯಣವೂ ಅಲ್ಲ, ಇದು ಲಕ್ಷ್ಮಣಾಯಣವಾಗಿದೆ. ಇವರಿಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಆದರ್ಶನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

ಕಾವ್ಯದ ಪ್ರಾರಂಭಕ್ಕೇ ಬರುವ ಬಾಬರಿ ಮಸೀದಿಯ ಮೂರು ಗುಮ್ಮಟಗಳು ಉರುಳಿದ ಇಂದಿನ ರಾಜಕೀಯದಿಂದ ಹಿಡಿದು, ರಾಮನು ಬಿಲ್ಲು ಮುರಿದು ಸೀತೆಯನ್ನು ವರಿಸಿದ್ದು, ಅಹಲ್ಯೆಯ ಉದ್ಧಾರ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರ ದೀರ್ಘ ವಾಸ್ತವ್ಯ, ಭರತನ ಮಾತುಗಳು ಇವೆಲ್ಲವೂಗಳಲ್ಲೂ ಅವರು ರಾಜಕೀಯವನ್ನೇ ಕಂಡಿದ್ದಾರೆ, ಕಾಣಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಗಮನ ಸೆಳೆಯುವ ಕಥನ ಅಹಲ್ಯೆಯದು "ಪೂರ್ವ ಪ್ರೇಮದ ಬಳ್ಳಿ ಕೈ ಚಾಚಿ ಕರೆಯುತಿದೆ", "ಮೌನಕಾನನದೊಳಗೆ ಕೋಗಿಲೆಹಾಡಿತ್ತು ಮುಂತಾದ ಸುಂದರ ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತ ನುಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಅಹಲ್ಯೆ ಇಂದ್ರರ ಪ್ರಸಂಗಕ್ಕೆ ಒಂದು ಹೊಸ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಅರ್ಥವಲಯ ಪ್ರಾಪ್ತವಾಗಿದೆ. ಅಹಲ್ಯೆಗೆ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೇ ಇಂದ್ರನ ಬಗೆಗೆ ಕುತೂಹಲವಿತ್ತೆಂಬ ಕಲ್ಪನೆಯಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅವಳು ಗೌತಮರ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ ಕಲ್ಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ, ಬದಲಿಗೆ ಮೌನಿಯಾಗಿ ಏಕಾಂತಕ್ಕೆ

ಸರಿದುಬಿಡುತ್ತಾಳೆ. ತಪ್ಪುಮಾಡಿದವರಿಗೆ ಶಿಕ್ಷೆಕೊಡುವ ವಿಚಾರವನ್ನು ಗೌತಮರು ತಮ್ಮ ಶಿಷ್ಯರಿಗೆ ವಹಿಸಕೊಟ್ಟಾಗ ಅವರ ಶಿಷ್ಯರು ಕೆಟ್ಟ ರಾಜಕೀಯ ಮಾಡುವುದು ಇವೆಲ್ಲಾ ಸಮಕಾಲೀನ ಸಂವೇದನೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಇದೆ. ಸುಂದರವಾದ ರೂಪಕಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ. ಕವಿಯ ಹಳಗನ್ನಡ ನಡುಗನ್ನಡ ಭಾಷಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಕ್ಕೂ ಛಂದಸ್ಸಿನ ಮೇಲಿರುವ ಹಿಡಿತಕ್ಕೂ, ಪ್ರಕೃತಿ–ಪರಿಸರ–ಮಾನವ ಸ್ವಭಾವಗಳನ್ನರಿಯುವ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಕ್ಕೂ ಇವು ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ. ಅವರೇ ಹೇಳುವಂತೆ ಅವರ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವರ ಮೇಲೆ ಪಕೃತಿ, ಪರಿಸರ, ಯಕ್ಷಗಾನ, ಗ್ರಾಮೀಣ ಕಲೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಗಳು ಗಾಢವಾಗಿ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಜನಕನಿಗೆ ಸಿಕ್ಕಿದಾಗ ಅವಳನ್ನು “ಕೆಲವರಿಗೆ ತುಳುಕುವ ಸೌಭಾಗ್ಯ ಕೆಲವರಿಗೆ ಹಸಿವಿನಲಿ ಮರಣ ಸಂಪದದ ಹಂಚಿಕೆಯ ವಿಷಮತೆಯ ನೀಗಿಸುವ ಕೂಸಾಗಿ ಬಂದಳೆ” ಎಂಬ ಮಾತು ಸಮಕಾಲೀನ ಸಮಾಜವನ್ನು ಕಾಡುವ ಅಸಮಾನತೆ ಹಸಿವನ್ನು ನೀಗಿಸುವ, ಸಮಬಾಳಿನ, ಸರ್ವೋದಯದ ಕವಿಯ ಕನಸನ್ನೇ ಹೇಳುತ್ತಿದೆ. “ಈ ಧನುವೊಂದು ಯಂತ್ರ ಶಕ್ತಿಯುಕ್ತಿಗಳು ಎಂತೋ ಅಡಗಿರಬೇಕು ಸುಪ್ತವಾಗಿರಬೇಕು ಇಂಧನ ವಿಶೇಷ” ಎಂಬ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ವಶಕ್ತವಾದ ಅಣುಬಾಂಬುಗಳ ಸಂಗ್ರಹವನ್ನು ಕುರಿತು ತಮ್ಮ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ದುಷ್ಟರ ಕೈಗೆ ಸಿಗದಂತೆ ರಾಮ ನಾಶಗೊಳಿಸುವ ಮೂಲಕ ಹಾಗೂ ವಿಷ್ಣುಧನುಸ್ಸನ್ನು ಧಾರಣಮಾಡುವ ಮೂಲಕ ಭುವಿಯನ್ನು ಮಹಾ ಸಂಕಟದಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದನೆಂಬಂತೆ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ.” ಗಣಿಯ ಕೂಲಿಕಾರ್ಮಿಕರ ಸಂಕಟ, ದುಡಿಮೆಗಾರರ ನೋವು, ಅವರ ಪರವಾಗಿ ಹೋರಾಡುವವರನ್ನು ಬುಟ್ಟಿಗೆ ಹಾಕಿಕೊಳ್ಳುವ ಬಂಡವಾಳಶಾಹಿಗಳು, ಸಿರಿವಂತರು, ದೊಡ್ಡವರನ್ನು ಕುರಿತ ವಿಡಂಬನೆಯನ್ನು ಮಾಂಡಕರ್ಣಿಯ ಪ್ರಸಂಗದಲ್ಲಿ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಸರ್ವಾಧಿಕಾರೀ ಮನೋಭಾವವನ್ನು ಕುರಿತು ಹೇಳುತ್ತಾ **“ಏಕವ್ಯಕ್ತಿಯ ಕೈಲಿ ಸಿಲುಕಿಹುದು ಆಡಳಿತಸೂತ್ರ ವೃಗ ಪ್ರಭುತ್ವವು ಅಲ್ಲಿ ತಾನೇ ತಾನಾಗಿಹುದು ನೈತಿಕತೆ ಭೌತಿಕತೆ ಒಂದಕೊಂದಕೆ ಮಸೆದು ಸಂಘರ್ಷ ತತ್ವವನೆ ಸಾಕೇತ ಮರೆತಿಹುದು”**, **“ಬಿತ್ತಬೇಕಿಹುದು ಭ್ರಾತೃತ್ವ ಬೀಜವನು ಆರ್ತ ಜನ ಸಂತತಿ ಆಸೆ ದೀವಿಗೆ ನೀವು ಆತ್ಮಜನಶೋಷಕರ ಮೆಟ್ಟಿ ಬಿಡಿ ಸುಟ್ಟು ಬಿಡಿ ಆತ್ಮ ಜನದಿಚ್ಛಾಶಕ್ತಿ ಅಡ್ಡಿ ಆತಂಕಗಳ ಮೆಟ್ಟಿ ಪುಟಿದು ಬರಲೈ ನವ ಭರತ ವರ್ಷ”** ಎಂಬ ಮಾತು ತೀರಾ ವಾಚ್ಯವಾಗಿದ್ದು ಕಾವ್ಯಾತ್ಮಕತೆ ಸೋತಿದೆ ಎನಿಸಿದರೂ, ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವದ ತತ್ವಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆಯನ್ನು, ಭಾರತದ ಭವಿಷ್ಯವನ್ನು ಹಸನಾಗಿ ಕಟ್ಟುವ ಕವಿಯ ಹಂಬಲವನ್ನೂ ಒತ್ತಿ ಹೇಳುತ್ತಿವೆ.

ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಈ ಕೃತಿಯು ಮಹಾನ್ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕೃತಿಯಾಗದಿದ್ದರೂ, ಇಂದಿನ ಸಮಕಾಲೀನ ಭಾರತದ ಪ್ರಗತಿ, ಪರಿಸರಸಂಪತ್ತಿನ ಸದ್ಬಳಕೆ, ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಚಿಂತನೆ; ಜಾತಿ, ಲಿಂಗ, ವರ್ಗ, ಕೋಮು ತರತಮಗಳಿಲ್ಲದ ಸರ್ವೋದಯವನ್ನು ಎತ್ತಿಹಿಡಿಯುವ ಸಮಾಜವಾದೀ ನಿಲುವುಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತರಿಸುವ ಮೂಲಕ ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲೇ ವಿಶಿಷ್ಟಸ್ಥಾನ ಪಡೆದಿದೆ. ದೇರಾಜೆ ಸೀತಾರಾಮಯ್ಯನವರು ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯನ್ನಾಧರಿಸಿ ಅನೇಕ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. 'ಶ್ರೀ ರಾಮಚರಿತಾಮೃತಂ ದೇರಾಜಿ ರಾಮಾಯಣ' ದೇರಾಜಿ ಸೀತಾರಾಮಯ್ಯನವರು ಅವತರಣಿಕೆಯಿಂದ ಆರಂಭಿಸಿ ಮಹಾಪ್ರಸ್ಥಾನದವರೆಗೆ 60+948 ಪುಟಗಳ ಬೃಹತ್ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.[28] ‘ರಾಮರಾಜ್ಯದ ರೂವಾರಿ’ ಇದು ಬಾಲಕಾಂಡದ ಕಥೆಯನ್ನೊಳಗೊಂಡಿದ್ದು ಹೊಸದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ನೋಡಲಾಗಿದೆ.[29] ‘ರಾಮರಾಜ್ಯ ಪೂರ್ವರಂಗ’, ರಾಮಾಯಣದ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡವನ್ನು ಹೊಸದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಲಾಗಿದೆ, ‘ಸುಗ್ರೀವ ಸಖ್ಯ’, ‘ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ಸ್ವರಾಜ್ಯ’ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಬರೆದಿರುವ ಅರ್ಥಪ್ರಸಂಗ (ಕ್ರಿ.ಶ. 2014) ಪ್ರೊ. ಮಲ್ಲೇಪುರಂ. ಜಿ. ವೆಂಕಟೇಶರವರು ‘ಸುಂದರ ರಾಮಾಯಣ ಕನ್ನಡದ ಕನ್ನಡಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣರಾಮಾಯಣ’ ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ 226 ಪುಟಗಳ ಸಂಪೂರ್ಣರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ.[30] ಮುತ್ತಣನವರು ರಚಿಸಿರುವ ‘ಬಾಲರಾಮಾಯಣ’ ಕಾವ್ಯವು 647 ಪುಟಗಳಿದ್ದು, ಒಟ್ಟು 1206 ಸಾಲುಗಳಿವೆ. ಅವುಗಳನ್ನು ಎಂಟೆಂಟು ಸಾಲುಗಳಂತೆ ವಿಭಾಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ. ಈ ರೀತಿ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಬಾಲರಾಮಾಯಣಗಳು ಬಂದಿವೆ.

## ಗದ್ಯ ಕೃತಿಗಳು

**‘ಅದ್ಭುತರಾಮಾಯಣ’, ‘ಶ್ರೀರಾಮಾಶ್ವಮೇಧಂ’** ಇವು ಮುದ್ದಣನು (ನಂದಳಿಕೆ ಲಕ್ಷ್ಮೀನಾರಾಯಣ) ಗದ್ಯದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿದ ಕೃತಿಗಳು ಇವನಿಗೆ ರಾಮಾಯಣವು ಪರಮ ಪ್ರೀತಿಯಾದ ವಸ್ತುವಾದುದರಿಂದ ಒಟ್ಟು ಮೂರು ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಈತ ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಪ್ರಾಚೀನ ಮತ್ತು ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ಪರಂಪರೆಯ ಕೊಂಡಿಯಂತಿದ್ದ ಮುದ್ದಣನು ಪ್ರಾಚೀನ ಹಳಗನ್ನಡಕೃತಿಗಳ ಪ್ರಭಾವದೊಂದಿಗೆ ಆಧುನಿಕ ಪಾಶ್ಚಾತ್ಯ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಪ್ರಭಾವವೂ ಇದ್ದು ಹಳೆಯಕಥೆಯನ್ನು ಹೊಸ ತಂತ್ರವನ್ನೂ ಬೆಸೆದಿರುವುದರಿಂದ ಅವನ ಕಥನ ಶೈಲಿ ಎಲ್ಲರ ಮೆಚ್ಚುಗೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿದೆ. ಇವನು ಮೊದಲ ಕೃತಿ ಅದ್ಭುತ ರಾಮಾಯಣವು ಶಾಕ್ತ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಕಥೆಯನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿದ್ದು ಹಳಗನ್ನಡದಲ್ಲಿದೆ. ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತ ಅದ್ಭುತರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನೇಕರು ಅನುವಾದವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದು ಇದು ಅತ್ಯಂತ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಕಥಾಹಂದರವನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಈ ಕೃತಿಯನ್ನು ಔಚಿತ್ಯಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮುದ್ದಣ ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಕತೆಗಿಂತಲೂ ವೇದಾಂತ ವಿಚಾರಗಳು ಮುನ್ನೆಲೆಗೆ ಬಂದಿವೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣದಂತೆ ರಾಮನಿಗಿಂತಲೂ ಸೀತೆಯ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವಕ್ಕೆ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯಿದೆ.” ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಮುದ್ದಣ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ **“ಶತಕೋಟಿ ರಾಮಾಯಣ ಎಂಬ ಸಮುದ್ರದಿಂದ ಇಪ್ಪತ್ತೈದು ಸಾವಿರ ಎಂಬ ನೀರಿನ ಹನಿಗಳು ಶಿವನ ತಲೆಯಿಂದಿಳಿವ ಗಂಗೆಯಂತೆ ಭೂಲೋಕ ಸೇರಿದವು. ಆದರೆ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸೀತಾಮಾಹಾತ್ಮೆ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಕಾಣಿಸದು. ಆದ್ದರಿಂದ ಮೂಲ ಪ್ರಕೃತಿ ಭೂತೆಯಪ್ಪ ಸೀತಾ ಚಾರತ್ರ್ಯವನ್ನು ಒರೆಯುವೆ”** ಎಂದು ಹೇಳಿಸಿ ತನ್ನ ಕಥಾ ಆಯ್ಕೆಯ ಕಾರಣವನ್ನು ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದ್ದಾನೆ. ದಶಕಂಠನ ಸಂಹಾರದ ನಂತರ ಸಹಸ್ರಕಂಠ ರಾವಣನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ರಾಮನಿಗೆ ಗೆಲ್ಲಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗದಾಗ ಸೀತೆಯೇ ಆದಿಮಾಯೆ, ಶಕ್ತಿಯಂತೆ ಅದ್ಭುತರೂಪವನ್ನು ತಾಳಿ ಅವನನ್ನು ಸಂಹರಿಸುತ್ತಾಳೆಂಬುದು ಈ ಕಥೆಯ ಕೇಂದ್ರವಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು, ಆದಿಮಾಯೆಯೂ, ಕಾಳಿಯೂ, ಲಕ್ಷ್ಮಿಯೂ ಆಗಿ ಅಭೇದದಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದಾಳೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 16 ಆಶ್ವಾಸಗಳಿವೆ. ಮುದ್ದಣನ ಕಥೆಗೆ ಹೊರೆ ಎನಿಸಿದ ವೇದಾಂತದ ವಿಚಾರಗಳನ್ನೂ ಅನವಶ್ಯಕವಾದ ವಿವರಗಳನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಜಾಣ್ಮೆಯಿಂದ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಔಚಿತ್ಯಜ್ಞಾನವನ್ನು ಮೆರೆದಿದ್ದಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅದ್ಭುತ ಕಥಾಹಿರಿಮೆ ಮೂಲಕ್ಕೆ ಸೇರುವುದಾದರೂ ಮುದ್ದಣನ ಗದ್ಯದ ಸಹಜ ಓಟ, ಲಯವಿನ್ಯಾಸ, ವರ್ಣನೆಯ ಸೊಬಗನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಮೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

‘ಶ್ರೀರಾಮಾಶ್ವಮೇಧಂ’ ಮುದ್ದಣನ ಅತ್ಯಂತ ಜನಪ್ರಿಯವಾದ ಶ್ರೇಷ್ಠಕೃತಿ. ಪದ್ಮಪುರಾಣದ ಪಾತಾಳ ಖಂಡದಿಂದ ಆರಿಸಿಕೊಂಡ ರಾಮನ ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗದ ಕಥೆಯನ್ನು ತನ್ನಕಾಲದಲ್ಲಿ ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿಲ್ಲದ ಹಳಗನ್ನಡ ಗದ್ಯದಲ್ಲಿ 16 ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಅತ್ಯದ್ಭುತವಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಕೊಟ್ಟಿರುವುದಲ್ಲದೆ ಆ ‘ಸಾಮಾನ್ಯವಾದ ಕಥೆಗೆ ಸುವರ್ಣದ ಚೌಕಟ್ಟನ್ನು’ ಕೊಟ್ಟಿರುವ ಮುದ್ದಣ ಮನೋರಮೆಯರ ಸಲ್ಲಾಪವು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಮಳೆಗಾಲದ ಸಂಜೆಯ ಬೇಸರಕಳೆಯಲು ಅರಮನೆಯ ಕಬ್ಬಿಗ ಮುದ್ದಣ ತನ್ನ ಮಡದಿ ಮನೋರಮೆಯ ಬೇಡಕೆಯಂತೆ ಹೇಳಿದ ಕಥೆ ಎಂಬಂತೆ ವಿನ್ಯಾಸಗೊಳಿಸಲಾಗಿದೆ. ಶೋತೃವಾಗಿರುವ ಮನೋರಮೆಯು ಇಲ್ಲಿ ಸಹೃದಯಳು, ಕಾವ್ಯ ವಿಮರ್ಶಕಳು, ಆಗಿ ಕೃತಿಯುದ್ದಕ್ಕೂ ಒಂದು ಜೀವಂತಿಕೆಯ ಸ್ಪರ್ಷವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದಾಳೆ. ಈ ದಂಪತಿಗಳ ಸಲ್ಲಾಪದಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆ ಹೊಸ ಹೊಳಪನ್ನು ಪಡೆದಿದೆ. ಭಾಷೆ ಪ್ರಾಚೀನವಾಗಿ ಕಂಡರೂ ಅದರೊಳಗೆ ಮಿಡಿಯುತ್ತಿರುವ ಕಾವ್ಯದೃಷ್ಟಿ, ಜೀವಂತಿಕೆ ಅತ್ಯಂತ ಆಧುನಿಕವಾಗಿದೆ. ‘ಪದ್ಯಂವದ್ಯಂ ಗದ್ಯಂಹೃದ್ಯಂ’ ಎನ್ನುವ ಮೂಲಕ ಹೊಸಕಾಲದ ಕನ್ನಡಿಗರಿಗೆ ಎಂಥ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಉಣಬಡಿಸಬೇಕೆಂಬ ಕಥೆ, ರಸ, ಭಾಷೆ, ಬಂಧಗಳ ಮೀಮಾಂಸೆ, ವಿಮರ್ಶೆಯನ್ನೇ ಇಲ್ಲಿ ಆತ ನಡೆಸಿದ್ದಾನೆ. ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕವಾದ ಕಾವ್ಯ ರಚನಾ ಕ್ರಮವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ದೇವತಾ ಸ್ತುತಿಗಳ ಬದಲು ಪ್ರಕೃತಿವರ್ಣನೆಯಿಂದ ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಆರಂಭಿಸುತ್ತಾನೆ. ಜಯವಿಜಯರ ಶಾಪದ ಕಥೆಯನ್ನು ಅಗಸ್ತ್ಯರಿಂದ ಕೇಳಿದ ರಾಮ ಹೆಣ್ಣಿನ ನೆವದಿಂದ ತಾನು ಬ್ರಹ್ಮಹತ್ಯಾ **ಪಾತಕಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾದೆನೆಂದು ಮರುಗಿದಾಗ ಪರಿಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗವನ್ನು ಸೂಚಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮನು ಅಗಸನ ಮಾತಿಗೆ ಬೆಲೆಕೊಟ್ಟು ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನ ವರ್ತನೆ, ಮಾತುಗಳು ಬಹಳ ಒರಟಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆಯಾದರೂ,**

ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಗಲಿದ ರಾಮನಿಗಾದ ದುಃಖವನ್ನು ಕವಿ ದೀರ್ಘವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇದು ಮುದ್ದಣನ ಸ್ವಂತಿಕೆಯ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿದೆ. ಲಕ್ಷ್ಮೀಶನ ಪ್ರಭಾವ ಇವನ ಮೇಲಾಗಿದೆ. ಮೂಲ ಕಥೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸುತ್ತಿರುವಾಗಲೂ ತನ್ನ ಸ್ವಂತದ ವರ್ಣನೆಗಳ ಸೊಬಗಿನಿಂದ ಮುದ್ದಣ ಮನಸೆಳೆಯುತ್ತಾನೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟುಹೋದನೆಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ಮನೋರಮೆಯು ಕಂಬನಿ ಸುರಿಸುತ್ತಾ "ನೀನಾದರು ಎಂತು ಕಲ್ಲುಮನದಿಂದ ವರ್ಣಿಸುವೆ? ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಅದ್ಧೇಗೆ ಬಿಟ್ಟುಹೋದ, ಪೆಣ್ಗಳೊಂದು ಬಾಳ್ತೆ ಬಾಳ್ತೆಯೆ" ಎನ್ನುವ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗಳು ಕಥೆಯ ರಸಭಾವವನ್ನು ಸಹೃದಯರಲ್ಲಿ ಮೀಟುವಲ್ಲಿ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗುತ್ತದೆ. "ನೀತಿ ಬಾರ್ತೆಗೆಟ್ಟುದೇ ನೀತಿ ಬೆನ್ನಿತ್ತುದೇ" ಒಬ್ಬ ಅಗಸನ ಮಾತಿಗೆ ನನ್ನನ್ನು ಬಿಡುವುದೇ ಎಂದು ಹಲುಬುತ್ತಾ ರಾಮನೊಂದಿಗಿನ ತನ್ನ ಜೀವನದ ಹಳೆಯ ನೆನಪುಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಮರುಗುವುದನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಅಲ್ಲದೇ "ನಿನ್ನಾಣತಿಗೆ ಅಬಲೆ ಮರುಗಿದಳಿಲ್ಲ, ಮಾರ್ನುಡಿದಳಿಲ್ಲ, ಮುನಿಸಾಂತಳಿಲ್ಲ, ಬೆರ್ಚಿದಳಿಲ್ಲ, ಕೂಳ್ ಕುದಿಗೊಂಡಳಿಲ್ಲ, ದೂರಿದಳಿಲ್ಲ, ನೀನೆ ಗತಿಯೆಂದು ನಿನ್ನಡಿಯಂ ನೆನೆಯುತೆ ಕಡೆ ಪೊಳ್ತನು ಪಾರುತಿರ್ಪಳ್" ಎಂದು ರಾಮನಿಗೆ ಹೇಳು ಹೋಗು "ತಡಮಾಡಿದರೆ ನಿನ್ನ ಅಣ್ಣ ಕೋಪಿಸನೇ" ಎಂಬ ಸೀತೆಯ ಮಾತುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ವ್ಯಂಗ್ಯ, ವಿಡಂಬನೆ, ತಣ್ಣನೆಯ ಪ್ರತಿರೋಧ ಕಂಡರೆ, ತನ್ನ ನೆಚ್ಚಿನ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಯಾರ್ಯಾರಿಗೆ ಕೊಡಬೇಕು ತನ್ನ ಕಪಿಲೆ ಹಸುವಿನ ಆರೈಕೆಯ ಬಗೆಗೆ ಅವಳು ಹೇಳುವ ಮಾತುಗಳು ಕರುಣ ರಸವನ್ನು ಉಕ್ಕಿಸುತ್ತವೆ. ಹೀಗೆ ಕಥಾ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ತೂರಿಬರುವ ಮುದ್ದಣ ಮನೋರಮೆಯರ ಮಾತುಗಳು ಕೇವಲ ಅವರ ಸರಸಸಲ್ಲಾಪವನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸದೇ ಈ ಕೃತಿಗೆ ಒಂದು ಸಂಭಾಷಣೆಯ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನೂ, ಕಥೆಗಳ ನಡುವೆ ಒಂದು ಕೊಂಡಿಯಾಗಿ ಬಂದು ಸನ್ನಿವೇಶದ ಸ್ವಾರಸ್ಯವನ್ನು ವ್ಯಂಜಿಸುತ್ತದೆ. ಮೂಲ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಶೇಷ ವತ್ಸಾಯನರ ಜಾಗವನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಮನೋರಮೆ ಮುದ್ದಣರು ಅತ್ಯಂತ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಹೊಸತಾಗಿ, ರಸವಾಗಿ, ವಿನೂತನವಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದಲ್ಲದೆ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಮುಮ್ಮಡಿ ಕೃಷ್ಣರಾಜವಡೆಯರ 'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ಕಥೆ', ಅಳಿಯಲಿಂಗರಾಜನ 'ಕುಶಲವರ ಕಥೆ', ಗಳಗನಾಥರ 'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ಸಾರ', ಮುಂತಾದ ಗದ್ಯಕೃತಿಗಳು ಪ್ರಮುಖವಾಗಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಬೇಕಾದವುಗಳಾಗಿವೆ. 'ಜನಪ್ರಿಯ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ', 416 ಪುಟಗಳ ಕೃತಿಯನ್ನು ಕುವೆಂಪುರವರು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. 11 ಪುಟಗಳ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಿದೆ. ಕೆ ಶ್ರೀಕಂಠಯ್ಯನವರು 'ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಕಥೆಗಳು ರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸಂಗಗಳು' ಎಂಬ ಕೃತಿಯನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ 88 ಪುಟಗಳಿದ್ದು 8 ಪುಟಗಳ ಮುನ್ನುಡಿಯೊಂದಿಗೆ. ಪ್ರಕಟಣೆಯಾಗಿದೆ.

### ಕನ್ನಡ ಗೀತರೂಪಕಗಳು

ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಂತೆಯೇ ಗದ್ಯ ಪದ್ಯಮಿಶ್ರಿತವಾದ ಕೃತಿಗಳೂ, ಕಥನ ಕಾವ್ಯ, ಖಂಡಕಾವ್ಯ, ಕಿರುಕವಿತೆಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಸುಂದರ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು, ಸೂಕ್ಷ್ಮ ದೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಪುನಾರಚನೆಗೊಂಡಿವೆ. ಡಿವಿಜಿಯವರ 'ರಾಮಪರೀಕ್ಷಣ' ಗದ್ಯದೊಂದಿಗೆ ಚೌಪದಿ ತ್ರಿಪದಿ, ಷಟ್ಪದಿಯ ಲಯಗಳಲ್ಲಿ ರಚಿತವಾಗಿದೆ. ಗೇಯತೆಗೆ ಹೆಸರಾದ ಪುತಿನರವರ ನಾಟಕಗಳು ಗದ್ಯದೊಂದಿಗೆ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ. ಇವರು ರಾಮಾಯಣ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಏಳು ನಾಟಕಗಳನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ರಾಮೋದಯ, ಅಹಲ್ಯೆ, ಸೀತಾಪರಿಣಯ, ಹರಿಣಾಭಿಸರಣ, ಶಬರಿ, ಶ್ರೀರಾಮಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ, ರಾವಣ ಬಂದು ಹೋದುದನ್ನು ಕುರಿತು' ಶೀರ್ಷಿಕೆಗಳಿಂದ ಕವಿಯು ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ನಾಟಕದ ವಸ್ತುವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವುದು ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಅಹಲ್ಯೋದ್ಧಾರದ ಒಂದು ಕಿರಿ ಪ್ರಸಂಗದ ಕಥೆಯನ್ನಾಧರಿಸಿದ 'ಅಹಲ್ಯೆ'ಯು ಎಲ್ಲನಾಟಕಗಳಿಗಿಂತ ಹಿರಿದಾದನಾಟಕ. ಇದು ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಕಂಡು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. "ಹುಲುಬಯಕೆ ಬಾ ಎನಲು ಓ ಎಂದು ಬಾರದಿರು ವಾತಾಪಿಯಂದದೊಳು ಬಾಳನೊಡೆದು" ಎಂಬ ನಾಂದಿ ಪದ್ಯವೇ ಹುಲು ಬಯಕೆಗಳಿಗೆ ಒಳಗಾಗಿ ಬಾಳುಗಳು ಒಡೆದುಹೋಗುವ ದುರಂತವನ್ನು ಧ್ವನಿಸುತ್ತ ಇಡೀ ಗೀತರೂಪಕದ ಸಂದೇಶವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಟ್ಟಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪುತಿನರವರು ಅಹಲ್ಯೆಯು ಗೌತಮರ ಶಾಪಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ ಕಲ್ಲಾಗದೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿರುವಂತೆ ಗಾಳಿಯಂತೆ ಯಾರಕಣ್ಣಿಗೂ ಕಾಣದಂತೆ ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿರುತ್ತಾಳೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅಹಲ್ಯೆಗೆ ಇಂದ್ರನ ಬಗೆಗಿದ್ದ ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು,

ಅವಳಲ್ಲಿ ಉದಿಸಿರುವ ಬಯಕೆಯನ್ನು ಅಪರಾಧವೆಂದು ನೋಡದೆ, ಗೌತಮನಂತಹ ತಪಸ್ವಿಯ ಮಡದಿಯಾಗಿ ಅವಳ ಬಯಕೆಯು ನಿರ್ಲಕ್ಷಿತವಾಗಿರುವ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಸಹಜವಾದದ್ದೆಂಬಂತೆ ಅನುಕಂಪದಿಂದ ನೋಡಿದ್ದಾರೆ. ಯಾರ ಕಣ್ಣಿಗೂ ಬೀಳದೆ ನೋಯುತ್ತಿರುವ ಅವಳ ಗೋಳು ರಾಮನ ಕಿವಿಗೆ ಕೇಳುತ್ತದೆ. ಅವಳ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪದ ಉರಿಯಲ್ಲಿ ಅವಳ ಕಾಮ ದಗ್ಧವಾಗಿ ಶುದ್ಧಾತ್ಮಳಾಗುತ್ತಾಳೆ.

ಆಧುನಿಕ ಬಿಡಿ ಕವಿತೆಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಸನ್ನಿವೇಶವೋ ಪಾತ್ರವೋ ಇವುಗಳ ವಸ್ತುವಾಗಿದ್ದು, ಸಮಕಾಲೀನ ಸಂವೇದನೆಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಮರುರೂಪಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿವೆ. ವೀಸಿಯವರ 'ಕಾದಿರುವಳು ಶಬರಿ', ಅಡಿಗರ 'ಶ್ರೀರಾಮನವಮಿಯದಿನ', ಸುರಂ ಎಕ್ಕುಂಡಿಯವರ 'ಮಿಥಿಲೆ', ರಮೇಶ ಚಿಪಳೂಣಕರ್‌ರವರ 'ಹೀಗೊಂದು ರಾಮನ ಹಾಡು' ಸುಬ್ರಾಯ ಸಂಪಾಜೆಯವರ 'ಎಲ್ಲಿ ಹೋದಳು ಸೀತೆ', ರಾಮಚಂದ್ರ ಸೈಯವರ 'ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಒಂದು ವೃತ್ತಾಂತ' ರಾಧಾಕೃಷ್ಣ ಬೆಳ್ಳೂರು ಅವರ 'ದಾರಿ', ಸೀತಾರಾಮ್ ಅವರ 'ಜಾನಕಿ' ಧಾರಾವಾಹಿಗಾಗಿ ಎಚ್ ಎಸ್ ವೆಂಕಟೇಶಮೂರ್ತಿಯವರು ರಚಿಸಿರುವ ಶೀರ್ಶಿಕಾಗೀತೆ. ಮುಂತಾದ ಬಿಡಿ ಕವಿತೆಗಳು ಆಧುನಿಕ ಮನಸ್ಸು ರಾಮಾಯಣ ಕಥನಕ್ಕೆ ತೋರುತ್ತಿರುವ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಯೇ ಆಗಿದೆ. ಸಮಕಾಲೀನ ಸಂವೇದನೆಗಳು ರಾಮಾಯಣದ ಅನೇಕ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು ಅಲ್ಲಿಯ ನಡಾವಳಿಗಳನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸುತ್ತಿವೆ. ಆಗಿನ ಮೌಲ್ಯಗಳು ಹೇಗೆ ಈಗ ಅರ್ಥರಹಿತವಾಗಿ ತೋರುತ್ತಿವೆ ಎಂಬುದನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಿವೆ. ಮತ್ತೆ ಕೆಲವು ಅಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿರುವ ಭಾವಾನುಭವವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಪಡೆಯಲು ಹಂಬಲಿಸುತ್ತಿವೆ ಎನಿಸುತ್ತದೆ. ರಾಮ, ಸೀತೆ, ಅಹಲ್ಯೆ, ಕೋದಂಡ, ಮಾಯಾಮೃಗ, ಲಕ್ಷ್ಮಣರೇಖೆ, ಹನುಮದ್ವಿಕಾಸ, ರಾಮಾಯಣ, ಸುಗ್ರೀವಾಜ್ಞೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಪದಗಳು ವಿಶಿಷ್ಟ ಕಥೆಗಳನ್ನು, ಛಾಯೆಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ಬೆನ್ನಿಗಂಟಿಸಿಕೊಂಡು ಪ್ರತಿಮೆ, ಪ್ರತೀಕ, ರೂಪಕಗಳಾಗಿ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಗೊಂಡು ವಿಶಾಲವಾದ ಅರ್ಥವಲಯವನ್ನೇ ಸೃಷ್ಟಿಸುತ್ತವೆ.

**ನಾಟಕಗಳು**

ರಾಮ ಕಥೆಯ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಅನೇಕ ನಾಟಕಗಳು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ರಚನೆಯಾಗಿವೆ, ಪ್ರಯೋಗಗೊಂಡಿವೆ, ವೃತ್ತಿ ರಂಗಭೂಮಿಯ ಕಂಪನಿ ನಾಟಕಗಳು, ಹವ್ಯಾಸೀರಂಗಭೂಮಿ, ಸಿನೆಮಾ, ಧಾರಾವಾಹಿ, ಮಕ್ಕಳ ಅನಿಮೇಟೆಡ್ ರಾಮಾಯಣ, ಹೀಗೆ ದೃಶ್ಯಮಾಧ್ಯಮದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ವಸ್ತುವನ್ನಾಧರಿಸಿದ ರಚನೆ–ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ದೊಟ್ಟಾಟ, ಸಣ್ಣಾಟ, ಮೂಡಲಪಾಯ, ಚಕ್ಕಳಗೊಂಬೆಯಾಟ, ಸೂತ್ರದ ಗೊಂಬೆಯಾಟ, ಹಲವು ನೃತ್ಯ ರೂಪಕಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಎಡೆಪಡೆದಿದೆ. ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ನಾಟಕ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಕುವೆಂಪುರವರ 'ಶೂದ್ರತಪಸ್ವಿ, 'ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಭಾಗ್ಯ', ಅನಕೃಷ್ಣರಾಯರ 'ಸ್ವರ್ಣಮೂರ್ತಿ, ಚದುರಂಗರ 'ಬಿಂಬ', ಗಿರೀಶ್ ಕಾರ್ನಾಡರ 'ಮಾನಿಷಾದ', ಕೀರ್ತಿನಾಥ ಕುರ್ತಕೋಟಿಯವರ' ರಾಮಾವಸಾನ', ಶಿವರಾಮಕಾರಂತರ ಹಾಗೂ ಪುತಿನರವರ ಗೀತನಾಟಕಗಳು ವಿಶೇಷವಾದ ನಾಟಕಗಳಾಗಿದ್ದು, ಅಯಾಯ ಲೇಕಕರು ರಾಮಾುಣದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಪಾತ್ರಗಳೊಂದಿಗೆ ನಡೆಸಿರುವ ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಯ ಅನುಸಂಧಾನದ ಫಲವಾಗಿದ್ದು, ಅವರವರ ವಿಶಿಷ್ಟ ವಿಚಾರಲಹರಿಗಳಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ರಚನೆಗೊಂಡಿವೆ.

ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದಷ್ಟು ರಾಮಾಯಣದ ವಸ್ತುವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ನಾಟಕಗಳಿದ್ದು ಅವು ಕನ್ನಡಿಗರ ಮೇಲೆ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿದ್ದರೂ ಹಳಗನ್ನಡ ನಡುಗನ್ನಡದಲ್ಲಿ ನಾಟಕಗಳೇ ಇಲ್ಲ, ನಾಟಕಗಳ ಚರಿತ್ರೆ ಆರಂಭವಾಗುವುದೇ 'ಮಿತ್ರವಿಂದಗೋವಿಂದ' ಅನುವಾದ ನಾಟಕದಿಂದ. ಇನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರಕೃತಿಗಳು ಇಪ್ಪತ್ತನೆಯ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿಯೇ ರಚಿತವಾದದ್ದು. ಎಸ್.ವಿ. ಪರಮೇಶ್ವರ ಭಟ್ಟರು 'ಭಾಸ ನಾಟಕ ಚಕ್ರ' ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಭಾಸನ ಹದಿಮೂರುನಾಟಕಗಳನ್ನು, ಶ್ರೀರಂಗರು 'ಅಶ್ವಮೇಧ' ದಲ್ಲಿ ಆರು ಏಕಾಂಕಗಳನ್ನು, ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿಯವರು 'ಯಜ್ಞಫಲ' ನಾಟಕವನ್ನೂ, ಮಾಸ್ತಿಯವರು ಋಷ್ಯಶೃಂಗನನ್ನು ಕುರಿತು 'ಶಾಂತಾ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ದಶರಥನ ಶಾಪವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಕುರಿತು 'ಪ್ರಾಯಶ್ಚಿತ್ತ' ಎಂಬ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಬಾಲಕಾಂಡದ ಕಥೆಯನ್ನನುಸರಿಸಿ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಿ. ಎನ್.

ಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿದೇವಿ 'ದಶರಥ' ದುರಂತ ನಾಟಕ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಭಾಸನ ಪ್ರತಿಮಾನಾಟಕದ ಎಳೆಯನ್ನು ಹಿಡಿದು ಕೈಕೆಯ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಉದಾತ್ತೀಕರಿಸಿ ದಶರಥನನ್ನು ಕೇಂದ್ರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು 'ದಶರಥ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು, ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಈ ನಾಟಕ ಸಹೃದಯರು ವಿಮರ್ಶಕರನ್ನು ಸೆಳೆದಿದೆ. ಕಾಶಿ ವಿಶ್ವನಾಥರು 'ಕೈಕೇಯಿ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಭಾಸನ ಪ್ರತಿಮಾ ನಾಟಕವನ್ನು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಎನ್. ರಂಗಾಚಾರ್, ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ, ಸಣ್ಣಗುಡ್ಡಯ್ಯ, ಮೈಸೂರು ಸೀತಾರಾಮಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ಮುಂತಾದ ಅನೇಕರು ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. 'ಮಂಥರೆ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ಹುಲ್ಲುಕೆರೆ ರಮೇಶರವರು, 'ಜಾನಕೀ ಪರಿಣಯ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ಬಿ. ಸೂರ್ಯನಾರಾಯಣಪ್ಪ ಮತ್ತು ಹನುಮಾನ್ ವೆಂಕಟರಾಯರು, ಕಂದಗಲ್ ಹನುಮಂತರಾಯರು 'ಸೀತಾಸ್ವಯಂವರ'ವನ್ನು ಬೆಳ್ಳಾವೆ ನರಹರಿಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ಮತ್ತು ದ.ಕೃ ಭಾರದ್ವಾಜರು 'ಸೀತಾಕಲ್ಯಾಣ' ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಪರಶುರಾಮನನ್ನೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿಸಿಕೊಂಡು 'ಭಾರ್ಗವ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ತಿರುಮಲಾಂಬರವರು ಹಾಗೂ ಡಿವಿಜಿ, ಸೀತಾರಾಮಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು, ಹೆಚ್ ಸುಬ್ಬರಾಯರುಗಳು 'ಪರಶುರಾಮ' ನಾಟಕಗಳನ್ನೂ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅಹಲ್ಯೆ, ಊರ್ಮಿಳೆಯ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಿ ರಚಿಸಿರುವ ನಾಟಕಗಳು ಹಲವಿವೆ. ತಿರುಮಲೆ ರಾಜಮ್ಮನವರು 'ತಪಸ್ವಿನಿ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ನಾರಾಯಣ ರಾಯರು 'ಊರ್ಮಿಳಾ' ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನೂ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಪುತಿನ, ಬುದ್ದಣ ಹಿಂಗಮಿರೆ, ಕೇಶವ ಶೆಟ್ಟಿಗಾ, ಗೋಪಾಲಕೃಷ್ಣ ಆಚಾರ್ಯ, ಸಮೇತನಹಳ್ಳಿ ರಾಮರಾಯ ಇವರುಗಳಿಗೆ ಅಹಲ್ಯೆ ಪ್ರಸಂಗವೇ ನಾಟಕದ ವಸ್ತು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಪು.ತಿ. ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್ಯರ ಕೃತಿಯು ಅತ್ಯುತ್ತಮವಾಗಿದೆ.

ನಾಟಕಕಾರರನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸೆಳೆದಿರುವ ಮತ್ತೊಂದು ಪ್ರಸಂಗ ಪಾದುಕಾ ಪ್ರದಾನ. ಭರತ ರಾಮರ ಭ್ರಾತೃಪ್ರೇಮ ರಾಮನ ಅಚಲ ನಿರ್ಧಾರಗಳ ಮೇಲೆ ಕೇಂದ್ರೀಕೃತವಾದ ಈ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹಲವು ನಾಟಕಗಳು ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಬಂದಿವೆ. ಬೆಳ್ಳಾವೆ ನರಹರಿ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ 'ಪಾದುಕಾಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ', ಪೆರ್ಲಕೃಷ್ಣಭಟ್ಟ ಅವರ 'ಪಾದುಕಾಪ್ರದಾನ', ಅಮೆಮ್ಮಂಬಳ ಅನಂತಯ್ಯನಾವಡರ 'ಪಾದುಕಾಕಿರೀಟಿ' ಕೆವಿ ಶಂಕರಗೌಡರ 'ಭರತನ ಬಂಧುಪ್ರೇಮ' ಇವುಗಳನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಮಾಯಾಜಿಂಕೆಯ ಪ್ರಸಂಗ, ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ಅಪಮಾನ, ನಂತರದಲ್ಲಿ ಶಬರಿಯ ಪ್ರೇಮ, ಹನುಮಂತನ ಭಕ್ತಿ ಸಾಹಸಗಳು, ವಾಲಿಯ ವಧೆ, ಚೂಡಾಮಣಿ ಪ್ರದಾನ, ಮಂಡೋದರಿಯ ಕಳವಳ ಇವೆಲ್ಲ ಪ್ರಸಂಗಗಳೂ ಸೀತಾಪಹರಣ, ರಾಮರಾವಣರ ಯುದ್ಧದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ನಾಟಕಕಾರರ ವಿಶೇಷ ಗಮನವನ್ನು ಸೆಳೆದಿವೆ. ಅವುಗಳನ್ನು ಕುರಿತಂತೆ ಶ್ರೀಕಂಠೇಗೌಡ ಮತ್ತು ಶಾಂತಕವಿಗಳ 'ಸೀತಾರಣ್ಯಪ್ರವೇಶ', ಎಂ.ಕೆ. ಗೋಪಾಲಕೃಷ್ಣ ಭಟ್ಟರ' ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ಮಾನಭಂಗ' ಕಡೆಂಗೋಡ್ಲು ಶಂಕರಭಟ್ಟರ 'ಸೀತಾಹರಣ', ಕಂದಗಲ್ಲ ಹನುಮಂತರಾಯರ 'ಮಾಯಾಮೃಗ', ತಿರುಕರವರು ಬರೆದಿರುವ 'ಭಕ್ತೆ ಶಬರಿ', ಮಹಾಂತೇಶ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ಬರೆದಿರುವ 'ಮಾರುತಿ ಮಾತೃಭಕ್ತಿ', ಶಾಂತಕವಿಗಳ 'ಆಂಜನೇಯ ವಿಜಯ, ತಿಪ್ಪಣಾಚಾರ್ಯರ 'ಹನುಮದ್ವಿಲಾಸ', ಶ್ರೀಕಂಠ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ ಹಾಗೂ ಬೆಳ್ಳಾವೆಯವರ 'ಅಭಿಜ್ಞಾನ ಶುಭೋದಯ', ಶಿರ್ಶಿ ಗಂಗಾಧರ ಹೆಗಡೆಯವ 'ಭಾಗ್ಯಹೀನೆ ಮಂಡೋದರಿ', ಮಳಲಿ ವಸಂತಕುಮಾರ್ ಅವರ 'ಲಂಕೇಶ್ವರ' ಎಸ್. ಟಿ ಕುಲಕರ್ಣಿಯವರ 'ಲಂಕೆಗೆ ಬೆಂಕಿ' ಇವುಗಳನ್ನು ನೋಡಬಹುದು.

ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಲ್ಲಿ ನಾಟಕಕಾರರನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸೆಳೆದಿರುವುದು ರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ, ಶಂಭುಕ ವಧೆ, ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು. ಬೆಳ್ಳಾವೆಯವರು, ಎಸ್ ರಂಗಾಚಾರ್, ಪಾನ್ಯಂ ಸುಂದರ ಶಾಸ್ತ್ರಿಯವರು 'ಅಭೀಷೇಕ' ನಾಟಕವನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ ಕುರಿತು ಕುವೆಂಪು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಭಾಗ್ಯ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ, ಆರ್.ಕೆ. ಹಾನಗಲ್ಲ ಅವರು 'ಪ್ರೇಮ ವಿಜಯ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ನಾಟಕ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶಂಭುಕನ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ಕುರಿತು ಕುವೆಂಪುರವರು 'ಶೂದ್ರ ತಪಸ್ವಿ', ಸಿ.ಕೆ. ನಾಗರಾಜರಾವ್ ಅವರು 'ಶೂದ್ರ ಮುನಿ', ವಿ.ಬಿ. ಮಧುರಂ ಮತ್ತು ಎನ್.ಎಸ್. ಜೈನಿ ಅವರು 'ಶಂಭುಕ ವಧೆ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಶೂದ್ರತಪಸ್ವಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ನ್ಯಾಯ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಕೋನದ, ಬಹು ಚರ್ಚಿತವಾದ ನಾಟಕವಾಗಿದೆ ಇತರ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ಶಿವರಾಮ ಕಾರಂತರ 'ಗೀತನಾಟಕಗಳು', ಎಸ್.ವಿ. ರಂಗಣ್ಣನವರ

'ಕಿರುನಾಟಕಗಳು', ಕೀರ್ತಿನಾಥ ಕುರ್ತುಕೋಟಿಯವರ ಗೀತ ನಾಟಕ 'ರಾಮಾವಸಾನ' ಸೋಸಲೆ ಅಯ್ಯಾಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ 'ರಾಮಾಯಣ', ಎಲ್ ಬಸವರಾಜು ಅವರ "ಭಾಸ ರಾಮಾಯಣ ನಾಟಕ ತ್ರಿವೇಣಿ" ಮತ್ತು 'ನಾಟಕಾಮೃತ ಬಿಂದುಗಳು' ಬಿ. ಪುಟ್ಟಸ್ವಾಮಯ್ಯನವರ 'ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ' ಮತ್ತು 'ನೆಲೆಯಾಗು ಶಿಲೆಯಾಗು ಕಲೆಯಾಗು ದೇವಿ' ಅಹಲ್ಯೆಯನ್ನು ಕುರಿತ ನಾಟಕ. ಎಸ್.ವಿ.ರಂಗಣ್ಣನವರು ಬರೆದಿರುವ 'ಕಿರುನಾಟಕಗಳು' ಮುಖ್ಯವಾದವು ಇವುಗಳೊಂದಿಗೆ ಕಾಳಿದಾಸ, ಭವಭೂತಿಯ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತ' ನಾಟಕವನ್ನು ಅನೇಕ ಕನ್ನಡ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಬಸವಪ್ಪಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು, ಎಸ್.ವಿ. ಪರಮೇಶ್ವರ ಭಟ್ಟರು, ಕೆ. ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ, ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್, ಹುನಗುಂದ ಕೃಷ್ಣ, ಮುಳಬಾಗಲು ಧೋಂಡೋ ನರಸಿಂಹ, ಸಿ.ಪಿ. ಕೃಷ್ಣಕುಮಾರ್, ಎಲ್ ಬಸವರಾಜು ಮುಂತಾದವರು ರಾಮಾಯಣದ ಅನುವಾದಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀ ಚಾಮರಾಜೋಕ್ತಿ ವಿಲಾಸವೆಂಬ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣ ಸಂಪುಟಗಳು,[31] ಇದರಲ್ಲಿ ಜಯಚಾಮರಾಜ ಒಡೆಯರ ಮುನ್ನುಡಿಯಿದೆ. ಡಿವಿಜಿಯವರ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಿದೆ. ಇದು ಸುಂದರ ಚಿತ್ರಪಟ ಕಥನದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಮಿರ್ಜಿ ಅಣ್ಣಾರಾಯರು ರವಿಶೇಣನ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಪರಿವರ್ತಿಸಿದ್ದಾರೆ ಅದರ ಪೂರ್ವೋದ್ಘಾತದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಸಂಬಂಧವಾಗಿ ಸುದೀರ್ಘ ಮಾಹಿತಿಯನ್ನು ನೀಡಿ ವಿವೇಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.[32] ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ. ಶ್ರೀಚಕ್ರವರ್ತಿ ರಾಜಗೋಪಾಲಚಾರ್ ರವರ ಕೃತಿಯನ್ನು ಡಾ. ಹುಣಸೂರು ಎಸ್. ರಾಘವೇಂದ್ರ ರಾವ್ ಅವರು ಗದ್ಯದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದಿಸಿದ್ದಾರೆ. 516 ಪುಟಗಳಿವೆ. 'ಶ್ರೀಮದ್ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣಮ್' ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಎಲ್ಲ ಕಾಂಡಗಳನ್ನೂ ವಿದ್ವಾನ್ ರಂಗನಾಥ ಶರ್ಮರವರು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಕೃತಿಯ ಮುನ್ನಡಿಯನ್ನು ಡಾ. ಡಿ.ವಿ. ಗುಂಡಪ್ಪನವರು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ.[33] 'ಅಸುರ' ಎಂಬ ಆನಂದ ನೀಲಕಂಠನ್‌ರವರ ತಮಿಳು ಕೃತಿಯನ್ನು ಬಿ.ಕೆ.ಎಸ್ ಮೂರ್ತಿ ಅನುವಾದ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಒಟ್ಟು 372 ಪುಟಗಳಿರುವ ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮೂಲವಾದ ರಾವಣ ಮತ್ತು ಆತನ ಜನಾಂಗದವರ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. ಭಾರತ ದರ್ಶನದವರು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯಲ್ಲಿ 11 ಸಂಪುಟಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಆನಂದ ಕರ್ನಾಟಕ ಗ್ರಂಥಮಾಲೆಯಿಂದ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದ ಎಲ್ಲ ಕಾಂಡಗಳನ್ನು ದೇವಶಿಖಾಮಣಿ ಬಿರುದಿನ ಅಳಸಿಂಗಾಚಾರ್ಯರು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಟೀಕಾ ತಾತ್ಪರ್ಯ ಸಹಿತ ಶ್ರೀಮದ್ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸುಂದರ ಕಾಂಡವನ್ನು ವೇ॥ ದೊಡ್ಡಬೆಲೆ ನಾರಾಯಣ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಪ್ರಕಟಣೆ. ಐರಿಷ್‌ಮುದ್ರಾಶಾಲೆ ಬೆಂ. ಕ್ರಿ.ಶ. 1913. ಈಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯವೂ ರಾಮಾಯಣ ಪಾರಾಯಣಮಾಡುವ ಅನುಕ್ರಮಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಲಾಗಿದೆ. ಶ್ಲೋಕ, ಟೀಕು ಹಾಗೂ ತಾತ್ಪರ್ಯ ಸಮೇತ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ವೇ॥ ಬ್ರ॥ ಶ್ರೀ ಪಟ್ಟಾಭಿರಾಮ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ ಮಗ ಟಿ. ಸುಬ್ಬರಾಯ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳಿಂದ ರಚಿಸಲ್ಪಟ್ಟ 'ಭಾವನಿರೂಪಣ'ವೆಂಬ ಕನ್ನಡ ತಾತ್ಪರ್ಯದೊಂದಿಗೆ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನ ಸಮೇತವಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕನ್ನಡಿಗರಿಗೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ.[34]

ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ಹಲವು ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಹವ್ಯಾಸಿ ಕಲಾವಿದರು ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಅಳವಡಿಸಿ ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಹೆಚ್ಚಾಗಿದೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ 'ಶೂದ್ರತಪಸ್ವಿ', 'ವಾಲಿ ವಧೆ', 'ಶಬರಿ', 'ಘೌಲಸ್ತ್ಯನ ಪ್ರಣಯ ಕಥೆ' ಇತ್ಯಾದಿ ನಾಟಕಗಳು ಸಮಕಾಲೀನ ಸಂವೇದನೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಇಲ್ಲಿನ ಸನ್ನಿವೇಶ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಮರುರೂಪಿಸಿದ್ದು, ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಗಮನ ಸೆಳೆಯುತ್ತವೆ. ವಂಶಿಯವರು ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನುವಾದಿಸಿರುವ ಲತಾ ಅವರ ಕಾದಂಬರಿಯನ್ನಾಧರಿಸಿ ಎಸ್.ವಿ. ಕೃಷ್ಣಶರ್ಮರು ನಾಟಕವಾಗಿ ಪ್ರಯೋಗ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾವಣನು ಖಳನಾಯಕನಲ್ಲ ಅವನು ನಾಯಕನಾಗಿ ವಿಜೃಂಭಿಸಿರುವುದನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಮಹಾ ಪ್ರತಿಭಾನ್ವಿತನಾದ ಅವನು ಸಂಗಿತಜ್ಞ, ವಾಗ್ಮಿ, ಉತ್ತಮ ರಾಜ, ಉತ್ತಮ ಪತಿ, ಪ್ರೇಮಿ, ಅಣ್ಣ, ಇತ್ಯಾದಿಯಾಗಿ ಅವನನ್ನು ಮಹಾನ್ ವ್ಯಕ್ತಿಯಾಗಿ ಬಿಂಬಿಸಿದ್ದರೂ ಕೂಡ, ಅವನೂ ದೌರ್ಬಲ್ಯಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಮನುಷ್ಯ ಸಹಜ ಗುಣ ಉಳ್ಳವನು. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತಾಪಹರಣದ ಅಪವಾದವನ್ನೂ ಲೆಕ್ಕಿಸದೆ, ಸೀತೆ ಮಂಡೋದರಿಯ ಮಗಳೆಂದು ತಿಳಿದು ಅವಳ ಯೋಗ ಕ್ಷೇಮಕ್ಕಾಗಿ ತೌರಿಗೆ ಕರೆತರುತ್ತಾನೆಂದೂ, ಅಳಿಯನಾದ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಐಕ್ಯನಾಗಿ ಮುಕ್ತಿ ಪಡೆಯುವ ಸಲುವಾಗಿಯೇ ಅವನನ್ನು ಕೆರಳಿಸಿ ಕೈವಲ್ಯ ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ ಎಂದು, ಅವನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಉನ್ನತೀಕರಣಕ್ಕೆ ಒಳಗುಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಇವೆಲ್ಲಕ್ಕಿಂತ

ಕುತೂಹಲಕರವಾದುದು ಅವನು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬರೆಯಲು ಪ್ರೇರಕನೂ, ಸೂತ್ರಧಾರನೂ ಆಗಿ ಮುಖ್ಯ ಪಾತ್ರ ವಹಿಸುತ್ತಾನೆ ಎನ್ನುವಂತೆ ಕಥಿಸಿರುವುದು.

ಯಕ್ಷಗಾನ ರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸಂಗಗಳೂ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಗಮನ ಸೆಳೆಯುತ್ತವೆ. ಅದರಲ್ಲೂ ದಕ್ಷಿಣಕನ್ನಡ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿಯೂ ಜೀವಂತವಾಗಿಯೂ ಇರುವ ಈ ಕಲಾಪ್ರಕಾರವು ಸಂಗೀತ, ನೃತ್ಯ, ವೇಷ ಭೂಷಣ, ಸಂಭಾಷಣಾ ಸೌಂದರ್ಯ ಹಾಗೂ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಯನ್ನೂ ಮಾಡುತ್ತ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಪುರಾಣ ಪಾತ್ರಗಳ ನಡಾವಳಿಗಳನ್ನು ಸಮಕಾಲೀನ ಚಿಂತನೆಯ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ, ಅದಕ್ಕೆ ಸಮಜಾಯಿಶಿಯನ್ನು ಕೇಳುವ, ಶೋತೃವಿನಲ್ಲಿ ಏಳಬಹುದಾದ ಅನೇಕ ಸಂಶಯ ಅನುಮಾನಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ನೀಡುವ ಒಂದು ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಕಲಾ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿದೆ. ಈ ಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಕಲಾವಿದರಿದ್ದಾರೆ. ಪಾರ್ತಿ ಸುಬ್ಬನವರದು ಬಹಳ ದೊಡ್ಡ ಹೆಸರು. ಈತ 'ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಠಿ–ಸೀತಾಕಲ್ಯಾಣ', ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ–ಪಂಚವಟಿ', 'ವಾಲಿಸಂಹಾರ', 'ಉಂಗುರಸಂಧಿ', 'ಸೇತುಬಂಧನ, 'ಅಂಗದ ಸಂಧಾನ, 'ಕುಂಭಕರ್ಣ ಕಾಳಗ', 'ಕುಶಲವರ ಕಾಳಗ' ಎಂಬ ರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ಎಂಟು ಯಕ್ಷಗಾನಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಕವಿಚರಿತೆಕಾರರು ಈ ಕಲಾವಿಧನನ್ನು ಕುರಿತು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಈತನ ಮೇಲೆ ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ, ನರಹರಿಕವಿಗಳ ಪ್ರಭಾವವನ್ನೂ, ಕೇರಳದ ಕಥಕ್ಕಳಿಯ ಪ್ರಭಾವವನ್ನೂ ಆಳ್ವಾರರ ದಿವ್ಯಪ್ರಬಂಧಗಳಿಂದ ಪ್ರಭಾವಿತನಾಗಿದ್ದಾನೆಂದು ಅವುಗಳಿಂದ ಕೆಲವು ಪದ್ಯಗಳನ್ನೂ ಬಳಸಿಕೊಂಡಿರುವುದನ್ನು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಥೆಗೆ ಒಂದು ರೋಚಕತೆಯ ಲೇಪವಿರುತ್ತದೆ. 17–18ನೇ ಶತಮಾನದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಯಕ್ಷಗಾನಕಲಾವಿದರು ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಗೇರುಸೊಪ್ಪೆ ಶಾಂತಪ್ಪಯ್ಯನವರು ರಚಿಸಿದ ಪುತ್ರಕಾಮೇಷ್ಠಿ, ಕೃತಿಕಾರರ ಹೆಸರು ತಿಳಿಯದ ರಾಮಪರಂಧಾಮ' ಹಾಗೂ ಶ್ರೀರಾಮಾಶ್ವಮೇಧ' ಯಕ್ಷಗಾನಗಳೂ ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಆಧುನಿಕ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲೂ ಅನೇಕ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಯಕ್ಷಗಾನಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ.[34]

### ಕಾದಂಬರಿ

ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆ ಹಾಗೂ ಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿ ಕಾದಂಬರಿಗಳು, ಕಿರು ಕಾದಂಬರಿಗಳು ರಚಿತವಾಗಿವೆ. ಹೆಚ್.ವಿ. ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮನವರ 'ರಾಮ ಸೀತೆ ರಾವಣ' (1984) ಉತ್ತರಾಕಾಂಡದ ಕಥೆಯನ್ನೊಳಗೊಂಡ 'ವಿಮುಕ್ತಿ'ಯನ್ನು ಹಾಗೂ ಡಾ. ಪ್ರಭಾವತಿಯವರ 'ಅಹಲ್ಯೆ' ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಇಲ್ಲಿನ ಸೀತೆ, ಅಹಲ್ಯೆಯರ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಸ್ತ್ರೀ ಸಂವೇದನೆಯ ಆಧುನಿಕ ದೃಷ್ಟಿಕೋನದಿಂದ ನೋಡಲಾಗಿದೆ. ಸೀತೆಯು ತನ್ನ ಜೀವನದುದ್ದಕ್ಕೂ ನಾನಾ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಕಟವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ಸಾಕಾಗಿ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಬಗೆಯ ದೌರ್ಜನ್ಯಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಭಟನೆಯೋ ಎಂಬಂತೆ ಮೌನವಾಗಿ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ನಡೆದುಬಿಡುವ ಚಿತ್ರವನ್ನು ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮನವರು ಕೊಡುತ್ತಾರೆ. ಇದುವರೆಗೆ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಬಂದಿರುವ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣದ ಒಂದು ಹೊಸತನವಿದೆ. ಇವರು ರಾಮಾಯಣದ ಸ್ತ್ರೀಯರಾದ ಕೌಸಲ್ಯೆ, ಸುಮಿತ್ರೆ, ಕೈಕೆ, ಸೀತೆ ಊರ್ಮಿಳೆ, ಮಂಡೋದರಿಯರ ಮನೋಲೋಕವನ್ನು ತೆರೆದಿಡುವ ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. "ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಪುರುಷಪಾತ್ರಗಳಿಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯಿದ್ದು, ಸ್ತ್ರೀಯರ ಮನೋಲೋಕವಂತೂ ಅಪರಿಚಿತವಾಗಿಯೇ ಉಳಿದುಬಿಡುತ್ತದೆ." "ಆಧುನಿಕ ಸೃಜನಶೀಲ ಸ್ತ್ರೀ ಮನೋ ಭಾವವೊಂದು ರಾಮಾಯಣದ ಕೂಡ ನಡೆಸಿದ ಸಂವಾದವೇ ಈ ಕಾದಂಬರಿಗಳ ಸಾರ" ಎಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ವಿಶ್ಲೇಷಿಸಿದ್ದಾರೆ.[35]

**ಮೈಥಿಲಿ** ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಗಂಗಯ್ಯ ಕಂಬಾಳು ಅವರು ರಾಮಾಯಣವನ್ನುರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅವೈದಿಕ ದೃಷ್ಟಿಕೋನದಿಂದ ವಿಶ್ಲೇಷಿಸಿದ್ದಾರೆ. "ತಾವು ಚಿಕ್ಕಂದಿನಲ್ಲಿ ಕೇಳಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯು ನಿಸರ್ಗಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರವಾಗಿದ್ದು, ಮೈಥಿಲಿಯಂಥ ಕಾದಂಬರಿಯನ್ನು ಬರೆಯಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸಿತೆಂದು ಅವರು ಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ಮೇಲೆ ಜನಪದ ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಗಳು ಪ್ರಭಾವಬೀರಿವೆ.

'ಕಾಂಡ' ಎಂಬ ಕಾದಂಬರಿಯೂ ರಾಮಾಯಣಕಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದು ಕಂನಾಡಿಗಾ ನಾರಾಯಣ ಎಂಬುವವರು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತಾ

ಸ್ವಯಂವರದಲ್ಲಿ ಜನಕನು ಎಸಗುವ ರಾಜಕೀಯವನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇತರರಿಗೆ ಸಾಧ್ಯವಾಗದಂತೆ ಶಿವಧನುಸ್ಸಿನ ಕೆಳಗೆ ಆಯಂಸ್ಕಾಂತವನ್ನು ಅವನು ಬಚ್ಚಿಟ್ಟಿರುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ವರಿಸಬೇಕೆಂಬ ಅಪೇಕ್ಷೆಯಿಂದ ರಾಮ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ಎತ್ತಲು ಬಂದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಯಸ್ಕಾಂತವನ್ನು ತೆಗೆದುಬಿಡುತ್ತಾನೆಂದು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲೂ ಸೀತೆಯ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯಿದ್ದರೂ ಇಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಕುಂಡವಿಲ್ಲ, ಸೀತೆಯು ಬೆಂಕಿಯನ್ನು ಹಾರಿ ಪಾತಿವ್ರತ್ಯವನ್ನು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸುವಾಗ ಬೆಂಕಿಯು ತಗುಲಿ ಅವಳ ಪಾದಗಳನ್ನು ಸುಡುತ್ತದೆಂದು ವಿವರಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.

* * *

ಮಂಗಳದಾಯಕವಾದ ಮುಕ್ತಾಯವು ಭಾರತೀಯ ಕಥೆಗಳು, ಪುರಾಣ ಕಾವ್ಯರಚನೆಯ ಸಹಜ ವಿಧಾನವಾಗಿದ್ದು ಕನ್ನಡ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿವಾದ ಕಾವ್ಯ, ಗದ್ಯಕೃತಿಗಳು, ನಾಟಕಗಳು ಸಹ ಇದಕ್ಕೆ ಹೊರತಲ್ಲ. ರಾವಣ ಸಂಹಾರದ ನಂತರ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಕಥೆ ಸುಖಾಂತವಾಗಿ ಮುಗಿಯುವುದೇ ಹೆಚ್ಚು. ಆಧುನಿಕ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣ ರಚನೆಗಳಲ್ಲಿ ದುಃಖಾಂತವಾದ ಉತ್ತರರಾಮಕಥೆಯು ಕನ್ನಡಿಗರ ಗಮನವನ್ನು ವಿಶೇಷವಾಗಿ ಸೆಳೆದಿದೆ. ಅದನ್ನೂ ಸುಖಾಂತವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಅನೇಕ ಕವಿಗಳು ಮಾಡಿರುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ. ನವ್ಯ, ಸೃಜನಶೀಲ ಲೇಖಕರ ವಿಭಿನ್ನ ವಿಚಾರಧಾರೆಯು ರಾಮಾಯಣ ಕಥೆಯರಚನೆಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರಭಾವಬೀರಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಛಂದೋವೈವಿದ್ಯವೂ ಇರುವುದನ್ನೂ ಗಮನಿಸಬಹುದು. "ಒಂದಲ್ಲಾ ಒಂದು ಬಗೆಯಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡವು ರಾಮಾಯಣದ ಮುಖ್ಯ ಕಥಾವಾಹಿನಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಘಟನೆಗಳಿಗೆ ವಿವರಣೆ ನೀಡಲು ಯತ್ನಿಸಿದೆ ಎಂದು ಸಂಕಾಲಿಯಾ ಅವರು ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ."[36]

**ಕನ್ನಡದ ಅನೇಕ ರಚನೆಗಳು ಹೀಗೆ ಪೂರ್ವ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಸಂಗಗಳಿಗೆ, ವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ನಡವಳಿಕೆಗಳಿಗೆ, ಒಂದು ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಾ, ರೂಪದ, ಇಲ್ಲವೇ ಸಮಜಾಯಿಶಿಯ, ಇಲ್ಲವೇ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಯ ದಾರಿ ಹಿಡಿದಿರುವುದನ್ನೂ ಕಾಣಬಹುದು. ಪೂರ್ವರಾಮಾಯಣದ ಅನೇಕ ಪಾತ್ರಗಳ ನಡವಳಿಕೆಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾಗುವ ಅವರ ಪೂರ್ವ ಜನ್ಮಗಳ ಹಾಗೂ ಪೂರ್ವಕೃತ ಪಾಪ-ಪುಣ್ಯ ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ವಿವರಣೆಯನ್ನು ನೀಡಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿರುವುದು ಕನ್ನಡದ ಪ್ರಾಚೀನ ಮತ್ತು ಆಧುನಿಕ ಎಲ್ಲಾ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲೂ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಅಮಂಗಲ ಗಳಿಗೆಯಲ್ಲಿನ ರಾವಣಾದಿಗಳ ಹುಟ್ಟೇ ಅವರು ದುಷ್ಟರಾಗಲು ಕಾರಣ ಎಂದು ವಿವರಿಸಿರುವುದು, ರಾವಣ ಸೀತೆಯನ್ನು ಅಪಹರಿಸಿದರೂ ಅವಳನ್ನು ಮುಟ್ಟದಿರಲು ವೇದವತಿಯ ಶಾಪ ಕಾರಣ ಎಂದು ಹೇಳುವುದು, ಕೈಕೆ ರಾಮನಿಗೆ 14ವರ್ಷ ವನವಾಸದ ವರ ಕೇಳಲು ಕಾರಣ ರಾಮನ ಸಾವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸುವುದು ಎಂದು ಸಮಜಾಯಿಶಿ ಕೊಡುವುದು, ಸೋದರನ ಮಡದಿಯೊಂದಿಗಿನ ಅನುಚಿತ ವರ್ತನೆಯೇ ರಾಮ ವಾಲಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಕಾರಣ, ಹನುಮನಿಗೆ ತನ್ನ ಸತ್ವದ ಅರಿವು ಮರೆತುಹೋಗಲು ಕಾರಣ ಮುನಿಯ ಶಾಪ, ಅಹಲ್ಯೆಯ ಪಾಪತೊಳೆಯುವ ರಾಮ ಸೀತೆಗೆ ಕಠಿಣವಾಗಿ ನಡೆದುಕೊಳ್ಳುವುದಕ್ಕೆ, ಸೀತೆಗೆ ಅಪವಾದ ಬರವುದಕ್ಕೆ 'ಶುಕಶಾಪ'ವೇ ಕಾರಣ ಎಂದು ಹೇಳಿಬಿಡುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ನಾನಾ ಬಗೆಯ ಪೂರ್ವ ವೃತ್ತಾಂತಗಳನ್ನು ಹೆಣೆದು ಮೂಲ ರಾಮಾಯಣದ ತೊಡಕುಗಳಿಗೆ (ಹಾಗೆ ಅನಿಸುವ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಿಗೆ), ಸಮಸ್ಯೆಗೆ ಒಂದು ಸಮಾಧಾನದ ಉತ್ತರವನ್ನು ಹೇಳುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಬರಹಗಾರರು ಮಾಡಿರುವುದು ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದಾಗಿ ಹಲವು ಬಗೆಯ ಉಪಕಥೆಗಳು, ಒಳಗಥೆಗಳು, ಪೂರ್ವ ವೃತ್ತಾಂತಗಳು, ಬಿಚ್ಚಿಕೊಂಡಿವೆ. ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಕೋನಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ.**

**ಡಿ.ವಿ. ಗುಂಡಪ್ಪನವರ** 'ಶ್ರೀರಾಮಪರೀಕ್ಷಣಂ' ಕೃತಿ ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿದೆ ಕಂದ, ವೃತ್ತ, ದ್ವಿಪದಿಗಳು, ಗದ್ಯದ ಮಿಶ್ರಿತ ವಿಶಿಷ್ಟಪ್ರಕಾರವಾಗಿದೆ. * (ಜಿ.ಪಿ. ರಾಜರತ್ನಂ ಇದರ ಸರಳ ಗದ್ಯಾನುವಾದವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.) ಅಲ್ಲದೆ ರಾಮಾಯಣದ ಘಟನೆಗಳನ್ನು, ಪಾತ್ರಗಳ ವರ್ತನೆಯನ್ನು ಕುರಿತಂತೆ ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಬಗೆಯ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಅವುಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರವನ್ನು ನೀಡುವ ಹೊಸ ಕಾವ್ಯ ತಂತ್ರವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಲಾಗಿದೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಹಲವಾರು ಸಮಸ್ಯೆಗಳ ಮೇಲೆ ಇಲ್ಲಿ ಬೆಳಕನ್ನು ಚೆಲ್ಲಲಾಗಿದೆ. ಮೂಲರಾಮಾಯಣ ಪ್ರಸಂಗದ ಜೊತೆಗೆ ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದ ಸೀತೆಯ ಪರಿತ್ಯಾಗದ ಕುರಿತಾಗಿ ಜನಸಾಮಾನ್ಯರಲ್ಲಿ ಸಹಜವಾಗಿ ಎದ್ದಿರುವ ಅನುಮಾನಗಳು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ

ಪರಿಗಣಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 54 ಪದ್ಯ ಹಾಗೂ ಗದ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯ ಪ್ರಶ್ನೆಗೆ, ಲೋಕಜನದ ಪ್ರಶ್ನೆಗೆ 42 ಪದ್ಯ ಹಾಗೂ ಗದ್ಯ ಭಾಗ, ಶಂಬೂಕ ವೃತ್ತಾಂತಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಪ್ರಶ್ನೆಗೆ 70 ಪದ್ಯ ಹಾಗೂ ಗದ್ಯ ಭಾಗಗಳನ್ನು ವಿನಿಯೋಗಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಕೇಳಲಾಗುವ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೂ ರಾಮನಿಂದಲೇ ಸಮರ್ಪಕವಾದ ಉತ್ತರವನ್ನು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನ ರಾಜಧರ್ಮ ಪಾಲನೆಯ ನಿಷ್ಠೆ, ಜನಸಾಮಾನ್ಯರ ಸ್ವಭಾವ ಚಿತ್ರಣ, ಚಾತುರ್ವರ್ಣ್ಯವನ್ನು ಕುರಿತ ಧರ್ಮ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಯ ಕಡೆಗೆ ಒತ್ತುಕೊಡಲಾಗಿದೆ.

ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದಷ್ಟು **ವಿಮರ್ಶಾ ಕೃತಿಗಳು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಕುರಿತು ರಚಿತವಾಗಿವೆ.** ಮಾಸ್ತಿವೆಂಕಟೇಶ ಅಯ್ಯಂಗಾರರು 'ಉತ್ತರಕಾಂಡ ವಿಚಾರ', ಎ.ಎನ್. ಮೂರ್ತಿರಾಯರು 'ಪೂರ್ವಸೂರಿಗಳೊಡನೆ', ವರದರಾಜರಾಯರು 'ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ ಪ್ರಸಂಗ' ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿ ವಿಮರ್ಶೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಕೆಲವು ವಿಶಿಷ್ಟ ವಿಮರ್ಶಾಕೃತಿಗಳು ಬಂದಿವೆ. 'ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣ ಪಂಚಮಹಾಕಾವ್ಯ ಅವಲೋಕನಾಮೃತಂ' ಹೆಸರಿನ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ, ಕಂಬನ್, ತುಳಸೀ, ಬತ್ತಲೇಶ್ವರ, ಕುವೆಂಪುರವರ ರಾಮಾಯಣಗಳ ತೌಲನಿಕ ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ಪ್ರೊ. ಆರ್ ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಅಯ್ಯಂಗಾರ್ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.[37] 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣದ ಮಹಾಪ್ರಸಂಗಗಳು' ಎಂಬ ಕೃತಿಯನ್ನು– ಪ್ರೊ. ಕೆ.ಎಸ್. ನಾರಾಯಣಾಚಾರ್ಯರು ಪ್ರಕಟಿಸಿದ್ದಾರೆ.[38] 'ರಾಮಾಯಣ ಮರುದರ್ಶನ' ಹೆಸರಿನ ಕೃತಿಯನ್ನು ಪ್ರೊ. ಮಂಜುನಾಥ ಬೇವಿನ ಕಟ್ಟಿಯವರು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿದ್ದಾರೆ.[39] 'ರಾಮಾಯಣ ಪಾತ್ರಾವಲೋಕನ' ಕೃತಿಯನ್ನು ರಾಮಚಂದ್ರ ಭಾವೆಯವರು ಬರೆದಿದ್ದಾರೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯ ಪಾತ್ರಗಳ ಜೊತೆಗೆ ಕೌಸಲ್ಯೆಯ ಮಗಳು, ಮಂಥರೆ, ಗುಹ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ತಾಟಕಿ, ವಸಿಷ್ಠರನ್ನು ಕುರಿತು ಚರ್ಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.[40] 'ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ ಮಹಾನ್ವೇಷಣ', ಕಾವ್ಯಾವಲೋಕನ, ಎಂಬ ವೀರಪ್ಪಮೊಯಿಲಿಯವರ ರಾಮಾಯಣ ಕುರಿತು ವಿಮರ್ಶಾ ಕೃತಿಯನ್ನು ಡಾ. ಕೆ. ಅನಂತರಾಮು ಹೊರತಂದಿದ್ದಾರೆ.[41]

ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಜೈನ ವೈದೀಕ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಗಳಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ವ್ಯತ್ಯಾಸಗಳಿದ್ದರೂ ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ಪರಿತ್ಯಜಿಸಿದನೆಂಬುದು ಪರಿತ್ಯಕ್ತಳಾದ ಸೀತೆಯ ನೋವು, ಲವಕುಶರ ಜನನ, ಇತ್ಯಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿಲ್ಲ. ಸೀತೆಯ ತಾಯ್ತನದ ಹಂಬಲ, ಶುಭ ಅಶುಭಗಳ ಸೂಚಕವಾದ ಕನಸುಗಳು, ಜಿನ ಪೂಜೆಯ ಬಯಕೆ, ರಾಮ ಸೀತೆಯನ್ನು ಪರಿಗ್ರಹಿಸಿದುದು ಸರಿಯಾದ ಕ್ರಮವಲ್ಲವೆಂಬ ಅಭಿಪ್ರಾಯ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರಲ್ಲಿದ್ದುದು ರಾಮನಿಗೆ ತಿಳಿಯುವುದು, ರಾಮ ಆ ಕುರಿತು ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಂದಿಗೆ ಸಮಾಲೋಚಿಸುವುದು. ಲಕ್ಷ್ಮಣ ರಾಮನ ನಿರ್ಧಾರವನ್ನು ವಿರೋಧಿಸುವುದು. ಸೇನಾಪತಿಯ ಮೂಲಕ ರಾಮ ಅವಳನ್ನು ಜಿನಾಲಯಗಳ ದರ್ಶನದ ನೆಪವೊಡ್ಡಿ ಕಾಡಿನ ಪಾಲುಮಾಡುವುದು, ಸೀತೆಯ ಸಂಕಟದ ವರ್ಣನೆ, ಪುಂಡರೀಕಿಣಿ ಪುರದರಸು ಅವಳನ್ನು ಪೊರೆದನೆಂಬ ವಿಚಾರವಿದೆ. ಋಷಿ ಮುನಿಗಳ ಆಶ್ರಮದಂತೆ ಜೈನ ಮುನಿಗಳ ಬಸದಿಗಳಲ್ಲಿ ಇಂತಹ ಆಶ್ರಯಗಳಿಗೆ ಅವಕಾಶವಿರಲಿಲ್ಲವಾಗಿ ಕಥೆ ಬದಲಾಗಿದೆ. ಹೀಗೆ ಅನಾಥ ಲವಕುಶರ ಜನನ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ, ಪರಾಕ್ರಮ, ವಿವಾಹಾದಿಗಳ ಚಿತ್ರಣಗಳು ಜೈನಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಬಂದರೆ, ವೈದೀಕ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ರಜಕನ ದೂಷಣೆಯೇ ಕಾರಣವಾಗಿ, ಸೀತೆಯ ಬಯಕೆಯಂತೆ ಋಷಿಪತ್ನಿಯರ ಭೇಟಿಯ ನೆಪವೊಡ್ಡಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮೂಲಕವೇ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಸಾಗಹಾಕುವುದು, ಅವಳ ಕರುಣಾಜನಕ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಮರುಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹಾಮುನಿ ಪೊರೆಯುವುದು, ಲವಕುಶರ ಜನನ, ರಾಮನ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗ, ತಂದೆಮಕ್ಕಳ ಹೋರಾಟ ಮುಂತಾದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಚಿತ್ರಣಗೊಂಡಿವೆ ಇಲ್ಲಿ, ವಿವರಗಳು ನಿಮಿತ್ತಗಳಲ್ಲಿ ಬದಲಾವಣೆಗಳು ಕಂಡು ಬಂದರೂ ಸೀತೆಯ ಚಾರಿತ್ರ್ಯದ ಬಗೆಗೆ ಹುಟ್ಟಿಕೊಂಡ ಅನುಮಾನಗಳು, ರಾಮನು ಅವಳನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ್ದರ ಬಗೆಗೆ ಪ್ರಜಾಜನರ ಅಸಮಾಧಾನ, ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಡುವ ಕುರಿತು ರಾಮನು ಆಪ್ತರೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿದನೋ ತಾನೇ ನಿರ್ಧರಿಸಿದನೋ ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಆ ಅಸಮಾಧಾನ ಹಾಗೂ ನಿರ್ಧಾರಗಳಲ್ಲಿ ಪುರುಷ ಪ್ರಧಾನ ಸಾಮಾಜಿಕ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ನಿರ್ಬಂಧಗಳು ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿವೆ. ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನು ಕುರಿತಾದ ದತ್ತವಾದ ಚೌಕಟ್ಟುಗಳು, ಮತ್ತೆ ಮತ್ತೆ ಸಾಬೀತು ಪಡಿಸಬೇಕಾಗಿ ಬರುವ ತನ್ನ

ಸತೀತ್ವ, ಸಮಾಜ ಒಪ್ಪುವ ಪತಿವ್ರತಾ ಸ್ತ್ರೀ ಮಾದರಿಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವ ವ್ಯತ್ಯಾಸವೂ ಇಲ್ಲ.

ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗದ ಬದಲಿಗೆ ಜೈನ ಕಥಾ ಪರಂಪರೆಯು ಲವಕುಶರ ಕಾಳಗಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಬಗೆಯ ಕಾರಣವನ್ನು ಹುಡುಕಿಕೊಂಡಿರುವುದು ಸಮಂಜಸವಾಗೇ ಇದೆ. ಲವಕುಶರು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳು ಅಸಮಾನ್ಯ ಪರಾಕ್ರಮಿಗಳೆಂದು ತಿಳಿದು ಸಂತೋಷದಿಂದ ಅವರನ್ನು ಅಪ್ಪಿಕೊಳ್ಳುವ ರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಲು ಸಿದ್ಧನಿಲ್ಲ! ಲೋಕಾಪವಾದವನ್ನು ಕಳೆಯಲು ಶಪಥ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಅವಳಿಗೆ ಹೇಳಿ ಕಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನಲ್ಲದೇ ಅನ್ಯರನ್ನು ನೆನೆದವಳಾದರೆ ಅಗ್ನಿಯು ತನ್ನನ್ನು ದಹಿಸಲೆಂದು ಶಪಥ ಮಾಡಿ ದಳ್ಳುರಿಯನ್ನು ಹೊಕ್ಕಾಗ ಅದು ಸರೋಜಷಂಡವಾಗುತ್ತದೆ! ರಾಮನೊಂದಿಗೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಸೀತೆ ಬರುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮನು ತಪ್ಪನ್ನು ಕ್ಷಮಿಸೆಂದು ಕೇಳಿದರೂ 'ಕೇಡುಳ್ಳ ಈ ಹಾಳು ಸಂಸಾರ'ದ ಬಗೆಗೆ ಜಿಗುಪ್ಸೆ ತಾಳಿ ಸೀತೆ ತನ್ನ ಕೂದಲನ್ನು ಕಿತ್ತು ರಾಮನ ಮುಂದಿಟ್ಟು ಸಮವಸರಣಕ್ಕೆ ನಡೆದು ಬಿಡುತ್ತಾಳೆ! (ನಾಗರಾಜಕವಿ) "ವೈದೀಕ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿಯೂ ರಾಮನಿಗೂ, ಅವನು ಮೆಚ್ಚುವ ಸಮಾಜಕ್ಕೂ ಅವನ ಸಂಸಾರಕ್ಕೂ ವಿಮುಖಳಾಗಿ ಭೂದೇವಿಯ ಮಡಿಲನ್ನು ಸೇರುವುದು ಹೆಣ್ಣಿನ ತಣ್ಣನೆಯ ಪ್ರತಿರೋಧವೇ ಆಗಿದೆ.

ರಾಮಾವತಾರದ ಅಂತ್ಯ ಜೈನ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ವೈದೀಕ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಗಿಂತ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ರಾಮನ ಪರಿನಿರ್ವಾಣ ಪ್ರಸಂಗ ತೀವ್ರವಾಗಿ ತಟ್ಟುತ್ತದೆ. ಸೀತೆ, ಹನುಮಂತ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಕ್ಕಳು ಎಲ್ಲರೂ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ತೆರಳಿದರೂ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಮೇಲಿನ ವ್ಯಾಮೋಹದಿಂದ ರಾಮ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಉಪೇಕ್ಷಿಸುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನು ನಿರ್ಜೀವವಾದನೆಂಬ ವದಂತಿನಂಬಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಆಘಾತಗೊಂಡು ಸತ್ತುದರಿಂದ ರಾಮನು ಕಂಗಾಲಾಗುತ್ತಾನೆ. ಶೋಕಾತಿರೇಕದಿಂದ ಭ್ರಾಂತನಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ದೇಹವನ್ನು ಅಂತ್ಯಸಂಸ್ಕಾರಕ್ಕೂ ಬಿಡದೆ ಹೊತ್ತುಕೊಂಡು ಆರು ತಿಂಗಳು ಹುಚ್ಚನಂತೆ ತಿರುಗಾಡುತ್ತಾನೆ. ನಂತರ ಬ್ರಾಂತಿಕಳೆದು ತಪಸ್ಸಿಗೆ ತೆರಳುತ್ತಾನೆ. ಚಿತ್ತಭ್ರಾಂತ ರಾಮನ ಈ ಚಿತ್ರಣ ಮನಮುಟ್ಟುವಂತಿದೆ.

ಆದರೆ ಈ ವ್ಯಾಮೋಹ ಸೀತೆಯ ಬಗೆಗಿರಲಿಲ್ಲ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಧೀರ ರಾಮನಿಗಿಂತ ಇದು ತೀರ ಭಿನ್ನವಾದ ಚಿತ್ರಣ. (ನಾಗಚಂದ್ರ)

ಲವಕುಶರು ಬೆಳೆದು ದೊಡ್ಡವರಾದ ಮೇಲೆ ಅವರಿಗೆ ವಿವಾಹವನ್ನು ಜರುಗಿಸುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ "ಕುಲಗೋತ್ರ ತಿಳಿಯದ ಕುಶನಿಗೆ ಕುವರಿಯನ್ನೀಯಲು" ಪೃಥು ಎಂಬ ಅರಸನು ನಿರಾಕರಿಸುವ ಪ್ರಸಂಗವಿದೆ ಆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಲವಕುಶರು ಅವನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಮಾಡಿ ಸೋಲಿಸಿ ಅವನಮಗಳು ಕನಕಮಾಲೆಯನ್ನು ಕುಶ ವಿವಾಹವಾಗುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ಕಥೆಯ ಎಳೆಯಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಬೆಳೆದು ಶಸ್ತ್ರಾಸ್ತ್ರ ನಿಪುಣರಾದ ಲವಕುಶರು ನಾರದರಿಂದ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರಂತಾಗಿರೆಂದು ಆಶೀರ್ವಾದವನ್ನು ಪಡೆದ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಅವರಿಂದ ತಮ್ಮ ತಾಯಿ ಸೀತೆಯ ಹಾಗೂ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಕಥೆಯನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನು ತಮ್ಮ ತಂದೆ ಎಂಬುದು ಅವರಿಗೆ ಸಂತೋಷವನ್ನು ತರುವ ಬದಲು ಅವರು ತಮ್ಮ ತಾಯಿಗೆ ಒದಗಿದ ಕಷ್ಟಕ್ಕಾಗಿ ಮರುಗುತ್ತಾರೆ, ಮತ್ತು ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಕ್ರೋಧಗೊಂಡು ಸೈನ್ಯ ಸಮೇತರಾಗಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಹೊರಡುತ್ತಾರೆ ಎಂಬ ಕಥೆಯ ಎಳೆಯಲ್ಲಿಯೂ ಕಂಡು ಬರುವುದು ಗಂಡನಿಂದ ಪರಿತ್ಯಕ್ತಳಾದ ಹೆಣ್ಣು ಮತ್ತು ಅವಳ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕುರಿತಂತೆ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿರುವ ಕೀಳುಭಾವನೆ ಹಾಗೂ ಅಂತಹ ಅವಮಾನಕರವಾದ ಸ್ಥಿತಿಯು ತಿರಸ್ಕೃತ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಬಗೆಯ ಬಂಡಾಯ ಮನೋಭಾವವನ್ನೂ ಬೆಳೆಸುತ್ತಿತ್ತೆಂಬುದನ್ನು ಅಂತಹ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮನ್ನು ಸಾಬೀತು ಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ಅನಿವಾರ್ಯತೆ ಉಂಟಾಗುತ್ತಿತ್ತೆಂಬುದನ್ನು ಇವು ಧ್ವನಿಸುತ್ತವೆ.

ರಾಮನ ನಡೆಯನ್ನು ಕುರಿತಂತೆ ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಎದ್ದಿರುವ ಒಂದು ಅಸಮಾಧಾನ, ಪ್ರತಿರೋಧವನ್ನು ಗಂಭೀರವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಿ ಆ ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸುವ ಸಲುವಾಗಿ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಕವಿಗಳು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದ್ದಾರೆ. ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಮೂಗಿನ ನೇರಕ್ಕೆ ಪರಂಪರೆ, ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ನೆರಳಿನಡಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಪರವಾಗಿ ವಕಾಲತ್ತು ವಹಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಡಿ.ವಿ. ಜಿಯವರು ರಾಮನ ರಾಜಧರ್ಮ, ಕರ್ತವ್ಯ, ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವದ ನಿಷ್ಠೆಯನ್ನೇ ಎತ್ತಿಹಿಡಿದಿದ್ದಾರೆ. ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಅಂತ್ಯವನ್ನು ಸುಖಾಂತವಾಗಿ ಮಾಡಿ ರಾಮ ಸೀತೆಯರನ್ನು ಒಂದಾಗಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಜಾನಪದ ಕಾವ್ಯಗಳ ಪ್ರಭಾವಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ ರಚಿತವಾಗಿರುವ ಅನೇಕ ಕೃತಿಗಳು ಸಹ ಈ ಸನ್ನಿವೇಶದಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಚಿತ್ರಪಟದ ನಿಮಿತ್ತವಾಗಿ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಮೂಡಿದ ಅನುಮಾನಗಳು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕುರಿತ ಅಸಮಾಧಾನಗಳನ್ನು ಮುನ್ನೆಲೆಗೆ ತಂದಿವೆ. ಕಲಾವಿದೆಯಾದ ಕಿರಣಮಂಡಳೆಯು "ಪುರುಷರ ನಿಜರೂಪಂ ಬರೆವುದು ತಾಂ ಧರ್ಮವಲ್ತು ಪುಣ್ಯಾಂಗನೆಯರ್ ಬರವರುಳಿದವರ್ ಬರದಡೆ ಪುರುಷನ ಚಿತ್ತದೊಳ್ ತೋರ್ಪುದತಿ ವಿಪರೀತಮ್" ಎಂದು ತನ್ನ ಮೈದುನನ ಚಿತ್ರಬಿಡಿಸಲು ಒತ್ತಾಯಿಸಿದ ಗೆಳತಿಯರಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ.[42] ಆದರೆ ಸಖಿಯರ ಒತ್ತಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಮೈದುನನ ಚಿತ್ರಪಟ ಬಿಡಿಸಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ, ನಿದ್ರೆಯಲ್ಲಿ ಮೈದುನನ ಹೆಸರನ್ನು ಕನವರಿಸಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಅವಳ ಗಂಡ ಅನುಮಾನ ಪಡುತ್ತಾನೆ ಮತ್ತು ಕೋಪಗೊಂಡು ಪತ್ನಿಯನ್ನು ತ್ಯಜಿಸುತ್ತಾನೆಂಬ ಒಳಗಥೆಯೊಂದನ್ನು ಹೇಳಲಾಗಿದೆ. 'ಕಲೆಗಾಗಿ ಬರೆದದ್ದು ತಪ್ಪಿಲ್ಲ'ವೆಂದು ಅವಳ ಗೆಳತಿಯರು ಅವಳ ಗಂಡನೊಡನೆ ವಾದಿಸುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಈ ಕಥೆಯಂತೆ ಸೀತೆಯು ರಾವಣನ ಚಿತ್ರ ಬರೆದು ರಾಮನ ಸಂಶಯಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗಿ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಡುವ ಕಥೆಯನ್ನು ಪುಣ್ಯಾಸ್ರವದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದೆ. ಹೆಳವನ ಕಟ್ಟೆ ಗಿರಿಯಮ್ಮನ ಲವಕುಶ ಕಾಳಗ ಹಾಗೂ ಕವಿಯತ್ರಿ ಯಶೋಧೆಯ ಲವಕುಶರ ಕಥೆ ಮುಂತಾದುವುಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಚಿತ್ರಪಟರಾವಣನ ಸನ್ನಿವೇಶವೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಬರುತ್ತದೆ.

ಒಂದು ಜಾನಪದ ತ್ರಿಪದಿಯಂತೂ "ಬಾಳೆಯ ಕಡಿದಾರೆ ತೋಟ ಹಾಳಾಗುವುದೆ ಬಾಳೀಸಲಾರದೆ ಮಡದೀಯ ಬಿಟ್ಟಾರೆ ಬಾಳೆ ಹಣ್ಣೇನೆ ಕೊಳಿಯಾಕೆ" ಎಂದು ಸೀತೆಯ ಪರವಾದ ದಿಟ್ಟತನದ ಉತ್ತರವನ್ನು ನೀಡಿದೆ. ಹೆಣ್ಣು, ಕತ್ತರಿಸಿದರೂ ಮತ್ತೆ ಸುಳಿತೆಗೆದು ಬೆಳೆವ ಬಾಳೆಯೇ ಹೊರತು ಕೊಳೆತುಹೋಗುವ ಬಾಳೆಯ ಹಣ್ಣಲ್ಲವೆಂಬ ಈ ಮಾತು ಸೀತೆ ಸಾಯುವ ಕಡೆಗೆ ಯೋಚಿಸದೆ ಜೀವನ್ಮುಖಿಯಾಗಿ ಚಿಂತಿಸಬೇಕೆಂದು ಧೈರ್ಯತುಂಬಿದೆ. ಆ ಮೂಲಕ ಪಿತೃಪ್ರಧಾನ ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಪ್ರತಿರೋಧವನ್ನು ಒಡ್ಡಿದೆ.

ಆಧುನಿಕ ಕಾಲದ ಕನ್ನಡ ಕವಿಗಳು ಬರಹಗಾರರು ನಾಟಕಕಾರರೂ ಈ ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸ್ತ್ರೀ ಸಂವೇದನೆಯ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಕುವೆಂಪುರವರು ಸೀತೆಯಂತೆ ರಾಮನೂ ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶ ಮಾಡಿ ತನ್ನ ಶೌಚವನ್ನು ಸಾಬೀತು ಪಡಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ, ಲಕ್ಷ್ಮೀಶ ಸೀತೆ ರಾಮರನ್ನು ಒಟ್ಟಾಗಿಸುತ್ತಾನೆ, ಎಚ್.ಎಸ್. ಸಾವಿತ್ರಮ್ಮನವರು ಸೀತೆಯು ರಾಮನಿಗೆ ವಿಮುಖಳಾಗಿ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೊರಟು ಹೋಗುತ್ತಾಳೆಂದು ಚಿತ್ರಿಸಿ ಅವಳ ಮೌನ ಪ್ರತಿರೋಧವನ್ನು ಸೂಚಿಸುತ್ತರೆ. ಮಹಿಳಾ ಚಿಂತಕಿಯರು, ಸೀತೆಯ ಮೌನವನ್ನು ಖಂಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅನುಪಮನಿರಂಜನರವರು "ಸೀತೆ ನೀನೇಕೆ ತಲೆ ತಗ್ಗಿಸಿಯೇ ಇದ್ದೆ ಎಂತಹ ಕೆಟ್ಟ ಮಾದರಿ ಕೊಟ್ಟೆ ನಮಗೆ?" ಎಂದು ಅಸಮಧಾನವನ್ನು ಹೊರಹಾಕಿದ್ದಾರೆ.

ವೈದೀಕ ವಾಙ್ಮಯದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣುವಿನ ದಶಾವತಾರಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾವತಾರವೂ ಒಂದೆಂದು ನಂಬಲಾಗಿದೆ. ರಾಮನು ಅವತಾರಪುರುಷ, ಸಕಲಗುಣ ಸಂಪನ್ನನಾದ ಮಾನವರೂಪಿ ದೈವವೇ ಆಗಿದ್ದಾನೆ. ಸ್ವಾರ್ಥವಿಲ್ಲದ ಪ್ರಜಾವತ್ಸಲ ಅವನು. ಅವನದು ಆದರ್ಶ ರಾಜ್ಯಭಾರ. ಲೋಕೋದ್ಧಾರಕ್ಕಗಿಯೇ ಬಂದವನು. ರಾವಣ ನಿಗ್ರಹ ಅವನಗುರಿ. ಮಾನವನೊಬ್ಬನು ಭಗವದವತಾರನು ಆಗಬಹುದಾದ ದಿವ್ಯವಾದ, ಘನವಾದ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ವಿಕಸನಮಾಡಿಕೊಂಡು ಅವನ ಮೇಲ್ಮುಖ ಚಲನೆಗೆ ಮಾದರಿಯಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಬಗೆಯ ಪ್ರಯಾಣವನ್ನು ರಾಮ ಕೈಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಒಂದು ಸತ್ವ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ವಿದ್ಯಾರ್ಜನೆಗಾಗಿ ಗುರು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರೊಂದಿಗಿನ ಪಯಣವಾದರೆ ಮತ್ತೊಂದು ತಾನು ಗಳಿಸಿಕೊಂಡ ಜ್ಞಾನ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯ, ಸಜ್ಜನಿಕೆಗಳ ವಿನಿಯೋಗಕ್ಕಾಗಿ ಕೈಗೊಂಡ ಪಯಣ. ಹೀಗೆ ಗಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಮತ್ತು ವಿನಿಯೋಗಿಸುವ ತತ್ವಗಳನ್ನು, ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಮನುಷ್ಯನೂ ಕೈಗೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ಆಂತರಿಕ ಮತ್ತು ಬಾಹ್ಯ ಪಯಣಗಳೆರಡನ್ನೂ ವೈದೀಕ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ರಾಮಾಯಣಗಳು ತಿಳಿಸಿಕೊಟ್ಟಿದೆ.

**ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡದ ರಾಮಾಯಣಗಳು ವಿವಿಧ ಬಗೆಯ ಮಾನವ ಸಂಬಂಧಗಳ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಯನ್ನು ಅವುಗಳಲ್ಲಿನ ಸಣ್ಣ ಏರುಪೇರುಗಳಿಂದ ಬಂದೊದಗಬಹುದಾದ, ಅನುಮಾನಗಳು, ಅನಾಹುತಗಳನ್ನೂ ಎಳೆಎಳೆಯಾಗಿ ಬಿಡಿಸಿಟ್ಟಿವೆ. ಇಲ್ಲಿ ಹಲವು ಬಗೆಯ ಸೋದರರು ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ರಾಮ-ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಭರತ-ಶತೃಜ್ಞರು; ವಾಲಿ-ಸುಗ್ರೀವರು,**

**ರಾವಣ–ಕುಂಭಕರ್ಣ, ರಾವಣ–ವಿಭೀಷಣರು ; ಎಷ್ಟು ಬಗೆಯ ತಾಯಂದಿರು! ಎಷ್ಟು ಬಗೆಯ ದಂಪತಿಗಳು! ಒಂದಂದರಲ್ಲೂ ನಮಗೊಂದು ಶಿಕ್ಷಣ. ನೈತಿಕ ನಡಾವಳಿಗಳ ಪಾಠವಿದೆ.**

ಧರ್ಮವಲ್ಲದ ಕಾಮ ನಿಷಿದ್ಧವೆಂಬ ವಿಚಾರವನ್ನು ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವು ಘಟನೆಗಳಲ್ಲಿ ನಿರೂಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಅಹಲ್ಯಾ ವೃತ್ತಾಂತ, ಶೂರ್ಪನಖಿಯ ವೃತ್ತಾಂತ, ರುಮೆ ತಾರೆಯರ ಪ್ರಸಂಗಗಳು, ಸೀತಾಪಹರಣ, ಉತ್ತರ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಬರುವ ವೇದವತೀ ಪ್ರಸಂಗ, ಉಪರಂಭೆಯ ಪ್ರಸಂಗ, ಅರಜೆಯ ಪ್ರಸಂಗ ಇವುಗಳ ಮೂಲಕ **ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರ ಸಮಾಗಮವು ಧರ್ಮವಲ್ಲದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯ ಹೊರಟರೆ, ನೈತಿಕ ನಿಯಮವನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿದರೆ ಉಂಟಾಗುವ ಅಮಂಗಲವನ್ನು ಘೋರ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಮನಮುಟ್ಟಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿರುವಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಶೀಲ ಹಾಗೂ ಶೌಚವು ಸ್ತ್ರೀಪುರುಷರಿಬ್ಬರಲ್ಲೂ ಇರಬೇಕಾದ ಮುಖ್ಯ ಗುಣಗಳು. ಏಕಪತ್ನೀವ್ರತಸ್ಥ, ಬಹುಪತೀಶ, ಪರನಾರೀಸೋದರ, ಸ್ತ್ರೀವಿಮುಖತೆ, ಸ್ತ್ರೀಲೋಲುಪತೆ, ಪರಪತ್ನೀ ಪೀಡಕ, ಸಹಧರ್ಮಿಣಿ, ಪತಿವ್ರತೆ, ಅಗ್ನಿ ದಿವ್ಯಗಳು, ಶಾಪಗಳು** ಇವುಗಳು ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಾಗ **ಈ ಶೀಲೋನ್ನತಿ ಹಾಗೂ ದಾಂಪತ್ಯ ನಿಷ್ಠೆಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾಹಂದರವು ಹೆಚ್ಚು ಒತ್ತುನೀಡಿದೆ ಎನಿಸುತ್ತದೆ.** ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮನುಷ್ಯ ಧರ್ಮಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ನಡೆದು ಅರ್ಥ, ಕಾಮ, ಮೋಕ್ಷಗಳನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕಾದ ಅವಶ್ಯಕತೆಯನ್ನು ರಾಮಾಯಣವು ಎತ್ತಿಹಿಡಿದಿದೆ.

* * *

**ಟಿಪ್ಪಣಿಗಳು**

1. ಡಾ. ಎಚ್. ಸೀತಾರಾಮ ಆಚಾರ್, ಕುಮಾರ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ, ಪುಟ 90.
2. ಡಾ. ಎಸ್.ವಿ. ಪ್ರಭಾವತಿ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳು ಒಂದು ತೌಲನಿಕ ಅಧ್ಯಯನ ಪುಟ 31.
3. ಥೈಲೆಂಡಿನ ರಾಮಕೀನ್ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಪ್ರೊ. ಸತ್ಯವ್ರತಶಾಸ್ತ್ರಿ (ಸಂಸ್ಕೃತಕ್ಕೆ) ಹಾಗೂ ರಂಗನಾಥ್ ಎಸ್. ಅವರು 2013ರಲ್ಲಿ ಅನುವಾದ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. 'ರಾಮಕಿನ್ ಕತೆ'ಯ ಬೇರೆಬೇರೆ ಪಾಠಾಂತರಗಳಿಗೂ ನಮ್ಮ ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣಗಳಿಗೂ ಹೋಲಿಕೆಗಳಿವೆ
4. ಜಿ.ಶಂ. ಪ. ದಕ್ಷಿಣ ಕರ್ನಾಟಕದ ಜನಪದ ಕಾವ್ಯಪ್ರಕಾರಗಳು, ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಮೈಸೂರು. ವಿ.ವಿ. ನಿಲಯ ಮೈಸೂರು 1979.
5. ಡಾ. ಎಸ್.ವಿ. ಪ್ರಭಾವತಿ ರಾಮಾಯಣ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳು ಒಂದು ತೌಲನಿಕ ಅಧ್ಯಯನ, ಕ್ರಿ.ಶ. 2005.
6. ಸಂಪಾದಕರು ಡಾ. ಎಸ್.ಡಿ. ಶೆಟ್ಟಿ, ಡಾ. ಎಸ್.ಆರ್. ವಿಘ್ನರಾಜಶ್ರೀ ಮಂಜುನಾಥೇಶ್ವರ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಸಂಶೋಧನ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾನ, ಧರ್ಮಸ್ಥಳ.
7. ಕರ್ನಾಟಕ ಕವಿಚರಿತೆ ಭಾಗ 1
8. ರಾಮವಿಜಯ ಕಾವ್ಯಂ, ದೇವಪ್ಪ ಕವಿ (ಸಂ) ಕೇಶವಭಟ್ಟ, ಭಾರತೀಯ ಜ್ಞಾನಪೀಠ ಪ್ರಕಾಶನ, ದೆಹಲಿ.
9. ಸಮಗ್ರ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಚರಿತ್ರೆ–ಪ್ರಸಾರಾಂಗ. ಬೆಂ. ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ.
10. ಚಂದ್ರಸಾಗರವರ್ಣಿ ವಿರಚಿತ ಶ್ರೀರಾಮಾಯಣ, ಪಕಟಣೆ ಶ್ರೀ ಪಾಯಸಾಗರ ಸ್ವಾಮಿಗಳು. 1936
11. ಹಂಪಾನಾಗರಾಜಯ್ಯ, ಚಂದ್ರಸಾಗರವರ್ಣಿ, ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಷತ್ಪತ್ರಿಕೆ ಸಂ. 58 ಸಂ. 3 ಡಿಸೆಂಬರ 1973.
12. ಎನ್. ಬಸವಾರಾಧ್ಯ, ತೊರವೆ ರಾಮಾಯಣದ ಮುನ್ನುಡಿ
13. ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್, ಕವಿಚರಿತೆ. ಸಂ.
14. ಅ.ರಾ. ಮಿತ್ರ, ಶ್ರೀ ರಾಮ ಸಂಭವ–ತೊರವೆ ರಾಮಾಯಣ, (ಸಂ). ಡಾ.ಜಿ. ವೆಂಕಟಸುಬ್ಬಯ್ಯ
15. ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತ ರಾಮಾಯಣ ಮತಿಘಟ್ಟ ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ ; ಹರಿದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮೀಕ್ಷೆ (ಸಂ)ಜಿ. ವರದರಾಜರಾವ್
16. ಡಾ. ಎಸ್.ವಿ. ಪ್ರಭಾವತಿ, ಪೂರ್ವೋಕ್ತ
17. ಅನಂತಪದ್ಮನಾಭರಾವ್ (ಸಂಗ್ರಹ) ಪ್ರಬುದ್ಧಕರ್ನಾಟಕ, 53–4, ಮೈಸೂರು ವಿ.ವಿ. ನಿಲಯ 1972.
18. ಶ್ರೀ ರಾಮಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ–ಮುದ್ದಣ ಪ್ರಶಸ್ತಿಗ್ರಂಥ, ಪ್ರಕಟಣೆ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕುಟೀರ
19. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಿಷತ್ ಪತ್ರಿಕೆ ಸಂಪುಟ 58 ಸಂಚಿಕೆ 2.

20. ಡಾ. ಎಸ್.ವಿ. ಪ್ರಭಾವತಿ, ಪೂರ್ವೋಕ್ತ.

21. ಬಿ. ರಾಜಶೇಖರಪ್ಪ. ಇತಿಹಾಸ ಕಥನ ಪುಟ 183.

22. ರಾವಳೇಶ್ವರ ಆರಾಧನಾ ಪಂಥ : ಒಂದು ಚಿಂತನೆ–ಡಾ. ಎನ್.ಆರ್. ಲಲಿತಾಂಬ; ರಾವಳೇಶ್ವರ ಸಂಬಂಧಿತ ಆಚರಣೆ, ಆರಾಧನೆ, ನಂಬಿಕೆಗಳು, ಹರೀಶ ಎಂ.ಎ. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಿಷತ್ಪತ್ರಿಕೆ ಸಂ. 95. ಸಂಚಿಕೆ 02, 2017.

23. ಗೊಂಡರ ರಾಮಾಯಣ., ಬುಡಕಟ್ಟು ರಾಮಾಯಣ (ಸಂ) ಹಿ.ಚಿ. ಬೋರಲಿಂಯ್ಯ.. ಕನ್ನಡ. ವಿ.ವಿ. ಹಂಪಿ.

24. ಜಾನಪದ ರಾಮಾಯಣ (ಸಂ.) ರಾ. ಗೌ. ಪಿ.ಕೆ. ರಾಜಶೇಖರ, ಎನ್. ಬಸವಯ್ಯ, ಕನ್ನಡ ಅಧ್ಯಯನ ಸಂಸ್ಥೆ.

25. ಕನ್ನಡ ಸೇವಾ ಸಂಘ, ಅಮ್ಮೆಂಬಳ.

26. 'ಮುಳಿಯ ತಿಮ್ಮಪ್ಪಯ್ಯನವರ ಕೃತಿಗಳ ಛಂದಸ್ಸು ಮತ್ತು ಶೈಲಿ', ಬೇರು ಕಾಂಡ ಚಿಗುರು ಪುಟ–194.

27. ಹಾ.ಮಾ. ನಾಯಕ – ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ–ಪುಟ. 338.

28. ಜ್ಞಾನಗಂಗ ಪುಸ್ತಕ ಮಳಿಗೆ ಪಾದೇಕಲ್ಲು ವಿಷ್ಣು ಭಟ್ಟರ ಮುನ್ನುಡಿಯೊಂದಿಗೆ 1960.

29. ಮೊದಲ ಪ್ರಕಟಣೆ 1980 ಮತ್ತು 2011 ಮರು ಮುದ್ರಣಗೊಂಡಿದೆ.

30. ಉದಯ ಪ್ರಕಾಶನ ಬೆಂಗಳೂರು. (2007)

31. ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣ ಮಹಾಭಾರತಾದಿ ಪ್ರಕಟನ ಸಮಿತಿ ಬೆಂ. (ಪ್ರ.ಸಂ.) ವಿದ್ವಾನ್ ಎನ್. ರಂಗನಾಥಶರ್ಮ, 1967.)

32. ರವಿಷೇಣ ರಾಮಾಯಣ, ಶಾಂತಿ ಸೇವಾಸದನ, ಸೇಡಬಾಳ 1968.

33. ಪ್ರಕಟಣೆ, ವಿಜಯಲಕ್ಷ್ಮೀ ಮುದ್ರಾಕ್ಷರ ಶಾಲೆ, ಬೆಂ. ಕ್ರಿ.ಶ. 1896–1897.

34. 'ತೊರವೆರಾಮಾಯಣ ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ' ಎಸ್.ಎಸ್. ಬ್ಯಾತನಾಳ; 'ಕನ್ನಡ ರಾಮಾಯಣಗಳು' ಟಿ.ವಿ. ವೆಂಕಟಾಚಲಶಾಸ್ತ್ರಿ.

35. ಡಾ. ವಿಜಯಾದಬ್ಬೆ–ನಿಲ್ಲನಿಲ್ಲೆಲೆ ನೋಟ, ಅಂಕಣಬರಹ ಆಂದೋಲನ ಪತ್ರಿಕೆ 1998.

36. ಹೆಚ್.ಡಿ. ಸಂಕಾಲಿಯ 'ಇತಿಹಾಸದ ಕಣ್ಣಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ', ನವಕರ್ನಾಟಕ ಪ್ರಕಾಶನ 1947.

37. ಪುಟಗಳು 287, ಚಾರುಮತಿ ಪ್ರಕಾಶನ, 2010.

38. ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ, ಹುಬ್ಬಳ್ಳಿ – 2004.

39. ಪುಟಗಳು 208, ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಕನ್ನಡ ವಿ.ವಿ. ಹಂಪಿ–2008.

40. ವೈಷ್ಣವಿ ಪ್ರಕಾಶನ–2015, ಪುಟ 216.

41. ಮೈಸೂರು ಕುವೆಂಪುರವರ 'ರಾಮಾಯಣ ದರ್ಶನಂ' ಕುರಿತು ಲೆಕ್ಕವಿಲ್ಲದಷ್ಟು ವಿಮರ್ಶೆಗಳು ಬಂದಿವೆ.

42. ಪುಣ್ಯಾಸ್ರವ 7ನೇ ಅಧಿಕಾರ–30ನೇ ಪದ್ಯ.

❑

Message of Ramay
National Conference - July 6 - 8, 2018

*Presentation of Music based on Ramayana*

# descriptions of lord ramachandra in chaitanya charitamrita

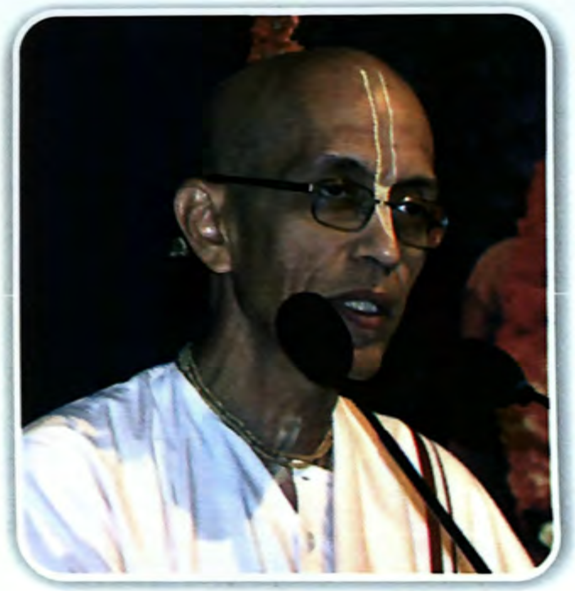

**Shri Stoka Krishna Dasa, ISKCON**

The Chaitanya Charitamrita describes that the Absolute truth can be understood in three aspects namely Brahman, Paramatma and Bhagavan. Of these three aspects, realisation of the Bhagavan aspect is complete realisation of the Absolute truth in all the three features of sat, chit and ananda.

## Who is Lord Ramachandra?

Lord Ramachandra is the Supreme Personality of Godhead. He is the Absolute truth*Bhagavän* who is full in six opulences. The *Viñëu Puräëa* gives a definition of *Bhagavän.*

***aiçvaryasya samagrasya***
***véryasya yaçasaù çriyaù***
***jïäna-vairägyayoç caiva***
***saëëäà bhaga itiìgana***
***(Viñëu Puräëa** 6.5.47)*

*Bhagavän, the Supreme Personality of Godhead, is thus defined as one who is full in six opulences—who has full strength, fame, wealth, knowledge, beauty, and renunciation.*

The Chaitanya Charitamrita describes that the Absolute truth can be understood in three aspects namely Brahman, Paramatma and Bhagavan. Of these three aspects, realisation of the Bhagavan aspect is complete realisation of the Absolute truth in all the three features of sat, chit and ananda. The following verse from the Srimad Bhagavatam describes the three aspects of the Absolute truth:

***vadanti tat tattva-vidas***
***tattvaà yaj jïänam advayam***
***brahmeti paramätmeti***
***bhagavän iti çabdyate***

*"Learned transcendentalists who know the Absolute Truth call this nondual substance Brahman, Paramätmä or Bhagavän." (Srimad Bhagavatam 1.2.11)*

***yad advaitaà brahmopaniñadi tad apy asya tanu-bhä***
***ya ätmäntar-yämé puruña iti so 'syäàça-vibhavaù***
***ñaò-aiçvaryaiù pürëo ya iha bhagavän sa svayam ayaà***
***na caitanyät krñëäj jagati para-tattvaà param iha***

*What the Upaniñads describe as the impersonal Brahman is but the effulgence of His body, and the Lord known as the Supersoul is but His localized plenary portion. Lord Caitanya is the Supreme Personality of Godhead, Kåñëa Himself, full with six opulences. He is the Absolute Truth, and no other truth is greater than or equal to Him. (CC Adi 1.3)*

The compilers of the Upaniñads speak very highly of the impersonal Brahman. The Upaniñads, which are considered the most elevated portion of the Vedic literatures, are meant for persons who desire to get free from material association and who therefore approach a bona fide spiritual master for enlightenment. The prefix upa- indicates that one must receive knowledge about the Absolute Truth from a spiritual master. One who has faith in his spiritual master actually receives transcendental instruction, and as his attachment for material life slackens, he is able to advance on the spiritual path. Knowledge of the transcendental science of the Upaniñads can free one from the entanglement of existence in the material world, and when thus liberated, one can be elevated to the spiritual kingdom of the Supreme Personality of Godhead by advancement in spiritual life.

The beginning of spiritual enlightenment is realization of impersonal Brahman. Such realization is effected by gradual negation of material variegatedness. Impersonal Brahman realization is the partial, distant experience of the Absolute Truth that one achieves through the rational approach. It is compared to one's seeing a hill from a distance and taking it to be a smoky cloud. A hill is not a smoky cloud, but it appears to be one from a distance because of our imperfect vision. In imperfect or smoky realization of the Absolute Truth, spiritual variegatedness is conspicuous by its absence. This experience is therefore called advaita-väda, or realization of the oneness of the Absolute.

The impersonal glowing effulgence of Brahman consists only of the personal bodily rays of the Supreme Godhead, Çré Kåñëa. Since Çré Gaurasundara, or Lord Çré Caitanya Mahäprabhu, is identical with Çré Kåñëa Himself, the Brahman effulgence consists of the rays of His transcendental body.

Similarly, the Supersoul, which is called the Paramätmä, is a plenary representation of Caitanya Mahäprabhu. The antar-yämé, the Supersoul in everyone's heart, is the controller of all living entities. This is confirmed in the Bhagavad-gétä (15.15), wherein Lord Kåñëa says, sarvasya cähaà hådi sanniviñöaù: “I am situated in everyone's heart.” The Bhagavad-gétä (5.29) also states, bhoktäraà yajïa-tapasäà sarva-loka-maheçvaram, indicating that the Supreme Lord, acting in His expansion as the Supersoul, is the proprietor of everything. Similarly, the Brahma-saàhitä (5.35) states, aëòäntara-stha-paramäëu-cayäntara-stham. The Lord is present everywhere, within the heart of every living entity and within each and every atom as well. Thus by this Supersoul feature the Lord is all-pervading.

Furthermore, Lord Caitanya is also the master of all wealth, strength, fame, beauty, knowledge and renunciation because He is Çré Kåñëa Himself. He is described as pürëa, or complete. In the feature of Lord Caitanya, the Lord is an ideal renouncer, just as Çré Räma was an ideal king. Lord Caitanya accepted the order of sannyäsa and exemplified exceedingly wonderful principles in His own life. No one can compare to Him in the order of sannyäsa. Although in Kali-yuga acceptance of the sannyäsa order is generally forbidden, Lord Caitanya accepted it because He is complete in renunciation. Others cannot imitate Him but can only follow in His footsteps as far as possible. Those who are unfit for this order of life are strictly forbidden by the injunctions of the çästras to accept it. Lord Caitanya, however, is complete in renunciation as well as all other opulences. He is therefore the highest principle of the Absolute Truth.

By an analytical study of the truth of Lord Caitanya, one will find that He is not different from the Supreme Personality of Godhead Kåñëa; no one is greater than or even equal to Him. In the Bhagavad-gétä (7.7) Lord Kåñëa says to Arjuna, mattaù parataraà nänyat kiïcid asti dhanaïjaya: “O conqueror of wealth [Arjuna], there is no truth superior to Me.” Thus it is here confirmed that there is no truth higher than Lord Çré Kåñëa Caitanya.

The impersonal Brahman is the goal of those who cultivate the study of books of transcendental knowledge, and the Super soul is the goal of those who perform the yoga practices. One who knows the Supreme Personality of Godhead surpasses realization of both Brahman and Paramätmä because Bhagavän is the ultimate platform of absolute knowledge.

The Personality of Godhead is the complete form of sac-cid-änanda (full life, knowledge and bliss). By realization of the sat portion of the Complete Whole (unlimited existence), one realizes the impersonal Brahman aspect of the Lord. By realization of the cit portion of the Complete Whole (unlimited knowledge), one can realize the localized aspect of the Lord, the Paramätmä. But neither of these partial realizations of the Complete Whole can help one realize änanda, or complete bliss. Without such realization of änanda, knowledge of the Absolute Truth is incomplete.

This verse of the Caitanya-caritämåta by Kåñëadäsa Kaviräja Gosvämé is confirmed by a parallel statement in the Tattva-sandarbha, by Çréla Jéva Gosvämé. In the Eighth Part of the Tattva-sandarbha it is said that the Absolute Truth is sometimes approached as impersonal Brahman, which, although spiritual, is only a partial representation of the Absolute Truth. Näräyaëa, the predominating Deity in Vaikuëöha, is to be known as an expansion of Çré Kåñëa, but Çré Kåñëa is the Supreme Absolute Truth, the object of the transcendental love of all living entities.

Brahman is the impersonal aspect of the Absolute truth realised as the all pervading spiritual effulgence. This is a partial realisation of the Absolute truth, since in this feature one can realise only the sat feature of the Absolute truth. Paramatma is the localised aspect of the Absolute truth realised as the Supersoul present in the heart of all living beings. This is also a partial realisation of the Absolute truth since in this feature one can realise only the sat and cit features of the Absolute truth. Bhagavan is the personal aspect of the Absolute truth realised as the Supreme Personality of Godhead. This is complete realisation of the Absolute truth in all the three features of sat, cit and ananda.

The Brahma samhita describes the Absolute truth in the following way:

***éçvaraù paramaù kåñëaù***
***sac-cid-änanda-vigrahaù***
***anädir ädir govindaù***
***sarva-käraëa-käraëam***

*"Kåñëa who is known as Govinda is the Supreme Godhead. He has an eternal blissful spiritual body. He is the origin of all. He has no other origin and He is the prime cause of all causes." (Brahma Samhita 5.1)*

In the ultimate issue the Absolute truth is sat-cit-ananda vigraha or the transcendental form of sat-cit-ananda, the Personality of Godhead Sri Krishna. Citing the Srimad Bhagavatam, it is explained in the Chaitanya Charitamrita that the Supreme Lord Sri Krishna incarnates in the material world in many different spiritual forms. The form of Lord Ramachandra is one of the incarnations of the Supreme Absolute truth Personality of Godhead.

## Sri Chaitanya Mahaprabhu formerly incarnated as Sri Ramachandra

Once Sri Chaitanya Mahaprabhu displayed His six-armed form to Nityananda Prabhu in which He showed that He had incarnated as Lord Ramachandra in Treta yuga and Lord Krishna in Dvapara yuga and now in Kali yuga He has incarnated as Lord Chaitanya.In the Chaitanya Charitamrita Adi Lilaverse 17.12 it is said:

***tabe nityänanda-svarüpera ägamana***
***prabhuke miliyä päila ñaò-bhuja-darçana***

*"After this function at the house of Çréväsa Öhäkura, Nityänanda Prabhu appeared, and when He met with Lord Chaitanya He got the opportunity to see Him in His six-armed form."*

The form of *Ñaò-bhuja*, the six-armed Lord Chaitanya, is a representation of three incarnations. The form of Çré Rämacandra is symbolized by a bow in one hand and an arrow in another, the form of Lord Çré Kåñëa is symbolized by a stick and a flute like those generally held by a cowherd boy, and Lord Chaitanya Mahäprabhu is symbolized by a sannyäsa-daëòa and a kamaëòalu, or waterpot.

## Sri Chaitanya Mahaprabhu reveals the truth about Sitadevi

In the Chaitanya Charitamrita there is a description of Sri Chaitanya Mahaprabhu's visit to Madurai, during which he met a brahmana devotee of Lord Ramachandra and revealed the truth about Sitadevi to him.

When Çré Chaitanya Mahäprabhu arrived at southern Mathurä (Madurai) from Kämakoñöhé, He met a brähmaëa.The brähmaëa who met Çré Chaitanya Mahäprabhu invited the Lord to his home. This brähmaëa was a great devotee and an authority on Lord Çré Rämacandra. He was always detached from material activities.After bathing in the river Kåtamälä, Çré Chaitanya Mahäprabhu went to the brähmaëa's house to take lunch, but He saw that the food was unprepared because the brähmaëa had not cooked it.Seeing this, Çré Chaitanya Mahäprabhu said, "My dear sir, please tell Me why you have not cooked. It is already noon."The brähmaëa replied, "My dear Lord, we are living in the forest. For the time being we cannot get all the ingredients for cooking.When Lakñmaëa brings all the vegetables, fruits and roots from the forest, Sétä will do the necessary cooking."Çré Chaitanya Mahäprabhu was very satisfied to hear about the brähmaëa's method of worship. Finally, the brähmaëa hastily made arrangements for cooking.Çré Chaitanya Mahäprabhu took His lunch at about three o'clock, but the brähmaëa, being very sorrowful, fasted.

While the brähmaëa was fasting, Çré Chaitanya Mahäprabhu asked him, "Why are you fasting? Why are you so unhappy? Why are you so worried?"The brähmaëa replied, "I have no reason to live. I shall give up my life by entering either fire or water.My dear Sir, mother Sétä is the mother of the universe and the supreme goddess of fortune. She has been touched by the demon Rävaëa, and I am troubled upon hearing this news.Sir, due to my unhappiness I cannot continue living. Although my body is burning, my life is not leaving."Çré Chaitanya Mahäprabhu replied, "Please do not think this way any longer. You are a learned paëòita. Why don't you consider the case?Sétädevé, the dearmost wife of the Supreme Lord Rämacandra, certainly has a spiritual form full of bliss. No one can see her with material eyes, for no materialist has such power.To say nothing of touching mother Sétä, a person with material senses cannot even see her. When Rävaëa kidnapped her, he kidnapped only her material, illusory form.As soon as Rävaëa arrived before Sétä, she disappeared. Then just to cheat Rävaëa she sent an illusory, material form.Spiritual substance is never within the jurisdiction of the material conception. This is always the verdict of the Vedas and Puräëas."

Çré Chaitanya Mahäprabhu then assured the brähmaëa, "Have faith in My words and do not burden your mind any longer with this misconception." Although the brähmaëa was fasting, he had faith in the words of Çré Chaitanya Mahäprabhu and accepted food. In this way his life was saved.After thus assuring the brähmaëa, Çré Chaitanya Mahäprabhu proceeded further into southern India and finally arrived at Setubandha [Rämeçvara], where He took His bath at the place called Dhanus-tértha. From there He visited the Rämeçvara temple and then took rest.

There, among the brähmaëas, Çré Chaitanya Mahäprabhu listened to the Kürma Puräëa, wherein is mentioned the chaste woman's narration. "Çrématé Sétädevé is the mother of the three worlds and the wife of Lord Rämacandra. Among chaste women she is supreme, and she is the daughter of King Janaka.When Rävaëa came to kidnap mother Sétä and she saw him, she took shelter of the fire-god, Agni. The fire-god covered the body of mother Sétä, and in this way she was protected from the hands of Rävaëa.The fire-god, Agni, took away the real Sétä and brought her to the place of Pärvaté, goddess Durgä. An illusory form of mother Sétä was then delivered to Rävaëa, and in this way Rävaëa was cheated.After Rävaëa was killed by Lord Rämacandra, Sétädevé was brought before the fire and tested.When the illusory Sétä was brought before the fire by Lord Rämacandra, the fire-god made the illusory form disappear and delivered the real Sétä to Lord Rämacandra."

When Çré Chaitanya Mahäprabhu heard this story, He was very pleased, and He remembered the words of Rämadäsa Vipra.Indeed, when Çré Chaitanya Mahäprabhu heard these conclusive statements from the Kürma Puräëa, He felt great happiness. After asking the brähmaëas' permission, He took possession of the manuscript leaves of the Kürma Puräëa.Since the Kürma Puräëa was very old, the manuscript was also very old. Çré Chaitanya Mahäprabhu took possession of the original leaves in order to have direct evidence. The text was copied onto new leaves in order that the Puräëa be replaced.Çré Chaitanya Mahäprabhu returned to southern Mathurä [Madurai] and delivered the original manuscript of the Kürma Puräëa to Rämadäsa Vipra.The two verses from the Kürma Puräëa which describe the above incident are as follows:

***sétayärädhito vahniç***
***chäyä-sétäm ajéjanat***
***täà jahära daça-grévaù***
***sétä vahni-puraà gatä***
***parékñä-samaye vahnià***
***chäyä-sétä viveça sä***
***vahniù sétäà samänéya***
***tat-purastäd anénayat***

*"When he was petitioned by mother Sétä, the fire-god, Agni, brought forth an illusory form of Sétä, and Rävaëa, who had ten heads, kidnapped the false Sétä. The original Sétä then went to the abode of the fire-god. When Lord Rämacandra tested the body of Sétä, it was the false, illusory Sétä that entered the fire. At that time the fire-god brought the original Sétä from his abode and delivered her to Lord Rämacandra."*

Rämadäsa Vipra was very pleased to receive the original leaf manuscript of the Kürma Puräëa, and he immediately fell down before the lotus feet of Çré Chaitanya Mahäprabhu and began to cry.He said, "Sir, You are Lord Rämacandra Himself and have come in the dress of a sannyäsé to give me audience.My dear Sir, You have delivered me from a very unhappy condition. I request that You take Your lunch at my place. Please accept this invitation.Due to my mental distress I could not give You a very nice lunch the other day. Now, by good fortune, You have come again to my home."Saying this, the brähmaëa very happily cooked food, and a first-class dinner was offered to Çré Chaitanya Mahäprabhu.

### Çré Chaitanya Mahäprabhu delivers seven palm trees

Within the Daëòakäraëya forest Çré Chaitanya Mahäprabhu then visited a place called Saptatäla. The seven palm trees there were very old, very bulky and very high.Upon seeing the seven palm trees, Çré Chaitanya Mahäprabhu embraced them. As a result, they all returned to Vaikuëöhaloka, the spiritual world.After the seven palm trees had departed for Vaikuëöha, everyone was astonished to see that they were gone. The people then began to say, "This sannyäsé called Çré Chaitanya Mahäprabhu must be an incarnation of Lord Rämacandra.Only Lord Rämacandra has the power to send seven palm trees to the spiritual Vaikuëöha planets."

### Muräri Gupta is an incarnation of Hanumän

There was a devotee of Sri Chaitanya by name Murari Gupta who used to chant the name of Lord Ramachandra. In the following description from Chaitanya Charitamrita, Çré Chaitanya Mahäprabhu reveals that Muräri Gupta is an incarnation of Hanumän.

Çré Chaitanya Mahäprabhu said, "Previously I induced Muräri Gupta again and again to be allured by Lord Kåñëa. I said to him, 'My dear Gupta, Lord Çré Kåñëa, Vrajendra-kumära, is the supreme sweetness.Kåñëa is the Supreme Personality of Godhead, the origin of all incarnations and the source of everything. He is pure transcendental love itself, and He is the reservoir of all pleasure.Kåñëa is the reservoir of all transcendental qualities. He is like a mine of gems. He is expert at everything, very intelligent and sober, and He is the summit of all transcendental humors.His character is very sweet, and His pastimes are melodious. He is expert in intelligence, and thus He enjoys all His pastimes and mellows.'I then requested Muräri Gupta, 'Worship Kåñëa and take shelter of Him. But for His service, nothing appeals to the mind.'In this way, he heard from Me again and again. By My influence, his mind was a little converted.

Muräri Gupta then replied, 'I am Your servant and Your order-carrier. I have no independent existence.'After this, Muräri Gupta went home and spent the whole night thinking how he would have to give up the association of Raghunätha, Lord Rämacandra. Thus, he was overwhelmed.Muräri Gupta then began to pray at the lotus feet of Lord Rämacandra. He prayed that death would come that night because it was not possible for him to give up the service of the lotus feet of Raghunätha.Thus, Muräri Gupta cried the entire night. There was no rest for his mind; therefore, he could not sleep but stayed awake the entire night.In the morning Muräri Gupta came to see Me. Catching hold of My feet and crying, he submitted an appeal.Muräri Gupta said, 'I have sold my head unto the lotus feet of Raghunätha. I cannot withdraw my head, for that would give me too much pain.It is not possible for me to give up the service of Raghunätha's lotus feet. At the same time, if I do not do so I shall break Your order. What can I do?'

In this way Muräri Gupta appealed to Me, saying, 'You are all-merciful, so kindly grant me this mercy: Let me die before You so that all my doubts will be finished.'Hearing this, I became very happy. I then raised Muräri Gupta and embraced him.I said to him, 'All glories to you, Muräri Gupta! Your method of worship is very firmly fixed—so much so that even upon My request your mind did not turn.The servitor must have love and affection for the lotus feet of the Lord exactly like this. Even if the Lord wants separation, a devotee cannot abandon the shelter of His lotus feet.Just to test your firm faith in your Lord, I requested you again and again to change your worship from Lord Rämacandra to Kåñëa. In this way, I congratulated Muräri Gupta, saying, 'Indeed, you are the incarnation of Hanumän. Consequently, you are the eternal servant of Lord Rämacandra. Why should you give up the worship of Lord Rämacandra and His lotus feet?'

### Lord Ramachandra's promise to His devotees

While describing the process of devotional service to Sanatana Gosvami, Sri Chaitanya Mahaprabhu says:

***'kåñëa, tomära haìa' yadi bale eka-bära***
***mäyä-bandha haite kåñëa täre kare pära***

*"One is immediately freed from the clutches of mäyä if he seriously and sincerely says, 'My dear Lord Kåñëa, although I have forgotten You for so many long years in the material world, today I am surrendering unto You. I am Your sincere and serious servant. Please engage me in Your service." (Chaitanya Charitamrita Madhya Lila 22.33)*

Then He cites the Ramayana to describe the promise made by Lord Ramachandra to His devotees:

***sakåd eva prapanno yas***
***taväsméti ca yäcate***
***abhayaà sarvadä tasmai***
***dadämy etad vrataà mama***

*"It is My vow that if one only once seriously surrenders unto Me, saying 'My dear Lord, from this day I am Yours,' and prays to Me for courage, I shall immediately award courage to that person, and he will always remain safe from that time on." (Chaitanya Charitamrita Madhya Lila 22.34)*

## Sanatana Gosvami describes his brother's devotion to Lord Ramachandra

"From the very beginning of his childhood, my younger brother Vallabha was a great devotee of Raghunätha [Lord Rämacandra], and he worshiped Him with great determination.He always chanted the holy name of Raghunätha and meditated upon Him. He continuously heard about the activities of the Lord from the Rämäyaëa and chanted about them. Rüpa Gosvami and I are his elder brothers. He stayed with us continuously.He heard Çrémad-Bhägavatam and talks about Lord Kåñëa with us, and both of us examined him. We said 'Dear Vallabha,please hear from us. Lord Kåñëa is supremely attractive. His beauty, sweetness and pastimes of love are without limit.Engage yourself in devotional service to Kåñëa with the two of us. We three brothers shall stay together and enjoy discussing the pastimes of Lord Kåñëa.'

"In this way we spoke to him again and again, and because of this persuasion and his respect for us, his mind turned somewhat toward our instructions.Vallabha replied, 'My dear brothers, how can I disobey your orders? Initiate me into the Kåñëa mantra so that I may perform devotional service to Lord Kåñëa.'After saying this, at night he began to think, 'How shall I give up the lotus feet of Lord Raghunätha?'He stayed up all night and cried. In the morning, he came to us and submitted the following plea.'I have sold my head at the lotus feet of Lord Rämacandra. I cannot take it away. That would be too painful for me.The two of you please be merciful to me and order me in such a way that life after life I may serve the lotus feet of Lord Raghunätha.It is impossible for me to give up the lotus feet of Lord Raghunätha. When I even think of giving them up, my heart breaks.'Upon hearing this, we each embraced him and encouraged him by saying, 'You are a great saintly devotee, for your determination in devotional service is fixed.' In this way we praised him.

❑

# ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸುಭಾಷಿತಗಳು

ವಿದ್ವಾನ್ ಜಿ.ಎಸ್. ನಟೇಶ್

**ರಾ**ಮಾಯಣದ ಪಾರಾಯಣದ ಜೊತೆಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು, ಸಮಾಜದ ಹಿತ ಹಾಗೂ ಆತ್ಮೋದ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ಬದುಕಿದರೆ ರಾಮಾಯಣದ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಾರ್ಥಕತೆ. ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಜೀವನೋಪಯೋಗೀ ಸಾವಿರಾರು ಸುಭಾಷಿತಗಳು ನಮ್ಮ ದೈನಂದಿನ ಬದುಕನ್ನು ಬೆಳಗಲು ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ. ಯದ್ಯಪಿ ಆಯಾ ಸಂದರ್ಭಗಳ ಪಾತ್ರಗಳ ಮಾತುಗಳು ಅವಾಗಿದ್ದರೂ, ನೇರವಾಗಿ ಓದುಗರಿಗೆ ಅನ್ವಯವಾಗುವಂತಿವೆ. ರಾಮಾಯಣದ ವಿವಿಧ ಕಾಂಡಗಳಿಂದ ಆಯ್ದ ಕೆಲವು ಸುಭಾಷಿತಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಬೆಳಕು ಚೆಲ್ಲಲು ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನ ನಡೆಸಲಾಗಿದೆ.

**"ವಿನಾವೇದಂ ವಿನಾಗೀತಂ ವಿನಾ ರಾಮಾಯಣೀ ಕಥಾಂ ।**
**ವಿನಾ ಕವಿಂ ಕಾಳಿದಾಸಂ ಭಾರತಂ ಭಾರತಂ ನಹಿ" ॥**

ವೇದಗಳು, ಭಗವದ್ಗೀತೆ, ರಾಮಾಯಣ, ಮಹಾಕವಿ ಕಾಳಿದಾಸ ಇಷ್ಟನ್ನು ಹೊರತುಪಡಿಸಿದರೆ ಭಾರತ ಶೂನ್ಯವೇ ಸರಿ. ಆದ್ದರಿಂದ ಭಾರತದ ನಿಜವಾದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಪತ್ತುಗಳೇ ಇವು. 'ರಾಮಾಯಣ' ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ರಾಮ ನಡೆದ ದಾರಿ. ಆದರ್ಶ ಸಮಾಜದ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ಅವನೇ ಪ್ರಧಾನ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ರಾಮಾಯಣವು ಒಂದು ಪ್ರೀತಿಕಾವ್ಯವೂ ಹೌದು, ನೀತಿ ಕಾವ್ಯವೂ ಹೌದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹಾಮುನಿಗಳು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಕರುಣರಸವನ್ನು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿದ್ದರೂ ಶೃಂಗಾರಾದಿ ಇತರ ರಸಗಳೂ ಅಲ್ಲಿ ಹಾಸುಹೊಕ್ಕಾಗಿವೆ. ಎಲ್ಲ ರಸಗಳನ್ನೂ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಲಯಗೊಳಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಶಾಂತರಸವೂ ಇದರಲ್ಲಿ ಅಂತರ್ವಾಹಿನಿಯಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಆದರ್ಶ ಪುರುಷಾರ್ಥಗಳಿವೆ, ತತ್ತ್ವದ ಉಪದೇಶವಿದೆ. ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿಗೆ ಮೂಲವಾದ ವೇದಗಳ ಪ್ರತಿರೂಪವೆಂದೂ ಇದನ್ನು ತಿಳಿಯಲಾಗಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣದ ಪಾರಾಯಣದ ಜೊತೆಗೆ ರಾಮಾಯಣದ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು, ಸಮಾಜದ ಹಿತ ಹಾಗೂ ಆತ್ಮೋದ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ಬದುಕಿದರೆ ರಾಮಾಯಣದ ಸಂಪೂರ್ಣ ಸಾರ್ಥಕತೆ. ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಜೀವನೋಪಯೋಗೀ ಸಾವಿರಾರು ಸುಭಾಷಿತಗಳು ನಮ್ಮ ದೈನಂದಿನ ಬದುಕನ್ನು ಬೆಳಗಲು ಸಹಾಯಕವಾಗಿದೆ. ಯದ್ಯಪಿ ಆಯಾ ಸಂದರ್ಭಗಳ ಪಾತ್ರಗಳ ಮಾತುಗಳು ಅವಾಗಿದ್ದರೂ, ನೇರವಾಗಿ ಓದುಗರಿಗೆ ಅನ್ವಯವಾಗುವಂತಿವೆ. ರಾಮಾಯಣದ ವಿವಿಧ ಕಾಂಡಗಳಿಂದ ಆಯ್ದ ಕೆಲವು ಸುಭಾಷಿತಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಬೆಳಕು ಚೆಲ್ಲಲು ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಯತ್ನ ನಡೆಸಲಾಗಿದೆ.

ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ಹಣದ ಅವಶ್ಯಕತೆಯನ್ನು ದೃಢಪಡಿಸುವ ರಾಮಾಯಣದ ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಈ ಶ್ಲೋಕ ಇಂದಿನ ಸಮಾಜಕ್ಕೆ ಹಿಡಿದ ಕನ್ನಡಿಯಾಗಿದೆ.

**ಅರ್ಥೇನ ಹಿ ವಿಯುಕ್ತಸ್ಯ ಪುರುಷಸ್ಯಾಲ್ಪ ತೇಜಸಃ ।**
**ವ್ಯುಚ್ಛಿದ್ಯಂತೇ ಕ್ರಿಯಾಃ ಸರ್ವಾ ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಕುಸರಿತೋಯಥಾ ॥**

ಮನುಷ್ಯನಿಗೆ ಧನ ಸಂಪತ್ತಿರಬೇಕು. ಇಲ್ಲವಾದರೆ ಪರಾಕ್ರಮವಾದರೂ ಇರಬೇಕು. ಅಲ್ಪಪರಾಕ್ರಮಿಯಾಗಿದ್ದು, ಧನಹೀನನೂ ಆಗಿದ್ದಲ್ಲಿ ಅವನು ಮಾಡಿದ ಕಾರ್ಯಗಳೆಲ್ಲವೂ ವ್ಯರ್ಥವಾಗುತ್ತವೆ. ಗ್ರೀಷ್ಮಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಾವಾಗಿಯೇ ಇಂಗಿ ಹೋಗುವ ಚಿಕ್ಕ ಹಳ್ಳಗಳಂತೆ. ನೀರಿನ ಸಂಗ್ರಹ ಹೆಚ್ಚಾಗಿದ್ದರೆ ಅವು ಅಷ್ಟು ಬೇಗ ಆರುವುದಿಲ್ಲ. ಇಲ್ಲವಾದರೆ ನೀರಿನ ಒರತೆಗಳಾದರೂ ಇರಬೇಕು. ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಪರಾಕ್ರಮ ಹಾಗೂ ಹಣ ಬದುಕಿಗೆ ಸದಾ ಇಂಬುಕೊಡುವಂಥವು.

ರಾಮಾಯಣದ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದ ಇನ್ನೊಂದು ಶ್ಲೋಕ ದುಷ್ಟರ ಸಹವಾಸ ಎಷ್ಟು ಅಪಾಯಕಾರಿ ಎಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ.

**ಅಕುರ್ವಂತೋಪಿ ಪಾಪಾನಿ ಶುಚಯಃ ಪಾಪ ಸಂಶ್ರಯಾತ್ ।**
**ಪರಪಾಪೈರ್ವಿನಶ್ಯಂತಿ ಮತ್ಸ್ಯಾ ನಗ ಹ್ರದೇಯಥಾ ॥**

ಈ ಮಾತನ್ನು ಮಾರೀಚ ರಾವಣನಿಗೆ ಉಪದೇಶ ಮಾಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರಿಕೆಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತಾ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ರಾವಣ ಸೀತಾಪಹರಣದಂತಹ ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಕೈಹಾಕುವುದರಿಂದ ಅವನ ಆಶ್ರಯವನ್ನು ಪಡೆದ ಸಜ್ಜನರೂ ನಾಶವಾಗುತ್ತಾರೆ ಎಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತಾ ಒಂದು ಸುಂದರ ಉದಾಹರಣೆಯನ್ನು ನೀಡುತ್ತಾನೆ. ಪರಿಶುದ್ಧ ಚಾರಿತ್ರ್ಯವುಳ್ಳವರಾದರೂ, ಪಾಪಕೃತ್ಯವನ್ನು ಮಾಡದಿದ್ದರೂ ಪಾಪಿಗಳ ಸಹವಾಸದಿಂದಾಗಿ ನಾಶ ಹೊಂದುತ್ತಾರೆ. ಸರ್ಪಗಳ ಸರೋವರವನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಿದ ಮೀನುಗಳು ಗರುಡನ ವೈರಿಗಳಾಗಿರದಿದ್ದರೂ ಆಶ್ರಯದಿಂದಾಗಿ ನಾಶ ಹೊಂದುತ್ತವೆ. ಗರುಡ ಸರ್ಪಗಳನ್ನು ತಿನ್ನುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಅವುಗಳ ಜೊತೆಗಿರುವ ಮೀನುಗಳನ್ನೂ ತಿಂದುಹಾಕುತ್ತದೆ. ದುಷ್ಟರ ಸಂಸರ್ಗ ಎಂದೂ ಒಳ್ಳೆಯದಲ್ಲ ಎಂಬ ನೀತಿಯನ್ನು ಈ ಪದ್ಯ ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ.

ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಕಾಂಡದ ಇನ್ನೊಂದು ಶ್ಲೋಕ ನೀಚವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ಯಾರೆಂಬುದನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ.

**ಅರ್ಥಿನಾಮುಪಪನ್ನಾನಾಂ ಪೂರ್ವಂ ಚಾಪ್ಯುಪಕಾರಿಣಾಂ ।**
**ಆಶಾಂ ಸಂಶ್ರುತ್ಯ ಯೋ ಹಂತಿ ಸಲೋಕೇ ಪುರುಷಾಧಮಃ ॥**

ಹಿಂದೆ ಉಪಕರಿಸಿದವರು ಹಾಗೂ ಸಹಾಯ ಬೇಡಿ ಬಂದವರಿಗೆ ಆಸೆ ತೋರಿಸಿ ಅವರನ್ನು ಯಾವನು ಕೊಲ್ಲುತ್ತಾನೋ ಅವನು ಅತ್ಯಂತ ನೀಚವ್ಯಕ್ತಿಯೇ ಸರಿ. ಉಪಕಾರಸ್ಮರಣೆ ಸಜ್ಜನರ ಸ್ವಭಾವ. ಅದಕ್ಕೆ ಬದಲಾಗಿ ಉಪಕೃತರನ್ನು ಆಸೆ ತೋರಿಸಿ ನಾಶ ಮಾಡುವುದು ಕೃತಘ್ನರ ಲಕ್ಷಣ.

**ನಾಗ್ನಿರ್ನಾನ್ಯಾನಿ ಶಸ್ತ್ರಾಣಿ ನನಃ ಪಾಶಾ ಭಯವಹಾಃ ॥**
**ಘೋರಾಃ ಸ್ವಾರ್ಥ ಪ್ರಯುಕ್ತಾಸ್ತು ಜ್ಞಾತಯೋ ಭಯಾವಹಾಃ॥**

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಕಾಡಾನೆಗಳು ಆಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಮಾತಿದು. ಅಗ್ನಿಯಾಗಲೀ, ಇತರೇ ಶಸ್ತ್ರಗಳಾಗಲೀ, ಪಾಶಗಳಾಗಲೀ ನಮಗೆ ಭಯವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಸ್ವಾರ್ಥದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಪಳಗಿಸಿದ ಆನೆಗಳಾದ ನಮ್ಮವರೇ ನಮಗೆ ಭಯಂಕರ ಶತ್ರುಗಳು. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಹೊರಗಿನ ಶತ್ರುಗಳನ್ನು ಎದುರಿಸಬಹುದು. ಆದರೆ, ನಮ್ಮವರೇ ಆಗಿದ್ದು, ಸ್ವಾರ್ಥಕ್ಕಾಗಿ ತಮ್ಮ ಹಿತ ಸಾಧನೆಗಾಗಿ ನಮಗೇ ವಂಚನೆ ಮಾಡುವವರನ್ನು ಎದುರಿಸುವುದು ಬಹಳ ಕಷ್ಟ. ನಯವಂಚಕರ ಗುಣಸ್ವಭಾವಗಳನ್ನು ಅರಿಯುವುದು ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯ. ಆದ್ದರಿಂದ ಶತ್ರುಗಳಿಗಿಂತ ನಮ್ಮ ಹಿತ ಶತ್ರುಗಳು ಬಹಳ ಅಪಾಯಕಾರಿಯಾಗಿರುತ್ತಾರೆ.

**ಮರಣಾಂತಾನಿ ವೈರಾಣಿ ನಿರ್ವೃತ್ತಂ ನಃ ಪ್ರಯೋಜನಂ ।**
**ಕ್ರಿಯತಾಮಸ್ಯ ಸಂಸ್ಕಾರೋ ಮಮಾಪ್ಯೇಷಯಥಾ ತವ ॥**

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಪ್ರಸಂಗವಿದು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಉದಾತ್ತತೆಯನ್ನು ಈ ಶ್ಲೋಕ ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ರಾವಣನು ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಮರಣ ಹೊಂದಿದಾಗ ಅವನ ಸಹೋದರನಾದ ವಿಭೀಷಣ, ತಾನು ಅಣ್ಣನ ದಹನ ಸಂಸ್ಕಾರಾದಿಗಳನ್ನು ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲ. ಕಾರಣ ಅವನು ನನ್ನ ಶತ್ರುವೇ ಸರಿ. ಏಕೆಂದರೆ ಸಜ್ಜನರಿಗೆ ವಿಹಿತವಲ್ಲದ ದುಷ್ಟಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಅವನು ಮಾಡಿದ್ದಾನೆ. ಈ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿದ ಶ್ರೀರಾಮ ಅವನಿಗೆ ತಿಳಿಹೇಳುವ ಮಾತಿದು. ವೈರವೆಂಬುದು ಮರಣದವರೆಗೆ ಇರುತ್ತದೆ. ಮರಣದ ನಂತರ ವೈರವು ಕೊನೆಯಾಗಬೇಕು. ದುಷ್ಟಸಂಹಾರ ರೂಪದ ನಮ್ಮ ಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಸಿದೆ. ಇನ್ನೂ ವೈರವನ್ನು ಸಾಧಿಸುವುದರಲ್ಲಿ ಅರ್ಥವಿಲ್ಲ. ನೀನೇ ಅವನ ಸಂಸ್ಕಾರವನ್ನು ವಿಧಿವತ್ತಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕಾಗಿದೆ. ನಿನಗೆ ಇವನು ಹೇಗೆ ಸಹೋದರನೋ ನನಗೂ ಹಾಗೆಯೇ ಸಹೋದರನು. ಈ ಮಾತು ಶ್ರೀರಾಮನ ಆದರ್ಶವನ್ನು ಅನಾವರಣಗೊಳಿಸುತ್ತದೆ. ಶ್ರೀರಾಮ ದುಷ್ಟಗುಣಗಳನ್ನು ದ್ವೇಷಿಸಿದನೇ ಹೊರತು ವ್ಯಕ್ತಿಗಳನ್ನಲ್ಲ. ದ್ವೇಷ ಸಕಾರಣವಾಗಿರಬೇಕು ಪ್ರೀತಿ ಅಕಾರಣವಾಗಿರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಈ ಪದ್ಯ ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದ ಮತ್ತೊಂದು ಶ್ಲೋಕ ದುಷ್ಟರ ಸ್ನೇಹದ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ.

**ಯಥಾ ಶರದಿ ಮೇಘಾನಾಂ ಸಿಂಚತಾಮಪಿ ಗರ್ಜತಾಂ ।**
**ನಭವತ್ಯಂಬು ಸಂಕ್ಲೇದಃ ತಥಾಽನಾರ್ಯೇಷು ಸೌಹೃದಂ ॥**

ಶರತ್ಕಾಲದ ಮೇಘಗಳು ಅತಿಯಾಗಿ ಗರ್ಜಿಸುತ್ತವೆ. ಸ್ವಲ್ಪ ನೀರಿನ ಹನಿಗಳನ್ನೂ ಸುರಿಸುತ್ತವೆ. ಆದರೆ ಆ ನೀರು ಭೂಮಿಯನ್ನು ಒದ್ದೆ ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲ. ಹಾಗೆಯೇ ದುಷ್ಟರ ಸ್ನೇಹವೂ ಕೂಡ ಮೇಲ್ನೋಟಕ್ಕೆ ರಂಜನೆಯಾಗಿ ಕಂಡರೂ ಪರಿಣಾಮ ಗಾಢವಾಗಿರುವುದಿಲ್ಲ. ಆದ್ದರಿಂದ ಮೂರ್ಖಜನರ ಸಹವಾಸ ಒಳ್ಳೆಯದಲ್ಲ.

ಪತಿ ಪತ್ನಿಯರ ಸಂಬಂಧ ಕುರಿತು ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಈ ಶ್ಲೋಕವಂತೂ ಸೀತೆಯ ಮನೋಧರ್ಮವನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ಪತಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಅಂಥ ಭಾವನೆ ಇದ್ದರೆ ಮಾತ್ರ ಆದರ್ಶ ದಾಂಪತ್ಯ ರೂಪುಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. "ಸ್ತ್ರೀಣಾಂ ಭರ್ತಾಹಿ ದೈವತಂ" ಎಂಬುದನ್ನು ದೃಢವಾಗಿ ನಂಬಿದ ಸೀತೆ ಹೀಗೆನ್ನುತ್ತಾಳೆ.

**ಮಿತಂ ದದಾತಿ ಹಿ ಪಿತಾ ಮಿತಂ ಮಾತಾ ಮಿತಂ ಸುತಃ ।**
**ಅಮಿತಸ್ಯತು ದಾತಾರಂ ಭರ್ತಾರಂ ಕಾನ ಪೂಜಯೇತ್ ॥**

ಹೆಣ್ಣಿನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ತಂದೆಯ ಕೊಡುಗೆ ಮಿತವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ತಾಯಿಯದೂ ಮಿತವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಮಗನೂ ಮಿತವಾಗಿ ಕೊಡುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ಪತಿಯ ಕೊಡುಗೆ ಮಾತ್ರ ಅಮಿತವಾದುದು. ಇಂಥ ಪತಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಯಾರು ತಾನೇ ಗೌರವವನ್ನು ತೋರದೇ ಇದ್ದಾರು !

ಒಂದು ಕಾರ್ಯ ಸಿದ್ಧಿಸಬೇಕಾದರೆ, ಅಂಥ ವ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಎಂಥ ಗುಣಗಳು ಇರಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಕಾಂಡದ ಈ ಪದ್ಯ ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ಸೀತಾನ್ವೇಷಣೆಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಅಂಗದ ವಾನರರಿಗೆ ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು.

**ಅನಿರ್ವೇದಂಚ ದಾಕ್ಷ್ಯಂಚ ಮನಸಶ್ಚಾಪರಾಜಯಂ ।**
**ಕಾರ್ಯಸಿದ್ಧಿಕರಾಣ್ಯಾಹುಃ ತಸ್ಮಾದೇತತ್ ಬ್ರವೀಮ್ಯಹಮ್ ॥**

ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಗಳಿಸಬೇಕಾದರೆ ಅಂಥ ವ್ಯಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಬೇಸರವಿಲ್ಲದ ಉತ್ಸಾಹವಿರಬೇಕು, ದಕ್ಷತೆಯಿರಬೇಕು. ಎಂಥ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿಯಾದರೂ ಮನಸ್ಸು ಸೋಲನ್ನೊಪ್ಪುವ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿರಬಾರದು. ಇಂಥ ಗುಣಗಳು ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ತಂದುಕೊಡುತ್ತವೆ.

ಸುಂದರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹನುಮಂತನ ಈ ಮಾತು ಜೀವನೋತ್ಸಾಹವನ್ನು ತುಂಬುತ್ತದೆ.

**ವಿನಾಶೇ ಬಹವೋದೋಷಾಃ ಜೀವನ್ ಭದ್ರಾಣಿ ಪಶ್ಯತಿ ।**
**ತಸ್ಮಾತ್ ಪ್ರಾಣಾನ್ ಧರಿಷ್ಯಾಮಿ ಧ್ರುವೋಜೀವತಿ ಸಂಗಮ ঃ॥**

ಹನುಮಂತ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಣದೇ ಬಹಳ ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಒಮ್ಮೆ ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲೇ ಎಂದು ಚಿಂತಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ, ಅದರ ದೋಷಗಳನ್ನು ಮನಗಂಡು ಈ ರೀತಿ ಸಮಾಧಾನ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ನಾಶ ಹೊಂದಿದರೆ ಬಹಳ ದೋಷಗಳು ಉಂಟಾಗುತ್ತವೆ. ಜೀವಿಸಿದ್ದರೆ ಎಂದಾದರೆ ಶುಭವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಆದ್ದರಿಂದ ನಾನು ಪ್ರಾಣವನ್ನು ಧರಿಸಿರುತ್ತೇನೆ ಜೀವಿಸಿರುವವನಿಗೆ ಶ್ರೇಯಃಪ್ರಾಪ್ತಿ ನಿಶ್ಚಿತ.

ಪ್ರಜೆಗಳನ್ನು ಆಳುವ ರಾಜ ಹದಿನಾಲ್ಕು ದೋಷಗಳನ್ನು ವರ್ಜಿಸಬೇಕೆಂದು ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಈ ಶ್ಲೋಕಗಳು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತವೆ. ಶ್ರೀರಾಮನು ಭರತನಿಗೆ ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಸಂದರ್ಭವಿದು.

**ನಾಸ್ತಿಕ್ಯಮನೃತಂ ಕ್ರೋಧಂ ಪ್ರಮಾದಂ ದೀರ್ಘಸೂತ್ರತಾಂ ।**
**ಆದರ್ಶನಂ ಜ್ಞಾನವತಾಂ ಆಲಸ್ಯಂ ಪಂಚವೃತ್ತಿತಾಂ ॥**
**ಏಕಚಿಂತನ ಮರ್ಥಾನಾಂ ಅನರ್ಥ ಜ್ಞೈಶ್ಚ ಮಂತ್ರಣಂ ।**
**ನಿಶ್ಚಿತಾನಾಮನಾರಂಭಂ ಮಂತ್ರಸ್ಯಾಪರಿರಕ್ಷಣಂ ॥**
**ಮಂಗಲಸ್ಯಾ ಪ್ರಯೋಗಂಚ ಪ್ರತ್ಯುತ್ಥಾನಂಚ ಸರ್ವತಃ ।**
**ಕಚ್ಚಿತ್ತ್ವಂ ವರ್ಜಯಸ್ಯೇತಾನ್ ರಾಜದೋಷಾನ್ ಚತುರ್ದಶ ॥**

ನಾಸ್ತಿಕತೆ, ಸುಳ್ಳು, ಸಿಟ್ಟು, ಅನವಧಾನ, ತಡವಾಗಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವುದು, ಸಜ್ಜನರಿಗೆ ದರ್ಶನ ಕೊಡದಿರುವುದು, ಆಲಸ್ಯ, ಇಂದ್ರಿಯಚಾಪಲ್ಯ, ಏಕಪಕ್ಷೀಯ ನಿರ್ಧಾರ, ಅನುಭವಿಗಳೊಡನೆ ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆ, ನಿಶ್ಚಿತಕಾರ್ಯವನ್ನು ಆರಂಭಿಸದೇ ಇರುವುದು, ಮಂತ್ರಾಲೋಚನೆಯನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳದಿರುವುದು, ಶುಭಕಾರ್ಯಮಾಡದಿರುವುದು, ಎಲ್ಲ ಶತ್ರುಗಳ ಮೇಲೆ ಏಕಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಕ್ರಮಣ ಈ ಹದಿನಾಲ್ಕು ದೋಷಗಳು ನಮ್ಮನ್ನು ಆಳುವವರಲ್ಲಿ ಇರಬಾರದು. ಇಂದಿಗೂ ಇವು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ

ಅನ್ವಯಿಸುತ್ತವೆ. ಇಂಥ ದೋಷಗಳಿಂದಾಗಿ ನಮ್ಮನ್ನು ಆಳುವವರು ಜನರ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ನಾಯಕತ್ವಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾದ ತರಬೇತಿ ಇರಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಶಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಹಾಗೂ ಶಾಸ್ತ್ರಜ್ಞಾನ ಎರಡೂ ಆಳುವವರಿಗೆ ಇರಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ಕಿಷ್ಕಿಂದಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಈ ಶ್ಲೋಕ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಹೇಗೆ ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ.

**ಮೂಲಮರ್ಥಸ್ಯ ಸಂರಕ್ಷ್ಯಂ ಏಷಕಾರ್ಯವಿದಾಂ ನಯಃ ।**
**ಮೂಲೇಹಿ ಸತಿ ಸಿಧ್ಯಂತಿ ಗುಣಾಃ ಪುಷ್ಪಫಲೋದ್ಗಮಾಃ ॥**

ಕಾರ್ಯತಂತ್ರವನ್ನು ಬಲ್ಲವರು ಸಂಪತ್ತಿನ ಮೂಲವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಆಗ ಸಂಪತ್ತು ನಾಶವಾಗದು. ಒಂದು ಮರದ ಬೇರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಿದರೆ ಮಾತ್ರ, ಅದು ಮುಂದೆ ಹೂವುಗಳನ್ನು, ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನೂ ಕೊಡಬಲ್ಲದು. ಇದು ಅರ್ಥನೀತಿಯಾಗಿದೆ.

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಈ ಶ್ಲೋಕ ಧರ್ಮದ ಪ್ರಾಮುಖ್ಯತೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ಇಡೀ ಜಗತ್ತು ಧರ್ಮದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ನಿಂತಿರುತ್ತದೆ.

**ಧರ್ಮಾದರ್ಥಃ ಪ್ರಭವತೇ ಧರ್ಮಾತ್ ಪ್ರಭವತೇ ಸುಖಂ ।**
**ಧರ್ಮೇಣ ಲಭತೇ ಸರ್ವಂ ಧರ್ಮಸಾರಮಿದಂ ಜಗತ್ ॥**

ಸಂಪತ್ತು ಧರ್ಮದಿಂದಲೇ ಆರ್ಜಿತವಾಗಬೇಕು, ಧರ್ಮದಿಂದಲೇ ನಿಜವಾದ ಸುಖ ಲಭಿಸುತ್ತದೆ. ಸಕಲವೂ ಧರ್ಮದಿಂದಲೇ ಸಿದ್ಧಿಸುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ಈ ಜಗತ್ತು ಧರ್ಮದ ಸಾರ. ಧರ್ಮದ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿದ್ದರೆ ಎಲ್ಲವೂ ಹಿತ. ಅಧರ್ಮ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನಾಶ ಮಾಡುತ್ತದೆ.

**ಧರ್ಮೋಹಿ ಪರಮೋ ಲೋಕೇ ಧರ್ಮೇ ಸತ್ಯಂ ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತಂ ।**
**ಧರ್ಮ ಸಂಶ್ರಿತಮೇತಚ್ಚ ಪಿತುರ್ವಚನಮುತ್ತಮಮ್ ॥**

ಶ್ರೀರಾಮ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು. ಈ ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮವೇ ಪರಮಶ್ರೇಷ್ಠವಾದುದು. ಧರ್ಮದಲ್ಲಿಯೇ ಸತ್ಯ ಸ್ಥಾಪಿತವಾಗಿದೆ. ಎಲ್ಲವೂ ಧರ್ಮಾಶ್ರಿತವಾದುದು. ಆದ್ದರಿಂದಲೇ ತಂದೆಯ ಮಾತೂ ಕೂಡ ನನಗೆ ಧರ್ಮವೇ ಆಗಿದೆ. ಶ್ರೀರಾಮನ ಈ ಧರ್ಮನಿಷ್ಠೆ ಅವನನ್ನು ಮರ್ಯಾದಾ ಪುರುಷೋತ್ತಮನನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿತು.

ರಾಜ್ಯ ನಿರ್ವಹಣೆಗೆ ರಾಜನಾದವನು, ಎಂಥವರನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸಬೇಕೆಂಬುದನ್ನು ಶ್ರೀರಾಮ ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಭರತನಿಗೆ ಹೇಳುವಾಗ ತಿಳಿಸುತ್ತಾನೆ.

**ಕಚ್ಚಿತ್ಸಹಸ್ರಾನ್ಮೂರ್ಖಾಣಾಂ ಏಕಮಿಚ್ಛಸಿ ಪಂಡಿತಂ ।**
**ಪಂಡಿತೋ ಹ್ಯರ್ಥಕೃಚ್ಛ್ರೇಷು ಕುರ್ಯಾನ್ನಿಃ ಶ್ರೇಯಸಂ ಮಹತ್ ॥**

ರಾಜನಾದವನು ಸಾವಿರ ಮೂರ್ಖಜನರನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದಕ್ಕಿಂತ ಒಬ್ಬ ಜ್ಞಾನಿಯನ್ನು ಆಶ್ರಯಿಸುವುದು ಒಳಿತು. ಏಕೆಂದರೆ, ಅವನೊಬ್ಬನೇ ಆರ್ಥಿಕ ಮುಗ್ಗಟ್ಟು ಬಂದಾಗ ಹೆಚ್ಚು ಶ್ರೇಯಸ್ಕರವಾದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ರಾಜನೀತಿಗೆ ಇದು ಎಂದೂ ಪಥ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ.

ಶರೀರ ಸದೃಢವಾಗಿರುವಾಗಲೇ ಮನುಷ್ಯ ಆತ್ಮೋನ್ನತಿಯ ಕುರಿತು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಬೇಕೆಂದು ಎಚ್ಚರಿಕೆಯನ್ನು ನೀಡುವ ಪದ್ಯವೊಂದು ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

**ಅಧ್ರುವೇ ಹಿ ಶರೀರೇ ಯೋ ನಕರೋತಿ ತಪೋರ್ಜನಂ ।**
**ಸ ಪಶ್ಚಾತ್ತಪ್ಯತೇ ಮೂಢೋ ಮೃತೋ ದೃಷ್ಟ್ವಾತ್ಮನೋಗತಿಂ ॥**

ಈ ಶರೀರ ನಶ್ವರ ಎಂದಾದರೂ ನಾಶವಾಗುವಂಥದ್ದು, ಹಾಗಿದ್ದರೂ ಯಾರು ತಪಸ್ಸನ್ನು ಮಾಡುವುದಿಲ್ಲವೋ, ಅಂಥ ಅಜ್ಞಾನಿಯು ಸತ್ತ ನಂತರ ತನ್ನ ದುರ್ಗತಿಯನ್ನು ನೋಡಿ ಪಶ್ಚಾತ್ತಾಪ ಪಡುತ್ತಾನೆ.

ಭಗವಂತ ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ ಈ ಶರೀರವನ್ನು ನಮಗೆ ನೀಡಿದ್ದಾನೆ. ಈ ದೇಹವನ್ನು ಸದುಪಯೋಗಿಸಿಕೊಂಡು ನಾವು ಆತ್ಮೋನ್ನತಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಬೇಕು. ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಇಂಥ ಸದವಕಾಶ ಮುಂದೆಂದೂ ಬಾರದು.

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಇನ್ನೊಂದು ಶ್ಲೋಕ ಇದೇ ಭಾವವನ್ನು ಪುಷ್ಟೀಕರಿಸುತ್ತದೆ.

**ಅಹೋರಾತ್ರಾಣಿ ಗಚ್ಛಂತಿ ಸರ್ವೇಶಾಂ ಪ್ರಾಣಿನಾಮಿಹ ।**
**ಆಯೂಂಷಿ ಕ್ಷಪಯಂತ್ಯಾಶು ಗ್ರೀಷ್ಮೇ ಜಲಮಿವಾಂಶವಃ ॥**

ಶ್ರೀರಾಮ ಭರತನಿಗೆ ಸಮಾಧಾನ ಮಾಡುವ ಸಂದರ್ಭವಿದು. ಭರತ, ತನ್ನ ತಾಯಿಯಿಂದಾಗಿ ಶ್ರೀರಾಮ ವನವಾಸವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವ ಸಂಕಷ್ಟ ಒದಗಿಬಂದಿತೆಂದು ದುಃಖಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಶ್ರೀರಾಮ ಯಾರ ಕಷ್ಟಗಳಿಗೂ ಯಾರೂ ಕಾರಣರಲ್ಲ. ಮಾನವ ಗಳಿಸಿದ ಎಲ್ಲಾ ಸಂಪತ್ತುಗಳು ಕಡೆಗೆ ವಿನಾಶದಲ್ಲಿಯೇ ಅವಸಾನಗೊಳ್ಳುತ್ತವೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ಈ ಜೀವಿತಕ್ಕೆ ಸಾವೇ ಅಂತಿಮ. ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಾಣಿಗಳ ಆಯುಷ್ಯವೂ ಹಗಲೂರಾತ್ರಿಗಳ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಅತಿವೇಗದಿಂದ ಕಳೆದು ಹೋಗುತ್ತದೆ. ಬೇಸಿಗೆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯನ ಕಿರಣಗಳು ಜಲಾಶಯಗಳ ನೀರನ್ನು ಅತಿ ಶೀಘ್ರದಲ್ಲಿಯೇ ಬರಿದು ಮಾಡುತ್ತವೆ.

**ಆತ್ಮಾನಂ ಅನುಶೋಚತ್ವಂ ಕಿಮನ್ಯಮನುಶೋಚಸಿ ।**
**ಆಯುಸ್ತೇ ಕ್ಷೀಯತೇ ಯಸ್ಯ ಸ್ಥಿತಸ್ಯಚ ಗತಸ್ಯಚ ॥**

ಹೇ ಭರತ, ನಿನ್ನ ಬಗ್ಗೆ ನೀನು ಚಿಂತಿಸು. ಬೇರೆಯವರ ಬಗ್ಗೆ ಚಿಂತಿಸುವುದನ್ನು ಬಿಡು. ನೀನು ನಿಂತರೂ, ಸಂಚರಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ನಿನ್ನ ಆಯುಷ್ಯ ಕ್ಷೀಣಿಸುತ್ತಲೇ ಸಾಗುತ್ತದೆ.

**ಸಹೈವ ಮೃತ್ಯುರ್ವಹತಿ ಸಹ ಮೃತ್ಯುರ್ನಿಷೀದತಿ ।**
**ಗತ್ವಾ ಸುದೀರ್ಘಮಧ್ವಾನಂ ಸಹ ಮೃತ್ಯುರ್ನಿವರ್ತತೇ॥**

ಮೃತ್ಯು ನಮ್ಮ ಜೊತೆಗೇ ಸಂಚರಿಸುತ್ತದೆ. ನಮ್ಮ ಜೊತೆಗೇ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳುತ್ತದೆ. ನಮ್ಮ ಜೊತೆಗೇ ದೀರ್ಘವಾದ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಸಾಗಿ ನಮ್ಮ ಜೊತೆಗೇ ಅದು ಸಾಗುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ನಮಗೆ ಮೃತ್ಯು ಬರುವ ಮುನ್ನ ಈ ಶರೀರದ ಸಾರ್ಥಕತೆಯನ್ನು ಸಾಧಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

**ತಸ್ಮಾತ್ ಪುತ್ರೇಷು ದಾರೇಷು ಮಿತ್ರೇಷುಚಧನೇಷು ಚ ।**
**ನಾತಿಪ್ರಸಂಗಃ ಕರ್ತವ್ಯೋ ವಿಪ್ರಯೋಗೋ ಹಿತ್ಯೈರ್ಧ್ರುವಮ್ ॥**

ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಈ ಶ್ಲೋಕ ಬದುಕಿಗೆ ಹೆಚ್ಚು ಅಂಟಿಕೊಳ್ಳದಿರುವಂತೆ ಸಲಹೆ ನೀಡುತ್ತದೆ. ಪುತ್ರರಲ್ಲಿ, ಪತ್ನಿಯರಲ್ಲಿ, ಮಿತ್ರರಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಹಣದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚು ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಬಾರದು. ಏಕೆಂದರೆ ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ದಿನ ಅವರೆಲ್ಲರೂ ನಮ್ಮಿಂದ ದೂರವಾಗುತ್ತಾರೆ. ಬಾಲಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಇನ್ನೊಂದು ಶ್ಲೋಕ ಬ್ರಹ್ಮತೇಜಸ್ಸಿನ ಮಹತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಡುತ್ತದೆ.

**ಧಿಗ್ಬಲಂ ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಬಲಂ ಬ್ರಹ್ಮ ತೇಜೋ ಬಲಂ ಬಲಂ ।**
**ಏಕೇನ ಬ್ರಹ್ಮದಂಡೇನ ಸರ್ವಾಸ್ತ್ರಾಣಿ ಹತಾನಿಮೆ ॥**

ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ಕ್ಷತ್ರಿಯನಾಗಿದ್ದು ತನ್ನ ತೋಳ್ಬಲ ಹಾಗೂ ಸೇನಾಬಲವನ್ನು ಅತಿಯಾಗಿ ನೆಚ್ಚಿಕೊಂಡಿದ್ದವನು. ವಸಿಷ್ಠ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಒಂದು ಬ್ರಹ್ಮದಂಡ ಅವನ ಎಲ್ಲಾ ಸೇನೆಯನ್ನು ನಾಶಗೊಳಿಸಿದ್ದನ್ನು ಕಂಡು ಬ್ರಹ್ಮಬಲವೇ ನಿಜವಾದ ಬಲ, ಕ್ಷತ್ರಿಯ ಬಲಕ್ಕೆ ಧಿಕ್ಕಾವಿರಲಿ ಎಂದು ನುಡಿದು ತಾನೂ ಬ್ರಹ್ಮರ್ಷಿಯಾಗಿರಬೇಕೆಂದು ಹಂಬಲಿಸಿ ತಪಸ್ಸಿಗೆ ತೆರಳಿದನು.

**ನಂದಂತ್ಯುದಿತ ಆದಿತ್ಯೇ ನಂದಂತ್ಯಸ್ತಮಿತೇರವೌ ।**
**ಆತ್ಮನೋನಾವ ಬುಧ್ಯಂತೇ ಮನುಷ್ಯಾ ಜೀವಿತಕ್ಷಯಂ ॥ ಅಯೋಧ್ಯಾ ॥**

ಮನುಷ್ಯ ತನ್ನ ಜೀವ ನಾಶದತ್ತ ಧಾವಿಸುತ್ತಿದ್ದರೂ ಆತ್ಮಜ್ಞಾನವನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಇಹಲೋಕದ ಆನಂದದಲ್ಲಿಯೇ ತನ್ನ

ಸರ್ವಸ್ವವನ್ನೂ ಮರೆತುಬಿಡುತ್ತಾನೆ. ಸೂರ್ಯ ಉದಯವಾದೊಡನೆ ನಲಿಯುತ್ತಾನೆ. ಸೂರ್ಯ ಅಸ್ತಂಗತನಾದರೂ ನಲಿಯುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ಆ ಸೂರ್ಯೋದಯಾದಿಗಳು ತನ್ನ ಆಯುಷ್ಯವನ್ನು ಕಳೆಯುತ್ತವೆಯೆಂಬ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಅವನಿಗಿರುವುದಿಲ್ಲ.

**ಯಥಾ ಕಾಷ್ಠಂಚ ಕಾಷ್ಠಂಚ ಸಮೇಯಾತಾಂ ಮಹಾರ್ಣವೇ ।**
**ಸಮೇತ್ಯಚ ವ್ಯಪೇಯಾತಾಂ ಕಾಲಮಾಸಾದ್ಯ ಕಂಚನ ॥**
**॥ ಅಯೋಧ್ಯಾ ॥**

ದೊಡ್ಡ ಸಮುದ್ರದಲ್ಲಿ ಎರಡು ಕಟ್ಟಿಗೆಯ ತುಂಡುಗಳು ಒಮ್ಮೆ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತವೆ ನಂತರ ಅವು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಸಾಗುತ್ತವೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ಸಮಯ ಬಂದ ತಕ್ಷಣ ಎಲ್ಲರೂ ಅಗಲುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗೆ ಈ ಲೋಕದ ಬಂಧುಮಿತ್ರರು, ಸಂಪತ್ತುಗಳು ಕ್ಷಣ ಕಾಲಮಾತ್ರ ಇರುವಂಥವು.

**ಅತ್ಯೇತಿ ರಜನೀ ಯಾ ತು ಸಾನಪ್ರತಿನಿವರ್ತತೇ ।**
**ಯಾತ್ಯೇವ ಯಮುನಾಪೂರ್ಣಾ ಸಮುದ್ರಂ ಲವಣಾರ್ಣವಂ ॥**
**॥ ಅಯೋಧ್ಯಾ ॥**

ರಾತ್ರಿ ಕಳೆದ ಮೇಲೆ ಮತ್ತೆ ಹಿಂದಿರುಗುವುದಿಲ್ಲ. ಯಮುನಾ ನದಿ ಪೂರ್ಣವಾಗಿದ್ದರೂ ಕೊನೆಗೆ ಉಪ್ಪು ಸಮುದ್ರವನ್ನೇ ಸೇರುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ಇಲ್ಲಿಯ ಬದುಕು ತಾತ್ಕಾಲಿಕವಾದುದು.

ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಈ ಶ್ಲೋಕ ಶೋಕದ ಪರಿಣಾಮವನ್ನು ಹೀಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ.

**ಶೋಕೋ ನಾಶಯತೇ ಧೈರ್ಯಂ ಶೋಕೋ ನಾಶಯತೇ ಶ್ರುತಂ ।**
**ಶೋಕೋ ನಾಶಯತೇ ಸರ್ವಂ ನಾಸ್ತಿ ಶೋಕಸಮೋರಿಪುಃ ॥**

ದುಃಖವೆಂಬುದು ಧೈರ್ಯವನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ವಿದ್ಯೆಯನ್ನೂ ನಾಶಮಾಡುತ್ತದೆ. ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನಾಶಮಾಡುತ್ತದೆ. ಶೋಕಕ್ಕೆ ಸಮನಾದ ಶತ್ರು ಇನ್ನೊಂದಿಲ್ಲ.

ಯುದ್ಧಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಇನ್ನೊಂದು ಶ್ಲೋಕ, ಮಾರೀಚನು ರಾವಣನಿಗೆ ಹಿತವನ್ನು ಬೋಧನೆ ಮಾಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬರುತ್ತದೆ.

**ಸುಲಭಾಃ ಪುರುಷಾಃ ರಾಜನ್ ಸತತಂ ತ್ರಿಯವಾದಿನಃ**
**ಅಪ್ರಿಯಸ್ಯ ಚ ಪಥ್ಯಸ್ಯ ವಕ್ತಾ ಶ್ರೋತಾ ಚದುರ್ಲಭಃ ॥**

ರಾವಣ, ಸೀತಾಪಹರಣ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಾರೀಚನನ್ನು ಸಹಕರಿಸುವಂತೆ ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮಾತಿದು. ಶ್ರೀರಾಮ ಮಹಾಪರಾಕ್ರಮಿ. ಅವನು ಬಾಲಕನಾಗಿರುವಾಗಲೇ ಅವನಿಂದ ನಾನು ಪೆಟ್ಟು ತಿಂದವನು. ಅವನ ಸಹವಾಸ ಬೇಡ. ನಾನು ನಿನಗೆ ಹಿತವಾದುದನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಿರುವೆ. ರಾವಣ, ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ನಿರಂತರ ಪ್ರಿಯವಾಗಿ ಮಾತನಾಡುವವರು ಸುಲಭವಾಗಿ ಸಿಗುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಅಪ್ರಿಯವಾದ ಆದರೆ ಹಿತವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಆಡುವವರು ಹಾಗೂ ಅವುಗಳನ್ನು ಕೇಳುವವರೂ ದುರ್ಲಭ. ಈ ನೀತಿವಾಕ್ಯ ಎಂದಿಗೂ ಅನ್ವಯಿಸುವಂಥದು.

ಹೀಗೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಸಾವಿರಾರು ನೀತಿ ಪ್ರಧಾನವಾದ ವಿಚಾರಗಳು ಬರುತ್ತವೆ. ಅವುಗಳನ್ನು ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಂಡಲ್ಲಿ ಬಾಳು ಹಸನಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಸಾರ್ಥಕತೆಯೂ ಅದರಲ್ಲಿಯೇ ಅಡಗಿದೆ. ಕಾವ್ಯಗಳು ಮನಸ್ಸನ್ನು ರಂಜಿಸುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ನಮ್ಮ ಜೀವನದ ಮಟ್ಟವನ್ನು ಉನ್ನತೀಕರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಕರಿಸುತ್ತವೆ. ಅಂತೆಯೇ ರಾಮಾಯಣ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಪಾರಾಯಣ ಗ್ರಂಥ. ಪರಮ ಪೂಜ್ಯವಾದುದು ಕೂಡ. ❑

# On Rajaji's Ramayana

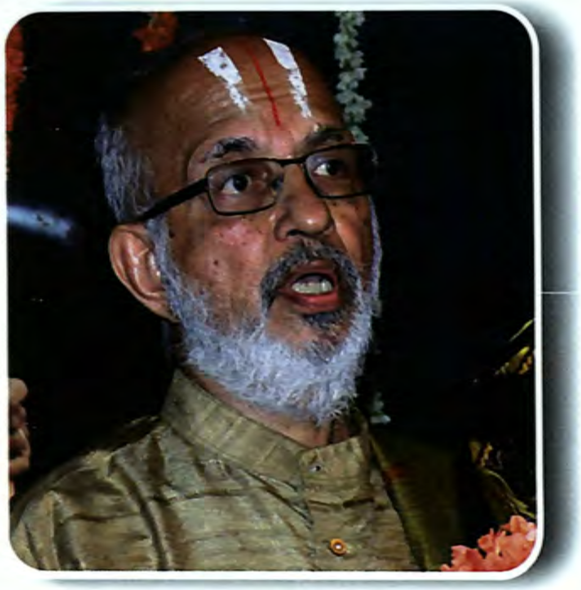

**Dr. A. Ramaswamy Iyengar**

Rajaji's Ramayana, originally published in the year 1951, is a concise version of the original Valmiki Ramayana. The Ramayana is hailed as the mother of all Indian classics. It is a tale as old as humanity and is packed with events concerning the life of a noble hero and a chaste, ideal heroine. Valmiki, its author, is known for his style, striking in originality and beauty of expression. His depiction of pathos and bravery are matchless. Rajaji presents the original story as it is. It is a factual rendition that emphasises on the lessons we can learn from this epic. It has emerged as the best version of the Ramayana till today. It has appealed to all sections and strata of society. Millions of readers across the world have enjoyed it. Its popularity can be deduced from-the fact that it has been reprinted more than forty-two times since its first publication.

Ancient Indian classics in Sanskrit embody the true national character India. The Ramayana and the Mahabharata by Valmiki and Vyasa restate the intuitive wisdom of India from immemorial times. They represent our national memory. They provide the raw material for the works of many poets and saints of India. They are the conscience keepers of our nation. They are instructive and entertaining. They are translated and adapted into all languages of India. They unravel the eternal mysteries of life diverting our minds from the endless pursuit of the petty and the profane. They have kept our multilingual vast varieties of people culturally bound together as one nation despite our own differences and foreign invasions.

Bharataratna Sri C Rajagopalachari, popularly known as Rajaji, has retold both these epics in English in a concise form. They are the prized publications of Bharatiya Vidya Bhavan. They remain widely circulated fulfilling the need of bringing the original classics nearer to those who normally have no access to them. Rajaji's patriotism, respect for our age-old tradition and his ability of intuitive understanding are undisputed. Rajaji's Ramayana imparts the indigenous wisdom of this land to a wider circle of people spread all over the world. This exclusive dissemination of wisdom assumes special importance because our true national character remains defective if it is not learned through such personalities as Rama and Sita, Bharata and Lakshmana, Ravana and Kumbhakarna and Vibhishana and Hanuman. Mythology, Philosophy, Religion and Rituals together constitute culture. The spiritual attitude of a true Indian cannot be grasped without understanding the value and significance of these ingredients.

Rajaji's Ramayana, originally published in the year 1951, is a concise version of the original Valmiki Ramayana. The Ramayana is hailed as the mother of all Indian classics. It is a tale as old as humanity and is packed with events concerning the life of a noble hero and a chaste, ideal heroine. Valmiki, its author, is known for his style, striking in originality and beauty of expression. His depiction of pathos and bravery are matchless. Rajaji presents the original story as it is. It is a factual rendition that emphasises on the lessons we can learn from this epic. It has emerged as the best version of the Ramayana till today. It has appealed to all sections and strata of society. Millions of readers across the world have enjoyed it. Its popularity can be deduced from-the fact that it has been reprinted more than forty-two times since its first publication.

Rajaji delicately weaves the original story to make it enjoyable and informative. His skill in changing the style of storytelling by switching from a narrative to a dialogue between characters is unique. He writes it mainly for children and mothers. He keeps the sentences in the book simple and short. He avoids complexities in construction and vocabulary. He avoids academic reflections and metaphysical debates in his Ramayana to make it easy and instructive. But he never fails to pause here and there in his narration to pass on certain valuable comments or to reflect over important issues. He examines the moral involved in some of the episodes as well. He draws parallels from Kamba Ramayana. He also refers to Sri Ramcharitmanas of Tulsidas and compares it with Valmiki Ramayana while dealing with some prominent episodes. He provides a glossary of sanskrit words and a pronunciation guide for Sanskrit vowels. He omits the story of Uttarakanda.

The story of Ramayana starts with the description of Ayodhya and the rule of Dasharatha. While unfolding the fortunes of Ayodhya, Valmiki provides a picture of its richness, vastness and beauty. Rajaji draws our attention towards the high level of civilisation reached by India in those ancient times. Ayodhya means that which is undefeatable. It is a metropolis that cannot be won over in a war, secured by forts with moats, defensive installations, civic amenities and many such frills. The ideal rule of Dasharatha with light taxes and unbiased punishments for crime is impressively pictured. The expertise of his wise ministers, skilled executives and pious sages like Vasishtha and Vamadeva are all depicted in detail.

Dasharatha is childless. He performs ***ashvamedhayaga*** and ***Putrakameshti*** and obtains four sons - Rama, Lakshmana, Bharata and Shatrughna. Rajaji gives a grand description of the vedic rituals undertaken by Dasharatha in detail. As the four princes grow into imposing young men, sage Vishvamitra arrives and takes Rama and Lakshmana along with him for his security in the performance of a sacrifice. Viswamitra initiates the princes in the secret mantras to guard them against fatigue and injury. They go on their way towards Vishvamitra's ***ashrama*** after crossing the river Ganga and wade through the Dandaka forest. They encounter the demoness Tataka who is equal in strength to multiple elephants. Sri Rama twangs his bow. The whole forest resonates with its sound. Tataka springs on Rama. Vishwamitra instructs Rama to kill her and Rama kills her. Vishwamitra gave Ramachandra the divine ***astras*** which he had acquired through his tapas. Vishwamitra imparts the wisdom of using and controlling various divine weapons to Rama who in turn conveys it to Lakshmana. Rama asks about various wonders in the forest along their way. Viswamitra explains them all while narrating various anecdotes and legends. Finally, they arrive at the site of the sacrifice. The princes get welcomed. Vishwamitra prepares for his ***yaga*** from the next day. The princes keep vigil for six days and nights. On the morning of the last day Rama notices the Rakshasas arriving to disturb the rites. Maricha and Subahu along with other intruders invade the sacrificial area. Sri Rama shoots Maricha and flings him away into the sea. He kills Subahu. The princes destroy the rest of the demons. Viswamitra successfully completes the yaga. He admires Sri Rama's valour and vests him with many incantations and weapons.

Viswamitra then takes the prince to Mithila, the capitol of Videha where Janaka was searching for a suitable groom to marry his daughter Sita. The king had announced that the prince who bends and shoots from his custodial mighty bow of Rudra could marry Sita. Sita was of divine origin, found in a ploughing field by King Janaka. Many kings had assembled at Mithila, seeking Sita's hand.

On their way to Mithila, Rama's divinity is made evident by Valmiki as he describes the way in which Ahalya, an errant woman married to sage Atri gets sanctified by the presence of Sri Rama. Ahalya had an affair with Indra secretly. It is a point to ponder over as to why bring in all these clandestine affairs in a classical epic? Rajaji clarifies the moral of the Ahalya episode.

"Why did the sages of the Puranas involve themselves in such difficulties?" questions Rajaji, and answers, "Their aim was to awaken people to a sense of the dangers of adharma. Else, the sages need not have deliberately attributed sinful acts to their own heroes and created difficulties for themselves. Some persons take pleasure in jumping to wrong conclusions from the incidents in the Puranas. They argue: "Ravana was a very good king. Valmiki has falsely accused him of wicked deeds." They ask: "Did not Rama act unjustly on a certain occasion? Did not Sita utter a lie?" and the like. Valmiki could well have omitted incidents which are not edifying. Both Rama and Ravana were first presented to us by the poet Valmiki. There was no earlier work referring to Ravana that can be quoted to contradict Valmiki and stamp him as being partial to Rama, Sita and the Devas and twisting facts to deceive people. Valmiki's Ramayana is the fountain source of the story of Rama; in it, one comes across seemingly wrong deeds. Calm consideration of such situations would show that they are just portrayals of similar difficulties in our day-to-day life. It is for us to benefit from the moral trials contained in them. The lesson of the Ahalya episode is that, however deadly one's sin, one may hope to be freed from its consequence by penitence and punishment. Instead of condemning others for their sins, we should look within our own hearts and try to purify them of every evil thought. The best of us must also be eternally vigilant."

When Rama and Lakshmana arrive at Mithila, led by Viswamitra, Janaka welcomes them. Viswamitra introduces the sons of Dasaratha. He declares that they would try to handle the great bow of Rudra if permitted. Janaka joyfully asks Sri Rama to take it up. While the kings assembled there were unable even to lift the bow Sri Rama easily lifts it. As he tries to bend the bow, it breaks and crashes with a thundering sound. There falls a shower of flowers from heaven. Janaka arranges for the marriage of his daughter and sends messengers to Ayodhya to invite Dasaratha. Emissaries leave and bring Dasaratha along with his family and ministers. On the appointed auspicious day and at an auspicious moment, king Janaka ceremoniously asks Rama to accept Sita:

***iyamsita mama sutasahadharmacharitava***
***pratichtchhachainambhadramtepanimgrihnishvapanina***
***pativrata mahabhagachhayevanugatasada.***

"Here is my daughter, Sita, who will walk along with you on the path of dharma. Take her hand in yours. Blessed and devoted, she will ever walk with you like your shadow."

"This sloka is used even today", says Rajaji, "in every wedding in North India when the bride is given away."

All the four princes get married on the same day. After the happy event, as the party returns to Ayodhya, Sri Rama encounters Parashurama on his way and defeats him in battle. Dasaratha returns to Ayodhya with happily married couple along with all the retinue. This is the end of Balakanda.

Then starts the Ayodhya Kanda. Rama and Sita spend twelve happy years in Ayodhya. Then, however, Rama had to go to the forest as per the contrivance of the all-powerful providence. Rama is visualized as the ideal man with a graceful frame and virile beauty, having strength, courage, purity of thought words and deed, perfect, compassionate, serene, and wise. Dasharatha wanted to entrust Sri Rama with the responsibility of kingship. His queen Kaikeyi on the advice of her servant, a hunchback called Manthara, compels Dasharatha to send Rama on exile to the forest. The same destiny which makes Kaikeyi to listen to the counsel of Manthara drives Dasharatha also to listen to Kaikeyi.

Rajaji pauses here to admire the poet Kamban's version of Ramayana. He appreciates Kamban's matchless explanation of the triumph of Fate that plots the events as per the heavenly plan of the gods to destroy Ravana. "Sri Rama", says Rajaji, "is the all-pervasive Ruler of the world who indwells within and without. Kamban, the Tamil poet, begins the Ayodhya Kanda referring to this marvel of how the King of Kings allowed himself to suffer the cruel machinations of the hunchback maid-servant and of a stepmother which deprived him of the kingdom and banished him to the forest."

Dasharatha resigns himself to his fate and sorrowfully allows the bold Kaikeyi to order Sri Rama to go to the forest so as to allow Bharata to be the king of Ayodhya. Sri Rama then and there decides to give up the kingdom and go to the forest. Lakshmana gets angered and starts arguing. Rajaji's enlightening clarification at this juncture is very interesting: "In Sanskrit literature, daivam means fate. Daivam, dishtam, bhagyam, niyati and vidhi are all words conveying the idea of something unexpected and inexplicable. Because of the belief in God as the Prime Cause, a natural confusion arises between fate and God's will. What Rama said to Lakshmana on the present occasion does not mean that he thought that the gods contrived Kaikeyi's action for their own benefit. Rama offered no more than the usual consolation: "It is the work of fate. Do not grieve. No one is to blame for this."

In the Kamban Ramayana as well, addressing his brother 'raging like the fire of dissolution,' Rama says: "It is not the river's fault that the bed is dry. Even so, my going hence is not the King's fault, nor Queen Kaikeyi's nor her son's. The wrong is the work of fate. Why should one be angry then?" This explanation calmed Lakshmana for a while.

Rama leaves to the forest along with Lakshmana and Sita taking the chariot driven by Sumantra. Rajaji pauses here again for a while. He says "Rama's forest life begins. Let us pray that we be purified of our sins. Truth, courage and love are the gospel of the Ramayana to us. To give it to us was why Rama was born. We shall gain these gifts if we meditate on the Princes and Janaki in the bark garment as they left the city."

Sri Rama visits Guha and then enters into the forest taking his help. Here again, Rajaji ponders over for a while: "In the Rama avatar, the course of human conduct and the dharma governing it come linked together. This has been made explicit by Valmiki. On the occasion of Sita's ordeal by fire at the end of the battle, Rama says to Brahma who appeared then among others and deprecated the idea of putting Sita to test: "I regard myself only as Rama, son of Dasaratha, an ordinary human being. Who I am in reality, where I belong, why I took birth, are matters on which you must enlighten me, and I do not know."

Sri Rama visits sage Bharadwaja's hermitage and on his advice settles down at Chitrakuta. Lakshmana builds a strong and comfortable hut single-handedly. Rajaji says: "Kamban and Valmiki vie with each other in their accounts of this episode. Kamban says that when Lakshmana had completed the structure, Rama embraced him weeping and asked him: "When and how did you learn all this?" One can imagine the scene. Rama, his eyes filled with tears of joy, said, "The flower-soft feet of the Princess of Mithila have traversed the hard forest floor. If her feet have done a wonder, why, Lakshmana, your hands too have wrought a miracle of house-building! I have seen today the gain that is in misfortune."

On the lovely Chitrakuta hill, on the bank of the river Malyavati the three young people live happily in that cottage engaged in their daily devotional routines. They forget that they are in exile and spend their time happily in preparation of their unimaginable future sufferings and sorrows.

Next, we are told about how Dasharatha dies. Vamadeva, Kashyapa, Katyayana, Gautama, Jabali and other learned men, with Sumantra and other ministers approach Vasishtha and announce: "The King is no more. Rama and Lakshmana are in the forest. Bharata and Shatrughna are away. A land without a king cannot survive. Order will disappear, son will not obey father, nor wife her husband. The rains will hold back. Thieves and robbers will range at will. There will be no mutual trust among people. Neither agriculture nor trade can flourish. Without a king, the land must lose its prosperity. The springs of charity will dry up. Festivals and services will cease to be performed in temples. There will be no expounding of Shastras or epics, nor any listeners. Culture declines. Penances, vows, enjoyments, learning, all depend on the king's protection. The beauty of women will vanish. The sense of security will be lost. Men will eat one another up as fish do. Cruelty and misery will grow apace and lay waste the land. For good to prosper and evil to be restrained, a king is essential."

Rajaji adds: "Thus Valmiki describes at length the dangers of anarchy through the mouths of the leaders in that assembly." It looks as if a great darkness has enveloped the land," they say "Dharma is in danger. Let us forthwith secure a king." Vasishtha sends for Bharata. Bharata arrives. He finds Dasharatha's couch vacant. Innocently Bharata enquires his mother. The thoughtless queen answers "My child, what happens to all has happened to him also. He has entered into the heaven to join the gods." Bharata falls down crying hysterically. Gradually, Bharata comes to know of what has transpired. "Among the characters in the Ramayana," says Rajaji, "Bharata is the perfect embodiment of virtue. In the villages of the North, the people celebrate an annual festival for the episode of the meeting of Rama and Bharata at Chitrakuta, which they consider the most sanctifying part of the Ramayana epic. There have been through the ages great and noble souls whose virtue shines eternally in the midst of the sordid self-seeking of a sinful world, as a beacon light to seekers of the right path, and as a token of the god in man."

Kausalya, desolate on losing her husband and son taunts Bharata. "Bharata, the kingship is waiting for you. Take it, and may all happiness be yours. Only one boon I crave of you. Let me join your father on the funeral pyre." These words irk Bharata. He swoons. After a while he gets up and says: "Mother, why do you thus torture me? I was away. I never knew anything about of the wicked intentions of my mother. Do you not know the love I bear for Rama? Would I ever do such a thing to him? Mayall the sins of the world descend on me if I had the least notion of the evil brewing here!" He lists all horrible sins and invokes upon himself the punishments thereof if he is found guilty. Bharata swears his innocence again and again. His sincerity convinces Kausalya. Rajaji declares that Kamban depicts this situation very vividly. Kausalya sheds tears of joy over Bharata and embraces him thinking he is Rama himself." The Kausalya and Bharata portrayed by Kamban", says Rajaji, "embody our culture. May these heroic figures and that culture live forever in the land of Bharata!"

After the performance of the obsequies of the dead King, Bharata swears to bring Rama back. The whole city cheers in anticipation of Rama's return. Bharata sets out along with an army and the royal retinue to the forest. He meets Guha and Bharadwaja on his way. Both suspect Bharata and question his intentions.

Rajaji at this point says: "This is, however, not so put in the Tulasidas Ramayana which is a poem of pure bhakti. There is nothing that was not within the knowledge of rishis. How then could Bharadwaja entertain any doubt about Bharata?" Kamban, the Tamil poet of the Ramayana, follows Valmiki closely not only here but in many other places where Tulasidas differs. Although Kamban carefully follows Valmiki, he adds many beautiful passages out of his own imagination. With a touch here and a touch there, Kamban manages skillfully to disentangle many knots. The changes he makes are very few, while Tulasidas deals freely with the story, taking such liberties as he likes with the story as a great bhakta may, who has made his god his own by self-forgetting surrender. Following Valmiki, Kamban reports the conversation between Bharadwaja and Bharata and very beautifully expresses Bharata's indignation. We may not, reading it all today, appreciate Bharadwaja's doubts about innocent Bharata. Such suspicion was perfectly natural to Guha, but not so in a wise rishi. Valmiki makes the rishi justify himself saying: "Don't I know you, young prince? I put you these questions only to reveal your innocence." Valmiki pictures rishis not as omniscient sages, but as very human wise men and seekers after truth, liable to love and fear somewhat like the rest of us.

Just as Valmiki delineates Rama as a hero rather than as an avatar, so he makes Bharadwaja doubt Bharata because of his tender affection for Rama. Bound by his attachment to Rama, he hurts Bharata. Seeing the latter suffer, he at once consoles him with an explanation. All of Valmiki's characters are human beings with heightened human qualities. It is only under great stress or in exceptional circumstances that divinity shines through human nature. In the time of Tulasidas, bhakti had reached its noonday height. It shone dispelling every shade. Though bhakti predominates in Kamban's picture also, he contrives to retain the humanity of Valmiki's characters and in places makes them even more beautiful."

Bharata meets Sri Rama at Chitrakuta with Lakshmana and Sita by his side. He hopes to undo the damage done by others. He leaps forward and falls at Sri Rama's feet. The episode of Bharata meeting Rama in Valmiki Ramayana is famous for the long lecture given by Rama on the art of governance. Rajaji says: "Often in our epics, we come across such long dissertations on politics or morality. Modem fiction gives high priority to narrative vigour, dramatic suspense and surprise. In old works, in addition to plenty of these qualities, there were generous doses of didactic teachings. Kamban has regularised and modernised the narrative. In Tulsidas, the meeting of Rama and Bharata is steeped in bhakti and there is no room for any complications."

Rama learns that his father is dead. The princes go to the river and offer libations to the departed King. After the customary ceremonies, when the princes return to the cottage, Bharata composes himself and addresses Rama with tear-filled eyes: "Sending you to the forest, and unable to bear the pain, our father departed to heaven. My mother has become a sinner and a widow in deep sorrow. You must save us all now. We have all come here with a prayer. Without a king, Ayodhya is helpless and desolate. Please come back to Ayodhya and make us happy. Do not refuse, O, brother!" Bharata clings to the feet of Ramachandra. Rama lifts him up and embraces him. He replies: "Child, we were born in a noble family and brought up in good ways. Neither you nor I can do anything wrong. I see no fault in you, my blameless brother! Do not feel sad and do not blame your mother. Our father has the right to tell us what to do. How could we disobey him? He gives you kingship and ordains me to live in the forest. What right do we have to alter his plans? It is your duty to rule the land. I shall live for fourteen years in the Dandaka forest." Bharata's repeated requests go in vain. Sri Rama insists that Bharata should rule Ayodhya. Then the sage Vasishtha offers a solution. He asks Bharata to rule the kingdom under Rama's authority as his deputy. Rama takes Bharata on his lap and tells him, "Brother, look on the kingdom as my gift to you. Accept it and rule it as our father wished." Bharata accepts and asks for his ***padukas*** as a token of his rule of Ayodhya till his return. Sri Rama accepts and places his feet on a pair of the ***padukas*** and hands them over to Bharata who prostrates and carries them on his head. Bharata and his retinue go back to Ayodhya. He installs the ***padukas*** on the throne and deriving his authority from them, he rules Ayodhya while staying at Nandigrama.

Chitrakuta was an outpost of the demons. Called Janasthana, that place was ruled by Khara. He was Ravana's brother. Rama's presence there was offensive to the demons and they in turn started troubling the local sages there. After Bharata's departure, Rama also felt lonely with sad memories and makes up his mind to leave that place. He goes to the hermitage of sage Atri seeking his advice. Atri and his wife Anasuya affectionately receive Rama, Lakshmana and Sita. Anasuya specially blesses Sita. Then on, Rama, Lakshmana and Sita spend about ten years going from one hermitage to the other as visitors and receive the blessings of many sages. Finally, they visit sage Agastya and receive his blessings. The sage grants them a great bow, a sword and an inexhaustible quiver to Rama asking him to use these to destroy his enemies. He advises the prince to go to Panchavati.

The birds, the trees, the creepers, the flora and fauna of the forest are beautifully described by Valmiki. Rama is thrilled by the beauty of Panchavati. He asks Lakshmana to build a cottage there. Lakshmana constructs one. The skill and ingenuity of Lakshmana's workmanship is once again applauded here. Sri Rama sheds tears of joy and admires Lakshmana saying "You are more than a father to me." Rajaji adds at this point that since Lakshmana could do this, we must infer that in those days education included a knowledge of creating useful things for real life in all its concreteness aiming at the development of manual skill and strength."

Once a demoness called Shurpanakha, Ravana's sister, approaches Sri Rama saying that she is in love with him. She asks Rama to marry her, after giving up Sita. Rama smiles and jocularly asks her to marry his brother. She accordingly approaches Lakshmana. Lakshmana also humorously declares that he is a slave and asks her to seek Rama, the Lord. She, then, accosts Sri Rama and springs on Sita to finish her. Sri Rama intervenes just in time and asks Lakshmana to punish her. Lakshmana maims Shurpanakha and drives her out.

Disgraced Shurpanakha runs to Khara, her brother, and relates her story. Khara gets enraged and orders his men to go and slay the offenders. Fourteen demons set out to do punish Rama. Kamban describes this Shurpanakha episode differently. Rajaji points out the changes made by Kamban. Rajaji says: "There are people who criticise our holy books and traditions saying 'This hero insulted and injured a woman who loved him. He killed Vali hiding behind his back. He unjustly banished Sita to the forest.' All such criticism is based on a mentality of hatred. We have regrettably plenty of barren, heartless cleverness, devoid of sympathy. Let those who find faults in Rama see faults, and if these critics faultlessly pursue dharma and avoid in their own lives the flaws they discover in Rama, the bhaktas of Sri Rama would welcome it with joy. If they exhibit the virtues of Rama and add to these more virtues and greater flawlessness, who can complain?"

All the fourteen generals of Khara get beaten by Rama. Once again, Shurpanakha runs to Khara and prompts him to kill Rama. Khara encounters Rama with a huge army. Rama stands there singly and quells the whole army of

Rakshasas. At this point, Rama, with his bow in hand, is like Rudra himself holding his Pinaka. Within an hour Rama destroys Khara, Dushana, Trishiras and their whole army of fourteen thousand demons. Divinities and sages hail Sri Rama with awesome veneration. This moment marks the most delightful moment in Sita's life. She embraces Sri Rama with seamless pride and boundless admiration.

Akampana, a demon who survives the slaughter at Panchavati, flees to Lanka to inform Ravana about what has transpired. Ravana becomes furious. Akampana describes the beauty of Sita and asks Ravana to abduct her. Ravana gets kindled. He takes Akampana's advice and goes to Maricha seeking his assistance in the abduction of Sita. Maricha gets horrified and dissuades Ravana from carrying off Sita. Ravana is made to accede and return to Lanka.

Ravana's sister Shurpanakha meets Ravana and relates her plight to him. Accusing him of being a coward in spite of his boon that he would not be killed by anybody other than human beings. His stance that human beings are trivial is no more valid. Khara and Dushana along with the entire force of demons were all killed by Rama singly. When a sovereign's authority is disgraced and the sovereign does not take action in retaliation, how can such sovereign continue to rule? Ravana was stung by her contempt. Now he resolves to abduct Sita. He goes again to Maricha and compels him for support in his lustful enterprise. Maricha advises Ravana again and again not to trouble Sri Rama. Ravana refuses. He compels Maricha to take the form of a bewitchingly beautiful deer to attract Sita who would ask Rama to chase it. He asks Maricha to take Rama far off and cry out 'Oh, Sita, Oh, Lakshmana!' in Rama's voice so that Sita would send away Lakshmana to help Rama. Finding Sita alone, Ravana plans to carry her off to Lanka. Maricha thinks it is better to be killed by Rama than by Ravana. He transforms himself into a wonderful deer and we know what happens later.

Ravana takes Sita off into Lanka. He exhibits his wealth and prowess. He promises to make her the mistress of all his royal wealth. He even begs her. Sita never cares. She retorts by praising Rama's greatness and godliness. She pays high tributes to Dasharatha as the bulwark of dharma and the defender of truth. She derides Ravana. In spite of Ravana's boon that no god or demon can kill him, she warns that Rama would slaughter him like a goat. Ravana gets upset. He rebukes her and orders his attendants to tame her within 12 months. Sita suffers as the prisoner in the Asoka garden till the mighty Hanuman, crossing the sea, visits Sita and delivers the message of assurance from Rama.

The distress of Rama at the loss of Sita and his sad plight are pictured in inimitable terms by Valmiki. It is Lakshmana that consoles Sri Rama. Rama behaves like an ordinary human being under the spell of gloom and misfortune. Rajaji thinks that a pen-picture of human plight is illustrated here. He says: "We see here the picture of true and equal love between a virtuous man and woman and the anguish of loss. The episode may also be interpreted allegorically. Rama's sense of privation, when he misses Sita, is a measure and image of the mind of God when a single human soul is lost through sin. One may ask whether God can lose or can suffer pain of mind. If one realises that all life is divine play, no further exegesis is needed. Sin, merit, devotion, all are aspects of that sport. Each one of us is beloved of the Lord. If for any reason we are swept away from the right path, He suffers like a lover who has lost his love. And His sorrow too is a part of His great play."

Sri Rama performs the last rites of Jatayu. Rajaji remarks: "To millions of men, women and children in India, the Ramayana is not a mere tale, It has more truth and meaning than the events in one's own life. Just as plants grow under the influence of sunlight, the people of India grow in mental strength and culture by absorbing the glowing inspiration of the Ramayana. When we see any helpless person in danger or difficulty, let us think of Jatayu and with firm mind try to help regardless of circumstance. Rama's losing health and lamenting in sorrow may be compared to the behavior of another incarnation honoured by another faith. It is said in the Bible that Jesus, nailed to the cross and about to give up his ghost, cried with a loud voice: "My God, why have you forsaken me?" The mystery of incarnations is ever the same. They suffer and grieve like mortals."

While passing through the forest, the two princes encounter Kabandha. They kill him. He advises them to proceed towards Pampa. The princes go to Kishkindha. The fugitive Vanara prince Sugriva and his minister Hanuman along with some supporters see Rama and Lakshmana in Pampa roving in the forests and are troubled with doubts. Sugriva was expelled by his brother Vali by a cruel fate. Vali was forbidden to enter the hermitage of sage Matanga where Sugriva lived. This Vali and Sugriva episode gives a good moral lesson according to Rajaji. He says: This is what we learn from the story of Sugriva. One should not desire what belongs to another. One has to exercise great care and control one's desires. In contrast to Sugriva, when the ministers and subjects in Ayodhya pressed Bharata to accept the crown, he was firm in his refusal. Bharata's strength of character was great. But Sugriva was different. He was weak and suffered in consequence. Bharata had the courage to refuse and his name lives forever. In every episode of the Ramayana, some lesson which we should learn for our daily life is taught. The meaning is in some places plain; in others it may lie hidden. If we read with reverence and think deeply, we can always see the moral."

Sugriva and Rama become good friends. At this moment, the left eyelids of Sita throbs in the Asoka garden at Lanka. It is a good omen for women. At the same time, the left eyelids of Ravana also throbs. It is an evil sign to him. Rama kills Vali. Vali's son Angada and wife Tara cry in agony. Sugriva feels sad. He regrets that his desire had blinded and betrayed him to get his brother killed. Rajaji points out the severity of greed that functions as man's internal foe. He refers to the last seven shlokas of the third chapter of the Gita where Sri Krishna says

***"jahishatrummahabahokamarupamdurasadam ".***

"If desire corrupted Sugriva's mind, anger corrupted Vali's. When Vali saw that Sugriva had barred the entrance and left him trapped in the cave, he felt convinced that Sugriva had accompanied him in his pursuit of the Rakshasa not as a brother but with a treacherous motive. He concluded that Sugriva had planned to sacrifice him to the Asura and usurp his place. He became a prey to his own .fury. He disgraced and drove out his blood brother and nursed his anger. Anger betrayed Vali into sin. Indeed, kama and krodha are the ultimate causes of all sin. Unless we defend our heart against these foes and keep them out, we cannot escape sin."

"At least once a year, men that follow ancient customs utter the prayer Kamokarsheetmanyurakarsheet. That is: 'Desire lured me into sin, anger lured me into sin.' So saying many times with humble penitence, they seek to cleanse their hearts. This is a practice that all should follow to repent and purify the heart and surrender it to the Lord, Kamokarsheetmanyurakarsheet, Narayanayanamah."

Tara visualises Sri Rama as Lord Vishnu's incarnation as she glances at Rama. Rajaji explains the traditional belief that like Sumitra, the mother of Lakshmana, Tara, the wife of Vali, was a rare ***jnani.*** Though at first she disliked Rama for his deceit, when she saw him face to face she realized his divinity. Those who read the Ramayana as a mere tale would miss this wisdom. But for the devoted followers of bhakti, these revelations are valid. Tulasidas reveals what Siva explains to Parvati:

"Look, Uma, at how Rama, the Supreme Being, moves all creatures like puppets tied to strings!" Bhakti is needed to realise the full meaning of Hindu ancient mythology. Even on a rational basis, Tara comes out as a diplomat, an expert in statesmanship. She had the intelligence to anticipate coming events. What had happened had happened. It was due to his good fortune that Sugriva had secured the alliance of Rama. Vali was no more; Angada's welfare was all that she should care for hereafter. Could Angada afford to antagonise Sugriva with Rama and Lakshmana ready to support him bow in hand? Peace, not war was indicated. Hence, when she concealed her anger from Rama and put on an appearance of patient submission to events, she was really securing the best interests of Angada and winning for him the compassion and sympathy of all."

Sugriva sends a huge army of monkeys to hunt for Sita in all directions. Angada with Hanuman and others travel southwards. Hanuman crosses the sea and traces Sita in Asoka Vana after searching for her everywhere in Lanka including Ravana's palace. Unable to bear the harassment of Ravana in spite of her brave rebuffs, when Sita was about to put an end to her life in dejection, Hanuman meets and consoles her. He destroys Ashokavana to teach Ravana a lesson. He kills hosts of Rakshasa warriors including Meghanada, the son of Ravana. He becomes the hero of Ramayana. He meets Ravana finally and gives a warning to him. Enraged, Ravana orders to set fire to his tail. Hanuman escapes unhurt and making use of the fire at the tip of his tail, he sets the whole city of Lanka ablaze.

The Sundarakanda describing the exploits of Hanuman is often taken up for ***parayana*** (devotional reading) in Hindu orthodox circles. It is believed to be efficacious in granting security against evil and perils. Hanuman returns and reports his exploits. Sri Rama rejoices on listening to the news. He admires and thanks Hanuman by embracing him in love. A huge army of monkeys jumping and roaring starts' getting ready for the impending war against Lanka.

Rajaji takes us at this juncture to the court of Ravana. Valmiki's aim, according to Rajaji, is to promote righteousness. His kavya not only depicts Rama but also contains several other characters like Ravana, Vali, Manthara and others with different rajasik and tamasik tendencies. Readers with rajasik and tamasik tendencies may sympathise with such characters. They may deride the hero and his satvik supporters in the poem.

"Paradise Lost", says Rajaji, "the English epic on a Biblical theme, is famous throughout the world. In this poem, Milton delineates the Almighty and Jesus, His spiritual son and human incarnation, as well as several orders of angels. But the most impressive character in the great epic is Satan who rebelled against God and brought sin and death into this world. Critics of English poetry admire Milton's wonderful success in the characterisation of Satan. Similarly, the great dramatic poet Shakespeare has created a wonderful character in Shylock, the usurer and miser. Even such embodiments of despicable qualities are presented by the poets as possessing courage, determination, energy and other good qualities that attract us and serve as a bright background to their blackness. In Valmiki's portraits of Ravana and Kumbhakarna too, we notice the same artistic skill. The cook who meets all tastes shows his skill in making out of bitter vegetables an attractive dish. So does the poet show his skill in portraying evil."

Ravana, who was humiliated by the exploits of Hanuman, summons his ministers and army chiefs. He seeks their support to retain Sita and kill Rama. All in his assembly cheer him up and flatter him as the invincible hero of great strength. But Vibhishana feels it is his duty to save him. He requests Ravana to give Sita back to Rama. He warns that if he fails to do so he would surely perish. The self-indulgent and the conceited Ravana gets infuriated and orders Vibhishana to get out. Unable to bear the insult, Vibhishana walks off saying: "You can do as you please. You are departing from the path of dharma. I can only warn you. It is easy to speak sweetly like your ministers. I speak what is true for your good. Defend yourself. God bless you! I am going." Giving up all his connections with Lanka, Vibhishana, with his four friends reaches Rama's camp on the sea shore. The monkey chieftains at the camp notice Vibhishana and get ready to attack him. Vibhishana at once announces himself as the brother of Ravana. He declares his brother's deed improper. He asks for protection from Rama. Vanara heroes report this news to Sri Rama. They warn him that these ***rakshasas*** are deceptive. Rama listens to everybody's opinion and finally decides to accept Vibhishana. "If a man comes as a friend," says Rama, "how can I reject him? It is against the law of my life. All of you, my friends and helpers, should know this. Once a man surrenders to me, I shall overlook all his faults and protect him. This is my dharma. It does not matter if as a result of this I suffer. I can never deviate from it. Even if Ravana comes seeking protection, I would safeguard him for sure. Go and fetch Vibhishana." Sugriva brings Vibhishana. This incident imparts an important instruction as recorded in the Ramayana. Like Krishna telling Arjuna in the Gita that he would take care of his followers, Rama also offers his solemn assurance in the presence of Sugriva and others that he would safeguard the interest of his followers. Vibhishana records his indebtedness and pledges support to Rama. Rama, along with Sugriva, Lakshmana, Vibhishana and others deliberates on how to cross the sea. Rama accepts to fast and lays himself on a spread of darbha grass on the sea shore to placate Samudra Raja, the sea god, who never responds. Rama becomes indignant after the third day and declares to Lakshmana that low-minded entities mistake gentleness for weakness. He takes up his bow and arrows and furiously starts shooting his irresistible arrows as thunderbolts into the bosom of the sea. To the dismay of one and all there, his arrows make the sea to exhale steam in agony. The sea-god appears before Rama in person saying that he has his own limitations. He must obey the laws of nature. He says that the monkeys can bring boulders and wood to build a bridge across the sea. He assures to favour and recommends Nala, the son of Viswakarma, to build the bridge. Sri Rama accepts the plan and the offer of help. Nala takes up the job. All the Vanaras join hands enthusiastically and finish building the causeway.

The battle begins. The army of vanaras surrounds Lanka on all sides. Rama sends Angada to pass on his message to Ravana. Promptly, Angada delivers the message that time to reap the fruits of his sin has come. Surrendering to Rama is the best way to escape and to choose combat with Rama is to die. Ravana, in a frenzy, orders his folk to seize and kill Angada. Rakshasas catch hold of Angada but he escapes and returns to Rama. Angada's exploits shocks the Rakshasas. The fierce battle lasts for long and casualties rise.

Yuddhakanda picturesquely describes the entire battle. Rakshasas lie down dead in the battlefield. Rama remains invincible. Ravana loses heart. Monkey forces enter the fortresses and destroy Lanka. All sons, including Indrajit, brother Kumbhakarna, all generals die in spite of Ravana's defensive mechanism and expert supervision. Lanka is downcast and forlorn. Ravana, in grief, shame and anger comes out accompanied by the remaining forces of Virupaksha, Mahodara and Mahaparsva. The last round of the deadly warfare with arrows swords, spears, maces, tree trunks and rocks ensues. The grim battle seems never-ending. Matali, the charioteer of Indra arrives with the chariot and asks Rama to mount it and fight. Forcing his way past Lakshmana, Ravana finally comes to combat against Rama. Rama strikes at Ravana repeatedly, unmindful of Ravana's arrows. They fight using potent missiles of hidden power. Gods in heaven look on this feat with marvel and admiration. Rama keeps uttering spells and keeps shooting the arrows. Ravana's heads keep falling one by one. But every head that is cut off, grows again. This baffles Rama. Matali now whispers into Rama's ear: "The Rakshasa's end is approaching. Delay no further. Le~ me remind you of the Brahmastra." Rama takes up the Brahmastra and directs it towards Ravana. The missile emits flames and pierces Ravana's chest. Ravana falls down dead. The gods blow their trumpets. Rama is showered with flowers from over the heavens. Vibhishana performs the last rites. Hanuman takes the permission of Vibhishana and runs to Sita at Ashoka Vana to convey the good news. Sita is delighted.

Hanuman returns to Rama and finds him sad and frowning. Rama orders Vibhishana to bring Sita bathed and bedecked. Sita gets bathed and bedecked though she wants to see Rama without ornaments. Vibhishana brings her carried in a palanquin. Monkeys throng around to see the princess, thus causing disorder. Rama shouts at Vibhishana not to parade her that way and drive the monkeys away. He says the monkeys are dear to him. They have after all stood by him and suffered. Rama's strange reaction and the change in mood turn unfathomable. The Sita gets down from her palanquin. With downcast eyes, she approaches Rama. Sri Rama indifferently says that he has slain the enemy and fulfilled his vow. It was not to get back Sita, he says, that he waged the war. He only discharged his duty as a Kshatriya. He tells her that hereafter she can choose anybody to live with. How can a Kshatriya take back his wife that has remained in a stranger's house for so long? Sita is pained by this unworthy treatment. She asks Lakshmana to fetch wood and kindle fire. Lakshmana in dismay looks at Rama but he remains emotionless. Obediently he kindles a big fire. Sita jumps into the fire. There appear all gods at once from out of the fire. Brahma announces that Rama is Narayana and Sita is Lakshmi. The Fire-God lifts up Sita in his arms and presents her to Rama. Rama accepts Sita. He says that this ordeal was to pacify the people at large who would condemn him otherwise. Dasaratha appears and blesses the prince. He asks Sita to forgive his son. Indra grants a boon saying all vanaras who died in battle would regain their lives.

Vibhishana offers the Pushpaka Vimana. Rama and Sita take it and goes to Ayodhya along with the ***vanara*** warriors and Vibhishana. On their way, they alight at the hermitage of sage Bharadvaja. Rama sends word in advance to Bharata through Hanuman. Bharata bows down to Sri Rama. Rama gets crowned as the King of Ayodhya.

I have retold in brief the story of the Prince of Ayodhya, says Rajaji, "as sung by Valmiki. Those who read or listen to the tale, will be saved from sin and sorrow. Sri Shankara, the master of wisdom, has said that, if one keeps in one's heart the son of Dasaratha and meditates on him with reverence, one's sins will all be burnt up as chaff in a fire." Rajaji says in his epilogue: "On one occasion Gandhiji and I were talking about a girl very dear to both of us. I said: "How did she get all these ideas and phrases of love without having read any of present-day love stories?" Gandhiji said in answer: "But has she not read the Ramayana? Is the Ramayana not a love story too?" This struck me as profound. "

❑

# Coronations in Srimad Ramayanam

**Shri K.G. Raghavan**

When one hears the term coronation or "*Pattabhishekam*" with reference to Srimad Ramayanam, the first thought that comes to the mind is the131st canto or sarga in the Yuddhakandam, its last, namely, the Ramapattabhishekam. It is considered auspicious to recite this Canto as it is the culmination of a long set of events beginning from the Yagna performed by King Dasaratha praying for a progeny i.e., putrakameshti to an explosive war between Sri Rama and the Rakshasa king Ravana.

When one hears the term coronation or *"Pattabhishekam"* with reference to Srimad Ramayanam, the first thought that comes to the mind is the131st canto or sarga in the Yuddhakandam, its last, namely, the Ramapattabhishekam. It is considered auspicious to recite this Canto as it is the culmination of a long set of events beginning from the Yagna performed by King Dasaratha praying for a progeny i.e., putrakameshti to an explosive war between Sri Rama and the Rakshasa king Ravana. To a devotee of Sri Rama, it is the end of a saga of disappointment arising out of their favourite Lord Sri Rama being deprived of becoming the King of Ayodhya and being banished to the forest for 14 years and the end of a tumultuous era in Sita's life. To others, it is the logical end to an adventurous story. There is more than good reason for this euphoria. It sees the divine Lord himself occupy the mundane throne and the assembly of all the saints, seers and kings from across. This canto is brilliant in the description of the mood of the inhabitants of the kingdom of Ayodhya and the grandeur of the celebrations. It appears as if the Adikavi himself was taken in by the occasion as the description of the coronation ceremony is unparalleled. I will advert to it appropriately.

Be that as it may, the fact is that Sri Ramapattabhishekam is the last of the series of coronations in Srimad Ramayanam. The first is the coronation of Sri Rama's paduke by Bharata; the next being the coronation of Sugriva as the King of Kishkinda. This is followed by the coronation of Vibhishana as the King of Sri Lanka. Each of these coronations have their own uniqueness stamped by Sri Rama's quality as *"Maryada Purushothama"*. These events have been described and explained by great seers and learned authors in their own bewitching beauty and style. The endeavour in the succeeding few pages is to present to the reader a taste of this beauty and style.

Sri Rama departs from Ayodhya with his wife Sita and his brother Lakshmana to enter the forest in obedience to his father's wishes. Bharata, the son of the youngest queen of Dasaratha at whose behest Sri Rama is banished to the forest and Bharata is to be anointed the King of Ayodhya, returns from his sojourn to Ayodhya and is steeped in sorrow at learning of the turn of events. Dashratha attains immortality unable to bear the sorrow owing to separation from his dear son Sri Rama. Bharata detests the actions of his mother. He refuses the throne. He shuns the pleasures of the royal palace. The upper most thought in his mind is as to how to undo the wrong and bring Sri Rama back to the Ayodhya as its king. With determination, Bharata exits from Ayodhya and heads straight to the forest crossing the sacred Ganges river. Bharata enters the Chitrakoota forest with his retinue. Lakshmana who is short tempered by nature on sighting the army with Bharata in the lead gets into a rage and tells Sri Rama that Bharata is out to kill them in order to ensure that the throne is firmly in his control and that Ayodhya is not tormented by them.

संपन्नं राज्यमिच्छंस्तु व्यक्तं प्राप्याभिषेचनम् ।
आवां हन्तुं समभ्येति भरतः कैकयीसुतः ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S.17 Sarga 96*

Lakshmana prods Sri Rama to go to war with Bharata. He swears he will kill Bharata and there is nothing wrong in it.

Bharata had wronged Sri Rama first and that Sri Rama was only avenging the wrong.

संप्राप्तोऽयमरिर्वीर भरतो वध्य एव मे ।
भरतस्य वधे दोषं नाहं पश्यामि राघव ॥
पूर्वापकारिणं हित्वा न ह्यधर्मेण युज्यते ।
पूर्वापकारी भरतस्त्यक्तधर्मश्च राघत्र ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S. 23-24 Sarga 96*

This depiction of anger and rancour on the part of Lakshman is significant by its absence in the rendition of Adhyatma Ramayan.

But Sant Tulsidas recites the tale carried by Lakshmana against Bharata to Sri Rama in great detail. While it is true, explains Lakshmana to Sri Rama that Bharata is a person given to rectitude in behaviour and a person of pious disposition, the fact remains that once a person comes to occupy a position of power he tends to forget all good qualities and concentrates only on how to secure his position from danger. That is what Bharata now is who has now come to attack Sri Rama when he is alone in the forest.

बिषई जीव पाइ प्रभुताई ।
मूढ मोह बस होहिं जनाई ॥

भरतु नीति रत साधु सुजाना ।
प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥

तेऊ आजु राम पदु पाई ।
चले धरम मरजाद मेटाई ॥

कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी ।
जानि राम बनबास एकाकी ॥

*Tulsidas ; Ayodhya Kanda : Doha 227 (1) (2)*

But Sri Rama does not take any of this and pacifies Lakshmana and extols the good qualities of Bharata. He even goes to the extent of saying that he will ask Bharata to give up the kingdom in his (Lakshmana's) favour. Lakshmana feels ashamed at his behaviour.

तथोक्तो धर्मशीलेन भ्रात्रा तस्य हिते रतः ।
लक्ष्मणः प्रविवेशेव स्वानि गात्राणि लज्जया ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S.19 Sarga 97*

The pacifying words of Sri Rama is put by Sri C. Rajagopalachari in his "Ramayana", a Bharatiya Vidya Bhavan publication

> *"I know you can destroy that seven worlds if you are so minded. Listen you can easily kill Bharata and his army….. Disobeying and disgracing our father and killing our brother and earning infinite obloquy, what good shall we gain by battling for and winning the kingdom……...I know why Bharata is coming here now and I will tell you. He knows the way of Dharma. He is coming here to give the kingdom to me………. If it is desire for the kingdom that makes you so cruel in your suspicion, tell me. I have only to tell Bharata to pass it on to you, and I make no doubt he will do it, with pleasure."*

Bharata halts his army at a distance from Sri Rama's abode. He along with Shatrughna with a handful of others approach Sri Rama's humble place of residence. Having sighted his brother Sri Rama in ochre robes, Bharata is overcome with sorrow and as he attempted to fall at his feet, Bharata falls unconscious with the cry of "Arya" on his lips.

बाष्पापिहितकण्ठश्च प्रेक्ष्य रामं यशस्विनम् ।
आर्येत्येवाभिसंक्रश्य व्याहर्तुं नाशकत्ततः ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S.39 Sarga 99*

Then follows a learned conversation between Sri Rama and Bharata on the do's and don'ts in the matter of administration. The four brothers and he three mothers with ministers and sages are all together. Sri Rama still does not know that their father Dasaratha has departed from this world. At that moment Bharata discloses to Sri Rama that Ayodhya has been orphaned and pleads with Sri Rama to return to Ayodhya and take up the throne and bring prosperity to the dynasty.

ससमृद्धां मया सार्धमयोध्यां गच्छ राघव ।
अभिषेचय चात्मानं कुलस्यास्य भवाय नः ।

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S.3 Sarga 101*

Bharata berates his mother Kaikeyi in no uncertain terms. Promptly Sri Rama stops Bharata and tells him that because of ignorance due to young age he is abusive of his mother and that is to his dislike.

न दोषं त्वयि पश्यामि सूक्ष्ममप्यरिसूदन ।
न चापि जननीं बाल्यात्त्वं विगर्हितुमर्हसि ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S.17 Sarga 104*

Bharata continues to plead, compel and pester Sri Rama to return to Ayodhya and take up the reins of administration. But Sri Rama is firm in his resolve that he will fulfil his father's command and not return to Ayodhya without doing so.

Having failed in his attempt to persuade his brother to return to Ayodhya, Bharata proposes that Sri Rama should give his sandals or paduke as a token of his will. That will reign Ayodhya till he returns. Rama places his feet on the sandals offered by Bharata and gives it to him. Having received the same Bharata vows that for the next fourteen years he will wear only ochre clothes; have a tuft; never enter Ayodhya and will only do everything in the name of the sandals. Perchance if Sri Rama does not return immediately after the completion of the fourteen year tenure, he will commit himself to fire the next day.

एवं ब्रुवाणं भरतः कौसल्यासुतमब्रवीत् ।
तेजसादित्यसंकाशं प्रतिपच्चन्द्रदर्शनम् ॥ २०

अधिरोहार्य पादाभ्यां पादुके हेमभूषिते ।
एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः ॥ २१

सोऽधिरुह्य नरव्याघ्रः पादुके व्यवमुच्य च ।
प्रायच्छत् सुमहातेजा भरताय महात्मने ॥ २२

स पादुके संप्रणम्य रामं वचनमब्रवीत् ।
चतुर्दश हि वर्षाणि जटाचीरधरो ह्यहम् ॥ २३

फलमूलाशनो वीर भवेयं रघुनन्दन ।
तवागमकनमाकाङ्क्षन् वसन् वै नगराद्बहिः ॥ २४

तव पादुकयोर्न्यस्य राज्यतन्त्रं परंतप ।
चतुर्दशे हि संपूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम ॥ २५

न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम् ।
तथेति च प्रतिज्ञाय तं परिष्वज्य सादरम् ॥ २६

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S. 20-29 Sarga 112*

Sri Rama does so and gives a word to Bharata that he will return accordingly. Bharata receiving the sandals of Sri Rama places it on his head and then on to the royal elephant. Bharata does not enter Ayodhya and stops at Nandigrama, on the outside of Ayodhya; performs the coronation of the sandals; pays the respects due to a king himself and does all acts of administration only in the name of the divine Sandals.

पादुके त्वभिषिच्याथ नन्दिग्रामेऽवसत्तदा । ३
सवालव्यजनं छत्रं धारयामास स स्वयम् ॥ २५
भरतः शासनं सर्व पादुकाभ्यां न्यवेदयत् ।
ततस्तु भरतः श्रीमानभिषिच्यार्यपादुके ॥
तदधीनस्तदा राज्यं कारयामास सर्वदा ॥

*Valamiki ; Ayodhya Kanda : S. 25-26 Sarga 115*

The approach of Bharata in his present predicament has been presented touchingly by Kamala Subramaniam in her treatise on the Ramayana in the following words:

> *"I have been appointed as the guardian of the country by my revered brother. These sandals will rule the kingdom. …… To me these are the blessed feet of my brother. The white umbrella will be held above them and they will inspire me to walk in the right path and never to swerve from it. I will guard them as my very life."*

Sant Tulsidas extols the qualities of Bharata and his condition. He observed strict austerities both in food and living style. He adopted the strict rules of a hermit living a small hermitage.

दों–सुनि सिख पाइ असीस बडि गनक बोलि दिनु साधि ।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥ ३२३ ॥

*Tulsidas ; Ayodhya Kanda : Doha 232*

To conclude on this,it is apt to refer to the English translation by Sri P.S.Sundaram of Kamba's treatise on the Ramayanam. Bharata failed in his attempt to persuade Sri Rama to return and the firmness of Sri Rama's resolve took the better.

> *"His resplendent body covered with dust and eyes brimming with tears, Bharata placed the sandals reverently on his head, saying, 'These two will now be my crown' and left."*

And now to the **second coronation** in the Srimad Ramayana, namely, the **coronation of Sugriva** as the king of Kishkinda. Vali is killed. The kingdom of Kishkinda is restored to Sugriva. It is the time to anoint Sugriva as the king. This ceremony is described in the 26th canto of the Kishkinda Kanda of Srimad Ramayana. Sri Rama is invited to enter Kishkinda and perform the coronation of Sugriva. This invitation is extended by none other than Hanuman himself who by then had become Sri Rama's parama bhakta. But that maryadapurushothama refuses to heed to Hanuman's pleas.

> *"I am performing a duty towards my father and discharging his promise. I have vowed that for the next fourteen years I will not enter a town or a village. Let Sugriva enter the prosperous*

*and enchanting Kishkinda and let the coronation of Sugriva take place".*

चतुर्दश समाः सौम्य ग्रामं वा यदि वा पुरम् ।
न प्रवेक्ष्यामि हनुमन् पितुर्निर्देशपालकः ॥
सुसमृद्धां गुहां रम्यां सुग्रीवो वानरर्षभः ।
प्रविष्टो विधिवद्वीरः क्षिप्रं राज्येऽभिषिच्यताम् ॥

*Valamiki ; Kishkinda Kanda : S. 9 & 10 Sarga 26*

Sri Rama also directs that Angada should be crowned as the deputy.

इममप्यङ्गदं वीर यौवराज्येऽभिषेचय ।
ज्येष्ठस्य स सुतो ज्येष्ठः सदृशो विक्रमेण ते ॥
अङ्गदोऽयमदीनात्मा यौवराज्यस्य भाजनम् ।
पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सलिलगमः ॥

*Valamiki ; Kishkinda Kanda : S. 12-13 Sarga 26*

Sugriva is thus installed as king of Kishkinda. All ceremonies are duly performed. Rituals were performed by the Brahmins. The throne had diamond studded exterior and was also covered by precious clothing. Sugriva was made to sit on the throne facing east. All the leaders of the Kishkinda clan joined in anointing Sugriva as the king of Kishkinda. The coronation ceremony was like the Vasus, the divine angels in heaven, performing coronation of Indra himself.

मैन्दश्च द्विविदश्चैव हनुमाञ्जाम्बवान्नलः ।
अभ्यषिञ्चन्त सुग्रीवं प्रसन्नेन सुगन्धिना ॥
सलिलेन सहस्राक्षं वसवो वासवं यथा ।
अभिषिक्ते तु सुग्रीवे सर्वे वानरपुंगवा : ॥

*Valamiki ; Kishkinda Kanda : S. 35-36 Sarga 26*

And Sugriva performs the coronation of Angada as his deputy much to the appreciation of all.

अङ्गदं संपरिष्वज्य यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ।
अङ्गदे चाभिषिक्ते तु सानुक्रोशाः प्लवङ्गमाः ॥ ३८
साधु साध्विति सुग्रीवं महात्मानोऽभ्यपूजयन् ।
रामं चैव महात्मानं लक्ष्मणं च पुनः पुनः ॥ ३९

*Valamiki ; Kishkinda Kanda : S. 38-39 Sarga 26*

In Tulsi Ramayan, the coronation of Sugriva is performed by Lakshmana at the direction of Sri Rama.

राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥
दो – लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज ।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज ॥ ११ ॥

*Tulsidas ; Kishkinda Kanda : Doha 10-11*

This episode of coronation of Sugriva and Angada is brought in the Adhyatma Ramayana also as having been performed by Lakshmana at the direction of Sri Rama in the manner indicated by Sri Rama himself.

अनुज्ञातश्च रामेण सुग्रीवस्तु सलक्ष्मण : ।
गत्वा पुरं तथा चक्रे यथा रामेण चोदितः ॥५१॥

*Adhyatma; Kishkinda Kanda : S. 51 Sarga 3*

Kamba relates the advice tendered by Sri Rama to Sugriva on his coronation. (As rendered in English by Sri. P.S.Sundaram)

*"Go forth, my friend, and rule wisely with assistance from truthful counsellors and Loyal*

> *army chiefs devoid of sin. Get the best out of everyone, by understanding their nature. Show even your enemies a pleasant face and a sweet tongue. You have wealth that even gods might envy. use it well and wisely. Be generous and don't covet the wealth of another. Desist from hurting the weak. This I say from experience. As a boy, I thoughtlessly struck hunchback Manthara, Kaikeyi's loyal maid, with mud pellets from a sling and am paying for that sin in this life itself. Think of yourself not as a king but as a loving mother but deal sternly with all evil doers."*

Thus was the second coronation.

In the raging war between Sri Rama and Ravana, Sri Rama emerged victorious and Ravana was vanquished. Then the question arose as to who should be the king of Sri Lanka. Rejecting the faint and feeble suggestion made by Lakshmana to Sri Rama to stay back in Sri Lanka, Sri Rama tells Lakshmana:

> *"Even though this Lanka is made of gold, it still does not appeal to me. The mother who gave birth to me and my motherland are more respected and at a higher level than heaven itself."*

Thereafter, Sri Rama directs his brother to perform the coronation ceremony of Vibhishana as the king of Sri Lanka, and mentioning specifically that Vibhishana is very close to him and has been of yeoman help in troubled times and that he is very keen to see him as king of Sri Lanka at the earliest. On hearing this, Lakshmana quickly assembles the stalwarts of the monkey clan and organises the waters from the four seas.

विभीषणमिमं सौम्य लङ्कायामभिषेचय ।
अनुरक्त च भक्तं च मम चैवोपकारिणम् ॥ ९

एष मे परमः कामो यदीमं रावणानुजम् ।
लङ्कायां सौम्य पश्येयमभिषिक्तं विभीषणम् ॥ १०

एवमुक्तस्तु सौमित्री राघवेण महात्मना ।
तथेत्युक्त्वा तु संहृष्टः सौवर्णं घटमाददे ॥ ११

तं घटं वानरेन्द्राणां हस्ते दत्त्वा मनोजवान् ।
आदिदेश महासत्त्वान् समुद्रसलिलानये ॥ १२

अतिशीघ्रं ततो गत्वा वानरास्तु महाबलाः ।
आगतास्तज्जलं गृह्य समुद्राद्वानरोत्तमाः ॥ १३

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 9-13 Sarga 115*

Lakshmana himself takes a pot of water and performs the coronation ceremony with his own hands. And all the ministers and Rakshasas are pleased

ततस्त्वेकं घटं गृह्य संस्थाप्य परमासने ।
घटेन तेन सौमित्रिरभ्यषिञ्चद्विभीषणम् ॥ १४

लङ्कायां रक्षसां मध्ये राजानं रामशासनात् ।
विधिना मन्त्रदृष्टेन सुहृद्गणसमावृतम् ॥ १५

अभ्यषिञ्चत् स धर्मात्मा शुद्धात्मानं विभीषणम् ।
तस्यामात्या जहृषिरे भक्ता ये चास्य राक्षसाः ॥

दृष्टाभिषिक्तं लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ।
स तद्राज्यं महत् प्राप्य रामदत्तं विभीषणः ॥

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 14-15 Sarga 115*

Tulsidas relates this episode by first referring to the command of Sri Rama to Lakshmana to enter Sri Lanka with all his retinue including Sugriva, Angada, Hanuman, Jambavan, Nala and Neela and of course with Vibhishana. And later to the further direction to anoint Vibhishana as the king of Sri Lanka. No sooner, arrangements were made and Vibhishana was made the king.

आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो ।
कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥

तुम्ह कपीस अंगद नल नीला ।
जामवंत मारुति नयसीला ॥

सब मिलि जाहु विभीषन साथा ।
सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥

पिता बचन मैं नगर न आवउँ ।
आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ॥

तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना ।
कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥

सादर सिंहासन बैठारी ।
तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥

*Lanka Kanda : Doha 105*

In Adhyatma Ramayana, Sri Rama indicates that he has already crowned Vibhishana as the king of Sri Lanka and that the formality has to be done now. He directs Lakshmana to complete the same. And accordingly Lakshmana completes the assigned task and Vibhishana is crowned king of Sri Lanka.

विभीषणाय मे लङ्काराज्यं दत्तं पुरैव हि।
इदानीमपि गत्वात्वं लङ्कामध्ये विभीषणम् ॥४४॥

अभिषेचय विप्रैश्च मन्त्रवद्विधिपूर्वकम् ।
इत्युक्तो लन्दमणस्तूर्ण जगाम सह वानरैः ॥४५॥

लङ्केंच सुवर्णकलशैः समुद्रजलसंयुतैः।
अभिषेकं शुभं चक्रे राक्षसेन्द्रस्य धीमतः ॥४६॥

ततः पौरजनैः सार्ध नानोपायनपाणिभि ।
विभीषणः ससौमित्रिरुपायनपुरस्कृतः ॥४७॥

दण्ड़प्रणाममकरोद्रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।

*Adhyatma ; Yuddha Kanda : S.44-47 Sarga 12*

With this the third coronation is done .

The last is the coronation of Sri Rama himself as the king of Ayodhya.

Sri Rama along with Sita and others use the pushpaka Vimana to travel from Sri Lanka to Ayodhya and reach Nandigrama where Bharata is waiting with bated breathe. Bharatha sees Sri Rama seated in the divine aircraft. His joy has no bounds. He embraces Rama, Lakshmana and Sugriva. He offers the traditional Abhivadana to Sita. Sri Rama seats Bharatha on his lap and later alights at Nandigrama.

मुमुचुर्वानरा बाष्पं राक्षसश्च विभीषणः ।
ततः प्रहर्षद्भरतमङ्कमारोप्य राघवः। ।
ययौ तेन विमानेन ससैन्यो भरताश्रमम् ।
भरताश्रममासाद्य ससैन्यो राघवस्तदा ॥

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 57-58 Sarga 130*

And the grand finale to this great epic. Sri Rama pattabhishekam narrated in canto 131 of the Yuddakandam.

Sri Rama is seated on the golden throne with Sita. The great seers Vashistha, Vamadeva, Jabali, Kashyapa, Kathyayana, Suyagna, Gowthama and Vijaya performed the holy coronation ceremony which ceremony was only comparable to the coronation of the ultimate Lord Indra himself.

ततः स प्रयतो वृद्धो वसिष्ठो ब्राह्मणैः सह।
रामं रत्नमये पीठे सहसींत न्यवेशयत् ॥ ५९

वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिरथ काश्यपः।
कात्यायनः सुयज्ञश्च गौतमो विजयस्तथा ॥ ६०

अभ्यषिञ्चन्नव्याध्रं प्रसन्नेन सुगन्धिना ।
सलिलेन सहस्राक्षं वसवो वासवं यथा ॥ ६१

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 59-61 Sarga 131*

And there was a crown crafted by Brahma himself. The kings of the Manu dynasty had adorned the said crown. That crown was placed on Sri Rama's head by the great sage Vashistha himself.

किरीटेन ततः पश्चाद्वसिष्ठेन महात्मना।
ऋत्विग्भिर्भूषणैश्चैव समयोक्ष्यत राघवः॥ ६७

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 67 Sarga 131*

Later at the direction of Sri Rama himself Lakshmana is installed as the deputy.

अनिच्छन्नापि रामेण यौवराज्येऽभिषेचितः ।
लक्ष्मणः परया भक्त्या रामसेवापरोऽभवत् ॥२६॥

*Adhyatma ; Yuddha Kanda : S. 26 Sarga 16*

Now the giving away of gifts to all those present at the coronation ceremony. Sugriva was honoured with dazzling necklace. Angada was given a shoulder brace of like nature. And then an interesting episode. Sri Rama places a pearl necklace around Sita's neck. And Sita looks at Sri Rama and the assembled gathering of the monkeys with Hanuman also seated therein. To Sita, Hanuman was unique and special. Sri Rama immediately understands the intention of Sita and says that she may gift this necklace to whosoever she pleases; to one who you think is valourous, polite and intelligent . Sita has no hesitation. She immediately approaches Hanuman and places this necklace around his neck. This is the high water mark of the divine rendition of Sri Ramapattabhishekam.

सीतायै प्रददौ रामश्चन्द्ररश्मिसमप्रभम् ।
अनजे वाससी दिव्ये शुभान्याभरणानि च ॥ ७८ ॥

अवेक्षमाणा वैदेही प्रददौ वायुसूनवे ।
अवमुच्यात्मनः कण्ठाद्धारं जनकनन्दिनी ॥ ७९ ॥

अवैक्षत हरीन् सर्वान् भ्रातरं च मुहुर्मुहुः ।
तामिङ्गितज्ञः संप्रेक्ष्य बभाषे जनकात्मजाम् ॥ ८० ॥

प्रदेहि सुभगे हारं यस्य तुष्टासि भामिनी ।
तेजो धृतिर्यशो दाक्ष्यं सामर्थ्यं विनयो नयः ॥ ८१ ॥

पौरूषं विक्रमो बुद्धिर्यस्मिन्नेतानि नित्यदा ।
ददौ सा वायुपुत्राय तं हारमसितेक्षणा ॥ ८२ ॥

*Valamiki ; Yuddha Kanda : S. 78-82 Sarga 131*

-Sri Ramajayam.

❑

# ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಚಲನಚಿತ್ರ ರಂಗ

ಎನ್.ಎಸ್. ಶ್ರೀಧರಮೂರ್ತಿ

ರಂಗಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಾಟಕಗಳ ಮೂಲಕ ಇಷ್ಟೊಂದು ಜನಪ್ರಿಯತೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣ ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರಯುಗ ಆರಂಭವಾದಾಗ ಇದೇ ಮಟ್ಟಿಗಿನ ಬೇಡಿಕೆ ಪಡೆಯಲಿಲ್ಲ ಎನ್ನುವುದು ಕುತೂಹಲದ ಸಂಗತಿ. ಭಾರತೀಯ ಚಿತ್ರರಂಗದ ಪಿತಾಮಹ ಎಂದೇ ಖ್ಯಾತರಾಗಿರುವ ದಾದಾ ಸಾಹೇಬ್ ಫಾಲ್ಕೆಯವರೇ ಮೊದಲು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬೆಳ್ಳಿತೆರೆಯ ಮೇಲೆ ತಂದ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದಾರೆ.

ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ವಿದೇಶಿ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಚಲನಚಿತ್ರಗಳು ಬಂದಿವೆ. 'ರಾಮಾಯಣ ದಿ ಲೆಜೆಂಡ್ ಆಫ್ ಪ್ರಿನ್ಸ್ ರಾಮ' (1992) ಮತ್ತು 'ರಾಮಾಯಣ ದಿ ಎಪಿಕ್' ಎನ್ನುವ ಎರಡು ಹಾಲಿವುಡ್ ಚಿತ್ರಗಳು ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿವೆ. 'ದಿ ಲಿಟಲ್ ಪ್ರಿನ್ಸೆಸ್' ಎನ್ನುವ ಜಪಾನಿ ಚಿತ್ರ 1995ರಲ್ಲಿ ಬಂದರೆ 2008ರಲ್ಲಿ 'ಒಪೆರಾ ಜಾವಾ' ಎನ್ನುವ ಇಂಡೋನೇಷಿಯನ್ ಚಿತ್ರ ಕೂಡ ಬಂದಿತ್ತು.

ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾ ಭಾರತಗಳನ್ನು ಏಕವ್ಯಕ್ತಿ ಕೃತ ಎಂದು ಭಾವಿಸುವುದೇ ತಪ್ಪು, ನಿಜವಾದ ಅರ್ಥದಲ್ಲಿ ಅವು ರಾಷ್ಟ್ರವೇ ಬರೆದ ಕಾವ್ಯಗಳು. ದೇಶದ ಯಾವ ಮೂಲೆಗೆ ಹೋದರೂ ಇಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ ಸೀತೆಯವರು ಬಂದಿದ್ದರು. ಆಂಜನೇಯ ಬಂದಿದ್ದ, ಪಾಂಡವರು ತಮ್ಮ ವನವಾಸವನ್ನು ಇಲ್ಲಿಯೇ ಕಳೆದಿದ್ದರು ಎನ್ನುವ ಕುರುಹುಗಳನ್ನು ನೋಡ ಬಹದು. ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ತರ್ಕದ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ. ಅಲ್ಲಿರುವುದು ಗಾಢವಾದ ನಂಬಿಕೆ. ಇಂತಹ ನಂಬಿಕೆಯ ಬಲ ಇರುವುದರಿಂದಲೇ ರಾಮಾಯಣವೆನ್ನುವುದು ವಿರಾಮಾಯಣ ವಾಗಿರುವುದು. ಅದು ಆರಂಭವಾಗುವುದೂ ಇಲ್ಲ ಮುಕ್ತಾಯವಾಗುವುದೂ ಇಲ್ಲ. ನಿರಂತರವಾಗಿ ಸಾಗುತ್ತಿರುವ ಕಾವ್ಯವಾಗಿ ಅದನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಹೀಗೆ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಹೆಗ್ಗುರುತು ಅಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದಲೇ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ರೂಪಗಳಲ್ಲಿಯೂ ರಾಮಾಯಣ ಮರು ಹುಟ್ಟನ್ನು ಪಡೆಯಿತು.

'ತಿಣುಕಿದನು ಫಣಿರಾಯ ರಾಮಾಯಣದ ಕವಿಗಳ ಭಾರದಲಿ, ತಿಂತಿಣಿಯೆ ಪದವಿಡಲು ತೆರಪಿಲ್ಲ' ಎಂದು ಕುಮಾರ ವ್ಯಾಸ ಉದ್ಗರಿಸಿದ್ದರೂ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ ಕಡಿಮೆಯೇ. ಪೊನ್ನ ಕವಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬರೆದಿದ್ದ ಎಂಬ ಉಲ್ಲೇಖವಿದೆಯಾದರೂ ಅದು ಲಭ್ಯವಿಲ್ಲ. ಲಭಿಸಿದ ಮೊದಲ ರಾಮಾಯಣ ನಾಗಚಂದ್ರನ 'ಪಂಪ ರಾಮಾಯಣ' ಅದು ಜೈನ ಪರಂಪರೆಗೆ ಸೇರಿದ್ದರಿಂದ ಕನ್ನಡ ನೆಲದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸಮ್ಮತವಾಗಲಿಲ್ಲ. ತೊರವೆ ನರಹರಿ ಕನ್ನಡೀಕರಿಸಿದ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೇ ಮುಂದೆ ಮನ್ನಣೆ ದೊರಕಿದ್ದು. ಇದು ಪ್ರಧಾನ ವಾಹಿನಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಯಾದರೆ ಜನಪದದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ನಿರಂತರವಾಗಿ ಹೊಸ ರೂಪಗಳನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಲೇ ಬಂದಿತ್ತು. ಅದರೊಡನೆ ಸಂವಾದಗಳೂ ನಡೆದುಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಿದ್ದವು. ಕನಕದಾಸರ 'ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ' ಇದಕ್ಕೆ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಉದಾಹರಣೆಯಾಗಿದೆ. ರಾಮಾಯಣ ದಾಸರ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅರಳಿತು, ಹರಿಕತೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಿತು. ಮುಂದೆ ರಂಗಭೂಮಿ ಪರಂಪರೆ ಬಂದಾಗ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಹಲವಾರು ನಾಟಕಗಳು ಬಂದವು. ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ ಬೆಳ್ಳಾವೆ ನರಹರಿ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಕೃತಿ. ಇದು ಗುಬ್ಬಿ ಕಂಪನಿಯ ಮೂಲಕ ಅನೇಕ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಪಡೆದು ಅಪಾರ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಕಂಡಿತ್ತು. ಸೀತಾ ಸ್ವಯಂವರ, ಶ್ರೀರಾಮ ವನವಾಸ, ಲಂಕಾದಹನ, ಲವ ಕುಶ ಹೀಗೆ ಹಲವು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ನಾಟಕಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಮೂಡಿ ಬಂದವು. ಕಣಗಾಲ್ ಪ್ರಭಾಕರ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ 'ಪ್ರಚಂಡ ರಾವಣ' ಇನ್ನೊಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಟ್ರೆಂಡ್ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ನಾಟಕ. ವಜ್ರಮುನಿಯವರು ಅಪಾರ ಜನಪ್ರಿಯತೆ ಪಡೆದಿದ್ದೇ ಈ ನಾಟಕದಿಂದ.

ರಂಗಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ನಾಟಕಗಳ ಮೂಲಕ ಇಷ್ಟೊಂದು ಜನಪ್ರಿಯತೆಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣ ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರಯುಗ ಆರಂಭವಾದಾಗ ಇದೇ ಮಟ್ಟಿಗಿನ ಬೇಡಿಕೆ ಪಡೆಯಲಿಲ್ಲ ಎನ್ನುವುದು ಕುತೂಹಲದ ಸಂಗತಿ. ಭಾರತೀಯ ಚಿತ್ರರಂಗದ ಪಿತಾಮಹ ಎಂದೇ ಖ್ಯಾತರಾಗಿರುವ ದಾದಾ ಸಾಹೇಬ್ ಫಾಲ್ಕೆಯವರೇ ಮೊದಲು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಬೆಳ್ಳಿತೆರೆಯ ಮೇಲೆ ತಂದ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದಾರೆ. 1917ರಲ್ಲಿ ಈ ಚಿತ್ರ ತೆರೆ ಕಂಡಿತು. ಮಹಿಳೆಯ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಮಹಿಳೆಯರೇ ಅಭಿನಯಿಸಿದ ಮೊದಲ ಚಿತ್ರ ಎನ್ನುವ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆ ಇದಕ್ಕಿದೆ. ಈ ಸಾಹಸ ಮಾಡಿದವರು ಸ್ವತಃ ಫಾಲ್ಕೆಯವರ ಮಗಳು ಮಂದಾಕಿನಿ. ಮುಂಬೈನ ವೆಸ್ಟ್ ಎಂಡ್ ಚಿತ್ರಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ತೆರೆ ಕಂಡ ಚಿತ್ರ ಅಪಾರ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆಯಿತು. ಜನರ ಒತ್ತಾಯದ ಮೇರೆಗೆ ಪ್ರತಿನಿತ್ಯ ನಾಲ್ಕು ಪ್ರದರ್ಶನವಿದ್ದದ್ದು ಐದಾಯಿತು. ಹತ್ತೇ ದಿನದಲ್ಲಿ ಈ ಚಿತ್ರ ಗಳಿಸಿದ್ದು ಸುಮಾರು 32,000 ರೂಪಾಯಿಗಳು. ಪ್ರದರ್ಶನ ಕಂಡಲ್ಲೆಲ್ಲ ಇದು ಅದ್ಭುತ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಗಳಿಸಿ ಭಾರತದ ಮೊದಲ ಹಿಟ್ ಸಿನಿಮಾ ಎನ್ನಿಸಿಕೊಂಡಿತು. ಬೆಂಗಳೂರಿನಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಇದು ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆಯಿತು. ಹೀಗಿದ್ದರೂ ಇದನ್ನು ಹೊರತು ಪಡಿಸಿದರೆ ಮೂಕಿ ಯುಗದಲ್ಲಿ ಬಂದ ಇನ್ನೊಂದು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಚಿತ್ರವೆಂದರೆ 'ಸೀತಾ ಸ್ವಯಂವರ' ಮಾತ್ರ. ಇದೂ ಕೂಡ ಫಾಲ್ಕೆಯವರ

ನಿರ್ಮಾಣದ ಚಿತ್ರವೇ. ಕನ್ನಡ ನೆಲದಿಂದ ಮೈದಳೆದ ಏಳು ನಿರ್ಮಾಣ ಸಂಸ್ಥೆಗಳು ಒಟ್ಟು 48 ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ್ದವು. ಕುತೂಹಲದ ಸಂಗತಿ ಎಂದರೆ ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದೂ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿರಲಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿಂದ ಮುಂದೆ ಬೆಳೆದ ವಾಕ್ಚಿತ್ರ ಯುಗವನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿರಿಸಿದರೆ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಮಹತ್ವ ಸಿಕ್ಕಿತು. ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರ ಮತ್ತು ವಾಕ್ಚಿತ್ರಗಳೆರಡನ್ನೂ ಸೇರಿದರೆ ಈ 101 ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ 983 ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಚಿತ್ರಗಳು ಬಂದಿವೆ ಎಂದರೆ ಇದರ ಮಹತ್ವ ಅರಿವಾಗಬಲ್ಲದು.

## ಮೊದಲ ವಾಕ್ಚಿತ್ರವೇ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿತ್ತು.

ಕನ್ನಡದ ನೆಲದಿಂದ ರಾಮಾಯಣದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರಗಳ್ಯಾವುದೂ ಮೂಡಿ ಬರದಿದ್ದರೂ ಕನ್ನಡದ ಮೊದಲ ವಾಕ್ಚಿತ್ರವೇ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿತ್ತು. ಭಾರತದ ಮೊದಲ ವಾಕ್ಚಿತ್ರ 'ಅಲಂ ಆರಾ'ವನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿದ ಅರ್ದಿಶಕರ್ ಇರಾನಿಯವರ ಇಂಪೀರಿಯಲ್ ಕಂಪನಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ ಅನುಭವ ಹೊಂದಿದ್ದರು. "ಪಾರಿಜಾತ ಪುಷ್ಪಹರಣಂ" ಎಂಬ ತಮಿಳು ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ನಾರದನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ರಾಯರು ನಿರ್ವಹಿಸಿದರು. ಇದೇ ಸಂಸ್ಥೆ ಮುಂದೆ ತೆಲುಗಿನಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸಿದ "ಭಕ್ತ ರಾಮದಾಸ"ಚಿತ್ರದ ನಾಯಕನ ಪಾತ್ರವೇ ನಾಗೇಂದ್ರ ರಾಯರಿಗೆ ದೊರಕಿತು. ಈ ಚಿತ್ರವೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾದಾಗ ಅದೇ ಸಂಸ್ಥೆಯ ಮುಂದಿನ ಚಿತ್ರ "ನವೀನ ಸದಾರಮೆ"ಗೂ ನಾಯಕರನ್ನಾಗಿ ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಲಾಯಿತು. ಆಗ ಅವರ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಒಂದು ಗೊಂದಲವೆದ್ದಿತು. ತಾವು ವಾಕ್ಚಿತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸುತ್ತಿರುವುದೇನೋ ಸರಿ ಆದರೆ ಅವೆಲ್ಲವೂ ಬೇರೆ ಭಾಷೆಯ ಚಿತ್ರಗಳು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿಯೂ ಏಕೆ ವಾಕ್ಚಿತ್ರಗಳು ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಬಾರದು? ಹೀಗೆ ಯೋಚಿಸಿ "ಶ್ಯಮಂತಕ ಮಣಿ" ಎಂಬ ಕಥೆಯನ್ನು ಸಿದ್ದಪಡಿಸಿ ತಾವು ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಸಂಸ್ಥೆಯ ಮುಖ್ಯಸ್ಥರಾದ ಅರ್ದೀಶಕರ್ ಇರಾನಿಯವರಿಗೆ ತೋರಿಸಿದರು. ಅವರು ಕಥೆಯನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿದರೂ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ತಯಾರಿಸಲು ಒಪ್ಪಲಿಲ್ಲ "ಅಲ್ಲಿನ ಮಾರುಕಟ್ಟೆ ಚಿಕ್ಕದು, ಬದಲಾಗಿ ತಮಿಳು ಇಲ್ಲವೆ ತೆಲುಗಿನಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸೋಣ" ಎಂದರು. ಇದರಿಂದ ನಿರಾಶರಾದ ರಾಯರು ತಮ್ಮ ಉಜ್ವಲ ಭವಿಷ್ಯಕ್ಕೆ ಬೆನ್ನು ಹಾಕಿ ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ವಾಕ್ಚಿತ್ರ ನಿರ್ಮಿಸುವ ಹಂಬಲ ಹೊತ್ತು ಮೈಸೂರಿಗೆ ಹಿಂದಿರುಗಿದರು. ಹಲವರನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿದರೂ ಬಂಡವಾಳ ಹೂಡಲು ಸಿದ್ದರಾಗಲಿಲ್ಲ. ಕೊನೆಗೆ ಸೀತಾರಾಂ ಅವರ ಮೂಲಕ ಷಾ ಚಮನ್ ಲಾಲ್ ಡುಂಗಾಜಿಯವರ ಪರಿಚಯವಾಯಿತು ಅವರು ಹಣ ಹೂಡಲು ಸಿದ್ದರಾದರು. ಹೀಗೆ ಕನ್ನಡದ ಮೊದಲ ವಾಕ್ಚಿತ್ರಕ್ಕೆ ಅಂಕುರಾರ್ಪಣೆಯಾಯಿತು. "ಸತಿ ಸುಲೋಚನಾ" ಚಿತ್ರದ ವಸ್ತುವಾಯಿತು. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಗೇಂದ್ರ ರಾಯರು ಮುಖ್ಯ ಪಾತ್ರ ವಹಿಸಿದ್ದಲ್ಲದೆ ಸಂಗೀತ ನಿರ್ದೇಶನವನ್ನೂ ಮಾಡಿದರು. ಬೆಳ್ಳಾವೆ ನರಹರಿ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ರಾಮಾಯಣದ ಅಪ್ರಸಿದ್ದವಾದ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ 'ಸತಿ ಸುಲೋಚನ'ದ ಕಥೆಯನ್ನು ಸಿದ್ದಪಡಿಸಿ ಕೊಟ್ಟರು. ಸುಲೋಚನ ರಾವಣನ ಮಗ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತುವಿನ ಮಡದಿ. ಅವಳಿಗೆ ಯುದ್ದವನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಬೇಕೆಂಬ ಬಯಕೆ. ಆದರೆ ಅವಳ ಮಾತಿಗೆ ಮನ್ನಣೆ ದೊರಕುವುದಿಲ್ಲ. ಅವಳ ಗಂಡ ಇಂದ್ರಜಿತ್ತು ಯುದ್ದದಲ್ಲಿ ಗೆದ್ದು ಸೀತೆಯನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಲು ಸಿದ್ದನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಶಕ್ತಿ ವಶೀಕರಣ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ಅದ್ಭುತವಾದ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಗಳಿಸುತ್ತಾನೆ. ಅವರ ಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಯುದ್ಧದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಮೂರ್ಛೆ ಹೋದಾಗ ಜಾಂಬವಂತನ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಹನುಮಂತ ಹಿಮಾಲಯಕ್ಕೆ ತೆರಳಿ ವೃಷಭ ಮತ್ತು ಕೈಲಾಸ ಪರ್ವತಗಳಲ್ಲಿ ಥಳ ಥಳನೆ ಹೊಳೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಮೃತ್ಯು ಸಂಜೀವಿನಿ, ವಿಷಲ್ಯಕರುಣಿ, ಸುವರ್ಣಕರಣಿ ಮತ್ತು ಸಂಧಾನಕರಣಿ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಮೂಲಿಕೆಗಳನ್ನು ತಂದ ಮೇಲೆ ಮೂರ್ಛೆಯಿಂದ ಏಳುವಂತೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ರೋಷಗೊಂಡ ಇಂದ್ರಜಿತು ಮಾಯಾಸೀತೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಎದುರಿಗೇ ಕೊಲ್ಲುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ವಿಭೀಷಣನಿಂದ ಈ ಮೋಸವನ್ನು ಅರಿತ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ದಿವ್ಯಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇಂದ್ರಜಿತುವಿನ ತಲೆ ನೆಲಕ್ಕೆ ತಾಗಿದರೆ ಸಹಸ್ರ ಸೈನಿಕರು ಹುಟ್ಟವರು ಎಂದು ತಿಳಿದು ಅದನ್ನು ತಪೋನಿರತಳಾದ ಸುಲೋಚನೆಯ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಸುಲೋಚನೆ ಪತಿಯೊಡನೆ ಸಹಗಮನವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾಳೆ. ಚಿತ್ರದ

ಪ್ರಚಾರದಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರಜಿತುವಿನ ಮಹಾಯಾಗ, ಹನುಮಂತ ಸಂಜೀವಿನಿ ಪರ್ವತವನ್ನು ತರುವುದು, ಮಾಯಾ ಸೀತೆಯ ನಿರ್ಮಾಣ, ಯುದ್ಧ ಮತ್ತು ಇಂದ್ರಜಿತುವಿನ ತಲೆ ಸುಲೋಚನೆಯ ತೊಡೆಯ ಮೇಲೆ ಬೀಳುವುದು ಅದ್ಭುತ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳೆಂದು ಕರೆಯಲಾಗಿತ್ತು. ತಾಂತ್ರಿಕವಾಗಿ ಇನ್ನೂ ಬೆಳವಣಿಗೆಯಾಗದ ಆ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಇದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಸಾಧನೆಯೇ ಆಗಿತ್ತು. ವೈ.ವಿ. ರಾವ್ ಚಿತ್ರದ ನಿರ್ದೇಶಕರು. ಭಾರತದ ಉಳಿದ ವಾಕ್ಚಿತ್ರಗಳಿಗೆ ಹೋಲಿಸಿದರೆ "ಸತಿ ಸುಲೋಚನ"ಯಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಚಮತ್ಕಾರದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಿದ್ದವು. ಹೊರಾಂಗಣ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಅದರಲ್ಲಿಯೂ ಯುದ್ಧದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಿದ್ದವು. ಟ್ರಿಕ್ ಶಾಟ್‌ಗಳಿದ್ದವು. ಇದನ್ನೆಲ್ಲಾ ತಾಂತ್ರಿಕ ಪರಿಣತಿಯಿಂದ ರಾವ್ ಅವರು ಚಿತ್ರೀಕರಿಸಿದರು. ಇದರಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಪಾತ್ರವನ್ನೂ ಅವರು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು. ಅವರ ಮಡದಿ ಚಿನ್ನ ರಾಜಮ್ಮ "ಸತಿ ಸುಲೋಚನ" ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಊರ್ಮಿಳೆಯ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಸಿದ್ದರು. ಈ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಹದಿನಾರು ಗೀತೆಗಳಿದ್ದವು. ಕೊಲ್ಹಾಪುರದ "ಛತ್ರಪತಿ ಸಿನಿಟೋನ್"ನಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರೀಕರಣಗೊಂಡ "ಸತಿ ಸುಲೋಚನ" 1934ರ ಮಾರ್ಚಿ 3ರಂದು ಬೆಂಗಳೂರಿನ "ಪ್ಯಾರಾಮೌಂಟ್" ಚಿತ್ರ ಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ಬಿಡುಗಡೆಯಾಯಿತು. ಕನ್ನಡ ಚಿತ್ರರಂಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಅಧ್ಯಾಯ ಆರಂಭವಾಯಿತು. ಇದರ ನೇತಾರರು ಎಂಬ ಕೀರ್ತಿ ವೈ.ವಿ. ರಾವ್ ಅವರದಾಯಿತು. ನಾಗೇಂದ್ರ ರಾಯರು ರಾವಣನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರ ಜೊತೆಗೆ ಸಂಗೀತ ನಿರ್ದೇಶನವನ್ನೂ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಸುಬ್ಬಯ್ಯ ನಾಯ್ಡು ಇಂದ್ರಜಿತ್ ಆಗಿದ್ದರೆ ತ್ರಿಪುರಾಂಬ ಸತಿ ಸುಲೋಚನೆಯ ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರು. ಮೂಕಿ ಚಿತ್ರಗಳ ಸ್ಟಾರ್ ಲಕ್ಷ್ಮಿಬಾಯಿ ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿದ್ದರು. ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಡಿ.ಎನ್. ಮೂರ್ತಿರಾವ್, ನಾರದನಾಗಿ ಶೇಷಾಚಲಂ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ಕೊಲ್ಹಾಪುರದ ಛತ್ರಪತಿ ಸಿನಿಟೋನ್‌ನಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರೀಕರಣ ನಡೆಯಿತು. ಆಗಿನ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಚಿತ್ರದ ಬಜೆಟ್ ನಲವತ್ತು ಸಾವಿರ ರೂಪಾಯಿಗಳಾಗಿತ್ತು. ಯುದ್ಧದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಿಗೆ ಮೂರು ಕ್ಯಾಮರಾ ಬಳಸಿ ನೂರಾರು ಕಲಾವಿದರನ್ನು ಜೊತೆಗೂಡಿಸಲಾಗಿತ್ತು. ಆಗ ವಿದ್ಯುತ್ ಬಳಸಿ ಚಿತ್ರೀಕರಣವನ್ನು ನಡೆಸುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕನ್ನು ಆಧರಿಸಿಯೇ ಚಿತ್ರೀಕರಣ ನಡೆಸಬೇಕಿತ್ತು. ದೊಡ್ಡ ದೊಡ್ಡ ಫಲಕಗಳಿಂದ ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಪಾತ್ರಧಾರಿಗಳ ಮೇಲೆ ಚಿಮ್ಮಿಸಿ ಚಿತ್ರೀಕರಣ ನಡೆಸಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಪಾತ್ರಧಾರಿಗಳು ನೇರವಾಗಿ ಹಾಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಶಕ್ತವಾದ ಬೂಮ್‌ಗಳಿಂದ ಅದನ್ನು ಧ್ವನಿಗ್ರಹಿಸಿ ಚಿತ್ರೀಕರಣ ನಡೆಸಬೇಕಿತ್ತು. ವೈ.ವಿ. ರಾವ್ ಅವರಿಗಿದ್ದ ತಾಂತ್ರಿಕ ಪರಿಣತಿ ಚಿತ್ರದ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಕಾರಣವಾಯಿತು ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಇನ್ನೂ ಕೆಲವು ಸ್ವಾರಸ್ಯಕರ ಸಂಗತಿಗಳಿದ್ದವು. ಸುಲೋಚನೆಯ ಪಾತ್ರಧಾರಿ ತ್ರಿಪುರಾಂಬ ಕಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ನೀರು ಬರದಿದ್ದಾಗ ಹಸಿ ಮೆಣಸಿನ ಕಾಯಿಯನ್ನು ಹಾಕಿ ಉಜ್ಜಲಾಯಿತು. ಆಗಲೂ ಕಣ್ಣು ಕೆಂಪಾದವೇ ಹೊರತು ನೀರು ಬರಲಿಲ್ಲ. ಕೊನೆಗೆ ಕಣ್ಣಿಗೆ ನೀರು ಚುಮುಕಿಸಿ ಕಣ್ಣೀರಿನ ಎಫೆಕ್ಟ್ ತರಲಾಗಿತ್ತು. ಆಂಜನೇಯನು ಸಂಜೀವಿನಿ ಪರ್ವತವನ್ನು ಹೊತ್ತು ತರುವುದು. ಇಂದ್ರಜಿತು ಮಾಯಾ ಸೀತೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಎದುರಿಗೇ ಕೊಲ್ಲುವುದು. ಇಂದ್ರಜಿತುವಿನ ತಲೆ ನೆಲವನ್ನು ಸೋಕದೆ ಸುಲೋಚನೆಯ ಬೊಗಸೆಯಲ್ಲಿ ಬೀಳುವುದು ಮೊದಲಾದ ಟ್ರಿಕ್ ಶಾಟ್‌ಗಳು ಸಿನಿಮಾದಲ್ಲಿ ಇದ್ದವು. ಆರುವಾರಗಳ ಹೌಸ್‌ಫುಲ್ ಪ್ರದರ್ಶನವನ್ನು ಚಿತ್ರ ಕಂಡಿತು. ಸುತ್ತಮುತ್ತಲ ಹಳ್ಳಿಗಳಿಂದ ಗಾಡಿ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಬರುವವರಿಗೆ ಉಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಕೂಡ ಇತ್ತು.

## ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣದ ವೈಭವ

ಕನ್ನಡದ ಮೊದಲ ವಾಕ್ಚಿತ್ರವೇ ರಾಮಾಯಣದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದರೂ ಎರಡನೇ ಚಿತ್ರ ಬಹುಕಾಲ ಬರಲೇ ಇಲ್ಲ. ಬೇರೆ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಇಂತಹದೇ ಸ್ಥಿತಿ. ಹಿಂದಿಯಲ್ಲಿ 1943ರಲ್ಲಿ 'ರಾಮರಾಜ್ಯ' ತೆರೆ ಕಂಡಿತು. 1944ರಲ್ಲಿ ತೆಲುಗಿನಲ್ಲಿ 'ಶ್ರೀರಾಮ ಜನನಂ' ಎನ್ನುವ ಚಿತ್ರ ತೆರೆ ಕಂಡಿತು. ಭಾರತೀಯ ಚಿತ್ರರಂಗದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಸ್ಥಿರಗೊಳಿಸಿದಂತಹ ಚಿತ್ರ ಎಂದರೆ 'ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ' 1958ರ ಏಪ್ರಿಲ್ 14ರಂದು ಈ ಚಿತ್ರ ಮೊದಲು ತಮಿಳಿನಲ್ಲಿ ಬಿಡುಗಡೆಯಾಯಿತು. ನಂತರ ಕನ್ನಡವೂ ಸೇರಿದಂತೆ ಎಂಟು ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳಿಗೆ ಡಬ್ ಆಯಿತು. ಕೆ. ಸೋಮು ಅವರು

ನಿರ್ದೇಶಿಸಿದ್ದ ಚಿತ್ರವನ್ನು ಎಂ.ಎ. ವೇಣು ಅವರು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಎನ್.ಟಿ. ರಾಮರಾವ್ ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಶಿವಾಜಿ ಗಣೇಶನ್ ಭರತನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು. ಸೀತೆಯಾಗಿ ಪದ್ಮಿನಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನಾಗಿ ನರಸಿಂಹ ಭಾರತಿ, ರಾವಣನಾಗಿ ಟಿ.ಕೆ. ಭಗವತಿ ದಶರಥನಾಗಿ ಚಿತ್ತೂರು. ವಿ. ನಾಗಯ್ಯ ಶೂರ್ಪಣಖಿಯಾಗಿ ಎಂ.ಎಸ್. ರಾಜಂ ಮತ್ತು ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿ ಸಂಧ್ಯಾ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ಕೆ.ವಿ. ಮಹಾದೇವನ್ ಚಿತ್ರಕ್ಕೆ ಸಂಗೀತ ನೀಡಿದ್ದರು. ರಾಜಾಜಿಯವರ ರಾಮಾಯಣ ಈ ಚಿತ್ರಕ್ಕೆ ಆಧಾರವಾಗಿತ್ತು. ಚಿತ್ರ ಅಪಾರ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡಿತು. ಜನರ ಬೇಡಿಕೆಯಂತೆ 1963ರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರಕಾಂಡ ಕೂಡ 'ಲವ ಕುಶ' ಎನ್ನುವ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಬಿಡುಗಡೆಯಾಯಿತು. 1978ರಲ್ಲಿ ಎನ್.ಟಿ. ರಾಮರಾವ್ ತಮ್ಮ ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಫಿಲಂಸ್‌ನಿಂದ 'ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ' ಎನ್ನುವ ಚಿತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ನಿರ್ದೇಶಿದರು. ಅದರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕೂಡ ಅವರದೇ ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಇದರಲ್ಲಿ ರಾಮ ಮತ್ತು ರಾವಣ ಎರಡೂ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಎನ್.ಟಿ. ಆರ್ ಅವರೇ ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು. ಜಮುನ ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿದ್ದರೆ, ಸಂಗೀತ ಸೀತೆಯ ಪಾತ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರು. ಪೆಂಡ್ಯಾಲ ನಾಗೇಶ್ವರ ರಾವ್ ಚಿತ್ರಕ್ಕೆ ಸಂಗೀತ ನೀಡಿದ್ದರು. ಸೀತಾಪಹರಣವನ್ನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟದಂತೆಯೇ ರಾವಣ ನಡೆಸುವುದು ಚಿತ್ರದ ವಿಭಿನ್ನ ಸನ್ನಿವೇಶವಾಗಿತ್ತು. ರಾಮ ಮತ್ತು ರಾವಣ ಎರಡೂ ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ಎನ್.ಟಿ. ಆರ್ ಘನತೆ ತಂದಿದ್ದರು.

1961ರಲ್ಲಿ ಹಿಂದಿ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣ ರೂಪುಗೊಂಡಿತು. ಬಾಬು ಭಾಯಿ ಮೆಸ್ತ್ರಿ ಇದರ ನಿರ್ದೇಶಕರು. ಬಸಂತ್ ಪಿಕ್ಚರ್ಸ್ ಲಾಂಛನದಲ್ಲಿ ಹೋಮಿ ವಾಡಿಯಾ ಚಿತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ದೇಶಿಸಿದ್ದರು. ಮಹಿಪಾಲ್ ರಾಮನಾಗಿ ಮತ್ತು ಅನಿತಾ ಗುಹ ಸೀತೆಯಾಗಿ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ಲಲಿತಾ ಪವಾರ್, ಕೃಷ್ಣ ಕುಮಾರಿ, ರಾಜ್ ಕುಮಾರ್ ಮೊದಲಾದವರು ತಾರಾಗಣದಲ್ಲಿ ಇದ್ದರು. ಕ್ಯಾಬರೆ ನೃತ್ಯಗಳಿಗೆ ಆಗ ಪ್ರಸಿದ್ಧರಾಗಿದ್ದ ಹೆಲನ್ ಶೂರ್ಪಣಖಿ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದು ಒಂದು ವಿಶೇಷ. ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ಬಂದ 983 ಚಿತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಗಮನ ಸೆಳೆದಂತಹ ಎನ್.ಟಿ. ರಾಮರಾವ್ ಅವರೇ ತಮ್ಮ 'ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಸಿನಿ ಸ್ಟುಡಿಯೋಸ್' ಮೂಲಕ ನಿರ್ಮಿಸಿದ 'ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕಂ' ಈ ಚಿತ್ರದ ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಅವರೇ ರಾಮ ಮತ್ತು ರಾವಣ ಈ ಎರಡೂ ಪಾತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ಸೀತೆಯಾಗಿ ಸಂಗೀತಾ ಮತ್ತು ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿ ಜಮುನಾ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದ ಚಿತ್ರ 1976ರಲ್ಲಿ ತೆರೆಕಂಡಿತ್ತು ಸಂಭಾಷಣೆಗಳೇ ಚಿತ್ರದ ಜೀವಾಳವಾಗಿದ್ದವು. ಪೆಂಡ್ಯಾಲ ನಾಗೇಶ್ವರ ರಾವ್ ಅವರ ಸಂಗೀತ ಕೂಡ ಗಮನ ಸೆಳೆದಿತ್ತು. ಈ ಚಿತ್ರದ ಯಶಸ್ಸಿನ ನಂತರ 'ಲವ ಕುಶ' ಚಿತ್ರವನ್ನು ಎನ್.ಟಿ. ಆರ್ ನಿರ್ಮಿಸಿದರು. ಮುಂದೆ ತೆಲುಗಿನಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಕುರಿತು ಸಾಕಷ್ಟು ಚಿತ್ರಗಳು ಬಂದವು. 1996ರಲ್ಲಿ ಜ್ಯೂನಿಯರ್ ಎನ್.ಟಿ. ಆರ್ ಅವರೇ ರಾಮಾಯಣ ನಿರ್ಮಿಸಿದರು. ಆದರೆ 'ಶ್ರೀರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ' ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಯಾವದೂ ಸಮನೆನ್ನಿಸಲಿಲ್ಲ. ಇಂದಿಗೂ ಅದು ಅಭೂತಪೂರ್ವ ಚಿತ್ರ ಎನ್ನಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ.

1934ರಲ್ಲಿ 'ಸತಿ ಸುಲೋಚನ' ಬಿಡುಗಡೆಯಾದರೆ 21 ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ರಾಮಯಣದ ಕುರಿತ ಎರಡನೇ ಕನ್ನಡ ಚಿತ್ರ 'ಶ್ರೀರಾಮ ಪೂಜ' ಬಿಡುಗಡೆಯಾಯಿತು. ಬಿ.ಆರ್. ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ ಈ ಚಿತ್ರದ ನಿರ್ಮಾಪಕರು ಮತ್ತು ನಿರ್ದೇಶಕರು. ಇದು ನೇರವಾಗಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಕೃತಿಯಾಗಿರಲಿಲ್ಲ. ರಾಮಭಕ್ತಿಯ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಲಾಗಿತ್ತು. ಬಿ.ಸರೋಜ ದೇವಿ, ಅಭಿನಯಿಸಿದ ಮೊದಲ ಚಿತ್ರವಾಗಿತ್ತು ಸಂಧ್ಯಾ, ರಾಜೇಂದ್ರ ಕೃಷ್ಣ, ಬಿ.ಆರ್. ಈಶ್ವರಪ್ಪ, ಎಂ.ಎಸ್. ಸುಬ್ಬಣ್ಣ ಮೊದಲಾದವರು ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿದ್ದರು. ಬಿ.ಆರ್. ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ, ಎನ್. ಲಕ್ಷ್ಮಿನಾರಾಯಣ್ ಅವರ ಸೋದರ ಮಾವ ಎನ್ನೆಲ್ ಅವರೂ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಸಹ ನಿರ್ದೇಶಕರಾಗಿ ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು. ವಿಜಯಭಾಸ್ಕರ್ ಸಂಗೀತ ನೀಡಿದ ಮೊದಲ ಚಿತ್ರ ಕೂಡ ಇದಾಗಿದೆ. ಇಂತಹ ದಾಖಲೆಗಳಿಗೆ ಇದು ಗಮನಾರ್ಹ ಎನ್ನಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಇನ್ನೊಂದು ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ರೂಪಿತವಾದ ಚಿತ್ರ 'ಮಹಿರಾವಣ' ಬಹಳ ಕಾಲದ ಆರ್. ನಾಗೇಂದ್ರರಾಯರು ನಿರ್ದೇಶಿಸಿದ

ಚಿತ್ರ ಇದು. ಬಾಂಬೆ ಜಯಶ್ರೀ ಇದರ ನಿರ್ಮಾಪಕರು. ನಾಗೇಂದ್ರ ರಾವ್, ಕಾಂತರಾವ್, ಬಾಲಕೃಷ್ಣ, ಮೀನಾಕ್ಷಿ, ಹನುಮಂತ ರಾವ್ ಮೊದಲಾದವರು ತಾರಾಗಣದಲ್ಲಿದ್ದರು. ಬಿ. ಪುಟ್ಟ ಸ್ವಾಮಯ್ಯನವರದು ಸಂಭಾಷಣೆ. ಕಾಳಿಕಾ ದೇವಿ ಭಕ್ತನಾದ ಮಹಿರಾವಣ ಮತ್ತು ಅವನಿಗೆ ಒಲಿಯದ ನಾಗಕನ್ಯೆ ಚಂದ್ರಸೇನೆಯರ ನಡುವಿನ ಸಂಘರ್ಷ ಚಿತ್ರದ ಕಥೆ. ಮಹಿರಾವಣ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ಕಾಳಿಗೆ ಬಲಿ ಕೊಡಲು ಸಿದ್ಧನಾಗಿರುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ಚಂದ್ರಸೇನೆ ಹನುಮಂತನ ಸಹಾಯದಿಂದ ಅವರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಚಿತ್ರ ಗಮನವನ್ನಂತೂ ಆ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸೆಳೆದಿತ್ತು.

ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಿರ್ಮಾಣ ಸಂಸ್ಥೆ ಎ.ವಿ.ಎಂ 1958ರಲ್ಲಿ 'ಭೂ ಕೈಲಾಸ' ಚಿತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿತು. ಕೆ. ಶಂಕರ್ ಈ ಚಿತ್ರದ ನಿರ್ದೇಶಕರು. ಇದೂ ಕೂಡ ನೇರವಾಗಿ ರಾಮಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ವಸ್ತುವಾಗಿ ಹೊಂದಿರಲಿಲ್ಲ. ರಾವಣ ಕೈಲಾಸದಿಂದ ಶಿವನನ್ನು ಒಲಿಸಿ ಆತ್ಮಲಿಂಗ ತರುವುದು, ಗಣಪತಿ ಉಪಾಯವಾಗಿ ಅವನಿಂದ ಆತ್ಮಲಿಂಗವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದು. ಮಂಡೋದರಿಯೊಂದಿಗೆ ವಿವಾಹ ಹೀಗೆ ಚಿತ್ರದ ವಸ್ತು ರಾವಣನಿಗೆ ಸಂಬಂಧ ಪಟ್ಟಿತ್ತು. ರಾಜ್ ಕುಮಾರ್ ಅವರು ರಾವಣನಾಗಿ, ಜಮುನಾ ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿ, ಕಲ್ಯಾಣ್ ಕುಮಾರ್ ನಾರದನಾಗಿ ಅಶ್ವತ್ಥ್ ಈಶ್ವರನಾಗಿ, ಎಸ್.ವಿ. ರಂಗರಾವ್ ಮಾಯಾಸುರನಾಗಿ, ಬಿ. ಸರೋಜ ದೇವಿ ಪಾರ್ವತಿಯಾಗಿ, ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಈ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಬಿಂಬಿಸುವ ಚಿತ್ರಗೀತೆ ಇರುವುದು. ಅದು ಸೃಷ್ಟಿಯಾದ ಪ್ರಸಂಗ ಕೂಡ ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿದೆ. 'ಭೂ ಕೈಲಾಸ' ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಎ.ವಿ.ಎಂ ಸಂಸ್ಥೆ ತೆಲುಗು, ತಮಿಳು ಮತ್ತು ಕನ್ನಡ ಹೀಗೆ ಮೂರು ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಾಣವಾದಂತಹ ಚಿತ್ರ. ಇದರ ಚಿತ್ರೀಕರಣದ ಕೊನೆಗೆ ಹತ್ತು ನಿಮಿಷಗಳ ಕೊರತೆ ಬಿದ್ದಿತ್ತು. ಆಗ ನಿರ್ಮಾಪಕ ಮೇಯಪ್ಪ ಚೆಟ್ಟಿಯಾರರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ರಾಮಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಮುಂಗಾಣ್ಕೆಯಾಗಿ ತೋರಿಸುವ ಪ್ರಸ್ತಾಪವನ್ನು ಇಟ್ಟರು. ತೆಲಗು ಮತ್ತು ತಮಿಳು ಗೀತರಚನೆಕಾರರು ಅದು ಅಸಾಧ್ಯ ಎಂದಿದ್ದು ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಯಾರಾದರೂ ಈ ಗೀತೆಯನ್ನು ಬರೆದರೆ ತನ್ನ ಲೇಖನಿಯನ್ನೇ ಎತ್ತಿಡುವುದಾಗಿ ಚಾಲೆಂಜ್ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರದ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಬರೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಕು.ರ. ಸೀತಾರಾಮ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು ಈ ಸವಾಲಿಗೆ ಉತ್ತರ ಎಂಬಂತೆ ರೂಪಕಗಳ ಮೂಲಕವೇ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹೇಳುವಂತಹ ಈ ಗೀತೆಯನ್ನು ಬರೆದರು. ಇದನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ತೆಲುಗಿನಲ್ಲಿ ಗೀತೆ ರಚಿತವಾಯಿತು. ಎರಡೂ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲೂ ಶೀರ್ಕಾಳಿ ಗೋವಿಂದರಾಜು ತಮ್ಮ ಕಂಚಿನ ಕಂಠದಿಂದ ಗೀತೆಯನ್ನು ಹಾಡಿದರು.

ಕನ್ನಡ ಚಿತ್ರರಂಗ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಬೇಕಾದರೆ ಬೇರೆ ಭಾಷೆಗಳಿಗೆ ಪೈಪೋಟಿ ನೀಡೋ ಸಿನಿಮಾಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಬೇಕು ಎನ್ನುವ ಹಂಬಲದಿಂದ ಬಿ.ಎಸ್. ರಂಗಾ ಅವರು 1960ರಲ್ಲಿ "ದಶಾವತಾರ" ಎನ್ನುವ ಸಿನಿಮಾ ತೆಗೆದರು. ಒಂದೊಂದು ಅವತಾರದ್ದೂ ಒಂದೊಂದು ದೊಡ್ಡ ಕಥೆಯೇ ಅದರಲ್ಲಿಯೂ ರಾಮ ಮತ್ತು ಕೃಷ್ಣ ಇವರಿಬ್ಬರ ಅವತಾರದ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತದಂತಹ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳೇ ಬಂದಿವೆ. ಇವನ್ನೆಲ್ಲಾ ಒಂದೇ ಸಿನಿಮಾದಲ್ಲಿ ಬರೋ ಹಾಗೆ ಮಾಡೋದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಸವಾಲಾಗಿತ್ತು. ಸಿನಿಮಾ ಅಂದರೆ ಅತಿ ಹೆಚ್ಚು ಎಂದರೆ ಮೂರು ಗಂಟೆಗಳ ಒಳಗಿರಬೇಕಾಗಿತ್ತು. ಈ ಸಮಯದಲ್ಲೇ ಹತ್ತೂ ಅವತಾರಗಳ ಮುಖ್ಯವಾದ ಕಥೆ, ಅದರ ಸಂದೇಶ ಎಲ್ಲವೂ ಬರಬೇಕಾಗಿತ್ತು. ಕಂಪನಿಗಳಲ್ಲಿ ದಶಾವತಾರದ ನಾಟಕ ಇರ್ತಿತ್ತು. ಆದರೆ ಅಲ್ಲಿ ಇಡೀ ರಾತ್ರಿ ಸಮಯಾವಕಾಶವಿರುತ್ತಿತು. ಆದರೆ ಸಿನಿಮಾ ಹಾಗಲ್ಲ ಕಡಿಮೆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮುಗಿಯಬೇಕು. ಬಿ.ಎಸ್. ರಂಗಾ ಅವರು ಈ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಕಂಪನಿ ನಾಟಕಗಳ ಅನುಭವವನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನೂ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಓದಿ ಕೊಂಡಿದ್ದ ಜಿ.ವಿ. ಅಯ್ಯರ್ ಅವರಿಗೆ ವಹಿಸಿದರು. ಆರು ತಿಂಗಳು ಶ್ರಮವಹಿಸಿ ಅಯ್ಯರ್ ಅದನ್ನು ರೂಪಿಸಿದ್ದರು. ವಿಷ್ಣುವು ಮತ್ಸ ಅವತಾರದಿಂದ ಆರಂಭಿಸಿದ ಬುದ್ಧ ಅವತಾರದೊರಗೆ ಎತ್ತಿದ ಒಂಭತ್ತು ಅವತಾರಗಳ ಕಥೆಯನ್ನು ಇದರಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿದ್ದಲ್ಲದೆ ಮುಂದೆ ಎತ್ತಲಿರುವ ಕಲ್ಕಿ ಅವತಾರದ ಕುರಿತೂ

ವಿವರಗಳನ್ನು ನೀಡಲಾಗಿತ್ತು. ಅಯ್ಯರ್ ಅವರೇ ಚಿತ್ರಕಥೆ ಮತ್ತು ಸಂಭಾಷಣೆಗಳನ್ನು ಕೂಡ ರಚಿಸಿದರು. ಹತ್ತು ಅವತಾರದ ಕಥೆಯೂ ಬರುವಾಗ ಎಷ್ಟೊಂದು ಪಾತ್ರಗಳು ಆಗಿ ಬಿಡುತ್ತವೆ ಅಲ್ಲವೆ? ರಾಮಾಯಣ ಕೂಡ ಈ ಹತ್ತು ಅವತಾರದಲ್ಲಿ ಒಂದಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಅದು ಕೂಡ ಈ ಯೋಜನೆಯ ಭಾಗವಾಗಿ ಬಂದಿತು. ಇದರಲ್ಲಿ ರಾವಣನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಡಾ. ರಾಜ್‌ಕುಮಾರ್ ಮಾಡಿದ್ದರೆ ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿದ್ದವರು ಲೀಲಾವತಿ ಆದವಾನಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಿದೇವಿ ಸೀತೆಯಾಗಿ ಮತ್ತು ರಾಜಾಶಂಕರ್ ರಾಮನಾಗಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ್ದರು. ಉದಯ ಕುಮಾರ್ ಹನುಮಂತನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದರು. ಈ ಚಿತ್ರದ ರಾಮಾಯಣ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶ್ರೀರಾಮನ ವಿಲಾಪವನ್ನು ಹೇಳುವ 'ವೈದೇಹಿ ಏನಾದಳೋ' ಸೀತೆಯ ನೋವನ್ನು ಹೇಳುವ 'ರಘುಪತಿ ರಾಘವ ರಾಜಾರಾಮನ ನಗೆಮೊಗ ನೋಡಲು ಕಾದಿಹೆನಾ' ಚಿತ್ರಗೀತೆಗಳೆರಡೂ ಇಂದಿಗೂ ಜನಪ್ರಿಯವಾಗಿವೆ. ರಾಜ್‌ಕುಮಾರ್ ಅವರು ರಾವಣನ ಪಾತ್ರ ಮಾಡಿದ್ದರಲ್ಲ ಈ ಕುರಿತು ಒಂದು ಘಟನೆಯನ್ನು ನಿಮಗೆ ಹೇಳಲೇಬೇಕು. ಆಗೆಲ್ಲ ಈಗನಂತೆ ಗ್ರಾಫಿಕ್ಸ್ ಇರಲಿಲ್ಲ. ರಾವಣನ ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ಹತ್ತು ತಲೆಯನ್ನು ಇಡಲಾಗಿತ್ತು. ಇವುಗಳಿಗೆ ಹತ್ತು ಚೌಕಾಕಾರದ ದಾರಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಲಾಗಿತ್ತು. ಒಂದು ದಾರದ ಚೌಕದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಮಿಕ್ಕ ಒಂಬತ್ತು ತಲೆಗಳು ಅದನ್ನೇ ನೋಡುವಂತೆ, ಆದರೆ ವಿಭಿನ್ನ ವಾದ ಭಾವಾಭಿನಯ ಇರುವಂತೆ ಸಂಯೋಜಿಸಲಾಗಿತ್ತು. ಇದಕ್ಕೆ ಹತ್ತು ವಿಭಿನ್ನವಾದ ಮಾಸ್ಕ್‌ಗಳನ್ನು ಬಳಸಲಾಗಿತ್ತು. ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ದ ಮಾಡುವುದು ಹೇಗೆ ಎಂದು ಯೋಚಿಸುವುದು ಚಿತ್ರದ ಮುಖ್ಯವಾದ ಸನ್ನಿವೇಶ. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ರಾತ್ರಿ ಹತ್ತು ಗಂಟೆಗೆ ಆರಂಭವಾದ ಚಿತ್ರೀಕರಣ ಮುಗಿದಿದ್ದು ಬೆಳಗಿನ ಜಾವದ ಐದು ಗಂಟೆಗೆ. ರಾಜ್ ಕುಮಾರ ಭಾವಪೂರ್ಣವಾದ ಅಭಿನಯವನ್ನು ನೀಡಿದ್ದರು. ಹತ್ತು ತಲೆ ಹೊತ್ತುಕೊಂಡರೆ ಕೇಳುವಂತೆಯೇ ಇರಲಿಲ್ಲ ದೃಷ್ಟಿಯೂ ಅಸ್ಪಷ್ಟವೆಂದರೆ ನಡೆದೀತು. ಹೀಗಿದ್ದರೂ ಅಭಿನಯಕ್ಕೆ ಕೊಂಚವೂ ದೋಷ ಬರದಂತೆ ನಟಿಸಿದರು. ಚಿತ್ರೀಕರಣ ಮುಗಿಯುತ್ತಿದ್ದಂತೆಯೇ ಕುಸಿದು ಬಿದ್ದರು. ಚೇತರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಹಲವು ಗಂಟೆಗಳೇ ಬೇಕಾಯಿತು. "ದಶಾವತಾರ" ಬಹಳ ಒಳ್ಳೆಯ ಸಿನಿಮಾ ಎನ್ನೋದರ ಜೊತೆಗೆ ಕಷ್ಟದಲ್ಲಿದ್ದ ಕನ್ನಡ ಚಿತ್ರರಂಗಕ್ಕೆ ಚೇತರಿಕೆ ನೀಡಿದ ಸಿನಿಮಾ ಕೂಡ ಹೌದು. ಕೆಲಮಟ್ಟಿಗಾದರೂ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಹೊಂದಿರುವ ಸ್ವಂತ ಕನ್ನಡ ಚಿತ್ರ ಕೂಡ ಇದೊಂದೇ ಆಗಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣದ ಯುದ್ಧದ ನಂತರದ ಉಪಕಥೆಯನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ 'ಶ್ರೀರಾಮಾಂಜುನೇಯ ಯುದ್ಧ' 1963ರಲ್ಲಿ ತೆರೆ ಕಂಡ ಇನ್ನೊಂದು ಮಹತ್ವದ ಚಿತ್ರ. ಎಂ.ಎಸ್. ನಾಯಕ್ ನಿರ್ದೇಶಿಸಿದ ಈ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ರಾಜ್ ಕುಮಾರ್ ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಉದಯಕುಮಾರ್ ಆಂಜನೇಯನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು. ಕೆ.ಸ್. ಅಶ್ವತ್ಥ್, ಢಿಕ್ಕಿ ಮಾಧವ ರಾವ್, ಶ್ರೀಕಂಠ ಸ್ವಾಮಿ, ಜಯಂತಿ, ಪಂಢರಿಬಾಯಿ, ಚಂದ್ರಕಲಾ ಮೊದಲಾದವರು ತಾರಾಗಣದಲ್ಲಿದ್ದರು. ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಮುಖ ಪಾತ್ರಗಳ ವಿಭಿನ್ನವಾದ ಸಂಘರ್ಷದ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ರಾಜ್‌ಕುಮಾರ್ ಮತ್ತು ಉದಯಕುಮಾರ್ ಇಬ್ಬರೂ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಅಭಿನಯ ನೀಡಿದ್ದರು. ಅಶ್ವತ್ಥ್ ನಾರದರಾಗಿ ಅಭಿನಯಿಸಿದ ಚಿತ್ರ ಸತ್ಯಂ ಅವರನ್ನು ಸಂಗೀತ ನಿರ್ದೇಶಕರಾಗಿ ಪರಿಚಯಿಸಿತ್ತು. ಗೀತಪ್ರಿಯ ಅವರ ಸಂಭಾಷಣೆ ಮತ್ತು ಗೀತೆಗಳು ಚಿತ್ರದ ವಿಶೇಷವಾಗಿದ್ದವು. ಹನುಮನ ಪ್ರಾಣ ಪ್ರಭು ರಘುರಾಮ, ಜಗದೀಶನಾಡುವ ಜಗವೇ ನಾಟಕ ರಂಗ ಈ ಚಿತ್ರದ ಜನಪ್ರಿಯವಾದ ಗೀತೆಗಳು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವ ಕನಸನ್ನು ಕಂಡವರು ಕು.ರ. ಸೀತಾರಾಮ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳು. 1972ರಲ್ಲಿ ಇಂತಹದೊಂದು ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಅವರು ಆರಂಭಿಸಿದ್ದರು. ರಾಜ್‌ಕುಮಾರ್ ಮತ್ತು ಭಾರತಿಯವರ ತಾರಾಗಣದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರದ ಕೆಲಸಗಳು ಆರಂಭವಾಗಿದ್ದರೂ ಕಾರಣಾಂತರದಿಂದ ಮುಂದುವರೆಯಲಿಲ್ಲ. ಬಹಳ ಕಾಲದ ನಂತರ ಎಂದರೆ 2008ರಲ್ಲಿ ಶ್ರೀನಿವಾಸ್ ಪ್ರಸಾದ್ ಅವರ ನಿರ್ದೇಶನದಲ್ಲಿ ಕಣಗಾಲ್ ಪ್ರಭಾಕರ ಶಾಸ್ತ್ರಿಗಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾಟಕ 'ಪ್ರಚಂಡ ರಾವಣ' ಚಲನಚಿತ್ರವಾಯಿತು. ದೇವರಾಜ್ ರಾವಣನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದರೆ

ಸುಧಾರಾಣಿ ಮಂಡೋದರಿಯಾಗಿದ್ದರು. ಭರತ್ ಭಾಗವತರ್ ಆಂಜನೇಯನ ಪಾತ್ರವನ್ನು ನಿರ್ವಹಿಸಿದ್ದರು.

ಜಿ.ವಿ. ಅಯ್ಯರ್ ತಾತ್ವಿಕವಾಗಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ತಮ್ಮ ಕೊನೆ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಡಿದ್ದರು. ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ರೂಪಕಗಳ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡಲು ಅವರು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರು. ಸೀತೆಯನ್ನು ವಿಜ್ಞಾನದ ಸಂಕೇತವಾಗಿಸಿದರೆ ರಾವಣನನ್ನು ವಿಜ್ಞಾನಿಯಾಗಿಸಿದರು. ರಾಮ ಅಧ್ಯಾತ್ಮದ ನೆಲೆಗೆ ಬಂದ ಹೀಗೆ ಎಲ್ಲಾ ಪಾತ್ರಗಳಿಗೂ ಗುಣದ ರೂಪ ನೀಡಿ ಹೊಸ ಮಾದರಿಯಲ್ಲಿ ಕಥೆ ಹೇಳಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರು. ಕಲಾವಿದರ ಹುಡುಕಾಟಕ್ಕಾಗಿ ಮುಂಬೈಗೆ ಹೋದರು. ಅಲ್ಲಿಯೇ ಅನಾರೋಗ್ಯಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿ 2003ರ ಜನವರಿ 21ರಂದು ನಿಧನರಾದರು. ಹೀಗಾಗಿ ಬಹಳ ವಿಶಿಷ್ಟವಾಗಿ ರೂಪುಗೊಳ್ಳಬಹುದಾಗಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣ ದೊರಕದೇ ಹೋಯಿತು.

## ವಿದೇಶದಲ್ಲಿಯೂ ರಾಮಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಚಿತ್ರಗಳು

ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ವಿದೇಶಿ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಚಲನಚಿತ್ರಗಳು ಬಂದಿವೆ. 'ರಾಮಾಯಣ ದಿ ಲೆಜೆಂಡ್ ಆಫ್ ಪ್ರಿನ್ಸ್ ರಾಮ' (1992) ಮತ್ತು 'ರಾಮಾಯಣ ದಿ ಎಪಿಕ್' ಎನ್ನುವ ಎರಡು ಹಾಲಿವುಡ್ ಚಿತ್ರಗಳು ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿವೆ. 'ದಿ ಲಿಟಲ್ ಪ್ರಿನ್ಸೆಸ್' ಎನ್ನುವ ಜಪಾನಿ ಚಿತ್ರ 1995ರಲ್ಲಿ ಬಂದರೆ 2008ರಲ್ಲಿ 'ಒಪೆರಾ ಜಾವಾ' ಎನ್ನುವ ಇಂಡೋನೇಷಿಯನ್ ಚಿತ್ರ ಕೂಡ ಬಂದಿತ್ತು. ರಾಮಾಯಣದ ವಸ್ತುವನ್ನು ವಿಭಿನ್ನ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡುವ ಕೆಲವು ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಪ್ರಯತ್ನಗಳೂ ನಡೆದಿವೆ. 1977ರಲ್ಲಿ ತೆರೆ ಕಂಡ ಜಿ. ಅರವಿಂದನ್ ಅವರ ಮಲೆಯಾಳಂ ಚಿತ್ರ 'ಕಾಂಚನ ಸೀತಾ' ಇಂತಹ ಪ್ರಯತ್ನ. ಇದು ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರ ಕಾಂಡವನ್ನು ಸ್ತ್ರೀವಾದಿ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡುವ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಪ್ರಯತ್ನ. ಸಿ.ಎನ್. ಶ್ರೀಕಂಠನ್ ನಾಯರ್ ಅವರ ನಾಟಕವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದ ಈ ಚಿತ್ರ ಶ್ರೀರಾಮನು ಅಯೋಧ್ಯಗೆ ಮರಳಿದ ನಂತರ ಲೋಕಾಪವಾದಕ್ಕೆ ಹೆದರಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಮರಳಿ ಕಾಡಿಗೆ ಅಟ್ಟಿದ ನಂತರದ ವಸ್ತುವನ್ನು ಹೊಂದಿತ್ತು. ಉರ್ಮಿಳೆ, ಭರತ ಸೇರಿದಂತೆ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಮುಖರು ಈ ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮನನ್ನು ನಿಂದಿಸುವುದು, ಅಶ್ವಮೇಧ ಯಾಗದಲ್ಲಿ ಬಂಗಾರದ ಸೀತೆಯನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿ ಕೊಂಡು ವ್ರತಸ್ಥನಾದ ರಾಮ ನಂತರ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟಾಗ ಲವ ಕುಶರ ಮುಖಾಮುಖಿ ಹೀಗೆ ಕಥೆ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಇಡೀ ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ಕಾಣಿಸುವುದೇ ಇಲ್ಲ ಪ್ರಕೃತಿಯ ಮೂಲಕವೇ ಅವಳ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗಳು ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತವೆ. ಸಾಂಖ್ಯ ಯೋಗದ ಪ್ರಕೃತಿ ಪುರುಷರ ಪ್ರಶ್ನೆಯನ್ನು ಗಂಭೀರವಾಗಿ ಬಳಸಿಕೊಂಡ ಚಿತ್ರ ಹಲವು ಚಿಂತನಶೀಲ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿತ್ತು. ಶ್ರೀರಾಮ ಪ್ರಸ್ಥಾನದೊಂದಿಗೆ ಚಿತ್ರ ಮುಗಿಯುವಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಸಂಕೇತಿಕತೆ ಇತ್ತು. ಮಣಿರತ್ನಂ ಅವರ 'ರಾವಣ' ಚಿತ್ರ ಆಧುನಿಕ ನೆಲೆಗೆ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಹೊಂದಿಸುವ ಮಹತ್ವದ ಪ್ರಯತ್ನವಾಗಿತ್ತು. ರಾಮ, ಸೀತೆ, ರಾವಣ ಮೂರು ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ಆಧುನಿಕ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಇಡಲಾಗಿತ್ತು. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ವಾದಿರಾಜ್ ಅವರ 'ಸೀತಾ' ರಾಮಾಯಣದ ಸೀತೆಯ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಆಧುನಿಕ ಸಂದರ್ಭಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಸಿದಂತಹ ಪ್ರಯೋಗವಾಗಿತ್ತು. ಪುಟ್ಟಣ್ಣ ಕಣಗಾಲ್ 'ಶರಪಂಜರ' ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ 'ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ ವನವಾಸದಿಂದ' ಗೀತೆಯ ಮೂಲಕ ನಾಯಕಿಯ ನೋವಿಗೆ ಸೀತೆಯ ಚಿರ ವಿರಹದ ಬಿಂಬವನ್ನು ಕೊಡುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದರು.

ರಾಮಾಯಣದ ಅಗಾಧ ಸಾಧ್ಯತೆಯನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಾಗ ಬೆಳ್ಳಿತೆರೆಯಲ್ಲಿ ಅದನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ಬಳಸಿ ಕೊಂಡಿಲ್ಲವೆಂದೇ ಹೇಳಬೇಕು. ಅಂತಹ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಿಗೆ ಉತ್ಸಾಹಿಗಳಿಗೆ ಇಂದಿಗೂ ಅವಕಾಶ ಇದ್ದೇ ಇದೆ.

❑

# vitality of ramayana:
# the ramnami cult

**Pralhad B. Mahishi**

We can try to understand the Ramnami cult, which started and flourished in the eastern districts of Chhattisgharh region. The sect was formed in 1890, by a person called Parasuram.

The cult passed through various stages.

The Ramnam became a mantra, a symbol, a drawing, a tattoo, and whatever physical and oral form it could attain, it pervaded all aspects of the sect's life.

An epic represents the perennial memory of the society to which it belongs. *Ramayana*, or the story of Rama, is an epic which is deeply rooted in the soil and minds of generations of people of India. Each place in India, rightly or wrongly, claims an association with this great epic. Some village claims that Rama spent a day in the forest of their village; another village claims that Sita washed her cloths in the stream in their village; and another place claims that Sita lost her nose ring in the stream of their village, and Hanuman, with his tail sweeping the river bed, got the ring back for her. Recently, the Uttar Pradesh Government has announced the development of *Ramayana* trail, a development of all the places Rama is said to have visited, so that the visitors can acquaint themselves with the epic by going round the places. Such is the influence of this great epic.

The influence is not limited to India. South East Asian countries, like Thailand, Burma, Indonesia, Cambodia, and Nepal have their own *Ramayana* tradition. The main story remains the same, with some small differences, which are regional, and worthy of study to understand the region's ethos and culture. For example, Thailand is called the Kingdom of Ayutaya and the king of Thailand is called Rama III. The island of Bali in Indonasia has its own version of *Ramkatha*, and is enacted as a ballet all over the island. Similarly, *Ramayana* in Mymnar also has its local flavour, even though the basic contents of the Rama story remain the same.

Within India, the story of Rama has kindled the interests of dramatists since a long time, to compose dramas based on this subject. Bhavabhooti's *Uttararamacharita* and *Maharaveera charita*, Bhasa's *Abhishekanatakam* and *Pratimanatakam*, are some examples. Sometimes, the authors have departed from the main text, but keeping the spirit of the story intact. In *Pratimanatakam*, prince Bharata comes to know about the death of his father, Dasharatha, through the statue erected in his memory, not having received the tidings of his father's death. The dramatist's imagination is totally within the storyline, departing from the main narration only in matters of detail.

The regional rendering of the great epic throws light on the social milieu of that particular region, keeping the main body intact. An example in case is *Krttivasa Ramayana* of Bengal. The author incorporates many social details in his narration. One such detail is the wedding of Rama. There is an institution in Bengal called 'Ghataka', which means the 'match maker'. Krittivasa Oza (1400-1500) states that King Janaka dispatched Sage Viswamitra to bring Dasaratha to the wedding, whereas in the original Valmiki *Ramayana*, it is stated that the king Janaka dispatched messengers to bring Dasaratha to the wedding of Srirama, and even Tulasidasa adopts the same line as Valmiki. Viswamitra is ecstatic on his way to Ayodhya, 'since I become the Ghataka for the wedding of Rama, my fame will spread in all directions'. (Ramnath Tripathi). Sri Tripathi claims that Krittivasa's departure impressed even Tulasidas, who in his later work on same subject, invented the institution of match maker, and made Shatananada, the priest of Janaka, the match maker and dispatches him as a messenger to Dasharatha. This departure is in *Gitavali* (1628-31), a later work of Tulasidas.

There is an attempt in regional versions of Ramayana to remove the stigma that Rama gets due to his acts like killing of Vali and deserting of Sita after he vanquishes Ravana. Regarding deserting Sita, Krittivasa states that Sita suffered the curses of Tara, wife of Vali, and Mandodari, the wife of Ravana. Both these women curse Sita, stating that she should suffer loneliness and destitution, since her husband killed their husbands. This devise of Krittivasa is his own, which is not to be found in Valmiki Ramayana. Similarly, some authors try to absolve Rama of his sin in killing Vali, when he was not armed, and was killed from behind. In Valmiki, his act is justified, for committing a great sin of coveting his brother's wife, but in *Anandaramayana*, (1400 to 1500) Rama is repentant for his killing of Vali, and exhorts Vali to kill him in Dwapara Yuga, for his pleasure. Here we can recollect the tale of a hunter who shoots an arrow at lord Krishna's foot, mistaking it to be a bird, when he was lying down.

### *Rama as the patron deity of India*

Why did Rama emerge as the patron deity of India, among all the avatars of Vishna? Many scholars believe that the two Acharyas from South India, Sri Ramanujacharya, who founded the Vishishtadwaita school of philosophy, and Sri Madhwacharya, who founded the school of Dwaita spread the worship of Rama. It seems that these two great acharyas chose Rama to represent the Vaishnava Godhead, as he was the epitome of all virtues, and known for his ethical treatment and a "personification of 'Dharma'," as Maricha states in his advice to Ravana, pleading that he should not go to war with Rama.

### *The popular Rambhakti Movements*

Ramananda, a great devotee of Rama, who llived in 15th century, was responsible for the spread of Rambhakti in north India, especially in Gangetic and Yamuna river belts. During his visit to Garwal, he is said to have laid the foundation of a Rambhakti cult, called "Ramavat", which became well known and popular among the devotees of Rama. (D.P.Sakalani, 'The Ramayana tradition in Central Himalayas', Annals of Bhandarkar Oriental Research Institute, vol. 84, pages 117- 126.). He was a Brahmin, and took within his fold people of all castes and creeds. This 'Ramavat', a popular Rambhakti cult, seems to be the first one, followed by Kabir panthis, the Ramsnehi cult, and finally, the Ramnami cult about which this paper will deal extensively.

### *The time of composition of Ramcharitamanas, by Goswami Tulsidas.*

Abundant research has been done in understanding the time and circumstances of composition of this great work, also known as the '*Fifth Veda'* or the '*Hindi Veda'* in Hindi belt. Goswami Tulasidas has made two valiant attempts in his work, to bring about reconciliation among two conflicting ideas, which must be vying with each other for dominant position during his time. One is the conflict between Advaita and Dwaita, and other is between Shivabhakti and Vishnubhakti. He has made an attempt to bring both of them together, and hence is known as the 'Samanvaya Kavi', or poet of reconciliation or coordination.

Advaita philosophy describes Brahman, or the Supreme Godhead, as 'nirguna' and 'nirakara', which when translated, would mean, 'property-less', or 'quality-less', or 'beyond any trait', and 'nirakara' would mean, 'formless'. As a midway between these two concepts, emerged the concept of "Nirgun Ram", who was made popular by Kabir, through his *dohas*. The same concept was adopted by Tulasidas, who sang the praise of 'Nirgun Ram'.

For those who read the *Ramayana* of Valmiki, the concept seems hard to digest. Valmiki describes Rama as epitome of all the virtues, in the world, and does not miss a single opportunity to describe his divine qualities. Whether it is child Ram, or young man, or one who is grieving the departure of Sita due to Ravana's machination, or the fighter, or the victor in war, his good qualities have been brought to light and lionized. When it is so, it is hard to understand how a devotee can conceive a property-less, quality-less, and virtue-less Ram. However, the concept has come to stay in the minds of people, and is frequently referred to.

Another concept is reconciliation between Shaiva and Vaishnava cults. Tulasidas portrays Shiva as a great friend of Rama, and in Tulasi's narration of his epic, he brings about a situation where part of *Ramacharitamanas* is narrated by Shiva to Parvati. In the same text, Tulasi makes Ram say, 'One who is not devoted to Shiva cannot be my devotee'. Thus Tulasi makes an attempt to bring about reconciliation between Shaivas and Vaishnavas, between whom, rivalry must have been raging at that time.

### *The Ramnami cult: Beginning*

In this background, we can try to understand the Ramnami cult, which started and flourished in the eastern districts of Chhattisgharh region. The sect was formed in 1890, by a person called Parasuram, who belonged to the profession of leather workers, who today belong to the scheduled caste, and are included in the Schedule to the Constitution. Parasuram's father has been a great Ram devotee, and listened to and memorized the verses in *Ramcharitamanas* (hereafter will be referred as RcM.). According to the oral accounts, Parasuram contacted leprosy when he was in his mid twenties, and was cured by an ascetic belonging to Ramanand's order, which has been referred above. The ascetic told Parasuram to practice Rambhakti and recite RcM and devote his life to propagation of the same. All this information is based on oral hagiography, and there is no material evidence. The good word spread, and illiterate villagers were attracted to his teachings. Most of the people attracted belonged to his own caste, that of leather workers.

The cult passed through various stages. It started with oral tradition, with its head reciting from the text, those portions which he had memorized, as he was not literate. The book enjoyed the status of an idol, which would be handled with reverence, even though people around could not read it and memorize it. So, the Ramnam became a mantra, a symbol, a drawing, a tattoo, and whatever physical and oral form it could attain, it pervaded all aspects of the sect's life. The sect lived and breathed Ramnam, even though most of them were illiterate, but adopted various symbols to make up the deficiency of literacy. They had it written everywhere, wore shawls printed with Ramnam, and showed an unflinching expression of their commitment: they had Ramnam tattooed all over their bodies.

### *Texts used by followers*

As time passed, more people became literate, and started reading the RcM. With the starting of the first World War, demand for leather and leather goods increased, as the countries had to provide boots to the soldiers and saddles to the horses. It brought about some kind of economic relief to the leather workers, who could improve their standard of living to some extent. The number of literate persons increased in the cult, and they started sourcing the praise of Ram from other texts, keeping RcM as the basic text.

The texts which could appeal to them most were the ones which dealt with 'Nirgun Ram'. The first one to popularize the concept of Nirgun Ram was Kabir, and Kabir's poetry and sayings became very popular in this cult. Already Kabirpanth was in existence in Madhya Pradesh region for more than two hundred years, and Kabir's repeated assertion of importance of Ramnam attracted the members of this cult, and they incorporated many of Kabir's poetry into their daily Bhajans. Kabir's pithy and direct statements suited the ethos of the cult, and they accepted them gladly.

Another work which attracted this cult was a book by name, '*Visram Sagar*', written by Raghunathadas, founder of the Ramsnehi cult, which was popular in Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. Written in 19th century, it also eulogises the concept of Nirgun Ram, and hence it is dear to the Ramnamis, and occupies a position second only to RcM.

In addition to these texts, the sect has also borrowed from other texts of Tulasidas, and also from various other writers, who subscribe to a 'non Vedic' and 'non *Puranic*' tradition. Thus, the Ramnamis have made their own anthology of literature, which suits their ethos.

### *Bhajan*

The cult's practice of Ramnam can be divided into three kinds. One is the simple Bhajan, which is done in chorus. In the middle of this chorus, some of the participants introduce a '*Doha*', or a '*Choupai*', which are two lined and four lined poems with different meters. The person who introduces this poem, mainly sourced from RcM and occasionally from other texts, indicates his wish to intervene, and he is provided an opportunity. Ramnamis place a copy of RcM in the middle of their Bhajan session, on a bookstand, or on a piece of cloth. Around this the program is conducted. The Bhajan session attracts many passersby, as they are attracted by the peacock feather caps, bright yellow shawls inscribed with Ramnam which is worn by the participants, and the tattoos on their bodies. The Ramnamis believe that more persons hearing the Ramnam, better it is for the society, as benefit is shared by more. Every participant has an urge to introduce a new 'Doha' or a new 'Choupai', and as a result, one does not hear the repetition at all, and that too, if heard, is very rare. Generally, the Ramnamis use about five to six hundred verses from RcM and about a hundred or so from other texts.

### *Special feature of Ramnami tradition*

A prominent feature of the 'doha' or 'choupai' is that those verses, wherever the word 'Brahmin' occurs, it is replaced by 'Ramnam'. Similarly, in the verses that are unfavourable to women, animals, and some classes are either omitted, or the unfavorable word is replaced by 'Ramnam'. For example there is a verse,

> ***The Lord took human form to help Brahmins, cows, gods, and holy men.***
>
> This gets replaced by the following line.
>
> ***The Lord took human form to help gods and holy men by giving them the practice of Ramnam.***

(Source:Ramdas Lamb,1991)

### *Conversation*

The second format of Ramnamis is conversation. The conversation is carried out by selecting lines from the RcM and other sources, mentioned above, so that a meaningful conversation is made. If a person wants to engage another in conversation, he may give a clue. He may adopt the lines of Shabari, the woman who waited to see Rama. He may tell the person, whom he approaches, using the words of Shabari, "I have been longing to see you. My wish is fulfilled". To this another person, who was addressed, may reply, "Yes. The Darshan which even sages wish to have, but do not get, is now available to the low born like me." Here the other person is adopting the conversation of Vibheeshan, Ravana's brother.

The Ramnamis generally adopt the conversations of Hanuman, Vibheeshan, and Nishadraj, who are unflinching devotees of Rama, and hence, every word spoken by them can be used in conversation. The individuals, who want to make an intelligent conversation, have to study more and more of RcM. As a rule, the conversation should end with singing the glory of Ram and Ramnam.

### *Takkar*

The third format is called *takkar*, which when translated would mean debate, confrontation, or argument. This involves a good knowledge of RcM, and other texts used by the Ramnamis. Not all who can conduct conversation can engage themselves in *takkar*, as it requires understanding the nuances of various concepts used in conversation, and capability to be ready with wise and appropriate answers. The people participating in *takkar* are called *Vidwans*, and now they are called *Gyanis*, to take away the element of cleverness in the knowledge, but to indicate divine knowledge. The *takkar* may last for a few minutes, involving a few exchanges, or it may be a long affair, like rallies for a match point. Ultimate winner has to be Ramnam, whosoever wins. But the participants can show their depth of knowledge, wisdom, ready wittedness, and understanding.

The *takkars* are of two kinds. One is *Gyan takkar* where the participants exhibit their knowledge of arguing skills, and another is *Leela takkar*, which is playful, and joyous, giving pleasure to listeners. Both kinds of *takkars* have to come to an end with a ***Samarthak***, which is the conclusive verdict in favour of Ramnam. Every *Gyani* creates his own repertoire of verses, either playing a pro-Ram role, like Laxman, Bharat, Hanuman, etc., or anti Ram role like Ravan, Kumbhakarn, Indrajit, or Kaikayee. The words praising Brahmins are put in the mouths of demons, like Ravana, who himself was a Brahmin, or in the mouths of characters opposed to Rama.

Here, a *Gyan takkar* is reproduced, ( Ramdas Lamb, ibid.), which took place in the Ramnami Festival in 1989. The Ramnamis hold annual festivals in different parts of the region, which are largely attended, and skilled *Gyanis* participate. A *Gyani* throws up the challenge like this.

> ***According to Vedas, itihasas and puranas, God's creation is filled with both good and evil.***
>
> Accepting his challenge, the participating *gyani* replies.
>
> ***God created all existence as a mixture of good and evil. Swanlike saints drink the nectar of goodness, leaving behind the waters of imperfection.***
>
> Resounding the first *Gyani* replies using two verses, consecutively, the second aimed at bolstering the view presented in the first:
>
> ***Planets, medicinal plants, water, wind, and clothing become useful or harmful in accordance with their good and bad associations. Only a clever and thoughtful person can know the difference.***
>
> ***Only when the Creator gives on discriminative wisdom does the mind turn from sin to goodness.***
>
> The second *gyani* makes a rejoiner, which can be called a '*samarthak*':
>
> ***Knowing the world to be permeated by Ram's name, I bow with joined hands.***
>
> Here, the *gyani*, to corroborate his viewpoint, uses *Hamsaksheera Nyaya.*

Over the years, the number of *Gyanis* or *Vidwans* is increasing, with more and more literate persons taking to study *Ramcharitamanas*. Even other texts are being studied, and the circles of Ramnamis where such conversations and debates take place are becoming specialized, and more focused. The tradition of Ramnamis is growing, and providing more and more experimentation. They have increased the vitality of *Ramayana*, especially *Ramcharitamanas*, and providing themselves a group identity and a social cause.

This is the character of a great epic, which runs in the veins of a nation. It provides all things to all men, all the time.

**References:**

*Valmiki Ramayana*, Gita press, Gorakhpur.

Goswami Tulasidas, *Ramcharitmanas*, Gita Press, Gorakhpur.

Ramdas Lamb Ramnamis, doctoral thesis *Ramnamis, Ramanam and The Role of Low Caste in Rambhakti Tradition* (1991), University of California.

Philip Lutgendorf, 'The Power of Sacred Story: "Rāmāyan a" Recitation in Contemporary North India', *Journal of Ritual Studies,* Vol. 4, No. 2, Ritual and Power (Summer 1990), pp. 115-147

Ramanath Tripathi's doctoral thesis - *Krttivasi - Bengala Ramayana aur Ramacaritamanasa ka Tulanatmak Adhyayan* (Comparison Between Tulasidas's Ram Charita Manas and Krittivasa Ramayana), Bharat Prakashan Mandir, Subhash Road, Aligarh.

D.P. Sakalani, 'Traditions of Ramayana,' *Annals of Bhandarkar Institute*.

❑

# ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ಆಧುನಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕಗಳು ಒಂದು ಸಮೀಕ್ಷೆ

ಪ್ರಸ್ತುತ ಈ ಲೇಖದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿದ ಆಧುನಿಕ ನಾಟಕಕಾರರಾದ ಕರ್ನಾಟಕದವರೇ ಆದ ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲ ಭೂಷಣ, ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದವರಾದ ವನಮಾಲಾ ಭವಾಲ್ಕರ್, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದವರಾದ ವರ್ಣೇಕರ್, ಎಸ್.ಬಿ. ವೇಲಂಕರ್, ಕರ್ನಾಟಕದವರೇ ಆದ ಕೆ.ಟಿ. ಪಾಂಡುರಂಗಿ, ಆಂದ್ರದವರಾದ ಓಗೇಟಿ ಪರೀಕ್ಷೀತ್ ಶರ್ಮಾ, ಕಾಲೂರಿ ಹನುಮಂತ ರಾವ್, ವಿ. ಆಂಜನೇಯ ಶರ್ಮಾ, ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶದ ರಾಮ ಕಿಶೋರ ಮಿಶ್ರಾ, ದಿಲ್ಲಿಯವರಾದ ರಮಾಕಾಂತ ಶುಕ್ಲಾ, ಕರ್ನಾಟಕದವರಾದ ಗುರುಪಾದ ಕೆ.ಹೆಗಡೆ, ಭೋಪಾಲದ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯ ತ್ರಿಪಾಟಿಯವರ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ಸಮೀಕ್ಷೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.

ಡಾ. ಎಸ್. ರಂಗನಾಥ್

ಆದಿ ಕಾವ್ಯವೆಂದೇ ಖ್ಯಾತವಾಗಿರುವ ಶ್ರೀಮುದ್ರಾಮಾಯಣ ಭಾರತೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ಸದಾಚಾರ, ಸನ್ನಡತೆಗಳ ಸಾಕಾರ ಗ್ರಂಥವೆಂಬುದು ನಿರ್ವಿವಾದ. ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳಿಗೆ ಅಲ್ಲದೆ ವಿದೇಶೀ ಭಾಷೆಗಳಿಗೂ ಸಹ ಅನುವಾದಿತವಾದ ಪ್ರಭಾವ ಬೀರಿರುವ ಜನಪ್ರಿಯ ಗ್ರಂಥ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ. A GREAT WORK IS THAT WHICH STANDS THE TEST OF TIME ಎನ್ನುವ ನಾಣ್ಣುಡಿಗೆ ಜ್ವಲಂತ ನಿದರ್ಶನವಾಗಿ ನಮ್ಮೆದುರು ತೋರುವ ಕೃತಿಯೇ ರಾಮಾಯಣ. ಇಂತಹ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಸ್ಫೂರ್ತಿಯನ್ನಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಅನೇಕ ಕವಿವರೇಣ್ಯರು ಮಹಾಕಾವ್ಯ, ಖಂಡಕಾವ್ಯ, ಗದ್ಯಕಾವ್ಯ, ದೂತಕಾವ್ಯ, ಚಂಪೂಕಾವ್ಯ, ಸ್ತೋತ್ರಕಾವ್ಯ, ನಾಟಕ ಇತ್ಯಾದಿ ಸಾಹಿತ್ಯದ ವಿಭಿನ್ನ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಕೃಷಿ ಮಾಡುತ್ತಿರುವುದು ನಮಗೆ ವೇದ್ಯವಾದುದೇ ಆಗಿದೆ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯವೆಂದೇ ಖ್ಯಾತವಾಗಿರುವ ನಾಟಕ ಅತ್ಯಂತ ಜನಪ್ರಿಯವೂ, ಜನಾದರಣೀಯವೂ ಆಗಿರುವುದರಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹವಿಲ್ಲ. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಭಾಸ, ಭವಭೂತಿ, ದಿನ್ನಾಗ, ಮುಂತಾದವರು ಪ್ರತಿಮಾ ನಾಟಕ, ಅಭಿಷೇಕ ನಾಟಕ, ಮಹಾವೀರಚರಿತೆ, ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತೆ, ಕುಂದಮಾಲಾ ಮುಂತಾದ ಮನೋಜ್ಞವೂ, ಚೇತೋಹಾರಿಯೂ ಆದ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಸ್ಪೂರ್ತಿ ಪಡೆದು ರಚಿಸಿ ಅಮರರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಪ್ರತಿಭಾಷೆಯೂ ಸಹ ಸಮಾಜದ ಬದಲಾವಣೆ, ಪ್ರಸಕ್ತ ಸ್ಥಿತಿಗತಿಗಳು, [ಕವಿ ಸಮಯಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ಬಿಡದೆ ಹೊಸ ಬದಲಾಣೆಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು ಕಾವ್ಯವನ್ನು ಸಮೃದ್ಧಗೊಳಿಸುವಂತೆ ಸಂಸ್ಕೃತದ ಆಧುನಿಕ ಕವಿಗಳೂ ಸಹ ತಮ್ಮ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.] ಕಾಶ್ಮೀರದಿಂದ ಕನ್ಯಾಕುಮಾರಿಯವರೆಗೆ, ಮುಂಬೈನಿಂದ ಕಲ್ಕತ್ತಾದವರೆಗೆ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರತಿಭಾವಂತ ಕವಿಗಳು ಕಾವ್ಯದ ವಿಭಿನ್ನ ಪ್ರಕಾರವಾದ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳು, ಖಂಡಕಾವ್ಯಗಳು, ದೂತಕಾವ್ಯಗಳು, ಚಂಪೂಸಾಹಿತ್ಯ, ಸ್ತೋತ್ರ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಗೀತಕಾವ್ಯಗಳು, ನಾಟಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಕೇವಲ ಗಾತ್ರ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ವಿಷಯವೈವಿಧ್ಯತೆಯ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದಲೂ ಹೊರಹೊಮ್ಮುತ್ತಿರುವುದು ನಿಜಕ್ಕೂ ಅದ್ಭುತವೇ ಸರಿ.

ಪ್ರಸ್ತುತ ಈ ಲೇಖದಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿದ ಆಧುನಿಕ ನಾಟಕಕಾರರಾದ ಕರ್ನಾಟಕದವರೇ ಆದ ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲ ಭೂಷಣ, ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದವರಾದ ವನಮಾಲಾ ಭವಾಲ್ಕರ್, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದವರಾದ ವರ್ಣೇಕರ್, ಎಸ್.ಬಿ. ವೇಲಂಕರ್, ಕರ್ನಾಟಕದವರೇ ಆದ ಕೆ.ಟಿ. ಪಾಂಡುರಂಗಿ, ಆಂದ್ರದವರಾದ ಓಗೇಟಿ ಪರೀಕ್ಷೀತ್ ಶರ್ಮಾ, ಕಾಲೂರಿ ಹನುಮಂತ ರಾವ್, ವಿ. ಆಂಜನೇಯ ಶರ್ಮಾ, ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶದ ರಾಮ ಕಿಶೋರ ಮಿಶ್ರಾ, ದಿಲ್ಲಿಯವರಾದ ರಮಾಕಾಂತ ಶುಕ್ಲಾ, ಕರ್ನಾಟಕದವರಾದ ಗುರುಪಾದ ಕೆ.ಹೆಗಡೆ, ಭೋಪಾಲದ ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯ ತ್ರಿಪಾಟಿಯವರ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ಸಮೀಕ್ಷೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.

ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲ ಭೂಷಣರಿಂದ ಹಿಡಿದು ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯ ತ್ರಿಪಾಟಿಯವರವರೆಗೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಈ ಅನುಕ್ರಮಣಿ ಜನ್ಮ ದಿನಾಂಕದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ.

### I ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲಭೂಷಣ

ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲಭೂಷಣ ಎಂಬ ಕಾವ್ಯನಾಮವುಳ್ಳ ಜಗ್ಗೂ ಅಳ್ವಾರ್ ಅಯ್ಯಂಗಾರರು 1902ರಲ್ಲಿ ಮೇಲುಕೋಟೆಯ ಸಮೀಪವಿರುವ ಛತ್ರಘೋಷ ಎಂಬಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ನಾಟಕಗಳು, ಪದ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು, ಚಂಪೂಕಾವ್ಯಗಳು, ಗದ್ಯಕಾವ್ಯಗಳು, ಸ್ತೋತ್ರಕಾವ್ಯಗಳು ಇತ್ಯಾದಿ ಸಂಸ್ಕೃತದ ವಿಭಿನ್ನ ಪ್ರಕಾರಗಳಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯರಚನೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ.

ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕಗಳು ಇಂತಿವೆ :–

### 1. ಮಂಜುಲಮಂಜೀರಂ

ಎಂಟು ಅಂಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ಪಡೆದು ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟ ನಾಟಕವೇ ಮಂಜಲಮಂಜೀರ. ಮಂಜೀರ ಎಂದರೆ ನೂಪುರ ಅಥವಾ ಗೆಜ್ಜೆ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಹೇಳುವಂತಹ **ನಾಹಂ ಜಾನಾಮಿ ಕೇಯೂರೇ ನಾಹಂ ಜಾನಾಮಿ ಕುಂಡಲೇ ನೂಪುರೇತ್ವಭಿಜಾನಾಮಿ ನಿತ್ಯಂ**

**ಪಾದಾಭಿವಂಧನಾತ್** ಎಂಬ ವಾಕ್ಯವೇ ಈ ನಾಟಕದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಗೆ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ನೀಡಿರಬಹುದು.

ಮೂರು ಮಂಗಳ ಶ್ಲೋಕಗಳ ನಂತರ ಸೂತ್ರಧಾರನ ಪ್ರವೇಶವಾಗಿ ಅವನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಸ್ಮರಿಸುತ್ತಾನೆ :

**ಸಂಸಾರದಾವಾನಲದಹ್ಯಮಾನಾನ್ ಯಶ್ಚೇತನಾನ್ನಾಮ ಕಥಾಮೃತಾಘೈಃ ।**
**ಅಪ್ಯಾಯಯಾಮಾಸ ಕವೀಶ್ವರಂ ತಂ ಪ್ರಾಚೇತಸಂ ಚೇತಸಿ ವಾಸಯಾಮಿ ॥**

ಮತ್ತೆ ಸೂತ್ರಧಾರನ ಉದ್ಗಾರ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ನನ್ನ ಹೃದಯ ಮತ್ತಾರಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯನ್ನು ತೋರಿಸೀತು ಎಂಬ ಮಾತು ಕವಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಬಗ್ಗೆ ಇದ್ದ ಆದರ ಪುಷ್ಟೀಕರಿಸುತ್ತದೆ.

**"ವಾಲ್ಮೀಕಿಂ ತಂ ವಿಹಾಯ ಕ್ವನು ಮಮ ಹೃದಯಂ**
**ದರ್ಶಯೇದ್ ಬ್ರೂಹಿ ಭಕ್ತಿಮ್ ।"**

ಈ ನಾಟಕದ ಕಥಾವಸ್ತು ರಾಮಾಯಣದ ಬಾಲಕಾಂಡದಿಂದ ಮೊದಲ್ಗೊಂಡು ರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದವರೆಗೆ ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಶೀರ್ಷಿಕೆಗನುಗುಣವಾಗಿ ಮಂಜೀರ ಅಥವಾ ನೂಪುರದ ಕಲ್ಪನೆ ಆಕರ್ಷಕವಾಗಿ ಐದನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ. ಸೀತೆಗೆ ಅನುಸೂಯೆಕೊಟ್ಟ ಒಡವೆಗಳಲ್ಲಿ ಮಂಜೀರವೂ ಒಂದಾಗಿದ್ದು ಅದರ ಬಗ್ಗೆ ಅನುಸೂಯೆ ನಿವೇದಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಜಾನಕಿ,

**"ಗೃಹಾಣೇನಂ ಮಾಯಾಂ ಶಿಕಾಭಿದಂ ಮಂಜೀರಂ"**

### 2. ದಾಶರಥಿದರ್ಶನಂ

ನಂದಿಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ವಾಸ ಮಾಡುವ ಭರತ ವನವಾಸದಿಂದ ಹಿಂದಿರುಗುವ ರಾಮನನ್ನು ಕಾಣುವ ಸನ್ನಿವೇಶವೇ ಈ ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಮೂಲಾಧಾರ. ಹದಿನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ರಾಮ ವಿರಹದ ಕಷ್ಟದಿಂದ ಕಾಲಯಾಪನೆ ಮಾಡಿದ ಭರತನ ದುಗುಡ, ನಿರಾಸೆ, ರಾಮಗಮನದ ನಂತರ ಅವನಿಗಾಗುವ ಸಂಭ್ರಮ, ಸಡಗರ ಇಲ್ಲಿ ಸುಂದರವಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬಂದಿದೆ.

### 3. ಯೌವರಾಜ್ಯಂ

ಈ ಏಕಾಂಕನಾಟಕ ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಊರ್ಮಿಳೆಯರ ಸುಧೀರ್ಘ ವಿರಹದ ನಂತರ ಸುಖವಾಗಿರುವ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ನಿರೂಪಿಸುತ್ತದೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಯುವರಾಜಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಬೇಕಂಬ ಪ್ರಸ್ತಾಪವಿರುವಾಗ ಅವನು ತಾನು ರಾಮನ ದಾಸನೆಂದೂ ತನಗೆ ಅಧಿಕಾರ ಬೇಡವೆಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ಎಲ್ಲರೂ ಭರತನನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿ ಅವನಿಗೇ ಯುವರಾಜ ಪಟ್ಟ ಕಟ್ಟುತ್ತಾರೆ.

## II ವನಮಾಲಾ ಭವಾಲ್ಕರ್

ಶ್ರೀಮತಿ ವನಮಾಲಾ ಭವಾಲ್ಕರ್ ಅವರು 1914ರಲ್ಲಿ ಕರ್ನಾಟಕದ ಬೆಳಗಾವಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ, ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ಸಾಗರ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಎಂ.ಎ, ಪಿಹೆಚ್.ಡಿ ಪದವೀಧರೆಯಾಗಿ ಸಾಗರ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲೇ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸಿ ಪ್ರವಾಚಕಿಯಾಗಿ ನಿವೃತ್ತರಾದರು. ಈಗ ಇವರ ರಾಮಾಯಣಾಧಾರಿತ "ರಾಮವನಗಮನಂ" ಬಗ್ಗೆ ಗಮನಹರಿಸಬಹುದು.

### ರಾಮವನಗಮನಂ

ಮೂರು ದೃಶ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನೃತ್ಯನಾಟಕ ಶ್ರೀರಾಮವನಗಮನದ ದೃಶ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು ಭೋಜನ ಚಂಪೂರಾಮಾಯಣ ಹಾಗೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಉಪಜಾತಿ, ಅನುಷ್ಠುಪ್, ಮಂದಾಕ್ರಾಂತಾ, ಹರಿಣೀ, ವಿಯೋಗಿನೀ, ವಂಶಸ್ಥ, ಮಾಲಿನೀ, ಆರ್ಯಾ, ವಿದ್ಯುನ್ಮಾಲಾ, ಶಾರ್ದೂಲ ವಿಕ್ರೀಡಿತ, ಇಂದ್ರವಜ್ರಾ, ಶಿಖರೀಣೀ, ವಸಂತತಿಲಕ ಮುಂತಾದ ವೃತ್ತಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು ಹಿಂದೂಸ್ತಾನೀ ಹಾಗೂ ಕರ್ನಾಟಕ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಸಂಗೀತ ರಾಗಗಳಾದ ಯಮನ್, ಹಮೀರ, ಸಾರಂಗ, ಕಾಪೀ, ಪೀಲು, ಕೇದಾರ, ಕಲಾವತೀ, ಕಾನಡಾ, ಬಾಗೇಶ್ರೀ, ತೋಡೀ, ಭೈರವೀ, ಮುಂತಾದವುಗಳು ಅತ್ಯಂತ ಪಾಂಡಿತ್ಯಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸಂಯೋಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ಕೈಕೇಯಿ, ಸುಮಿತ್ರೆ, ಮಂಥರೆ, ಕೌಸಲ್ಯೆ, ಸೀತೆ ಎಂಬ ಐದು ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳೂ, ದಶರಥ, ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಹಾಗೂ

ವಸಿಷ್ಠ ಎಂಬ ನಾಲ್ಕು ಪುರುಷ ಪಾತ್ರಗಳೂ ಕೂಡಿದ್ದು ಒಟ್ಟು ಒಂಭತ್ತು ಪಾತ್ರಗಳು ಈ ನೃತ್ಯ ನಾಟಿಕೆಯಲ್ಲಿದೆ.

### III ಎಸ್.ಬಿ. ವೇಲಂಕರ್

ಎಸ್.ಬಿ. ವೇಂಲಕರ್‌ರವರು 22–04–1915ರಂದು ಜನಿಸಿ, ವಿಲ್ಸನ್ ಕಾಲೇಜು ಮುಂಬೈನಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿ, ದೆಹಲಿಯಲ್ಲಿ ಅಂಚೆ ಮತ್ತು ತಂತಿ ಇಲಾಖೆಯಲ್ಲಿ ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಿಸಿ ವಿಪುಲವಾದ ಸಾಹಿತ್ಯ ರಚನೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ಕೊಡುಗೆಯನ್ನು ಕಾವ್ಯಗಳು, ನಾಟಕಗಳು, ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಚರ್ಚಾಸಾಹಿತ್ಯ, ಸುಭಾಷಿತ, ಸಂಗೀತ ಗ್ರಂಥಗಳು ಸಂಪಾದಿತ ಕೃತಿಗಳು ಎಂದು ವಿಂಗಡಿಸಬಹುದು.

ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ **ಜನ್ಮ ರಾಮಾಯಣಸ್ಯ**

ವಾಲ್ಮೀಕ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ತಮಸಾನದಿಯ ದಡದಲ್ಲಿ ನಡೆದು ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾಗ ಒಬ್ಬ ಬೇಡರವನು ನಿಷ್ಕಾರಣವಾಗಿ ಗಂಡು ಕ್ರೌಂಚಪಕ್ಷಿಯನ್ನು ಹೊಡೆದಾಗ, ಹೆಣ್ಣು ಕ್ರೌಂಚಪಕ್ಷಿಯ ಕರುಣಾಜನಕವಾದ ವ್ಯಥೆಯಿಂದ ಮರುಕಗೊಂಡ ಮುನಿಗಳ ಬಾಯಿಂದ ಹೊರಬಂದ ಮಾನಿಷಾದ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ ತ್ವಮಗಮ: ಶಾಶ್ವತೀ ಸಮಾ: ಎಂಬ ಶಾಪದ ಪರಿಣಾಮವಾಗಿ ಚತುರ್ಮುಖಬ್ರಹ್ಮ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮುಂದೆ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ

**ಪಾದಬದ್ಧಃ ಅಕ್ಷರಸಮಃ ತಂತ್ರೀಲಯ ಸಮನ್ವಿತಃ ॥**
**ಮಚ್ಛಂದಾದೇವ ತೇ ಬ್ರಹ್ಮನ್ ಆಗತೇಯಂ ಸರಸ್ವತೀ ॥**

ಎಂದು ಹೇಳಿ ವಾಲ್ಮೀಕೆ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ನಾಂದಿಯಾದ ವಿಷಯವನ್ನೇ ಇಲ್ಲಿ ಆದರಿಸಿ ಆಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ವೇಲಂಕರ್‌ರವರು ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಲ್ಲಿ ಹೇಳಿರುವಂತೆ ಭೋಪಾಲದಲ್ಲಿದ್ದ ಶ್ರೀಮತಿ. ಭಾಸ್ಕರ್‌ರವರ ಅಭಿರುಚಿಯಂತೆ ಎರಡು ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ಕ್ರೌಂಚವಧೆಯನ್ನಾಧರಿಸಿ ಬರೆದಂತಹ ನಾಟಕವಿದು.

### IV ಕೆ. ಟಿ. ಪಾಂಡುರಂಗಿ

ಕೆ.ಟಿ. ಪಾಂಡುರಂಗಿಯವರು 1–2–1918ರಂದು ಧಾರವಾಡದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯ ಪಾಠಶಾಲಾ ಧಾರವಾಡ, ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜಾ ಸಂಸ್ಕೃತ ಕಾಲೇಜು ಮೈಸೂರು, ಬನಾರಸ್ ಹಿಂದೂ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಕಾಶಿ, ಅಣ್ಣಮಲೈ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯಗಳಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿ, ಬೆಂಗಳೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿಭಾಗದ ಸ್ನಾತಕೋತ್ತರ ಪದವಿಯಲ್ಲಿ ಬೋಧನೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕ ಸೀತಾತ್ಯಾಗ.

ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗವು ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡ, ಕಾಳಿದಾಸನ ರಘುವಂಶ ಹಾಗೂ ಭವಭೂತಿಯ ಉತ್ತರರಾಮ ಚರಿತದಲ್ಲಿ ಬಂದರೂ ಸಹ ಇಲ್ಲಿ ಮೂರು ದೃಶ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಧ್ವನಿ ತರಂಗಗಳ ಮುಖಾಂತರ ಪ್ರಸ್ತುತಪಡಿಸಿರುವುದು ಅತೀವ ಆಕರ್ಷಕವಾಗಿದೆ.

### V ಶ್ರೀಧರ ಭಾಸ್ಕರ ವರ್ಣೇಕರ್

ವರ್ಣೇಕರ್‌ರವರು 31–07–1918ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ಸಂಸ್ಕೃತ, ಮರಾಠೀ, ಹಿಂದಿ, ಆಂಗ್ಲ, ಪಾಳೀ, ಫ್ರೆಂಚ್ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಣಾತರಾಗಿದ್ದು ನಾಗ್ಪುರ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರಾಗಿದ್ದು, ರಸ್ತೆಯ ಅಪಘಾತದಲ್ಲಿ ದುರ್ಮರಣ ಹೊಂದಿದ್ದು, ನಿಜಕ್ಕೂ ಶೋಚನೀಯವೇ ಸರಿ. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ಗೀತ ನಾಟಕ ಶ್ರೀರಾಮ ಸಂಗೀತಿಕಾ.

ಗೀತಮಯ ನೃತ್ಯನಾಟಕವಾದ ಈ ಕೃತಿ ಲೇಖಕರಾದ ನಾಟಕಕಾರರಿಂದಲೇ ರಾಗ ಸಂಯೋಜನೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು ಜಯಪುರದಿಂದ ಪ್ರಕಾಶಿತವಾಗಿದ್ದು, ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ ಸಂಸ್ಕೃತ ಆಕಾಡೆಮಿಯಿಂದ 1983ರಲ್ಲಿ ಕಾಳಿದಾಸ ಸನ್ಮಾನದಿಂದ ಅನುಗ್ರಹೀತವಾಗಿದೆ.

ಕನ್ಯಾಕುಮಾರಿಯ ವಿವೇಕಾನಂದ ಕೇಂದ್ರದ ಸಂಸ್ಥಾಪಕರಾದ ಶ್ರೀ.ಏಕನಾಥಜೀ ರಾನಡೆಯವರಿಂದ ಪ್ರೇರಣೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಈ ಕೃತಿ

ರಚನೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಕೃತಿ ಕವಧವೀಥೀ, ಸೀತಾಸ್ವಯಂವರ ವೀಥೀ, ಸೀತಾಪಹರಣಂ, ಸೀತಾನ್ವೇಷಣವೀಥೀ, ಲಂಕಾದಹನವೀಥೀ, ಸೇತುಬಂದನವೀಥೀ, ರಾವಣವಧವೀಥೀ, ಸೀತಾಶೋಧನವೀಥೀ, ಸೀತಾನಿರ್ವಾಸನವೀಥೀ ಎಂಬ ಹನ್ನೆಡರು ವಿಭಾಗಗಲ್ಲಿ ವಿಭಕ್ತವಾಗಿದೆ.

## VI ಓಗೇಟಿ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ ಶರ್ಮಾ

20–18–1930ರಲ್ಲಿ ಗುಂಟೂರು ಜಿಲ್ಲೆಯ ಬಾಪಟ್ಲಾ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಓಗೇಟಿ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಪರೀಕ್ಷಿತ್ ಶರ್ಮಾರವರು ಕವಿಸಮ್ರಾಟ್ ಜ್ಞಾನಪೀಠ ಪುರಸ್ಕೃತ ವಿಶ್ವನಾಥ ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ ಅವರ ಶಿಷ್ಯರಾಗಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಹಾಗೂ ಆಂಗ್ಲ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಎಂ.ಎ. ಪದವಿಯನ್ನು, ಮುಂಬೈ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಿಂದ ಪಡೆದು, ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿದ್ಯಾಪೀಠ ತಿರುಪತಿಯಿಂದ ವಾಷಸ್ಪತಿಪುರಸ್ಕೃತರಾಗಿ, "ಗೀರ್ಣಾಣಗೇಯ ಕವಿ ಮಂಡಲ ಚಕ್ರವರ್ತಿ" ಎಂಬ ಬಿರುದಾಂಕಿತರಾಗಿ ಮಹಾಕಾವ್ಯ, ಜಾನಪದ ಸಾಹಿತ್ಯ, ನೀತಿ ಕಾವ್ಯ, ಆತ್ಮ ಕಥೆ, ನಾಟಕ ಸಾಹಿತ್ಯ ಇತ್ಯಾದಿ ಪ್ರಕಾರಗಳಿಗೆ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿ ಅಖಿಲಭಾರತೀಯ ಕಾಳಿದಾಸ ಪುರಸ್ಕಾರ (1979), ಸಾಹಿತ್ಯ ಆಕಾಡೆಮಿ ಪುರಸ್ಕಾರ (1990) ಹಾಗೂ ಶ್ರೀ ಕಲಾಪೂರ್ಣ ಪುರಸ್ಕಾರಗಳಿಗೆ ಭಾಜನರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕಗಳು ಶ್ರಾವಣಂ, ಧನುರ್ಭಂಗಂ, ಕಾವ್ಯಾವತರಣಂ.

### ಶ್ರಾವಣಂ

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶ್ರವಣಕುಮಾರ ಪ್ರಸಂಗವು ಕಾಳಿದಾಸನ ರಘುವಂಶ ಹಾಗೂ ಕುಮಾರದಾಸನ ಜಾನಕೀಹರಣ ಮಹಾಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲೂ ಬಂದಿರುವಂತಯೇ ಇಲ್ಲೂ ಸಹ ಕೆಲವು ಮಾರ್ಪಾಡುಗಳೊಂದಿಗೆ ತರಲಾಗಿದೆ.

### ಧನುರ್ಭಂಗಂ

ರಾಮ ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ಮುರಿಯುವ ಸೀತಾಸ್ವಯಂವರ ಪ್ರಸಂಗವನ್ನು ಮೂರು ದೃಶ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಈ ನಾಟಕ ವರ್ಣಿಸುತ್ತದೆ.

### ಕಾವ್ಯಾವತರಣಂ

ರಾಮಾಯಣದ ಹುಟ್ಟನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವ ಒಂಭತ್ತು ದೃಶ್ಯಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನಾಟಕ ಕ್ರೌಂಚವಧ ಪ್ರಸಂಗಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ರತ್ನಾಕರ ಬೇಡನಾಗಿದ್ದವನು ನಾರದರ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಾದುದು ಒತ್ತಿ ಹೇಳಲಾಗಿದೆ.

## VII ಕಾಲೂರಿ ಹನುಮಂತರಾವ್

ಕಾಲೂರಿ ಹನುಮಂತರಾಯರು 20–09–1931ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಹಾಗೂ ತೆಲಗು ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೃತಿ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಕಾಲೇಜ್ ಆಫ್ ಟೆಕ್ನಾಲಜೀ, ಉಸ್ಮಾನಿಯಾ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರಾಗಿ ಸೇವೆ ಸಲ್ಲಿಸಿ ಉತ್ತರಪ್ರದೇಶ ಸರ್ಕಾರದಿಂದ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಭಾಜನರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

### ಸೀತಾಹರಣಂ

ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಬರೆಯಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಐದು ಅಂಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನಾಟಕ 1987ರಲ್ಲಿ ಹೈದರಾಬಾದಿನಿಂದ ಪ್ರಕಟವಾಯಿತು. ಬಾಲಕಾಂಡ, ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಕಥೆ ಇಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

## VIII ವಿ. ಆಂಜನೇಯ ಶರ್ಮಾ

19–02–1937ರಂದು ಜನಿಸಿದ ಆಂಜನೇಯ ಶರ್ಮಾರವರು ತಿರುಪತಿಯ ಶ್ರೀ ವೆಂಕಟೇಶ್ವರ ವಿದ್ಯಾವಿದ್ಯಾಲಯದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತದ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರಾಗಿದ್ದು ನಿವೃತ್ತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ ಶಬರೀಸಪರ್ಯಾ.

### ಶಬರೀಸಪರ್ಯಾ

ರಾಮಾಯಣದ ಅರಣ್ಯಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಶಬರೀ ಪಾತ್ರವನ್ನು ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ರಚಿಸಿರುವ ಭಕ್ತಿ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಏಕಾಂಕ ನಾಟಕವಿದು. ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮನು ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಹಾಗೂ ಶಬರಿಯ ಭಕ್ತಿಕೈಂಕರ್ಯಕ್ಕೆ ಮೆಚ್ಚಿ ಅವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ತನ್ನ ವಿಶ್ವರೂಪವನ್ನು ತೋರುವುದೇ ಗಮನಾರ್ಹ ಅಂಶವಾಗಿದೆ. ವನದೇವತೆಗಳನ್ನು ಪಾತ್ರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಸಂಭಾಷಣೆಗೆ ಯೋಗ್ಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವುದು ಮತ್ತೊಂದು ಹೊಸ ಅಂಶ. ಶಬರಿ ರಾಮನನ್ನು ಸ್ತುತಿಸುವ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯ ಹೊನಲೇ ಹರಿದಿದೆ.

### IX ರಾಮಕಿಶೋರಮಿಶ್ರಾ

ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶದ ಸೋರೋ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ 1938ರಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ರಾಮಕಿಶೋರ ಮಿಶ್ರಾರವರು ಸಂಪೂರ್ಣನಂದ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ ಕಾಶಿಯಿಂದ ವ್ಯಾಕರಣ ಹಾಗೂ ಸಾಹಿತ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಆಚಾರ್ಯ ಪದವಿ ಪಡೆದು ಎಂ.ಎ. ಆಗ್ರಾವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಿಂದಲೂ, ಪಿಹೆಚ್.ಡಿ ಮೀರತ್ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಿಂದಲೂ ಪಡೆದು ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶ ಶಾಸನದಿಂದ ಮೂರು ಬಾರಿ ಪುರಸ್ಕೃತರಾಗಿ ಮಾಲವೀಯಾ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ ಖೇಕಡಾ, ಮೀರತ್‌ನಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿಭಾಗಾಧ್ಯಕ್ಷರಾಗಿ ಸೇವೆಗೈದು ನಿವೃತ್ತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ ಅಭಿಶಪ್ತದಶರಥಂ.

### ಅಭಿಶಪ್ತದಶರಥಂ

ನಾಟ್ಯಶೃತಿ ನಾಟಕ ಸಂಕಲನದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹದಿಮೂರು ಏಕಾಂಕ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಕಥಾಧಾರಿತವಾದ ಮುನಿಯಿಂದ ಶಪ್ತನಾದ ದಶರಥನ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನಾಧರಿಸಿ ಬರೆದಿರುವ ನಾಟಕವೇ ಅಧಿಶಪ್ತದಶರಥಂ, ಏಕಾಂಕ ಹಾಗೂ ಮೂರು ದೃಶ್ಯಗಳಿರುವ ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಸೂತ್ರಧಾರ, ಸಹಾಯಕ, ದಶರಥ, ಸಾರಥೀ, ಶ್ರವಣ, ಪಿತಾ, ಮಾತಾ ಎಂಬ ಪಾತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ನಾಟಕದ ಭಾಷೆ, ಸಂಭಾಷಣೆ, ಪದ್ಯಗಳು ಸರಳ ಹಾಗೂ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿದ್ದು ಶಾಲಾ ಮಕ್ಕಳಿಂದ ಈ ನಾಟಕವನ್ನು ಶಾಲಾ ವಾರ್ಷಿಕೋತ್ಸವಾದಿ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಆಡಿಸಲು ಯೋಗ್ಯವಾಗಿದೆ.

### X ರಮಾಕಾಂತ ಶುಕ್ಲ

24-12-1940ರಲ್ಲಿ ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶವಾದ ಖುರ್ಜಾದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ರಮಾಕಾಂತಶುಕ್ಲಾ ತಂದೆಯವರಾದ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ ಶುಕ್ಲಾರವರಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪಾರಂಪರಿಕವಾಗಿ ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಸಾಂಖ್ಯಯೋಗದಲ್ಲಿ ಆಚಾರ್ಯ ಪದವಿ ಪಡೆದು ಜೈನಾಚಾರ್ಯ ರವಿಷೇಣ ಕೃತ ಪದ್ಮ ಪುರಾಣ ಹಾಗೂ ತುಲಸೀ ದಾಸಕೃತ ರಾಮಚರಿತ ಮಾನಸದ ತುಲನಾತ್ಮಕ ವಿಷಯದ ಬಗ್ಗೆ ಸಂಶೋಧನೆ ಮಾಡಿ ಪಿಹೆಚ್.ಡಿ ಪಡೆದು ದಿಲ್ಲಿಯ ರಾಜಧಾನಿ ಕಾಲೇಜಿನಲ್ಲಿ ಹಿಂದೀ ಪ್ರಧ್ಯಾಪಕರಾಗಿದ್ದು ನಿವೃತ್ತರಾಗಿ ಆಧುನಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಜನಪ್ರಿಯಗೊಳಿಸಲು "ಅರ್ವಾಚೀನ ಸಂಸ್ಕೃತಂ" ಎಂಬ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪತ್ರಿಕೆಯನ್ನು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಕಳೆದ 25 ವರ್ಷಗಳಿಂದ ನಡೆಸಿಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ರೇಡಿಯೋ ರೂಪಕ **"ಆಲೋಕಿನಿ"**.

### ಆಲೋಕಿನಿ

ಈ ಏಕಾಂತ ರೇಡಿಯೋ ರೂಪಕದಲ್ಲಿ 14 ಪುರುಷ ಪಾತ್ರಗಳು, 5 ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳೂ ಇದೆ.

ಮರ್ಯಾದಾ ಪುರುಷೋತ್ತಮನಾದ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ರಾಜಧಾನಿಯಾದ ಅಯೋಧ್ಯಾನಗರಿಯ ವರ್ಣನೆ ಈ ನಾಟಕದ ನಾಂದಿಯಲ್ಲಿದೆ.

ನಾಟಕದ ಶೀರ್ಷಿಕೆ ಭರತವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ತರಲಾಗಿದೆ. "ರಾಜತಾಂ ದೀಪ ಮಾಲೇಯಮಾಲೋಕಿನೀಂ". ಈ ನಾಟಕವನ್ನು ರಂಗದ ಮೇಲೆ ಸುಲಭವಾಗಿ ತರಬಹುದು. ನಾಟಕಕಾರರಿಗೆ ಸ್ರಗ್ವಿಣೀ ವೃತ್ತದ ಮೇಲಿರುವ ಹಿಡಿತ ಅದ್ಭುತವಾಗಿದೆ.

## XI ಗುರುಪಾದ ಕೆ. ಹೆಗಡೆ

28–05–1941ರಂದು ಸಿರ್ಸಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಉಂಬಲ ಕೊಪ್ಪದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಗುರುಪಾದ ಹೆಗಡೆಯವರು ಲಾಲ್‌ಬಹದ್ದೂರ್ ಶಾಸ್ತ್ರೀ ಕಾಲೇಜು ಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರಾಗಿದ್ದು ನಿವೃತ್ತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಇವರು ರಾಮಾಯಣವನ್ನಾಧರಿಸಿ "ತೇಜಸ್ಸಂಕ್ರಾಮ": ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.

### ತೇಜಸ್ಸಂಕ್ರಾಮ

ಶ್ರೀರಾಮ ಹಾಗೂ ಪರುಶುರಾಮರು ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಸಂಧಿಸುವ ವಿಷಯವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಏಕಾಂಕ ನಾಟಕವಾದ ಈ ಕೃತಿ 1999ರಲ್ಲಿ ಮಲ್ನಾಡ್ ರಿಸರ್ಚ್ ಅಕಾಡೆಮಿ, ಶಿವಮೊಗ್ಗದಿಂದ ಪ್ರಕಟವಾಯಿತು. ರಾಮಾಯಣವನ್ನೇ ಆಧರಿಸಿ ಬರೆದಿದ್ದರೂ ಕವಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಕೆಲವು ಬದಲಾಣೆಗಳು ಮನೋಜ್ಞವಾಗಿದೆ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪರಶುರಾಮ ಶ್ರೀರಾಮನ ವಿವಾಹದ ನಂತರ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಮರಳಿದರೆ ಇಲ್ಲಿ ರಸಿಕರ ಮನ ತಣಿಸಲು ಪರಶುರಾಮನೆ ಜನಕನ ಆಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಾನೆ. ದಶರಥ ಹಾಗೂ ಜನಕರೆಂಬ ಬೀಗರು ಒಬ್ಬರನ್ನೋಬ್ಬರು ಮಾತನಾಡಿಸುವ ಸನ್ನಿವೇಶ ಆಧುನಿಕ ಕಾಲದ ಮದುವೆಯ ಮಂಟಪವನ್ನು ಗಮನಕ್ಕೆ ತರುತ್ತದೆ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ತನ್ನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿರುಗಲು ಬಯಸುತ್ತಾನೆ. ಆ ಹೊತ್ತಿಗೆ ಪರಶುರಾಮನ ವಾಣಿ ಕೇಳಿಬರುತ್ತದೆ. ಪರಶುರಾಮನ ಕ್ರೌರ್ಯವನ್ನು ಮನಗಂಡ ದಶರಥ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನನ್ನು ಹೋಗದಂತೆ ತಡೆಯುತ್ತಾನೆ. ರಾಮ ಸಪತ್ನೀಕನಾಗಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಡನೆ ಹಿರಿಯರಿಗೆ ನಮಸ್ಕರಿಸಲು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುತ್ತಾನೆ. ಅಲ್ಲಿ ರಾಮ, ಪರಶುರಾಮರ ಪರಸ್ಪರ ಮಿಲನವಾಗುತ್ತದೆ. 1972ರಲ್ಲಿ ಈ ನಾಟಕ ಅಭಿನೀತವಾಗಿದ್ದು, 1973ರಲ್ಲಿ ಬೆಂಗಳೂರು ಆಕಾಶವಾಣಿಯಲ್ಲೂ ಈ ನಾಟಕ ಪ್ರಸಾರವಾಗಿದೆ.

## XII ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯ ತ್ರಿಪಾಟಿ

23–09–1942ರಂದು ಚಿತ್ರಕೂಟದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ಇವರು ಅಲಹಾಬಾದ್ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದಿಂದ ಎಂ.ಎ. ಡೀ.ಲಿಟ್ ಪಡೆದು ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶದ ವಿಭಿನ್ನ ಕಾಲೇಜುಗಳಲ್ಲಿ ಸೇವೆ ಮಾಡಿ ಆಶುಕವಿಗಳಾಗಿದ್ದು ಇತ್ತೀಚೆಗಷ್ಟೇ ದೈವಾಧೀನರಾದರು. ಇವರ ರಾಮಾಯಣ ಆಧಾರಿತ ನಾಟಕ "ಸ್ನೇಹ ಸೌವೀರಂ".

### ಸ್ನೇಹ ಸೌವೀರಂ

ನಿಲಿಂಪ ಕಾವ್ಯದ ತೃತೀಯ ಸ್ಪಂದವಾಗಿ ಐದು ಅಂಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನಾಟಕ 1997ರಲ್ಲಿ ದಿಲ್ಲಿಯಿಂದ ಪ್ರಕಟವಾಯಿತು.

ಶಬರಿಯನ್ನು ನಾಯಿಕೆಯನ್ನಾಗುಳ್ಳ ಐದು ಅಂಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನಾಟಕ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಶಬರಿಯ ಪರೋಪಕಾರ ನಿರತತೆ ಇತ್ಯಾದಿ ಗುಣವನ್ನು ರಾಮಾಯಣಾಧಾರ ಹಾಗೂ ಸ್ವತಃ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯಿಂದಲೂ ಸೇರಿಸಿ ಹೆಣೆಯಲ್ಪಟ್ಟಿದೆ. ವೇದಿಕಾವಿರಹ, ದೀಕ್ಷಾಮಂಗಲ, ಸಾಕೇತಸಂದೇಶ, ಸೌರವೀಸಾರ ಹಾಗೂ ದಯಿತ ದರ್ಶನ ಎಂಬುದೇ ಐದು ಅಂಕಗಳಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಿರುವ ಹೆಸರುಗಳು. 15 ಪಾತ್ರಗಳಿಂದ ಕೂಡಿರುವ ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಶಬರಿಯೇ ಪ್ರಧಾನ ಪಾತ್ರ. 12 ಪುರುಷ ಪಾತ್ರಗಳು, 3 ಸ್ತ್ರೀ ಪಾತ್ರಗಳು ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿದೆ. ನಾಟಕದ ಐದನೇ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಅದ್ಭುತರಸದ ಅಡಕವಿದೆ. ಮುದ್ಗಲಚರಿತದಲ್ಲಿ ಹಾಸ್ಯರಸ, ಶಬರಿಯ ಸರ್ವಭೂತಾನುಕಂಪದಲ್ಲಿ ಧರ್ಮವೀರವಿದೆ. ಭಾಷೆ ಪ್ರಸಾದ ಗೂಣದಿಂದ ಕೂಡಿದೆ.

### ನಿಷ್ಕರ್ಷೆ

ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಸಂಗಗಳಾದ ಸೀತಾತ್ಯಾಗವಾಗಲೀ, ಶಬರಿಯ ಪ್ರಸಂಗವಾಗಲೀ, ಶ್ರವಣ ಕುಮಾರನ ಪ್ರಸಂಗವಾಗಲೀ ಎಷ್ಟು ಜನ ಆಧುನಿಕ ನಾಟಕಕಾರಿಗೆ ಎಷ್ಟು ರೀತಿ ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡಿ ಎಷ್ಟು ಸೊಗಸಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬಂದಿದೆ ಎನ್ನುವುದು ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ನಿರೂಪಿಸಿರುವ ನಾಟಕಗಳ ಸಾಮಾನ್ಯ ಅವಲೋಕನದಿಂದ ಮನಗಾಣಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಈ ಸಮೀಕ್ಷೆಯಲ್ಲಿ ಆಯ್ದುಕೊಂಡ 12 ಲೇಖಕರು 1902 ರಿಂದ 1942ರ ವರೆಗೆ 40 ವರ್ಷಗಳಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದವರಾಗಿ ಸಮಗ್ರ ಭಾರತದ ವಿಭಿನ್ನ

ರಾಜ್ಯಗಳಾದ ಕರ್ನಾಟಕ, ಆಂಧ್ರಪ್ರದೇಶ, ಉತ್ತರ ಪ್ರದೇಶ, ಮಧ್ಯ ಪ್ರದೇಶ, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ ಇತ್ಯಾದಿಗಳಿಂದ ಬಂದವರಾಗಿ ರಾಮಾಯಣದ ಆಧುನಿಕ ನಾಟಕಗಳು ಸಮಗ್ರ ಭಾರತದ ಏಕತೆ, ಅಖಂಡತೆಯನ್ನು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುತ್ತದೆಂದು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ.

ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಪ್ರಯೋಗಗಳು, ಹೊಸ ಆವಿಷ್ಕಾರಗಳು, ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ಪಡೆದು ನಮ್ಮ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗಲು ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಜೀವ, ಸಶಕ್ತ, ಸಮರ್ಥ, ಸದೃಢ, ಜೀವಂತ ಎಂಬುದು ವಿನಮ್ರವಾಗಿ ಅರಿಕೆ ಮಾಡಲು ಈ ಲೇಖನ ಒಂದು ದಿಕ್ಸೂಚಿ ಮಾತ್ರ.

**ಇದಂ ಕವಿಭ್ಯ: ನವ್ಯೇಭ್ಯ: ನಮೋವಾಕಂಪ್ರಶಾಸ್ಮಹೇ ।**
**ವಂದೇ ಮಹಿಚತಾಂ ವಾಣೀಂ ಅಮೃತಾಮಾತ್ಮನ: ಕಲಾಂ ॥**

## ಗ್ರಂಥಋಣ

1. **ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜಾ ಸಂಸ್ಕೃತ ಮಹಾಪಾಠ ಶಾಲಪತ್ರಿಕಾ** – ಸಂಚಿಕೆ 1939 ಡಿಸೆಂಬರ್‌ನಿಂದ 1946ನೇ ಡಿಸೆಂಬರ್, ಮೈಸೂರು
2. **ವಕುಲಭೂಷಣ ರೂಪಕ ವಿತಾನಂ** – ಬಾಲಧನ್ವಿ ಜಗ್ಗೂ ಆಳ್ವಾರಯ್ಯಂಗಾರ್, ಆನಂದನಗರ, ಬೆಂಗಳೂರು – 24– 1993.
3. **ವಕುಳ ಪರಿಮಳಂ** – ಜಗ್ಗೂ ಪ್ರಕಾಶನ, ಆನಂದನಗರ, ಬೆಂಗಳೂರು – ಅಕ್ಟೋಬರ್ 2004.
4. **ಶ್ರೀ ಜಗ್ಗೂ ವಕುಲಭೂಷಣ ಕಾವ್ಯಮಾಲಾ** – ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿದ್ಯಾಪೀಠಂ – ತಿರುಪತಿ, 2007.
5. **ಜಗ್ಗೂವಕುಳಭೂಷಣ** – ಎಸ್. ಆರ್. ಲೀಲಾ, ಅಖಿಲ ಕರ್ನಾಟಕ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪರಿಷತ್, ಬೆಂಗಳೂರು, ಆಗಸ್ಟ್ 1991.
6. **ರಾಮವನಗಮನಂ** – ವನಮಾಲಾಭವಾಲ್ಕರ್ – ಸಂಸ್ಕೃತ ಪರಿಷತ್ ಸಾಗರ್ (ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ) 1965.
7. **ಜನ್ಮರಾಮಾಯಣಸ್ಯ** – ಎಸ್.ಬಿ. ವೇಲಂಕರ್, ಮುಂಬೈ 1972.
8. **ಸೀತಾತ್ಯಾಗ** : – ನ್ಯೂ ಎಕ್ಸ್‌ಪರಿಮೆಂಟ್ಸ್ ಇನ್ ಕಾಳಿದಾಸ ಪ್ಲೇಸ್, ಸತ್ಯವ್ರತಶಾಸ್ತ್ರೀ, ಈಸ್ಟ್ರನ್ ಬುಕ್ ಲಿಂಕರ್ಸ್, ದಿಲ್ಲಿ, 1994
9. **ಶ್ರೀರಾಮಸಂಗೀತಿಕಾ** – ನಾಗ್ಪುರ, 1983
10. **ಶ್ರಾವಣಂ, ಧನುರ್ಭಂಗಂ, ಕಾವ್ಯಾವತರಣಂ, ಪರೀಕ್ಷೀನ್ನಾಟಕಚಕ್ರಂ,** ಪುಣೆ – 1983
11. **ಸೀತಾಹರಣಂ** – ಕಾಲೂರಿ ಹನುಮಂತರಾವ್, ಹೈದರಾಬಾದ್, 1983.
12. **ಶಬರೀಸಪರ್ಯಾ** – ವಿ. ಆಂಜನೇಯಶರ್ಮಾ, ತಿರುಪತಿ
13. **ಅಭಿಶಪ್ತದಶರಥಂ** – ರಾಮಕಿಶೋರಮಿಶ್ರಾ, ನಾಟ್ಯಶೃತಿ:, ಮೀರತ್ 2004.
14. **ನಾಟ್ಯಸಪ್ತಪದಂ** – ರಮಾಕಾಂತಶುಕ್ಲಾ, ದೇವವಾಣೀ ಪರಿಷತ್, ದಿಲ್ಲಿ, 1992.
15. **ತೇಜಸ್ಸಂಕ್ರಾಮಃ** – ಗುರುಪಾದ ಕೆ. ಹೆಗಡೆ, ಮಲ್ನಾಡ್ ರಿಸರ್ಚ್ ಆಕಾಡೆಮೆ, ಶಿವಮೊಗ್ಗ, 1999.
16. **ಸ್ನೇಹಸೌವೀರಂ** – ಭಾಸ್ಕರಾಚಾರ್ಯ ತ್ರಿಪಾಟಿ, ನಾಗ್ ಪ್ರಕಾಶನ, ದಿಲ್ಲಿ, 1997.

❑

# ಭವಭೂತಿಯ ಮೇಲೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪ್ರಭಾವ

**ವಿದ್ವಾನ್ ಡಾ ॥ ಟಿ.ವಿ. ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ**
ಎಂ.ಎ., ಪಿ.ಹೆಚ್.ಡಿ.

ಭವಭೂತಿಯು ಬರೆದಿರುವ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲಾ 'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'ವೇ ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ನಾಟಕ. 'ಉತ್ತರೇ ರಾಮಚರಿತೇ ಭವಭೂತಿರ್ವಿಶಿಷ್ಯತೇ' (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯು ವಿಶಿಷ್ಟ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದಾನೆ) ಎಂಬುದು ಭವಭೂತಿಗೆ ದೊರೆತಿರುವ ಪ್ರಶಂಸಾವಾಕ್ಯ.

ಮೂಲ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಹವಾದ ಎಷ್ಟೋ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಭವಭೂತಿಯು ಅನೇಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ.

ಸಂಸ್ಕೃತ ಕಾವ್ಯ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಆದಿಕವಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಅವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣವು ಆದಿ ಕಾವ್ಯವೆನಿಸಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಆಧರಿಸಿ, ಅದರ ಅನೇಕ ಕಥಾವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು, ಭಾಸ, ಕಾಳಿದಾಸ, ಭೋಜರಾಜ, ಶಕ್ತಿಭದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಮಹಾಕವಿಗಳು, ನಾಟಕಕಾರರು, ಇತರ ಕಾವ್ಯರಚನಾಕಾರರು, ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಮುಂದೆ ಮುಂದೆ ಕನ್ನಡ, ತೆಲುಗು, ತಮಿಳು, ಹಿಂದೀ ಮೊದಲಾದ ಆಯಾಯಾ ದೇಶಭಾಷಾ ಕವಿಗಳೂ ಸಹ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣದ ಕಥಾವಸ್ತುಗಳನ್ನು ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ರೀತಿಯಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಕಾವ್ಯಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಕಾವ್ಯರಚನಾಪ್ರಕಾರ, ಶೈಲಿ, ವರ್ಣನಾವೈವಿಧ್ಯ, ಕಥಾಸಂವಿಧಾನ, ಗುಣ–ಅಲಂಕಾರ–ವಕ್ರೋಕ್ತಿ–ರೀತಿ–ಔಚಿತ್ಯಗಳ ಸಂಘಟನೆಯನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿಯೇ ಮುಂದಿನವರೆಲ್ಲಾ ತಮ್ಮ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಹಿತ್ಯಿಕವಾದ ಗುಣ–ಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ, ಅನುಸರಿಸಿ ಕಾವ್ಯಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿ ಕೃತಕೃತ್ಯರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅಂತಹವರಲ್ಲಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕಕಾರನಾದ ಭವಭೂತಿಯೂ ಒಬ್ಬನು. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಸಮಗ್ರ ಅಂಶಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಓದಿ, ಅರ್ಥ ಮಾಡಿಕೊಂಡು, ಯಥಾಶಕ್ತಿ ತನ್ನ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣದ ಗುಣಧರ್ಮಗಳನ್ನು ಸಂಘಟಿಸಿ, ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾಟಕಕಾರನೆಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದಾನೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಪ್ರಭಾವವು ಭವಭೂತಿಯ ಮೇಲೆ ಸಾಕಷ್ಟು ಆಗಿರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ, ಅವನ ಕೃತಿಗಳಲ್ಲೂ ರಾಮಾಯಣದ ಆದರ್ಶ ನೈತಿಕ ನುಡಿ–ನಡೆಗಳು, ಜೀವನಧರ್ಮಗಳು ಎಲ್ಲವೂ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರಭಾವವನ್ನು ಬೀರಿವೆ.

ಸಂಸ್ಕೃತವಾಙ್ಮಯದಲ್ಲಿ ಅಷ್ಟೇಕೆ ಇತರ ಭಾಷಾವಾಙ್ಮಯಗಳಲ್ಲೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಹೆಸರನ್ನು ಕೇಳದವರೇ ಇಲ್ಲ. ಆದಿಕವಿ ಎಂಬ ಬಿರುದಿನಿಂದ ಪ್ರಸಿದ್ಧರಾದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ರಚಿತವಾದ ನವರಸಭರಿತವಾದ, ಮಾಧುರ್ಯ – ಓಜಸ್ಸು – ಪ್ರಸಾದಗುಣಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣವು ಆದಿಕಾವ್ಯವಷ್ಟೇ ಆಗಿರದೆ, ಜೀವನದ ಆದರ್ಶಮೌಲ್ಯಗಳನ್ನು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತೆ ತಿಳಿಸಿಕೊಡುವ ಆದಿಕಾವ್ಯವಾಗಿದೆ. ಏಳುಕಾಂಡಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ, 24,000 ಶ್ಲೋಕಗಳಿಂದ ರಚಿತವಾಗಿರುವ ಶ್ರೀಮದ್ರಾಮಾಯಣವು ಹಿಂದೆಯೂ ಅನೇಕ ಮಹಾಕವಿಗಳಿಗೆ ಕೃತಿರಚನೆಗೆ ಮೂಲವೂ ಪ್ರೇರಕವೂ ಹೇಗೆ ಆಗಿದೆಯೋ, ಹಾಗೆಯೇ ಈಗಲೂ ಆಗಿದೆ, ಮುಂದೆಯೂ ಆಗಲಿದೆ ಎನ್ನುವುದರಲ್ಲಿ ಎರಡು ಮಾತಿಲ್ಲ. ಸಂಸ್ಕೃತ ನಾಟಕಕಾರನಾದ ಭವಭೂತಿಯೂ ಸಹ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಅವರ ರಾಮಾಯಣದ ಬಗ್ಗೆ ಗೌರವಪೂಜ್ಯಭಾವವನ್ನು ತಾಳುವುದರ ಜೊತೆಗೆ, ಅದರ ಕಥಾಂಶಗಳನ್ನೇ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ತನ್ನ ಎರಡೂ ನಾಟಕಗಳನ್ನು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ರಚಿಸಿ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರಸಿದ್ಧನಾಗಿದ್ದಾನೆ. ರಾಮಾಯಣಕಾವ್ಯ ಕಲಾಕೌಶಲಪ್ರಭಾವವು ಭವಭೂತಿಯ ಮೇಲೆ ನೂರಕ್ಕೆ ನೂರರಷ್ಟು ಆಗಿದ್ದು, ಅದನ್ನು ಆಧರಿಸಿ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿರುವ ಭವಭೂತಿಯು ಕೃತಾರ್ಥನಾಗಿದ್ದಾನೆ, ಕೃತಕೃತ್ಯನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

**ಭವಭೂತಿಯ ಕೃತಿ–ದೇಶ–ಕಾಲವಿಚಾರ :**

ಸಂಸ್ಕೃತದ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಾಟಕಕಾರರಲ್ಲಿ ಕವಿ–ನಾಟಕಕಾರ ಭವಭೂತಿಯೂ ಒಬ್ಬನು. ಸಂಸ್ಕೃತದ ದಶರೂಪಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಹತ್ತು ರೂಪಕಪ್ರಭೇದಗಳಲ್ಲಿ 'ಮಹಾವೀರಚರಿತ', 'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ' ಎಂಬ ಎರಡು ನಾಟಕಗಳನ್ನು, 'ಮಾಲತೀಮಾಧವ' ಎಂಬ ಕಲ್ಪಿತ ಪ್ರಕರಣವನ್ನು ಭವಭೂತಿಯು ರಚಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಮಹಾವೀರಚರಿತ ನಾಟಕವು ಇವನ ಮೊದಲ ಕೃತಿ ಹಾಗೂ ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕದವರೆಗಿನ ಕಥೆಯನ್ನೊಳಗೊಂಡಿದೆ. ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕವು, ಇದರ ನಂತರದ ಕಥೆಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದರ ಜೊತೆಗೆ, ರಾಮ–ಸೀತೆಯರ ಪುನಸ್ಸಮಾಗಮ ಹಾಗೂ ಕುಶ–ಲವರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳ ಸಂಪ್ರಾಪ್ತಿಯ ಜೊತೆಗೆ, ತಾಯಿಯರು, ಬಂಧುಬಾಂಧವರು, ಗುರುಗಳು, ಇಷ್ಟಮಿತ್ರರೆಲ್ಲರೂ ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸುಖ–ಸಂತೋಷಗಳಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ ಕೃತಾರ್ಥರಾದರೆಂಬ ಮಂಗಳಮಯ ವಿಷಯವನ್ನು ತಿಳಿಸುತ್ತದೆ. ಮಹಾವೀರಚರಿತದ ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಕದ ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಲ್ಲಿ ನಾಟಕಕಾರ ಭವಭೂತಿಯು ತನ್ನ ಕುಲ–ಗೋತ್ರ–ವಿದ್ಯೆ ಮೊದಲಾದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಅದು ಹೀಗಿದೆ – ಸೂತ್ರಧಾರನು ಹೇಳುವ ಮಾತುಗಳಿಂದ ಕವಿಯು ತನ್ನ ಪರಿಚಯವನ್ನು ತಾನೇ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ.

**“ವಶ್ಯವಾಚಃ ಕವೇಃ ಕಾವ್ಯಂ ಸಾ ಚ ರಾಮಾಶ್ರಯಾ ಕಥಾ ।**
**ಲಬ್ಧಶ್ಚ ವಾಕ್ಯನಿಸ್ಯಂದನಿಷ್ಪೇಷನಿಕಷೋ ಜನಃ ॥”**

**ಸೋಽಹಮೇತದ್ವಿಜ್ಞಾಪಯಾಮಿ । ಅಸ್ತಿ ದಕ್ಷಿಣಾಪಥೇ ಪದ್ಮಪುರಂ ನಾಮ ನಗರಮ್ । ತತ್ರ ಕೇಚಿತ್ತೈತ್ತಿರೀಯಾಃ ಕಾಶ್ಯಪಾಶ್ಚರಣಗುರವಃ ಪಂಕ್ತಿಪಾವನಾಃ ಪಂಚಾಗ್ನಯೋ ಧೃತವ್ರತಾಃ ಸೋಮಪೀಥಿನಃ ಉಡ್ಡಂಬರಾಃ (ಉದುಂಬರಾಃ) ಬ್ರಹ್ಮವಾದಿನಃ ಪ್ರತಿವಸಂತಿ । ತದಾಮುಷ್ಯಾಯಣಸ್ಯ ತತ್ರಭವತೋ ವಾಜಪೇಯಯಾಜಿನೋ ಮಹಾಕವೇಃ ಪಂಚಮಃ ಸುಗೃಹೀತನಾಮ್ನಃ ಭಟ್ಟಗೋಪಾಲಸ್ಯ ಪೌತ್ರಃ ಪವಿತ್ರಕೀರ್ತೇಃ ನೀಲಕಂಠಸ್ಯ ಆತ್ಮಸಂಭವಃ ಶ್ರೀಕಂಠಪದಲಾಂಛನಃ ಭವಭೂತಿರ್ನಾಮ ಜತುಕರ್ಣೀಪುತ್ರಃ ಕವಿರ್ಮಿತ್ರಧೇಯಮಸ್ಮಾಕಮಿತ್ಯತ್ರಭವಂತೋ ವಿದಾಂಕುರ್ವಂತು ।**

**ಶ್ರೇಷ್ಠಃ ಪರಮಹಂಸಾನಾಂ ಮಹರ್ಷೀಣಾಮಿವಾಂಗಿರಾಃ ।**
**ಯಥಾರ್ಥನಾಮಾ ಭಗವಾನ್ ಯಸ್ಯ ಜ್ಞಾನನಿಧಿರ್ಗುರುಃ ॥**

ಎಂಬುದು ಪ್ರಸ್ತಾವನೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವ ಮಾತುಗಳು. ಇದರಲ್ಲಿ ಕವಿಯು ತನ್ನ ಸಮಗ್ರ ಪರಿಚಯ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ.

“ದಕ್ಷಿಣಾಪಥವಾದ ದಕ್ಷಿಣಭಾರತದಲ್ಲಿ ಪದ್ಮಪುರವೆನ್ನುವ ನಗರವಿದೆ. ಇದು ವಿದರ್ಭದೇಶದ ನಾಗಪುರದ ಹತ್ತಿರವಿರುವ ಒಂದು ಹಳ್ಳಿಯೆಂದು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಊಹೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ನಾಲ್ಕು ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಆರು ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಧಕರಾದ, ಶ್ರೋತ್ರಿಯರು ಇದ್ದಾರೆ. ಅವರಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯ ವಂಶಜರೂ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದರು. ಇವರು ಕಾಶ್ಯಪಗೋತ್ರದವರು. ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ಮಾಡುವವರು, ಪಂಕ್ತಿಪಾವನರು ಅಂದರೆ ಎಲ್ಲೆಡೆ ಮುಖ್ಯಸ್ಥಾನವನ್ನು ಹೊಂದಿದವರಾಗಿದ್ದರು. ಇವರೆಲ್ಲ ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದ ತೈತ್ತಿರೀಯ ಶಾಖಾನುಯಾಯಿಗಳು. ಗಾರ್ಹಪತ್ಯ, ಆಹವನೀಯ, ದಾಕ್ಷಿಣಾಗ್ನಿ, ಸಭ್ಯ, ಆವಸಥ್ಯಗಳೆಂಬ ಐದು ಅಗ್ನಿಗಳನ್ನು ಉಪಾಸನೆ ಮಾಡಿದವರು, ಅನೇಕ ವ್ರತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿರುವವರು, ಇವರ ಪೂರ್ವಜರು ಸೋಮಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿ ಸೋಮಪಾನ ಮಾಡಿದವರಾದ್ದರಿಂದ ಇವರೆಲ್ಲ ಸೋಮಯಾಜಿಗಳೆಂದು ಹೆಸರು ಗಳಿಸಿದ್ದರು. ಇವರು ಅಪ್ರತಿಮ ವಿದ್ವಾಂಸರು, ಬ್ರಹ್ಮವೇತ್ತರೂ ಆಗಿದ್ದರು.

ಇಂತಹ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಕುಲದಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯು ಐದನೆಯ ತಲೆಮಾರಿನವನು. ಇವನ ತಾತ ಗೋಪಾಲಭಟ್ಟರು ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವೈದಿಕರು. ಗೋಪಾಲಭಟ್ಟರ ಮಗನೇ ನೀಲಕಂಠ. ನೀಲಕಂಠನ ಹೆಂಡತಿ ಜತುಕರ್ಣಿ. ಈ ದಂಪತಿಗಳ ಮಗನೇ ಭವಭೂತಿ. ಇವನಿಗೆ ನಾಮಕರಣವಾದ ಹೆಸರು ಶ್ರೀಕಂಠ. ಈ ಶ್ರೀಕಂಠನು

**“ಕಾಂ ತಪಸ್ವೀ ಗತೋಽವಸ್ಥಾಮಿತಿ ಸ್ಮೇರಾವಿವ ಸ್ತನೌ ।**
**ವಂದೇ ಗೌರೀಘನಾಶ್ಲೇಷಭವಭೂತಿಸಿತಾನನೌ ॥”**
(ಸದುಕ್ತಿಕರ್ಣಾಮೃತ 1–10–4 ರಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯದೆಂದು ಉದ್ಧೃತ)

**“ಸಾಂಬಾ ಪುನಾತು ಭವಭೂತಿಪವಿತ್ರಮೂರ್ತಿಃ ।”**
(ವೀರರಾಘವದಲ್ಲಿ ಉದ್ಧೃತ)

ಶಿವನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಬಳಿದುಕೊಂಡ ಪವಿತ್ರ ವಿಭೂತಿಯಿಂದ

ಬಿಳಿಬಣ್ಣದವಳಾಗಿ ಗೌರೀ ಎನಿಸಿದ – ಉಮೆಯು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಕಾಪಾಡಲಿ ಎಂದು ವರ್ಣಿಸಿರುವುದರಿಂದ ಇವನಿಗೆ ಭವಭೂತಿಯೆಂದು ಹೆಸರು ಬಂತೆಂದು ತಿಳಿದವರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಈ ಶ್ರೀಕಂಠನೂ ತನ್ನ ತಂದೆ, ತಾತ, ಪೂರ್ವಜರಂತೆ ವೇದ–ವೇದಾಂಗಗಳಲ್ಲಿ, ನ್ಯಾಯ, ವ್ಯಾಕರಣ, ಪೂರ್ವಮೀಮಾಂಸಾ, ಉತ್ತರಮೀಮಾಂಸಾ (ವೇದಾಂತ) ಮೊದಲಾದ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮ ಪರಿಣತಿಯನ್ನು ಪಡೆದ ವಿದ್ವಾಂಸನಾಗಿದ್ದನು. ಇವನು ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಕವಿ ಹಾಗೂ ನಾಟಕಕಾರನೂ ಆಗಿದ್ದನು. ಇವನ ಗುರು ಜ್ಞಾನನಿಧಿ. ಇವರೂ ಸಹ ವೇದ, ವೇದಾಂಗ ಹಾಗೂ ಅನೇಕ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಣಾತರಾಗಿದ್ದು ಪರಮಹಂಸರೆಂದು ಶ್ರೇಷ್ಠರಾದ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಅಂಗಿರಸ್ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಹೇಗೆ ಪ್ರಸಿದ್ಧರಾಗಿದ್ದರೋ ಹಾಗೆ ಪವಿತ್ರರಾದ, ಭವಭೂತಿಯ ಗುರುಗಳಾದ ಜ್ಞಾನನಿಧಿಗಳು ಹೆಸರಿಗೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಜ್ಞಾನಗಳ ನಿಧಿಯೇ ಆಗಿದ್ದರು. ಭವಭೂತಿಯ ವಂಶದಲ್ಲಿದ್ದ ಐದನೆಯ ತಲೆಮಾರಿನ ಹಿಂದಿನ ಶ್ರೋತ್ರಿಯರೊಬ್ಬರು ವಾಜಪೇಯ ಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದರೆಂದೂ ತಿಳಿದುಬರುತ್ತದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಭವಭೂತಿಯ ನಿಜ ಹೆಸರು ಶ್ರೀಕಂಠ. ಇವನ ಹುಟ್ಟಿದ ಊರು ದಕ್ಷಿಣಾಪಥದ ಪದ್ಮಪುರವೆಂಬ ಹಳ್ಳಿ

ಎಂದು ಗೊತ್ತಾಗುತ್ತದೆ. ಗುರುಗಳಾದ ಜ್ಞಾನನಿಧಿಯೇ ಕುಮಾರಿಲಭಟ್ಟರು. ಇವರು ಪೂರ್ವಮೀಮಾಸಾಶಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ನಿಷ್ಣಾತರಾದ ವಿದ್ವಾಂಸರು. ಇವರ ಶಿಷ್ಯನೇ ಭವಭೂತಿ ಎಂದೂ ಕೆಲವು ವಿಮರ್ಶಕರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಭವಭೂತಿಯು ಜ್ಞಾನನಿಧಿ ಎಂದಷ್ಟೇ ತನ್ನ ಗುರುವಿನ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ.

ಕವಿ ರಾಜಶೇಖರನು (ಕ್ರಿ.ಶ.900) ತನ್ನ **'ಬಾಲರಾಮಾಯಣ'**ದಲ್ಲಿ (1–16) ತನ್ನನ್ನು ಭವಭೂತಿಯಂತೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಅವತಾರವೆಂದು ಹೆಮ್ಮೆಯಿಂದ ಹೇಳಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ವಾಮನನು (ಕ್ರಿ.ಶ. 800) ತನ್ನ **'ಕಾವ್ಯಾಲಂಕಾರಸೂತ್ರವೃತ್ತಿ'**ಯಲ್ಲಿ ಮಹಾವೀರಚರಿತನಾಟಕದ **'ದೋರ್ಲೀಲಾಂಚಿತ'** (1–54) ಎಂಬ ಪದ್ಯವನ್ನು ಉದಾಹರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಕಲ್ಹಣನು ತನ್ನ **'ರಾಜತರಂಗಿಣಿ'**ಯಲ್ಲಿ (4–144) ಭವಭೂತಿ ಮತ್ತು ವಾಕ್ಪತಿರಾಜ ಇಬ್ಬರೂ ರಾಜ ಯಶೋವರ್ಮನ ಆಶ್ರಯದಲ್ಲಿದ್ದರೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ವಾಕ್ಪತಿರಾಜನು ಬರೆದ **'ಗೌಡವಹೋ ಪ್ರಾಕೃತಕಾವ್ಯ'**ದಲ್ಲಿ (799ನೇ ಪದ್ಯ) ಭವಭೂತಿಯ ಪ್ರಶಂಸೆಯಿದೆ. ಯಶೋವರ್ಮನ ಕಾಲ ಕ್ರಿ.ಶ. 736 ಎಂದರೆ ಭವಭೂತಿಯು ಕ್ರಿ.ಶ. 736ಕ್ಕಿಂತ ಸ್ವಲ್ಪ ಹಿಂದೆ ಇದ್ದಿರಬೇಕು. ಹಾಗಾಗಿ ಭವಭೂತಿಯ ಕಾಲವನ್ನು ಕ್ರಿ.ಶ.700 ಎಂದು ಅಂದಾಜಿನಲ್ಲಿ ಹೇಳಬಹುದು.

### ಭವಭೂತಿಯ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ :

ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಭವಭೂತಿಯು **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ'** ಎಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ಬರೆದಿರುವಂತೆ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು ಏಳು ಅಂಕಗಳಿವೆ. ಉತ್ತರಕಾಂಡದಿಂದ ಕಥಾವಸ್ತುವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿರುವುದರಿಂದಲೋ, ರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾದ ನಂತರದ ವಿದ್ಯಮಾನಗಳು ಇಲ್ಲಿರುವುದರಿಂದಲೋ ಅಥವಾ ಭವಭೂತಿಯೇ ಬರೆದಿರುವ **'ಮಹಾವೀರಚರಿತ'** ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಪೋಷಕವಾಗಿರುವುದರಿಂದಲೋ ಏನೋ ಈ ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಭವಭೂತಿಯು **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'** ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನೇ ಇಟ್ಟಿರುವಂತೆ ತೋರುತ್ತದೆ. ಉತ್ತಮೋತ್ತಮವಾದ ರಾಮನ ಚರಿತೆ ಎಂಬ ಕಾರಣದಿಂದಲೂ ಈ ಹೆಸರು ಬಂದಿರಬಹುದು. ಭವಭೂತಿಯು ಬರೆದಿರುವ ನಾಟಕಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲಾ **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'**ವೇ ಸರ್ವೋತ್ಕೃಷ್ಟವಾದ ನಾಟಕ. **'ಉತ್ತರೇ ರಾಮಚರಿತೇ ಭವಭೂತಿರ್ವಿಶಿಷ್ಯತೇ'** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯು ವಿಶಿಷ್ಟ ಸಿದ್ಧಿಯನ್ನು ಪಡೆದಿದ್ದಾನೆ) ಎಂಬುದು ಭವಭೂತಿಗೆ ದೊರೆತಿರುವ ಪ್ರಶಂಸಾವಾಕ್ಯ.

### ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯ ಏಳು ಅಂಕಗಳ ಕಥಾಸಾರಾಂಶವು ಹೀಗಿದೆ –

ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವ ಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಬರಬೇಕೆಂದು ಅಲ್ಲಿಂದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿನ ರಾಮಾದಿಗಳಿಗೆ ಆಹ್ವಾನ ಬಂದಿರುತ್ತದೆ. ಸೀತೆಯು ತುಂಬು ಬಸುರಿಯಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಅವಳು ಅರಮನೆಯಲ್ಲೇ ಇರಲಿ ಎಂದು ಹಿರಿಯರೆಲ್ಲ ಹೇಳಿ, ಅವಳ ಸಹಾಯಕ್ಕೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರೂ ಇರಲೆಂದು ಹೇಳಿ ಮಿಕ್ಕವರೆಲ್ಲ ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿರುತ್ತಾರೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಸಂತೋಷಪಡಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿ ರಾಮನು ಹೇಳಿದ್ದಂತೆ ಚಿತ್ರಕಾರನು ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನಾಧರಿಸಿ ಚಿತ್ರಪಟಗಳನ್ನು ಬರೆದು ತಂದಿರುತ್ತಾನೆ. ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರಿಂದ ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪಡೆಯುವುದರಿಂದ ಆರಂಭಿಸಿ, ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶ ಮಾಡಿ ಶುದ್ಧಳಾಗಿ ಹೊರ ಬರುವವರೆಗಿನ ಚಿತ್ರಪಟಗಳು ಅಲ್ಲಿದ್ದು ಅವನ್ನು ಅರಮನೆಯ ಒಂದು ಭಾಗದ ಬೀದಿಯಲ್ಲಿ ಜೋಡಿಸಿಟ್ಟಿರುತ್ತಾರೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ರಾಮನಿಗೆ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೇಳಿದಾಗ, ರಾಮನು ಸೀತೆಗೆ ಆ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾ ಬರುತ್ತಾನೆ. ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡುತ್ತಿದ್ದ ಸೀತೆಯು ಆಯಾಸಗೊಂಡು ರಾಮನ ಎದೆಯ ಮೇಲೆ ತಲೆಯನ್ನಿಟ್ಟು ಮಲಗಿ ಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾಳೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಂಡ, ಅವಳ ಮೃದುಸ್ಪರ್ಶದಿಂದ ಪುಳಕಿತನಾದ ರಾಮನು, ಪ್ರಿಯ ಮಡದಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಒಂದು ಕ್ಷಣವೂ ಎಂದಿಗೂ ಬಿಡಲಾರೆ ಎಂದು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಅವಳ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಮೆಲುಕು ಹಾಕುತ್ತಿರುತ್ತಾನೆ. ಅದೇ ಸಮಯಕ್ಕೆ ದುರ್ಮುಖನೆಂಬ ಗೂಢಚಾರನು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಬಂದಿರುವ ಜನಾಪವಾದವನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡುತ್ತಿದ್ದಾಗ ತಪೋವನಗಳನ್ನು ನೋಡಿದ ಸೀತೆ ತಾನು ಮತ್ತೆ ಋಷ್ಯಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಬರಬೇಕೆಂಬ ಆಸೆಯನ್ನು ಹೇಳಿರುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮನು ಅದನ್ನೇ

ನೆಪವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟು ಬರಲು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಆದೇಶಿಸುತ್ತಾನೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ಸೀತೆಯನ್ನು ರಥದಲ್ಲಿ ಕೂರಿಸಿಕೊಂಡು ಕರೆದೊಯ್ಯುತ್ತಾನೆ (ಅಂಕ 1).

ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ಆತ್ರೇಯೀ ವಾಸಂತಿಯರು ಮಾತನಾಡುತ್ತಿರುವಾಗ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಲವಕುಶರು ಬಂದಿರುವ ವಿಚಾರ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಅವರ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರದಲ್ಲಿ ಅವರು ಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆಯುವುದು, ವೇದ–ವೇದಾಂಗಶಾಸ್ತ್ರಾದಿಗಳಲ್ಲಿ, ಅಸ್ತ್ರ–ಶಸ್ತ್ರ ವಿದ್ಯೆಗಳಲ್ಲಿ, ಸಂಗೀತ ಮೊದಲಾದ ಕಲೆಗಳಲ್ಲಿ ಅವರ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ನಡೆಯುತ್ತಿರುತ್ತದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ರಚಿಸಿ, ಅದಕ್ಕೆ ರಾಮ–ಸೀತೆಯರನ್ನೇ ನಾಯಕ–ನಾಯಕಿಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡುವರು. ಇತ್ತ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮನು ಸುವರ್ಣಸೀತೆಯ ಪ್ರತಿಮೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸಿ, ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡಲು ಸಂಕಲ್ಪಿಸಿ, ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಗ ಚಂದ್ರಕೇತುವನ್ನು ಯಜ್ಞ ಕುದುರೆಯ ರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಕಳುಹಿಸುವನು. ರಾಮನು ಶಂಬೂಕನೆಂಬ ಶೂದ್ರತಪಸ್ವಿಯನ್ನು ವಧಿಸಲು ಪಂಚವಟೀ ಹತ್ತಿರದ ಜನಸ್ಥಾನವೆಂಬ ಕಾಡಿಗೆ ಬರುತ್ತಾನೆ. ರಾಮಬಾಣದಿಂದ ಹತನಾದ ಶಂಬೂಕನು ಒಬ್ಬ ದಿವ್ಯ ಪುರುಷನಾಗಿ ರಾಮನಿಗೆ ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನು ಹಾರೈಸಿ ಅದು ಜನಸ್ಥಾನವೆಂದು ಹೇಳಿ ತೆರಳುವನು. ಆಗ ರಾಮನು ಹಿಂದೆ ತಾನು ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಇದ್ದ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೆನಪಿಸಿಕೊಂಡು ಶೋಕಿಸುತ್ತಾನೆ (ಅಂಕ 2).

ಇದೇ ಸಮಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಸೀತೆಯು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳ ಹನ್ನೆರಡನೆಯ ವರ್ಷದ ಹುಟ್ಟುಹಬ್ಬಕ್ಕಾಗಿ ಪಾತಾಳಲೋಕದಿಂದ ಬಂದು ಗೋದಾವರೀ ನದಿಯ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿದ್ದಾಳೆ. ರಾಮನೂ ಅಲ್ಲಿಗೆ ವಿಮಾನದಿಂದ ಬಂದಿಳಿಯುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯ ಜೊತೆಗೆ ತಮಸಾ ನದಿಯೂ, ರಾಮನ ಜೊತೆಗೆ ವಾಸಂತಿಯೂ ಇರುತ್ತಾರೆ. ಸೀತೆಯು ತಮಸೆಗೆ ಮಾತ್ರ ಕಾಣುತ್ತಿರುತ್ತಾಳೆ. ಉಳಿದವರ ಯಾರ ಕಣ್ಣಿಗೂ ಅವಳು ಕಾಣಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ವಾಸಂತಿಯು ರಾಮನಿಗೆ ಅಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಹಿಂದಿನ ವೃತ್ತಾಂತಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಹೇಳಿ, ಅಲ್ಲಿದ್ದ ವಸ್ತುಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ತೋರಿಸಿ, ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ವಿಷಯವನ್ನು ಹೇಳಿ, ವಿಮರ್ಶಿಸಿ ರಾಮನು ಕೊರಗುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಾಳೆ. ಈ ವೃತ್ತಾಂತಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ, ಹಿಂದಿನ ಜಾಗಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೋಡಿ ಬಾರಿ ಬಾರಿಗೂ ರಾಮಸೀತೆಯರು ಮೂರ್ಛಿತರಾಗುತ್ತಾರೆ. ತಮಸೆಯು ಸೀತೆಯನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿರುವ ಸೀತೆ ಮೂರ್ಛಿತನಾದ ರಾಮನ ಮೈದಡವಿ ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮನಿಗೆ ಸೀತೆಯೇ ಮತ್ತೆ ಬಂದು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸುತ್ತಿದ್ದಾಳೆ ಎನಿಸಿದರೂ ಸೀತೆಯು ಕಾಣುವುದಿಲ್ಲ. ಕಡೆಗೆ ದುಃಖಿತನಾದ ರಾಮನು ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಕಡೆಗೆ, ಸೀತೆಯು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮದ ಕಡೆಗೆ ತೆರಳುತ್ತಾರೆ (ಅಂಕ 3).

ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ತನ್ನ ಆಶ್ರಮದಿಂದ ಜನಕನೂ, ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಆಶ್ರಮದಿಂದ ವಸಿಷ್ಠ, ಕೌಸಲ್ಯೆ ಮೊದಲಾದವರು ಬಂದಿರುತ್ತಾರೆ. ಸೀತೆಯಿಲ್ಲದ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ನಾವು ಹೋಗುವುದಿಲ್ಲವೆಂದು ಅವರ ಸಂಕಲ್ಪ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದ ಬಗ್ಗೆಯೇ ಎಲ್ಲರೂ ಮಾತಾಡಿಕೊಂಡು ಬೇಸರಗೊಂಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿ ಲವನನ್ನೂ, ಅವನಲ್ಲಿ ಸೀತಾರಾಮರ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಆಶ್ಚರ್ಯದಿಂದ ಅವನನ್ನು ಮಾತನಾಡಿಸುತ್ತಿರುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ರಾಮನ ಯಜ್ಞಕುದುರೆಯು ಬಂದಿತೆಂದು ಕೇಳಿ ಲವನು ಹೋಗಿ ಅದನ್ನು ಕಟ್ಟಿಹಾಕುವನು (ಅಂಕ 4).

ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಗ ಚಂದ್ರಕೇತುವು ಯಜ್ಞದ ಕುದುರೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ಹಾಕಿದ ಲವನನ್ನು ಎದುರಿಸುವನು. ಲವನು ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಪ್ರಯೋಗಿಸಿ ಚಂದ್ರಕೇತುವನ್ನು ಅವನ ಸೈನ್ಯವನ್ನು ನಿಶ್ಚೇತನಗೊಳಿಸುವನು. ಲವನು ರಾಮನ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಹೇಳಿ ಹಂಗಿಸಲು ತೊಡಗಿದಾಗ, ಕೋಪಗೊಂಡ ಚಂದ್ರಕೇತುವು ಲವನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಲು ತೊಡಗುತ್ತಾನೆ (ಅಂಕ 5).

ವಿದ್ಯಾಧರ ದಂಪತಿಗಳಿಂದ ಲವಚಂದ್ರಕೇತುಗಳ ಯುದ್ಧವು ಯಜ್ಞಕುದುರೆಗಾಗಿ ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಗೊತ್ತಾಗುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲಿಗೆ ರಾಮನೂ ಶಂಬೂಕನನ್ನು ಕೊಂದು ಹಿಂದಿರುಗಿ ಬಂದು ಇಲ್ಲಿಗೇ ಬಂದಿಳಿಯುವನು. ರಾಮನು ಲವನನ್ನು, ಲವನು ರಾಮನನ್ನೂ ನೋಡಿ ಅವರಲ್ಲಿ ಅನ್ಯೋನ್ಯ ಪ್ರೇಮವುಂಟಾಗುವುದು. ಲವನು ರಾಮನ

ಮಾತಿನಂತೆ ತಾನು ಬಿಟ್ಟಿದ್ದ ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಹಿಂದಕ್ಕೆ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವನು. ಭರತಮುನಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿದ್ದ ಕುಶನೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹಿಂದಿರುಗಿ ಬರುವನು. ಲವಕುಶರಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಸಂಗೀತರೂಪದಲ್ಲಿ ಕಲಿಸಿದ್ದರು. ರಾಮನು ಲವಕುಶರಲ್ಲಿ ತನ್ನ, ಸೀತೆಯ ಹೋಲಿಕೆಗಳನ್ನು ಕಾಣುವನು. ಲವಕುಶರು ಹಾಡಿದ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥಾಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಕೇಳಿ ರಾಮನು ಹಿಂದಿನ ಘಟನೆಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೆನಪಿಸಿಕೊಂಡು ಶೋಕಿಸುವನು. ಇಷ್ಟರಲ್ಲಿ ವಸಿಷ್ಠ, ಜನಕ, ಅರುಂಧತೀ, ಕೌಸಲ್ಯಾ, ಸುಮಿತ್ರಾ, ಕೈಕೇಯಿಯರು ಮಕ್ಕಳು ಯುದ್ಧ ಮಾಡುತ್ತಿರುವರೆಂದು ಕೇಳಿ ಗಾಬರಿಯಿಂದ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಓಡಿ ಬರುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನ ತಾಯಿಯರು ರಾಮನ ಅವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಮೂರ್ಛೆ ಹೋಗುತ್ತಾರೆ. ನಂತರ ರಾಮನು ಅವರನ್ನು ಸಂತೈಸಲು ಏಳುತ್ತಾನೆ. ಹುಡುಗರು ಅವನನ್ನು ಹಿಂಬಾಲಿಸುತ್ತಾರೆ (ಅಂಕ 6).

ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳು ಗಂಗಾನದಿಯ ದಡದಲ್ಲಿ ದೇವತೆಗಳು, ಅಸುರರು, ಮನುಷ್ಯರು, ಉರಗಗಳು, ಇತರ ಪಟ್ಟಣಿಗರನ್ನು, ಗ್ರಾಮಮುಖಂಡರನ್ನು ಸೇರಿಸಿ ಅವರ ಎದುರು, ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದಿಂದ ಮುಂದಿನ ಕಥೆಯನ್ನು ಅಭಿನಯಿಸಲು ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಿರುತ್ತಾರೆ. ಅದರಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ಗಂಗೆಯೊಳಗೆ ಬಿದ್ದು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆದಾಗ ಗಂಗಾದೇವಿ, ಭೂದೇವಿಯರು ಅವಳನ್ನು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗುವರು. ನಂತರ ಗಂಗಾ–ಭೂದೇವಿಯರು ಸೀತೆಯನ್ನು ವಸಿಷ್ಠರ ಹೆಂಡತಿ ಅರುಂಧತಿಗೆ ತಂದು ಒಪ್ಪಿಸುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಅವಳು ಸೀತೆಯನ್ನು ಹೊಗಳಿ ಮಹಾಜನರ ಎದುರು ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವಳು. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಲವಕುಶರನ್ನು ಕರೆತಂದು, ತಾಯಿ–ತಂದೆಯರೊಡನೆ ಸೇರಿಸುವರು. ಲವಣಾಸುರನನ್ನು ಕೊಂದು ಶತ್ರುಘ್ನನೂ ಹಿಂದಿರುಗಿ ಬರುತ್ತಾನೆ. ಶಾಂತಾ–ಋಷ್ಯಶೃಂಗ ಮೊದಲಾದವರೂ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಾರೆ. ಎಲ್ಲರೂ ಆನಂದಗೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಎಲ್ಲವೂ ಸುಖ–ಸಂತೋಷದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ (ಅಂಕ 7).

### ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕ ರಚನೆಗೆ ಆಧಾರ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ :

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಕೊನೆಯ ಉತ್ತರಕಾಂಡವೇ '**ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ**'ಕ್ಕೆ ಆಧಾರವೆಂದು ಭಾವಿಸಬಹುದು. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಉತ್ತರಕಾಂಡದ ಪ್ರಕಾರ ರಾಮ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾದ ಮೇಲೆ ಹತ್ತು ಸಾವಿರ ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ಸೀತೆಯು ಗರ್ಭಿಣಿಯಾಗಿ ಋಷಿಗಳ ತಪೋವನಗಳನ್ನು ನೋಡಬೇಕೆಂದು ಆಶಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಕಾಲ ಕಳೆದಂತೆ ರಾಮನು ಭದ್ರನೆಂಬ ಗುಪ್ತಚರನಿಂದ ಲೋಕಾಪವಾದವನ್ನು ತಿಳಿದು, ಅವಳನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟು ಬರುವಂತೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಹೇಳಲು, ಆಗ ಅವನು ಅವಳನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಮುನಿಗಳ ಆಶ್ರಮದ ಹತ್ತಿರ ಬಿಟ್ಟು ಬರುತ್ತಾನೆ. ಒಂಟಿಯಾಗಿದ್ದ ಸೀತೆಯು ಅಸಹಾಯಕಳಾಗಿ ದುಃಖಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಅವಳನ್ನು ತನ್ನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಕರೆತಂದು ಕಾಪಾಡುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಅಲ್ಲಿಯೇ ಲವಕುಶರು ಹುಟ್ಟುತ್ತಾರೆ. ಆ ರಾತ್ರಿ ಶತ್ರುಘ್ನನು ಲವಣಾಸುರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಬೇಕೆಂದು ಹೊರಟಿದ್ದವನು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ತಂಗಿರುತ್ತಾನೆ. ಆಮೇಲೆ ಲವಣನನ್ನು ವಧಿಸಿ ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳ ನಂತರ ಮತ್ತೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದು ಅಲ್ಲಿದ್ದು ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹೋಗಿ ಅಲ್ಲಿ ಬಂದು ಒಂದು ವಾರವಿದ್ದು ಮತ್ತೆ ಹಿಂದಿರುಗುತ್ತಾನೆ. ಈ ಮಧ್ಯೆ ರಾಮನು ಜನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಶಂಬೂಕನನ್ನು ಕೊಂದು, ನಂತರ ನೈಮಿಷಾರಣ್ಯದಲ್ಲಿ ಸುವರ್ಣಸೀತೆಯೊಡನೆ ಅಶ್ವಮೇಧಯಾಗವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ.

ಆಗ ಅಲ್ಲಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಲವಕುಶರೊಡನೆ ಬಂದಿರುತ್ತಾರೆ. ಲವಕುಶರು ರಾಮಾಯಣವನ್ನು ಗಾನವಾಗಿ ಹಾಡುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಲವಕುಶರ ಪೂರ್ವಾಪರಗಳನ್ನೆಲ್ಲಾ ಕೇಳಿ ತಿಳಿದ ರಾಮನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದ ಸೀತೆಗೆ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುವಂತೆ ಹೇಳಿಕಳುಹಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ರಾಮನು ತನ್ನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ನಂಬಿಕೆ ಬರುವಂತೆ ಶಪಥ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿದಾಗ ಮನನೊಂದ ಸೀತೆಯು ಭೂದೇವಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿದಾಗ, ಭೂಮಿಯು ಬಿರಿದು ಒಳಗಿನಿಂದ ಭೂದೇವಿಯು ಮೇಲೆ ಬಂದು ಸೀತೆಯನ್ನು ತನ್ನೊಡನೆ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೊರಟುಹೋಗುತ್ತಾಳೆ. ಕಡೆಗೆ ರಾಮನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ, ತಮ್ಮಂದಿರಿಗೆ ರಾಜ್ಯಭಾರವನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿ ಸರಯೂ ನದಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಶರೀರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ವೈಷ್ಣವತೇಜಸ್ಸನ್ನು ಪಡೆದು ವೈಕುಂಠಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಾನೆ. ಇದು ಮೂಲ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆ.

ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಲವಕುಶರ ಯುದ್ಧ ಪ್ರಸಂಗವೇ ಇಲ್ಲ. ಯಜ್ಞದ ಕುದುರೆಯು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಹಾದು ಬಂದ ವಿಚಾರವೂ ಇಲ್ಲ. ರಾಮ, ಸೀತೆ, ಲವಕುಶರು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸೇರುವುದಿಲ್ಲ. ಕಥೆಯ ಕೊನೆಯು ದುಃಖದಲ್ಲಿ ಸಮಾಪ್ತಿಯಾಗುತ್ತದೆ. ಪದ್ಮಪುರಾಣದ ಪಾತಾಳಖಂಡದಲ್ಲಿ (ಅಧ್ಯಾಯ 1–68) ರಾಮಸೀತೆಯರ ಕಥೆ ಬರುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲಿ ಯಾಗದ ಕುದುರೆಯು ಅನೇಕ ದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸಿ ಬಂದದ್ದು, ಮಧ್ಯೆ ಮಧ್ಯೆ ಲವಕುಶರು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ದೇಶಗಳ ರಾಜರೊಡನೆ ಇದರ ಸಂಬಂಧವಾಗಿ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಿದ್ದು ಮುಂತಾದ ವಿಷಯಗಳು ಬರುತ್ತವೆ. ಕಥೆಯು ಸುಖಾಂತ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಪದ್ಮಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಭರತನ ಮಗ ಪುಷ್ಕಲನು ಕುದುರೆಯ ಹಿಂದೆ ಹೋಗುತ್ತಾನೆ. ಅವನ ಜೊತೆ ಶತ್ರುಘ್ನ, ಹನುಮಂತ, ಸುಗ್ರೀವ ಮೊದಲಾದವರೂ ಇರುತ್ತಾರೆ. ಲವಕುಶರ ವಯಸ್ಸು ಹದಿನಾರು. ಕುಶನು ಮಹಾಕಾಲಪುರದಿಂದ ಬರುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನು ಯುದ್ಧರಂಗಕ್ಕೆ ಹೋಗುವುದಿಲ್ಲ. ಅವನು ತನ್ನ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ನೋಡುವುದು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ.

ಭವಭೂತಿಯು ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಜಾಗ ಮತ್ತು ಇದ್ದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಯಾವ ಯಾವ ಆನುಪೂರ್ವಿಗಳು ಇದ್ದುವು, ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಯಾವುದನ್ನು ಹೇಗೆ ಭವಭೂತಿಯು ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ ಎನ್ನುವುದೂ ಸರಿಯಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದಿಲ್ಲ. ಆದರೂ ವಾಲ್ಮೀಕಿಕೃತ ಮೂಲರಾಮಾಯಣವನ್ನೇ ಆಧಾರ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಭಾಸನಂತೆ ಯಥೇಚ್ಛವಾಗಿ ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಕಥಾಹಂದರವನ್ನು ಹೆಣೆದಿದ್ದಾನೆ ಎಂದು ಹೇಳಬಹುದು. ಮುಖ್ಯವಾದ ಕೆಲವು ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಕೆಲವು ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಬಿಟ್ಟರೆ, ಉಳಿದವೆಲ್ಲಾ ಹೊಸದಾದದ್ದೇ ಆಗಿವೆ. ಕಥೆ ಹಳೆಯದು, ಕಲೆಯು ಹೊಸದು. ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯ ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಕದ ಕಥೆ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗ. ಆದರೆ ಅದು ಪೂರ್ತಿ ಕವಿಕಲ್ಪಿತವಾದ ಸನ್ನಿವೇಶ.

ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಅರಮನೆಯಲ್ಲಿ ಗುರುಹಿರಿಯರಿಲ್ಲದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ತೊರೆಯುತ್ತಾನೆ. ಅವರೆಲ್ಲ ಮನೆಯಲ್ಲಿದ್ದಿದ್ದರೆ ಈ ದುರಂತವನ್ನು ನಡೆಯಲು ಬಿಡುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲವೇನೋ, ಪ್ರಜಾರಂಜನೆ, ಲೋಕಪಾಲನೆಯು ರಾಜನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ವ್ರತ. ದಶರಥನು ಅದನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ವಹಿಸಿಕೊಟ್ಟು ತಾನು ಪ್ರಾಣಬಿಟ್ಟನು. ಅಂಥವನ ಮಗ ರಾಮನ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾದ ಕೂಡಲೇ ಎಲ್ಲ ಕಡೆ ಅಪವಾದ ವಿಷಯವು ಹುಚ್ಚುನಾಯಿಯ ವಿಷದಂತೆ ಹರಡುತ್ತದೆ.

“ರಾಮ :– (ಸಮಾಧಾನದಿಂದ)

**ಹಾ ಹಾ ಧಿಕ್ ಪರಗೃಹವಾಸದೂಷಣಂ ಯದ್–**  
**ವೈದೇಹ್ಯಾಃ ಪ್ರಶಮಿತಮದ್ಭುತೈರುಪಾಯೈಃ ।**  
**ಏತತ್ತತ್ಪುನರಪಿ ದೈವದುರ್ವಿಪಾಕಾ–**  
**ದಾಲರ್ಕಂ ವಿಷಮಿವ ಸರ್ವತಃ ಪ್ರಸುಪ್ತಮ್ ॥**  
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.40)

ಮಂಗಳಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಮರೆಯಾಗಿದ್ದ, ಸೀತೆಯ ಪರಪುರುಷ ಗೃಹವಾಸವೆಂಬ ಅಪವಾದವು, ದುರ್ದೈವದಿಂದ ಈಗ ಹುಚ್ಚುನಾಯಿ ಕಡಿದ ವಿಷವು ದೇಹವನ್ನೆಲ್ಲಾ ವ್ಯಾಪಿಸುವಂತೆ, ಎಲ್ಲೆಡೆ ಹರಡಿದೆಯಲ್ಲಾ ಎಂತಹ ಪರಿಸ್ಥಿತಿ ಇದು ಎಂದು ರಾಮನು ದುಃಖಿಸುವನು. ಆದರೆ ಈ ಲೋಕಾಪವಾದವನ್ನು ಉಪೇಕ್ಷೆ ಮಾಡುವಂತಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ವಸಿಷ್ಠರು ಆಗ ತಾನೇ ರಾಮನಿಗೆ,

**ಜಾಮಾತೃಯಜ್ಞೇನ ವಯಂ ನಿರುದ್ಧಾಃ**  
**ತ್ವಂ ಬಾಲ! ಏವಾಸಿ ನವಂ ಚ ರಾಜ್ಯಮ್ ।**  
**ಯುಕ್ತಃ ಪ್ರಜಾನಾಮನುರಂಜನೇ ಸ್ಯಾ–**  
**ಸ್ತಸ್ಮಾದ್ಯಶೋ ಯತ್ಪರಮಂ ಧನಂ ವಃ ॥** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.11)

ನಮ್ಮ ಮನೆ ಅಳಿಯ ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಯಾಗಕ್ಕಾಗಿ ನಾವು ಇಲ್ಲಿ ಬಂದಿದ್ದೇವೆ. ಆದರೆ ನೀನು ಈಗ ತಾನೇ ರಾಜನಾಗಿದ್ದೀಯೆ. ವಯಸ್ಸು ಚಿಕ್ಕದು. ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆಯೇ ನಿನ್ನ ಮುಖ್ಯ ಕರ್ತವ್ಯ. ಅದರಿಂದಲೇ ನಿನಗೆ ಕೀರ್ತಿ. ನಮಗೆ ಪರಮಸಂಪತ್ತು. ಹಾಗಾಗಿ

ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನೆಯಲ್ಲಿ ಎಚ್ಚರ ತಪ್ಪಬೇಡ ಎಂದು ಸಂದೇಶ ಕಳುಹಿಸಿದ್ದರು. ಆಗ ರಾಮನು ವಸಿಷ್ಠರು ಆದೇಶಿಸಿದಂತೆ, ನಾನು

**ಸ್ನೇಹಂ ದಯಾಂ ಚ ಸೌಖ್ಯಂ ಚ ಯದಿ ವಾ ಜಾನಕೀಮಪಿ ।**
**ಆರಾಧನಾಯ ಲೋಕಸ್ಯ ಮುಂಚತೋ ನಾಸ್ತಿ ಮೇ ವ್ಯಥಾ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.12)

ಲೋಕದಲ್ಲಿರುವ ಜನರ ಸಂತೋಷಕ್ಕಾಗಿ ನನ್ನ ಮನದಾಳದಲ್ಲಿರುವ ಸ್ನೇಹವನ್ನು, ಕರುಣೆಯನ್ನು, ನನ್ನ ಸುಖವನ್ನು, ಅಷ್ಟೇಕೆ ಸೀತೆಯನ್ನೂ ಸಹ ಬೇಕಾದರೆ ಬಿಡುತ್ತೇನೆ. ಇದರಿಂದ ನನಗೆ ಯಾವ ಕೊರಗೂ ಇಲ್ಲ, ಎಂದು ಪ್ರತ್ಯುತ್ತರವನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ದೇಶದ ಪ್ರಜಾಜನರ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮನಿಗೆ ಗೌರವವಿತ್ತು, ಪ್ರೀತಿಯಿತ್ತು, ನಂಬಿಕೆ ಇತ್ತು. ಗೂಢಚಾರ ದುರ್ಮುಖನು ಸೀತಾರಾಮರ ಬಗ್ಗೆ ಅಪವಾದ ಮಾತುಗಳನ್ನಾಡಿದ ಜನರನ್ನು ದುಷ್ಟರು ಎಂದು ಹೇಳಿದಾಗ ರಾಮನು ಅದನ್ನು ಒಪ್ಪದೆ –

**ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶೋಽಭಿಮತಃ ಪ್ರಜಾನಾಂ**
**ಜಾತಂ ಚ ದೈವಾದ್ರಚನೀಯಬೀಜಮ್ ।**
**ಯಚ್ಚಾದ್ಭುತಂ ಕರ್ಮ ವಿಶುದ್ಧಿಕಾಲೇ**
**ಪ್ರತ್ಯೇತು ಕಸ್ತದ್ಯದಿ ದೂರವೃತ್ತಮ್ ॥** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.44)

ಪ್ರಜೆಗಳಿಗೆ ನಮ್ಮ ಇಕ್ಷ್ವಾಕುವಂಶವು ಇಷ್ಟವಾಗಿದೆ. ಲೋಕಾಪವಾದವು ದೌರ್ಭಾಗ್ಯದಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದಿದೆ ಅಷ್ಟೆ. ಸೀತೆಯ ಅಗ್ನಿಪ್ರವೇಶ ಪರೀಕ್ಷೆ ನಡೆದುದು ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ. ಅದನ್ನು ನೋಡದ, ಕೇಳದ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರು ಅದನ್ನು ಹೇಗೆ ನಂಬುತ್ತಾರೆ ಎಂದು ಪ್ರಜೆಗಳ ಪರವಾಗಿಯೇ ಮಾತನಾಡುತ್ತಾನೆ.

ಹಾಗಂದ ಮಾತ್ರಕ್ಕೆ ರಾಮನು ಜಾನಕಿಯನ್ನು ಕೊಳೆತ ಹಣ್ಣನ್ನು ಬಿಸಾಡುವಂತೆ ಹೊರಗೆಸೆಯಲೂ ಆಗುವುದಿಲ್ಲ. ಸಿದ್ಧನೂ ಇಲ್ಲ. ಸೀತೆಯು ದಿನ ತುಂಬಿದ ಬಸುರಿ; ತನಗೆ ಮನೋವಲ್ಲಭೆ, ತನ್ನ ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅಲೆದಾಡಿದವಳು. ರಾಕ್ಷಸರ ಕೈಗೆ ಸಿಕ್ಕಿ ಕಡೆಯ ತನಕ ಸಂಕಟಪಡುತ್ತಾ ತನ್ನ ಬಗ್ಗೆಯೇ ಸದಾ ಯೋಚನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದವಳು. ಈಗ ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡ ನೋಡುತ್ತಲೇ ಆಯಾಸಗೊಂಡು ನನ್ನ ಎದೆಗೆ ಒರಗಿ ನಿದ್ದೆ ಮಾಡಿದ್ದಾಳೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಕಂಡಿದ್ದಾನೆ ರಾಮ. ಆಗ ರಾಮನು ಹೇಳುವ ಮಾತಿದು –

**ಇಯಂ ಗೇಹೇ ಲಕ್ಷ್ಮೀರಿಯಮಮೃತವರ್ತಿರ್ನಯನಯೋಃ**
**ಅಸಾವಸ್ಯಾಃ ಸ್ಪರ್ಶಃ ವಪುಷಿ ಬಹುಲಶ್ಚಂದನರಸಃ ।**
**ಅಯಂ ಬಾಹುಃ ಕಂಠೇ ಶಿಶಿರಮಸೃಣೋ ಮೌಕ್ತಿಕಸರಃ**
**ಕಿಮಸ್ಯಾ ನ ಪ್ರೇಯೋ ಯದಿ ಪರಮಸಹ್ಯಸ್ತು ವಿರಹಃ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.38)

ಇವಳು ನನ್ನ ಗೃಹಲಕ್ಷ್ಮಿ. ಇವಳು ನನ್ನ ಎರಡು ಕಣ್ಣುಗಳಿಗೆ ಅಮೃತದ ಬತ್ತಿಯಾಗಿದ್ದಾಳೆ. ನನ್ನ ದೇಹಕ್ಕೆ ಇವಳ ಮೃದುವಾದ ಸ್ಪರ್ಶವು, ಶ್ರೀಗಂಧದ ರಸಲೇಪನದಂತೆ ಆನಂದ ನೀಡುತ್ತಿದೆ. ನನ್ನ ಕೊರಳನ್ನು ತಬ್ಬಿ ಹಿಡಿದಿರುವ ಇವಳ ಕೋಮಲವಾದ ಕೈ ತಂಪನ್ನೆರೆಯುವ ಕೋಮಲವಾದ ಮುತ್ತಿನ ಸರದಂತಿದೆ. ಇಂತಹ ಈ ನನ್ನ ಮನದನ್ನೆಯ ವಿರಹವನ್ನು ಇನ್ನು ನಾನೆಂದೂ ಸಹಿಸಲಾರೆ' ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಂತೆ, ಗುಪ್ತಚರ ದುರ್ಮುಖನು ಬಂದು ಲೋಕಾಪವಾದ ವಿಷಯವನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ರಾಮನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಹೇಗಾಗಿರಬೇಕು? ಇದನ್ನು ಕೇಳಿದ ರಾಮನು ಪ್ರಜ್ಞೆ ತಪ್ಪುತ್ತಾನೆ. ನಂತರ ಎಚ್ಚರಗೊಂಡು "ಭಾಗ್ಯಹೀನನಾದ ನಾನು ಈಗ ಏನು ಮಾಡಲಿ? ಎಂದು ಕೊರಗುತ್ತಾನೆ. ಈಗ ಅವನಿಗೆ ಧರ್ಮಸಂಕಟ. ಪತಿಯಾಗಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಡದಿದ್ದರೆ ರಾಜಧರ್ಮ ಹಾಳಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಪ್ರಜಾಧರ್ಮವನ್ನು ಒಪ್ಪಿದರೆ ಪತಿಧರ್ಮವು ನಾಶವಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಈ ಮನಸ್ಸಿನ ದೋಲಾಯಮಾನ ಸ್ಥಿತಿ ಒಂದು ಕ್ಷಣ ಮಾತ್ರ. ಆಮೇಲೆ ರಾಮನು ತನ್ನ ಪ್ರಜಾಧರ್ಮ, ಕುಲಗೌರವ, ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯಗಳನ್ನು ನೆನೆದು ಕೂಡಲೇ ಸೀತೆಯನ್ನು ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಲು ಸಿದ್ಧನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಮನೆಯಲ್ಲೇ ಸಾಕಿದ ಹೆಣ್ಣುಹಕ್ಕಿಯನ್ನು ಕಟುಕನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟಂತೆ ಆಯಿತು, ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಿರುವುದು –

**ಶೈಶವಾತ್ಪ್ರಭೃತಿಪೋಷಿತಾಂ ಪ್ರಿಯೈಃ**
**ಸೌಹೃದಾದಪೃಥಗಾಶ್ರಯಾಮಿಮಾಮ್ ।**
**ಛದ್ಮನಾ ಪರಿದದಾಮಿ ಮೃತ್ಯವೇ**
**ಶೌನಿಕೋ ಗೃಹಶಕುಂತಿಕಾಮಿವ ॥** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.45)

ಎಂದು ಮರುಗುತ್ತಾನೆ. ಆದರೂ ಧೈರ್ಯದಿಂದ ಅವಳನ್ನು ಕಾಡು ಪಾಲು ಮಾಡಲು ನಿಶ್ಚಯಿಸುತ್ತಾನೆ. ಇದರಿಂದ ನಾನು ದೊಡ್ಡದಾದುದನ್ನು ಸಾಧಿಸಿ ಬಿಟ್ಟೆ ಎಂದು ರಾಮನು ಭಾವಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಬದಲಾಗಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಡುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ ನಾನು ಅಸ್ಪೃಶ್ಯನಾದ ಪಾಪಿಯಾದೆ. ಹಾಗಾಗಿ ಪ್ರಿಯಳಾದ ದೇವಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟಿ ಅವಳನ್ನೇಕೆ ಮೈಲಿಗೆ ಮಾಡಲಿ" ಎಂದು ತನ್ನನ್ನೇ ಬೈದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ಕಡೆಗೆ ಅವಳನ್ನು ಮೆಲ್ಲಗೆ ನೆಲದ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿಸುತ್ತಾನೆ. ನಾನು 'ಅಪೂರ್ವ ಕರ್ಮಚಂಡಾಲ, ದುಷ್ಟ, ಕರುಣಾಹೀನ' ಎಂದೆಲ್ಲ ತನ್ನನ್ನು ಬೈದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಜಧರ್ಮವು ಮೇಲಾದರೂ ಪತಿಧರ್ಮವು ದೂರವಾಗಲಿಲ್ಲ. ಪ್ರೇಮವು ಅಡಗಲಿಲ್ಲ. ಮುಂದೆ ಬರಲಿರುವುದನ್ನು ಆಗಲೇ ಅನುಭವಿಸಿದೆನೇನೋ ಏನೋ ಎಂಬಂತೆ ಮಲಗಿದ್ದ ಸೀತೆ **'ಆರ್ಯಪುತ್ರ, ರಾಮ, ಎಲ್ಲಿದ್ದೀಯೋ'** ಎಂದು ಕನವರಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆದರೂ ಇನ್ನು ಕೆಲವೇ ಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲಿ ಮುಂದೆ ದುರಂತವು ತನಗೆ ಬರಲಿದೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಅವಳು ತಿಳಿಯದಾಗಿದ್ದಳು. ಋಷ್ಯಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಹೋಗಿ ಋಷಿಪತ್ನಿಯರಿಗೆ ಬಾಗಿನ ಕೊಡಬೇಕು ಎನ್ನುವ ನೆಪವನ್ನೇ ಮುಂದೆ ಮಾಡಿ ರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟು ಬರಲು ಭರತ, ಶತ್ರುಘ್ನ, ಹನುಮಂತರಿಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ಅವರು ಒಪ್ಪುವುದಿಲ್ಲ. ಕಡೆಗೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನು ವಿಧಿಯಿಲ್ಲದೆ ರಾಮಾಜ್ಞೆಯಂತೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಕರೆದೊಯ್ಯುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನು ಸೀತೆಗೆ ಚಿತ್ರದರ್ಶನ ಮಾಡಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರು ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಉಪದೇಶಿಸಿದ ಚಿತ್ರವನ್ನು ತೋರಿಸುತ್ತಾ, ಸೀತೆ ಮುಂದೆ ನಿನಗೆ ಹುಟ್ಟಲಿರುವ ಮಕ್ಕಳೂ ಸಹ ಈ ಅಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಅರಿಯಲಿ ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಈ ಮಾತೇ ಮುಂದೆ ಲವಕುಶರು ಹುಟ್ಟಿ ದಿವ್ಯಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಕಲಿತುದಕ್ಕೆ ಮುನ್ಸೂಚನೆಯಾಗಿದೆ. ಗಂಗಾನದಿಯನ್ನು ಚಿತ್ರದಲ್ಲಿ ನೋಡಿದಾಗ ರಾಮನು **'ಸಾ ತ್ವಮಂಬ ಸ್ನುಷಾಯಾಮ್ ಅರುಂಧತೀವ ಸೀತಾಯಾಂ ಶಿವಾನುಧ್ಯಾನಾ ಭವ'** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.23) "ಅಮ್ಮ, ವಧೂ ಸೀತೆಯಲ್ಲಿ ಅರುಂಧತಿಯು ಮಂಗಳವನ್ನು ಬಯಸಿದಂತೆ, ನೀನೂ ಸೀತೆಗೆ ಮಂಗಳವನ್ನು ಕೋರು" ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ.

ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಿಡುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ **'ಭಗವತಿ ವಸುಂಧರೇ! ಸುಶ್ಲಾಘ್ಯಾಂ ದುಹಿತರಮವೇಕ್ಷಸ್ವ ಜಾನಕೀಮ್'** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 1.50) 'ತಾಯಿ, ಭೂದೇವಿ, ಪ್ರಶಂಸನೀಯಳಾದ ನಿನ್ನ ಮಗಳು ಸೀತೆಯನ್ನು ನೀನು ನೋಡಿಕೋ' ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ಈ ಮಾತುಗಳು ಗಂಗೆ-ಭೂದೇವಿಯರಿಗೆ ಕೇಳಿಸಿರಬೇಕೇನೋ? ಮುಂದೆ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡಲು ಮುಂದಾಗುತ್ತಾರೆ. ಸೀತಾರಾಮಲವಕುಶರ ಸಮಾಗಮ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಈ ಮಾತನ್ನು ಕವಿಯು ನೆನಪಿಸುತ್ತಾನೆ. ಹೀಗೆ ಮುಂದೆ ನಡೆಯುವ ಕಥೆಯ ಹಂದರಗಳು ಮೊದಲೇ ಇಲ್ಲಿ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಹೆಣೆದುಕೊಂಡಿವೆ. ಚಿತ್ರದರ್ಶನದ ನೆಪದಲ್ಲಿ ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯು ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಸಂಗ್ರಹವಾಗಿ ಹೇಳಿಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾನೆ. ಚಿತ್ರದರ್ಶನ ಪ್ರಸಂಗವು ಈ ನಾಟಕದ ಮೂಲಕ್ಷೇತ್ರವಾದರೆ, ಅಷ್ಟಾವಕ್ರ ಪಾತ್ರದ ಪ್ರವೇಶವು ಬೀಜಬಿತ್ತನೆಯ ಕಾರ್ಯವಾಗಿದೆ. ಗೂಢಚಾರ ದುರ್ಮುಖನ ರಹಸ್ಯ ವರದಿಯಿಂದು ರಾಮನ ಮುಂದೆ ಬಂದು ಇದು ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯುತ್ತದೆ. ಮುಂದೆ ಅದು ಹೆಮ್ಮರವಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಕರುಣವೆಂಬ ಹಣ್ಣನ್ನು ಬಿಡುತ್ತದೆ.

ಪ್ರೇಯಸಿ ಸೀತೆಯ ದರ್ಶನ, ಸ್ಪರ್ಶಗಳು ರಾಮನ ಮನದಲ್ಲಿ ಮಧುರ ಶೃಂಗಾರಭಾವಗಳನ್ನು ಮೂಡಿಸುತ್ತವೆ. ಬಹುಕಾಲದ ವಿರಹದ ನಂತರ ಸಿಕ್ಕಿದ ಗಂಡ-ಹೆಂಡಿರ ಮಿಲನವಿದು. ಈ ಸಂತೋಷದ ಸಮಯದಲ್ಲೇ ಬಂದ ದುರ್ಮುಖನ ರಹಸ್ಯ ಸುದ್ದಿ ರಾಮನ ಹೃದಯಕ್ಕೆ ಸಿಡಿಲಿನಂತೆ ಎರಗುತ್ತದೆ. ಸಾಕಿದ ಹಕ್ಕಿಯನ್ನು ಕಟುಕನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುವಂತೆ ಈಗ ರಾಮನು ತನ್ನ ಮನೋವಲ್ಲಭೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿಗೆ ಅಟ್ಟಬೇಕಾಗಿದೆ. ಹಿಂದೆ ಯಾರೂ ಮಾಡದ ಕೆಟ್ಟ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡಿದ ಚಾಂಡಾಲ ನಾನು, ಕಟುಕ ನಾನು ಎಂದು ತನ್ನನ್ನು ಬೈಯ್ದು ಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವಾಗಲೇ ಮುನಿಗಳು ಬಂದು ಲವಣಾಸುರನಿಂದ ಆಗುತ್ತಿರುವ ತೊಂದರೆಗಳನ್ನು ನಿವಾರಿಸಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಇದರಿಂದ ರಾಮನು ಕೋಪಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಅರೆಗಳಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಮಿಂಚಿನ ವೇಗದಿಂದ ರಾಮನ

ಮನದಲ್ಲಿ ಏಕಕಾಲಕ್ಕೆ ಸುಖ, ದುಃಖ, ಕೋಪಗಳು ಚಿಲುಮೆಯಂತೆ ಹೊರಚಿಮ್ಮುತ್ತವೆ. ಸುಖವನ್ನು ದುಃಖವೂ, ದುಃಖವನ್ನು ಕೋಪವೂ ಮೆಟ್ಟಿನಿಲ್ಲುತ್ತವೆ.

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಬೇಡನು ಕ್ರೌಂಚ ಹಕ್ಕಿಯನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದನ್ನು ನೋಡಿದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಮನದಿಂದ ಶೋಕವು ಮುಂದೆ ಹೇಗೆ ಶ್ಲೋಕವಾಯಿತೋ ಹಾಗೆಯೇ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ಪ್ರಸಂಗದಿಂದ ಭವಭೂತಿಯ ಹೃದಯದಲ್ಲಿ ಮೂಡಿದ ದುಃಖದ ಫಲವೇ ಈ **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'** ನಾಟಕದ ರಚನೆಗೆ ಮುನ್ನುಡಿಯಾಗಿದೆ. ಒಂಭತ್ತು ರಸಗಳಲ್ಲೆಲ್ಲಾ ಕರುಣರಸವೇ ಸರ್ವಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂದು ಭವಭೂತಿಗೆ ಅನ್ನಿಸಿತು. ಅದನ್ನೇ ಭವಭೂತಿ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ –

**ಏಕೋ ರಸಃ ಕರುಣ ಏವ ನಿಮಿತ್ತಭೇದಾ–**
**ದ್ಭಿನ್ನಃ ಪೃಥಕ್ಪೃಥಗಿವ ಶ್ರಯತೇ ವಿವರ್ತಾನ್ ।**
**ಆವರ್ತಬುದ್ಬುದತರಂಗಮಯಾನ್ ವಿಕಾರಾನ್**
**ಅಂಭೋ ಯಥಾ ಸಲಿಲಮೇವ ಹಿ ತತ್ಸಮಸ್ತಮ್ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ, 3.47)

ಸಮುದ್ರ ಅಥವಾ ನದಿಯಲ್ಲಿರುವ ಒಂದೇ ನೀರು ಸುಳಿಯಾಗಿ, ಗುಳ್ಳೆಯಾಗಿ, ಅಲೆಯಾಗಿ ಮೇಲೆದ್ದು ಬೇರೆ ಬೇರೆಯಾಗಿ ಕಾಣಿಸಿದರೂ ಅದು ಕಡೆಗೆ ನೀರೇ ಆಗುತ್ತದೋ ಅದರಂತೆ ಕರುಣರಸವೊಂದೇ ನಾಟಕಾದಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಾರಣಭೇದಗಳಿಂದ ಶೃಂಗಾರ, ವೀರ, ಹಾಸ್ಯ, ಅದ್ಭುತ, ಭಯಾನಕ, ಬೀಭತ್ಸ, ರೌದ್ರ, ಶಾಂತಗಳೆಂಬ ರಸರೂಪವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತದೆ. ಕಡೆಗೆ ಕರುಣವೊಂದೇ ಉಳಿಯುತ್ತದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಅರಿತ ಕವಿ ನಾಟಕಕಾರ ಭವಭೂತಿಯು ಕರುಣರಸವೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿರುವ 'ಉತ್ತರ ರಾಮಚರಿತ'ವೆಂಬ ನಾಟಕವನ್ನು ಬರೆದನು. ಇದರಿಂದ ಅಲಂಕಾರಲಕ್ಷಣಕಾರರ ಮೂಲ ನಿಯಮಗಳು ಹಿಂದೆ ಸರಿದು ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕರುಣರಸಕ್ಕೂ ಪ್ರಾಧಾನ್ಯ ದೊರಕಿತು. ಇದು ಭವಭೂತಿಯ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಸಾಧನೆ.

ಈ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ರಾಮ–ಸೀತೆ–ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಒಂದುಗೂಡಿಸಲು ಬರುವ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ತಮಸೆ, ಮುರಲೆ, ಗೋದಾವರಿ, ಭಾಗೀರಥಿ, ವಸುಂಧರೆ, ಸರಯೂ ಮತ್ತು ವಾಸಂತಿಯರು. ಇವರಲ್ಲಿ ಸರಯೂ ಮತ್ತು ವಾಸಂತಿಯರು ರಂಗದ ಮೇಲೆ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಇವರು ನೇಪಥ್ಯದಲ್ಲೇ ಇದ್ದು ಸಹಾಯ ನೀಡುತ್ತಾರೆ. ವಾಸಂತಿ ವನದೇವತೆ. ವಸುಂಧರೆ ಭೂತಾಯಿ. ಮಿಕ್ಕವರು ನದೀದೇವತೆಗಳು. ಚೇತನಯುತರಾದ ಜನರು, ಸೀತೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಉದಾಸೀನರಾಗಿ ತಟಸ್ಥರಾದರೆ, ಅಚೇತನರಾದ ನದಿ, ಕಾಡು, ಭೂಮಿ ಎಲ್ಲವೂ ಕರಗಿ ಕೊರಗುತ್ತವೆ. ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಇವೆಲ್ಲಾ ಮನುಷ್ಯರಂತೆ ರೂಪ ತಾಳಿ ಓಡಾಡುತ್ತವೆ. ಸುಖದುಃಖಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೊಳ್ಳುತ್ತವೆ.

ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯ ಮೂರನೆಯ ಅಂಕವಂತೂ ಶ್ರೀರಾಮನ ಹೃದಯವಿದ್ರಾವಕ ವಿರಹಸಂತಾಪವನ್ನೇ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತದೆ. ಅಗಸ್ತ್ಯಮಹರ್ಷಿಗಳ ಹೆಂಡತಿ ಲೋಪಾಮುದ್ರೆಗೆ ರಾಮನ ಭಯಂಕರವಾದ ದುಃಖವು ಅಸಹಾಯಕವಾಗಿ ಅವನು ಪಂಚವಟೀ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಬಂದರೆ ಮರಣವನ್ನು ತಂದೀತೇನೋ ಎಂಬ ಹೆದರಿಕೆಯಿದೆ. ಹಾಗಾಗಿಯೇ ಅವಳು ತಂಗಾಳಿಯನ್ನು ಮರೆಯದೆ ಬೀಸುವಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಮೊದಲೇ ನದೀದೇವತೆ ಗೋದಾವರಿಗೆ ಹೇಳಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಅವಳನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿರುತ್ತಾಳೆ. ನದೀದೇವತೆ ಭಾಗೀರಥಿಯೂ ಸಹ ರಾಮನು ಜನಸ್ಥಾನವೆಂಬ ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದಾನೆ ಎಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡೇ ಇಲ್ಲಿಯತನಕ ಪಾತಾಳದಲ್ಲಿ ಯಾರಿಗೂ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದಂತಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನು ಯಾರಿಗೂ ಕಾಣದಂತೆ ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿದ್ದುಕೊಂಡೇ ವಿರಹಿ ರಾಮನ ಉಪಚಾರ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಕರೆತಂದಿರುತ್ತಾಳೆ. ಆದರೆ ಈ ವಿಷಯವನ್ನು ಸೀತೆಗೆ ಹೇಳಿಲ್ಲ. ಬದಲಾಗಿ ಕುಶಲವರ ಮಂಗಳ ಕರ್ಮಗಳ ಅಂಗವಾಗಿ ಸೂರ್ಯೋಪಾಸನೆ ಮಾಡಬೇಕೆಂಬ ನೆಪವನ್ನು ಹೇಳಿರುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮನ ಹೃದಯಾಂತರಾಳದ ಭಾವಗಳನ್ನು ಸೀತೆ ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿದ್ದೇ ತಿಳಿದುಕೊಂಡರೆ ರಾಮನ ಬಗೆಗಿನ ತಪ್ಪುಕಲ್ಪನೆಗಳು ದೂರವಾಗಿ ಅವಳ ಶೋಕವು ಕಮ್ಮಿಯಾಗ ಬಹುದೆನ್ನುವುದು ಇವಳ ಅಂತರಂಗ ಭಾವನೆ. ಈ ಕಠಿನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಉಪಚರಿಸಲು ತಮಸಾನದಿಯನ್ನು ಸಹಾಯಕ್ಕಾಗಿ ಕಳುಹಿಸಿದ್ದಾಳೆ.

ಸೀತೆ ಜನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಹೂಗಳನ್ನು ಕೀಳುತ್ತಿದ್ದಾಳೆ. ಆಗಲೇ ವಾಸಂತಿಯು 'ಕಾಪಾಡಿ', 'ಕಾಪಾಡಿ' ಎಂದು ಕೂಗುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆ ಸಾಕಿದ್ದ ಆನೆಮರಿಯು ದೊಡ್ಡದಾಗಿ ಹೆಣ್ಣಾನೆಯೊಡನೆ ಸರಸವಾಡುತ್ತಿರುವಾಗಲೇ ಮದಿಸಿದ ಆನೆಯೊಂದು ಅದನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಬಂದಿದೆ. ರಾಮನು ಸೀತೆ ಸಾಕಿದ್ದ ಆನೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡಬೇಕೆಂದು ಬರುವುದಕ್ಕೆ ಮುಂಚೆಯೇ ಅದು ಮದಿಸಿದ ಆನೆಯನ್ನು ಸೋಲಿಸಿಯಾಗಿದೆ. ಸೀತೆಯು ತಾನು ಸಾಕಿದ ಆನೆಯನ್ನು ಕಂಡಾಗ ತನ್ನ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳ ನೆನಪಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮನು ಜನಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿನ ಒಂದೊಂದು ಪರಿಚಿತ ಜಾಗವನ್ನು ನೋಡುತ್ತಿದ್ದಾಗಲೂ ಹಿಂದಿನ ಸನ್ನಿವೇಶದ ನೆನಪು ಮೂಡಿ, ದುಃಖಿತನಾಗಿ ಪದೇ ಪದೇ ಮೂರ್ಛಿತನಾಗುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ನೆನೆನೆನೆದು ಅಳುತ್ತಾನೆ. ಅದೃಶ್ಯಳಾಗಿದ್ದ ಸೀತೆ ಪತಿಯ ದುಃಖಾವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಕಂಡು, ರಾಮನ ಬಳಿ ಹೋಗಿ ತನ್ನ ಕೈಯಿಂದ ಮೈದಡವಿ ಮೂರ್ಛಿತನಾದ ರಾಮನನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಾಳೆ. ವಾಸಂತಿಯು ರಾಮನು ಕಲ್ಲುಹೃದಯದವನೆಂದು ಮನನೋಯುವಂತೆ ಮಾತನಾಡಿ, ಇನ್ನಷ್ಟು ಗೋಳಾಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಈಗ ಸೀತೆಗೆ ರಾಮನು ಎಂತಹವನು, ಅವನಿಗೆ ತನ್ನ ಮೇಲೆ ಎಂತಹ ಪ್ರೀತಿ ಇದೆ ಎಂದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಗೊತ್ತಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮನು ಯಾಗದಲ್ಲೂ ಸೀತೆಯ ಚಿನ್ನದ ಪ್ರತಿಮೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸಿ ತನ್ನ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಕಾರ್ಯಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದುದು ಸೀತೆಯ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಸಮಾಧಾನವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಕಡೆಗೆ ರಾಮನು ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹೋದರೆ, ಸೀತೆಯು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ತೆರಳುತ್ತಾಳೆ. ಈ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ರಾಮಸೀತೆಯರಿಬ್ಬರ ಮಧ್ಯೆ ಸೀತೆಯು ಗೋಚರವಾಗದಿರುವುದು ತೆರೆಯಂತೆ ಇದ್ದು ರಾಮನ ವಿರಹತಾಪವನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ. ರಾಮನು ಸೀತೆಯ ಸ್ಪರ್ಶಸುಖವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿದರೂ, ಅವಳನ್ನು ನೋಡಲಾರ, ಅವನು ಇದನ್ನು ಭ್ರಮೆಯೆಂದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟ ನಂತರ ರಾಮನ ಶೋಕಕ್ಕೆ ಕೊನೆಯಿಲ್ಲದಂತಾಗಿದೆ. ಇದನ್ನು ಯಾರ ಬಳಿ ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳುವುದು, ಅದು ಆಗದೆ ತೊಳಲಾಡುತ್ತಾನೆ. ಮುಂದೆ ಲವಕುಶರು ರಾಮಾಯಣದ ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ರಾಗವಾಗಿ ಹಾಡಿದಾಗ, ಸೀತೆಯ ವಿರಹದುಃಖವು ಇನ್ನಷ್ಟು ಮರುಕಳಿಸಿ ಅವನ ಸ್ಥಿತಿ ಚಿಂತಾಜನಕವಾಗುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ, ರಾಮಸೀತೆಯರ ಅಂತರಂಗದ ತೊಳಲಾಟದ ಕರುಣರಸ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಭವಭೂತಿಯು ಸಹೃದಯರ ಮನಮಿಡಿಯುವಂತೆ ಇಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾನೆ.

### ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿನ ಮುಂದಿನ ಘಟನೆಗಳು :

ರಾಮನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ, ಅಲ್ಲಿ ಲವಕುಶರನ್ನು ನೋಡಿ, ಅವರಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಮತ್ತು ಸೀತೆಯ ಹೋಲಿಕೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಅಚ್ಚರಿಗೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ಲವನು, ಚಂದ್ರಕೇತುವಿನ ಮೇಲೆ ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಬಿಟ್ಟಾಗ ಇದು ಇವನಿಗೆ ಹೇಗೆ ಸಿದ್ಧಿಸಿತು ಎಂದು ಗೊಂದಲಕ್ಕೊಳಗಾಗುತ್ತಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವೇ ಮುಂದೆ ಇವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಒಂದುಗೂಡಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಗುರುತಾಗುತ್ತದೆ.

ನಾಲ್ಕನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ರಾಮ-ಸೀತೆ-ಕುಶಲವರ ಪುನರ್ಮಿಲನಕ್ಕೆ ಪೋಷಕವಾಗುವಂತೆ, ಜನಕಾದಿಗಳು ರಾಮನ ಲೋಕೋದ್ಧಾರ ಕಾರ್ಯನಿಷ್ಠೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಬೇಸರಗೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಲವಕುಶರ ವರ್ಣನೆಯೂ ಬರುತ್ತದೆ. ಐದನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಚಿಕ್ಕ ಹುಡುಗನಾದ ಲವನೂ ಕೂಡ, ತನ್ನ ವೀರಾಟೋಪದ ಭರದಲ್ಲಿ ರಾಮನನ್ನು ತೆಗಳುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನ ಪ್ರಜಾನಿಷ್ಠೆ, ರಾಜನ ಕರ್ತವ್ಯನಿಷ್ಠುರತೆಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಂದ ಹಿಡಿದು ದೊಡ್ಡವರವರೆಗೆ ಎಲ್ಲರೂ ತೆಗಳುವವರೇ. ಇದು ಪುನಃ ಸರಿಯಾದ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ತಿಳಿಯದೆ ರಾಮನ ಮನಸ್ಸು ಸಮಾಗಮಕ್ಕೆ ಅನುವಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ.

ಆರನೆಯ ಪ್ರತ್ಯಭಿಜ್ಞಾನಾಂಕದಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಕ್ಷಣದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲ ಸಮಸ್ಯೆಗಳೂ ಪರಿಹಾರವಾಗುವ ಬದಲು ನಾಟಕೀಯವಾದ ತಿರುವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತವೆ. ರಾಮನ ನಿಷ್ಕಲ್ಮಷವಾದ ದಯಾರ್ದ್ರಹೃದಯವನ್ನು ತಿಳಿದೊಡನೆ, ಅವನು ವಿರಹದ ಬೆಂಕಿಯಿಂದ ಬೆಂದು ಸೊರಗಿ ಹೋಗಿದ್ದ ನೋಟವನ್ನು ನೋಡಿದ ಕೂಡಲೇ ಜನಕ, ಕೌಸಲ್ಯೆ, ವಸಿಷ್ಠ ಮುಂತಾದವರ ಕೋಪವು ತಟ್ಟನೇ ಶಾಂತವಾಗುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳ ಉದ್ಧತನಡೆಗಳು ತಮಗೆ ತಾವೇ ಶಾಂತಗೊಳ್ಳುತ್ತವೆ.

**ಗರ್ಭಾಂಕದ ಚಾತುರ್ಯ :**

ಏಳನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯು ಗರ್ಭನಾಟಕವೆಂಬ ತಂತ್ರವೊಂದನ್ನು ಜೋಡಿಸಿ, ಎಲ್ಲರ ಸಮಾಗಮವನ್ನು ಸುಖದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಗಾಣಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಇಲ್ಲಿ ರಾಮಸೀತೆಯರ ಪುನಸ್ಸಮಾಗಮಕ್ಕೆ ಮನೆಯವರ, ಬಂಧುಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯಕ್ಕಿಂತಲೂ, ಪ್ರಜಾಭಿಮತವೇ ಅಡ್ಡಿಯಾಗಿತ್ತು. ಅದನ್ನು ದೂರಮಾಡಿ, ರಾಮಸೀತೆಯರಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸಭಾವವನ್ನು ಮೂಡಿಸುವುದೇ ಭವಭೂತಿಯ ಗುರಿಯಾಗಿತ್ತು. ಅದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ನಾಟಕದೊಳಗೆ ಮತ್ತೊಂದು ನಾಟಕವನ್ನು ತಂದು, ತನ್ನ ಗುರಿಯನ್ನು ಸಾಧಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಏಳನೆಯ ಅಂಕದ ಕಥಾವಸ್ತು ಹೀಗಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಮಹರ್ಷಿಗಳು ತಾವೇ ಬರೆದಿದ್ದ ರಾಮಾಯಣನಾಟಕವನ್ನು ಜನರ ಮುಂದೆ ಆಡಿ ತೋರಿಸಲು ನಿಶ್ಚಯಿಸುತ್ತಾರೆ. ಗಂಗಾನದಿಯ ದಡದಲ್ಲಿ ಈ ನಾಟಕವನ್ನು ಆಡಿಸಲು ದೊಡ್ಡದಾದ ರಂಗಮಂಟಪವು ಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಈ ನಾಟಕವನ್ನು ನೋಡಲೆಂದೇ ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಜನರು, ದೇವತೆಗಳು, ಅಸುರರು, ಇತರ ಪಟ್ಟಣಿಗರೆಲ್ಲರೂ ಬರಲೆಂದು ಆಹ್ವಾನ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಅದರಂತೆ ಎಲ್ಲರೂ ನೆರೆದಿದ್ದಾರೆ. ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಕುಶ, ಲವ, ಚಂದ್ರಕೇತು ಮೊದಲಾದವರೂ ಇದನ್ನು ನೋಡಲು ಬಂದಿದ್ದಾರೆ. ರಾಮನಿಂದ ತ್ಯಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ ತುಂಬಿದ ಬಸುರಿ ಸೀತೆ, ಶೋಕಭರಿತಳಾಗಿ, ಪ್ರಸವವೇದನೆ ತಾಳಲಾರದೆ ಗಂಗಾನದಿಯಲ್ಲಿ ಬೀಳುತ್ತಾಳೆ. ಅಲ್ಲೇ ಎರಡು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸೀತೆ ಹಡೆಯುತ್ತಾಳೆ. ಆಗ ಸೀತೆಯು ಬೀಳದಂತೆ ಭೂಮಿ, ಗಂಗೆಯರು ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು, ಅವಳಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಬರುತ್ತಾರೆ. ಸೀತೆಯ ಗೋಳಾಟವು ಭೂಮಿಯನ್ನೂ ಅಳುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಆದರೂ ಭೂದೇವಿಯು ತನ್ನ ಮಗಳನ್ನು ಈಗಲೇ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಅಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಬಯಸುವುದಿಲ್ಲ. ಎರಡು ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಜೀವ ಹಿಡಿದುಕೊಂಡಿರುವಂತೆ ಭೂತಾಯಿಯು ಸೀತೆಯ ಮನವೊಲಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಜನರೆದುರು ಭೂಮಿ–ಗಂಗೆಯರು ಸೀತೆ ಎಲ್ಲರಿಗಿಂತಲೂ ಪಾವನೆಯಾದವಳೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ರಾಮನು ಇದನ್ನು ಎಲ್ಲ ಜನರೂ ಒಪ್ಪಬೇಕೆಂದು ಆಶಿಸುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯ ಎರಡು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವು ಬರುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳು ತಾಯಿಯ ಎದೆಹಾಲು ಕುಡಿಯುವುದನ್ನು ಬಿಟ್ಟ ಮೇಲೆ ತಾನೇ ಸೀತೆ–ಮಕ್ಕಳನ್ನು ತಂದು ಬಿಡುವುದಾಗಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳಿಗೆ ಗಂಗೆ ಮಾತುಕೊಡುತ್ತಾಳೆ. ಭೂದೇವಿಯು ಸೀತೆಯನ್ನು ಪಾತಾಳಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ಯುತ್ತಾಳೆ.

ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ತಪಃಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಚಮತ್ಕಾರವೊಂದು ನಡೆಯುತ್ತದೆ. ಗಂಗೆ, ಭೂಮಿ, ಸೀತೆಯರು ಈಗ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿಯೇ ಗಂಗಾನದೀ ನೀರಿನಿಂದ ಮೇಲೆದ್ದು ಬರುತ್ತಾರೆ. ಗಂಗೆ–ಪೃಥ್ವಿಯರು ಸೀತೆಯನ್ನು ಅರುಂಧತಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ಅರುಂಧತಿಯು ಪ್ರಜೆಗಳ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ನೇರವಾಗಿಯೇ ಕೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಆಗ ಎಲ್ಲ ಜನರೂ ಸೀತೆ ಪವಿತ್ರಳೆಂದು ಒಕ್ಕೊರಲಿನಿಂದ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಜೊತೆಗೆ ಅವಳನ್ನು ತನ್ನ ಧರ್ಮಪತ್ನಿಯಾಗಿ ಮತ್ತೆ ಸ್ವೀಕರಿಸಬೇಕೆಂದು ರಾಮನಿಗೆ ಅರುಂಧತಿಯು ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ. ರಾಮ–ಸೀತೆ–ಲವಕುಶರು ಒಟ್ಟಾಗಿ ಸೇರಿ ಆನಂದಗೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಈ ಸಂತೋಷದ ಶುಭ ಅವಸರದಲ್ಲಿಯೇ ಲವಣಾಸುರನನ್ನು ಕೊಂದ ಶತ್ರುಘ್ನನೂ ಅಲ್ಲಿ ಬಂದು ಸೇರುತ್ತಾನೆ. ಎಲ್ಲರೂ ಸಂತಸದಿಂದ ನಲಿಯುತ್ತಾರೆ.

ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ರಾಮನು, ಪ್ರಜಾಧರ್ಮ, ಗಂಡನ ಧರ್ಮಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಪ್ರಜಾಧರ್ಮವೇ ಮುಖ್ಯವೆಂದು ಭಾವಿಸಿ, ಆಜೀವಪರ್ಯಂತ ದುಃಖಿಯಾಗುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆಯಂತೂ ಅರಣ್ಯವಾಸ, ಅಪಹರಣ, ಲೋಕಾಪವಾದ, ಶ್ರೀರಾಮನಿಂದ ಪರಿತ್ಯಾಗ, ಮಕ್ಕಳ ಅಗಲುವಿಕೆಯಿಂದ ನೊಂದು ಬೆಂದು ಹೋಗಿದ್ದಾಳೆ. ರಾಮಸೀತೆಯರ ಪ್ರೇಮಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಎಲ್ಲೂ ಚ್ಯುತಿಯಿಲ್ಲ. ಕಳಂಕವಿಲ್ಲ. ಅದು ನಿಷ್ಕಲ್ಮಷವಾದುದು, ಅಜರಾಮರವಾದುದು. ಸೀತಾಪಹರಣವಾದಾಗ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಣದ ರಾಮನ ಸ್ಥಿತಿ

**ಅಥೇದಂ ರಕ್ಷೋಭಿಃ ಕನಕಹರಿಣಚ್ಛದ್ಮವಿಧಿನಾ**
**ತಥಾ ವೃತ್ತಂ ಪಾಪೈರ್ವ್ಯಥಯತಿ ಯಥಾ ಕ್ಷಾಲಿತಮಪಿ ।**
**ಜನಸ್ಥಾನೇ ಶೂನ್ಯೇ ವಿಕಲಕರಣೈರಾರ್ಯಚರಿತೈ–**
**ರಪಿ ಗ್ರಾವಾ ರೋದಿತ್ಯಪಿ ದಲತಿ ವಜ್ರಸ್ಯ ಹೃದಯಮ್ ॥**

(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 1.28)

“ಸೀತೆಯನ್ನು ಹುಡುಕುತ್ತಾ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಕಂಡ ಕಂಡ ಕಡೆ ಲಕ್ಷ್ಮಣನೊಡನೆ ಅಲೆಯುತ್ತಿರುವ ರಾಮನ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ನೋಡಿದಾಗ, ಕಠಿನವಾದ ಕಲ್ಲೂ ಕರಗಿ ಅಳುತ್ತದೆ. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ವಜ್ರದ ಹೃದಯವೂ ಬಿರಿಯುತ್ತದೆ” ಎಂದು ಕವಿ ಕರುಣಾಂತರಂಗದಿಂದ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನಿಗೆ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿನ ವಾಸದ ಅನುಭವವೂ ಇದೆ. ಸುಖಸಂಸಾರದ ಅನುಭವವೂ ಇದೆ. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿದ್ದಾಗಲೂ ರಾಮನೊಡನೆ ಸೀತೆಯಿದ್ದಳು. ಈಗ ಸೀತೆ ಅವನಿಂದ ದೂರವಾಗಿರುವುದು ಅವನ ಕರುಳನ್ನು ಹಿಂಡುತ್ತಿದೆ. ಪ್ರಜಾಪೀಡಕರಾದ ರಾಕ್ಷಸರನ್ನು ಕೊಂದ ರಾಮನು ತಪಸ್ವಿಯಾದ ಶಂಬೂಕನನ್ನು ವಧಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ. ಅವನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಬೇಕೆಂದು ಕೈಎತ್ತಿದಾಗ ತನ್ನ ಬಲಗೈಗೆ ರಾಮನು ಹೇಳುವ ಮಾತು

**ಹೇ ಹಸ್ತ ದಕ್ಷಿಣ ಮೃತಸ್ಯ ಶಿಶೋರ್ದ್ವಿಜಸ್ಯ**
**ಜೀವಾತವೇ ವಿಸೃಜ ಶೂದ್ರಮುನೌ ಕೃಪಾಣಮ್ ।**
**ರಾಮಸ್ಯ ಬಾಹುರಸಿ! ನಿರ್ಭರಗರ್ಭಖಿನ್ನ-**
**ಸೀತಾವಿವಾಸನಪಟೋಃ ಕರುಣಾ ಕುತಸ್ತೇ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 2.10)

ಎಲೈ ಬಲಗೈಯೇ, ನೀನು ಈಗ ಸತ್ತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಬಾಲಕನನ್ನು ಬದುಕಿಸಲು, ಶೂದ್ರಮುನಿ ಶಂಬೂಕನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಏಕೆ ಹಿಂಜರಿಯುತ್ತಿರುವೆ? ಕತ್ತಿಯನ್ನು ಬೀಸು, ನೀನು ಪೂರ್ಣಗರ್ಭಿಣಿಯಾದ, ಗರ್ಭವನ್ನು ಹೊತ್ತು ಹಿಂಸೆ ಪಡುತ್ತಿದ್ದ ಸೀತೆಯನ್ನೇ ಬಿಟ್ಟವನಲ್ಲವೇ! ನಿನಗೆಲ್ಲಿದೆ ಕರುಣೆ! ಇದು ರಾಮನ ಅಂತರಂಗದ ತಳಮಳವನ್ನು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ.

### ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯಲ್ಲಿ ಭವಭೂತಿಯು ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಬದಲಾವಣೆಗಳು :

ಮೂಲ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದ ಪ್ರಶ್ನಾರ್ಹವಾದ ಎಷ್ಟೋ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಭವಭೂತಿಯು ಅನೇಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ರಾಮಾಯಣದ ಮೊದಲಿನಿಂದ ಕೊನೆಯ ತನಕ, ರಾಮಸೀತೆಯರ ನಿಷ್ಕಲ್ಮಷವಾದ ಪವಿತ್ರವಾದ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಬಗೆಬಗೆಯಾಗಿ ಬಣ್ಣಿಸಿದ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯು ಉತ್ತರಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದಿಂದ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಕೊನೆಗಾಣಿಸುವುದಾಗಲಿ ಅಥವಾ ಸೀತೆಯನ್ನು ಭೂಮಿಯು ಬಾಯ್ದೆರೆದು, ತನ್ನೊಳಗೆ ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದಾಗಲಿ ಆದರ್ಶ ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯೆನಿಸುವುದಿಲ್ಲವೆನ್ನುವುದು ಭವಭೂತಿಯ ಭಾವನೆ. ಸೀತೆ ನಿಜವಾಗಿಯೂ ಪತಿವ್ರತೆ, ಸಾಧ್ವೀರತ್ನ ಎಂಬುದನ್ನು ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆಯಿಂದ ನಿಸ್ಸಂಶಯವಾಗಿ ಗೊತ್ತಾದ ಮೇಲೂ ಅವಳನ್ನು ಮತ್ತೆ ಕಾಡಿಗಟ್ಟುವುದು ಆದರ್ಶ ರಾಜನಿಗೆ ತರವಲ್ಲ, ಒಬ್ಬ ಸಾಮಾನ್ಯ ಪ್ರಜೆಯ ಅಕಾಲಮರಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ತಾನೇ ಹೊರುವಂತಹ ಪ್ರಜಾಪಾಲಕ ರಾಮನು, ಪವಿತ್ರಾತ್ಮಳಾದ ಕೈಹಿಡಿದ ಹೆಂಡತಿಗೆ ಅನ್ಯಾಯ ಮಾಡುವುದನ್ನು ಸರಿಯೆಂದು ಹೇಳಲಾದೀತೆ? ತನ್ನ ಕುಟುಂಬವನ್ನೇ ಕಾಪಾಡದವನು ಇನ್ನು ಲೋಕವನ್ನು ಹೇಗೆ ಪಾಲಿಸುವನು? ರಾಮನ ಬುದ್ಧಿಗೆ ಮಂಕು ಕವಿಯಿತೆಂದಿದ್ದರೂ, ಜ್ಞಾನಿಗಳಾದ ಕುಲಪುರೋಹಿತರಾದ ವಸಿಷ್ಠರು ರಾಮನಿಗೆ ಬುದ್ಧಿ ಹೇಳಬಹುದಿತ್ತಲ್ಲವೆ? ಮಹಿಮಾನ್ವಿತಳಾದ ಭೂದೇವಿಯು ತನ್ನ ಮಗಳಿಗಾದ ಅನ್ಯಾಯವನ್ನು ಹೇಗೆ ಸಹಿಸಿಕೊಂಡಳು? ಮಹಾಪತಿವ್ರತೆ ಅರುಂಧತಿದೇವಿಯು ಇದು ಗೊತ್ತಿದ್ದರೂ ಏಕೆ ಏನನ್ನೂ ಹೇಳಲಿಲ್ಲ? ಸೀತೆಯನ್ನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಿಟ್ಟ ವಿಷಯ ತಿಳಿದ ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನಿಗೆ, ರಾಮನನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವಷ್ಟು ಕೋಪವಾಗಲಿ, ರಾಮಗೆ ತಿಳಿವಳಿಕೆ ಹೇಳಬೇಕೆನ್ನುವ ಜ್ಞಾನವಾಗಲಿ ಏಕೆ ಬರಲಿಲ್ಲ? ಸೀತೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳಾದರೂ ಸಹ ತಮ್ಮ ತಾಯಿಗಾದ ಅಪಮಾನವನ್ನು ಹೋಗಲಾಡಿಸಲು ಏಕೆ ಮುಂದಾಗಲಿಲ್ಲ? ಮುಂತಾದ ಅನೇಕ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು ನಮ್ಮ ಮನದಲ್ಲಿ ಏಳುತ್ತವೆ. ಇದನ್ನೆಲ್ಲಾ ಚಿಂತಿಸಿದ ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯು ರಾಮ-ಸೀತೆಯರ ಪ್ರೇಮ, ಗುಣಗಳು ಸದಾ ಶುದ್ಧವಾದವುಗಳು ಎನ್ನುವುದನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ತನ್ನ ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾನೆ. ಅವುಗಳೆಂದರೆ –

1. ಚಿತ್ರದರ್ಶನ ವೃತ್ತಾಂತ
2. ಗಂಗಾನದಿಯ ದಡದಲ್ಲಿ ವನರಾಜಿಗಳಲ್ಲಿ ಸುತ್ತಾಡಬೇಕೆಂದು ಸೀತೆಗೆ ಬಯಕೆಯುಂಟಾಗುವುದು.

3. 12 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಋಷ್ಯಶೃಂಗನ ಯಾಗಕ್ಕೆ ರಾಮ, ಸೀತೆ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ ಇತ್ಯಾದಿ ಕೆಲವರನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಎಲ್ಲರೂ ತುಂಬಿದ ಬಸುರಿ ಸೀತೆ ಒಬ್ಬಳನ್ನೇ ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗಿರುವುದು.

4. ರಾಜಸಿಂಹಾಸನದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತಿರುವ ನೀನು ಇನ್ನೂ ಬಾಲಕ, ಹಾಗಾಗಿ ಪ್ರಜಾಪರಿಪಾಲನಾ ಕರ್ತವ್ಯದಲ್ಲಿ ಜಾಗರೂಕನಾಗಿರು ಎಂದು ವಸಿಷ್ಠರು ರಾಮನಿಗೆ ಕಳುಹಿಸುವ ಸಂದೇಶ.

5. ರಾಮನಿಂದ ಬಿಡಲ್ಪಟ್ಟ ಸೀತೆ ರಾಮನಿಗೆ ಕಠೋರ ಸಂದೇಶವನ್ನು ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಕೊಡುತ್ತಾಳೆ. ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿ ಅದಿಲ್ಲ.

6. ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬಂದ ಸೀತೆಯನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಕಾಪಾಡುವುದಿಲ್ಲ. ಬದಲಾಗಿ ಸೀತೆ ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಗಂಗಾನದಿಗೆ ಬಿದ್ದಾಗ ಗಂಗೆ ಮತ್ತು ಪೃಥ್ವಿಯರು ಅವಳನ್ನು ಕಾಪಾಡುತ್ತಾರೆ.

7. ಗಂಗೆ, ಪೃಥ್ವಿ, ವಾಸಂತಿ, ತಮಸೆ, ಅರುಂಧತಿ, ಯಾರೊಬ್ಬರೂ ಮೂಲಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಅವರೇ ಮುಖ್ಯರಾಗಿ, ಸೀತಾರಕ್ಷಣೆಗೆ ನಿಲ್ಲುತ್ತಾರೆ. ಛಾಯಾಸೀತೆ, ಅದೃಶ್ಯಸೀತೆ, ರಾಮನ ಮೈದಡವುದು ಇತ್ಯಾದಿ ಮೂಲದಲ್ಲಿಲ್ಲ. ಅದಿಲ್ಲಿ ಸಂಘಟಿತವಾಗಿ ರಾಮ–ಸೀತೆಯರು ಒಬ್ಬರನ್ನೊಬ್ಬರು ಅರಿಯಲು ಸಹಾಯವಾಗುತ್ತದೆ.

8. ಮೂಲದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲೋ ಬರುವ ಶಂಬೂಕನ ವೃತ್ತಾಂತವು, ಇಲ್ಲಿ ರಾಮನು ಪಂಚವಟಿಗೆ ಬರಲು ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮಸೀತೆಯರ ಪುನರ್ಮಿಲನಕ್ಕೆ ಸೇತುವಾಗುತ್ತದೆ.

9. ಮೂಲರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಜನಕ, ಕೌಸಲ್ಯೆ, ವಸಿಷ್ಠ ಮೊದಲಾದವರು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಅದೇ ಮುಖ್ಯ ಕೇಂದ್ರಬಿಂದುವಾಗಿದೆ. ಎಲ್ಲರೂ ಒಂದಾಗಲೂ ಮೂಲ ಸೆಲೆಯಾಗುತ್ತದೆ.

10. ಲವಕುಶರ ಯುದ್ಧವನ್ನು ವಿಸ್ತಾರ ಮಾಡಿ, ಸೀತೆ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಬದಲು, ಭವಭೂತಿ ಅದನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ರಾಮನೇ ಅನಿವಾರ್ಯವಾಗಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುವಂತೆ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಲಕ್ಷ್ಮಣನ ಮಗ ಚಂದ್ರಕೇತುವು, ಯಜ್ಞಾಶ್ವದ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಬರುವುದು, ಲವನೊಡನೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ನಿಲ್ಲುವುದು ಎಲ್ಲವೂ ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯ ಸೃಷ್ಟಿಯೇ!

11. ಕುಶಲವರನ್ನು ನೋಡಿದ ರಾಮ, ಜನಕ, ಕೌಸಲ್ಯೆ ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ ಇವರು ರಾಮನ ಮಕ್ಕಳೇ ಎಂಬ ಶಂಕೆ ಬರುವಂತಹ, ಸಾಮ್ಯಗಳು ಕಾಣುವುದು.

12. ಸೀತೆಯ ಮೇಲೆ ಅಪವಾದ ಹೊರಿಸಿದ ಪ್ರಜೆಗಳ ಮನಸ್ಸೇ ಬದಲಾಗಿ ಅವರೇ ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನು ಸ್ವೀಕರಿಸಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಗರ್ಭಾಂಕನಾಟಕ ಸೃಷ್ಟಿ.

13. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುನಿಗಳ ದಿವ್ಯಭವ್ಯಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಪೃಥ್ವಿಗಂಗೆಯರೇ ಸೀತೆಯ ಜೊತೆ ಬರುವುದು. ಇವೆಲ್ಲ ಭವಭೂತಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರುವ ಬದಲಾವಣೆಗಳು.

ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳೇ ಸೀತೆಯ ಉತ್ತರಕಥೆಯನ್ನು ನಾಟಕರೂಪದಲ್ಲಿ ದುಃಖಾಂತರಂಗರಾಗಿ ಬರೆಯುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗೆ ಬರೆಯಲು ಪ್ರಬಲ ಕಾರಣ ಯಾವ ಪ್ರಜೆಗಳು ಸೀತೆಯ ಮೇಲೆ ಅಪವಾದಗೈದು, ಅವರಿಬ್ಬರು ಒಂದಾಗಿರಲು ಅಡ್ಡಿಯಾಗಿದ್ದರೋ ಅಂತಹ ಜನರ ಮುಂದೆಯೇ ಈ ಘೋರ ವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ಅಭಿನಯಿಸಿ ತೋರಿಸಿ, ಅದರ ಮೂಲಕ ಅವರ ಹೃದಯವನ್ನು ಬದಲಾಯಿಸಬೇಕು ನಂತರ, ರಾಮಸೀತೆಯರು ಒಂದಾಗುವುದನ್ನು ತೋರಿಸಬೇಕೆನ್ನುವುದು. ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಅಗ್ನಿಪರೀಕ್ಷೆ ಮಾಡಿಸಿದಂತೆ, ಇನ್ನೊಮ್ಮೆ ಗಂಗೆ–ಪೃಥ್ವಿಯರು ತಾವಾಗಿಯೇ ಪ್ರಜೆಗಳ ಮುಂದೆ ಬಂದು ಸತ್ಯ ಹೇಳಿದರೆ, ಸೀತೆಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯದ ಬಗೆಗೆ ಸಾಕ್ಷಿ ನುಡಿದರೆ ಪ್ರಜೆಗಳು ಖಂಡಿತವಾಗಿಯೂ ನಂಬುವರು ಎನ್ನುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಮನದಾಳದ ಆಶಯ. ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಸಾಕ್ಷಿ ರಾಮನಿಗೆ ಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. ಬದಲಿಗೆ ಲಂಕೆಯಲ್ಲಿ ಆದ ಘಟನೆಯನ್ನು ನೋಡದ ಅಯೋಧ್ಯಾಪ್ರಜೆಗಳ ಸಲುವಾಗಿ ಈ ಸಾಕ್ಷಿ ಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸುವುದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಅಂತರ್ನಾಟಕದ ರಚನೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯೇ ಸೂಚ್ಯವಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾನೆ.

### ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿನ ಬದಲಾವಣೆಗೆ ಬೇಕಾದ ಕಾರಣಾಂಶಗಳು:

ರಾಮನು ಸೀತೆಯನ್ನು ಏಕೆ ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದ, ಕಾಡಿಗೆ ಏಕೆ ಕಳುಹಿಸಿದ ಎನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಥಕಾಂಶಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ಮತ್ತೆ ಸೀತಾರಾಮರನ್ನು ಒಂದು ಮಾಡಬೇಕೆನ್ನುವುದೇ ಈ ನಾಟಕದ ಮುಖ್ಯ ಗುರಿ. ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಆಗುವ ಈ ಪುನರ್ಮಿಲನಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಅಂಕದಲ್ಲೂ ಸೂಚನೆಗಳು ಸಿಗುತ್ತವೆ. ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿ ಸೀತಾರಾಮರ ಅಪೂರ್ವ ಪ್ರೇಮದ ಜೊತೆಗೆ ಸೀತಾಪರಿತ್ಯಾಗದ ವಿಷಯವೂ ಬರುತ್ತದೆ. ಎರಡು, ಮೂರನೆಯ ಅಂಕಗಳಲ್ಲಿ ಇವರಿಬ್ಬರ ಮಾನಸಿಕ ಸಂದೇಹಗಳು ದೂರವಾಗುತ್ತಾ ಬಂದು ಮತ್ತೆ ಇವರಿಬ್ಬರೂ ಸೇರುತ್ತಾರೆ ಎನ್ನುವ ಸಾಧ್ಯತೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುತ್ತದೆ. ನಾಲ್ಕು, ಐದು, ಆರನೆಯ ಅಂಕಗಳಲ್ಲಿ ಇವರು ಮತ್ತೆ ಒಂದಾಗಿ ಸೇರುವುದಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾದ ಘಟನೆಗಳು ಬರುತ್ತವೆ. ಕೊನೆಗೆ ಇವರ ಪುನಸ್ಸಮಾಗಮವು ಅನಾಯಾಸವಾಗಿ ನಡೆದುಹೋಗುತ್ತದೆ.

ರಾಮನ ಮನದಲ್ಲಿ ಹುದುಗಿದ್ದ ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಸೀತೆಯ ಪರವಾಗಿ ಹೊರಹಾಕುವ ವಾಸಂತಿ ಭವಭೂತಿಯ ಸ್ವಂತ ಸೃಷ್ಟಿ. ಸೀತೆಯು ಸ್ವಯಂ ತಾನಾಗಿಯೇ ಛಾಯಾರೂಪದಿಂದ ರಾಮನ ಮನದಾಳದ ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುತ್ತಾಳೆ. ಸೀತೆಯ ಯಾತನೆಗಳನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾನೆ. ಹಾಗಾಗಿ ಇವರಿಬ್ಬರ ಸಮಾಗಮವು ಮತ್ತೆ ಆಗಬೇಕಾದರೆ ಈ ಗಂಡ-ಹೆಂಡಿರ ಪ್ರೇಮವು ಅಷ್ಟೇ ಅಮರವಾಗಿರಬೇಕು, ಪವಿತ್ರವಾಗಿರಬೇಕು ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಭವಭೂತಿಯು ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪದೇ ಪದೇ ವರ್ಣನೆ ಮಾಡಿ ಹೇಳಿದ್ದಾನೆ.

### ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತದಲ್ಲಿ ಕರುಣರಸ ಪ್ರತಿಪಾದನೆ :

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾದ ರಸ ಕರುಣ. ಇದನ್ನು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳು ಇಡೀ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಸುದೀರ್ಘವಾಗಿ, ವಿಶದವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳಿಂದ ವಿವರವಾಗಿ ಹೇಳಲಾದ ಕರುಣರಸದ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟಾಗಿ ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ, ಸಹೃದಯರ ಮನಬಿರಿಯುವಂತೆ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ, ಚೊಕ್ಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿ ಹೇಳುವ ಭವಭೂತಿಯ ಶೈಲಿ ಅನನ್ಯ, ಅಪೂರ್ವ ಹಾಗೂ ಕಷ್ಟಸಾಧ್ಯ. ಭವಭೂತಿಯು ಕರುಣರಸದ ಚಿತ್ರಣದಲ್ಲಿ ಗೆದ್ದಿದ್ದಾನೆ.

**ಅನಿರ್ಭಿನ್ನೋ ಗಭೀರತ್ವಾದಂತರ್ಗೂಢಘನವ್ಯಥಃ ।**
**ಪುಟಪಾಕಪ್ರತೀಕಾಶೋ ರಾಮಸ್ಯ ಕರುಣೋ ರಸಃ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 3.1)

"ರಾಮನು ಗಂಭೀರ ಮನದವನಾದ್ದರಿಂದ ಅವನ ಮನದೊಳಗೆ ಕುದಿಯುತ್ತಿರುವ ಶೋಕವು, ಹೊರಗೆ ಕಾಣದಿದ್ದರೂ, ಒಳಗೊಳಗೇ, ಪುಟಕಟ್ಟಿ ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕಿದ ಔಷಧಿಯ ಮೇಲಿನ ಮಣ್ಣು ಆರಿದರೂ ಒಳಗೆ ಅತಿ ಬಿಸಿಯಾಗಿರುವಂತೆ, ಮನವನ್ನು, ಸ್ನೇಹವನ್ನು ಸುಡುತ್ತಿದೆ" ಎಂದು ರಾಮನ ದುಃಖವನ್ನು ಭವಭೂತಿ ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾನೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ಬರುವ ಅದೃಶ್ಯಸೀತೆ –

**ಪರಿಪಾಂಡುದುರ್ಬಲಕಪೋಲಸುಂದರಂ**
**ದಧತೀ ವಿಲೋಲಕಬರೀಕಮಾನನಮ್ ।**
**ಕರುಣಸ್ಯ ಮೂರ್ತಿರಥವಾ ಶರೀರಿಣೀ**
**ವಿರಹವ್ಯಥೇವ ವನಮೇತಿ ಜಾನಕೀ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 3–4)

ರಾಮನ ವಿರಹದಿಂದ ಸೀತೆಯ ಮುಖ, ಕೆನ್ನೆಗಳು ಬಿಳಿಚಿಕೊಂಡು ಕೃಶವಾಗಿವೆ. ಅವಳ ಕೇಶಪಾಶಗಳು ಕೆದರಿ ಮುಖದ ತುಂಬಾ ಹರಡಿವೆ. ವಿರಹವ್ಯಥೆಯಿಂದಲೋ ಏನೋ ಎಂಬಂತೆ ಕರುಣೆಯ ಮೂರ್ತಿಯೋ ಅಥವಾ ಕರುಣೆಯೇ ದೇಹ ತಳೆದುಬಂದಿದೆಯೋ ಎಂಬಂತೆ ಇರುವ ಸೀತೆಯು ಈ ಕಾಡಿಗೆ ಬಂದಿದ್ದಾಳೆ.

**ಹೃದಿ ನಿತ್ಯಾನುಷಕ್ತೇನ ಸೀತಾಶೋಕೇನ ತಪ್ಯತೇ ।**
**ಅಂತಃಪ್ರಸೃಪ್ತದಹನೋ ಜರನ್ನಿವ ವನಸ್ಪತಿಃ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 4.2)

ಜೀರ್ಣವಾದ ಮರದ ಪೊಟರೆಯೊಳಗೆ ಬೆಂಕಿ ಬಿದ್ದು ಹೇಗೆ ಆ ಮರವನ್ನು ಒಳಗೇ ಸುಡುತ್ತದೋ, ಹಾಗೇ ವಯಸ್ಸಾದ ಜನಕನ

ಮನವನ್ನು ಸೀತೆ ಇಲ್ಲದಿರುವ ಶೋಕಾಗ್ನಿಯು ಸುಡುತ್ತಿದೆ. ಕೌಸಲ್ಯೆ, ಅರುಂಧತೀ, ಭಾಗೀರಥಿ, ಭೂದೇವಿ, ಆತ್ರೇಯೀ, ವಾಸಂತೀ ಎಲ್ಲರೂ ಶೋಕಪ್ರವಾಹದ ಸೆಳೆತಕ್ಕೆ ಸಿಕ್ಕಿ ಜರ್ಝರಿತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ತಂದೆ–ತಾಯಿಗಳಿದ್ದು, ಪರದೇಶಿಗಳಂತೆ ಎಲ್ಲೋ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ ಲವಕುಶರ ಸ್ಥಿತಿಯೂ ದುಃಖಜನಕವೇ ಆಗಿದೆ. ಸೀತೆಯ ಪ್ರಾಣಪರಿತ್ಯಾಗದ ಹೃದಯವಿದ್ರಾವಕ ದೃಶ್ಯವಂತೂ ಎಲ್ಲರ ಕಣ್ಣಲ್ಲೂ ನೀರು ತರುತ್ತದೆ. ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ ನಾಟಕದ ಆರಂಭದಿಂದ ಕೊನೆಯತನಕವೂ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಪಾತ್ರಗಳಿಂದಲೂ, ಬಾರಿ ಬಾರಿಗೂ ದುಃಖವೇ ಉಕ್ಕಿ ಬರುತ್ತದೆ. ಇವು ನೂತನರೂಪಗಳನ್ನು ತಾಳುತ್ತವೆ. ಆದರೂ ದೇವತೆಗಳ, ಋಷಿಮುನಿಗಳ ಪುಣ್ಯ ಆಶೀರ್ವಾದ ಪ್ರಭಾವಗಳಿಂದ ದುಃಖಿತರಾದವರೆಲ್ಲಾ ಕಡೆಗೆ ಒಂದಾಗಿ ಶಾಂತಿ ಪಡೆಯುತ್ತಾರೆ. ಇಡೀ ನಾಟಕದ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ರೀತಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಸ್ಥಾಯಿಗಳಲ್ಲಿ ಶೋಕವು ಉಕ್ಕಿ ಕರುಣಾರಸವಾಗಿ ಹರಿದು ಪ್ರೇಕ್ಷಕರ ಹೃದಯವನ್ನು ಕರಗಿಸಿಬಿಡುತ್ತದೆ.

ಆದರ್ಶ ಪ್ರೇಮಿಗಳ ದುಃಖಮಯವಾದ ಅಂತರಂಗದ ಜೀವನವನ್ನು ಭವಭೂತಿಯು ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕಲ್ಲೂ ಕರಗುವಂತೆ ವಜ್ರದ ಮಧ್ಯವೂ ಸಿಡಿಯುವಂತೆ, ಎಲ್ಲರ ಕರುಳು ಕರಗುವಂತೆ ಚಿತ್ರಿಸಿರುವುದು ಸಹೃದಯ ರಸಿಕರೆಲ್ಲರ ಮೆಚ್ಚುಗೆಯನ್ನು ಗಳಿಸುತ್ತದೆ. ಸೀತಾರಾಮರು ಆದರ್ಶ ಪುರುಷರು. ಅಂಥವರೂ ಈ ಕಷ್ಟಕೋಟಲೆಗಳಿಗೆ, ದುಃಖದುಮ್ಮಾನಗಳಿಗೆ ಸಿಲುಕಿಬಿಟ್ಟರಲ್ಲ ಎನ್ನುವುದು ಎಲ್ಲರ ಕೊರಗು. ಜೀವನವೇ ಒಂದು ಭೇದಿಸಲಾಗದ ಸಮಸ್ಯೆ ಎಂದು ಈ ನಾಟಕದ ಕಥೆ ಸಾರುತ್ತದೆ. ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಸೀತೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿಗಳ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ತಾಪಸಿಯರಿಂದ ಸೇವೆ ಪಡೆದು ಅನಾಯಾಸವಾಗಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹಡೆಯುವುದಿಲ್ಲ. ಬದಲಾಗಿ ದುಃಖವನ್ನು ಸಹಿಸಲಾರದೆ, ಗಂಗೆಯಲ್ಲಿ ಬಿದ್ದು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಹೆರುವಳು, ಸೀತೆಯ ಪ್ರಿಯಪತಿ ರಾಮನಾದರೋ ಎಲ್ಲಿರಲಿ, ಯಾವುದನ್ನು ನೋಡಲಿ, ಏನನ್ನು ಮಾಡಲಿ, ಎಲ್ಲದರಲ್ಲೂ ಸೀತೆಯನ್ನು ನೆನೆನೆನೆದು ತನ್ನ ದುಷ್ಕೃತ್ಯವನ್ನು ಬೈದುಕೊಂಡು ಪರಿತಪಿಸುವನು.

ಇಲ್ಲಿ ನಾಟಕದ ಉದ್ದಕ್ಕೂ ಗೋಳಾಟವೇ, ತೊಳಲಾಟವೇ!

**ಅನಿರ್ಭಿನ್ನೋ ಗಭೀರತ್ವಾದಂತರ್ಗೂಢಘನವ್ಯಥಃ ।**
**ಪುಟಪಾಕಪ್ರತೀಕಾಶೋ ರಾಮಸ್ಯ ಕರುಣೋ ರಸಃ ॥** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 3.1)

ರಾಮನ ದುಃಖವಂತೂ ತಡೆದುಕೊಳ್ಳಲೂ ಆಗದು, ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲೂ ಆಗದು ಹಾಗಿದೆ. ಕೊನೆಯ ಅಂಕದಲ್ಲಿಯೂ ಅದ್ಭುತರಸಕ್ಕಿಂತ ಕರುಣರಸವೇ ಹೆಚ್ಚಾಗಿದೆ. ಸಂಸ್ಕೃತದಲ್ಲಿ ಕರುಣರಸವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವ ನಾಟಕವು **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'** ಒಂದೇ ಎಂದು ಹೇಳಬಹುದು. ಕರುಣರಸವೂ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನರಸವಾಗಬಹುದು ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಆಲಂಕಾರಿಕಲಕ್ಷಣಕಾರರೆಲ್ಲರೂ **'ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತ'** ನಾಟಕವನ್ನು ಓದಿ, ಒಪ್ಪಿಕೊಂಡು ಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೋ ಎನ್ನುವಷ್ಟರಮಟ್ಟಿಗೆ ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯು ಕರುಣರಸ ಚಿತ್ರಣದಲ್ಲಿ ಕೃತಕೃತ್ಯನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

ಆದರ್ಶಪ್ರೇಮದ ಸಾರವನ್ನು ಕವಿ, ನಾಟಕಕಾರ ಭವಭೂತಿಯು

**ಅದ್ವೈತಂ ಸುಖದುಃಖಯೋರನುಗತಂ ಸರ್ವಾಸ್ವವಸ್ಥಾಸು ಯದ್**
**ವಿಶ್ರಾಮೋ ಹೃದಯಸ್ಯ ಯತ್ರ ಜರಸಾ ಯಸ್ಮಿನ್ನಹಾರ್ಯೋ ರಸಃ ।**
**ಕಾಲೇನಾವರಣಾತ್ಯಯಾತ್ ಪರಿಣತೇ ಯತ್ಸ್ನೇಹಸಾರೇ ಸ್ಥಿತಂ**
**ಭದ್ರಂ ತಸ್ಯ ಸುಮಾನುಷಸ್ಯ ಕಥಮಪ್ಯೇಕಂ ಹಿ ತತ್ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 1.39)

ಸುಖದುಃಖಗಳೆರಡರಲ್ಲೂ ಯಾವುದು ಒಂದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ, ಎಲ್ಲ ಅವಸ್ಥೆಗಳಲ್ಲೂ ಒಂದೇ ಸಮನಾಗಿರುವುದೋ, ಎಲ್ಲಿ ಹೃದಯವು ಪೂರ್ಣಶಾಂತಿಯನ್ನು ಪಡೆಯುವುದೋ ಜೊತೆಗೆ ಸವಿ ಮುಪ್ಪಿನಿಂದಲೂ ಮಾಸುವುದಿಲ್ಲವೋ, ಕಾಲಕಳೆದಂತೆ ಆವರಣಗಳೆಲ್ಲ ಸಡಿಲವಾದ ಮೇಲೆ ಯಾವುದು ಮಾಗಿ ಪ್ರೇಮಸಾರವಾಗಿ ನಿಲ್ಲುವುದೋ ಆ ಶುಭಕರವಾದ ಮಂಗಳಮಯವಾದ ಅದ್ವಯ ಅನುಭವವು ಅಂದರೆ ದಂಪತಿಗಳ ಏಕೀಭಾವವು ಧನ್ಯರಾದವರಿಗೆ ಮಾತ್ರ ಎಲ್ಲಿಯಾದರೊಮ್ಮೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ. ಅಂತಹ ಅದ್ವಯವಾದ ದಾಂಪತ್ಯಭಾವವನ್ನು ನಾನು ಸೀತೆಯೊಡನೆ ಹಿಂದೆ ಪಡೆದಿದ್ದೇನೆ ಎಂದು ಹೇಳುವ ರಾಮನ ಮಾತು ಕಠಿನಹೃದಯದವರ ಮನವನ್ನು ಕರಗಿಸಿಬಿಡುತ್ತದೆ.

ಪುತ್ರವಾತ್ಸಲ್ಯವನ್ನು ಭವಭೂತಿ ಅಮರವಾಗಿ ತೋರಿಸಿದ್ದಾನೆ. ಲವಕುಶರು ಯಾರೆಂದು ಇನ್ನೂ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದಿರುವಾಗಲೇ 'ಕಣ್ಣರಿಯದಿದ್ದರೂ ಕರುಳು ತಿಳಿಯದೇ' ಎನ್ನುವಂತೆ, ಜನಕ, ಕೌಸಲ್ಯೆ, ಶ್ರೀರಾಮ ಎಲ್ಲರೂ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಂಡು ಏನೋ ಹೇಳಲಾಗದ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸುವರು. ಈ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಆನಂದದ ವರ್ಣನೆ ಎಂತಹವರ ಎದೆಯನ್ನಾದರೂ ಕರಗಿಸಿಬಿಡುತ್ತದೆ, ಕೋಮಲವಾಗಿಸುತ್ತದೆ. ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆಯು ರಸಿಕರ ಪ್ರಶಂಸೆಗೆ ಪಾತ್ರವಾಗಿರುವುದಕ್ಕೆ ಮಕ್ಕಳು ಕಾಣುವುದರಿಂದ ಸಂಸಾರಿಗಳು ಹೊಂದುವ ನಿಷ್ಕಲ್ಮಷ ಸುಖದ ವರ್ಣನೆಯೂ ಒಂದು ಕಾರಣವೆಂದು ಹೇಳಬಹುದು. ಭವಭೂತಿಯ ಒಂದೊಂದು ಮಾತೂ ಸಹ ಎಲ್ಲ ಗೃಹಸ್ಥರ ಅನುಭವವನ್ನು ಅಮರವಾಗಿಸಿ, ಆಡುನುಡಿಯಾದ ಗಾದೆಯಾಗಿ ಬಿಟ್ಟಿದೆ.

**ವ್ಯತಿಷಜತಿ ಪದಾರ್ಥಾನಾಂತರಃ ಕೋಽಪಿ ಹೇತುಃ**
**ನ ಖಲು ಬಹಿರುಪಾಧೀನ್ ಪ್ರೀತಯಃ ಸಂಶ್ರಯಂತೇ ।**
**ವಿಕಸತಿ ಹಿ ಪತಂಗಸ್ಯೋದಯೇ ಪುಂಡರೀಕಂ**
**ದ್ರವತಿ ಚ ಹಿಮರಶ್ಮಾವುದ್ಗತೇ ಚಂದ್ರಕಾಂತಃ ॥** (ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 6.12)

'ಹೃದಯಾಂತರಾಳದ ಯಾವುದೋ ಹೇಳಲಾಗದ ಕಾರಣ ಮಾತ್ರ ಗಂಡಹೆಂಡಿರಿಬ್ಬರನ್ನೂ ಒಂದುಗೂಡಿಸುತ್ತದೆ. ಪ್ರೀತಿಗಳು ಹೊರಗಿನ ಕಾರಣಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಹಗಲಿನಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಸೂರ್ಯ ಹುಟ್ಟಿದ ಕೂಡಲೇ ಕಮಲವು ಅರಳಿಬಿಡುತ್ತದೆ. ರಾತ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಆಕಾಶದಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರನ ಬೆಳದಿಂಗಳು ಮೂಡಿದ ಕೂಡಲೇ ಚಂದ್ರಕಾಂತಮಣಿಯು ಕರಗಿ ನೀರು ಸುರಿಸುತ್ತದೆ.' ವಾಲ್ಮೀಕಿಯ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ರಾಮನನ್ನು ಕಂಡು ಕುಶನು ಅವನಿಗೆ ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ, ಆಗ ರಾಮನು ಅವನನ್ನು ತಬ್ಬಿಕೊಂಡಾಗ, ಹೇಳಲಾಗದ ಭಾವವೊಂದು ಮೂಡುತ್ತದೆ ರಾಮನಲ್ಲಿ. ಆಗ ರಾಮನ ಮನದಲ್ಲಿ ಏಳುವ ಭಾವ ಹೀಗಿದೆ –

**ಅಂಗಾದಂಗಾತ್ಸೃತ ಇವ ನಿಜಸ್ನೇಹಜೋ ದೇಹಸಾರಃ**
**ಪ್ರಾದುರ್ಭೂಯ ಸ್ಥಿತ ಇವ ಬಹಿಶ್ಚೇತನಾಧಾತುರೇಕಃ ।**
**ಸಾಂದ್ರಾನಂದಕ್ಷುಭಿತಹೃದಯಪ್ರಸ್ರವೇನೇವ ಸೃಷ್ಟೋ**
**ಗಾತ್ರಂ ಶ್ಲೇಷೇ ಯದಮೃತರಸಸ್ರೋತಸಾ ಸಿಂಚತೀವ ॥**
(ಉತ್ತರರಾಮಚರಿತೆ, 6.22)

"ಈ ಬಾಲಕನನ್ನು ತಬ್ಬಿಕೊಂಡದ್ದರಿಂದ ನನ್ನ ಇಡೀ ಮೈಯನ್ನೆಲ್ಲಾ ಅಮೃತರಸದ ಹೊಳೆಯಲ್ಲಿ ಅದ್ದಿದಂತಾಗಿದೆ. ನನ್ನ ಪ್ರೀತಿ, ದೇಹದ ಸಾರವನ್ನೆಲ್ಲಾ ಒಂದೊಂದು ಅವಯವದಲ್ಲೂ ಹರಿಸಿದ ಪ್ರವಾಹವೇ ಇವನಿರಬಹುದೇ! ನನ್ನ ಶರೀರದೊಳಗಿರುವ ಚೇತನಾಧಾತುವೇ ಹೊರಗೆ ಮೈದಳೆದು ಈ ರೀತಿ ಬಾಲಕನ ಆಕಾರವನ್ನು ತಳೆದಿದೆಯೋ ಎಂಬಂತಿದೆ! ಅಪರಿಮಿತವಾದ ಆನಂದದಿಂದ ನನ್ನ ಹೃದಯವು ಕರಗಿ ನೀರಾಗಲು, ಆ ಆನಂದಜಲದಿಂದ ಇವನು ಹುಟ್ಟಿ ಬಂದಿದ್ದಾನೋ ಎನ್ನುವಂತಿದೆ" ಎಂದು ಮನದಲ್ಲಿ ಅಂದುಕೊಂಡಾಗ ಭವಭೂತಿಯು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಂಸಾರಿಗನಾಗಿ ಕಂಡ ತನ್ನ ಜೀವನದ ಸುಖಾನುಭವವನ್ನೆಲ್ಲಾ ಇಲ್ಲಿ ಭಟ್ಟಿಯಿಳಿಸಿರುವನೋ ಎಂದು ಅಚ್ಚರಿ ಹುಟ್ಟುತ್ತದೆ.

ಹೀಗೆ ಭವಭೂತಿಯು ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದ ದಿವ್ಯ ಭವ್ಯ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತನಾಟಕ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಕರುಣರಸವನ್ನು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿ, **'ನ ಭೂತೋ ನ ಭವಿಷ್ಯತಿ'** ಎಂಬಂತೆ ಆಗಿದ್ದಾನೆ. ಇವನ ನಾಟಕದ ಶೈಲಿ ಸರಳವಾಗಿದ್ದು, ಅನುಪಮವೂ, ಸುಕೋಮಲವೂ ಆಗಿದೆ. ತನ್ನ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಇವನು ಚಿತ್ರಿಸಿರುವ ಶಬ್ದಾಲಂಕಾರಗಳು, ಅರ್ಥಾಲಂಕಾರಗಳೆಲ್ಲವೂ ನೂತನವಾಗಿಯೇ ಕಾಣುತ್ತವೆ. ಛಂದಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಆಯ್ದುಕೊಂಡು, ಉತ್ತಮೋತ್ತಮ ವೃತ್ತಗಳಿಂದ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಹೆಣೆದಿರುವುದೂ ಸಹ ಅಪೂರ್ವವೆಂದೇ ಹೇಳಬಹುದು. ಕರುಣರಸ ಪ್ರತಿಪಾದನೆಯಲ್ಲಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿಯು ಗುರುವಾದರೆ, ಭವಭೂತಿಯು ಶಿಷ್ಯನಾಗಿದ್ದಾನೆ. ಇವರಿಬ್ಬರನ್ನೂ ಸರಿಗಟ್ಟುವ ಮತ್ತೊಬ್ಬ ಕವಿ, ನಾಟಕಕಾರ ಸಂಸ್ಕೃತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿಲ್ಲವೆಂದೇ ಹೇಳಬೇಕು. ಒಟ್ಟಾರೆ ನಾಟಕಕಾರ ಭವಭೂತಿಯು ವಾಲ್ಮೀಕಿಗೆ, ಇವರಿಂದ ರಚಿತವಾದ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಸದಾ ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದಾನೆ.

## ಮಹಾವೀರಚರಿತ ನಾಟಕ

ಮಹಾವೀರಚರಿತನಾಟಕವನ್ನು ಭವಭೂತಿಯು ಮೊದಲು ಬರೆದನೆಂದು ತೋರುತ್ತದೆ. ಇದು ಏಳು ಅಂಕಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಇದರ ಕಥಾಸಾರ ಹೀಗಿದೆ–

"ಮಹರ್ಷಿ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರು ತನ್ನ ಯಜ್ಞರಕ್ಷಣೆಗಾಗಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ರಾಮ–ಲಕ್ಷ್ಮಣರನ್ನು ತನ್ನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಕರೆತಂದಿದ್ದಾರೆ. ಈ ಯಾಗವನ್ನು ನೋಡಲು ಜನಕರಾಜನ ತಮ್ಮ ಕುಶಧ್ವಜನು ಸೀತೆ–ಊರ್ಮಿಳೆಯರೊಡನೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬರುತ್ತಾನೆ. ರಾವಣನ ಪುರೋಹಿತ ಸರ್ವಮಾಯನೆಂಬ ವೃದ್ಧರಾಕ್ಷಸನು, ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾವಣನಿಗೆ ತಂದುಕೊಳ್ಳಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಲು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುತ್ತಾನೆ. ಮೊದಲು ಮಿಥಿಲೆಗೆ ಹೋಗಿ ಜನಕನನ್ನು ಅವನು ಕೇಳಲು, ಅವರ ವಿವಾಹದ ಭಾರವನ್ನು ಕುಶಧ್ವಜನಿಗೆ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದ್ದೇನೆ, ಅವರನ್ನು ಕೇಳಬೇಕೆಂದು ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾನೆ. ಈ ಮಧ್ಯೆ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ತಾಟಕೆಯನ್ನು ಕೊಂದಿರುತ್ತಾರೆ. ಅವರಿಗೆ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಜೃಂಭಕಾಸ್ತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ನಂತರ ರಾಮನು ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲೇ ಮುರಿಯುತ್ತಾನೆ. ಕುಶಧ್ವಜನು ಸೀತೆಯನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ, ಊರ್ಮಿಳೆಯನ್ನು ಲಕ್ಷ್ಮಣನಿಗೆ ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಕೊಡುವನು; ಮಾಂಡವಿಯನ್ನು ಭರತನಿಗೆ, ಶ್ರುತಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಶತ್ರುಘ್ನನಿಗೆ ಮದುವೆ ಮಾಡುವುದೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ, ಇದನ್ನು ನಾನು ಜನಕನಿಗೆ ಹೇಳಿ ಅವನನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸುತ್ತೇನೆಂದು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನು ಅವರ ವಿವಾಹ ಭಾರವನ್ನು ವಹಿಸಿ, ಈ ಎಲ್ಲ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ದಶರಥ, ವಸಿಷ್ಠ ಮೊದಲಾದವರಿಗೆ ಹೇಳಿ ಕಳುಹಿಸುವನು. ರಾಮನು ಮತ್ತೆ ಸುಬಾಹುವನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವನು. ರಾವಣನ ಪುರೋಹಿತ ಸರ್ವಮಾಯನು ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗಿ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದರೂ, ಏನೂ ಮಾಡಲಾರದೆ, ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಮಾಲ್ಯವಂತನಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತೇನೆಂದು ಹೋಗುವನು (ಅಂಕ 1).

ಮಾಲ್ಯವಂತನು ರಾವಣನಿಗೆ ಸೋದರಮಾವ ಜೊತೆಗೆ ಅವನ ಮಂತ್ರಿ ಬೇರೆ. ಅವನು ರಾವಣನ ಗೆಳೆಯನಾದ, ಶಿವಭಕ್ತ ಪರಶುರಾಮನಿಗೆ ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ರಾಮನು ಮುರಿದನೆಂದು ಹೇಳಿ ರಾಮನನ್ನು ಶಿಕ್ಷಿಸುವಂತೆ ಪ್ರೇರೇಪಿಸುತ್ತಾನೆ. ಕೋಪಗೊಂಡ ಪರಶುರಾಮನು ಜನಕನ ಅಂತಃಪುರಕ್ಕೆ ಬಂದು ರಾಮನನ್ನು ಕೆಣಕುವನು. ರಾಮನು ಕಂಕಣ ವಿಸರ್ಜನೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಬರುವವರೆಗೂ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ಶತಾನಂದ, ಜನಕ, ದಶರಥ ಎಲ್ಲರೂ ಪರಶುರಾಮನನ್ನು ಸಮಾಧಾನಪಡಿಸಲು ತೊಡಗುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಅವನು ಶಾಂತನಾಗುವುದಿಲ್ಲ. ಕೊನೆಗೆ ರಾಮನೇ ಬಂದು ಪರಶುರಾಮನನ್ನು ಕರೆದೊಯ್ಯುವನು. ಅವರಿಬ್ಬರಿಗೂ ಯುದ್ಧ, ಪರಶುರಾಮನ ಸೋಲು (ಅಂಕ 2–3).

ಮಾಲ್ಯವಂತನು ಹೇಳಿದಂತೆ ರಾವಣನ ತಂಗಿ ಶೂರ್ಪಣಖಿಯು ಮಂಥರೆಯಲ್ಲಿ ಆವಿಷ್ಟಳಾಗಿ, ಕೈಕೇಯಿಯಿಂದ ಒಂದು ಕಾಗದವನ್ನು ತಂದು ದಶರಥನಿಗೆ ಕೊಡುತ್ತಾಳೆ. ಭರತನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಬೇಕು, ಸೀತಾರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಬೇಕು ಎಂದು ಅದರಲ್ಲಿ ಬರೆದಿರುತ್ತದೆ. ಹೀಗೆ ಮಾಡಿದರೆ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯನ್ನು ಕದ್ದೊಯ್ದು ರಾವಣನಿಗೆ ಸೀತೆಯನ್ನು ಮದುವೆ ಮಾಡಿಸಬಹುದು. ಆಗ, ಸೀತೆಯ ವಿರಹದಿಂದಲೋ, ಅಥವಾ ವಾಲಿಯ ಕೈಯಿಂದಲೋ ರಾಮನು ಸಾಯುವನು ಎನ್ನುವುದು ಮಾಲ್ಯವಂತನ ಲೆಕ್ಕಾಚಾರ. ರಾಮನಿಗಾದರೋ ತಾನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಬೇಕೆಂದಿದ್ದೆ, ಅದು ಅನಾಯಾಸವಾಗಿ ಸಿದ್ಧಿಸಿತಲ್ಲ ಎನ್ನುವುದು ಸಂತೋಷದ ವಿಷಯ. ಪರಾಜಿತನಾದ ಪರಶುರಾಮನು ಕೋಪ ಬಿಟ್ಟು ಶಾಂತನಾಗಿ, ರಾಮನ ಬಳಿಗೆ ಮತ್ತೆ ಬಂದು ವೈಷ್ಣವ ಧನುಸ್ಸನ್ನು ರಾಮನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟು, ಗುರುಹಿರಿಯರೆಲ್ಲರ ಆಶೀರ್ವಾದವನ್ನು ಪಡೆದು ಹೊರಟುಹೋಗುವನು. ಭರತ, ಯುಧಾಜಿತ್ತರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದು ರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಹೇಳುವರು. ದಶರಥನೂ ಇದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪುವನು. ಈ ಉತ್ಸಾಹದಲ್ಲಿ ತಾನು ಈಗ ಏನು ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ದಶರಥನು ಎಲ್ಲರನ್ನೂ ಕೇಳಿದಾಗ, ರಾಮನೇ ತನ್ನ ಚಿಕ್ಕಮ್ಮ ಕೈಕೇಯಿಯು ಕೇಳಿದ ವರಗಳನ್ನು ನಡೆಸುವಂತೆ ಹೇಳಿ ತಾನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಡಲು ಸಿದ್ಧನಾಗುವನು. ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಟ ರಾಮನನ್ನು ಭರತ ಮೊದಲಾದವರೆಲ್ಲಾ ಹಿಂಬಾಲಿಸುವರು. ರಾಮನೇ ಅವರೆಲ್ಲರನ್ನೂ ಕಾಡಿಗೆ ಬರದಂತೆ ತಡೆದು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗುವನು (ಅಂಕ 4).

ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸಂಪಾತಿ ಜಟಾಯುಗಳು ಮಾತನಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವರು. ಇವರ ಮಾತಿನಿಂದ ವಿರಾಧನ ವಧೆ, ಶರಭಂಗಾಶ್ರಮಕ್ಕೆ ರಾಮಾದಿಗಳು ಬಂದು,

ಪಂಚವಟಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ, ಶೂರ್ಪಣಖಿಯ ಗರ್ವಭಂಗವಾಗಿದೆ. ಖರದೂಷಣಾದಿಗಳು ಹತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಸೀತೆಯನ್ನು ಯಾರೋ ಕದ್ದೊಯ್ದಿದ್ದಾರೆ, ಜಟಾಯು ಮೃತನಾಗಿದ್ದಾನೆ ಎನ್ನುವ ವಿಷಯಗಳು ಗೊತ್ತಾಗುತ್ತದೆ. ಮಾಲ್ಯವಂತನು ನೇಮಿಸಿದ್ದ ದನುವೆಂಬ ರಾಕ್ಷಸನು, ಶಾಪದಿಂದ ಬಿಡುಗಡೆ ಹೊಂದಿ, ರಾಮನಿಗೆ ವಾಲಿ–ರಾವಣರ ಸ್ನೇಹವನ್ನು ತಿಳಿಸುವನು. ರಾಮನು ದುಂದುಭಿಯ ದೇಹವನ್ನು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಚಿಮ್ಮಿಸುವನು. ರಾಮನು ವಾಲಿಯನ್ನು ಭೇಟಿಯಾಗುವನು. ವಾಲಿಗೆ ರಾಮನಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ, ರಾವಣನಲ್ಲಿಯೂ ಸ್ನೇಹ. ಈ ದ್ವಂದ್ವದಲ್ಲಿ ಕಡೆಗೆ ಅವನು ಯೋಚಿಸಿ, ರಾಮನೊಡನೆ ಯುದ್ಧ ಮಾಡಲು ಬರುವನು. ರಾಮಬಾಣದಿಂದ ಗಾಯಗೊಂಡ ವಾಲಿಯು ಸಾಯುವ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ರಾಮ–ಸುಗ್ರೀವರಿಗೆ ತಾನೇ ಸ್ನೇಹ ಮಾಡಿಸುತ್ತಾನೆ (ಅಂಕ 5).

ಇದನ್ನೆಲ್ಲ ಕಂಡ ಮಾಲ್ಯವಂತನು ದುಃಖಗೊಳ್ಳುವನು. ಹನುಮಂತನಿಂದ ಲಂಕೆಯ ದಹನ, ಅಕ್ಷಕುಮಾರನನ್ನು ಕೊಲ್ಲುವುದು, ಸೀತೆಗೆ ರಾಮನ ಉಂಗುರವನ್ನು ಕೊಡುವುದು, ರಾವಣ–ಮಂಡೋದರಿಯರ ಸಂವಾದ, ಕಪಿಸೇನೆಯು ಲಂಕೆಗೆ ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕುವುದು, ರಾಮನು ರಾವಣನ ಬಳಿ ಅಂಗದನನ್ನು ದೂತನನ್ನಾಗಿ ಕಳುಹಿಸುವುದು. ಆದರೂ ಯುದ್ಧ ಅನಿವಾರ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ವಾಸವ–ಚಿತ್ರರಥರು ರಾಮ–ರಾವಣರ ಯುದ್ಧವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾರೆ. ರಾವಣನು ಹತನಾಗುತ್ತಾನೆ (ಅಂಕ 6).

ಲಂಕೆ–ಅಲಕೆಯರು ಮಾತನಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿರುತ್ತಾರೆ. ಅವರ ಸಂಭಾಷಣೆಯಿಂದ ಸೀತೆಯು ಬೆಂಕಿಯಲ್ಲಿ ಹೊಕ್ಕಿದ್ದು, ಕುಬೇರನು ಪುಷ್ಪಕ ವಿಮಾನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ್ದು, ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾದುದು ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ರಾಮ–ಸೀತೆ ಎಲ್ಲರೂ ಪುಷ್ಪಕ ವಿಮಾನ ಏರಿ, ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಹೊರಡುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗೆ ಬರುವಾಗ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಕಂಡ ಬೆಟ್ಟ–ಗುಡ್ಡಗಳು, ಪರ್ವತಗಳು, ನದೀ–ನದಗಳು, ಕಾಡುಗಳು ಹಾಗೂ ಅಲ್ಲಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಹಿಂದಿನ ಘಟನೆಗಳು ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ನೆನಪಿಸಿಕೊಳ್ಳುವರು. ರಾಮನು ಭರತನ ಬಳಿಗೆ ಬರುವನು. ರಾಮ–ಭರತರ ಸಮಾಗಮ. ಆಗ ವಸಿಷ್ಠ ಮೊದಲಾದವರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುತ್ತಾರೆ. ರಾಮನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಲು ಮಾಲ್ಯವಂತ–ಶೂರ್ಪಣಖಿಯರು ಕಾರಣರು, ಬೇರೆ ಯಾರೂ ಅಲ್ಲ ಎಂದು ಅರುಂಧತಿಯು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ನಿಜಸಂಗತಿಯನ್ನು ತಿಳಿಸುವಳು. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬರುವರು, ಎಲ್ಲರ ಸಮಕ್ಷಮದಲ್ಲಿ ರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕವಾಗುತ್ತದೆ. ರಾಮನನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಹರಸುವರು (ಅಂಕ 7). ಇದು ಮಹಾವೀರಚರಿತ ನಾಟಕದ ಸಮಗ್ರ ಕಥಾವಸ್ತು.

ಭಾಸಮಹಾಕವಿಯು ಅಯೋಧ್ಯಾಕಾಂಡದ ಹಿಂದಿನ ಬಾಲಕಾಂಡದ ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಪ್ರತಿಮಾನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ್ದನು. ಭವಭೂತಿಯು ಬಾಲಕಾಂಡದ ಸ್ವಲ್ಪ ಕಥಾಭಾಗವನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ಉಳಿದೆಲ್ಲ ಕಥೆಯನ್ನು ತನ್ನ ಮಹಾವೀರಚರಿತ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ತಂದಿದ್ದಾನೆ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರರ ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿಯೇ ರಾಮನು ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ಮುರಿಯುತ್ತಾನೆ. ರಾಮನು ಮಿಥಿಲೆಯಿಂದಲೇ ಕಾಡಿಗೆ ಹೊರಡುತ್ತಾನೆ. ನಾಟಕದ ಬಹಳಷ್ಟು ಕಥಾಂಶಗಳು ತೆರೆಯ ಮರೆಯಲ್ಲಿ ನಡೆಯುತ್ತವೆ. ವಿಷ್ಕಂಭಕ, ಪ್ರವೇಶಕಗಳಿಂದ ನಡೆದ ಕಥೆಗಳು ತಿಳಿಯುತ್ತವೆ. ರಾಮನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗುವುದಕ್ಕೆ ರಾವಣನ ಕಡೆಯವರು, ಮಾಲ್ಯವಂತ, ಶೂರ್ಪಣಖಿಯರು ಕಾರಣವೇ ಹೊರತು, ಕೈಕೇಯೀ, ಮಂಥರೆ ಕಾರಣರಲ್ಲ. ಕೈಕೆಯೀ ದೇವಿಗೆ ದುರಾಸೆಯಿಲ್ಲ. ಶೂರ್ಪಣಖಿಯು ಮಂಥರೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರವೇಶಿಸಿ, ರಾಮನು ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗುವಂತೆ ಹೇಳುತ್ತಾಳೆ. ಆದರೆ ರಾಮನು ತಾನಾಗಿಯೇ ಕಾಡಿಗೆ ಹೋಗಲು ಬಯಸುತ್ತಾನೆ. ಸೀತೆ ಅಪಹರಣವಾದ ವಿಷಯವು ಸಂಪಾತಿ–ಜಟಾಯುಗಳ ಮಾತುಕತೆಯಿಂದ ಗೊತ್ತಾಗುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸೀತೆಯು ಲಕ್ಷ್ಮಣನನ್ನು ಜರಿಯುವ ಸಂದರ್ಭವು ಇಲ್ಲ. ಹಾಗಾಗಿ ಮಂಥರೆ, ಕೈಕೇಯೀ, ಸೀತೆಯರು ಉದಾತ್ತ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳಾಗಿ ಇಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ನಾಟಕದ ಕೊನೆಯಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ದೇವತೆಗಳು ಬಂದು ರಾಮನನ್ನು ಹೊಗಳುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ ಯಾರೂ ಸೀತೆಯ ಹೆಸರನ್ನೇ ಹೇಳುವುದಿಲ್ಲ. ಇದೊಂದು ಸೋಜಿಗ.

ಮಹಾವೀರಚರಿತದಲ್ಲಿ ವೀರರಸವು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿದೆ.

**ಮಹಾಪುರುಷಸಂರಂಭಃ ಯತ್ರ ಗಂಭೀರಭೀಷಣಃ ।**
**ಪ್ರಸನ್ನಕರ್ಕಶಾ ಯತ್ರ ವಿಪುಲಾರ್ಥಾ ಚ ಭಾರತೀ ॥**

**ಅಪ್ರಾಕೃತೇಷು ಪಾತ್ರೇಷು ಯತ್ರ ವೀರಃ ಸ್ಥಿತೋ ರಸಃ ।**
**ಭೇದೈಸ್ಸೂಕ್ಷ್ಮೈರಭಿವ್ಯಕ್ತೈಃ ಪ್ರತ್ಯಾಧಾರಂ ವಿಭಜ್ಯತೇ ॥**
(ಮಹಾವೀರಚರಿತ, ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ, ಸೂತ್ರಧಾರನ ಮಾತು)

ಇಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡ ದೊಡ್ಡ ಜನರ ಸಂಭ್ರಮವಿದೆ. ಮಾತುಗಳು ಗಂಭೀರವಾದದ್ದು, ಕಠೋರವಾದದ್ದು, ಕೆಲವು ಸಮಯ ಮಾತುಗಳು ಮೃದುವೂ, ನೇರವೂ ಆಗಿದ್ದು, ವಿಶಾಲವಾದ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೊರಹಾಕುತ್ತವೆ. ಅನೇಕ ಘಟನೆಗಳಿಂದ ಮಹಿಮಾನ್ವಿತರಾದ ಪುರುಷರ ಶೌರ್ಯವು ವಿಜೃಂಭಿಸುತ್ತದೆ. ವೀರರಸವು ಈ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಎದ್ದು ತೋರುತ್ತದೆ, ಇದು ಕವಿಯ ಜಾಣ್ಮೆ.

ಶಿವಧನುಸ್ಸನ್ನು ರಾಮನು ಮುರಿದನೆಂದು ಕೋಪಗೊಂಡ ಪರಶುರಾಮನು ರಾಮನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದಾಗ ವಸಿಷ್ಠ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ಶತಾನಂದ, ಜನಕ, ದಶರಥರು ಬೇಡವೆನ್ನುತ್ತಾರೆ. ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇವರ ಮಾತುಗಳು ಉದಾತ್ತವಾಗಿವೆ. ಪರಶುರಾಮನ ಅಕಾರ್ಯಕ್ಕೆ ಕೋಪಿಸಿಗೊಂಡ ಶತಾನಂದನು **"ಧಿಗ್ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯಂ ಧಿಗಂಗಿರಸಃ ಕುಲಮ್"** (ಅಂಕ 2.17) ಎಂದು ಹೇಳಿ ಎದುರು ನಿಲ್ಲುತ್ತಾನೆ.

ಜನಕನಾದರೋ ಕೋಪದಿಂದ –

**ಜ್ಯಾಜಿಹ್ವಯಾ ವಲಯಿತೋತ್ಕಟಕೋಟಿದಂಷ್ಟ್ರ–**
**ಮುದ್ಗಾರಿಘೋರಘನಘರ್ಘರಘೋಷಮೇತತ್ ।**
**ಗ್ರಾಸಪ್ರಸಕ್ತಹಸದಂತಕವಕ್ತ್ರಯಂತ್ರ–**
**ಜೃಂಭಾವಿಡಂಬಿ ವಿಕಟೋದರಮಸ್ತು ಚಾಪಮ್ ॥**
(ಮಹಾವೀರಚರಿತ, 3.29)

ಎಂದು ಪರಶುರಾಮನ ಮೇಲೆ ಬಿಲ್ಲೆತ್ತುತ್ತಾನೆ. ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನೂ ಸಹ ಉದ್ರಿಕ್ತನಾಗಿ ನಿಂದಿಸುತ್ತಿರುವ ಪರಶುರಾಮನನ್ನು ಕಂಡು –

**ಅಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸಮಿವ ಅಂಭಸಿ ಅಶಸ್ತ್ರಸಾಮರ್ಥ್ಯಮ್ ।**
**ಅರೇ ಜಾಮದಗ್ನ್ಯ! ಮನ್ಯಸೇ –**

**ಬ್ರಹ್ಮಕ್ಷತ್ರಸಮಾಜಮಾಕ್ಷಿಪಸಿ ಮದ್ವತ್ಸೇ ಚ ಘೋರಾಶಯ–**
**ಸ್ತೇನಾತಿಕ್ರಮಣೇನ ದುಃಖಯಸಿ ನಃ ಪಾಲ್ಯೋಽಸಿ ಸಂಬಂಧತಃ ।**
**ಅಂತಸ್ತ್ವಾಂ ಪ್ರತಿ ಕೋಪನಸ್ಯ ತರಲಃ ಶಾಪೋದಕಂ ದಕ್ಷಿಣಃ**
**ಪ್ರಾಕ್ಸಂಸ್ಕಾರವಶೇನ ಚಾಪಮಿತರಃ ಪಾಣಿರ್ಮಮಾನ್ವಿಷ್ಯತಿ ॥**
(ಮಹಾವೀರಚರಿತ, 3.43)

"ಎಲೈ ಭಾರ್ಗವನೇ! ನೀನು, ಬ್ರಾಹ್ಮಣ್ಯವನ್ನು, ಕ್ಷತ್ರಿಯತ್ವವನ್ನು ನಿಂದಿಸುತ್ತಿರುವೆ, ರಾಮನಲ್ಲಿ ಪಾಪಭಾವ ನಿನಗೆ, ಮಾಡಬಾರದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡಲು ಹೊರಟಿರುವ ನಿನಗೆ, ನನ್ನ ಬಲಗೈ ಶಾಪ ಜಲ ಹಿಡಿದು ಶಾಪ ಕೊಡಬೇಕೆಂದು ತವಕಿಸುತ್ತಿದೆ. ನನ್ನ ಎಡಗೈ ಬಿಲ್ಲನ್ನು ಹಿಡಿದು ನಿನ್ನ ಮೇಲೆ ಯುದ್ಧಕ್ಕೇರಲು ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತಿದೆ" ಎನ್ನುತ್ತಾನೆ. ಆಗ ಪರಶುರಾಮನು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನಿಗೆ –

**ತ್ವಂ ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸಧರೋ ಯದಿ ವರ್ತಮಾನೋ**
**ಯದ್ವಾ ಸ್ವಜಾತಿಸಮಯೇನ ಧನುರ್ಧರಃ ಸ್ಯಾಃ ।**
**ಉಗ್ರೇಣ ಭೋಸ್ತವ ತಪಸ್ತಪಸಾ ವಹಾಮಿ**
**ಪಕ್ಷಾಂತರೇ ಚ ಸದೃಶಂ ಪರಶುಃ ಕರೋತು ॥**

(ಮಹಾವೀರಚರಿತ, 3.44)

ಎಲೈ ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರನೇ, ನೀನು ಬ್ರಹ್ಮವರ್ಚಸ್ಸಿನಿಂದ ಇದ್ದರೆ ಆಗ ನಾನು ನನ್ನ ಉಗ್ರ ತಪಃಶಕ್ತಿಯಿಂದ ನಿನ್ನನ್ನು ಸುಟ್ಟು ಬಿಡುತ್ತೇನೆ. ಒಂದು ವೇಳೆ ಪೂರ್ವಜನ್ಮ ಸ್ಮರಣೆಯಿಂದ ಕ್ಷತ್ರಿಯನಾಗಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಂದರೆ ನಿನ್ನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ನನ್ನ ಕೊಡಲಿ ಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ ಎಂದು ವೀರಾವೇಶದಿಂದ ಹೇಳುತ್ತಾನೆ.

ಈ ರೀತಿ ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ವೀರರಸವನ್ನು ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಗೊಳಿಸುವ ಸಂದರ್ಭಗಳು, ಮಾತುಗಳೇ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಬರುತ್ತವೆ. ರಾಮನ ವೀರಾವೇಶದ ದೃಶ್ಯಗಳು ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕಾಣಲಾರವು. ಬದಲಾಗಿ ಮಾತುಗಳಲ್ಲೇ ತೋರುತ್ತವೆ. ರಾಮನು ಗುರುವಿಗೆ ವಿಧೇಯನಾಗಿ, ಸಾತ್ತ್ವಿಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿತನಾಗಿದ್ದಾನೆ. ಜಟಾಯು, ಸಂಪಾತಿ ಮೊದಲಾದವರು ಉದ್ಧತತನದಿಂದ ಮಾತನಾಡುತ್ತಾರೆ. ಶಬ್ದಾಡಂಬರದ ಮಾತುಗಳೇ ಹೆಚ್ಚು. ಕವಿಯಾದ ಭವಭೂತಿಯು ಈ ನಾಟಕದ ಭರತವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ –

**ಕ್ಷ್ಮಾಪಾಲಾಃ ಕ್ಷೀಣತಂದ್ರಾಃ ಕ್ಷಿತಿವಲಯಮಿದಂ ಪಾಂತು ತೇ ಕಾಲವರ್ಷಾ**
**ವಾರ್ವಾಹಾಃ ಸಂತು ರಾಷ್ಟ್ರಂ ಪುನರಖಿಲಮಪಾಸ್ತೇತಿ ಸಂಪನ್ನಶಸ್ಯಮ್ ।**
**ಲೋಕೇ ನಿತ್ಯಪ್ರಮೋದಂ ವಿದಧತು ಕವಯಃ ಶ್ಲೋಕಮಾಪ್ತಪ್ರಸಾದಂ**
**ಸಂಖ್ಯಾವಂತೋಽಪಿ ಭೂಮ್ನಾ ಪರಕೃತಿಷು ಮುದಂ**
**ಸಂಪ್ರಧಾರ್ಯ ಪ್ರಯಾಂತು** ॥ (ಮಹಾವೀರಚರಿತ, 7.43)

ರಾಜರು ಸದಾ ಜಾಗರೂಕರಾಗಿ ಈ ಭೂಮಂಡಲವನ್ನು ಕಾಪಾಡಲಿ. ಮೋಡಗಳು ಕಾಲಕಾಲಕ್ಕೆ ಮಳೆ ಸುರಿಸಲಿ, ದೇಶದಲ್ಲಿ ಯಾವ ಕಷ್ಟಗಳಿಲ್ಲದೆ ಸುಭಿಕ್ಷವು ನೆಲಸಲಿ, ಯುದ್ಧಾದಿಗಳಿಲ್ಲದೆ ಜನರು ಸಂತಸ ಪಡಲಿ. ಕವಿಗಳು ಸದಾ ಕಾಲ ಆನಂದವನ್ನುಂಟುಮಾಡುವ ಕಾವ್ಯಾದಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸಲಿ. ವಿದ್ಯಾವಂತರಾದ ಜ್ಞಾನಿಗಳು ಇತರರು ರಚಿಸಿದ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಸಹೃದಯತೆಯಿಂದ ಓದಿ ಆನಂದಿಸುವಂತಹವರಾಗಲಿ ಎಂದು ಹೇಳಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹವಾಗಿದೆ.

ಒಟ್ಟಾರೆ ಕವಿ ಭವಭೂತಿಯು ತನ್ನ ಮಹಾವೀರಚರಿತೆ ನಾಟಕದಲ್ಲೂ ಸಹ, ವಾಲ್ಮೀಕಿಯಿಂದ ಪ್ರಭಾವಿತನಾಗಿ, ಅವರ ಕೃತಿ ರಾಮಾಯಣದಿಂದ ಶಿಕ್ಷಿತನಾಗಿ, ತನ್ನದೇ ಆದ ಹೊಸತನದಿಂದ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥೆಯನ್ನು ಅಪೂರ್ವವಾಗಿ, ಅಸದೃಶವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿ, ಚಿರಸ್ಮರಣೀಯನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

ಶಾಂತನಾದ ಪರಶುರಾಮನನ್ನು ಕುರಿತು ದಶರಥನು –

**ನಿಸರ್ಗತಃ ಪವಿತ್ರಸ್ಯ ಕಿಮನ್ಯತ್ಪಾವನಂ ತವ ।**
**ತೀರ್ಥೋದಕಂ ಚ ವಹ್ನಿಶ್ಚ ನಾನ್ಯತಃ ಶುದ್ಧಿಮರ್ಹತಃ** ॥ (4.27)

'ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಪವಿತ್ರನಾದ ನಿನಗೆ ಬೇರೇನೂ ಪಾವಿತ್ರ್ಯ ಬೇಕು? ಅದರ ಅವಶ್ಯಕತೆಯಿಲ್ಲ. ಪವಿತ್ರ ತೀರ್ಥಜಲ ಹಾಗೂ ಬೆಂಕಿ ಇವೆರಡೂ ಸ್ವಾಭಾವಿಕವಾಗಿಯೇ ಪವಿತ್ರವಾದವುಗಳು. ಅವುಗಳನ್ನು ಶುದ್ಧಿಗೊಳಿಸಲು ಬೇರೆ ಯಾವುದರ ಅವಶ್ಯಕತೆಯೂ ಇಲ್ಲ' ಎಂದು ಹೇಳುವ ಮಾತು ಸ್ವೀಕಾರಾರ್ಹವಾಗಿದೆ. ❑

*Section of the audience during the Conference*

*With Best Compliments from:*

**Tirumala Tirupati Devasthanams**
**(TTD)**

TTD Administrative Building,
K.T. Road Tirupati 517 501,
Andhra Pradesh, India.

*With best compliments from :*

# PATHI SRIDHARA SHANTHA

## CHARITABLE TRUST

No. 60/62, 8th Main, 4th Block,
Jayanagar, Bengaluru - 560 011.

*With best compliments from :*

**SRI MANANDI N. SURESH**

**AND**

**SMT. MANANDI SRIMATHI SURESH**

*With best compliments from :*

**MALPANI CHARITABLE TRUST**

**BENGALURU**

आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत : ।
"Let Noble Thoughts Come To Us From Every Side"
- Rig Veda 1-89-i

Admissions
OPEN
for 2018-20
Batch

Approved by **AICTE** & Affiliated to **Bangalore University**

# MBA Degree Programme TWO YEAR FULL-TIME

## Dual Specialisation of Your Choice*

| Marketing | Finance | HRM |
|---|---|---|
| Health Care Management | | |
| Banking Finance & Insurance Services Management | | |
| Startups & SMEs Management | | |

**Subject to Minimum intake*

NAAC
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
**NAAC Accredited Institution**

भारतीय मानक ब्यूरो IS / ISO 9001
BUREAU OF INDIAN STANDARDS QMS
**IS / ISO 9001:2008 Certified Institution**

## Highlights of MPBIM

- Admissions through good CAT/MAT/CMAT Scores.
- Most sought after B-School in Bengaluru.
- Competent Faculty & Mentoring system.
- The best of Management Faculty of Bengaluru teach here.
- Special Seminars & Workshops based on industry needs.
- Synergy of Corporate Leadership & Institution of National Eminence.
- State-of-the-art corporate ambience.
- Fee includes Laptop, Text Books, Study Material & Blazer.
- Weekly interactions with Corporate & Business Leadership.
- Wi-Fi Enabled Campus.
- Personal Growth Laboratory.
- Well recognised out-bound & corporate training.
- Placement Assistance through Institute's UDYOG BHARATI.

**Bharatiya Vidya Bhavan's**

## M P Birla Institute of Management

#43, Race Course Road, Bengaluru 560 001
•Phone: +91-80-4277 2000 •Fax: +91-80-2238 9635
•E-mail: admission@mpbim.com
www.mpbim.com

**Ranked 21st among top 100 B Schools Surveyed by SILICON INDIA EDUCATION in the survey "What if not IIMs - B-School survey 2017"**

silicon india Education

*With best compliments from:*

विजया बैंक

**VIJAYA BANK**

(A GOVT. OF INDIA UNDERTAKING)

**A friend you can bank upon**

*With best compliments from:*

MICRO LABS

**MICRO LABS LIMITED**

No. 26, Race Course Road, Bengaluru - 560 001.

TVS Racing

NOT JUST THE RACER'S CHOICE.

Apache RTR 200 4V

RACING DNA UNLEASHED

The TVS Apache RTR 200 4V bags the JK Tyre Indian **Motorcycle of the Year 2017** in addition to winning the CNBC-TV18 - Overdrive **Jury Motorcycle of the Year** and the Viewers' Choice Bike of the Year as well as the Best **Motorcycle up to 250cc** in the NDTV Car and Bike awards.

*With Best Compliments From :*

**Prathibha**

1/1 Raja Ram Mohan Ray Road, Richmond Circle,
Bangalore - 560 025
Ph : 080 - 41145500 / 22213548
info@prathibha.com, valet parking

*With best compliments from :*

**SHRI DAYANAND PAI**

YOURS FAITHFULLY SINCE 1925 से आपका विश्वसनीय

विश्वसनीय मैत्रीपूर्ण
Faithful. Friendly
सिंडिकेटबैंक
SyndicateBank
भारत सरकार का उपक्रम A Govt. of India Undertaking

# Your dream home... We make it a reality!

## SyndNivas
Home Loan
• Buy • Build • Renovate

- Affordable rate of interest
- Repayment: up to 30 years or 75 years of age, whichever is earlier
- Hassle-free processing & quick sanction
- No pre-payment charges

Save up to ₹2.67 lakhs*
as subsidy
under
PMAY

Follow us on

* conditions apply

Toll Free: 1800 3011 3333 | 1800 208 3333

www.syndicatebank.in

Bharatiya Vidya Bhavan
BENGALURU

Srila Prabhupada's
ISKCON
BANGALORE

# Message of Ramayana

A unique three-day National Conference on the

## Message of Ramayana

July 6, 7 & 8th 2018